

सम्पादक

महोपाध्याय विनयसागर

साहित्य महोपाध्याय, साहित्याचार्य, दर्शनशास्त्री,
साहित्यरत्न, काव्यमूषण, शास्त्रविशारद

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२२ }
प्रथमावृत्ति १००० }

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८७

{ ख्रिस्ताब्द १९६५
{ मूल्य-१८.२५

मुद्रक- हरिप्रताप पारीक, सायना प्रेस, जोधपुर

Vrittamauktik

of

Chandrashekhar Bhatta

with commentaries by Bhatt Lakshminath and Meghavijaya Gani



Edited with

Appendices and elaborate preface

by

A. Vinayasagar,

Sahitya-mahopadhyaya, Sahityacharya,

Darshan-shastri, Sahitya-ratna, Shastra-visharad etc.

Published under the orders of the Government of Rajasthan

By

THE RAJASTHANI ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE

JODHPUR (Rajasthan)

V.S. 2022]

[1965 A.D.

उच्चालकीय वक्तव्य

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के ७६वें ग्रन्थांक के स्वरूप वृत्त-भौक्तिक नाम का यह एक मुक्तांकित ग्रन्थरत्न गुम्फित होकर ग्रन्थ-माला के प्रिय पाठकवर्ग के करकमलों में उपस्थित हो रहा है।

जैसा कि इसके नाम से ही सूचित हो रहा है कि यह ग्रन्थ वृत्त अर्थात् पद्यविषयक शास्त्रीय वर्णन का निरूपण करने वाला एक छन्दःशास्त्र है। भारतीय वाङ्मय में इस शास्त्र के अनेक ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक, इस विषय का विवेचन करने वाले संकडों ही छोटे-बड़े ग्रन्थ भारत की भिन्न-भिन्न भाषाओं में ग्रथित हुए हैं। प्राचीनकाल में प्रायः सब ग्रन्थ संस्कृत और प्राकृत भाषा में रचे गये हैं। बाद में, जब देश्य-भाषाओं का विकास हुआ तो उनमें भी तत्तद् भाषाओं के ज्ञाताओं ने इस शास्त्र के निरूपण के वैसे अनेक ग्रन्थ बनाये।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला का प्रधान उद्देश्य वैसे प्राचीन शास्त्रीय एवं साहित्यिक ग्रन्थों को प्रकाश में लाने का रहा है जो अप्रसिद्ध तथा अज्ञात स्वरूप रहे हैं। इस उद्देश्य की पूर्तिरूप में, हमने इससे पूर्व छन्दःशास्त्र से सम्बन्ध रखने वाले पाँच ग्रन्थ इस ग्रन्थमाला में प्रकाशित किये हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ का छठा स्थान है।

इनमें पहला ग्रन्थ महाकवि स्वयंभू रचित है जो 'स्वयंभू छंद' के नाम से अंकित है। स्वयंभू कवि ६-१०वीं शताब्दी में हुआ है। वह अपभ्रंश भाषा का महाकवि था। उसका बनाया हुआ अपभ्रंश भाषा का एक महाकाव्य 'पउमचरिउ' है, जिसको हमने अपनी 'सिधो जैन ग्रन्थमाला' में प्रकाशित किया है। स्वयंभू कवि ने अपने छन्दःशास्त्र में, संस्कृत और प्राकृतभाषा के उन बहुप्रचलित और सुप्रतिष्ठित छन्दों का तो यथायोग्य वर्णन किया ही है परन्तु तदुपरान्त विशेष रूप से अपभ्रंश-

भाषा-साहित्य के नवीन विकसित छन्दों का भी बहुत विस्तार से वर्णन किया है। अपभ्रंश-भाषा-साहित्य को दृष्टि से यह ग्रन्थ विशिष्ट रत्न-रूप है।

दूसरा ग्रन्थ है 'वृत्तजातिसमुच्चय'। इसका कर्त्ता विरहांक नाम से अंकित कोई 'कइसिठ्ठ' है। यह शब्द प्राकृत है, जिसका सही संस्कृत पर्याय क्या होगा, पता नहीं लगता। 'कइसिठ्ठ' का संस्कृत रूप कवि-श्रेष्ठ, कविशिष्ट और कृतशिष्ट अथवा कृतिश्रेष्ठ भी हो सकता है। वृत्तजातिसमुच्चय भी प्राचीन रचना सिद्ध होती है। इसकी रचना ६वीं-१०वीं शताब्दी की या उससे भी कुछ प्राचीन अनुमानित की जा सकती है। यह रचना शिष्ट प्राकृत-भाषा में ग्रथित है। इसमें संस्कृत को अपेक्षा प्राकृत के छन्दों का विस्तृत निरूपण है और साथ में अपभ्रंश भाषा के भी अनेक छन्दों का वर्णन है। ग्रन्थकार ने अपभ्रंश शैली के छन्दों का विवेचन करते हुए उसकी उपशाखाएँ-स्वरूप 'आभीरी' और 'मारवी' अथवा 'मारुवाणी' का भी नाम-निर्देश किया है जो प्राचीन राजस्थानी-भाषा-साहित्य के विकास के इतिहास की दृष्टि से प्राचीनतम उल्लेख है। राजस्थानी के पिछले कवियों ने जिसे 'मरुभावा' अथवा 'मुरधरभावा' कहा है, उसे ही कवि विरहांक ने 'मारुवाणा' नाम से उल्लेख किया है। इस मारुवाणी का एक प्रिय और प्रसिद्ध छन्द है जिसका नाम 'धोपा' अथवा 'धोपा' बताया है। इस उल्लेख से यह ज्ञान होना है कि ६वीं-१०वीं शताब्दी में राजस्थान की प्रसिद्ध बोली 'मारई' या 'मारवी' का अस्तित्व और उसके कवि-मन्त्रदाय तथा उनको काव्यकृतियों का व्यवस्थित विकास हो रहा था। प्राकृत और अपभ्रंश भाषा में पद्य-रचना के विविध प्रयोगों का इस ग्रन्थ में बहुत महत्वपूर्ण निरूपण है।

तीसरा ग्रन्थ है 'कविदपण'। यह भी प्राकृत के पद्य-स्वरूपों का निरूपण करने वाला एक विशिष्ट ग्रन्थ है। इसकी रचना विक्रम की १४वीं शताब्दी के मारम्भ में हुई प्रतीत होती है। विक्रम की १२वीं शताब्दी के मारम्भ में राजस्थान और गुजरात में प्राकृत और अप-

अश भाषा के साहित्य में जिस प्रकार के अनेकानेक मात्रागणाय छन्दो का विकास और प्रसार हुआ है उनका सोदाहरण लक्षण-वर्णन इस रचना में दिया गया है। 'सदेशरासक' जैसी रासावर्ग की सर्वोत्तम रचना में जिन विविध प्रकार के छन्दो का कवि ने प्रयोग किया है उन सब का निरूपण इस ग्रन्थ में मिलता है। प्राकृतपिंगल नाम के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ में जिस प्रकार के छन्दो का वर्णन दिया गया है उनमें के प्राय सभी छन्द इस ग्रन्थ में, उसी शैली का पूर्वकालीन पथप्रदर्शन करने वाले, मिलते हैं। जिस प्रकार प्राकृतपिंगल में दिये गये उदाहरणभूत पद्यों में, कर्ण, जयचद, हमीर आदि राजाओं के स्तुति-परक पद्य मिलते हैं उसी तरह इस ग्रन्थ में भीमदेव, सिद्धराज जयसिंह, कुमारपाल आदि अणहिलपुर के राजाओं के स्तुतिपरक पद्य दिये गये हैं।

उक्त तीनों ग्रन्थों का सम्पादन हमारे प्रियवर विद्वान् मित्र प्रो० एच० डी० वेलणकरजी ने किया है जो भारतीय छन्दशास्त्र के अद्वितीय मर्मज्ञ विद्वान् हैं। इन ग्रन्थों को विस्तृत प्रस्तावनाओं में (जो अग्रजी में लिखी गई हैं) सम्पादकजी ने प्राकृत एवं अपभ्रंश के पद्य-विनास का बहुत पाण्डित्यपूर्ण विवेचन किया है। इन ग्रन्थों के अध्ययन से अपभ्रंश और प्राचीन राजस्थानी-गुजराती हिन्दीभाषा के विविध छन्दो का किस क्रम से विकास हुआ है वह अच्छी तरह ज्ञात हो जाता है।

विगत वर्ष में हमने इसी ग्रन्थमाला के ६६ वें मणि के रूप में 'वृत्तमुक्तावली' नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया—जिसके रचयिता जयपुर के राज्यपण्डित श्रीगृष्ण भट्ट थे, महाराजा सवाई जयसिंह ने उनको बड़ा सम्मान दिया था। वृत्तमुक्तावली में वैदिक छन्दो का भी निरूपण किया गया है, जो उपर्युक्त ग्रन्थों में आलेखित नहीं हैं। वृत्तमुक्तावली में वैदिक छन्द तथा प्राचीन सृष्ट एवं प्राचिन-साहित्य में सुप्रचलित वृत्तों के अतिरिक्त उन अनेक देशभाषा-निबद्ध वृत्तों का भी निरूपण किया गया है जो उक्त प्राचीन ग्रन्थकारों के बाद होने वाले अन्यान्य कवियों द्वारा प्रयुक्त हुए हैं। श्रीगृष्ण भट्ट सृष्ट-भाषा के प्रौढ

पण्डित थे। सस्कृत काव्य-रचना में उनकी गति प्रखर और अबाध थी इसलिये उन्होंने उक्त प्रकार के सब छन्दों के उदाहरण स्वरचित पद्यों द्वारा ही प्रदर्शित किये हैं। प्राकृत, अपभ्रंश और प्राचीन देशी भाषा के प्रधानवृत्तों के उदाहरण-स्वरूप पद्य भी उन्होंने सस्कृत में ही लिखे। हिन्दी-राजस्थानी-गुजराती भाषा में बहुप्रचलित और सर्वविश्रुत दोहा, चौपाई, सर्वया, कवित्त और छप्पय जैसे छन्द भी उन्होंने सस्कृत में ही अवतारित किये।

इन ग्रंथों से विलक्षण एक ऐसा छन्द-विषयक अन्य बड़ा ग्रन्थ भी हमने ग्रन्थमाला में गुम्फित किया है जो 'रघुवरजसप्रकाश' है। इसका कर्त्ता चारण कवि किसनाजी आढा है, वह उदयपुर के महाराणा भीमसिंह जी का दरबारी कवि था। वि० सं० १८८०-८१ में उसने इस ग्रन्थ की राजस्थानी भाषा में रचना की। जिसको कवि 'मुरधर भाखा' के नाम से उल्लिखित करता है। यह छन्दोवर्णन-विषयक एक बहुत ही विस्तृत और वैविध्य-पूर्ण ग्रन्थ है। कर्त्ता ने इस ग्रन्थ में छन्द शास्त्र-विषयक प्रायः सभी बातें अंकित कर दी हैं। वर्णवृत्त और मात्रावृत्तों के लक्षण दोहा छन्द में बताये हैं। उदाहरणभूत सब पद्य अर्थात् वृत्त कवि ने अपनी 'मुरधरभाखा' अर्थात् मरुभाषा में स्वयं ग्रथित किये हैं। इस प्रकार सस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषा के सुप्रसिद्ध सभी छन्दों के उदाहरण उसने 'मरुभाखा' में ही लिखकर अपनी देशभाषा के भाव-सामर्थ्य और शब्दभंडार के महत्त्व को बहुत उत्तम रीति से प्रकट किया है। इसके अतिरिक्त उसने इस ग्रन्थ में राजस्थानी भाषाशैली में प्रचलित उन सैकड़ों गीतों के लक्षण और उदाहरण गुम्फित किये हैं जो अन्य भाषा-ग्रन्थित छन्दग्रन्थों में प्राप्त नहीं होते।

प्रस्तुत 'वृत्तमीवितक' ग्रन्थ इस ग्रन्थमाला का छन्द शास्त्र विषयक ६ठा ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ भी वृत्तमुक्तावली के समान सस्कृत में गुम्फित है। वृत्तमुक्तावली के रचना काल से कोई एक शताब्दी पूर्व इसकी रचना हुई होगी। इसमें भी वृत्तमुक्तावली की तरह सभी वृत्तों या पद्यों के उदाहरण ग्रन्थकार के स्वरचित हैं। वृत्तमुक्तावली की तरह इसमें

वैदिक छंदों का निरूपण नहीं है पर संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश साहित्य में प्रयुक्त प्रायः सभी छंदों का विस्तृत वर्णन है। जितने छंदों अर्थात् वृत्तों का निरूपण इस ग्रन्थ में किया गया है उतनों का वर्णन इसके पूर्व निर्मित किसी भी संस्कृत छंदोग्रन्थ में नहीं मिलता है। इस दृष्टि से यह ग्रन्थ छंदःशास्त्र की एक परिपूर्ण रचना है।

संस्कृत-साहित्य में पद्य-रचना के अतिरिक्त अनेक विशिष्ट गद्य-रचनायें भी हैं जो काव्य-शास्त्र में वर्णित रस और अलंकारों से परिपूर्ण हैं, परन्तु गद्यात्मक होने से पद्यों की तरह उनका गेय स्वरूप नहीं बनता। तथापि इन गद्य-रचनाओं में कहीं कहीं ऐसे वाक्यविन्यास और वर्णन-कण्डिकाएँ, कविजन ग्रथित करते रहते हैं जिनमें पद्यों का अनुकरण-सा भासित होता है और उन्हें पढ़ने वाले सुपाठी मर्मज्ञ जन ऐसे ढंग से पढ़ते हैं जिसके श्रवण से गेय-काव्य का सा आनन्द आता है। ऐसे गद्यपाठ के वाक्यविन्यासों को छन्दःशास्त्र के ज्ञाताओं ने पद्यानुगन्धी अथवा पद्याभासी गद्य के नाम से उल्लेखित किया है और उसके भी कुछ लक्षण निर्धारित किये हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में वृत्तमौक्तिक-कार ने ऐसे विशिष्ट गद्यांशों का विस्तृत निरूपण किया है और इस प्रकार के शब्दालंकृत गद्य की कुछ विद्वानों की विशिष्ट स्वतंत्र रचनायें भी मिलती हैं जो विरुदावली और खण्डावली आदि के नाम से प्रसिद्ध हैं। ऐसी अनेक विरुदावलियों तथा कुछ खण्डावलियों का निरूपण इस वृत्तमौक्तिक में मिलता है जो इसके पूर्व रचे गये किसी प्रसिद्ध छंदोग्रन्थ में नहीं मिलता। इस प्रकार की छन्दःशास्त्र-विषयक अनेक विशेषताओं के कारण यह वृत्तमौक्तिक यथानाम ही मौक्तिक स्वरूप एक रत्न-ग्रन्थ है।

इस ग्रन्थ की विशिष्ट मूल-प्रति राजस्थान के बीकानेर में स्थित सुप्रसिद्ध अनूप संस्कृत पुस्तकालय में सुरक्षित है। मूल-प्रति ग्रन्थकार के समय में ही लिखी गई है—अर्थात् ग्रन्थ की समाप्ति के बाद १४ वर्ष के भीतर। यह प्रति आगरा में रहने वाले लालमणि मिश्र ने वि.सं. १९६० में लिख कर पूर्ण की।

ग्रन्थ की रचना कहीं हुई इसका उल्लेख कहीं नहीं किया गया । परन्तु ग्रन्थकार तलगदेशीय भट्ट वश के ब्राह्मण थे और उनकी वश-परम्परा सुप्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य श्री वल्लभाचार्य के वश से अभेद स्वरूप रही है । प्रस्तुत रचना में कर्त्ता ने सर्वत्र श्रीकृष्ण-भक्ति का और मथुरा वृन्दावन के गोप-गोपीजनो के रस-विहार का जो वर्णन किया है उससे यह कल्पना होती है कि ग्रन्थकार मथुरा-वृन्दावन के रहने वाले हों !

इस ग्रन्थ का सम्पादन श्री विनयसागरजी महोपाध्याय ने बहुत परिश्रम-पूर्वक बड़ी उत्तमता के साथ किया है । ग्रन्थ से सम्बद्ध सभी विचारणीय विषयो का इन्होंने अपनी विद्वत्तापूर्ण विस्तृत प्रस्तावना और परिशिष्टो मे बहुत विशद रूप से विवेचन किया है जिसके पढ़ने से विद्वानो को यथेष्ट जानकारी प्राप्त होगी ।

ग्रन्थमाला के स्वर्णसूत्र मे इस मौक्तिक-स्वरूप रत्न की पूर्ति करने निमित्त हम श्री विनयसागरजी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते है और आशा रखते हैं कि ये अपनी विद्वत्ता के परिचायक इस प्रकार के और भी ग्रन्थ-सम्पादन के कार्य द्वारा ग्रन्थमाला की सेवा और शोभावृद्धि करते रहेंगे ।

जन्माष्टमो सं. २०२२;
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर
दि० २०-८-६५

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

समर्पण

यः सूरीश्वर - वंश-सागर - मणिर्वादीमपञ्चाननः ,
तं श्रीजैनविधौ गणे दिनमणिं ध्यायामि हृद्धान्तहम् ।
हिन्द्यामागमसंप्रसारमणिना प्रोद्धारि येन श्रुतं ,
भव्यानामुपदेशदानमणये तस्मै नमः सर्वदा ॥

यस्मात्प्रादुरभून्मणेः शुभविधा श्रीगौतमाद्वागिव ,
वागीशानिव वादिनो जितवती वादेषु संवादिनः ।
सौमत्यम्बुनिधेर्मणेः समुदयात् सज्ज्ञानमालोकते ,
ग्रन्थं मौक्तिकनामकं गुरुमणौ भक्त्या मया ह्यर्प्यते ॥

चारुचरशचररीफ

विनय

क्रमपञ्जिका

भूमिका

विषय	पृष्ठांक
छन्दःशास्त्र का उद्भव और विकास	१ - १६
कवि-वंश-परिचय	२० - ४३
वृत्तमौक्तिक का सारांश	४३ - ६०
ग्रन्थ का बंशिष्टच	६० - ७१
वृत्तमौक्तिक और प्राकृतपिगल	७२ - ७४
वृत्तमौक्तिक और घाणीभूषण	७४ - ७८
वृत्तमौक्तिक और गोविन्दविद्यावली	७८ - ८०
वृत्तमौक्तिक में उद्धृत अप्राप्त ग्रन्थ	८० - ८१
प्रस्तुत संस्करण की विशेषतायें	८१ - ८६
प्रति-परिचय	८६ - ९१
सम्पादन-शैली	९१ - ९२
आभार-प्रदर्शन	९२ - ९३
पारिभाषिक-शब्द	९४ - ९६

१. प्रथमखंड

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
प्रथमं गायत्र्याप्रकरणम्	१ - १२१	१ - १३
मङ्गलाचरणम्	१ - ६	१
गुरुलघुस्थितिः	७ - १०	१ - २
विकल्पस्थितिः	११ - १२	२
कारप्रलक्षणेऽनिष्टफलवेदनम्	१३ - १४	२
मात्राणां गणव्यवस्थाप्रस्तारद्वय	१५ - १८	२ - ३
मात्रागणानां नामानि	१९ - ३८	३ - ४
वर्णयुक्तानां गणसङ्गा	३९ - ४०	४
गणदेयता	४१	४
गणार्ध-भंशो	४२	४
गणदेयानां फलाफलम्	४३ - ४०	४ - ५
मात्रोद्दिष्टम्	५१ - ५२	५

विषय	पद्यसङ्ख्या	पृष्ठांक
मात्रानष्टम्	५२ - ५४	५
वर्णोद्दिष्टम्	५५	५
वर्णनष्टम्	५६	६
वर्णभेद	५७ - ५८	६
वर्णपताका	५९ - ६१	६
मात्रामेह	६२ - ६६	६
मात्रापताका	६६ - ६८	६
वृत्तद्वयस्थगुरुलघुज्ञानम्	६९	७
वर्णमर्कटी	७० - ७५	७
मात्रामर्कटी	७६ - ८५	७ - ८
नष्टादिफलम्	८६	८
प्रस्तारसङ्ख्या	८७ - ८८	८
गाथाभेदाः	८९ - ९०	८
गाथा	९१ - ९५	९
गाथायाः पञ्चविंशतिभेदाः	९६ - १०३	९ - १०
विगाथा	१०४ - १०५	१० - ११
गाहू	१०६ - १०८	११
उद्गाथा	१०९ - ११०	११
गाहिनी	१११ - ११२	११ - १२
सिहिनी	११३ - ११४	१२
स्कन्धकम्	११५ - ११६	१२
स्कन्धकस्याऽष्टाविंशतिभेदाः	११७ - १२१	१२ - १३
द्वितीय पद्यप्रकरणम्	१ - ७१	१४ - २६
दोहा	१ - ३	१४
दोहायाः त्रयोविंशतिभेदाः	४ - ९	१४
रसिका	१० - ११	१५
रसिकायाः षष्ठी भेदाः	१२ - १५	१६
रोला	१६ - १७	१६
रोलायाः त्रयोदश भेदाः	१८ - २१	१७
गन्धानकम्	२२ - २४	१७ - १८
चीरेया	२५ - २७	१८ - १९
घत्ता	२८ - ३०	१९
घत्तानन्दम्	३१ - ३३	१९
काव्यम्	३४ - ३७	१९ - २०

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
उल्लासम्	३८ - ३९	२०
शक्र (काव्यभेदः)	४० - ४२	२०
काव्यस्य पञ्चचत्वारिंशद्भेदा	४३ - ५२	२० - २२
यट्पदम्	५३ - ५५	२३
यट्पदवृत्तस्यैकसप्ततिभेदाः	५६ - ६३	२३ - २४
काव्ययट्पदयोर्विधाः	६४ - ७१	२५ - २६
तृतीय रङ्गाप्रकरणम्	१ - २५	२७ - ३०
पञ्चमटिका	१ - २	२७
मण्डिता	३ - ४	२७
पादाकुलकम्	५ - ६	२७ - २८
घोषोला	७ - ८	२८
रङ्गा	९ - १२	२८ - २९
रङ्गायाः सप्तभेदा	१३ - १५	२९
[१] करभो	१६ - १७	२९
[२] नन्दा	१८	२९
[३] मोहिनी	१९	३०
[४] वादसेना	२०	३०
[५] मद्रा	२१	३०
[६] राजसेना	२२	३०
[७] तालङ्गिनी	२३ - २५	३०
चतुर्थ पद्यावतीप्रकरणम्	१ - ६९	३१ - ४६
पद्यावती	१ - २	३१
कुण्डलिका	३ - ४	३१
गगनाङ्गणम्	५ - ६	३२
द्विपदी	७ - ८	३२
भुक्तला	९ - १०	३२ - ३३
सञ्ज	११ - १२	३४
शिला	१३ - १४	३४
माला	१५ - १६	३४
चुलिप्राला	१७ - १८	३५
सौरठा	१९ - २१	३५
हाकलि	२२ - २५	३५ - ३६
मधुभारः	२६ - २७	३६
साम्भारः	२८ - २९	३६

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
दण्डकला	३० - ३१	३७
कामकला	३२ - ३३	३७
रचिरा	३४ - ३५	३७
दीपकम्	३६ - ३६	३८
तिहिविलोकितम्	४० - ४१	३८
प्लवङ्गमः	४२ - ४३	३९
लीलावती	४४ - ४५	३९
हरिगीतम्	४६ - ४७	३९ - ४०
हरिगीत[क]म्	४८ - ४९	४० - ४१
मनोहरहरिगीतम्	५० - ५१	४१
हरिगीता	५२ - ५३	४१
प्रपरा हरिगीता	५४ - ५५	४१ - ४२
त्रिभङ्गी	५६ - ५७	४२
डुमिलका	५८ - ५९	४२
होरम्	६० - ६२	४३
जनहरणम्	६३ - ६४	४४
भवनगृहम्	६५ - ६७	४५
मरहट्टा	६८ - ६९	४६
पञ्चम सवयाप्रकरणम्	१ - १२	४७ - ४९
सवया	१ - २	४७
सवयाभेदानां नामानि	३	४७
मदिरा सवया	४	४७
भासती सवया	५	४७
मत्स्यी सवया	६	४८
मल्लिका सवया	७	४८
माघधी सवया	८	४८
भागधी सवया	९ - १०	४८
यनादारम्	११ - १२	४९
षष्ठ गलितकप्रकरणम्	१ - ३५	५० - ५६
गलितकम्	१ - २	५०
विगलितकम्	३ - ४	५०
सङ्गलितकम्	५ - ६	५० - ५१
मुग्धरगलितकम्	७ - ८	५१
भूयगलितकम्	९ - १०	५१

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
मुखगलितकम्	११ - १२	५१ - ५२
विलम्बितगलितकम्	१३ - १४	५२
समगलितकम्	१५ - १६	५२
अपर समगलितकम्	१७ - १८	५३
अपर सङ्गतकम्	१९ - २०	५३
अपर लम्बितागलितकम्	२१ - २२	५३
विशिष्टिकागलितकम्	२३ - २४	५३ - ५४
ललितागलितकम्	२५ - २६	५४
विषमितागलितकम्	२७ - २८	५४
मालागलितकम्	२९ - ३०	५५
मुग्धमालागलितकम्	३१ - ३२	५५
उद्गलितकम्	३३ - ३४	५५ - ५६
पद्मकृतप्रशस्ति	३६ - ३९	५६

द्वितीय खंड

प्रथम वृत्तनिरूपण-प्रकरणम्	१ - ६१७	५७ - १८०
मङ्गलाचरणम्	१ - २	५७
एकाक्षरम्	३ - ६	५७
श्रीः	३ - ४	५७
इ	५ - ६	५७
द्व्यक्षरम्	७ - १४	५८
काम	७ - ८	५८
मही	९ - १०	५८
सारम्	११ - १२	५८
मधु	१३ - १४	५८
त्र्यक्षरम्	१५ - ३०	५९ - ६०
ताली	१५ - १६	५९
वाशो	१७ - १८	५९
प्रिया	१९ - २०	५९
रमण	२१ - २२	५९
पञ्चाक्षरम्	२३ - २४	६०

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
मृगेन्द्रः	२५ - २६	६०
मन्दरः	२७ - २८	६०
कमलम्	२९ - ३०	६०
चतुरक्षरम्	३१ - ३८	६१
तीर्था	३१ - ३२	६१
घारी	३३ - ३४	६१
नगाणिका	३५ - ३६	६१
शुभम्	३७ - ३८	६१
पञ्चाक्षरम्	३९ - ४९	६२ - ६३
सम्मीहा	३९ - ४०	६३
हारी	४० - ४२	६२
हस्त	४३ - ४४	६२
प्रिया	४५ - ४६	६२
यमकम्	४७ - ४९	६३
षडक्षरम्	५० - ६७	६३ - ६५
शेषा	५० - ५१	६३
तिलका	५२ - ५३	६३
विमोहम्	५४ - ५५	६४
चतुरस्रम्	५६ - ५७	६४
मर्यादा	५८ - ५९	६४
दक्षिणारी	६० - ६१	६४
शुभासक्तिः	६२ - ६३	६५
तनुमप्या	६४ - ६५	६५
वसनम्	६६ - ६७	६५
सप्ताक्षरम्	६८ - ८३	६५ - ६७
शीर्षा	६८ - ६९	६५
समानिका	७० - ७१	६६
शुभासक्तम्	७२ - ७३	६६
करहृदि	७४ - ७५	६६
शुभारसलता	७६ - ७७	६६
मयुमती	७८ - ७९	६६ - ६७
महसेता	८० - ८१	६७
शुभमतिः	८२ - ८३	६७

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
अष्टाक्षरम्	८४ - १०१	६७ - ६९
विद्युन्माला	८४ - ८५	६७
प्रमाणिका	८६ - ८७	६८
मल्लिका	८८ - ८९	६८
तुङ्गा	९० - ९१	६८
कमलम्	९२ - ९३	६८
माणिक्यकीडितकम्	९४ - ९५	६९
चित्रपदा	९६ - ९७	६९
अनुष्टुप्	९८ - ९९	६९
जलदम्	१०० - १०१	६९
नवाक्षरम्	१०२ - १२४	७० - ७२
रूपामाला	१०२ - १०३	७०
महालक्ष्मिका	१०४ - १०५	७०
सारङ्गम्	१०६ - १०८	७०
पाङ्क्तम्	१०९ - ११०	७१
कमलम्	१११ - ११२	७१
विश्वम्	११३ - ११४	७१
तोमरम्	११५ - ११६	७१
भुजगशिशुसृता	११७ - ११८	७२
मणिमध्यम्	११९ - १२०	७२
भुजङ्गसङ्गता	१२१ - १२२	७२
सुललितम्	१२३ - १२४	७२
दशाक्षरम्	१२५ - १४६	७३ - ७५
गोपालः	१२५ - १२६	७३
संयुतम्	१२७ - १२९	७३
चम्पकमाला	१३० - १३१	७३
सारवती	१३२ - १३३	७३ - ७४
सुयमा	१३४ - १३५	७४
अमृतगतिः	१३६ - १३७	७४
मत्ता	१३८ - १३९	७४
त्वरितगतिः	१४० - १४२	७४ - ७५
मनोरमम्	१४३ - १४४	७५
ललितगतिः	१४५ - १४६	७५

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
एकादशाक्षरम्	१४७ - १८६	७६ - ८७
मासती	१४७ - १४८	७६
वन्धुः	१४९ - १५०	७६
सुमन्वी	१५१ - १५२	७६ - ७७
शालिनो	१५३ - १५४	७७
घातोर्मो	१५५ - १५६	७७
शालिनो-घातोन्म्युपजाति	१५७ - १५८	७८
घमनकम्	१५९ - १६०	७८ - ७९
घण्डिका	१६१ - १६२	७९
सेनिका	१६३ - १६४	७९ - ८०
इन्द्रध्वजा	१६५ - १६६	८०
उपेन्द्रध्वजा	१६७ - १६८	८०
उपजाति	१६९ - १७०	८१
रघोद्धता	१७३ - १७५	८४
स्वापता	१७६ - १७७	८४ - ८५
भ्रमरविलसिता	१७८ - १७९	८५
अनुकूला	१८० - १८१	८६
मोहनकम्	१८२ - १८३	८६
सुकेशी	१८४ - १८५	८६ - ८७
सुधद्रिका	१८६ - १८७	८७
बकुलम्	१८८ - १८९	८७
द्वादशाक्षरम्	१९० - २५४	८८ - १०४
ध्रुपोद्दः	१९० - १९१	८८
भुजङ्गप्रयातम्	१९२ - १९३	८८
सदमीधरम्	१९४ - १९५	८८ - ८९
तीटकम्	१९६ - १९७	८९
सारङ्गकम्	१९८ - १९९	८९
मौक्तिकदास	२०० - २०१	९०
मोदकम्	२०२ - २०३	९०
सुन्दरी	२०४ - २०६	९० - ९१
प्रमिताक्षरा	२०७ - २०९	९१
धन्वन्तरि	२१० - २१२	९१ - ९२
द्रुतविलम्बितम्	२१३ - २१६	९२ - ९३
वंशस्थविला	२१७ - २१८	९३

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
इन्द्रवंशा	२१६ - २२१.	६३ - ६४
षडश्वधिलेम्ब्रवंशोपभाति	२२२	६४-६७
जलोद्धतपतिः	२२३ - २२४	६७
वैश्वदेवी	२२५ - २२६	६७
भग्दाकिनी	२२७ - २२८	६८
कुसुमविधिप्रा	२२९ - २३०	६८ - ६९
तामरसम्	२३१ - २३२	६९
मालती	२३३ - २३४	६९
मणिमाला	२३५ - २३६	१००
जलधरमाला	२३७ - २३८	१००
प्रियवदा	२३९ - २४०	१०१
ललिता	२४१ - २४२	१०१
ललितम्	२४३ - २४४	१०१ - १०२
कामवला	२४५ - २४६	१०२
घसन्तचत्वरम्	२४७ - २४८	१०२
प्रमुदितवचना	२४९ - २५०	१०३
नवमालिनी	२५१ - २५२	१०३
तरलनयनम्	२५३ - २५४	१०३ - १०४
त्रयोदशाक्षरम्	२५५ - २६४	१०४ - ११३
षाराह	२५५ - २५६	१०४
माया	२५७ - २५८	१०४ - १०५
मत्तमयूरम्	२५९ - २६०	१०५ - १०६
तरकम्	२६१ - २६३	१०६
कन्दम्	२६४ - २६५	१०६ - १०७
पङ्कजलिः	२६६ - २६७	१०७
ग्रहपिणी	२६८ - २७०	१०७ - १०८
दधिरा	२७१ - २७२	१०८
घण्टी	२७३ - २७४	१०८
मञ्जुभाषिणी	२७५ - २७६	१०९
चन्द्रिका	२७७ - २७८	१०९
कलहस	२७९ - २८०	११०
मृगेन्द्रमुखम्	२८१ - २८२	११०
क्षमा	२८३ - २८४	११० - १११
सता	२८५ - २८६	१११

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
चन्द्रलेखम्	२८७ - २८८	१११
सुधुतिः	२८९ - २९०	११२
सदमोः	२९१ - २९२	११२
विमलगतिः	२९३ - २९४	११२ - ११३
चतुर्विंशतिक्षरम्	२९५ - ३२९	११३ - १२०
सिंहास्यः	२९५ - २९६	११३
यसन्ततिलका	२९७ - २९९	११३ - ११४
षडम्	३०० - ३०२	११४
असम्बन्धा	३०३ - ३०४	११४ - ११५
अपराजिता	३०५ - ३०६	११५
प्रहरणकलिका	३०७ - ३०९	११५ - ११६
यासन्ती	३१० - ३११	११६
लोला	३१२ - ३१३	११६
नान्दीमुखी	३१४ - ३१५	११७
वेदभो	३१६ - ३१७	११७
इन्दुवदनम्	३१८ - ३१९	११७ - ११८
शरभी	३२० - ३२१	११८
अहिपुतिः	३२२ - ३२३	११८
विमला	३२४ - ३२५	११८ - ११९
मल्लिका	३२६ - ३२७	११९
मणिगणम्	३२८ - ३२९	११९ - १२०
पञ्चदशक्षरम्	३३० - ३७२	१२० - १२८
लोलालेलः	३३० - ३३१	१२०
मालिनी	३३२ - ३३६	१२० - १२१
वामरम्	३३७ - ३३९	१२१ - १२२
धमरावलिता	३४० - ३४२	१२२
मनोहृतः	३४३ - ३४५	१२३
शरभम्	३४६ - ३४७	१२३
मणिगुणनिकरः श्रुम्	३४८ - ३५१	१२३ - १२४
निदिपासकम्	३५२ - ३५४	१२४ - १२५
विपिनतिलकम्	३५५ - ३५७	१२५
अग्रसेना	३५८ - ३५९	१२५
चित्रा	३६० - ३६१	१२६

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
केसरम्	३६२ - ३६३	१२६
एला	३६४ - ३६५	१२६ - १२७
श्रिया	३६६ - ३६८	१२७
उत्सवः	३६९ - ३७०	१२७
उद्दृगणम्	३७१ - ३७२	१२८
पौडशाक्षरम्	३७३ - ४०४	१२८ - १३४
रामः	३७३ - ३७४	१२८
पञ्चचामरम्	३७५ - ३७७	१२९
नीलम्	३७८ - ३७९	१२९
खञ्जला	३८० - ३८२	१३०
मदनससिता	३८३ - ३८४	१३०
षाणिनी	३८५ - ३८६	१३१
प्रवरससितम्	३८७ - ३८८	१३१
गण्डदत्तम्	३८९ - ३९०	१३१ - १३२
चक्रिता	३९१ - ३९२	१३२
गजतुरगविलसितम्	३९३ - ३९४	१३२
शैलसिखा	३९५ - ३९६	१३३
ससितम्	३९७ - ३९८	१३३
मुकेसरम्	३९९ - ४००	१३३
सलना	४०१ - ४०२	१३४
गिरिवरधृतिः	४०३ - ४०४	१३४
सप्तदशाक्षरम्	४०५ - ४४०	१३५ - १४२
सीताधृष्टम्	४०५ - ४०६	१३५
पृथ्वी	४०७ - ४०९	१३५
मात्सावती	४१० - ४११	१३६
सिसरिणी	४१२ - ४१७	१३६ - १३७
हरिणी	४१८ - ४२१	१३७ - १३८
मग्दाप्राग्ता	४२२ - ४२४	१३८ - १३९
वृषापप्रपतितम्	४२५ - ४२६	१३९
मर्दुट्टकम्	४२७ - ४२८	१३९ - १४०
कोकिसकम्	४२९ - ४३०	१४०
हारिणी	४३१ - ४३२	१४० - १४१
भारदाप्राग्ता	४३३ - ४३४	१४१
मत्तङ्गबाहिनी	४३५ - ४३६	१४०

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
पद्यकम्	४३७ - ४३८	१४२
दशमुखहरम्	४३९ - ४४०	१४२
अष्टादशाक्षरम्	४४१ - ४७२	१४३ - १५०
लीलाचन्द्रः	४४१ - ४४२	१४३
मञ्जीरा	४४३ - ४४५	१४३
घचंरी	४४६ - ४५२	१४४ - १४५
क्रीडाचन्द्रः	४५३ - ४५५	१४५ - १४६
कुसुमितलता	४५६ - ४५७	१४६
गन्दनम्	४५८ - ४६०	१४६ - १४७
नाराच	४६१ - ४६२	१४८
चित्रलेखा	४६३ - ४६४	१४८
ध्रुवरपदम्	४६५ - ४६६	१४८
शाङ्खललितम्	४६७ - ४६८	१४८ - १४९
मुललितम्	४६९ - ४७०	१४९
उपवनकुसुमम्	४७१ - ४७२	१४९ - १५०
एकोनविंशाक्षरम्	४७३ - ४८८	१५० - १५५
नागानन्दः	४७३ - ४७४	१५०
शाङ्खलविक्रीडितम्	४७५ - ४७८	१५० - १५१
धन्द्रम्	४७९ - ४८१	१५१
थवलम्	४८२ - ४८५	१५२
शम्भु	४८५ - ४८७	१५२ - १५३
मेघविस्फूर्जिता	४८८ - ४९०	१५३
घाया	४९१ - ४९२	१५३ - १५४
गुरसा	४९३ - ४९४	१५४
पुस्तकाम	४९५ - ४९६	१५४
सूतलकुसुमम्	४९७ - ४९८	१५५
विंशाक्षरम्	४९९ - ५१९	१५५ - १५९
योगानन्दः	४९९ - ५००	१५५
गोतिका	५०१ - ५०३	१५६
गण्डका	५०४ - ५०६	१५६ - १५७
तोभा	५०७ - ५०८	१५७
गुवहना	५०९ - ५११	१५७ - १५८
लक्ष्मणभङ्गमङ्गलम्	५१२ - ५१३	१५८
शान्मुखलितम्	५१४ - ५१५	१५८

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
भद्रकम्	५१६ - ५१७	१५६
धनसधिगुणगणम्	५१८ - ५१९	१५६
एकविंशाक्षरम्	५२० - ५३८	१६०-१६३
ब्रह्मानन्दः	५२० - ५२१	१६०
स्वधरा	५२२ - ५२५	१६० - १६१
मञ्जरी	५२६ - ५२९	१६१
नेरुद्रः	५३० - ५३२	१६१ - १६२
सरसी	५३३ - ५३४	१६२
दधिरा	५३५ - ५३६	१६३
निरुपमविलोकम्	५३७ - ५३८	१६३
द्वाविंशत्यक्षरम्	५३९ - ५५७	१६४-१६७
विद्यानन्दः	५३९ - ५४०	१६४
हृषी	५४१ - ५४३	१६४
मदिरा	५४४ - ५४५	१६५
मग्दकम्	५४६ - ५४७	१६५
निलरम्	५४८ - ५४९	१६५ - १६६
घञ्जुतम्	५५० - ५५१	१६६
मदालसम्	५५२ - ५५५	१६६ - १६७
सदयरम्	५५६ - ५५७	१६७
त्रयोविंशाक्षरम्	५५८ - ५७५	१६७-१७१
विद्यानन्द.	५५८ - ५५९	१६८
सुन्दरिका	५६० - ५६१	१६८
पद्मावतिका	५६२ - ५६३	१६८ - १६९
अद्वितनया	५६४ - ५६७	१६९ - १७०
मासती	५६८ - ५६९	१७०
मल्लिका	५७० - ५७१	१७०
मत्ताकीटम्	५७२ - ५७३	१७१
बनरवसयम्	५७४ - ५७५	१७१
चतुर्विंशाक्षरम्	५७६ - ५८६	१७२ - १७४
रामानन्द.	५७६ - ५७७	१७२
दुमिसका	५७८ - ५८०	१७२
किरीटम्	५८१ - ५८२	१७३
तन्वी	५८३ - ५८५	१७३
माधवी	५८६ - ५८७	१७४

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
तरलनयनम्	५८८ - ५८९	१७४
पञ्चविंशतिश्लोकम्	५९० - ५९८	१७४ - १७६
कामानन्द.	५९० - ५९१	१७४ - १७५
श्रीञ्चददा	५९२ - ५९४	१७५
मल्ली	५९५ - ५९६	१७५ - १७६
मणिगणम्	५९७ - ५९८	१७६
षड्विंशतिश्लोकम्	५९९ - ६१०	१७६ - १७९
गोविन्दानन्द.	५९९ - ६००	१७६ - १७७
भुजङ्गविजृम्भितम्	६०१ - ६०३	१७७
अपवाह	६०४ - ६०६	१७७ - १७८
मागधी	६०७ - ६०८	१७८
कमलदलम्	६०९ - ६१०	१७९
उपसंहार प्रस्तारविण्डसहया ख	६११ - ६१७	१७९ - १८०
द्वितीय प्रकीर्णक-प्रकरणम्	१ - ७	१८१ - १८३
भुजङ्गविजृम्भितस्य चत्वारो भेदा	१	१८१
द्वितीयत्रिभङ्गी	२ - ४	१८२ - १८३
घालूरम्	५ - ६	१८३
उपसंहार	७	१८३
तृतीय दण्डक-प्रकरणम्	१ - १७	१८४ - १८७
चण्डवृष्टिप्रपात	१ - २	१८४
प्रचितक	३ - ४	१८४
अर्णोदय	५ - ७	१८५
सर्वतोभद्र	८ - ९	१८५
अशोककुसुममञ्जरी	१० - ११	१८६
कुसुमस्तवक	१२ - १३	१८६
मत्तमातङ्ग	१४ - १५	१८६
अनङ्गोत्तर	१६ - १७	१८७
चतुर्थ अष्ट-सप्त-प्रकरणम्	१ - ३१	१८८ - १९१
अष्टं सप्तदश-संक्षेपम्	१ - ६	१८८
पुष्टिताप्रा	७ - ११	१८८ - १८९
उपविश्रम्	१२ - १३	१८९
शेषवती	१४ - १५	१८९
हरिणाप्नुता	१६ - १७	१८९

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
स्यपरवचनम्	१८ - २०	१८६ - १९०
मुग्दरी	२१ - २३	१९०
भद्रविराट्	२४ - २५	१९०
केतुमती	२६ - २७	१९१
षाड् भती	२८ - २९	१९१
पट्टपदावली	३०	१९१
उपसंहारः	३१	१९१
पञ्चम विषयवृत्त-प्रकरणम्	१ - २५	१९२ - १९५
विषयवृत्तलक्षणम्	१	१९२
उद्गता	२ - ३	१९२
उद्गताभेदः	४ - ६	१९२
सौरभम्	७ - ८	१९२ - १९३
सलितम्	९ - १०	१९३
भाषः	११ - १२	१९३
वचनम्	१३ - १५	१९३
पद्यवचनम्	१६ - १७	१९४
उपसंहारः	१८ - २५	१९४
षष्ठ्य वैतालीय-प्रकरणम्	१ - ३४	१९६ - २००
वैतालीयम्	१ - ३	१९६
श्रीपञ्चदशकम्	४ - ५	१९६
आपातसिद्धा	६ - ७	१९६
नलिनम्	८ - ९	१९६ - १९७
नलिनमपरम्	१० - ११	१९७
दक्षिणाग्निका-वैतालीयम्	१२ - १४	१९७
उत्तराग्निका-वैतालीयम्	१५ - १६	१९८
प्राथम्यवृत्तिवैतालीयम्	१७ - २०	१९७ - १९८
उद्दीर्घवृत्तिवैतालीयम्	२१ - २३	१९८
प्रवृत्तक वैतालीयम्	२४ - २६	१९८ - १९९
अपरान्तिका	२७ - ३०	१९९
आहृत्सिद्धी	३१ - ३४	१९९ - २००
सप्तमं यतिनिरूपण-प्रकरणम्	१ - १८	२०१ - २०६
अष्टमं गद्यनिरूपण-प्रकरणम्	१ - ९	२०७ - २१०
गद्यानि लक्षणम्	१ - ७	२०७

विषय	पद्यसङ्ख्या	पृष्ठांक
शुद्ध-चूर्णकम्		२०७
श्राविद्ध चूर्णकम्		२०७
ललित चूर्णकम्		२०८
ध्रुवृत्तिमुग्ध चूर्णकम्		२०८
ध्रुवृत्त्यन्तश्चूर्णकम्		२०८
उत्कलिकाप्राय-गद्यम्		२०८ - २०९
वृत्तगन्धि-गद्यम्		२०९
प्रणयान्तरे प्रकारान्तरेण चतुर्विध गद्यम्	८ - ९	२१०
नवम विरुदावली-प्रकरणम्		२११ - २६७
प्रथम कलिका-प्रकरणम्	१ - २२	२११ - २१८
विरुदावली-सामान्यलक्षणम्	१ - ५	२११
द्विधा कलिका	६	२११
राविकलिका	६	२११
माविकलिका	७	२१२
नाविकलिका	७	२१२
गलादिकलिका	७	२१२
मिधाकलिका	८	२१२
मध्याकलिका	८	२१२ - २१३
द्विभङ्गी कलिका	९	२१३
नवधा त्रिभङ्गी कलिका	१० - २२	२१३ - २१८
विदग्धात्रिभङ्गी-कलिका	१२	२१३
सुरगत्रिभङ्गी कलिका	१२	२१३ - २१४
पद्यत्रिभङ्गी कलिका	१२	२१४
हरिणप्लुतत्रिभङ्गी कलिका	१२ - १३	२१४
नक्षत्रत्रिभङ्गी-कलिका	१३	२१४
मुजङ्गात्रिभङ्गी-कलिका	१३ - १४	२१४ - २१५
द्विविधा त्रिगता त्रिभङ्गी-कलिका	१५	२१५
द्विविधा चरतनु-त्रिभङ्गी-कलिका	१६	२१५ - २१६
पङ्क्तिविधा भेदप्रभेदान्विता द्विधादिवा युग्मभङ्गा-कलिका	१७ - २२	२१६ - २१८
विरुदावन्यां द्वितीय चण्डवृत्तप्रकरणम्	१ - ३९	२१९ - २५४
चण्डवृत्तस्य लक्षणम्	१ - २	२१९
परिभाषा	३ - ८	२१९

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
पुरुषोत्तमऽघण्डवृत्तम्	६	२२०
तिलक घण्डवृत्तम्	६ - १०	२२० - २२१
अच्युत घण्डवृत्तम्	१० - ११	२२१ - २२२
धदित घण्डवृत्तम्	११	२२२ - २२४
रणदघण्डवृत्तम्	११ - १२	२२४ - २२५
घोरदघण्डवृत्तम्	१२ - १३	२२५ - २२६
शाकदघण्डवृत्तम्	१३ - १४	२२६
मातङ्गलेखित घण्डवृत्तम्	१४ - १५	२२६ - २२८
उत्पल घण्डवृत्तम्	१५ - १६	२२८ - २२९
गुणरतिदघण्डवृत्तम्	१६	२२९ - २३०
कल्पद्रुमदघण्डवृत्तम्	१६ - १७	२३० - २३१
कन्दसदघण्डवृत्तम्	१७	२३१
अपराजित घण्डवृत्तम्	१८	२३१
नक्षत्र घण्डवृत्तम्	१९	२३१
सरसमात घण्डवृत्तम्	१९ - २०	२३१ - २३२
वेष्टन घण्डवृत्तम्	२० - २१	२३२
अस्त्रलित घण्डवृत्तम्	२१ - २२	२३२
पल्लवित घण्डवृत्तम्	२२ - २३	२३२ - २३३
समप्रघण्डवृत्तम्	२३	२३३ - २३४
तुरगदघण्डवृत्तम्	२३ - २४	२३४ - २३५
पद्मेदहघण्डवृत्तम्	२४ - २५	२३५ - २३७
सितकञ्जादिभेदानां लक्षणम्	२६ - २८	२३७
सितकञ्जघण्डवृत्तोदाहरणम्		२३८ - २३९
पाण्डुरसञ्घण्डवृत्तोदाहरणम्		२३९ - २४०
ह्रदीवरञ्घण्डवृत्तोदाहरणम्		२४० - २४२
अश्याम्भोदहघण्डवृत्तोदाहरणम्		२४२ - २४३
पुस्तान्द्युज घण्डवृत्तम्	२९ - ३०	२४३ - २४४
अपक घण्डवृत्तम्	३१ - ३२	२४५ - २४६
अञ्जुसञ्घण्डवृत्तम्	३२	२४६ - २४७
कुण्डलघण्डवृत्तम्	३३	२४७ - २४८
अकृतमागुरञ्घण्डवृत्तम्	३३ - ३४	२४८ - २४९
अकृतमङ्गलञ्घण्डवृत्तम्	३४ - ३५	२४९ - २५०
मञ्जरी कोरकघण्डवृत्तम्	३६	२५१ - २५२
गुणदकञ्घण्डवृत्तम्	३७ - ३८	२५२ - २५३

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठांक
कुमुदचण्डवृत्तम्	३६	२५३ - २५४
विशुदावल्या तृतीय त्रिभङ्गी-कलिकाप्रकरणम्	१ - ६	२५५ - २५६
दण्डकत्रिभङ्गीकलिका	१ - २	२५५ - २५६
सम्पूर्णा विदग्धत्रिभङ्गीकलिका	३ - ४	२५६ - २५८
त्रिभङ्गीकलिका	४ - ६	२५८ - २५९
विशुदावर्यां चतुर्थ साधारणमत चण्डवृत्त- प्रकरणम्	१ - ४	२६०
विशुदावली	१ - १६	२६० - २६७
साप्तविभक्तिकी कलिका	१ - ७	२६१ - २६२
अभययी कलिका	८ - ९	२६२ - २६४
सर्वलघुक-कलिका	१० - ११	२६४ - २६५
सर्वकलिकासु विशुदानां युगपदेव लक्षणम्	१२ - १८	२६६ - २६७
विशुदावलीपाठफलम्	१९	२६७
दशम खण्डावली प्रकरणम्	१ - ६	२६८ - २७१
खण्डावली लक्षणम्	१	२६८
तामरस खण्डावली	२	२६८ - २७०
मञ्जरी खण्डावली	३	२७० - २७१
प्रकरणोपसंहार	४ - ६	२७१
एकादश दोष प्रकरणम्	१ - ४	२७२
द्वादश अनुक्रमणी-प्रकरणम्		२७३ - २८६
१ प्रथमखण्डानुक्रमणी	१ - ४०	२७३ - २७५
१ गायप्रकरणानुक्रमणी	१ - १५	२७३ - २७४
२ यटपदप्रकरणानुक्रमणी	१५ - १६	२७४
३ रडुप्रकरणानुक्रमणी	२० - २२	२७४
४ पद्मावलीप्रकरणानुक्रमणी	२२ - ३०	२७४ - २७५
५ सर्वैयाप्रकरणानुक्रमणी	३१ - ३३	२७५
६ गलितकप्रकरणानुक्रमणी	३३ - ३८	२७५
छन्द प्रकरणसंख्या च	३९ - ४०	२७५
२ द्वितीयखण्डानुक्रमणी	१ - १८८	२७६ - २८६
१ वृत्तानुक्रमणी	१ - १३७	२७६ - २८५
२ प्रकीर्णकवृत्तानुक्रमणी	१३८ - १४०	२८५ - २८६
३ दण्डकवृत्तानुक्रमणी	१४१ - १४४	२८६

विषय	पद्यसंख्या	पृष्ठाक
४ अद्वैतमवृत्तानुक्रमणी	१४४ - १४८	२८६
५ विषयमवृत्तानुक्रमणी	१४८ - १५१	२८६
६ वंतालीयवृत्तानुक्रमणी	१५१ - १५५	२८६ - २८७
७ यतिप्रकरणानुक्रमणी	१५५ - १५६	२८७
८ गद्यप्रकरणानुक्रमणी	१५६ - १५६	२८७
९. विदधावलीप्रकरणानुक्रमणी	१६० - १८०	२८७ - २८६
(१) कलिकाप्रकरणानुक्रमणी	१६० - १६२	२८७
(२) छण्डवृत्तानुक्रमणी	१६३ - १७३	२८७ - २८८
(३) त्रिभङ्गीकलिकानुक्रमणी	१७३ - १७५	२८८
(४) साधारणछण्डवृत्तानुक्रमणी	१७६ - १७७	२८८
(५) विदधावलीवृत्तानुक्रमणी	१७८ - १८०	२८८ - २८६
१० छण्डावली प्रकरणानुक्रमणी	१८१ - १८२	२८६
११ दोषप्रकरणानुक्रमणी	१८२ - १८३	२८६
१२. छण्डद्वयानुक्रमणी	१८३ - १८८	२८६
ग्रन्थकृत्-प्रशस्तिः	१ - ६	२६० - २६१

टीकाद्वय - क्रम - पञ्जिका

१ वृत्तमौक्तिकवार्तिकदुष्करोद्धार	२६२ - ३२६
(१) प्रथमो विधाम (मात्रोद्दिष्टम्)	२६२ - २६५
(२) द्वितीयो विधाम (मात्रानष्टम्)	२६५ - २६६
(३) तृतीयो विधाम (वर्णोद्दिष्टम्)	२६७ - २६६
(४) चतुर्थो विधाम (वर्णनष्टम्)	३०० - ३०१
(५) पञ्चमो विधाम (वर्णमेक)	३०२ - ३०३
(६) षष्ठो विधाम (वर्णपताका)	३०५ - ३०६
(७) सप्तमो विधाम (मात्रामेव)	३०७ - ३१०
(८) अष्टमो विधाम (मात्रापताका)	३११ - ३१५
(९) नवमो विधाम (वृत्तास्यगुहलघुसंज्ञयाज्ञानम्)	३१५ - ३१७
(१०) दशमो विधाम (वर्णमर्कटी)	३१७ - ३२०
(११) एकादशो विधाम (मात्रामर्कटी)	३२१ - ३२५
वृत्तिप्रशस्ति	३२६
वृत्तमौक्तिकदुर्गमयोध	३२७ - ३६७
मात्रोद्दिष्टप्रकरणम्	३२७ - ३३०
मात्रानष्टप्रकरणम्	३३१ - ३५२
वर्णोद्दिष्ट-नष्टप्रकरणम्	३५३

विषय	पृष्ठांक
घर्णभेदप्रकरणम्	३४४ - ३४५
घर्णपताका-प्रकरणम्	३४६ - ३५१
मात्रामेद-प्रकरणम्	३५२ - ३५६
मात्रापताकाप्रकरणम्	३५७ - ३६०
घर्णमर्कटी-प्रकरणम्	३६१ - ३६२
मात्रामर्कटी-प्रकरणम्	३६३ - ३६६
वृत्तिकृतप्रशस्तिः	३६७

परिशिष्ट - क्रमपञ्जिका

प्रथम परिशिष्ट

टगणादि कला-वृत्तभेद-वारिभाषिक-शब्द-सङ्केत ३६८ - ३७२

द्वितीय परिशिष्ट

३७३ - ३८७

(क) मात्रिक छन्दों का अकारानुक्रम ३७३ - ३७८

(ख) वर्णिक छन्दों का अकारानुक्रम ३७९ - ३८५

(ग) विद्यदावली छन्दों का अकारानुक्रम ३८६ - ३८७

तृतीय परिशिष्ट

३८८ - ४१३

(क) पद्यानुक्रम ३८८ - ४०१

(ख) उदाहरण-पद्यानुक्रम ४०२ - ४१३

चतुर्थ परिशिष्ट

४१४ - ४६६

(क १.) मात्रिक छन्दों के लक्षण एवं नामभेद ४१४ - ४२१

(क २.) गायत्री छन्द-भेदों के लक्षण एवं नामभेद ४२२ - ४२६

(ख) वर्णिक छन्दों के लक्षण एवं नामभेद ४३० - ४५०

(ग) छन्दों के लक्षण एवं प्रस्तारसंख्या ४५१ - ४६१

(घ) विद्यदावली छन्दों के लक्षण ४६२ - ४६६

पञ्चम परिशिष्ट

सन्दर्भ-प्रश्नों में प्राप्त वर्णिक वृत्त ४६७ - ५१२

षष्ठ परिशिष्ट

गाथा एवं दोहा-भेदों के उदाहरण ५१३ - ५१८

सप्तम परिशिष्ट

प्रण्योद्धृत-प्रण्य-तालिका ५१९ - ५२१

अष्टम परिशिष्ट

छन्दः शास्त्र के प्रण्य और उनकी टीकायें ५२२ - ५३४

सहायक-प्रण्य ५३५ - ५३८

भूमिका

छन्दःशास्त्र का उद्भव और विकास

किसी पदार्थ के श्रायतन को उसका छन्द कहा जाता है । छन्द के बिना किसी भी वस्तु की अवस्थिति इस ससार में संभव नहीं है । मानव-जीवन को भी छन्द कहा जाता है । सात छन्दों या मर्यादाओं से जीवन मर्यादित है । छन्द या मर्यादा के कारण ही मनुष्य स्व और पर की सीमाओं में बधा हुआ है । स्वच्छन्दत्व उसे प्रिय होता है परच्छन्दत्व नहीं । मनुष्य स्वकीय छन्दों या सीमाओं को विस्तृत करता हुआ, स्वतन्त्रता के मार्ग का अनुशीलन करता हुआ अपने जीवन का उद्देश्य प्राप्त कर लेता है ।

छन्द पद का निर्वचन—

छन्द और छन्दस् पदों की निरुक्ति क्षीरस्वामी ने 'छन्द' धातु से बतलाई है । अन्य व्युत्पत्तियों के अनुसार छन्द शब्द 'छदिर् ऊर्जने, छदि सवरणे, चदि आह्लादने दीप्तौ च, छद सवरणे, छद अपवारणे' धातुओं से निष्पन्न है ।^१ वस्तुतः इन धातुओं से निष्पन्न शब्द विभिन्न अर्थों में पृथक्-पृथक् रूप से प्रयुक्त होते रहे होंगे । कालांतर में ये शब्द छन्द और छन्दस् शब्द-रूपों में खो गये । यास्क ने 'छन्दासि छादनात्'^२ कह कर आच्छादन के अर्थ में प्रयुक्त छन्द शब्द का अस्तित्व माना है । सायण ने ऋग्वेद-भाष्यभूमिका में 'आच्छादकत्वाच्छन्दं' कथन द्वारा यास्क का समर्थन किया है । छान्दोग्योपनिषद् की एक गाथा के अनुसार देव मृत्यु से डर कर भयो-विद्या में प्रविष्ट हुए । वे छन्दों से आच्छादित हो गये । आच्छादन करने से ही छन्दों का छन्दत्व है ।^३ ऐतरेय आरण्यक के अनुसार स्तोत्रों को आच्छादित करके छन्द पापकर्मों से रक्षित करते हैं ।^४ इन स्थानों पर आच्छादन अर्थ वाला छन्द शब्द प्रयुक्त हुआ है । असीम चैतन्य-सत्ता को सीमाओं या मर्यादाओं में बाध कर ससीम बना देने वाली प्रकृति भी आच्छादन करने के कारण ही छन्द कहो जाती है । वैदिक-दर्शन के श्रुमार छन्द 'वाक्-विराज्' का भी नाम है जो सात्य की प्रकृति या वेदात् की माया के

१-वैदिक छन्दोमीमासा, — प० शुधिविठ्ठर मोमासक, पृ० ११-१३.

२-नित्यत ७।१२

३-छान्दोग्योपनिषद् १।४.२; तुलनीय गार्ग्य का उपनिषद् सूत्र ८।२

४-ऐतरेय आरण्यक २।२

समकक्ष है। सारा विश्व इसी से विवक्षित होता है। आच्छादनभाव को स्पष्ट करने के लिए 'छदिच्छन्द' नाम का विशेष रूप से इसमें उल्लेख किया गया है।^१ यह एक छन्द ही विविध रूपों में एक से अनेक हो जाता है। इन विभिन्न छन्दों में आत्मा आच्छादित हो कर व्याप्त हो जाती है। आत्मा 'छन्दोमा' के रूप में विविध छन्दों को प्रकाशित करती है।^२ छन्द से छन्दित छन्दोमा स्वयं छन्द है और ज्योतिस्वरूप होने से उसका सम्बन्ध दीप्ति से तथा आनन्दस्वरूप होने से आह्लाद से भी जुड़ जाता है। यदि धातु से निष्पन्न छन्द (मूल रूप चन्द) का प्रयोग ऐसे प्रसंगों में होता रहा ज्ञात होता है। प्राण (प्राणा वै छन्दासि)^३, सूर्य (छन्दासि वै ब्रजो गोस्थान)^४ और सूर्य रश्मियो (ऋग्वेद १।६२।६) को छन्द कहने का कारण भी दीप्तियुक्त होना ही ज्ञात होता है। लोक में भी गायत्री आदि पद्य, वेद, धार्मिकग्रन्थ, संहिता, इच्छा, अनियन्त्रित आचार आदि^५ अर्थों में प्रयुक्त छन्द शब्द देखा जाता है। ये सब एक छन्द शब्द के विविध अर्थ हैं नहीं, वरन् इन-इन अर्थों में प्रयुक्त अलग-अलग शब्द हैं। किसी समय इसका सूक्ष्म भेद सुविज्ञान था। स्वर आदि द्वारा यह भेद स्पष्ट कर दिया जाता था। कालान्तर में अन्ध शब्दों की तरह^६ ये सारे शब्द एक छन्द शब्द में श्लिष्ट हो गये और उनके स्वर-चिह्नों में भी उदात्तादि प्रबल स्वरों में अपना अस्तित्व खो दिया।

साहित्य में छन्द—

ऊपर छन्द के विविध अर्थों में एक गायत्री आदि छन्द का भी उल्लेख किया गया है। वाङ्मय में छन्द का विशिष्ट महत्त्व है। कात्यायन के अनुसार सारा वाङ्मय छन्दोरूप है - छन्दोमूलमिदं सर्वं वाङ्मयम्।^७ छन्द के बिना वाक् उच्चरित नहीं होती।^८ कोई शब्द छन्द रहित नहीं होता।^९ इसीलिए गद्य और पद्य दोनों को छन्दोयुक्त माना जाता है।^{१०}

१-वैदिक दशम — डा० फतहसिंह, पृष्ठ १८२-१८३

२-वैदिक दर्शन पृ० १८४ तथा उसमें उद्धृत ताण्ड्य महाश्रावण १४।१।११४

३-कीपीतक शास्त्रस्य ७।६, ११।८ १७।२

४-तैत्तिरीय ऋण ३।१।६ ३

५-वैदिक छन्दोमीमांसा पृ० ७-८

६-शब्दों के विकास का ऐतीहासिक प्रमाण के लिए देखें— ऋग्वेद में 'गोतस्व'— बर्हीप्रसाद पञ्चोली

७-ऋग्वेदस्य परिशिष्ट ५, पृ० ३०३ छन्दोमास्य जयकीर्ति, १।२

८-नाच्छन्दसि वागुच्चरति इति — निरुक्त ७।२, दुर्गाहति

९-छन्दोमीमांसा शब्दोपनिषत् — नाट्यशास्त्र १४।१५

१०-वैदिक छन्दोमीमांसा पृ० ८

छन्द की परिभाषा करते हुए कात्यायन ने ऋक्सर्वानुक्रमणी में अक्षर के परिमाण को छन्द कहा है—यदक्षरपरिमाण तच्छन्दः । अन्यत्र अक्षर सस्या का नियामक छद कहा गया है ।^१ छन्द का महत्व केवल अक्षर-ज्ञान कराना मान नहीं है । ऊपर के निर्वचनों पर विचार करने पर भावों को आच्छादित करके अपने में सीमित करने वाली शब्द-सघटना को साहित्य में छन्द कह सकते हैं । अर्थ को प्रकाशित करके अर्थचेता को आह्लादयुक्त कर देने में छन्द का छदत्व प्रकट होता है ।

वैदिक छद मंत्रों के अर्थ प्रकट करने की विशेष शैली प्रक्रिया के द्योतक हैं । वेदों के व्याख्याकारों ने इस बात पर जोर दिया है कि ऋषि, देवता और छद के ज्ञान के बिना मंत्रों के अर्थ उद्भासित नहीं होते । देवता मंत्रों के विषय हैं, ऋषि वे सून हैं जिनसे अर्थ सरलतया प्रकट हो जाते हैं और छद अर्थप्राप्ति की प्रक्रिया का नाम है ।^२ छदों की अर्थ प्रकट करने की विशिष्ट प्रक्रिया के कारण ही वैदिक-शैली को 'छादस्' कहा गया है । पारसी धर्म-ग्रन्थ 'जेन्द अवस्ता' का जेन्द नाम भी छद का अपभ्रष्ट रूप ज्ञात होता है ।

ब्राह्मण ग्रन्थों में छादस्-प्रक्रिया का बड़ा ही सूक्ष्म व रहस्यात्मक वर्णन देखने को मिलता है । वहाँ छदों के नामों द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि-प्रक्रिया को समझाने का प्रयत्न किया गया है । सब से अधिक रहस्यात्मक वर्णन गायत्री छद का है जो सूर्यलोक से प्राप्त होने वाले सावित्री प्राण का प्रतीक बन गया है । छदों का रहस्यात्मक वर्णन स्वतंत्र रूप से अनुसंधान का विषय है । यहाँ छद के व्यावहारिक रूप पर ही विचार किया जा रहा है ।

व्यावहारिक दृष्टिकोण से छद अक्षरों के मर्यादित प्रक्रम का नाम है । जहाँ छद होता है वही मर्यादा आ जाती है ।^३ मर्यादित जीवन में ही साहित्यिक छद जैसी स्वस्थ-प्रवाहशीलता और लयात्मकता के दर्शन होते हैं । मर्यादित इच्छा की अभिव्यक्ति प्राचीन गणराज्यों की जीवन्त छद परम्परा Voting System^४ कही जाती है ।

भावों का एकत्र सवहन, प्रकाशन तथा आह्लादन छद के मुख्य लक्षण हैं । इस दृष्टि से रुचिकर और श्रुतिप्रिय लययुक्त वाणी ही छद कही जाती है—

१—छ दोऽक्षरसख्यावच्छेदकमुच्यते — अथर्ववेदीय बृहत्सर्वानुक्रमणी

२—ऋग्वेद के मन्त्रद्रष्टा ऋषि — बट्टीप्रसाद पचौली, वेदवाणी, बनारस । १५।१

३—वेदविद्या — डॉ० बासुदेवशरण अग्रवाल, पृ० १०२

४—प्राचीन भारत में गणतान्त्रिक व्यवस्था — बट्टीप्रसाद पचौली, शोधपत्रिका उदयपुर, १५।१

‘छदयति पृणाति रोचते इति छद ।’-जिस वाणी को सुनते ही मन आह्लादित हो जाता है वह वाणी ही छद है—‘छदयति आह्लादयति छद्यते अनेन इति छद ।’

स्पष्ट है कि छद के रूप में अक्षर-मर्यादा का निर्वाह करने का सम्बन्ध शब्द-सघटना से है और प्रकाशन एवं आह्लादन का सम्बन्ध अर्थ के साथ है । इसी तरह छद के प्रथम दो लक्षणों का सबंध वक्ता से होता है और तृतीय का श्रोता से । इस दृष्टि से छद, श्रोता और वक्ता के बीच में प्रभावशाली सेतु का काम करता है । शतपथब्राह्मण में ‘रसो वै छदासि’^१ कह कर छद की रागात्मिका अनुभूति और अभिव्यक्ति की ओर स्पष्ट संकेत किया गया है ।

छन्दशास्त्र—

छदशास्त्र में छदों का विवेचन किया जाता है । भारतवर्ष में वैदिक तथा लौकिक संस्कृत भाषा के छदों पर विचार अत्यन्त प्राचीन काल से ही प्रारम्भ हो गया था । वैदिक छन्दोमीमासा में छदशास्त्र का आदि मूल वेद माना गया है ।^२ छदशास्त्र के प्राचीन संस्कृत-वाङ्मय में प्रयुक्त अनेक नामों का उल्लेख भी इसमें है । यथा—

(१) छदोविचिति, (२) छदोमान, (३) छदोभाषा, (४) छदोविजिति, (५) छदोनाम, (६) छदोविजिति, छदोविजित, (७) छदोव्याख्यान, (८) छदसा विचय, (९) छदसा लक्षणम्, (१०) छदशास्त्र, (११) छदोऽनुशासन, (१२) छदोविवृति, (१३) वृत्त, (१४) पिगल ।^३

छदोविचिति पद का अर्थ है—वह ग्रन्थ जिसमें छदों का चयन किया गया हो । यह पद पाणिनि के गणपाठ, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, सरस्वतीकण्ठाभरण, गणरत्नमहोदधि आदि में प्रयुक्त हुआ है । पिगलप्रोक्त छदोविचिति, पतञ्जलि-प्रोक्त छदोविचिति, जनाश्रयप्रोक्त छदोविचिति, दण्डिप्रोक्त छदोविचिति तथा एक अन्य पालिभाषा के छदोविचिति का नामोल्लेख श्रीमीमांसकजी ने किया है ।^४

छदोमान नाम भी ग्रथवाची है । पाणिनि के गणपाठ, सरस्वतीकण्ठाभरण आदि में यह नाम प्रयुक्त हुआ है, परन्तु अभी तक इस नाम का कोई ग्रथ नहीं

१-संस्कृत साहित्य का इतिहास — वाचस्पति गैरोला, पृ० ११०

२-शतपथ ब्राह्मण ७।३।१।३७

३-वैदिक छदोमीमासा, प० युधिष्ठिर मीमांसक, पृ० ४३

४- , , ३५

५- " " ३६

मिला है। जिस ग्रन्थ में छंदों का भाषण या व्याख्यान मिलता हो उसे छंदोभाषा कहा गया है। गणपाठों में यह नाम आया है।^१ ऐसी भी मान्यता है कि छंदोभाषा नाम प्रातिशाख्यों के लिए प्रयुक्त हुआ है।^२ विष्णुमित्र ने ऋक्संप्रातिशाख्य की वृत्ति में छंदोभाषा शब्द का अर्थ वैदिक भाषा किया है। कुछ अन्य लोगो ने छंद का अर्थ छंद शास्त्र तथा भाषा का अर्थ व्याकरण या निरुक्त किया है।^३ परन्तु प० युधिष्ठिर मीमांसक ने इन मतों को निराकृत करके छंदोभाषा-नामक छंद शास्त्र के ग्रन्थों का अस्तित्व माना है उन्होंने भी इस नाम को चरणव्यूह आदि में प्रातिशाख्य के लिए प्रयुक्त माना है।^४

जिस ग्रन्थ द्वारा छंदों पर विजय प्राप्त हो सके उसे छंदोविजिति कहा जाता है। चांद्र गणपाठ, जनेन्द्र गणपाठ, सरस्वतीकण्ठाभरण आदि में यह नाम प्रयुक्त हुआ है। छंदोनाम के लिए मीमांसकजी ने समावना प्रकट की है कि यह छंदोमान का शपथश हो सकता है। छंदोव्याख्यान, छंदमा विचय, छंदसा लक्षण, छंदो-जुशासन, छंद शास्त्र आदि भी छंदोविषयक ग्रन्थों के नाम हैं। वृत्त पद के आघार पर वृत्तरत्नाकर आदि ग्रन्थों के नामकरण किए गये हैं। हमारे विवेच्य ग्रन्थ वृत्तमोहितक का नाम भी इसी परम्परा में उल्लेखनीय है।

छन्द शास्त्र के लिए पिंगल-नाम छंद शास्त्र के प्रमुख आचार्य पिंगल के कारण ही प्रयुक्त हुआ जात होता है।^५ पिंगल नाम के अनेक प्राकृतभाषा के ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

छन्द शास्त्र की प्राचीनता—

वैदिक छंदों के नाम सर्वप्रथम वैदिक संहिताग्राम ही प्रयुक्त हुए हैं। वैदिक षडगो में छंद शास्त्र का नाम भी आता है। वेदमंत्रों के साथ उनके छंदों का नामोल्लेख भी हुआ है। उनका विशुद्ध और लयबद्ध उच्चारण छंद शास्त्र के ज्ञान से ही सम्भव है। इसलिए वेदार्थों के विषय में विवेचन करने वाले सभी ग्रन्थों में छंदों का भी प्रसंगवश उल्लेख मिल जाता है।

पाणिनि ने गणपाठ में छंद शास्त्र-सम्बन्धी ग्रन्थों का उल्लेख किया है। उनके समय में तो लौकिक सस्कृत भाषा में महाकाव्या की रचनाएँ लिखी जाने लगी

१-वैदिक छंदोमीमांसा पृ० ३७

२-सस्कृत साहित्य का इतिहास — गैरोना पृ० १२१

३-ग्रन्थ मतों के लिए देखो — वैदिक छंदोमीमांसा, पृ० ३७-३९

४-वैदिक छंदोमीमांसा, पृ० ३९-४०

५- " " ४२

थी । इसलिए वैदिक छंदों के अतिरिक्त लौकिक छंदों पर भी विवेचना होने लगी होगी और इस विषय के अनेक ग्रंथ विद्यमान होंगे । विद्वानों की मान्यता है कि छंद शास्त्र के प्रमुख आचार्य पिंगल पाणिनि के समकालीन थे । छंद शास्त्र के विकास में पिंगल का वही स्थान है जो व्याकरण-परम्परा में पाणिनि का है । तण्डी यास्क, कौष्टुकि, सैतव, काश्यप, रात, माण्डव्य आदि आचार्य पिंगल से भी प्राचीन हैं ।^१ इससे छंद शास्त्र की अतिप्राचीनता के विषय में किसी प्रकार कोई सदेह नहीं रह जाता है ।

छन्दशास्त्र के प्राचीन आचार्य—

वेदांगों के प्रवक्ता शिव और बृहस्पति माने जाते हैं । महाभारत के एक उल्लेख के अनुसार वेदांगों का प्रवचन बृहस्पति ने^२ तथा एक दूसरे उल्लेख के अनुसार शिव ने^३ किया । परवर्ती ग्रंथकारों ने छंद शास्त्र के प्रवक्ता आचार्यों की परम्परा का उल्लेख किया है । छंदसूत्र भाष्य के अन्त में यादवप्रकाश ने छंदशास्त्र के प्रवर्तक आचार्यों की परम्परा का उल्लेख किया है —

छंदोज्ञानमिदं भवाद् भगवतो लेभे सुराणां गुरु
तस्माद् दुश्च्यवनस्ततो सुरगुरुमाण्डव्यनामा तत ।
माण्डव्यादपि सैतवस्तत ऋषिर्वास्किस्तत पिंगल,
तस्येदं यज्ञसा गुरोर्भुवि घृतं प्राप्यास्मदाद्यं क्रमात् ॥

इसी ग्रंथ के अंत में किसी का एक अन्य श्लोक भी दिया हुआ है —

छन्दशास्त्रमिदं पुरा त्रिनयनाल्लेभे गुहोऽनादित
तस्मात् प्राप सनत्कुमारमुनितस्तस्मात् सुराणां गुरु ।
तस्माद्देवपतिस्तत फणिपतिस्तस्माच्च सत्पिंगल
तच्छिष्यैर्बहुभिर्महात्मभिरयो मह्यं प्रतिष्ठापितम् ॥^४

प० युधिष्ठिर मीमांसक ने इनमें से प्रथम परम्परा को अधिक विश्वसनीय माना है । उ होने राजवार्तिक में उल्लिखित —

शिवगिरिजानन्दिफणीन्द्रबृहस्पतिच्यवनशुकमाण्डव्या ।
सैतवपिंगलगरुडप्रमुखा आद्या जयन्ति गुरुचरणा ॥

१—वैदिक छंदोमीमांसा पृ० ४६

२—वेदांगानि तु बृहस्पति — महाभारत, शांतिपर्व २१२।३२

३—वेदात् पठगायुदयस्य — महाभारत, शान्तिपर्व २८४।६२

४—उपयुक्त मतों के लिए द्रष्टव्य, वैदिक छंदोमीमांसा, पृ० ५७

तथा यति के प्रसंग में छंद शास्त्र-प्रवक्ता जयकीर्ति द्वारा उल्लिखित—

वाछन्ति यति पिगलवसिष्ठकौडिन्यकपिलकम्बलमुनय ।

नेच्छन्ति भरतकोहलमाण्डव्याश्वतरसंतवाद्या केचित् ॥

परम्पराओं का उल्लेख भी किया है।^१

पिगल छंद सूत्र में उल्लिखित आचार्यों का नाम ऊपर आ चुका है। इससे प्रकट है कि आचार्य पिगल से पहले छंद शास्त्र के प्रवक्ताओं की एक व्यवस्थित एवं अविच्छिन्न परम्परा विद्यमान थी।

वैदिक और लौकिक छंद शास्त्र

छंद दो प्रकार के कहे गये हैं—वैदिक और लौकिक।^२ वेद संहिताओं में प्रयुक्त गायत्री, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, जगती, पक्ति, उष्णिक्, बृहती, विराट् आदि छंद वैदिक कहे जाते हैं। छंद शास्त्र के प्रारम्भिक ग्रंथों में केवल वैदिक छंदों और उनके भेद प्रभेदों पर ही विचार किया जाता था। बाद में वाल्मीकि ने लौकिक साहित्य में भी छंद का प्रयोग किया। उन्हें आदि-कवि होने का श्रेय मिला। इतिहास पुराण, काव्य आदि में छंदों का प्रभूत रूप से प्रयोग होने लगा। बाद में इन छंदों के लक्षणादि के विषय में छंद शास्त्र में विचार प्रारम्भ हुआ। संस्कृत-छंद शास्त्रों के आधार पर परवर्ती काल में प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं में छंदों के लक्षण ग्रंथ भी लिखे गये।

छंद के विषय में उपलब्ध प्राचीनतम सामग्रियाँ

वैदिक संहिताओं में गायत्री आदि छंदों के नाम अनेकधा उल्लिखित हैं परन्तु उनका विवेचन वहाँ प्राप्त नहीं होता। वस्तुतः उन स्थलों पर छंदों के नामों द्वारा आधिदैविक और आध्यात्मिक रहस्यों की ओर ही संकेत किया गया ज्ञात होता है। मंत्रों के ऐसे संकेतों का ब्राह्मण-ग्रंथों में विस्तार से स्पष्टीकरण किया गया है। विराट् छंद का संबन्ध विराज-गी (प्रकृति) से बतलाते हुए ताण्ड्य-महाब्राह्मण में उसे छंदों में ज्योतिस्वरूप कहा गया है—विराज वै छन्दसा ज्योति।^३ विराट् को दशाक्षरा भी कहा गया है।^४ अन्य छंदों के विषय में भी ऐसे ही रहस्यमय विचार ब्राह्मण-ग्रंथों में मिलते हैं।

१—जयकीर्तिकृत छंदोमुत्पासन, १।१३ एवं वैदिक छंदोमीमांसा पृ० ५८

२—नारदपुराण—पूव भाग २।५७।१

३—ताण्ड्यमहाब्राह्मण, ६।३।६, १०।२।२

४—दशाक्षरा वै विराट्—सतपथब्राह्मण, १।१।१।२२, ऐतरेयब्राह्मण ६।२०; गोपथब्राह्मण

पूर्वार्ध ४।२४, उत्तरार्ध, १।१८, ६।२, ६।१५; ताण्ड्यमहाब्राह्मण, ३।१।३

ऋग्वेद-प्रातिशाख्य को छंद शास्त्र की प्राचीनतम रचना माना जाता है । यह महर्षि शौनक की रचना है । इसका विवेच्यविषय व्याकरण है परन्तु प्रसंग-वश छंदों की भी चर्चा की गई है । यह चर्चा नितांत ग्रथूरी है । छंदों का ज्ञान प्राप्त किये बिना मंत्रों का उच्चारण ठीक तरह से नहीं हो सकता । इसीलिए इस ग्रंथ में छंदों का विवरण दिया गया है ।^१

ऋग्वेद तथा यजुर्वेद की सर्वानुक्रमणियों में भी छंदों का विवरण मिलता है । छंदोऽनुक्रमणी में दस मंडल हैं और उसमें ऋग्वेद के समस्त छंदों का क्रमशः विवरण दिया गया है । यह भी शौनक की रचना है । शांखायन श्रौतसूत्र में भी प्रसंगवश छंदों पर विचार किया गया है ।

पतञ्जलि ने निदानसूत्र में छंदों का उल्लेख करते हुए कुछ प्राचीन छंद-शास्त्र के प्रवक्ताओं के नामों का उल्लेख भी किया है । ये पतञ्जलि महाभाष्कार पतञ्जलि से भिन्न कोई प्राचीन आचार्य थे । एक अन्य गार्ग्य नामक आचार्य ने उपनिदानसूत्र में इन पतञ्जलि के अतिरिक्त तण्डिब्राह्मण, विंगल आदि आचार्यों तथा उक्थशास्त्र का उल्लेख किया है । उक्थशास्त्र, संभव है छन्दशास्त्र के लिए प्रयुक्त कोई प्राचीन नाम रहा हो । कीथ ने हलामुद्रकोश की साक्षी से इन वैदिक-परम्परा के प्राचीन ग्रंथों को वेदांग छन्दस् कहा है ।^२

यास्व ने अपने निरुक्त में वैदिक छंदों के नामों का निर्वचन किया है । यथा —

गायत्री गायत्री स्तुतिकर्मणः । त्रिगमना वा विपरीता । गायत्री मुज्जात् उदपतत् इति च ब्राह्मणम् । उष्णिगुत्सनाता भवति । स्निह्यतेर्वा इवात्कार्तिकर्मण । उष्णीषिणी देव्योपमिकम् । उष्णीव इनापते । ककुप्ककुभिनी भवति । ककुप्च कुञ्जश्च कुजतेर्वा । उञ्जतेर्वा । धनुष्टुधनुष्टोभनात् । पापत्रोमेय त्रिपदां ततीं चतुर्थेन पादेनानुष्टोभतीति इति च ब्राह्मणम् । बृहती परिवहेणात् । पंक्ति पञ्चपदा । त्रिष्टुबस्तोभत्युत्तरपदा । का तु त्रिता इयात् । तीर्णतम छन्दः । त्रिद्व्यञ्ज्यस्तस्य स्तोभतीति वा । यत् त्रिरस्तोभ-सतिष्टुत्परम् — इति विज्ञायते । जगती गततम छन्दः । जलचरगतिर्वा । अहगत्यमानो प्रसृजत् इति च ब्राह्मणम् । विराड् विराजनाद्वा । विराघनाद्वा । विप्रापणाद्वा । विरा-कनासम्पूर्णाभरा । विराघनाद्वा । विप्रापणादपिकाक्षरा । पिपीलिकामध्येयो-पमिश्म् । पिपीलिकाः पेलतेर्गतिकर्मण ।^३

१-वैदिक-साहित्य — रामगोविंद त्रिवेदी, पृ० २४०

२-संस्कृत-साहित्य का इतिहास — कीथ (हिंदी अनुवाद, चौखम्बा) पृ० ४६२

३-निरुक्त, ७।।२

यास्क ने गायत्री को अग्नि के साथ, त्रिष्टुप् को इन्द्र के साथ तथा जगती को आदित्य के साथ भाग लेने वाला कहा है।^१

छंदों का देवों के साथ संबंध तो वाजसनेयी-संहिता आदि में भी मिलता है।^२ वैदिक छंदों के इस प्रकार के विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि रहस्यमिश्रित वर्णन से भी छंदों के स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है और वेदार्थ-ज्ञान में उनकी उपयोगिता भी कम नहीं है। पाणिनि ने तो छंद को वेद का पाद कहा है—‘छन्दः पादो तु वेदस्य’।^३

पिंगल के पूर्ववर्ती छन्दःशास्त्र के आचार्य—

पिंगल से पूर्व का कोई ग्रंथ छंदों के विषय में प्राप्त नहीं है, परन्तु उनके पूर्ववर्ती अनेक ग्रंथकारों के नाम मिलते हैं। इससे पता चलता है कि उनके पूर्व छंदःशास्त्र की एक अविच्छिन्न परम्परा विद्यमान थी। उनके पहले के कुछ आचार्यों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

१ शिव व उनका परिवार—

शिव को छंदःशास्त्र के प्रवर्तक आदि आचार्य के रूप में यादवप्रकाश और राजवातिककार ने स्मरण किया है। व्याकरण के आदि आचार्य भी शिव माने जाते हैं। संभव है ये केवल शैव-सम्प्रदाय में ही प्रवर्तक माने जाते हों। वेदांगों के शैव या माहेश्वर-सम्प्रदाय का प्राचीन काल में महत्वपूर्ण स्थान रहा ज्ञात होता है। शिव के साथ उनके पुत्र गृह व पत्नी पार्वती का नाम भी छंदःशास्त्र के प्रवक्ता के रूप में लिया जाता है। नन्दी शिव का याहन माना जाता है। संभव है यह किमी शिव-भक्त आचार्य का नाम रहा हो। राजवातिककार के अनुसार ये पतञ्जलि के गुरु तथा पार्वती के शिष्य थे। वात्स्यायन ने कामशास्त्र के आचार्य के रूप में भी नन्दी के नाम का उल्लेख किया है जो शिव के अनुचर थे।^४

२. सनत्कुमार—

यादवप्रकाश के भाष्य के अन्त में दी हुई अज्ञान लेखक की परम्परा में

१-निरुक्त ७।८-११

२-वाजसनेयी-संहिता १४।१८-१९; मंत्रायणी-संहिता ५।११९; षाटन-संहिता १७ ३-४; जैमिनीय-ब्राह्मण ६६

३-पाणिनीय-शिक्षा ४१

४-कामयूत्रम्, १।१।८

इनका नाम भी उल्लिखित है। कालक्रम से ये बृहस्पति के पूर्ववर्ती रहे होंगे। उपर्युक्त साक्षी से तो ये बृहस्पति के गुरु ठहरते हैं। परन्तु, इस बात की पुष्टि किसी अन्य सूत्र से होती नहीं जान पड़ती।

३ बृहस्पति—

इनका नाम उपर्युक्त तीनों परम्पराओं में आया है। व्याकरण के बार्हस्पत्य-सम्प्रदाय का अस्तित्व प० युधिष्ठिर मीमांसक ने माना है।^१ महाभारत की ऊपर दी हुई साक्षी से वेदांगों के प्रवर्तक बृहस्पति हैं। ये माहेश्वर सम्प्रदाय से भिन्न परम्परा के प्रवर्तक ज्ञात होते हैं। बृहस्पति को भारतीय परम्परा में देव-गुरु माना गया है और इन्द्र इनके शिष्य कहे गये हैं।

४ इन्द्र—

ऐन्द्र-व्याकरण के प्रवक्ता इन्द्र का छन्दशास्त्र के प्रवक्ता के रूप में भी उल्लेख किया जाता है। यादवप्रकाश के भाष्य की दोनों परम्पराओं में इन्द्र का नाम आया है। राजवातिक के अनुसार फणीन्द्र ही इन्द्र ज्ञात होता है। प० युधिष्ठिरजी ने फणीन्द्र को पतञ्जलि का नाम माना है और च्यवन को दुश्च्यवन मान कर इन्द्र से अभिन्न मानने की सम्भावना प्रकट की है।^२ इस विषय में अभी निश्चय-पूर्वक कुछ भी कहना संभव नहीं है।

५ शुक्र—

यादवप्रकाश व राजवातिक दोनों में शुक्र का नाम आया है। सम्भव है शुक्रनीति के प्रवक्ता आचार्य शुक्र और छन्दशास्त्र के प्रवक्ता शुक्र अभिन्न हों।

७ कपिल—

इनको मीमांसकजी ने श्रुतयुग का अन्तिम आचार्य माना है। जयकीर्ति के छन्दशास्त्र में यति चाहने वाले आचार्य के रूप में इनका नामोल्लेख किया गया है। सौख्यदर्शन के आचार्य कपिल और ये अभिन्न ज्ञात होते हैं।

८ माण्डव्य—

माण्डव्य के नाम का उल्लेख विगल, जयकीर्ति, यादवप्रकाश, चन्द्रशेखर भट्ट पादि द्वारा किया गया है। इनको मीमांसक जी ने त्रेतायुगीन माना है।

१-बंदिब-दण्डीमीमांसा, पृ० ११-१४

२- " " " १८-१९

६. वसिष्ठ—

जयकीर्ति ने इनका नाम छंद शास्त्र के आचार्य के रूप में लिया है ।

१०. सैतव—

इनका नाम सभी परम्पराओं में आया है । ऐसा ज्ञात होता है कि ये बहुत प्रसिद्ध आचार्य रहे होंगे ।

११. भरत—

ये नाट्यशास्त्र-कर्त्ता भरत से अभिन्न ज्ञात होते हैं । जयकीर्ति ने छन्द शास्त्र के प्रवक्ता के रूप में इनके नाम का स्मरण किया है । नाट्यशास्त्र के १४वें तथा १५वें परिच्छेद में भरत ने छन्दों पर विचार किया है । सम्भव है इनका कोई पृथक् ग्रन्थ भी इस विषय पर रहा हो ।

१२. कोहल—

कोहल का नामोल्लेख भी जयकीर्ति ने ही किया है ।

द्वापरयुगीय अन्य छन्द-प्रवक्ता—

मीमांसकजी ने यास्क, रात, श्रौटुकि, कौण्डिन्य, ताण्डी, अश्वत्थर, कम्बल, काश्यप, पाचाल (वाभ्रव्य) तथा पतञ्जलि को द्वापरकालीन छन्द-शास्त्र के आचार्य के रूप में विभिन्न साक्षियों के आधार पर स्वीकार किया है ।^१ यास्क के किसी पृथक्-छन्द सबधी ग्रन्थ का पता नहीं चलता । अन्य आचार्यों के मतों का ही यत्र-तत्र उल्लेख मिलता है ।

कलियुग के प्रारम्भ में होने वाले छन्द-प्रवक्ता—

मीमांसकजी ने उपन्यशास्त्रकार, शात्यायन, गरुड, गार्ग्य, शौनव आदि का कलियुग के प्रारम्भ में होने वाले छन्द शास्त्र-प्रवक्ताओं के रूप में नामोल्लेख किया है । पिगल का काल भी उन्होंने यही माना है ।

उपर्युक्त छन्द-शास्त्र-प्रवक्ताओं के कोई ग्रन्थ इस समय प्राप्त नहीं है, परन्तु उनके मतों के उद्धरण अन्य ग्रन्थों में मिल जाते हैं । परवर्ती विद्वानों को मन्त्रों के अधिक प्रभावित करने वाले आचार्य पिगल रहे हैं ।

आचार्य पिगल और पिगल-छन्द-ग्रन्थ—

पिगल को शौच ने प्राकृत-छन्दो-विषयक-ग्रन्थ “प्राकृत-पिगलम्” के रचयिता

से भिन्न अत्यन्त प्राचीन आचार्य माना है ।^१ पिगलसूत्र ही छंदों के विषय में हमारे सामने सबसे प्राचीन ग्रंथ है । कुछ लोगों ने पिगल को पाणिनि से पूर्ववर्ती ग्रंथकार माना है । ऐसे लोगों में से कुछ पिगल को पाणिनि का मामा मानते हैं, परन्तु युधिष्ठिर मीमांसक तथा गैरोला ने पिगल को पाणिनि का अनुज, अतः समकालीन ग्रन्थकार माना है ।^२

पिगल का महत्त्व इस बात से समझा जा सकता है कि बाद में छन्दःशास्त्र का नाम ही पिगल-शास्त्र हो गया । इनका ग्रन्थ सर्वाधिक प्राचीन होने के साथ ही प्रौढ तथा सर्वाङ्गपूर्ण है ।^३ इसमें वैदिक-छंदों के साथ ही लौकिक छंदों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है । “प्राकृत-पिगल” का आधार भी इनका पिगल-सूत्र ही है । परवर्ती सभी छन्दःशास्त्रकार पिगल के ऋणी हैं ।

पुराणों में छन्दों का विवेचन—

नारदपुराण तथा अग्निपुराण भी छन्दों के विवेचन करने वाले ग्रंथ हैं । अग्निपुराण को भारतीय-साहित्य का विश्वकोश कहा जाता है । उसमें ३२८ से ३३५ तक ८ अध्यायों में छंदों का विवेचन किया गया है । अग्निपुराण में छंदों के विवेचन का आधार पिगलरचित छन्दःसूत्र-ग्रंथ ही रहा है—

छन्दो वक्ष्ये मूलजैस्तैः पिगलोक्तं यथाक्रमम् ।^४

इसमें वैदिक व लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों का विवेचन है ।

नारदपुराण में पूर्व भाग के द्वितीय पाद के ५७वें अध्याय में वेदांगों का विवेचन करते हुए प्रसंगवश छंदों के लक्षण भी बताये गये हैं । वहाँ एकाक्षर-पाद छंदों से लेकर दण्डक-छंदों तक का वर्णन मिलता है । प्रस्तार-प्रक्रिया से छंदों के विविध भेदों की ओर भी संकेत किया गया है ।

परवर्ती छन्द-सम्बन्धी ग्रन्थ तथा ग्रन्थकार—

परवर्ती छन्द-शास्त्र-प्रयक्तान्त्रो में कतिपय आचार्य ऐसे हैं जिनका नामोल्लेख-मात्र प्राप्त है और जिनके ग्रन्थों के नाम और ग्रन्थ अद्यावधि अनुपलब्ध हैं । यथा :—

१-संस्कृत साहित्य का इतिहास —कीर्ण (हिन्दी) पृ० ४६३

२- " " —गैरोला, पृ० १६१-६२ तथा संस्कृत-व्याकरणशास्त्र का इतिहास पृ० १३२

३- " " —गैरोला, पृ० १६२

४-अग्निपुराण, ३२८।१

नाम	काल	नाम	काल
१. पूज्यपाद ^१ (देवनन्दो)	४७०-५१२ वि.	२. भामह ^२	६ शती
३. दण्डी ^३	७०० वि	४. पाल्यकीर्त्ति ^४	८७१-९२४ वि
५. दमसागर मुनि ^५	१०५० वि.	६. वृद्धकवि ^६	
७. सालाहण ^७		८. हाल ^८	
९. मनोरथ ^९		१०. अर्जुन ^{१०}	
११. गोसल ^{११}		१२. गोविन्द ^{१२}	
१३. चतुर्मुख ^{१३}			

छद्म शास्त्र के परवर्ती ग्रथों में से असिद्ध कतिपय ग्रन्थ निम्नलिखित है :—

१. बृहत्सहिता :—यह वराहमिहिर की ज्योतिष विषयक रचना है। प्रसंग-वश इसके चौदहवें अध्याय में ग्रह-नक्षत्रों की गति-विधि के साथ छदो का विवेचन भी मिलता है। कीच के अनुसार वराहमिहिर का स्वतन्त्र छद्मशास्त्र का ग्रथ भी होना चाहिए किन्तु ऐसा कोई ग्रथ अभी तक देखने में नहीं आया।

२. जानाश्रयो-छन्दोविचिति :—जनाश्रय (?) नामक कवि ने इसकी रचना विष्णुकुण्डोन (कृष्णा और गोदावरी का जिला) के अधिपति माधववर्मन् प्रथम के राज्य में—जिसका समय ६ शताब्दी A D पूर्व माना जाता है—की है। यह ग्रथ ६ अध्यायों में विभक्त है। इसका प्राकृत-छन्दो का अन्तिम अध्याय महत्वपूर्ण है। गणशैली स्वतन्त्र है। युधिष्ठिर मीमांसकजी^{१४} ने गणस्वामी को ही इसका कर्त्ता माना है।

३. जयदेवच्छन्दस्—जयदेव की रचना होने से यह 'जयदेवच्छन्दस्' के नाम से

१—जयकीर्त्ति-छदोनुशासन, ८, १९

२—कीच : ए हिस्ट्री भाव संस्कृत लिटरेचर

३, ४, ५—वैदिक-छदोमीमांस, पृ० ६०-६१

६—विरहांक-वृत्तजातिसमुच्चय २।८-९ तथा ३।१२

७— " " २।८-९

८— " " ३।१२

९—कविदर्पण-राजस्थान प्राच्य विद्या, प्रतिष्ठान जोधपुर, सन् १९६२

१०-११-रसनोत्तर : छन्द.शोभा (कविदर्पण गत) " " "

१२-१३-स्वयम्भूच्छन्द— " " "

१४—वैदिक-छदोमीमांस पृ० ६१

प्रसिद्ध है। प्रो० एच० डी० वेल्हणकर^१ ने इनका समय ६००-६०० वि० स० का मध्य माना है। जयदेव जैन कवि थे। इन्होंने अपना यह ग्रंथ पिंगल के अनुकरण पर लिखा है। लौकिक-छन्दों की निरूपण शैली पिंगल से भिन्न है। छन्दों का विवेचन सस्कृत-परम्परा के अनुकूल और अत्यन्त व्यवस्थित है।

इसमें आठ अध्याय हैं। द्वितीय और तृतीय अध्याय में वैदिक-छन्दों का निरूपण है। संभवतः जैन लेखक होने के कारण ही इस ग्रन्थ का विशेष प्रसार न हो सका।

४ गायालक्षण—जैन कवि नन्दिताढ्य की यह रचना है। श्री वेल्हणकर^२ के मतानुसार इनका समय ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में माना जा सकता है। प्राकृत-अपभ्रंश परम्परा के छन्दःशास्त्रीय ग्रन्थों में यह प्राचीनतम ग्रंथ है। नन्दिताढ्य द्वारा इस ग्रंथ में जिन छन्दों का चमन किया गया है वे केवल जैन-गमों में ही उपलब्ध हैं। ग्रथकार ने गायवर्ग के विविध छन्दों का विस्तार से वर्णन किया है। लेखक के दृष्टिकोण से अपभ्रंश-भाषा हेय है।^३ ग्रंथ की भाषा प्राकृत है।

५ घृतजातिसमुच्चय—विरहाक की यह रचना है। डॉ० वेल्हणकर^४ के मतानुसार इनका समय ६वीं, १०वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व माना जा सकता है। पिंगल के पश्चात् मात्रिक-छन्दों का सर्वाधिक विवेचन इसी ग्रंथ में प्राप्त है। इसमें ६ परिच्छेद हैं। भाषा प्राकृत है किन्तु पाचवें परिच्छेद में वर्णवृत्तों के लक्षण सस्कृत में हैं। ग्रंथ में यति का उल्लेख नहीं है अतः सम्भव है ये यति-विरोधी सम्प्रदाय के हों। इस ग्रंथ में मगणादि गणों के स्थान पर पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग है जो कि पूर्ववर्ती ग्रंथों में प्राप्त नहीं है।

६ छन्दोनुशासन—इसके प्रणेता कवि जयदेव बज्ज प्रांतीय दिगम्बर जैन थे। डॉ० वेल्हणकर^५ ने इनका समय १००० ई० के लगभग माना है। पिंगल एवं जयदेव की परम्परा के अनुसार यह ग्रंथ भी आठ अध्यायों में विभक्त है। इसमें अपभ्रंश के मात्रिक-छन्दों का विवेचन भी प्राप्त है। छन्दों के लक्षण पारिभाषिक-शैली में हैं, उदाहरण स्वतन्त्ररूप से प्राप्त नहीं है।

१-देहों, जयदामन् की भूमिका-हरिदोपमाला, बम्बई

२-देहों, कविदर्पण — गायालक्षण की भूमिका-राधा विप्र ओषपुर, सन् १९६२

३-गायालक्षण पृष्ठ ३१

४-देहों, घृतजातिसमुच्चय की भूमिका-राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान ओषपुर, सन् १९६२

५-देहों, जयदामन् की भूमिका-हरिदोपमाला, बम्बई

७ स्वयम्भूच्छन्द—इसके प्रणेता कविराज स्वयम्भू जैन हैं। कर्ता के सबध में विद्वानों व 'अनक मत' हैं किन्तु डॉ० वेल्हणकर^१ ने इनका समय १०वीं शती का उत्तरार्द्ध माना है। स्वयम्भू अपभ्रंश-भाषा के श्रेष्ठ कवि हैं। अपभ्रंश छन्द-परम्परा की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण कृति है। कवि ने मगणादि गणों का प्रयोग न करके 'छ प च त द'^२ पारिभाषिक शब्दों के आघार से छन्दों के लक्षण कहे हैं। इस ग्रंथ में छन्दों के उदाहरण-रूप में विभिन्न प्राकृत-कवियों के २०६ पद्य उद्धृत हैं। लेखक ने कवियों के नाम भी दिये हैं।

८ रत्नमञ्जूषा—अज्ञातकर्तृक जैन-कृति है। वेल्हणकर^३ ने इसका समय हेमचन्द्र से पूर्व स्वीकार किया है, अतः ११-१२वीं शती माना जा सकता है। इसमें आठ अध्याय हैं। लेखक ने वर्णिकवृत्तों का समान प्रमाण और वितान शीर्षक से विभाजन किया है। मगणादि-गणों की परिभाषा भी लेखक की स्वतन्त्र है। यह पारिभाषिक शब्दावली सम्भवतः पूर्ववर्ती एव परवर्ती कवियों ने स्वीकार नहीं की है।

९ वृत्तरत्नाकर—इसके प्रणेता कश्यपवशीय पद्मेकमट्ट के पुत्र केदार-भट्ट हैं। कीथ^४ ने इनका समय १५वीं शती माना है किन्तु ११६२ की हस्त-लिखित प्रति प्राप्त होने से एव ११वीं शती की इसी ग्रंथ की त्रिविक्रम की प्राचीन टीका प्राप्त होने से वेल्हणकर^५ ने इनका सत्ताकाल ११वीं शताब्दी ही स्वीकार किया है। पिगल के अनुकरण पर इसकी रचना हुई है। जयदेवच्छन्दसू की तरह इसमें भी छन्दों के लक्षण लक्ष्य-छन्दों में ही देकर लक्षण और उदाहरण का एकीकरण किया गया है। इस ग्रंथ का प्रसार सर्वाधिक रहा है।

१०. सुवृत्ततिलक—इसके प्रणेता क्षेमेन्द्र का समय बीथ^६ ने हेमचन्द्र के पूर्व अथवा ११वीं शती माना है। मेकडानल^७ के अनुसार क्षेमेन्द्र की बृहत्स्थामजरी

१-डॉ० भोलाचकर व्यास प्राकृतपंगलम् भा० २ पृ० ३६५, डॉ० शिवनन्दनप्रसाद मात्रिक

छन्दों का दिशास पृ० ४५-४६

२-देखें, स्वयम्भूच्छन्द की भूमिका—राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, सन् १९६२

३-मुलना के लिये देखें, इसी ग्रंथ का प्रथम परिशिष्ट

४ देखें, रत्नमञ्जूषा की भूमिका—भारतीय ज्ञानपीठ काशी, १९४६ ई०

५-कीथ ए हिस्ट्री ऑफ् संस्कृत लिटरेचर पृ० ४१७

६-देखें, जयदामन् की भूमिका—हरितोपमाला बम्बई

७-कीथ : ए हिस्ट्री ऑफ् संस्कृत लिटरेचर, पृ० १२५

८-घायर ए मेकडानल . हिस्ट्री ऑफ् संस्कृत लिटरेचर पृ० ३७६

की रचना १०३४ ई० में हुई थी। अतः क्षेमेन्द्र का समय ११वीं शती निश्चित है। क्षेमेन्द्र ने इस ग्रंथ में पहले छन्द का लक्षण दिया है और तदुपरान्त अपने ग्रंथों से उदाहरण दिये हैं। छन्दों के नाम दो बार आये हैं, एक बार लक्षण में और दूसरी बार उदाहरण में। यह ग्रन्थ तीन विन्यासों में विभक्त है। क्षेमेन्द्र के विचार में विशेष रसी या प्रसंगी के लिए विशेष छंद ही उपयुक्त और पर्याप्त प्रभावशाली होते हैं। ग्रथकार के अनुसार उपजाति पाणिनि का, मन्दाक्रांता कालिदास का, वदस्थ भारवि का और शिखरिणी भवभूति का प्रिय छंद रहा है।

११. ध्रुतबोध—इसके लेखक कालिदास कहे जाते हैं। कीय ने इस बात का कोई आधार नहीं माना। कुछ लोग वररुचि को भी इसका लेखक मानते हैं^१। कृष्णमाचारी^२ भी कालिदासों में से तीसरा कालिदास मानते हैं। गैरोला के अनुसार ये ७ या ८वीं शताब्दी के कोई अन्य कालिदास होंगे। युधिष्ठिर भीमांसक^३ के अनुसार इस कालिदास का समय १२वीं शती था। संभव है यह मान्यता उचित हो और यह कालिदास राजा भोज के सखा के रूप में लोक-कथाओं में ख्याति प्राप्त कालिदास हो। लक्षण में ही उदाहरण का मतार्थ हो जाना इस ग्रंथ की सब से बड़ी विशेषता है। इसका भी प्रसार सर्वाधिक रहा है।

१२. छन्दोऽनुशासन—इसके प्रणेता कलिकाल-सर्वज्ञ हेमचन्द्र पूर्णतलगच्छीय श्रीदेवचन्द्रसूरि के शिष्य हैं। अणहिलपुर पत्तन के नृपति सिद्धराज जयसिंह की सभा के ये प्रमुखतम विद्वान् थे और महाराजा कुमारपाल के ये धर्मगुरु थे। इनका समय वि० सं० ११४५-१२२६ माना जाता है। ये बहूमुखी प्रतिभा वाले लेखक और वैज्ञानिक-दृष्टि-सम्पन्न आचार्य एवं शास्त्र-प्रणेता थे। हेमचन्द्र ने अपने इस ग्रंथ की विंगल, जयदेव और जयकीर्ति के अनुकरण पर ही घाठ अध्यायों में प्रयत्न किया है। वंतालीय और मात्रासमक के कुछ नये भेद जिनका उल्लेख विंगल, जयदेव, विरहांक, जयकीर्ति आदि पूर्ववर्ती आचार्यों ने नहीं किया, हेमचन्द्र ने प्रस्तुत किये हैं। इसमें लगभग सातसौ घाटसौ छन्दों का निरूपण प्राप्त है। नवीन मात्रिक-छन्दों की दृष्टि से इस ग्रंथ का सर्वाधिक महत्त्व है।

हेमचन्द्र ने इस ग्रंथ पर म्योपज्ञ टीका^४ भी बनाई है। इस टीका में हेमचन्द्र ने

१-कीय : ए हिस्ट्री ऑफ़ सांस्कृत सिटरेषर, पृ० ४१६

२-एच० कृष्णमाचारी : ए हिस्ट्री ऑफ़ कलासिक्नम सांस्कृत सिटरेषर, पृ० ६००

३-देने, वैदिक-प्रदोमीयोग पृ० ६२

४-टी० एच० टी० वेल्सवर-सम्पादित टीकासहित यह ग्रंथ सिपी जंनप्रबंधमाता में प्रकाशित है।

छंदों के नामान्तर देते हुये 'इति भरत.' कह कर जो नामभेद दिये हैं उनमें मे निम्नलिखित छंद वर्तमान में प्राप्त भरत के नाट्यशास्त्र में उपलब्ध नहीं हैं, और यति-विरोधी आचार्यों में गणना होने से संभव है कि नाट्यशास्त्र में निरूपित छंदों के अतिरिक्त भरत ने छंद शास्त्र पर कोई स्वतन्त्र ग्रंथ भी लिखा हो। भरत के नाम से उल्लिखित अनुपलब्ध छंदों की तालिका निम्न है :—

३ अक्षर	घूः	६ अक्षर	गिरा
" "	तडित्	७ "	शिन्वा
४ "	ललिता	" "	भोगवती
" "	जया	" "	द्रुतगति.
५ "	भ्रमरी	१० "	पुष्पसमृद्धिः
" "	वायुरा	" "	रुचिरा
" "	कुन्तलतन्वी	११ "	अपरवक्त्रम्
" "	शिखा	" "	द्रुतपदगति
" "	कमलमुखी	" "	रुचिरमुखी
६ "	नलिनी	१३ "	मनोवती
" "	वीथी		

१३ कविदर्पण—यह अज्ञात जैन-कतृक कृति है। छंदों के उदाहरणों में जिनसिंहसूरि-रचित 'चूडाल-दोहक' का उदाहरण है। जिनसिंहसूरि खरतर-गच्छीय द्वितीय जिनेश्वरसूरि के शिष्य हैं, इनका शासनकाल १३००-१३४१ तक का है। कविदर्पण का सर्वप्रथम उल्लेख स० १३६५ में रचित अजितशांति-स्तव की टीका में जिनप्रभसूरि ने किया है जो कि जिनसिंहसूरि के शिष्य हैं। अतः यह अनुमान किया जा सकता है कि इसका प्रणेता जिनसिंहसूरि के शिष्य और जिनप्रभसूरि के गुरुभ्राता ही होंगे।

यह ग्रंथ प्राकृतभाषा में ६ उद्देश्यों में विभक्त है। छंदों के वर्गीकरण तथा लक्षण निर्देश से इसकी मौलिकता प्रकट होती है। प्राकृत-अपभ्रंश की परम्परा में इसका यथेष्ट महत्त्व है।

१४. छन्द.कोष—इसके प्रणेता रत्नशेखरसूरि हेमतिलकसूरि के शिष्य हैं। इनका समय १५वीं शती है। यह ग्रंथ प्राकृतभाषा में है। इसमें कुल ७४ पद्य हैं। इस ग्रंथ के छंदों का विवेचन छंदों के व्यवहार के अधिक निकट है और तद्युगीन छंदों के स्वरूप-विकास के अध्ययन की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण है।

१५ प्राकृत-पिगल—इसके प्रणेता के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है किन्तु डॉ० भोलाशकर व्यास^१ के अनुसार हरिब्रह्म या हरिहर इसका कर्ता माना जा सकता है और प्राकृतपिगल का सकलन-काल १४वीं शती का प्रथम चरण मान सकते हैं। इसमें मात्रिक और वर्णिकवृत्त नाम से दो परिच्छेद हैं। लक्षणों में ग्रन्थकार ने टादिगण, प्रस्तारभेद, नाम, पर्याय एवं भगणादिगणों की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया है।

अपभ्रंश और हिन्दी में प्रयुक्त मात्रिक-छंदों के अध्ययन के लिए यह ग्रन्थ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। वर्णिकवृत्तों के लिए संस्कृत-साहित्य में जो स्थान पिगलकृत छंद सूत्र का है, मात्रिक-छंदों के लिए वही स्थान प्राकृतपिगल का है।

१६ वाणीभूषण—इसके प्रणेता दामोदर मिश्र दीर्घघोषकुलोत्पन्न मैथिली ब्राह्मण हैं। डॉ० भोलाशकर व्यास^२ ने प्राकृतपिगल के संग्राहक हरिहर को पितामह और रविकर को दामोदर का पिता या पितृव्य स्वीकार किया है। विद्वानों के मतानुसार दामोदर मिथिलापति कीर्त्तिसिंह के दरबार में थे। अतः दामोदर मिश्र और रविवर त्रिघापति सम-सामयिक होने चाहिये। दामोदर मिश्र का समय १४३१ से १४९६ तक माना जाता है।

यह ग्रन्थ संस्कृत-भाषा में है। इसमें दो परिच्छेद हैं। लक्षणों का गठन पारिभाषिक शब्दावली में है और उदाहरण स्वरचित हैं। वस्तुतः यह ग्रन्थ प्राकृत-पिगल का संस्कृत में रूपान्तर मात्र है।

१७ छन्दोमञ्जरी—गैरोला^३ ने लेखक का नाम दुर्गादास माना है किन्तु यह भ्रामक है। ग्रन्थ के प्रथम पद्य में ही लेखक ने स्वयं का नाम गंगादास और पिता का नाम गोपालदास वैद्य एवं माता का नाम सतीपदेवी लिखा है।^४ इनका समय १५वीं या १६वीं शताब्दी है। ग्रन्थकार ने स्वरचित 'प्रच्युतचरित महा-वाच्य' और 'वसतिशतक' एवं 'दिनेशशतक' का भी उल्लेख किया है।^५ छंदो-

१-देवे, प्राकृतपिगलम् भा० २, पृ० ६-२६

२- , , , , १६-१८

३-गैरोला : संस्कृत-साहित्य का इतिहास पृ० १६३

४-देव प्रणम्य गोपाल वैद्यगोपालदासम् ।

सन्तोपातनयश्छन्दो गङ्गादासस्तनोरपद ॥१११

५-सर्ग. धोडशीमि समुग्धतपदेर्देव्यायंभव्यासयं—

यैनाचारि तदच्युतस्य चरितं काव्यं कविप्रीतिदम् ।

कामारे दातक दिनेशशतकद्वन्द्वं च सस्यास्त्वसो,

गंगादासकवे श्रुती मुमुक्षिनो सच्छन्दसो मञ्जरी ॥६१६॥

मञ्जरी की शैली वृत्त रत्नाकर से मिलती-जुलती है। इसमें ६ स्तवक हैं। छठे स्तवक में गद्य-काव्य और उनके भेदों पर विचार है जो कि इसकी विशेषता है।

१८ वृत्तमुक्तावली—इसके प्रणेता तैलगवशोय कवि कलानिधि देवर्षि कृष्णभट्ट हैं। इस ग्रन्थ का रचनाकाल १७८८ से १७९९ के मध्य का है। इसमें तीन गुम्फ हैं :—१ वैदिक छन्द, २. मानिक छन्द, और ३. वर्णिक वृत्त। पिगल और जयदेव के पश्चात् प्राप्त एव प्रसिद्ध ग्रन्थों में वैदिक-छन्दों का निरूपण न होने से इस ग्रन्थ का महत्त्व बढ़ जाता है। मानिक-गुम्फ प्राकृतपिगल और वाणीभूषण से अनुप्राणित है। इसमें ४२ दण्डक-छन्दों के लक्षण एव उदाहरण प्राप्त हैं।

१९ वाग्बल्लभ—इसके प्रणेता कवि दुःखभजन शर्मा हैं जो कि काशी-निवासी कान्यकुब्जवशीय प्रताप शर्मा के पुत्र और चूडामणि शर्मा के पुत्र हैं। इसकी 'वरवर्णिनी' नामक टीका की रचना दुःखभजन कवि के ही पुत्र महोपाध्याय देवीप्रसाद शर्मा ने वि० स० १९८५ में की है, अतः इसका रचना समय १९५० से १९७० वि० स० का मध्य माना जा सकता है। गंगोला ने इनका समय १६वीं शती माना है जो कि भ्रमक है।^१ कवि दुःखभजन ज्योतिर्विद् तो थे ही, इसीलिए जहाँ आज तक के प्राप्त छन्दशास्त्रों में प्रयुक्त छन्द प्रायशः ग्रहण किये हैं तो वहाँ प्रस्तार का आधार लेकर संकड़ों नवान् छन्द भी निमित्त किये हैं। इस ग्रन्थ में कुल १५३६ छन्दों का निरूपण है। शैली वृत्तरत्नाकर की है। प्रत्येक वर्णिकवृत्त प्रस्तार-संख्या के क्रम से दिया है।

इनके अतिरिक्त छन्दशास्त्र के संकड़ों ग्रन्थ और उनकी टीकायें प्राप्त होती हैं जिनकी सूची मैंने इसी ग्रन्थ के अन्त में परिशिष्ट में दी है।

वृत्तमौक्तिक भी छन्दशास्त्र का बड़ा ही प्रौढ और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। चन्द्रशेखर भट्ट ने अपने इस ग्रन्थ में जिस पांडित्य का परिचय दिया है, वह केवल उन ही तक सीमित नहीं था। उनकी बदायन-परम्परा में जैसा कि हम देखेंगे वड़े बड़े माग्ने हुए प्रतिभा-सम्पन्न विद्वान् हुए, और इसमें संदेह नहीं कि ऐसी ज्ञान-गम्भिर परम्परा में जिसका व्यक्तित्व विकसित हुआ हो वह अपने कृतित्त्व और व्यक्तित्व के लिये उन पूर्वजों का सब से अधिक ऋणी होगा। इसीलिये कवि के परिचय से पूर्व ग्रन्थ के माहात्म्य की पृष्ठभूमि को समझने के लिए सर्वप्रथम कवि के पूर्वजों का परिचय प्राप्त कर लेना भी वाद्यनीय है।

१-राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से प्रकाशित

२-गंगोला : संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ. १९३

कवि-वश-परिचय

चन्द्रशेखर भट्ट वासिष्ठ-वशीय^१ लक्ष्मीनाथ भट्ट के पुत्र हैं । ग्रंथकार ने अपने पूर्वजों में वृद्धप्रपितामह रामचन्द्र भट्ट^२, पितामह रायभट्ट^३ और पितृ-चरण लक्ष्मीनाथ भट्ट का उल्लेख किया है ।

भट्ट लक्ष्मीनाथ ने प्राकृतपिगलसूत्र की टीका 'पिगलप्रदीप' में अपना वश-परिचय इस प्रकार दिया है —

भट्ट. श्रीरामचन्द्रः कविविबुधकुले लब्धदेह श्रुतो यः
श्रीमान्नारायणारुयः कविमुकुटमणिस्तत्तनूजोऽजनिष्ट ।
तत्पुत्रो रायभट्टः^४ सकलकविकुलस्यातकीर्तिस्तदीयो
लक्ष्मीनाथस्तनूजो रचयति रुचिर पिगलार्थप्रदीपम् ॥

[मगलाचरण पद्य ५]

इस आधार से ग्रंथकार का वशवृक्ष इस प्रकार बनता है :—

रामचन्द्र भट्ट
|
नारायण भट्ट
|
राय भट्ट
|
लक्ष्मीनाथ भट्ट
|
चन्द्रशेखर भट्ट

१-लक्ष्मीनाथ सुभट्टवर्म्य इति यो वासिष्ठवशीय इव—
स्तरुणु कविचन्द्रशेखर इति प्रख्यातकीर्तिर्भुवि

[वृत्तमीवितक प्रस्तावितः ५]

२-अहमद्दृष्टप्रपितामहमहाराजविपश्चिन्तश्रीरामचन्द्रभट्टविरचिते .. ।

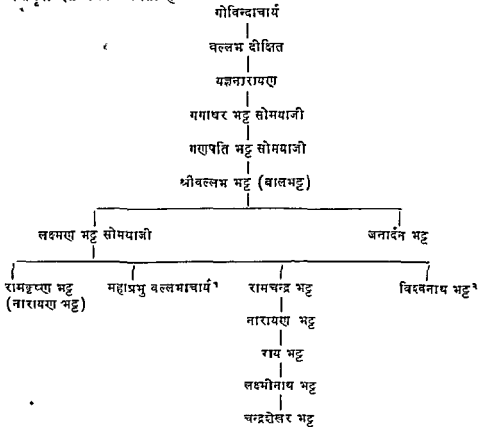
[वृत्तमीवितक पृ० १०७]

३-अहमत्पितामहमहाराजविपश्चिन्तश्रीरायभट्टवृत्ते .. ।

[वृत्तमीवितक पृ० १२१]

४-निर्णयमागर मरुवरण घोर प्राकृतवैद्वलम् भा० १ में 'रामभट्टः' मुद्रित है, जो कि
सम्यक् है ।

ग्रथकार के वृद्धप्रपितामह श्री रामचन्द्र भट्ट वस्तुतः तैलगदेशीय वेलनाट यजु-वेदान्तगत तैत्तिरीयशाखाध्यायी आपस्तम्ब त्रिप्रवरान्वित आगिरस वार्हस्पत्य भारद्वाजगोत्रीय श्री लक्ष्मण भट्ट सोमयाजी के पुत्र हैं; जोकि वसिष्ठवशीय ननिहाल में मातुल के यहाँ दत्तकरूप में चले गये थे । अतः भारद्वाजीय गोत्रापेक्षया वशवृक्ष इस प्रकार बनता है :—



वासिष्ठ एव भारद्वाज दोनो गोत्रो का उत्तरास होने से यहाँ यह विचारणीय है कि रामचन्द्र भट्ट भारद्वाज-गोत्रीय थे या वसिष्ठ-गोत्रीय ? या नाम-साम्य से रामचन्द्र भट्ट एक ही व्यक्ति हैं अथवा भिन्न-भिन्न ? और, यदि एक ही व्यक्ति हैं तो गोत्रभेद का क्या कारण है ? तथा रामचन्द्र भट्ट यदि वल्लभाचार्य के अनुज हैं तो वल्लभ-साहित्य एव परम्परा में रामचन्द्र एव इनकी परम्परा का उत्तरास क्यों नहीं है ? आदि प्रश्न उपस्थित होते हैं । अतः इन पर यहाँ विचार करना असंगत न होगा ।

१—दशैं, कावरोली का इतिहास, द्वितीय भाग, एव वल्लभवत्सवृक्ष ।

२—दशैं, वल्लभवत्सवृक्ष ।

रामचन्द्र भट्ट ने स्वप्रणीत 'गोपाललीला-महाकाव्य', 'रोमावलीशतक' एव 'रसिकरञ्जन' की पुष्पिकाओं में स्वयं को लक्ष्मणभट्ट का पुत्र स्वीकार किया है —

'इति श्रीलक्ष्मणभट्टात्मजश्रीरामचन्द्रविरचिते गोपाललीलाख्ये महाकाव्ये कस-
वधो नाम एकोनविंश सर्गं ।'

[गोपाललीला महाकाव्य की पुष्पिका]^१

'इतिश्रीलक्ष्मणभट्टात्मजश्रीरामचन्द्रकविवृत रोमावलीशृङ्गारशतक सम्पूर्णम् ।'

[रोमावलीशतक की पुष्पिका]^२

'इति श्रीलक्ष्मणभट्टसूनुश्रीरामचन्द्रकविकृत सटीक रसिकरञ्जन नाम
शृङ्गारखैराम्यार्थसमान काव्य सम्पूर्णम् ।'

[रसिकरञ्जन की पुष्पिका]^३

कवि ने 'कृष्णकुतूहल' महाकाव्य में स्वयं को लक्ष्मणभट्ट का पुत्र और
वल्लभाचार्य का अनुज स्वीकार किया है —

'श्रीमल्लक्ष्मणभट्टवशतिलक श्रीवल्लभे-द्रानुज ।'

[कृष्णकुतूहलमहाकाव्य प्रशस्तिपत्र]^४

रोमावलीशतक में कवि ने स्वयं को लक्ष्मणभट्ट का पुत्र, वल्लभ का अनुज
और विश्वनाथ का ज्येष्ठभ्राता लिखा है —

'श्रीमल्लक्ष्मणभट्टसूनुरनुज श्रीवल्लभ श्रीगुरो,
अध्येतु सममग्रजो गुणिमण श्रीविश्वनाथस्य च ।'

[रोमावलीशतक पद्य १२५]

इन उल्लेखों में भारद्वाजगोत्र का कहीं भी उल्लेख न होने पर भी लक्ष्मण
भट्ट एव वल्लभाचार्य का उल्लेख होने से यह स्पष्ट है कि ये भारद्वाज-
गोत्रीय थे ।

रामचन्द्र भट्ट ने 'कृष्णकुतूहल-महाकाव्य' के अष्टम सर्ग के प्रात में स्वयं का
वसिष्ठगोत्र स्वीकार किया है —

१-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा सन् १९२८ में प्रकाशित

२-राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, प्र. नं० १९२९५

३-वाग्म्यमाला चतुर्थ गुण्डर में प्रकाशित

४-गोपाललीला मूक्तिका

‘विद्यानिष्ठवसिष्ठगोत्रजनुपा तेन प्रणीते महा—
काव्ये कृष्णकुतूहलैर्बरहुतिः सर्गोऽजनिष्ठाष्टमः ।’

अतः यह स्पष्ट है कि रामचंद्र भट्ट स्वयं को लक्ष्मण भट्ट का पुत्र और वल्लभ का अनुज मानते हुए भी अपना वासिष्ठ-गोत्र स्वीकार करते हैं ।

चन्द्रशेखर भट्ट वृत्तमीक्षिक^१ में कृष्णकुतूहल-महाकाव्य के प्रणेता रामचंद्र भट्ट को ‘प्रवृद्धपितामह’ शब्द से सम्बोधित करते हैं । अतः यह निर्विवाद है कि नाम-साम्य से रामचन्द्र भट्ट पृथक्-पृथक् व्यक्ति नहीं है अपितु वही वल्लभानुज ही है । ऐसी अवस्था में गोत्रभेद क्यों ? इस सम्बन्ध में कोई प्राचीन प्रमाण तो उपलब्ध नहीं है, किन्तु गोपाललीला-महाकाव्य के सम्पादक श्री वेचनराम शर्मा सम्पादकीय-उपसंहार^२ में लिखते हैं :—

‘इय वसिष्ठगोत्रोद्भवत्वोक्तिर्मातामहगोत्राभिप्रायेण ऊहनीया ।’

इसी बात को स्पष्ट करते हुये भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ‘वल्लभीय सर्वस्व’^३ में लिखते हैं :—

‘लक्ष्मण भट्टजी के मातुल वसिष्ठ-गोत्र के ब्राह्मण अपुत्र होने के कारण इनको (रामचन्द्र को) अपने घर ले गये थे ।’

इससे स्पष्ट है कि लक्ष्मण भट्ट के मामा जो अपुत्र थे ; उन्होंने लक्ष्मणभट्ट से अपने नाती रामचंद्र को दत्तक रूप में ले लिया । दत्तक रूप में जाने के पश्चात् उत्तर भारत की परम्परा के अनुसार गोत्र-परिवर्तन ही जाया है । लक्ष्मण भट्ट के मातुल वसिष्ठगोत्रीय थे अतः रामचंद्र का गोत्र भी भारद्वाज न हो कर वसिष्ठ हो गया । यही कारण है कि रामचंद्र भट्ट ने स्वयं का गोत्र वसिष्ठ ही स्वीकार किया है ।

वासिष्ठ-गोत्र का उल्लेख करते हुए भी धर्म (दत्तक) पिता का नाम न देकर सर्वत्र लक्ष्मणभट्ट-तनुज और वल्लभानुज का उल्लेख करना अप्रासंगिक सा प्रतीत होता है किन्तु तत्त्वतः विरोध न होकर विरोधाभास ही है । इसका मुख्य कारण यह है कि रामचंद्र भट्ट ने पुरुषोत्तम-क्षेत्र में वल्लभाचार्य के सहवास में रह कर

१-देखें, पृष्ठ १०५, १०७

२-देखें, गोपाललीला पृ० २५५

३-भारतेन्दु प्रयागली भाग ३, पृ० ५९८

सर्वशास्त्र और सर्वे दर्शनो का अध्ययन आचार्यश्री से ही किया था। अतः पितृ-भक्ति, भ्रातृ-प्रेम एवं भक्तिवश ही इनका सर्वत्र स्मरण किया जाना स्वाभाविक ही है।

अतएव यह तो स्पष्ट ही है कि रामचन्द्र भट्ट गोत्रापेक्षया पृथक्-पृथक् व्यक्ति न हो कर लक्ष्मण भट्ट के पुत्र एव वल्लभ के लघुभ्राता थे और दत्तकरूप में वसिष्ठ-वंश में जाने के कारण भारद्वाजगोत्रीय न रह कर वसिष्ठगोत्रीय हो गये थे। संभव है इसी कारण से पुष्टिमार्गप्रवर्तक वल्लभाचार्य के जीवनवृत्त-सम्बन्धी समग्र-साहित्य में रामचन्द्र भट्ट एव इनकी परम्परा का कोई उल्लेख नहीं हुआ हो ! अस्तु।

वश-परिचय गोविन्दाचार्य से न देकर ग्रथकार-सम्मत वसिष्ठगोत्रापेक्षया रामचन्द्र भट्ट से दिया जा रहा है।

रामचन्द्र भट्ट

इनके पिताश्री का नाम लक्ष्मण भट्ट^१ और मातृश्री का नाम इल्लम्मागारु था। इनका जन्म अनुमानतः वि० स० १५४०^३ मे काशी मे हुआ था। लक्ष्मण भट्ट का स्वर्गवास वि० स० १५४६ चैत्र कृष्णा नवमी को दक्षिण मे वेंकटेश्वर बालाजी नामक स्थान पर हुआ था। स्वर्गवास के पूर्व ही लक्ष्मण भट्ट ने अपने मातामह की संपूर्ण चल और अचल संपत्ति इनको प्रदान कर अयोध्या भेज दिया था। इस सम्बन्ध मे भारतेन्दु हृदिचन्द्र 'वल्लभीयसर्वस्व'^४ में लिखते हैं,—

'लक्ष्मण भट्टजी साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम के धाम अक्षरब्रह्म शेषजी के स्वरूप हैं, इससे आपको त्रिकाल का ज्ञान है। सो जब आपने अपना प्रयाण समय निकट जाना तब काकरवार से बड़े पुत्र रामकृष्ण भट्टजी को बालाजी मे धुलाया और वही आपने डेरा किया। पुत्रो को अनेक शिक्षा देकर श्री रामकृष्ण भट्टजी को श्री

१—'श्रीमल्लहमणभट्टवशात्सकः श्रीवल्लभस्य प्रिय,

दिप्यस्ताञ्चरणप्रमादसरणी मी रामचन्द्र कविः ।'

[भारतेन्दु हरिश्चन्द्रः गोपाललीला-भूमिका]

'पुत्रपोरामक्षेत्रे समागत्य ज्येष्ठभ्रातुः श्रीवल्लभाचार्यात्... ..सकाशात् सर्वाणि साम्प्रानि मनानि च समधीर्य ।'

[जेपनराम दामा-गोपाललीला-अपत्रमन्त्रालन]

२—लक्ष्मण भट्ट जी के परिचय के लिए देखें, बाबरोंकी का इतिहास भाग २

३—इष्टप्रमाचारी : हिस्टोरी ऑफ़ दी बलासिंहस संस्कृत निटरेवर, पृ० २६१

४—भारतेन्दु प्रकाशनी भाग ३, पृ० ५०५

यज्ञनारायण के समय के श्रीरामचन्द्रजी पधराय दिए और कहा कि देश में जा कर सब गाव और घर आदि पर अधिकार और बेल्लिनाटि तैलग जाति की प्रथा और अपने कुल अनुसार सब धर्म पालन करो । ऐसे ही श्रीयज्ञनारायण भट्ट के समय के एक शालिग्रामजी और मदनमोहनजी श्रीमहाप्रभुजी को देकर कहा कि आप आचार्य होकर पृथ्वी में दिग्विजय करके वैष्णवमत प्रचार करो और छोटे पुत्र रामचन्द्रजी को, जिनका काशी में जन्म हुआ था, अपने मातामह की सब स्थावर-जगम-संपत्ति दिया ।^१

यहाँ लक्ष्मण भट्ट के वसिष्ठगोत्रीय मातामह और मातुल का नाम प्राप्त नहीं है । सम्भवत ये अयोध्या में ही रहते हो और इनकी स्थावर एव जङ्गम सम्पत्ति भी अयोध्या में ही हो । पो० कण्ठमणि शास्त्री^२ ने लक्ष्मण भट्ट का ननिहाल धर्मपुरनिवासी बह्वृच् मीद्गल्यगोत्रीय काशीनाथ भट्ट के यहाँ स्वीकार किया है जब कि प्रस्तुत ग्रथकार चन्द्रशेखर भट्ट एव भारतेन्दु हरिश्चन्द्र^३ वसिष्ठगोत्र में स्वीकार करते हैं । मेरे मतानुसार संभव है कि लक्ष्मण भट्ट के पिता बालभट्ट ने दो शादियाँ की हो । एक बह्वृच् मीद्गल्यगोत्रीया 'पूर्णा' के साथ और दूसरी वसिष्ठगोत्रीया के साथ । फिर भी यह प्रश्न तो रह ही जाता है कि लक्ष्मण भट्ट बह्वृच् मीद्गल्यगोत्रीया पूर्णा के पुत्र थे या वसिष्ठगोत्रीया के ? इसका समाधान तो इस वंश-परम्परा के विद्वान् ही कर सकते हैं ।

कवि रामचन्द्र आदि चार भाई थे । नारायणभट्ट उपनाम रामकृष्ण भट्ट और वल्लभाचार्य बड़े भाई थे और विश्वनाथ छोटे भाई थे । रामकृष्ण भट्ट काकरवाड में ही रहते थे और पिताथी लक्ष्मण भट्ट के स्वर्गारोहण के कुछ समय पश्चात् ही सन्यासी हो गये थे ।^४ केशवपुरी के नाम से ये प्रसिद्ध थे और दक्षिण-भारत के किसी प्रसिद्ध मठ के अधिपति थे । डॉ० हरिहरनाथ टडनलिखित 'वार्ता साहित्य एक बृहत् अध्ययन'^५ के अनुसार गोविन्दरायजी (सत्ताकाल

१-बाकरोली का इतिहास, भाग २, पृ० ५

२-भारतेन्दु-अपराधी, भाग ३, पृ० ५६८

३-ये काकरवाड में ही रहते थे । ये कुछ दिन पीछे सन्यासी हो गये तब केशवपुरी नाम पड़ा । ये ऐसे सिद्ध थे कि शहादत पहिने गंगा पर स्पष्ट की भाँति चलते थे ।

भारतेन्दु प्रयागली भा० ३, पृ० ५६८

४-'हरिरायजी के प्राग्दय के सम्बन्ध में सम्प्रदाय के ग्रंथों में मह प्रसिद्ध है कि जब श्री कल्याणरायजी दस वर्ष के थे, तब एक दिन श्रीप्राचायजी के छोटे भाई केशवपुरी जो सन्यासी हो गए थे और दक्षिणभारत के किसी बड़े मठ के अधिपति थे वहाँ गए और उन्होंने श्रीगुसाईजी से अपनी गद्दी के लिये एक बालक मांगा, जिस पर प्रायने कहा कि जिस बालक के पास टाकुरजी नहीं होंगे उन्हें दे दिया जायगा । श्रीकल्याणरायजी के पास टाकुरजी नहीं थे । इसलिये उन्हें देना निश्चित हुआ ।'

वार्ता साहित्य एक बृहत् अध्ययन पृ० ३६७

१५६६-१६५०) के प्रथम पुत्र कल्याणरायजी (जन्म सं० १६२५) दस वर्ष की अवस्था में केशवपुरी गुसाईंजी से मिले थे। अतः 'शतायु' से अधिक ये विद्यमान रहे यह निश्चित ही है। वि० सं० १५६८ में रचित 'वद्विकाश्रमवृत्तिपत्रक' नामक एक पत्र आपका प्राप्त होता है; जिसका आद्यन्त इस प्रकार है :-

गोभिवृत्तं प्रकृतिसुन्दरमन्दहास-

भापासमुल्लसितमञ्जुलवक्त्रबिम्बम् ।

श्रीनन्दनन्दनमखण्डितमण्डलाभं,

बालार्यमिश्रय(क)मद् हृदि भावयामि ॥१॥

×

×

×

विद्वद्भिः किल कृष्णदासकमुखैः शिष्यैरनेकैर्वृतः,

सोऽहं श्रीवद्री(दरी)वनान्तमगमं शुक्रै(ज्येष्ठ)शकाब्दे तथा ।

देवाम्भःपतिभूमिते (१४३३) सह नरं नारायणं वीक्षितुं,

तत्र व्यासमुनीशसङ्गतिरभूदाकस्मिकी मे शुभा ॥६॥

×

×

×

श्रीवल्लभाचार्यमहाप्रभूणां नियोगतो बुद्धिमतां विभाव्य ।

श्रीरामकृष्णाभिधमट्ट एतल्लेखं व्यतानीत् पुरतश्च तेषाम् ॥११॥

द्वितीय बृहद्भ्राता महाप्रभु वल्लभाचार्य भारत के प्रसिद्धतम आचार्यों में से हैं। इनका प्रतिपादित पुष्टिभाग आज भी भारत के कोने-कोने में फैला हुआ है। इनही के साहचर्य में रह कर रामचन्द्र भट्ट ने समग्र शास्त्रों का अध्ययन किया था और वे इन्हें केवल बड़ा भाई ही नहीं अपितु अपना गुरु भी मानते थे।

रामचन्द्र भट्ट वेदान्त, मीमांसा, व्याकरण, काव्य और साहित्य-शास्त्र के विशिष्ट विद्वान् थे। न केवल विद्वान् ही अपितु वादजेता भी थे। अहनिश शास्त्रार्थ में रत रहने के कारण कई पराजित वादी आपके विरोधी भी हो गये थे और इसी विरोध-स्वरूप आपको विष भी दे दिया गया था। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि ये अल्पायु में ही स्वर्गलोक को प्राप्त हो गए थे।

महाकवि रामचन्द्र भट्ट ने अनेक ग्रंथों का निर्माण किया होगा! वर्तमान में इनके रचित निम्नलिखित ग्रंथ प्राप्त होते हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:-

१-यह पत्र वार्ता साहित्य एक बृहत् अध्ययन पु० १४५ पर प्रकाशित है।

२-भारतेंदु संवाचनी, भाग ३, पृष्ठ ५६८

१. गोपाललीला महाकाव्य :—कवि ने इस काव्य में भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म से लेकर कंस-वध पर्यन्त भगवल्लीला का वर्णन १६ सर्गों में किया है। प्रत्येक सर्ग की पद्यसंख्या इस प्रकार है :—७०, ५८, ७८, ७१, ५१, ७६, ७६, ५२, ६२, ७४, ६१, ६०, ५१, ६१, ५६, ६१, ६६, ५७, ७६। इसमें रचना-सवत् का उल्लेख नहीं है। प्रसाद एवं माधुर्यगुण युक्त रचना है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इसका प्रकाशन वि० स० १६२६ में किया है; जो अब अप्राप्त है। इस काव्य का संपादन काशिक राजकीय पाठशाला के सांख्यशास्त्र के प्रधानाध्यापक प० वेचनराम शर्मा ने किया है। इस काव्य का आद्यन्त इस प्रकार है:—

आदि— शुभममितमचिन्त्यचिद्विचित्र श्रुतिशतमूर्धनि केशपाशकल्पम् ।
 दिशतु किमपि धाम कामकोटि-प्रतिभटदीधिति वासुदेवसंजम् ॥१॥
 वहति शिरसि नागसम्भव यः स्फुटमनुरागमिवात्मभक्तियुक्ते ।
 कटतटविगलन्मदाम्बुदम्भ-धितकरुणारसमाश्रये गणेशम् ॥२॥
 कविजनरसनाप्रतुङ्ग रङ्ग-स्थलकृतलास्यकलाविलासकाम्या ।
 कृतिषु सपदि वाञ्छितं यथेच्छं मयि ददती करुणां करोतु वाणी ॥३॥
 इह विदधति भव्यकाव्यबन्धान् भुवि यशसे कवयस्तदाप्नुवन्ति ।
 इति भवति ममापि काव्यतन्धे ध्रजन इवाधिगिरि स्पृहाति पङ्गोः ॥४॥
 मयि विदधति काव्यबन्धमन्धाः स्तवमथवा पिशुनाः सृजन्तु निन्दाम् ।
 अहमिह न विभेमि कीर्त्तनीयं कथमपि कृष्णकृतूहल मया यत् ॥५॥

अन्त— विप्रैराद्योप्यजादेविधिवदुपनयादेत्य जन्म द्वितीय ,

इद्गायत्र्याः स्वय ता निजहृदि निदधद् ब्रह्मविच्चित्रकृद्यः ।

साङ्गे वेदेष्यधीती सपदि किल ऋचो यस्य विश्वासरूपा-

स्तत्राभिव्यक्तमूर्तिविभुरपि स मम श्रीधरः श्रेयसेऽस्तु ॥७६॥

इति श्रीलक्ष्मणभट्टात्मजश्रीरामचन्द्रविरचिते गोपाललीलास्ये महाकाव्ये कस-
 वधो नाम एकोनविंशः सर्गः ।

२. कृष्णकृतूहल महाकाव्य :—कवि ने इस काव्य की रचना वि.स. १५७७
 में अयोध्या में रहते हुए की है। इसका भी प्रतिपाद्य विषय श्रीकृष्णलीला का

१-अब्दे गोत्रमुनीपुत्रगणिते (११७७) मापस्य पक्षे सिद्धे-

स्योप्याद्यो निवसन् सती परगुणप्रीत्यारमनां सेवकः ।

श्रीमत्सम्पन्नमट्टसंघातिलकः श्रीमत्समेन्द्रानुजः ,

काव्यं कृष्णकृतूहलाख्यममृत श्रीरामचन्द्रः कविः ।

वर्णन ही है। श्रीगोपाललीला काव्य की अपेक्षा इसकी रचना अधिक प्रौढ और प्राञ्जल है।^१ यह काव्य अद्यावधि अप्राप्त है। वेचनराम शर्मा ने गोपाललीला के सम्पादकीय उपसंहार में अवश्य उल्लेख किया है कि आरम्भ के दो पत्रैरहित इसकी प्रति मुझे प्राप्त हुई है।^२ विशेष शोध करने पर संभव है इस महाकाव्य को अन्य प्रतियाँ भी प्राप्त हो जायें।

प्रस्तुत ग्रन्थ में चन्द्रशेखर भट्ट ने भी मत्तमयूर, प्रहृषिणी, वसन्ततिलका, प्रहरणकलिका, मालिनी, पृथ्वी, शिखरिणी, हरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलवि-
क्रीडित और स्रग्धरा छन्द के प्रत्युदाहरण कृष्णकुतूहल काव्य के दिये हैं। इन कतिचित् पद्यों का रसास्वादन करने से यह स्पष्ट है कि वस्तुतः यह काव्य महा-
काव्य की श्रेणि का ही है।

३. रोमावलीशतकम् :—१२५ पद्यों का यह खण्ड-काव्य है। वि० सं० १५७४ में इसकी रचना हुई है। यह लघुकाव्य आलंकारिक-भाषा में शृंगार-रस से ओत-प्रोत है। इसमें कवि ने अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। इसका आद्यत इस प्रकार है :—

आदि— श्रीलावण्याब्धिवेनाकलितनववयोवातशालाविशाला ,

लीला नानाकलानां त्वरितमपसरद्वालयचेलाञ्चलश्रीः ।

ह्रीलामस्याग्रदूतीविहितपतिवशीभावशीलादिशिक्षा—

भीलास्यं रोमराजी हरतु हरिरुचिर्वाञ्छवाचां श्रिया नः ॥१॥

ध्यातस्यादिकथेः सुयन्धुविदुषो वाणस्य चान्यस्य वा ,

वाचामाश्रितपूर्वपूर्ववचसामासाद्य काव्यक्रमम् ।

अर्वाञ्चो भवभूति-भारविमुखाः श्रीकालिदासादयः ,

सञ्जाताः कवयो वयं तु कवितां के नाम कुर्वीमहि ॥२॥

इत्थं जातविवृत्यनेरीप कवितामार्गं कथं सञ्चर—

दञ्चैयं कविकीर्तिमित्यतितरां जगत्ति चिन्तां चिरात् ।

तत्किं काव्यमुपभ्रमेयकविभिः प्राङ्महिते याङ्मये,

भारत्या विभवेऽप्याऽतिमुलभं किं कस्य नाम्यस्यतः ॥३॥

१—'गोपाललीला की अपेक्षा कृष्णकुतूहल विशेष चमत्कृत बना है।'

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : गोपाललीला भूमिका ।

२—'१६ व कृष्णकुतूहलास्यं काव्यमारम्भे द्वितीयपत्ररहितं मयासादि ।' पृ० २३५

अतिशस्तवस्तुवृत्तिर्बहुशस्तन्यस्तनवरसोपाधिः ।

अर्वाचीनकवीनामुपमाता कालिदासोऽभूत् ॥४॥

प्रभवति परनेकः पञ्चपाणां समाजे,

निजमतगुणजातिदुर्जनस्त्याज्यमूर्तिः ।

श्रवणरसनचक्षुघ्निहृत्त्वत्कदम्बे,

प्रथममिह मनीषी वेत्तु दृष्टान्तमन्तः ॥५॥

श्रितभूपचेतसि सतां जातु न बक्रादिभाषविदम् ।

भुवि कविभिरसुलभादौ विदितः सदृशः सतां सदालोडयः ॥६॥

कृतेराद्यश्लोके मतिमुपयता कर्तुं मधुना,

न शक्यं केनापि क्वचन शतशो वर्णनमिति ।

मूहुः श्रुत्वा लोकाञ्जमितकृतिकौतूहलहृदा,

मयोपक्रम्यान्यस्सपदि विहितं साहसमिदम् ॥७॥

अस्पृष्टपूर्वकविताच्छ्रविता दधान,

उर्वाघरेश्वरमनोतिविनोदनाय ।

श्लोकैः शतेन कुतुकात् कविरामचन्द्रो,

रोमायलेः किमपि वर्णनमातनोति ॥८॥

×

×

×

अन्त— श्रीमल्लभमणभट्टसूनुरनुजः श्रीवल्लभश्रीगुरो-

रध्येतुः सममग्रजो गुणिमणेः श्रीविश्वनाथस्य च ।

अन्दे वेदमुनीपुचन्द्रगणिते (१५७४) श्रीरामचन्द्रः कृतो,

रोमालीशतकं व्यधात् सकुतुकादुर्वाघरप्रतीये ॥१२५॥

इति श्रीलक्ष्मणभट्टात्मजश्रीरामचन्द्रकविकृतं रोमायलीशृङ्गारशतकं सम्पूर्णम् ।

×

×

×

यह काव्य अद्यावधि अप्रकाशित है । इसकी एक पूर्ण प्रति विद्याविभाग सरस्वती भंडार, कांकरोली में है, और दो अपूर्ण प्रतियें राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर^१ एवं शाखा-कार्यालय जयपुर^२ में है ।

१. वय १६।१२, पत्र संख्या १२, प्रथमपत्र लिखित परिषय—“पुस्तकमिदं पञ्चनदि-मधुसूदनभट्टस्य । शृङ्गारशतके रामचन्द्रकविकृते ।”—दिनारे पर—“सहमीनाथभट्टीयम् ।”

२. ग्रन्थ नं० ११२३५ पत्र संख्या १७

३. विश्वनाथ पारदानन्दन संग्रह, संपांक ३३५ ।

४. रसिकरञ्जन स्वोपज्ञटीका-सहित :— इस लघुकाव्य का दूसरा नाम 'शृङ्गारवैराग्यशतम्' भी है। इस काव्य की यह विशेषता है कि प्रत्येक पद्य शृङ्गार और वैराग्य दोनों अर्थों का समानरूप से प्रतिपादन करता है अर्थात् इसे द्विधाश्रय काव्य या द्विसन्धान काव्य भी कह सकते हैं। इसमें कुल १३० पद्य हैं। टीका की रचना स्वयं कवि ने वि० सं० १५८०, अयोध्या में की है। ग्रंथ का आद्यत इस प्रकार है :—

आदि— शुभारम्भे दम्भे महितमतिडिम्भेङ्गितशतं ,
मणिस्तम्भे रम्भेक्षणसकृचकुम्भे परिणतम् ।

अनालम्बे लम्बे पथि पदविलम्बेऽमितसुखं ,
तमालम्बे स्तम्बेरमवदनमम्बेक्षितमुखम् ॥१॥

× × ×

एकश्लोककृती पुरः स्फुरितया सत्तस्वगोष्ठ्या समं ,
साधूनां सदसि स्फुटां विटकथां को वाच्यवृत्त्या नयेत् ।
इत्याकर्ष्यं जनश्रुति वितनुते श्रीरामचन्द्रः कविः ,
श्लोकानां सह पञ्चविंशतिशतं शृङ्गारवैराग्ययोः ॥३॥

अन्त— प्रख्यातो यः पदार्थैरमृतहरिगजश्रीसखैः श्लोकशाली ,
स्फीतातिस्फूर्तिरुद्यद्बुधमुदनुगिरं क्षीरधी रामचन्द्रः ।
आन्तोऽस्मिन् मन्दरागः फणिपतिगुणभृञ्जातुमञ्जेत्कथं, न,
स्यादाधारोऽभुना चेदिह न विरचितः श्रीमता वाङ्मुखेन ॥१३०॥

× × ×

टीका का उपसंहार—

शृङ्गारवैराग्यशतं सपञ्चविंशत्ययोऽध्यानगरे व्यधत् ।
अब्दे विद्यद्वारणबाणचन्द्रे (१५८०), श्रीरामचन्द्रोऽनु च तस्य टीकाम् ॥
श्रीरामचन्द्रकथिना काव्यमिदं व्यरचि विरतिबीजतया ।
रसिकानामपि रतये शृङ्गारार्योऽपि संगृहीतोऽत्र ॥

पुष्पिका—इति श्रीलक्ष्मणभट्टसूनु-श्रीरामचन्द्रकविकृतं सटीकं रसिकरञ्जनं नाम शृङ्गारवैराग्यशतसमानं काव्यं सम्पूर्णम् ।

यह काव्य वि० सं० १७०३ की लिखित प्रति के आधार से संपादित होकर सन् १९८७ में काव्यमाला के चतुर्थगुच्छक में प्रकाशित हो चुका है, जो कि अब प्रायः अप्राप्य है ।

५ शृङ्गारवेदान्त—इसका उल्लेख केवल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ही किया है, अन्य किसी भी सूचीपत्र में इसका उल्लेख नहीं है। अप्राप्त ग्रंथ है। मेरे विचारानुसार सम्भव है रसिकरजन के अपरनाम 'शृङ्गारवैराग्यशत' को 'शृङ्गारवेदान्त' मान कर भारतेन्दुजी ने लिख दिया हो।

६ दशावतार-स्तोत्रम्—यह स्तोत्र अद्यावधि अप्राप्त है। इसका केवल एक पद्य वृत्तमौक्तिक^१ में पञ्चचामर छन्द के प्रत्युदाहरण-रूप में उद्धृत हुआ है जो निम्नलिखित है —

अकुण्ठघार भूमिदार कण्ठपीठलोचन—

क्षणध्वनद्ध्वनत्कृतिक्वणत्कुठारभोषण ।

प्रकामवाम जामदग्न्यनाम रामहैहय—

क्षयप्रयत्ननिर्दय व्यय भयस्य जृम्भय ॥

७ नारायणाष्टकम्—यह स्तोत्र भी अद्यावधि अप्राप्त है। मदालस छन्द का प्रत्युदाहरण देते हुये चन्द्रशेखरभट्ट^२ ने यह पद्य इस रूप में दिया है—

वृन्दातिभासि शरदिन्दावखण्डरुचि वृन्दावनव्रजवधू—

वृन्दागमच्छलनमन्दावहासवृत्तनिन्दार्थवादकथनम् ।

वन्दास्विभ्यदरविन्दासनक्षुभितवृन्दारकेश्वरकृत—

च्छन्दानुवृत्तिमिह नन्दात्मज भुवनकन्दाकृति हृदि भजे ॥

कवि की प्राप्त रचनाओं में स १५८० तक का उल्लेख है। अतः अनुमान किया जा सकता है कि इसके कुछ समय पश्चात् ही विपप्रयोग से कवि स्वर्गलोक को प्रयाण कर गया हो।

नारायण भट्ट—

कवि रामचन्द्र भट्ट के पुत्र नारायण भट्ट के सम्बन्ध में कोई विशिष्ट उल्लेख प्राप्त नहीं है और न इनके द्वारा रचित किसी कृति का उल्लेख ही प्राप्त होता है।

रायभट्ट—

कवि रामचन्द्र भट्ट के पौत्र रायभट्ट के सम्बन्ध में भी कोई ऐतिहासिक उल्लेख प्राप्त नहीं है। इनका बनाया हुआ शृङ्गारवत्सल नामक १०४ पद्यों का खण्ड-

१-भारतेन्दु ग्रन्थावली, भाग ३, पृ० १६८

२-वृत्तमौक्तिक पृष्ठ १२६

३- .. १६७

काव्य अवश्य प्राप्त होता है। इस लघुकाव्य में पार्वती और शंकर का शृङ्गार-वर्णन किया गया है। इस का उपसंहार और पुष्पिका इस प्रकार है:—

उपसंहार—गुम्फो वाचां मसृणमधुरो मालतीनामिव स्यात्,

अर्थो वाच्यः प्रसरणपरः सम्मितः सौरभस्य ।

भावयंग्यो रस इव रसस्तद्विदाह्लादहेतुः-

मलिवाऽसौ मुकविरचना कस्य भूपां न घत्ते ॥१०४॥

पुष्पिका—इति श्रीविद्यागरिष्ठ-वसिष्ठ-नारायणभट्टात्मजेन महाकविपण्डित-राय-भट्टेन विरचितं शृङ्गारकल्लोलनाम खण्डकाव्यम् ।

चन्द्रशेखरभट्ट^१ ने मालिनी छन्द का प्रत्युदाहरण देते हुए लिखा है:—

“अस्मत्पितामहमहाकविपण्डितश्रीरायभट्टकृते शृङ्गारकल्लोले खण्डकाव्ये—

मन इव रमणीनां रागिणी वारुणीयं,

हृदयमिव युवानस्तस्कराः स्वं हरन्ति ।

भवनमिव मदीयं नाथ शून्यो हि देश-

स्तव न गमनमीहे पान्थ कामाभिरामा ॥”

इस पद्य को देखते हुये यह कहा जा सकता है कि काव्य-साहित्य पर आपका अच्छा अधिकार था और यह लघु रचना आपकी सफल रचना है। यह खण्ड-काव्य अद्यावधि अप्रकाशित है। इसकी १६६५ की लिखित^२ एकमात्र १२ पत्रों की प्रति विद्याविभाग सरस्वती भंडार कांकोली में सं. कां. बंध ६६।१० पर सुरक्षित है। इस प्रति का द्वितीय पत्र अप्राप्त है।

केटलॉग केटलोगरम् भा. १ पृ. ४७१ के अनुसार रायभट्टरचित ‘यति-संस्कार-प्रयोग’ नामक ग्रन्थ भी प्राप्त है। रायभट्ट यही है या अन्य कोई विद्वान् ? इसका निर्णय प्रति के सम्मुख न होने से नहीं किया जा सकता।

लक्ष्मीनाथ भट्ट—

चन्द्रशेखर भट्ट के पिता एवं कवि रामचन्द्र भट्ट के प्रपौत्र लक्ष्मीनाथ भट्ट के सम्बन्ध में भी कोई ऐतिह्य उल्लेख प्राप्त नहीं है। प्राप्त रचनाओं में पिङ्गल-प्रदीप का रचनाकाल १६५७ है, अतः इनका आविर्भाव-काल १६२० से १६३० के मध्य का माना जा सकता है। इनकी प्राप्त रचनाओं की देखते हुए यह

१. देखें, वृत्तभौतिक पृ. १२६.

२. भूतानपट्टविपुमिते (१६६५) वर्षे वारे नियोगस्य ।

श्रेत्रहृष्णप्रतिपदि तिस्रितं हरिषद्दरेखेदम् ॥

निःसंदेह कहा जा सकता है कि इनका अलङ्कार-शास्त्र, छन्दःशास्त्र और काव्य-साहित्य पर एकाधिपत्य था। 'सकलोपनिपद्द्रहस्यार्णवकर्णधार' विशेषण से संभव है कि इन्होंने किसी उपनिपद् पर या उपनिपद्-साहित्य पर लेखिनी अवश्य ही चलाई हो ! वृत्तमौक्तिकवार्तिकदुष्करोद्धार की रचना १६८७ में हुई है, अतः अनुमान है कि यह रचना इनकी अन्तिम रचना हो ! इनके द्वारा सजित प्राप्त साहित्य का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:—

१. सरस्वतीकण्ठाभरण-टीका—धाराधिपति भोजनरेन्द्र-प्रणीत इस ग्रन्थ की टीका का नाम 'दुष्करचित्रप्रकाशिका' है। टीकाकार ने इसमें रचना संवत् नहीं दिया है। टीका के नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि यह विस्तृत परिमाणवाली टीका न होकर दुर्गम स्थलों का विवेचन मात्र है। इसकी एकमात्र ४६ पत्रों की कीटभक्षित प्रति एशियाटिक सोसायटी, कलकता के संग्रह में सुरक्षित है। इसका आद्यन्त इस प्रकार है:—

आदि— स्मारं स्मारमुदारदारविरहव्याधिव्यथाव्याकुलं,
रामं वारिधिवन्धवन्धुरयदाःसम्पृष्टदिङ्मण्डलम् ।
श्रीमद्भोजकृतप्रबन्धजलघी सेतुः कवीनां मुदो
हेतुं संरचयामि बन्धविविधव्यास्यातकीतुहलैः ॥१॥

अन्त— श्रीराघभट्टतनयेन नयान्वितेन,
धाराधिनायनूपतेः सुमतेः प्रबन्धे ।
प्रोचे यदेव वचनं रचनं गुणानां,
वाग्देवताऽपि परितुष्यति तेन माता ॥१॥
बुवंतु कवयः कण्ठे दुष्करार्थसुमालिकाम् ।
लक्ष्मीनाथेन रचितां धान्देवीकण्ठभूषणे ॥२॥

पुष्पिका— इति श्रीमद्रायभट्टात्मज-श्रीलक्ष्मीनाथभट्टविरचिता सरस्वती-कण्ठाभरणालङ्कारे दुष्करचित्रप्रकाशिका समाप्ता ।

२. प्राकृतपिङ्गल-टीका—इस टीका का नाम पिङ्गलप्रदीप या छन्दःप्रदीप है। इसकी रचना सं. १६५७ में हुई है। प्रोठ एय प्राञ्जल भाषा में विशद शैली में विवेचन होने से यह टीका छन्दःशास्त्रियों के लिये सधमुच प्रदीप के समान ही है। इसका आद्यन्त इस प्रकार है—

१. देखें, वृत्तमौक्तिक पृ. २६१, २६४, २६६, २६६, ३०१ आदि

आदि— गोपीपीनपयोधरद्वयमिलञ्चेलाञ्चलाकर्पण-
 क्ष्वेलिव्यापृतचारुञ्चलकराम्भोज व्रजत्कानने ।
 द्राक्षामञ्जुलमाधुरीपरिणमद्वाग्विभ्रम तन्मना-
 गद्वैत समुपास्महे यदुकुलालम्ब विचित्र महः ॥१॥
 लम्बोदरमवलम्बे स्तम्बेरमवदनमेकदन्तवरम् ।
 अम्बेक्षितमुखकमल य वेदो नापि तत्त्वतो वेद ॥२॥
 गङ्गाशीतपयोभयादिव मिलद् भालाक्षिकीलादिव,
 ध्यालक्ष्वेलजफूत्कृतादिव सदा लक्ष्म्यापवादादिव ।
 स्त्रीशापादिव कण्ठकालिमकुहूसान्निध्ययोगादिव,
 श्लोकण्ठस्य कृश करोतु कुशल शीतद्युतिः श्रीमताम् ॥३॥

विहितदयां मन्देष्वपि दत्त्वानन्देन वाङ्मयं देहम् ।

शब्देषु सन्देहव्ययाय वन्दे चिर गिर देवीम् ॥४॥

भट्टश्रीरामचन्द्रः कविविक्रमकुले लब्धदेहं श्रुतो यः,

श्रीमात्तारायणाख्य कविमुकुटमणिस्तत्तानूजोऽजनिष्ट ।

तत्पुत्रो रायभट्ट सकलकविकुलख्यातकीर्तिस्तदीयो,

लक्ष्मीनाथस्तनूजो रचयति रुचिरं पिङ्गलार्थप्रदीपम् ॥५॥

श्रीरायभट्टतनयो लक्ष्मीनाथ समुल्लसत्प्रतिभः ।

प्रायः पिङ्गलसूत्रे तनुते भाष्यं विशालमति ॥६॥

जल्लोकसा तुल्यतमं खलं किं रम्येपि दोषग्रहणस्वभावं ।

मतां परानन्दनमन्दिराणां चमत्कृतिं मत्कृतिरातनोनु ॥७॥

यत्र सूर्येण सभिन्नं नापि रत्नेन भास्वता ।

तत्पिङ्गलप्रदीपेन नाश्यतामान्तरं तमः ॥८॥

यद्यस्ति बौतुकं वश्यन्दं सन्दर्भविज्ञाने ।

सन्तं पिङ्गलदीपं लक्ष्मीनाथेन दीपितं पठत ॥९॥

विञ्च मत्कृतिरियं चमत्कृतिं चेन्न चेतसि सता विधास्यति ।

भारती व्रजतु भारतीश्रया लज्जया परमसौ रसातलम् ॥१०॥

अन्त— इत्यादि गद्यवाक्येषु मया किञ्चित्प्रदर्शितम् ।

विशेषस्तत्र तत्रापि नोक्तो विस्तरस्तद्गुणः ॥११॥

मन्दं यद्यथा ज्ञास्यमि सत्पदार्थमित्याकलय्यान् मया प्रदीप्तम् ।

छन्दः प्रदीपं वयसो विनोक्त्यं छन्दः ममस्तं स्वयमेव वित्तं ॥१२॥

अग्ने भास्करवाजिपाण्डवरसधमा (१६५७) मण्डलोद्भासिते,
भाद्रे मासि सिते दले हरिदिने वारे तमिस्रापतेः ।

श्रीमत्पिङ्गलनागनिमित्तवरग्रन्थप्रदीप मुदे,

लोकाना निखिलार्थसाधकमिमं लक्ष्मीपतिनिर्ममे ॥३॥

विशिष्टस्नेहभरितं सत्पात्रपरिकल्पितम् ।

स्फुरद्वृत्तदशं छन्दःप्रदीप पश्यत स्फुटम् ॥४॥

छन्दःप्रदीपकः सोऽथमखिलार्थप्रकाशकः ।

लक्ष्मीनाथेन रचितस्तिष्ठत्वाचन्द्रतारकम् ॥५॥

पुष्पिका—इत्यालङ्कारिकचक्रूडामणिश्रीमद्रायभट्टामजश्रीलक्ष्मीनाथभट्टविर-
चिते पिङ्गलप्रदीपे वरुणवृत्ताख्यो द्वितीयः परिच्छेदः समाप्तः ।

डा. भोलादाकर व्यास द्वारा सम्पादित प्राकृतपिङ्गलम्, भा. १ में यह टीका
प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी वाराणसी द्वारा सन् १९५६ में प्रकाशित हो चुकी है ।

३. उदाहरणमञ्जरी—यह ग्रन्थ अद्यावधि अप्राप्त है । लक्ष्मीनाथ भट्ट की
यह स्वतन्त्र कृति प्रतीत होती है । इस ग्रन्थ में केवल छन्दों के ही नहीं, अपितु
विपुल सख्या में प्राप्त छन्द-भेदों के उदाहरण भी दिये गये हैं । यही कारण है कि
स्वयं लक्ष्मीनाथ ने 'पिङ्गलप्रदीप' में और भट्ट चन्द्रशेखर ने वृत्तमौक्तिक^३ में
गाथा, स्वन्धक, दोहा आदि छन्द-भेदों के उदाहरणों के लिये 'उदाहरणमञ्जरी'
देखने का आग्रह किया है । स० १९५७ में रचित पिङ्गलप्रदीप में उल्लेख होने से
यह निश्चित है कि इसकी रचना १९५७ के पूर्व ही हो चुकी थी ।

केटलॉगस् केटलॉगरम्, भाग २ पृष्ठ १३ पर इसका नाम उदाहरणचन्द्रिका
दिया है, जो कि भ्रमवाचक है ।

४. वृत्तमौक्तिक-द्वितीयखण्ड का अर्थ—प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रथम-खण्ड की
रचना चन्द्रशेखर भट्ट ने १९७५ में पूर्ण की है और द्वितीय-खण्ड की समाप्ति
होने के पूर्व ही चन्द्रशेखर इस लोक से प्रयाण कर गये । प्रयाण करने के पूर्व
दुर्भाग्य ने अपनी आन्तरिक अभिलाषा अपने पिता लक्ष्मीनाथ भट्ट को बतलाई कि
मेरे इस ग्रन्थ को घाप पूर्ण कर दें । सुयोग्य, प्रतिभाशाली, पाण्ड्यचरित आदि
महाराज्यों के प्रपौत्र, विनयशील पुत्र की अन्तिम अभिलाषा के अनुसार ही
शोबसन्तप्त लक्ष्मीनाथ भट्ट ने अपने पुत्र की कीर्ति को अक्षुण्ण रखने के लिये
तत्काल ही स० १९७६ वार्षिकी पूर्णिमा के दिन इस ग्रन्थ को पूर्ण कर दिया ।

१-देवें, पृष्ठ २६२, २६५, २६७, ४०६, ४०८,

२-देवें, पृष्ठ १०, १३, १४, १६, १७, २१, २४,

याते दिव सुतनये विनयोपपन्ने,
 श्रीचन्द्रशेखरकवौ किल तत्प्रबन्ध ।
 विच्छेदमाप भुवि तद्वचसं व साद्धं ,
 पूर्णांकृतश्च स हि जीवनहेतवेऽस्य ॥८॥

श्रीवृत्तमौक्तिकमिद लक्ष्मीनाथेन पूरित यत्नात् ।
 जीयादाचन्द्राकं जीवातुर्जीवलोकस्य ॥९॥

× × ×

रसमुनिरसचन्द्रं भाविते (१६७६) वैक्रमेन्दे ,
 सितदलकलितेऽस्मिन्कार्तिके पीरुमास्याम् ।
 अतिविमलमति श्रीचन्द्रमौलिवितेने ,
 रुचिरतरमपूर्वं मौक्तिक वृत्तपूर्वम् ॥१॥

यहां यह विचारणीय है कि द्वितीय खंड का कितना अंश चन्द्रशेखरभट्ट ने लिखा है और कितने अंश की पूर्ति लक्ष्मीनाथ भट्ट ने की है ? इसका निर्णय करने के लिये वृत्तमौक्तिक का अंतरग आलोडन आवश्यक है ।

अथवार की शैली सूत्रकार की तरह सक्षिप्त शैली नहीं है, प्रत्येक छन्द का लक्षण वारिकारूप में न देकर उसी लक्षणयुक्त पूर्ण पद्य में दिया है जिससे छन्द का लक्षण और विराम स्पष्ट हो जाते हैं और वह लक्षण उदाहरण का भी कार्य दे सकता है । पश्चात् स्वयं रचित उदाहरण और प्राचीन महाकवियों के प्रत्युदाहरण दिये हैं । और दूसरी बात, तत्समय में या प्राचीन छन्द शास्त्रों में प्रयोग-प्राप्त प्रत्येक छन्द का लक्षण देने का प्रयत्न किया है । इस प्रकार की शैली हमें द्वितीय-खण्ड के प्रथमवृत्तनिरूपण प्रकरण तक ही प्राप्त होती है । द्वितीय प्रकरण से छन्दों का सक्षिप्तीकरण दृष्टिगोचर होता है । कतिपय स्थलों पर छन्दों के लक्षण उदाहरण-स्वरूप न होकर वारिका-सूत्ररूप में प्राप्त होते हैं । और, उस वारिका को स्पष्ट करने के लिये स्वोपज्ञ टीका प्राप्त होती है, जो कि प्रथम प्रकरण तक प्राप्त नहीं है । साथ ही, पीछे के प्रकरणों में छन्द शास्त्रों के प्रचलित छन्दों के भी लक्षण न देकर अन्य ग्रंथ देखने का संकेत किया है एवं कई उदाहरणों के लिये 'ऊहम्' कह कर या प्रथमचरण मात्र ही दिया है । अतः यह अनुमान पर सक्षते है कि प्रथम प्रकरण तक की रचना चन्द्रशेखर भट्ट की है और द्वितीय प्रकरण से १२वें प्रकरण तक की रचना लक्ष्मीनाथ भट्ट की है । किन्तु, तृतीय प्रकरण में 'प्रचित्तव' दण्डक का लक्षण छन्द सूत्रकार आचार्य

पिङ्गल-सम्मत दो नगण, आठ रगण^१ का प्राप्त है, जब कि लक्ष्मीनाथ भट्ट ने 'पिङ्गलप्रदीप'^२ में प्रचितक का लक्षण दो नगण, सात यगण स्वीकार किया है। दो नगण, सात यगण के लक्षण को 'वृत्तमौक्तिक में 'सर्वतोभद्र' दण्डक का लक्षण माना है और मतान्तर का उल्लेख करते हुए लिखा है—'एतस्यैवान्यत्र 'प्रचितक' इति नामान्तरम्।'^३ अतः मेरे मतानुसार चतुर्यं अर्द्धसम-प्रकरण तक की रचना चन्द्रशेखर भट्ट की है और पचम विपमवृत्त-प्रकरण से अन्त तक की रचना लक्ष्मीनाथ भट्ट की होनी चाहिये। अस्तु

५. वृत्तमौक्तिकवार्तिकदुष्करोद्धार—चन्द्रशेखरभट्ट रचित वृत्तमौक्तिक-प्रथम खण्ड के प्रथम गाथा-प्रकरणस्थ पद्य ५१ से ८६ तक के ३६ पद्यों पर यह टीका है। टीकाकार ने इसे ११ विश्रामो में विभक्त किया है। मात्राद्विष्ट, मात्रानष्ट, वर्णोद्विष्ट, वर्णनष्ट, वर्णमेरु, वर्णपताका, मात्रामेरु, मात्रापताका, वृत्तस्थ लघुगुरुसंख्या-ज्ञान, वर्णमकंठी और मात्रामकंठी नामक विश्राम हैं। छन्दशास्त्र में यदि कोई कठिनतम विषय है तो वह है प्रस्तार। इसी प्रस्तार-स्वरूप का टीकाकार ने बहुत ही रोचक शैली में विशद वर्णन किया है, जिससे तज्ज्ञगण सरलता के साथ इस दुष्कर प्रस्तार का अवगाहन कर सकते हैं। इस टीका की रचना स० १६८७ कार्तिककृष्णा पचमी^४ को हुई है। यह टीका प्रस्तुत ग्रथ में पृ० २६२ से ३२६ तक में मुद्रित है।

६ शिवस्तुति—यह शायद भगवान् शिव का स्तोत्र है या अष्टव या कविकृत किसी ग्रथ का अंश है निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। वृत्तमौक्तिक^५ में मदनगृह नामक मात्रिक छन्द का प्रत्युदाहरण देते हुए लिखा है— 'यथा याऽस्मिन्नु शिवस्तुती'। अतः संभवतः यह स्तोत्र ही होना चाहिए। पद्य निम्नलिखित है—

धरकलितकपाल धृतनरमाल

भालस्थानलहृतमदन कृतरिपुवदन ।

भवभयहरण गिरिजारमण

सकलजनस्तुतशुभचरित गुणगणभरितम् ।

१—देवे, वृत्तमौक्तिक पृ० १८४

२—'अथ प्रचितको दण्डक —प्रचितकसमभिधो धीरधीभि स्मृतो दण्डको न द्वयादुसरै सप्तभिर्भ्यो । नगणद्वयादुसरै सप्तभिर्भ्यंगणैर्धीरधीभि सप्तविंशतिवर्णैरिभचरण प्रचितकास्यो दण्डक स्मृतः ।' [प्राकृतपौलस्य पृ० ५०६]

३—देवे, वृत्तमौक्तिक पृ० १८५

४—, पृ० ३२६ ५—, पृ० ४५

कृतफणिपतिहार त्रिभुवनसार

३१ ॥

दक्षमखक्षयसक्षुब्ध रमणीलुब्ध ।

गलराजितगरल गङ्गाविमल

कैलाशाचलधामकर प्रणमामि हरम् ॥

यह पूर्ण स्तोत्र अद्यावधि अप्राप्त है ।

७. नन्दनन्दनाष्टक—यह स्तोत्र भी अद्यावधि अप्राप्त है । इसका केवल एक पद्य चर्चरी छन्द के प्रत्युदाहरण-रूप में प्राप्त है—

“यथा वा, अस्मत्तातचरणाना श्रीनन्दनन्दनाष्टके—”

मन्दहासविराजितं मुनिवृन्दवन्धपदाम्बुज,

सुन्दराधरमन्दराचलधारि चारुलसद्भुजम् ।

गोपिकाकुचयुग्मकुङ्कुमपङ्करूपितवक्षस ,

नन्दनन्दनमाश्रये मम किं करिष्यति भास्करि ।

८. सुन्दरीध्यानाष्टकम्—यह अष्टवस्तोत्र भी अप्राप्त है । इसका भी केवल एक पद्य चर्चरी छन्द के प्रत्युदाहरण-रूप में प्राप्त है—

“यथा वा, तेषामेव श्रीसुन्दरीध्यानाष्टके—”

कल्पपादपनाटिकावृतदिव्यसौधमहाणंवे ,

रत्नसङ्घकृतान्तरीपसुनीपराजिविराजिते ।

चिन्तितार्थविधानदक्षसुरत्नमन्दिरमध्यगा ,

मुक्तिपादपवत्लरीमिह सुन्दरीमहमाश्रये ॥

९. देवीस्तुति—यह देवीस्तोत्र भी अद्यावधि अप्राप्त है । इसका केवल एक पद्य प्रस्तुत ग्रन्थ में ‘हीर छन्द’ के प्रत्युदाहरण-रूप में प्राप्त है—

पाहि जननि ! क्षम्भुरमणि ! शुम्भदलनपण्डिते !

तारतरलरत्नखचितहारखलयमण्डिते ।

भालरुचिरचन्द्रशकलशोभि सकलनन्दिते ।

देहि सततभक्तिमतुलमुक्तिमखिलवन्दिते !

१०. सङ्गयणन—इसका एक पद्य सगधराछन्द के प्रत्युदाहरण-रूप में प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राप्त है । संभवतः कविरचित यह स्फुट पद्य हो, या ही संकता

है कि कोई लघुकाव्य का अंश ही ! पद्य निम्न है:—

संग्रामारण्यचारी विकटभटभुजस्तम्भभूभूद्विहारी ,
शत्रुक्षोणीशचेतोमृगनिकरपरानन्दविक्षोभकारी ।
माद्यन्मातङ्गकुम्भस्यलगलदमलस्यूलमुक्ताग्रहारी ,
स्फारीभूताङ्गधारी जगति विजयते खङ्गपञ्चाननस्ते ॥^१

चन्द्रशेखरभट्ट—

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रणेता चन्द्रशेखर भट्ट लक्ष्मीनाथ भट्ट के पुत्र हैं । इनकी माता का नाम लोपामुद्रा^२ है । इन्होंने अपनी अन्तिम रचना वृत्तमौक्तिक (सं० १६७५-७६) में स्वप्रणीत पाण्डवचरित महाकाव्य और पवनदूत खण्डकाव्य का उल्लेख किया है अतः ये दोनों रचनार्थे सं० १६७५ के पूर्व की हैं । महाकाव्य की रचना के लिए कम से कम २५-३० की अवस्था तो अपेक्षित है ही । इस अनुमान से इनका जन्म १६४० और १६४५ के मध्य माना जा सकता है । सं० १६७५ की वसन्त पंचमी और सं० १६७६ की कार्तिकी पूर्णिमा के मध्य में इनका अल्पावस्था में ही स्वर्गवास हो गया था । अनुमान के अतिरिक्त इनके सम्बन्ध में कोई भी ज्ञातव्य वृत्त प्राप्त नहीं है । चन्द्रशेखर लक्ष्मीनाथ भट्ट के एकाकी पुत्र थे या इनके और भी भाई थे ? और चन्द्रशेखर के भी कोई सन्तान थी या नहीं ? इनकी वंश-परंपरा यही लुप्त हो गई या आगे भी कुछ पीढ़ियों तक चली ? आदि प्रश्न तिमिराच्छन्न ही हैं । इस सम्बन्ध में तो एतद्देशीय भट्ट-वंश के विद्वान् ही प्रकाश डाल सकते हैं ।

ग्रन्थकार द्वारा सजित साहित्य इस प्रकार है—

१. पाण्डवचरित महाकाव्य—स्वयं ग्रन्थकार ने प्रस्तुत ग्रन्थ में 'द्रुतविलम्बित, मालिनी, धादूँलविक्रीडित और स्रग्धरा छन्द के उदाहरण एवं प्रत्युदाहरण देते हुये 'मत्कृतपाण्डवचरिते महाकाव्ये, ममैव पाण्डवचरिते,' लिखा है । अतः उल्लिखित पद्य यहाँ दिये जा रहे हैं—

मत्कृतपाण्डवचरिते महाकाव्ये कण्वर्णनप्रस्तावे^३ —

नूपु विलक्षणमस्यपुनर्वंपुस्तहजकूण्डलयर्मसुमण्डितम् ।

सकललक्षणलक्षितमद्भुतं न घटते रयकारकुलोचितम् ॥

१. वृत्तमौक्तिक पृ. १६०

२. छन्दःशास्त्रपयोनिधिलोपामुद्रापति पितरम् ।

श्रीमत्लक्ष्मीनाथ सक्तागमपारग ऋदे ॥ पृ. २६०

३. वृत्तमौक्तिक पृ. ६२.

यथा वा, तत्रैव विदुरोक्तौ—

भिदुरमानसमाशुचिचक्षुष स विदुरो नितदैरतिभीषणै ।
सकलबालपरान्मवर्णने सदसि भूमिपतिं समबोधयत् ॥

×

×

×

यथा वा, पाण्डचरिते^१ —

भवनमिव ततस्ते बाणजालैरकुर्वन्,
गजरथहयपृष्ठे बाहुयुद्धे च दक्षा ।
विघृतनिशितखड्गाश्चर्मणा भासमाना
विदधुरथ समाजे मण्डलात् सव्यवोमात् ॥

×

×

×

यथा वा, ममैव पाण्डवचरिते भर्जुनागमने द्रोणवाक्यम्^२ —

ज्ञान यस्य ममात्मजादपि जना शस्त्रास्त्रशिक्षाधिक,
पार्थ सोऽर्जुनसज्जकोऽत्र सकलै कीतूहलाद् दृश्यताम् ।
श्रुत्वा वाचमिति द्विजस्य कवचो गोघाड्गुलित्राणवान्,
पार्थस्तूणशरासनादिरुचिरस्तत्राजगाम द्रुतम् ॥

×

×

×

यथा, ममैव पाण्डवचरिते^३

तुष्टेनाऽथ द्विजेन त्रिदशपतिमुतस्तत्र दत्ताभ्यनुज्ञ,
कर्णोऽपि प्राप्तमानस्तदसि बुरुपतेर्द्वन्द्वयुद्धार्थमागात् ।
जम्भाराति स्वसूनोरपरि जलधरैस्सव्यघादातपत्र,
चण्डाशुद्रचापि कर्णोपरि निजकिरणानाततानातिशीतात् ॥

इन पाद्यो पद्यों की रचनाशैली, शब्दयोजना, लाक्षणिकता और श्रालवा-
रिष योजना की देखते हुये नि सदेह कह सकते हैं कि यह वाक्य गुणों से परिपूर्ण
महाकाव्य ही है। लघुवचस्क की रचना होते हुये भी इसमें भावों की प्रीढता
और भाषा की प्रांजलता परिलक्षित होती है। रोद है कि यह ग्रन्थ अद्यावधि
अप्राप्त है। समक है शोधकर्ताओं को शोध करते हुये यह महाकाव्य प्राप्त हो
जाय तो अ-वकार के जीवन और दर्शन पर अथिक् प्रकाश डाला जा सके।

२ पवनदूतम्—यह खण्डकाव्य है। इसको 'दूतम्' शब्द से मेघदूत या किसी दूत-काव्य की पादपूर्तिरूप तो नहीं समझना चाहिए किन्तु रचना इसकी मेघदूत के अनुकरण पर ही हुई है। वृष्ण के मथुरा चले जाने पर राधा पवन के द्वारा सदेश भेजती है और स्वयं की मानसिक अवस्था का दिग्दर्शन कराती है। यह खण्डकाव्य भी अद्यावधि अप्राप्त है। इसका केवल एक पद्य प्रस्तुत ग्रन्थ में सिखरिणी छन्द के प्रत्युदाहरण रूप में प्राप्त है—

यथा वा, ममैव पवनदूते खण्डकाव्ये' —

यदा कसादीना निधनविधये यादवपुरी,
गत श्रीगोविन्द पितृभवनतोऽकूरसहितः ।
तदा तस्यो-मीलद्विरहदहनज्वालगहने,
पपात श्रीराधा कलिततदसाधारणगतिः ॥

३. प्राकृतपिङ्गल-‘उद्योत’ टीका—प्राकृतपिङ्गल में दो परिच्छेद हैं—
१ मात्रावृत्त परिच्छेद और २ वर्णवृत्त परिच्छेद। यह उद्योत नामक टीका प्रथम परिच्छेद पर है। इसकी रचना स १६७३ में हुई है। वैसे तो इस पर बीसो टीकायें हैं जिनमें रविकर, पशुपति, लक्ष्मीनाथमट्ट, वशीधर आदि की मुख्य हैं, किन्तु इस टीका की विशेषता यह है कि प्रस्तार और मात्रिक-छन्दों का विवेचन लालित्यपूर्ण भाषा में होते हुये भी सरलीकरण को लिये हुय है। पाण्डित्य-प्रदर्शन की अपेक्षा वर्णविषय का अधिब स्पष्टता के साथ प्रतिपादन किया है। इसकी १८वीं शती की लिखित ४५ पत्रों की एकमात्र-प्रति अनुप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर में ग्रन्थ न ५४१२ पर सुरक्षित है। यह कृति प्रकाशन-योग्य है। इसका आद्यन्त इस प्रकार है—

आदि— अहितहृदयकील गोपनागीमुलील,
सजलजलदनील लोवसत्राणशीलम् ।
उरणि निहितमाल भक्तवृन्दस्य पाल,
बलय दनुजकाल नन्दगोपालबालम् ॥१॥
तातमरचितपिङ्गलदीपध्वस्तचितघनमोहनसतति (?)
अर्थभारयुतपिङ्गलभावोद्योतमाचरति चन्द्रशेखर ॥२॥
श्रीमत्पिङ्गलनागोक्त सूत्राणा विशदाधिका ।
निष्पावबोधसिद्धार्थं सक्षिप्ता वृत्तिरुच्यते ॥३॥

अन्त— श्रीमत्पिङ्गलनागोक्तमात्रावृत्तप्रकाशकम् ।
 पिङ्गलोद्योतममलमविस्तृतमपि स्फुटम् ॥
 हराक्षिमुनिशास्त्रेन्दुमितेऽब्दे (१६७३) मासि चाश्विने ।
 सित मिते चन्द्रशेखर सव्यरीरचत् ॥

पुष्पिका—इति महामहोपाध्यायालङ्कारिकचक्रबूडामणि छन्दशास्त्रप्रस्थानपरमाचार्य-वेदा-तार्णवकर्णधार-श्रीलक्ष्मीनाथभट्टारकात्मज-चन्द्रशेखरभट्टविरचिताया पिङ्गलोद्योताख्याया सूत्रवृत्ती मात्रावृत्ताख्य प्रथम प्रकाश समाप्तः । समाप्त-श्चाय सूत्रवृत्ती प्रथम खण्ड ।

सयोज्य पाण्ड्युगल याचे साधूनह किमपि ।
 मत्सररहितैर्यत्नात् सशोध्य मे क्वचित् स्खलितम् ॥

भट्ट लक्ष्मीनाथ ने वृत्तमोक्तक-वार्त्तिकदुष्करोद्धार^१ मे इस पिङ्गलोद्योत टीका के उद्धरण दिए हैं ।

४ वृत्तमोक्तकम्—छन्दशास्त्र का प्रस्तुत ग्रन्थ है । इसमें दो खंड हैं । प्रथम मात्रावृत्त खंड, जिसकी १६७५ में रचना हुई है और द्वितीय वर्णवृत्त खंड है, जिसकी रचना १६७६ में हुई है । इस ग्रन्थ का विशेष परिचय आगे दिया जायगा ।

केटलांगस केटलांगरम् भाग १, पृष्ठ १८१ पर भट्ट चन्द्रशेखर रचित गंगादासीय छन्दोमजरी की टीका 'छन्दोमजरीजीवन' का भी उल्लेख है । इसकी एकमात्र प्रति इण्डिया ऑफिस लायब्रेरी लन्दन^२ में है, यह प्रति बगला लिपि में लिखी हुई है । इस टीका का मगलाचरण निम्न है—

वाणी कमलामभितो दोर्भ्यामालिङ्गितो योऽसौ ।
 त नारायणमादि सुरतरुवल्प सदा वन्दे ॥१॥
 छन्दसां मज्जरी तप्ताभिधेया स्फुटमानुना ।
 तस्या किं जीवनं न स्याच्चन्द्रशेखरभारती ॥२॥

किन्तु, इस टीका के मगलाचरण में टीकाकार ने अपना नाम चन्द्रशेखर

१-वृत्तमोक्तक पृ० १०९, ३१३

२-राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर के उपसचालक श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने इण्डिया ऑफिस लायब्रेरी लन्दन के कान्पवाहकों से सम्पर्क करके इस प्रति के प्राच्य भाग की फोटोर्जीवी मंगवा कर उपसध्य की उसक लिए मैं उनका धाभारी हूँ ।—स०

भारती दिया है न कि चन्द्रशेखर भट्ट । चन्द्रशेखर भट्ट ने अपनी कृतियों में अपने नाम के साथ कही भी 'भारती' शब्द का प्रयोग नहीं किया है । अपने नाम के साथ सर्वत्र भट्ट एव लक्ष्मीनाथात्मज का प्रयोग किया है । अतः यह स्पष्ट है कि छन्दोमञ्जरीजीवन के कर्ता चन्द्रशेखर भट्ट नहीं है, अपितु कोई चन्द्रशेखर भारती है । संभव है चन्द्रशेखर नाम-साम्य से भ्रमवशात् सम्पादक ने लिख दिया हो !

वृत्तमौक्तिक का सारांश

नामकरण—

कवि चन्द्रशेखर भट्ट ने प्रस्तुत ग्रन्थ का नाम 'वृत्तमौक्तिकम्'^१ रखा है, किन्तु द्वितीय-खण्ड के ग्यारहवें प्रकरण में 'वात्तिक वृत्तमौक्तिकम्'^२ तथा प्रथम खण्ड एव द्वितीय-खण्ड की पुष्पिका में 'वृत्तमौक्तिके पिङ्गलवात्तिके'^३ और प्रथम-खण्ड के १, ३, ४, ५वें प्रकरणों की तथा द्वितीय-खण्ड के प्रकरण ५, ७ से १० की पुष्पिकाओं में 'वृत्तमौक्तिके वात्तिके'^४ का उल्लेख है । लक्ष्मीनाथ भट्ट ने इस ग्रन्थ का नाम 'वृत्तमौक्तिक-वात्तिक' ही स्वीकार किया है, इसीलिए टीका का नाम भी 'वृत्तमौक्तिकवात्तिकदुष्करोद्धार'^५ रखा है । वस्तुतः प्राकृतपिङ्गल, छन्द-सूत्र एव प्राकृतपिङ्गल के टीकाकार पशुपति और रविकर की टीकाओं और शम्भु^६ प्रणीत छन्दश्चूडामणि (?) के आधार एव अनुकरण पर पिङ्गल के वात्तिक-रूप में ग्रन्थकार ने इसकी स्वतन्त्र रचना की है । अतः वृत्तमौक्तिक-वात्तिक नाम स्वीकार कर सकते हैं, किन्तु मूलतः अधिकांश स्थानों पर ग्रन्थकार ने एव टीकाकार महोपाध्याय मेघविजयजी ने 'वृत्तमौक्तिकम्' मौलिक नाम ही ग्रहण किया है, जो कि अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है ।

ग्रन्थ का सारांश—

प्रस्तुत ग्रन्थ दो खण्डों में विभक्त है । प्रथम-खण्ड मात्रावृत्त खण्ड^७ और द्वितीय-खण्ड वर्णिकवृत्त खण्ड^८ है ।

१-श्रीचन्द्रशेखरकविस्तनुते वृत्तमौक्तिकम् । पृ० १,
स्पष्टार्थं चरवृत्तमौक्तिकमिति ग्रन्थं मुदा निर्मितम् । पृ० २६०
श्रीवृत्तमौक्तिकमिदम् । पृ० २६१

२-पृ० २७२
३-पृ० ५६ एव २६१
४-देते पृ० १३, ३०, ४६, ४६, १६४, २०६, २१०, २६७, २७१
५-देते, वात्तिक-दुष्करोद्धार का मंगलाचरण एव प्रत्येक विध्याय की पुष्पिका ।
६-रविकर पशुपति-पिङ्गल शम्भुग्रन्थान् विलोक्य निर्बन्धात् । पृ० २७३
७-तत्र मात्रावृत्तखण्डे प्रथमे । पृ० २७३
८-अथ द्वितीयखण्डस्य वर्णिकवृत्तस्य । पृ० २७६

प्रथम खण्ड में छह प्रकरण हैं :—१ गाथाप्रकरण, २ पट्पदप्रकरण, ३ रड्वाप्रकरण, ४ पद्मावतीप्रकरण, ५ सर्वैयाप्रकरण और ६ गलितक-प्रकरण ।

द्वितीय-खण्ड में बारह प्रकरण हैं —१ वर्णवृत्त प्रकरण, २. प्रकीर्णक-वृत्त-प्रकरण, ३ दण्डक प्रकरण, ४. अर्ध-समवृत्त-प्रकरण, ५ विषमवृत्त प्रकरण, ६ वंतालीय प्रकरण, ७. यतिनिरूपण प्रकरण, ८ गद्य-निरूपण प्रकरण, ९ विरुदावली-प्रकरण, १० खण्डावली-प्रकरण, ११ विरुदावली-खण्डावली का दोषप्रकरण और १२. दोनों खण्डों की अनु-क्रमणिका ।

द्वितीय-खण्ड के नवम विरुदावली प्रकरण में चार अवान्तर प्रकरण हैं— १. कलिका-प्रकरण, २ चण्डवृत्त-प्रकरण, ३ त्रिभङ्गीकलिका-प्रकरण और ४ साधारण चण्डवृत्त-प्रकरण ।

इस प्रकार दोनों खण्डों के १८ प्रकरण होते हैं और नवम प्रकरण के चारो अवान्तर प्रकरण सम्मिलित करने पर कुल २२ प्रकरण^१ होते हैं ।

प्रथम खण्ड का सारांश

१. गाथा प्रकरण :

कवि मगधाचरण एवं ग्रथ-प्रतिज्ञा करके वर्णों की गुरु-लघु स्थिति का उदाहरण सहित वर्णन और लक्षण रहित काव्य का अनिष्ट फल का प्रतिपादन करता है । मात्राघो की टगणादि गणों की व्यवस्था और उनके प्रस्तार का निरूपण करते हुए मात्रिक-गणों के नाम तथा उनके पर्यायों की पारिभाषिक-सांकेतिक शब्दों की तालिका^२ देता है । पश्चात् वर्णवृत्तों के मगणादि गण, गणदेवता, गणों की मंत्रों और गणदेवों का फलाफल प्रदर्शित है ।

प्रस्तार का वर्णन करते हुये मात्रोद्विष्ट, मात्रानष्ट, घर्णोद्विष्ट, वर्णनष्ट, वणमेष्ट, वर्णपताका, मात्रामेष्ट, मात्रापताका, वृत्तद्वयस्थ गुरु-लघुज्ञान, वर्णमर्वंटी और मात्रामर्वंटी का दिग्दर्शन कराते हुये प्रस्तारविडम्बसास्या का निर्देश किया है; त्रिगणे अनुगार गद्यवृत्तों की प्रस्तार गम्या १३, ४२, १७, ७२६ होती है ।

१-उभयो गण्डयोश्चापि गम्भूयैव प्रजाविभम् ।

द्वाविंशति प्रकरणेषु रचितं वृत्तमोक्षितकं ॥ पृ० २८६

२-पारिभाषिक नाम तत्रेणो के लिए प्रथम परिशिष्ट दत्तं ।

गाथा के विगाथा, गाहू, उद्गाथा, गाहिनी, सिहिनी और स्कन्धक आर्या-भेदो का नामोल्लेख कर गाथा का लक्षण और आर्या' का सामान्य लक्षण उदाहरण सहित दिया है । प्राचीन परम्परा के अनुसार आर्या का विशिष्ट भेद दिखाया है जिसके अनुसार एक जगणयुक्त आर्या कुलीना, दो जगणयुक्त आर्या अभिसारिका, तीन जगणयुक्त आर्या रण्डा और अनेक जगणयुक्त आर्या वेश्या बहलाती है ।^१ गाथा छन्द के २५ भेदो के नाम और लक्षण देकर उदाहरणो के लिये स्वपिता लक्ष्मीनाथ भट्ट रचित 'उदाहरणमजरी' देखने का सकेत किया है ।

विगाथा, गाहू, उद्गाथा, गाहिनी, सिहिनी और स्कन्धक छन्दो के उदाहरण सहित लक्षण दिये हैं और स्कन्धक छन्द के २८ भेदो के नाम और लक्षण देते हुये उदाहरणो के लिये 'उदाहरणमजरी' का उल्लेख किया है ।

इस प्रकार प्रथम प्रकरण मे छन्दसख्या की दृष्टि से गाथादि ७ छन्द और गाथा के २५ भेद एव स्कन्धक के २८ भेदो का प्रतिपादन है ।

२. षट्पद प्रकरण

इस प्रकरण मे दोहा, रसिका, रोला, गन्धानक, चौपैया, घत्ता, घत्तानन्द, काव्य, उल्लाल और षट्पद छन्दो के लक्षण एव उदाहरण दिये हैं । इसमे उल्लाल छन्द का उदाहरण नहीं है । साथ ही दोहा के २३ भेद, रसिका के ८ भेद, रोला के १३ भेद, काव्य के ४५ भेद और षट्पद के ७१ भेदो के नाम और लक्षण दिये हैं तथा इन समस्त भेदो के उदाहरणो के लिए कवि ने 'उदाहरणमजरी' देखने का सकेत किया है । इसमे काव्य के प्रथम भेद शतछन्द का उदाहरण भी दिया है ।

चौपैया छन्द के एक चरण मे ३० मात्रायें होती हैं । त्रयकार ने चार चरणो का अर्थात् १२० मात्राओ का एक पाद स्वीकार कर चार पदो की ४८० मात्रा स्वीकार की है ।

प्रकरण के अन्त में काव्य और षट्पद के प्राकृत और संस्कृत साहित्य के अनुसार दोषो का निरूपण है ।

१-संस्कृत साहित्य मे जिसे आर्या कहते हैं, उसे प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य मे गाथा कहते हैं । "आर्यैव संस्कृतेष्वरभाषासु गाथासन्नेति ।" हेमच द्रौय छन्दोनुशासन, पत्र १२८ ।

२-एकस्मात् कुलीना द्वान्म्यामप्यभिसारिका भवति ।

नायकहीना रण्डा, वेश्या बहुतायका भवति ॥ पृ० ६

३. रहुा प्रकरण

इस प्रकरण मे पञ्चटिका, अडिल्ला, पादाकुलक, चौबोला और रहुा छन्द के लक्षण एव उदाहरण हैं। अन्त मे रहुा छन्द के सात भेद — करभी, नन्दा, मोहिनी, चारुसेना, भद्रा, राजसेना और तालकिनी के लक्षण मात्र दिये हैं और इनके उदाहरणों के लिए "सुबुद्धिभि स्वयमूह्यम्" कह कर प्रकरण समाप्त किया है।

४ पद्मावती प्रकरण :

इस प्रकरण मे पद्मावती, कुण्डलिका, गगनागण, द्विपदी, भुल्लणा, खञ्जा, शिखा, माला, चुलिआला, सोरठा, हाकलि, मधुभार, आभीर, दण्डकला, काम-कला, हचिरा, दीपक, सिंहविलोकिता, प्लवगम, लीलावती, हरिगीतम्, त्रिभगी, दुर्मिलका, हीर, जनहरण, मदनगृह और मरहूठा छन्दों के लक्षण एव उदाहरण हैं। हरिगीत छन्द के १ हरिगीतम्, २. हरिगीतकम, ३ मनोहर हरिगीत और ४, ५, मतिभेद से लक्षण द्वय सहित हरिगीता के लक्षण एव उदाहरण हैं।

सोरठा, हाकलि, दीपक, हीर और मदनगृह छन्द के प्रत्युदाहरण भी हैं।

५. सर्वेया प्रकरण .

इस प्रकरण मे मदिरा, मालती, मल्ली, मल्लिका, माधवी और मागधी सर्वेयों के लक्षण देकर क्रमशः इनके उदाहरण दिये हैं। अन्त मे घनाक्षर छन्द का लक्षण एव उदाहरण दिया है।

६ गलितक प्रकरण

इस प्रकरण में गलितकम्, विगलितकम्, सगलितकम्, सुन्दरगलितकम्, भूषणगलितकम्, मुखगलितकम्, विलम्बितगलितकम्, समगलितकम्, अपर समगलितकम्, अपर सगलितकम्, अपर लम्बितागलितकम्, विक्षिप्तिकागलितकम्, लम्बितागलितकम्, विपक्षितागलितकम्, मालागलितकम्, मुग्धमालागलितकम् और उद्गलितकम् छन्दों के लक्षण एव उदाहरण दिये हैं।

प्रथमतः छन्द के छन्द एव भेदों का प्रकरणानुसार वर्गीकरण इस प्रकार है—

प्रकरण सख्या	छन्द सख्या	छन्द भेद नाम	भेद सख्या	मूलभेद की न्यूनता	कुल
१	७	गाया	२५	१	} ५८
		स्कन्धक	२८	१	

प्रकरण सख्या	छन्द सख्या	छन्द भेद नाम	भेद सख्या	मूल भेद की न्यूनता	कुल
२	६	दोहा	२३	१	} १६४
		रसिका	८	१	
		रोला	१३	१	
		काव्य	४५	१	
		पटपदी	७१	१	
३	१२	रह्वा		१	११
४	२७	हरिगीत	५	१	३१
५	७		०	०	७
६	१७		०		१७
६	७६		२१८	६	२८८

छन्द का मूल भेद, छन्द-भेद-सख्या मे सम्मिलित होने से ६ भेद कम होते हैं। अतः भेद सख्या २१८ मे से ६ कम करने पर २०६ होते हैं और ७६ छन्द सख्या सम्मिलित करने पर कुल २८८ छन्द होते हैं। अर्थात् मूल छन्द ७६ और भेद २०६ हैं।

इस प्रकार कवि चन्द्रशेखर भट्ट ने वि.स. १६७५ वसंत पंचमी को इसका प्रथम-खण्ड पूर्ण किया है।

द्वितीय-खण्ड का सारांश

१ वर्णिकवृत्त प्रकरण

कवि चन्द्रशेखर 'गौरीश' का स्मरण कर वर्णिक छन्द कहने की प्रतिज्ञा करता है और एकाक्षर से छब्बीस अक्षरों तक के वर्णिकवृत्तों के लक्षण एवं उदाहरण देता है, जो इस प्रकार हैं —

१ अक्षर—श्री और इः छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण हैं।

२ अक्षर—काम, मही, सार और मधु नामक छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण हैं।

३ अक्षर—ताली, शशी, प्रिया, रमण, पञ्चाल, मृगेन्द्र, मन्दर और कमल नामक छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण हैं। ताली छन्द का नाम भेद नारी दिया है।

४ अक्षर—तीर्णा, घारी, नगाणिका और शुभ नामक छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण हैं। तीर्णा छन्द का नामभेद कन्या दिया है।

५ अक्षर—सम्मोहा, हारी, हस, प्रिया और यमक नामक छन्दो के लक्षण एव उदाहरण हैं। यमक का प्रत्युदाहरण भी दिया है।

६ अक्षर—शेषा, तिलका, विमोह, चतुरस, मन्थान, शखनारी, सुमाल-तिका, तनुमध्या और दमनक नामक छन्दो के लक्षण एव उदाहरण हैं। प्राकृत-पिंगल के मतानुसार विमोह का विज्जोहा, चतुरस का चतुरसा, मन्थान का मन्थाना और सुमालतिका का मालती नामभेद भी दिये हैं।

७ अक्षर—शीर्षा, समानिका, सुवासक, करहञ्चि, कुमारललिता, मधुमती, मदलेखा और कुसुमतति नामक छन्दो के लक्षण एव उदाहरण हैं।

८ अक्षर—विद्युन्माला, प्रमाणिका, मल्लिका, तुङ्गा, कमल, माणवक-क्रीडितक, चित्रपदा, अनुष्टुप् और जलद नामक छन्दो के लक्षण एव उदाहरण हैं। मल्लिका का नाम-भेद समानिका दिया है।

९ अक्षर—रूपामाला, महालक्ष्मिका, सारंग, पाइन्त, कमल, बिम्ब, तोमर, भुजगशिशुसूता, मणिमध्य, भुजङ्गसङ्गता और सुललित नामक छन्दो के लक्षण एव उदाहरण हैं। प्राकृतपिंगल के अनुसार सारंग का सारंगिका और पाइन्त का पाइन्ता नामभेद दिये हैं। भुजगशिशुसूता के लिये लिखा है कि यह नाम आचार्य राम्भु एव प्राचीनाचार्यो द्वारा सम्मत है और आधुनिक छन्द-शास्त्री इसका नाम भुजगशिशुभृता मानते हैं। सारंग का प्रत्युदाहरण भी दिया है।

१० अक्षर—गोपाल, सयुत, चम्पकमाला, सारवती, सुपमा, अमृतगति, मत्ता, त्वरितगति, मनोरम, और ललितगति नामक छन्दो के लक्षण एव उदाहरण हैं। प्राकृतपिंगल के अनुसार सयुत का सयुता, चम्पकमाला का स्वभवती एव रूपवती तथा मनोरम का मनोरमा नामभेद दिये हैं। सयुत और त्वरितगति छन्दो के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

११ अक्षर—मालती, वन्धु, सुमुखी, शालिनी, वातोर्मी, शालिनी-वातो-म्युपजाति, दमनक, चण्डिका, सेनिका, इन्द्रवज्या, उपेन्द्रवज्या, इन्द्रवज्योपेन्द्रवज्यो-पजाति, रघोद्धता, सागता, भ्रमरविलसिता, अनुकूला, मोटना, सुवेशी, सुभद्रिषा और बकुल नामक छन्दो के लक्षण एव उदाहरण हैं। वन्धु का दोषक, चण्डिका का सेनिका और श्रेणी नामभेद दिये हैं। रघोद्धता का प्रत्युदाहरण भी दिया है।

शालिनी-वातोर्मी-उपजाति और इन्द्रवज्या-उपेन्द्रवज्या-उपजाति के ग्रन्थ कार ने १४-१४ भेद प्रस्तार-दृष्टि से स्वीकार किये हैं किन्तु इन प्रस्तार-भेदों

के लक्षण एव उदाहरण नहीं दिये हैं। इनके उदाहरणों के लिये स्वपितृ-रचित ग्रन्थ^१ को देखने का संकेत किया है।

१२ अक्षर—आपीड, भुजङ्गप्रयात, लक्ष्मीधर, तोटक, सारगक, मौक्तिक-दाम, मोदक, सुन्दरी, प्रमिताक्षरा, चन्द्रवर्त्म, द्रुतविलम्बित, वशस्थविला, इन्द्रवशा, वशस्थविला-इन्द्रवशा-उपजाति, जलौद्धतगति, वैश्वदेवी, मन्दाकिनी, कुसुमविचित्रा, तामरस, मालती, मणिमाला, जलधरमाला, प्रियवदा, ललिता, ललित, कामदत्ता, वसन्तचत्वर, प्रमुदितवदना, नवमालिनी और तरलनयन नामक छन्दों के लक्षण एव उदाहरण हैं।

आपीड का विद्याधर, लक्ष्मीधर का स्रग्विणी, वशस्थविला का वशस्थविल और वशस्तनित, मन्दाकिनो का प्रभा, मालती का यमुना, ललिता का सुललिता, ललित का ललना और प्रमुदितवदना का प्रभा, ये नामभेद दिये हैं।

सुन्दरी, प्रमिताक्षरा, चन्द्रवर्त्म, द्रुतविलम्बित, इन्द्रवशा, मन्दाकिनी और मालती के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं, जिसमें द्रुतविलम्बित और मालती के प्रत्युदाहरण दो दो हैं।

१३ अक्षर—वाराह माया, तारक, कन्द, पङ्कावली, प्रहृषिणी रुचिरा, चण्डी, मञ्जुभाषिणी, चन्द्रिका, कलहस, मृगेन्द्रमुख, क्षमा, लता, चन्द्रलेख, सुद्युति, लक्ष्मी और विमलगति नामक छन्दों के लक्षण एव उदाहरण हैं। माया का मत्तमयूर, मञ्जुभाषिणी का सुनन्दिनी तथा प्रबोधिता, चन्द्रिका का उत्पलिनी, कलहस का सिंहनाद तथा कुटज, और चन्द्रलेख का चन्द्रलेखा नामभेद दिये हैं। माया के ५, तारक, प्रहृषिणी और चन्द्रिका के एक एक प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

१४ अक्षर—सिंहास्य, वसन्ततिलका, चक्र, असम्वाधा, अपराजिता, प्रहरण-कलिका, वासन्ती, लोला, नान्दीमुखी, वेदभी, इन्दुवदन, शरभो, अहिधृति, विमला, मल्लिका और मणिगण छन्द के लक्षण एव उदाहरण हैं। इन्दुवदन का इन्दुवदना नामभेद दिया है। वसन्ततिलका, चक्र और प्रहरणकलिका के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

१ भेदाश्चतुर्दशैतस्या ऋतस्सु प्रदर्शिता ।

प्रस्तार्य स्वनिबन्धेषु पित्रातिस्फुटस्तत ॥ पृ ८१

इससे संभवतः अक्षर का संकेत लक्ष्मीनाथ भट्ट रचित 'उदाहरणमञ्जरी' ग्रन्थ की ओर ही हो।

१५ अक्षर—लीलाखेल, मालिनी, चामर, भ्रमरावलिका, मनोहस, शरभ, निशिपालक, विपिनतिलक, चन्द्रलेखा, चित्रा, केसर, एला, प्रिया, उत्सव और उडुगण नामक छन्दो के लक्षण एव उदाहरण दिये हैं। लीलाखेल का सारंगिका चामर का तूणक, भ्रमरावलिका का भ्रमरावली, शरभ का शशिकला तथा यतिभेद से मणिगुणनिकर एव सगू, चन्द्रलेखा का चण्डलेखा, चित्रा का चित्र और प्रिया का यतिभेद से अलि नामभेद दिये हैं।

लीलाखेल, मालिनी, चामर, भ्रमरावलिका, मनोहस, मणिगुणनिकर, सगू निशिपालक, और विपिनतिलक के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं, जिसमें मालिनी के ३ प्रत्युदाहरण हैं।

१६ अक्षर—राम, पञ्चचामर, नील, चञ्चला, मदनललिता, नन्दिनी, प्रवरललित, गरुडस्त, चकित्ता, गजतुरगविलसित, शैलशिखा, ललित, मुक्केसर, ललना और गिरिवरधृति नामक छन्दो के लक्षण एव उदाहरण दिये हैं। राम का ब्रह्मरूपक, पञ्चचामर का नाराच, चञ्चला का चित्रसग, गजतुरगविलसित का ऋषभगजविलसित और गिरिवरधृति का अचलधृति नामभेद दिये हैं। पञ्चचामर तथा चञ्चला के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

१७ अक्षर—लीलाधृष्ट, पृथ्वी, मालावती, शिखरिणी, हरिणी, मन्दाक्रान्ता, वशपत्रपतित, नहंटक, यतिभेद से कोकिलक, हारिणी, भाराक्रान्ता, मतङ्गवाहिनी, पद्मक और दशमुखहर नामक छन्दो के लक्षण सहित उदाहरण दिये हैं। मालावती का प्राकृतपिंगल के अनुसार मालाधर, वशपत्रपतित का वशपत्रपतिता और आचार्य शम्भु के मतानुसार वशवदन नामान्तर दिये हैं। पृथ्वी, शिखरिणी, हरिणी, मन्दाक्रान्ता, वशपत्रपतित, नहंटक और कोकिलक के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं, जिसमें शिखरिणी के तीन तथा हरिणी के चार प्रत्युदाहरण हैं।

१८ अक्षर—लीलाचन्द्र, मञ्जीरा, चर्चरी, वीडाचन्द्र, कुसुमितलता, नन्दन, नाराच, चित्रलेखा, भ्रमरपद, शार्ङ्गलललित, मुललित और उपवनकुसुम नामक छन्दो के लक्षण सहित उदाहरण दिये हैं। नाराच का मञ्जुला नामान्तर दिया है। मञ्जीरा, चर्चरी, वीडाचन्द्र, कुसुमितलता, नन्दन और नाराच के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं जिसमें चर्चरी के पाँच और नन्दन के दो प्रत्युदाहरण हैं।

१९ अक्षर—नागानन्द, शार्ङ्गलविभोडित, चन्द्र, घवल, शम्भु, मेघ-विश्रूजिता, छाया, सुरसा, फुल्लदाम, और मुदुलकुसुम नामक छन्दो के लक्षण सहित उदाहरण हैं। प्राकृतपिंगलानुसार चन्द्र का चन्द्रमाला, और घवल का

धवला नामभेद दिये हैं। शार्दूलविक्रीडित के दो, चन्द्र, धवल, शम्भु और मेघविस्फूर्जिता के एक-एक प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

२० अक्षर—योगानन्द, गीतिका, गण्डका, शोभा, सुवदना, प्लवङ्ग-भगमगल, शशाङ्कचलित, भद्रक, और अनवधिगुणगण नामक छन्दों के लक्षण सहित उदाहरण हैं। गण्डका का चित्रवृत्त एव वृत्त नामभेद दिया है। गीतिका के दो, गण्डका और सुवदना के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

२१ अक्षर—ब्रह्मानन्द, स्रग्धरा, मञ्जरी, नरेन्द्र, सरसी, हचिरा और निरूपमतिलक नामक छन्दों के लक्षण सहित उदाहरण हैं। सरसी का सुरतरु और सिद्धक नामान्तर दिया है। स्रग्धरा और मञ्जरी के दो-दो, नरेन्द्र और सरसी के एक-एक प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

२२ अक्षर—विद्यानन्द, हसी, मदिरा, मन्द्रक, शिखर, अच्युत, मदालस और तरुवर नामक छन्दों के लक्षण सहित उदाहरण हैं। हसी का एक और मदालस के दो प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

२३ अक्षर—दिव्यानन्द, सुन्दरिका, यतिभेद से पचावतिका, अद्रितनया, मालती, मल्लिका, मत्ताक्रीड और कनकवलय नामक छन्दों के लक्षण एव उदाहरण हैं। अद्रितनया का अश्वललित नामान्तर दिया है। अद्रितनया और अश्वललित के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

२४ अक्षर—रामानन्द, दुर्मिलका, विरीट, तन्वी, माधवी और तरलनयन नामक छन्दों के लक्षण सहित उदाहरण हैं। दुर्मिलका और तन्वी के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

२५ अक्षर—कामानन्द, कौंचपद, मल्ली और मणिगणनामक छन्दों के लक्षण एव उदाहरण हैं। कौंचपदा का प्रत्युदाहरण भी दिया है।

२६ अक्षर—गोविन्दानन्द, भुजङ्गविजृम्भित, अपवाह, मागधी और कमलदल नामक छन्दों के लक्षण सहित उदाहरण दिये हैं। तथा भुजगविजृम्भित और अपवाह के प्रत्युदाहरण भी दिये हैं।

उपसंहार में कवि कहता है कि इस प्रकरण में लक्ष्य-लक्षण-सयुक्त २६५ छन्दों का निरूपण किया है और प्रत्युदाहरण के रूप में प्राचीन कवियों के क्वचित् उदाहरण भी लिये हैं। अन्त में लक्ष्मीनाथभट्ट रचित पिंगलप्रदीप के अनुसार समस्त वृत्तों की प्रस्तारपिंड-संख्या १३,४२,१७,७२६ बतलाई है।

इस प्रकरण के वर्णाक्षरो के अनुसार प्रस्तारसंख्या, छन्दसंख्या, उदाहरण संख्या, प्रत्युदाहरण संख्या और नामभेदों की तालिका इस प्रकार है:—

वर्णाक्षर	प्रस्तार संख्या	छन्द संख्या	उदाहरण संख्या	प्रत्युदाहरण संख्या	नामभेद संख्या
१	२	२	२	×	×
२	४	४	४	×	×
३	८	८	८	×	१
४	१६	४	४	×	१
५	३२	५	५	१	×
६	६४	६	६	×	४
७	१२८	८	८	×	×
८	२५६	८	८	×	१
९	५१२	११	११	१	३
१०	१०२४	१०	१०	२	३
११	२०४८	२०	२०	१	२
१२	४०९६	३०	२६	६	८
१३	८१९२	१८	१८	८	६
१४	१६,३८४	१६	१६	३	१
१५	३२,७६८	१५	१५	११	७
१६	६५,५३६	१५	१५	२	५
१७	१,३१,०७२	१३	१३	१२	२
१८	२,६२,१४४	१२	१२	११	१
१९	५,२४,२८८	१०	१०	६	२
२०	१०,४८,५७६	६	६	४	१
२१	२०,९७,१५२	७	७	६	१
२२	४१,९४,३०४	८	८	३	×
२३	८३,८८,६०८	७	८	२	१
२४	१,६७,७७,२१७	६	६	२	×
२५	३,३५,५५,४३२	४	४	१	×
२६	६,७१,०८,८६४	५	५	२	×
		<u>२६५</u>	<u>२६५</u>	<u>८७</u>	<u>५०</u>

इस प्रकार तालिकानुसार उक्त प्रकरण में कुल २६५ छन्द हैं, उदाहरण २६५ हैं, प्रत्युदाहरण ८७ हैं और नामभेद ५० हैं ।

२. प्रकीर्णक वृत्त-प्रकरण :

इस प्रकरण में ग्रन्थकार ने पिपीडिका, पिपीडिकाकरभ, पिपीडिकापणव और पिपीडिकामाला-नामक छन्दों के लक्षण की एक प्राचीन आचार्यों की सग्रह-कारिका दी है । स्वयं के स्वतन्त्र लक्षण एव उदाहरण नहीं हैं । पश्चात् द्वितीय त्रिभगी और शालूर नामक छन्दों के लक्षण एव उदाहरण दिये हैं ।

३. दण्डक-प्रकरण :

इस प्रकरण में चण्डवृष्टिप्रपात, प्रचितक, अर्ण, सर्वतोभद्र, अशोकमञ्जरी, कुसुमस्तवक, मत्तमातङ्ग और अनङ्गशेखर नामक दण्डक-वृत्तों के लक्षण सहित उदाहरण दिये हैं । ग्रन्थविस्तार-भय से अन्य प्रचलित दण्डकवृत्तों के लिये लक्ष्मीनाथभट्ट रचित पिगलप्रदीप देखने के लिये आग्रह किया है ।

प्रचितक दण्डक का लक्षण ग्रन्थकार ने छन्दसूत्रानुसार दो नगण और ८ रगण दिया है जो कि छन्दसूत्र और वृत्तमौक्तिक के अनुसार 'अर्ण' दण्डक का भी लक्षण है । छन्दसूत्र के अतिरिक्त समस्त छन्दःशास्त्रियों ने प्रचितक का लक्षण दो नगण, सात यगण स्वीकार किया है । ग्रन्थकार ने इस लक्षण के दण्डक को सर्वतोभद्र दण्डक लिखा है । यही कारण है कि आचार्यों के मतों को ध्यान में रख कर ही 'एतस्यैव ग्रन्थत्र 'प्रचितक' इति नामान्तरम्' लिखा है ।

४. अर्धसमवृत्त-प्रकरण :

जिस छन्द में चारों चरणों के लक्षण समान हो वह समवृत्त कहलाता है; जिस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण एक सदृश हो वह अर्धसमवृत्त कहलाता है और जिस छन्द के चारों चरणों के लक्षण विभिन्न हो वह वियमवृत्त कहलाता है ।

इस अर्धसमवृत्त प्रकरण में पुष्पिताग्रा, उपचित्र, वेगवती, हरिणप्लुता, अपरवक्त्र, सुन्दरी, भद्रविराट्, केतुमती, वाङ्मती और पट्पदावली नामक छन्दों के लक्षण एव उदाहरण दिये हैं । पुष्पिताग्रा के तीन, अपरवक्त्र और सुन्दरी के एक-एक प्रत्युदाहरण भी दिये हैं । पट्पदावली का उदाहरण नहीं दिया है ।

५ विषमवृत्त प्रकरण .

जिस छन्द के चारो चरणो के लक्षण भिन्न-भिन्न हो उसे विषमवृत्त कहते हैं । विषमवृत्तो मे उद्गता, उद्गताभेद, सौरभ, ललित, भाव, वक्त्र, पथ्यावक्त्र और अनुष्टुप्-नामक छन्दो के लक्षण एव उदाहरण दिये हैं । उद्गताभेद का ग्रन्थकार का स्वोक्त उदाहरण नहीं है किन्तु भारवि और माघ के दो उदाहरण हैं ।

अनुष्टुप् के लिये लिखा है कि कतिपय आचार्य इसे भी 'वक्त्र' छन्द का ही लक्षण मानते हैं और अनेक पुराणो मे नानागणभेद से यह प्राप्त होता है । अतः इसे विषमवृत्त ही मानना चाहिये । पदचतुर्ध्वदि और उपस्थित-प्रचुपित आदि विषमवृत्तो के लिये छन्द सूत्र की हलायुध की टीका देखने का संकेत किया है ।

६ वैतालीय-प्रकरण

वैतालीय, ओपच्छन्दसक, आपातलिका, नलिन, द्वितीय नलिन, दक्षिणान्तिका वैतालीय, उत्तरान्तिका-वैतालीय, प्राच्यवृत्ति, उदीच्यवृत्ति, प्रवृत्तक, अपरांतिका और चारुहासिनी नामक वैतालीय छन्दो के लक्षण एव उदाहरण हैं । दक्षिणान्तिका-वैतालीय का एक, प्राच्यवृत्ति के दो, उदीच्यवृत्ति का एक प्रवृत्तक का एक, अपरांतिका के दो और चारुहासिनी के दो प्रत्युदाहरण भी दिये हैं ।

इस प्रकरण मे वृत्तो के लक्षण पूर्ण पद्यो मे न होकर सूत्र-कारिका रूप मे प्राप्त हैं और साथ ही इन कारिकाओ को स्पष्ट करने के लिये टीका भी प्राप्त है ।

७ यतिनिरूपण प्रकरण

पद्य मे जहा पर विच्छेद हो, विभजन हो, विश्राम हो, विराम हो, अवसान हो उसे यति कहते हैं । समुद्र, इन्द्रिय, भूत, इन्दु, रस, पक्ष और दिक् आदि शब्द साकाशी होने से यति से सम्बन्ध रखते हैं । अथकार मूल-शास्त्र अर्थात् छन्द सूत्र का आलोचन कर उदाहरण सहित इस प्रकरण पर विवेचन करता है ।

पद्य ४ से ७ तक प्राचीन आचार्यों की सग्रह कारिकायें और इनकी व्याख्या दी गई है । ये चारो पद्य और इनकी उदाहरणसहित व्याख्या छन्द सूत्र की हलायुध टीका मे प्राप्त है । किंचित् परिवर्तन के साथ यह स्थल यहा पर ज्यो का त्यो उद्धृत किया गया है । अन्त में आचार्य भरत, आचार्य पिङ्गल, जयदेव, श्वेतमाण्डव्य,

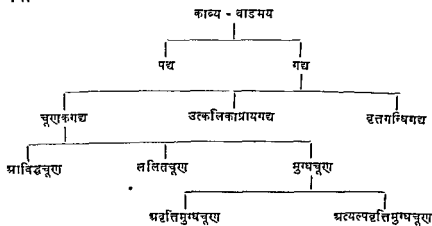
मुरारि, जयदेव (गीतगोविन्दकार), देवेश्वर, गंगादास आदि के मतों का उल्लेख करते हुये यतिभग से दोष और यतिरक्षा से काव्य-सौन्दर्य की अभिवृद्धि आदि का सुन्दर, विश्लेषण किया है।

८ गद्य प्रकरण

वाङ्मय दो प्रकार का है—१ पद्यात्मक और २ गद्यात्मक। पद्य-वाङ्मय का वर्णन प्रारंभ के प्रकरणों में किया जा चुका है। अतः यहाँ इस प्रकरण में गद्य-वाङ्मय का विवेचन है। गद्य के प्रमुख तीन भेद हैं—१ चूर्णगद्य, २ उत्कलिकाप्राय गद्य और ३ वृत्तगन्धि-गद्य।

चूर्णगद्य के तीन भेद हैं—१ आविद्धचूर्ण, २ ललितचूर्ण और ३ मुग्धचूर्ण। मुग्धचूर्ण के भी दो भेद हैं—१ अवृत्तिमुग्धचूर्ण और २ अत्यल्प-वृत्तिमुग्धचूर्ण।

इस प्रकार इन समस्त गद्य भेदों के लक्षण एवं उदाहरण दिये हैं। उत्कलिकाप्राय का एक और वृत्तगन्धि गद्य के तीन प्रत्युदाहरण भी दिये हैं। यथा—



अन्य ग्रन्थकारों ने गद्य के चार भेद स्वीकार किये हैं—१ मुक्तक २ वृत्तगन्धि, ३ उत्कलिकाप्राय और ४ कुलक। इन चारों भेदों के लक्षण एवं उदाहरण भी ग्रन्थकार ने दिये हैं। उत्कलिकाप्राय गद्य का प्राकृत-भाषा का उदाहरण भी दिया है।

९ विरुदावली प्रकरण

गद्य-पद्यमयी राजस्तुति को विरुद कहते हैं और विरुदों की आवली = समूह को विरुदावली कहते हैं। यह विरुदावली पाँच प्रकरणों में विभाजित है—

१. कलिका-प्रकरण, २. चण्डवृत्त-प्रकरण, ३. त्रिभंगीकलिका-प्रकरण, ४. साधारण चण्डवृत्त-प्रकरण और ५. विरुदावली ।

(१) द्विगादिकलिका-श्रवान्तर-प्रकरण

कलिका के नव भेद माने हैं :—१. द्विगा-कलिका, २. रादिकलिका, ३. मादिकलिका, ४. नादिकलिका, ५. गलादिकलिका, ६. मिश्राकलिका, ७. मध्याकलिका, ८. द्विभङ्गीकलिका और ९. त्रिभङ्गीकलिका । ७. मध्याकलिका के दो भेद हैं ।

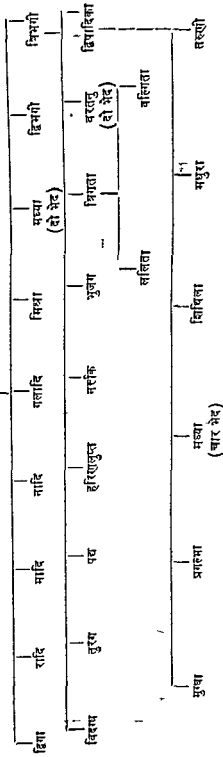
त्रिभंगी-कलिका के भी ९ भेद माने हैं :—१. विदग्धत्रिभङ्गी-कलिका, २. तुरगत्रिभङ्गी-कलिका, ३. पद्यत्रिभंगी-कलिका, ४. हरिणप्लुतत्रिभंगी-कलिका, ५. नर्त्तिकत्रिभंगी-कलिका, ६. भुजंगत्रिभंगी-कलिका, ७. त्रिगतात्रिभंगी-कलिका, ८. वरतनुत्रिभंगी-कलिका और ९ द्विपादिका-युग्मभगा कलिका ।

त्रिगतात्रिभंगी-कलिका के दो भेद हैं :—१. ललितता-त्रिगता-त्रिभंगी-कलिका और २. वलितता-त्रिगता-त्रिभंगी-कलिका । वरतनु-त्रिभंगी-कलिका के भी दो भेद माने हैं ।

द्विपादिका-युग्मभंगा-कलिका के ६ भेद माने हैं :—१. मुग्धा-द्विपादिका युग्मभगा-कलिका, २. प्रगल्भा-द्विपादिका-युग्मभंगा-कलिका, ३. मध्या-द्विपादिका-युग्मभगा-कलिका, ४. शिथिला-द्विपादिका-युग्मभगा-कलिका, ५. मधुरा द्विपादिका-युग्मभगा-कलिका और ६. तरुणी-द्विपादिका-युग्मभगा-कलिका । इसमें मध्या-द्विपादिका-युग्मभगा कलिका के भी चार भेद माने हैं ।

इस प्रकार मूलभेद ९ और प्रतिभेद २५ कुल ३४ कलिकाओं के लक्षण और उदाहरण प्रथकार ने दिये हैं । लक्षण पूर्णपद्यों में नहीं हैं किन्तु पद्य के टुकड़ों में वारिका रूप में हैं । इन लक्षणों को स्पष्ट करने के लिये टीका भी दी है । उदाहरण के भी पूर्णपद्य नहीं हैं किन्तु प्रत्येक उदाहरण के लिये केवल एक चरण दिया है । मध्याकलिका का उदाहरण नहीं दिया है । यथा—

कालिका विरदावली



(२) चण्डवृत्त-अवान्तर प्रकरण

महाकलिकाचण्डवृत्त के दो भेद हैं — १ सलक्षण और २ साधारण ।

सलक्षण चण्डवृत्त के तीन भेद हैं — १ शुद्धसलक्षण, २ सकीर्णसलक्षण और ३ गभितसलक्षण ।

शुद्ध सलक्षण चण्डवृत्त के २० भेद हैं :— १ पुरुषोत्तम, २ तिलक, ३ अच्युत, ४ वद्धित, ५ रण, ६ वीर, ७ शाक, ८ मातङ्गखेलित, ९ उत्पल, १० गुणरति, ११ कल्पद्रुम, १२ कन्दल, १३ अपराजित, १४ नर्त्तन, १५ तरत्समस्त, १६ वेष्टन, १७ अस्खलित, १८ पल्लवित, १९ समग्र और २० तुरग ।

सकीर्णसलक्षण चण्डवृत्त के ५ भेद हैं — १ पङ्केरुह, २ सितकञ्ज, ३ पाण्डूत्पल, ४ इन्दीवर और ५ अरुणाम्भोरुह ।

गभितसलक्षण चण्डवृत्त के ६ भेद हैं — १. फुल्लाम्बुज, २ चम्पक, ३ वजुल, ४ कुन्द ५ बकुलभासुर, ६. बकुलमगल, ७ मञ्जरीकोरक, ८ गुच्छक और ९ कुसुम ।

भेदकथन के पश्चात् रचना-वैशिष्ट्य में प्रयुक्त मधुर, श्लिष्ट, सश्लिष्ट, शिथिल और ह्लादि की परिभाषा और इनका विवेचन करते हुये उपर्युक्त ३४ महाकलिका-चण्डवृत्तों के क्रमशः लक्षण एव उदाहरण दिये हैं । लक्षण पूर्ण पद्यों में न होकर खण्डपद्यों में करिका रूप में हैं और इन लक्षणों को स्पष्ट करने के लिये व्याख्या भी दी है । ग्रथकार ने ग्रथ विस्तार के भय से प्रत्येक चण्डवृत्त के उदाहरण में एक-एक धरणमात्र दिया है ।

श्रीरूपगोस्वामिप्रणीत गोविन्दविरुदावली से निम्नलिखित चण्डवृत्तों के प्रत्युदाहरण दिये हैं — १ तिलक, २ अच्युत, ३ वद्धित, ४ रण, ५ वीर, ६ मातङ्गखेलित, ७ उत्पल, ८ गुणरति, ९ पल्लवित, १० तुरग, ११ पङ्केरुह, १२ सितकञ्ज, १३ पाण्डूत्पल, १४ इन्दीवर, १५ अरुणाम्भोरुह, १६ फुल्लाम्बुज, १७ चम्पक, १८ वजुल, १९ कुन्द, २०. बकुलभासुर, २१ बकुलमगल, २२ मञ्जरीकोरक, २३ गुच्छक और २४ कुसुम ।

वीर का वीरभद्र, रण का समग्र और तुरग का तुरग नामभेद भी दिया है ।

(३) त्रिभगी कलिका अवान्तर-प्रकरण

विदग्धसहित षण्डक त्रिभगी कलिका, विदग्धसहित सम्पूर्णा विदग्धत्रिभगी-कलिका और मिश्रकलिका के सहाय एव उदाहरण दिये हैं । सहाय-कारिकाओं

की टीका भी है। उदाहरण के एक-एक चरण है। तीनों ही विरुदावलियों के प्रत्युदाहरण दिये हैं जो कि रूपगोस्वामिकृत गोविन्दविरुदावली के हैं। ग्रथकार ने तीनों ही भेद चण्डवृत्त के ही प्रभेद माने हैं।

(४) साधारण चण्डवृत्त अत्रान्तर प्रकरण

इस प्रकरण में साधारण चण्डवृत्ता के लक्षण एवं उदाहरण दिये गये हैं।

(५) विरुदावली प्रकरण

साप्तविभक्तिकी कलिका, अक्षमयी कलिका और सर्वलघु कलिका के लक्षण देकर इन कारिकाओं की व्याख्या दी है। इन तीनों के स्वयं के उदाहरण नहीं हैं। तीनों ही कलिकाओं के उदाहरण गोविन्दविरुदावली से उद्धृत हैं। अन्त में समग्र कलिकाओं में प्रयुक्त विरुदों के युगपद् लक्षण कहे हैं।

देव, भूपति एवं तत्तुल्यवर्णनों में घोर, वोर आदि विरुदों का प्रयोग होता है। संस्कृत प्राकृत के श्रव्यकाव्यों में शौर्य, वीर्य, दया, कीर्ति और प्रतापादि प्रधान विषयों में कलिकादि का प्रयोग होता है। गुण, अलङ्कार, रीति, मन्थनु-प्रास एवं छन्दाडम्बर स युक्त कलिका और विरुद का निरूपण करन हुए समग्र विरुदावलियों के सामान्य लक्षण दिये हैं। इसके अनुसार कलिका श्लोकविरुद न्यूनातिन्यून पद्मह होते हैं और अधिक से अधिक नव्वे होते हैं। नव्व कलिका-श्लोक विरुद युक्त विरुदावली अथवा विरुदावली या महती विरुदावली कहलाती है। मतान्तर के अनुसार किसी कलिका के स्थान पर केवल गद्य होना है या विरुद होता है और कलिका एवं विरुद आशीर्वादात्मक पद्यों से युक्त होता है। प्रत्येक विरुदावली में तीन या पाँच कलिकाएँ और इतनी ही श्लोकों की रचना ऐच्छिक होती है। अतः में विरुदावली का फल-निर्देश है।

१०. सण्डायली प्रकरण

विरुदावली के समान ही सण्डायली होती है किन्तु इतना अंतर है कि आदि और अन्त में आशीर्वादात्मक पद्य विरुदरहित होते हैं। ताम्रसण्डायली और मञ्जरी-सण्डायली के सदानसहित उदाहरण दिये हैं। लक्षणकारिकाओं की टीका भी है। अतः में कवि कहता है कि सण्डायली के हजारों भेद सम्भव हैं किन्तु ग्रथ विस्तारभय से मैंने इसके भेदों के उल्लेख नहीं किये हैं, केवल मुकुमारमतिषा के लिये मार्ग-प्रदर्शन किया है।

११. दोष प्रकरण

इस प्रकरण में विरुदावली और सण्डायली के दोषों का दिग्दर्शन किया गया

है। अमंत्री, अनुप्रासाभाव, दीवंत्य, कलाहति, असाम्प्रत, हतीचिरय, विपरीतयुत, विश्रुखल और खलतालनामक ६ दोषों के लक्षण एव उदाहरण देते हुये कहा है कि इन नव दोषों को जो विद्वान् नहीं जानता है और काव्य रचना करता है वह तमोलोक में उलूक होता है अर्थात् काव्य में इन दोषों का त्याग अनिवार्य है।

१२ अनुक्रमणी-प्रकरण

रविकर, पद्मपति, पिंगल एव शम्भु के छद्म शास्त्रों का अवलोकन कर चन्द्रशेखर-भट्ट ने वृत्तमौक्तिक की रचना की है।

यह प्रकरण दो विभागों में विभक्त है। प्रथम विभाग ४० पद्यों का है जिसमें प्रथम-खण्ड की अनुक्रमणिका दी है और द्वितीय विभाग १८८ पद्यों का है जिसमें द्वितीय-खण्ड की अनुक्रमणिका दी है।

प्रथम खण्डानुक्रम—इसमें मात्रावृत्त नामक प्रथम खण्ड के छहों प्रकरणों की विस्तृत सूची है। प्रत्येक छन्द का क्रमशः नाम दिया है और अंत में छन्द-संख्या भेदों सहित २८८ दिखलाई है।

द्वितीय खण्डानुक्रम :—प्रथम प्रकरण में प्ररूपित अक्षरानुसार अर्थात् एक से छब्बीस अक्षर पर्यन्त छन्दों के क्रमशः नाम, नामभेद और प्रस्तारभेद के साथ सूची दी है और अंत में प्रस्तारपिंड की संख्या देते हुये उल्लिखित २६५ छन्दों की संख्या दी है। द्वितीय प्रकरण से छठे प्रकरण तक की सूची में छन्दनाम और नामभेद दिये हैं। सप्तम यतिप्रकरण का उल्लेख करते हुये आठवें गद्य प्रकरण के भेदों का सूचन किया है और नवम तथा दसवें प्रकरण के समस्त छन्दों के नाम और नामभेद दिये हैं एव ग्यारहवें दोष प्रकरण का उल्लेख किया है।

अंत में दोनों खण्डों के प्रकरणों की संख्या देते हुये उपसंहार किया है।

ग्रन्थकृतप्रशस्ति—

वि०स० १६७६ कार्तिकी पूर्णिमा को वसिष्ठवशीय लक्ष्मोनाथ भट्ट के पुत्र चन्द्रशेखर भट्ट ने इसकी (द्वितीय खण्ड) रचना पूर्ण की है। प्रशस्तिपद्य ८ एव ९ में लिखा है कि चन्द्रशेखर भट्ट का स्वर्गवास हो जाने के कारण इस ग्रन्थ की पूर्णाहति लक्ष्मोनाथ भट्ट ने की है।

ग्रन्थ का वैशिष्ट्य

प्रस्तुत ग्रन्थ का छन्दशास्त्र की परम्परा में एक विशिष्ट स्थान है। इसी ग्रन्थ के पृष्ठांक ४१४ में उल्लिखित छन्दशास्त्र के १९ ग्रन्थ और दो टीका-ग्रन्थों के साथ

तुलनात्मक अध्ययन करने पर इस ग्रंथ का महत्त्व कई दृष्टियों से आका जा सकता है। न केवल सस्कृत और प्राकृत अपभ्रंश छन्द-परम्परा की दृष्टि से ही अपितु हिन्दी छन्द-परम्परा की दृष्टि से भी इस ग्रंथ को छन्दशास्त्र का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ मान सकते हैं। इस ग्रंथ की प्रमुख-प्रमुख विशेषतायें इस प्रकार हैं —

१ पारिभाषिक शब्द और गण

इस ग्रंथ में मात्रिक और वर्णिक दोनों छन्दों का विधान होने से ग्रंथकार ने सस्कृत और प्राकृत-अपभ्रंश की मगणादिगण एवं टगणादिगणों की दोनों प्रणालियों का साधिकार प्रयोग किया है। स्वयंभू छन्द, छन्दोनुशासन और कविदर्पण आदि ग्रंथों में पट्कल, पञ्चकल, चतुष्कल आदि कलाओं का ही प्रयोग मिलता है किंतु इनके प्रस्तार-भेद, नाम और उसके कर्ण, पयोधर, पक्षिराज आदि पर्यायों का प्रयोग हमें प्राप्त नहीं होता है। इसका सर्वप्रथम प्रयोग हमें कवि विरहाक कृत वृत्तजातिसमुच्चय में प्राप्त होता है। इसके पश्चात् तो इसका प्रयोग प्राकृतपिगल, वाणीभूषण और वाग्वल्लभ आदि अनेक ग्रंथों में प्राप्त होता है।

वृत्तमौक्तिक में ट = पट्कल, ठ = पञ्चकल, ड = चतुष्कल, ढ = त्रिकल, ण = द्विकल गण स्थापित कर इनके प्रस्तारभेद, नाम और प्रत्येक के पर्याय विशदता के साथ प्राप्त हैं। साथ ही पृथक् रूप से मगणादि आठ गण भी दिये हैं। इस पारिभाषिक शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन के साथ परिचय में इसी ग्रंथ के प्रथम परिशिष्ट में दिया है, अतः यहाँ पर पुनः पिष्टपेषण अनावश्यक है, किंतु रत्नमञ्जूषा और जानाश्रयी छन्दोविचिति में हमें एक नये रूप में पारिभाषिक शब्दावली प्राप्त होती है जिसका कि पूर्ववर्ती और परवर्ती किसी भी ग्रंथ में प्रयोग नहीं मिलता है अतः तुलना के लिये दोनों की संकेत सूची यहाँ देना अप्रासंगिक न होगा।

रत्नमञ्जूषा			वृत्तमौक्तिक	
क्	और	आ	१ १ १	मगण, हर
च्	"	ए	१ १ १	यगण, इन्द्रासन आदि
त्	"	औ	१ १ १	रगण, सूर्य, वीणा आदि
प्	"	ई	१ १ १	सगण, करतल, कर आदि
श्	"	अ	१ १ १	तगण, हीर
प्	"	उ	१ १ १	जगण, पयोधर, भूपति आदि
स्	"	ऋ	१ १ १	भगण, दहन, पितामह आदि

ह् और इ	1 1 1	नगण, भाव, रस, भामिनी आदि
य्	5 5	कर्ण, सुरतलता, आदि
रु	1 5	ध्वज, चिह्न, चिरालय आदि
व्	1 1	सुप्रिय, परम
म्	5	हार, ताटक, नूपुर आदि
न्	1	शर, मेरु, कनक, दण्ड आदि
×	×	×
×	×	×

जानाश्रयो छन्दोविचिति

वृत्तमौक्तिक

भ	5	ग, हार, ताटक आदि
ह	1	ल, शर, मेरु आदि
गङ्गास्	5 5	गुरुयुगल, कर्ण, रसिक आदि
नदीज्	1 5	बलय, तोमर, पवन आदि
ननुर्	1 1	सुप्रिय, परम,
नूनंसाग्	5 5 5	मगण, हर,
कुशाङ्गीग्	1 5 5	यगण, कुञ्जर, रदन, मेघ आदि
धीवराश्	5 1 5	रगण, गरुड, भुजंगम, विहग आदि
कुस्तेल्	1 1 5	सगण, कमल, हस्त, रत्न आदि
तेथ्रीःक्वव्	5 5 1	तगण, हीर,
विमातिक्	1 5 1	जगण, भूपति, कुच आदि
सातवत्	5 1 1	भगण, तात, पद, जंघायुगल आदि
तरतिम्	1 1 1	नगण, रस, ताण्डव आदि
नचरतिद्	1 1 1 1	विप्र, द्विज, बाण आदि
चन्द्रननु	5 1 1 1	अहिगण
नदीननु	1 5 1 1	कुसुम
ननुचन्द्र	1 1 5 1	शेखर
कमलिनीय्	1 1 1 5	चाप
लोलमालाय्	5 1 5 5	...
रोतिमयूरोन्	5 1 1 5 5	...
धेयंमस्तुतेट्	5 1 5 1 5	...
ननुतरति	1 1 1 1 1	पापगण
जयनरयरण्	1 1 1 1 1 1	शाति

पारिभाषिक शब्दावली का ग्रन्थकार ने सफलता के साथ विविध रूपों में प्रयोग किया है :—१. विशुद्ध टादिगण, २. टादि और मगणादि मिश्र, ३. टादि और पारिभाषिक मिश्र, ४. विशुद्ध पारिभाषिक, ५. विशुद्ध मगणादि और ६. पारिभाषिक एवं मगणादि मिश्र । उदाहरण के तौर पर प्रत्येक प्रयोग का एक-एक पद्य प्रस्तुत है :—

१. विशुद्ध टगणादि का प्रयोग—

आदो षट्कलमिह रचय डगणत्रयमिह धेहि ।

ठगणं डगण द्वयमपि घत्तानन्दे धेहि ॥३२॥ [पृ० १६]

अर्थात् घत्तानन्द नामक मात्रिक छंद में षट्कल = ६ मात्रा, डगणत्रय = चतुष्कल तीन १२ मात्रा, ठगण = षट्कल ५ मात्रा और डगणद्वय = चतुष्कलद्वय ८ मात्रा कुल ३१ मात्रा होती है ।

२. टादि और मगणादि मिश्र का प्रयोग—

डगणं कुरु विचित्रमन्ते जगणमत्र ।

मध्ये द्विलमवेहि दीपकमिति विधेहि ॥३६॥ [पृ० ३८]

अर्थात् दीपक नामक मात्रिक छंद में डगण = चतुष्कल ४ मात्रा, द्विल = दो लघु २ मात्रा और जगण = ४ मात्रा, कुल १० मात्रा होती हैं ।

३. टादि और पारिभाषिक-मिश्र का प्रयोग—

यदि योगडगणकृत - चरणविरचित-द्विजगुरुयुगकरवसुचरणा ।

नायक-विरहितपद - कविजनकृतमदपठनादपि मानसहरणा ।

इह दशवसुमनुभिः त्रियते कविभिविरतियंदि युगदहनकला ।

सा पञ्चावतिका फणपतिभणिता त्रिजगति राजति गुणबहुला ॥१॥

[पृ० ३०]

अर्थात् पञ्चावतीनामक मात्रिक छंद में 'योगडगण' डगण = चतुष्कल, योग = आठ अर्थात् ३२ मात्रायें होती हैं जिनमें द्विज = १ । । । चार मात्रा, गुरु-युग = ५५ चार मात्रा, कर = १ । ५ सगण ४ मात्रा, वसुचरण = ५ । । मगण चार मात्रा का प्रयोग अपेक्षित है और नायक = १ । ५ । जगण चार मात्रा का प्रयोग निषिद्ध है । इस छंद में यति १०, ८, १४ मात्रा पर होती है ।

४. विशुद्ध पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग—

द्विजरसयुता कर्णद्वन्द्वस्फुरद्वरकुण्डला,

कुचतटगतं पुष्पं हारं तथा दधती मुदा ।

विरुतललित् सविभ्राण पदानगनूपुर
रसजलनिधिच्छिद्रा नागप्रिया हरिणी मता ॥४१८॥

[पृ० १३७]

हरिणी नामक छंद १७ वर्णों का होता है। इसमें द्विज = । । । ।, रस = ।, कर्णद्वन्द्व = ५ ५ ५ ५, कुण्डल = ५, कुच = । ५ ।, पुष्प = ।, हार = ५, विरुत = ।, नूपुर = ५ होते हैं अर्थात् इस छंद में, नृगण, सगण मगण, रगण, सगण, लघु और गुरु होते हैं। ६, ४ और ७ पर यति होती है।

५ विशुद्ध मगणादिगणों का प्रयोग—

कुरु नगणयुग धेहि त भगण तत,
प्रतिपदविरती भासते रगणोन्तत ।

मुनिरचितयतिनागराजफणिप्रिया,
सकलतनुभृता मानसे लसति प्रिया ॥३६६॥ [पृ० १२७]

१५ वर्ण के प्रियाछन्द का लक्षण है—नगण, नगण, तगण, भगण और रगण । ७ और ८ पर यति होती है।

६ पारिभाषिक और मगणादिमिश्र का प्रयोग—

पूर्व कर्णत्रित्व कारय पश्चाद्धेहि भकार दिव्य,
हार वह्निप्रोक्त धारय हस्त देहि मकार चान्ते ।
रन्ध्रवर्णोविश्राम कुरु पादे नागमहाराजोक्त,
मञ्जीराख्य वृत्त भावय शीघ्र चेतसि कान्ते स्वीये ॥४४३॥

[पृ० १४३]

१८ अक्षरों के मञ्जीराछन्द का लक्षण है —कर्णत्रित्व = ५ ५ ५ ५ ५ ५, भकार = ५ । ।, हार वह्नि = ५ ५ ५, हस्त = । । ५ और मकार = ५ ५ ५, अर्थात् इसमें मगण, मगण, भगण, मगण, सगण और मगण होते हैं। यति ६-६ पर है।

इस पारिभाषिक शब्दावली के कारण यह सत्य है कि वृत्तरत्नाकर, छन्दो-मञ्जरी और श्रुतबोध की तरह वह बाल सरलता अवश्य हो नहीं रही किन्तु इसके सफल प्रयोग से इस ग्रंथ में जैसा शब्दमाधुर्य, भाषा की प्राञ्जलता, रचना सोप्य और लालित्य प्राप्त होता है वैसा उन ग्रंथों में कहाँ है ?

२ विशिष्ट छन्द—

वृत्तमौक्तिक में जिन छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण ग्रन्थकार ने दिये हैं उनमें से कतिपय छन्द ऐसे हैं जिनका पृष्ठ ४१४ पर दो हुई सन्दर्भ-ग्रंथ

सूची के प्रसिद्ध छन्दःशास्त्र के २१ ग्रन्थों में भी उल्लेख नहीं है और कतिपय छन्द ऐसे हैं जो केवल हेमचन्द्रीय छन्दोनुशासन, पिगलकृत छन्दसूत्र, हरिहरकृत प्राकृतपिगल और दुःखभञ्जनकृत वाग्बल्लभ में ही प्राप्त होते हैं। इन विशिष्ट छन्दों की वर्गीकृत तालिका इस प्रकार है :—

वृत्तमौक्तिक के विशिष्ट छन्द—

मात्रिक छन्द :—कामकला, हरिगीतकम्, मनोहर हरिगीतम्, अपरा हरिगीता, भदिरा सवया, मालती सवया, मल्ली सवया, मल्लिका सवया, माधवी सवया, गागधी सवया, घनाक्षर, अपर समगलितक और अपर सगलितक ।

वर्णिक छन्द. — १४ अक्षर — शरभो, अहिघृति; १६ अक्षर — सुकेसरम्, ललना; १७ अक्षर — मततगवाहिनी; १९ अक्षर — नागानन्द, मृदुलकुसुम; २० अक्षर — प्लवगभगमगल, अनवधिगुणगण; २१ अक्षर — ब्रह्मानन्द, निरुपमतिलक; २२ अक्षर — विद्यानन्द, शिखर, अच्युत; २३ अक्षर — दिव्यानन्द; कनकवलय; २४ अक्षर — रामानन्द, तरलनयन, २५ अक्षर—कामानन्द, मणिगुण; २६ अक्षर—कमलदल और विपमवृत्तो में भाव तथा वेतालीय छन्दों में नलिन और अपर नलिन ।

इस प्रकार मात्रिक छन्द १३ और वर्णिक छन्द २४ कुल ३७ छन्द ऐसे हैं जिनका अन्य छन्द शास्त्रों में उल्लेख नहीं है ।

निम्नलिखित ११ छन्द केवल हेमचन्द्रीय छन्दोनुशासन एवं वृत्तमौक्तिक में ही प्राप्त हैं —

मात्रिक छन्द :—विगलितक, सुन्दरगलितक, भूषणगलितक, मुखगलितक, विलम्बितगलितक, समगलितक, विक्षिप्तिकागलितक, विपमितागलितक और मालागलितक ।

वर्णिक छन्द— १३ अक्षर — सुद्युति और २१ अक्षर — रुचिरा ।

१८ वर्ण का लीलाचन्द्र नामक छन्द प्राकृतपिगल और वृत्तमौक्तिक में ही प्राप्त है ।

निम्नांकित १७ वर्णिक छन्द वृत्तमौक्तिक और दुःखभजन कवि रचित वाग्बल्लभ में ही प्राप्त हैं ।

८ अक्षर — जलद; ९ अक्षर — सुललित; १० अक्षर — गोपाल, ललितगति; ११ अक्षर — शालिनी-वातोर्म्युपजाति, बकुल; १३ अक्षर — वाराह, विमलगति; १४ अक्षर — मणिगण; १५ अक्षर — उडुगण; १७ अक्षर — लीलाघृष्ट; १८

अक्षर - उपवनकुसुम; २३ अक्षर - मल्लिका; २४ अक्षर - माघवी; २५ अक्षर - मल्ली, २६ अक्षर - गोविन्दानन्द और मागधी ।

दो नगण और साठ रगणयुक्त प्रचितक-नामक दण्डक का प्रयोग केवल छंद सूत्र और वृत्तमौक्तिक में ही है ।

चोपैया नामक मानिक छंद अन्य ग्रंथों में भी प्राप्त है । किन्तु जहाँ अन्य ग्रंथों में १२० मात्रा का पूर्ण पद्य माना है वहाँ इस ग्रंथ में १२० मात्रा का एक पद और ४८० मात्रा का पूर्ण पद्य माना है ।

इस वर्गीकरण से स्पष्ट है कि अन्य ग्रंथों की अपेक्षा वृत्तमौक्तिक में छंदों का वंशिष्टघ और बाहुल्य है ।

३. छन्दों के नाम-भेद

प्रस्तुत ग्रंथ में ५० छंद ऐसे हैं जिनका ग्रंथकार ने प्राकृतपिंगल, आचार्य शंभु एव तत्कालीन आधुनिक छंदःशास्त्रियों के मतानुसार नाम-भेद दिये हैं । इन नामभेदों की तालिका ग्रंथ के सारांश में और चतुर्थ परिशिष्ट (ख) में देखी जा सकती है । इस प्रकार की नामभेदों की प्रणाली अन्य मूलग्रंथों में उपलब्ध नहीं है । हाँ, हेमचन्द्रीय छन्दोनुशासन की स्वोपज्ञ टीका और वृत्तरत्नाकर की नारायणभट्टी टीका आदि कतिपय टीका-ग्रंथों में यह प्रणाली अवश्य लक्षित होती है किन्तु इतनी विपुलता के साथ नहीं ।

इससे यह तो स्पष्ट है कि ग्रंथकार ने प्राचीन एव अर्वाचीन अनेक छंद शास्त्रों का ग्रामन्यन कर प्रस्तुत ग्रंथ द्वारा नवनीत रखने का प्रयास किया है ।

४ विरुदावली और खण्डावली

ग्रंथ के द्वितीय-खण्ड के नवम प्रकरण में विरुदावली, दसवें प्रकरण में खण्डावली और ग्यारहवें प्रकरण में इन दोनों के दोषों का वर्णन है । विरुदावली में ३४ कलिका, ४० विरुदावली और २ खण्डावली के लक्षण एव उदाहरण ग्रंथकार ने दिये हैं । यह विरुदावली कवि की मौलिक-सर्जना प्रतीत होती है, क्योंकि अन्य छंद-ग्रंथों में विरुदावली के भेद और लक्षण तो दूर रहे किन्तु इसका नामोल्लेख भी नहीं है । हाँ, इतना अवश्य है कि कवि ने २९ विरुदावलियों के उदाहरण रूपगोस्वामी प्रणीत गोविन्दविरुदावली से दिये हैं, अतः यह अनुमान किया जा सकता है कि रूपगोस्वामी के पूर्व भी इसकी परम्परा विविध-रूपों में अवश्य विद्यमान थी, अन्यथा इतने भेद और प्रभेद कैसे प्राप्त

हो सकते थे ? संभव है, इसका कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ भी अवश्य रहा हो ! कतिपय स्फुट विरुदावलियाँ अवश्य प्राप्त होती हैं तथा शोध करने पर और भी प्राप्त होना संभव है किन्तु इनके भेद, प्रभेद उदाहरणों के साथ संकलन ग्रथावधि अप्राप्त है । कवि ने इस विच्छिन्नप्राय परम्परा को अक्षुण्ण रख कर जो साहित्य जगत् को अमूल्य देन दी है वह श्लाघ्य ही नहीं महत्त्वपूर्ण भी है ।

ग्रथावधि जो संस्कृत-वाङ्मय प्रकाश में आया है उसमें विरुदावली-साहित्य पर नहीं के समान प्रकाश पड़ा है । अतः शोध-विद्वानों का कर्तव्य है कि वे इस अक्षुते और वैशिष्ट्यपूर्ण विरुदावली-साहित्य पर अनुसंधान कर इसके महत्त्व पर प्रकाश डालें ।

५. यति एवं गद्य प्रकरण—

समग्र छन्दःशास्त्रियों ने मात्रिक और वर्णिक पद्य के पदान्त और पदमध्य में यतिविधान आवश्यक माना है । वृत्तमीवितककार ने भी यति प्रकरण में इस का सुन्दर विश्लेषण और विवेचन किया है । इनके मत से काव्य में मधुरता के लिये यति का बन्धन आवश्यक है । यति से काव्य में सौन्दर्य की अभिवृद्धि होती है । यति के बिना काव्य श्रेष्ठतर नहीं हो सकता ।

ग्रन्थकार के मत से भरत, पिगल और जयदेव संस्कृत-साहित्य में यति आवश्यक मानते हैं और श्वेतमाण्डव्य आदि मुनिगण यति का बन्धन स्वीकार नहीं करते हैं^१ । जयकीर्ति के मतानुसार पिगल वसिष्ठ, कौण्डिन्य, कपिल, कम्बलमुनि यति को अनिवार्य मानते हैं और भरत, कोहल, माण्डव्य, अश्वतर, संतव आदि कतिपय आचार्य यति को अनावश्यक मानते हैं—

वाञ्छन्ति यतिं पिङ्गल-वसिष्ठ-कौण्डिन्य-कपिल-कम्बलमुनयः ।

नेच्छन्ति भरत-कोहल-माण्डव्याश्वतरसंतवाचाः केचित् ॥

[छन्दोनुशासन, १.१३]

स्वयम्भूच्छन्द में लिखा है—

जयदेवपिगला सबकयमि दुच्चिचय जइं समिच्छन्ति ।

मडव्वभरहकासवसेयवपमुहा न इच्छन्ति ॥१.७१॥

[जयदेवपिगली सञ्जुते द्वाषेय यतिं समिच्छन्ति ।

माण्डव्यभरतकाश्यपसंतवप्रमुखा न इच्छन्ति ॥]

अर्थात् जयदेव और पिगल यति मानते हैं और माण्डव्य, भरत, काश्यप, संतव आदि नहीं मानते हैं ।

भरत के नाट्यशास्त्र के छन्द-प्रकरण में पादान्त यति तो प्राप्त है ही साथ ही पदमध्ययति भी प्राप्त है ।^१ ऐसी अवस्था में जयकीर्ति एव स्वयम्भू-छन्दकार ने भरत को यतिविरोधी कैसे माना, विचारणीय है । वृत्तमौक्तिकार ने भरत को यतिसमर्थक ही माना है ।

यति का सागोपाग विश्लेषण छन्द सूत्र की हलायुघटीका, हेमचन्द्रीय छन्दो-नुशासन की स्वोपज्ञटीका और वृत्तमौक्तिक में ही प्राप्त है । अन्य छन्द-शास्त्रों में कतिपय छन्द-शास्त्रियों ने इसका सामान्य-वर्णन सा ही किया है ।

गद्य काव्य-साहित्य का प्रमुख अंग है । प्रस्तुत ग्रन्थ में इसके भेद, प्रभेदों के लक्षण और प्रत्येक के उदाहरण प्राप्त हैं । साथ ही अन्य आचार्यों के मतों का उल्लेख कर उनके मतानुसार ही उदाहरण भी ग्रन्थकार ने दिये हैं । इस प्रकार गद्य-काव्य का विवेचन अन्य छन्दग्रन्थों में प्राप्त नहीं है । सम्भव है इसे काव्य का अंग मानकर साहित्य-शास्त्रियों के लिये छोड़ दिया हो ।

६ रचना-शैली—

छन्दशास्त्र की प्राचीन और अर्वाचीन रचनाशैली अनेक रूपों में प्राप्त होती है जिनमें तीन शैलियाँ मुख्य हैं—१. गद्य सूत्र रूप, २ कारिका-शैली (लक्षण सम्मत चरण रूप) और ३ पूर्णपद्य-शैली ।

गद्यसूत्ररूप शैली में छन्द सूत्र, रत्नमञ्जूपा, जानाश्रयी छन्दोविचिति और हेमचन्द्रीय छन्दोनुशासन की रचनायें आती हैं ।

कारिकारूपशैली में जयदेवछन्दस्, स्वयम्भूछन्द, कविदर्पण, जयकीर्ति-कृत छन्दोनुशासन, वृत्तरत्नाकर, छन्दोमजरी और वाग्बल्लभ की रचनायें हैं ।

पूर्णपद्यशैली में प्राकृतपिगल, वाणीभूषण, श्रुतबोध और वृत्तमुक्तावली की रचनायें हैं ।

भरत नाट्यशास्त्र में लक्षण अनुष्टुप् छन्द में है, वृत्तमुक्तावली में मात्रिक छन्दों के लक्षण गद्य में हैं और वाग्बल्लभ में मात्रिक-छन्दों के लक्षण पूर्ण पद्यों में है ।

छन्द सूत्र, रत्नमञ्जूपा, जानाश्रयी छन्दोविचिति, जयदेवछन्दस्, जयकीर्तीय छन्दोनुशासन, हेमचन्द्रीय छन्दोनुशासन, कविदर्पण, वृत्तरत्नाकर, छन्दोमञ्जरी एव वाग्बल्लभ में लक्षणमात्र प्राप्त हैं, स्वरचित उदाहरण प्राप्त नहीं हैं । स्वयम्भूछन्द, हेमचन्द्रीय छन्दोनुशासन की टीका और प्राकृतपिगल में कतिपय

स्वरचित एवं अन्य कवियों के उदाहरण प्राप्त हैं। नाट्यशास्त्र, वाणीभूषण और वृत्तमुक्तावली में ग्रन्थकार रचित उदाहरण प्राप्त हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना-शैली हमें दो रूपों में प्राप्त होती है—१. पूर्णपद्य-शैली और २. कारिकाशैली। प्रारम्भ से द्वितीय-खण्ड के विषमवृत्ताप्रकरण तक मात्रिक एवं वर्णिक छन्दों के लक्षण पूर्णपद्यशैली में हैं जिससे छन्द का लक्षण और यति आदि का विश्लेषण विशद और सरल रूप में हो गया है। वैयालीय छन्द तथा विरदावली खण्डावली-प्रकरण कारिकाशैली में होने से विषय को स्पष्ट करने के लिये ग्रन्थकार ने व्याख्या का आधार लिया है। यह हम पहले ही कह आये हैं कि ग्रन्थ के मूललेखक चन्द्रशेखर भट्ट का स्वर्गवास द्वितीय-खण्ड के रचनाकाल के मध्य में हो गया था और तदुपरान्त उसकी इच्छा के अनुसार उनके पिता लक्ष्मीनाथ भट्ट ने ग्रन्थ को पूर्ण करने का कार्य पूर्ण मनोयोग के साथ अपने हाथ में लिया था। पंचम प्रकरण में तो उन्होंने जैसे जैसे ही लक्षण स्पष्ट करने के लिये पद्यशैली को अपनाये रखनेका प्रयास किया प्रतीत होता है परन्तु छठे प्रकरण (वैयालीय) पर आते ही दोनों लेखकों के व्यक्तित्व की भिन्नता का प्रतिबिम्ब हमें शैलीगत भिन्नता में मिल जाता है, क्योंकि यहाँ से लेखक ने कारिका-शैली को इस कार्य के लिये सुविधाजनक समझ कर अपना लिया है और अन्त तक उसी का निर्वाह उन्होंने किया है।

कवि ने स्वप्रणीत मुक्तक पद्यों के माध्यम से ही समग्र छन्दों के उदाहरण दिये हैं। प्रत्युदाहरणों में अवश्य ही पूर्वचर्ची कवियों के पद्य उद्धृत किये हैं। हा, विरदावलीप्रकरण में स्वप्रणीत उदाहरण एक-एक चरण के ही दिये हैं।

लक्षणों के सीमित दायरे में बद्ध रहने पर भी पारिभाषिक शब्दावली के माध्यम से छन्दों के अनुरूप ही शब्दों का चयन कर कवि ने जो लयात्मक सौन्दर्य, माधुर्य और चमत्कार का सृजन किया है वह अनूठा है। यथा—

पूर्णपद्यशैली का उदाहरण—

हारद्वय स्फुरदुरोजयुत दधाना

हस्त च गन्धकुसुमोज्ज्वलककणाढ्यम् ।

पादे तथा सस्रतनूपुरयुग्मयुक्ता,

चित्ते वसन्ततिलका किल चाकसीति ॥२६७॥ [पृ० ११३]

कारिकाशैली का उदाहरण—

अस्य युग्म रचितापरान्तिका ॥२७॥

[व्या.] अस्य-प्रवृत्तकस्य समपादकृता'—'समपादलक्षणयुक्तेश्चतुर्भिः पादै रचिताऽपरान्तिका ।

उदाहरण मुक्तक पद्यों में हैं । इसमें छन्द-नामों के अनुरूप ही शृंगार, वीर, रौद्र और शान्त आदि रसों के अनुरूप जिस शाब्दिक गठन, आलंकारिकता और लाक्षणिकता का कवि ने प्रयोग किया है वह भी दर्शनीय है । उदाहरण के तीरे पर दो पद्य प्रस्तुत हैं—

मनोहस-नामानुरूप उदाहरण—

तनुजाग्निना सखि मानस मम दह्यते,

तनुसन्धिरुष्णगदास्वत् परिभिद्यते ।

अधर च शुष्यति वारिमुक्तसुशालिवत्,

कुरु मदगृह कृपया सदा वनमालिमत् ॥३४४॥ [पृ० १२३]

सिंहास्यछन्द के अनुरूप उदाहरण—

यो दैत्यानामिन्द्र वक्षस्पीठे हस्तस्याग्रै-

भिद्यद् ब्रह्माण्ड व्याक्रुशयोच्चैर्व्यामृद्नादुग्रै ।

दत्तालीकान्युन्मिथ्र नियंद् विद्युद्वृद्धास्य-

स्तूर्णं सोऽस्माक रक्षा कुर्याद् घोर (वीर) सिंहास्यः ॥२९६॥

[पृ० ११३]

स्पष्ट है कि उल्लिखित ग्रन्थों की अपेक्षा इस ग्रन्थ की रचनाशैली विशद, स्पष्ट, सरल और विविधता को लिये हुये हैं ।

७. छन्दजाति—

अद्यावधि उपलब्ध समस्त छन्द शास्त्रियों ने एक अक्षर से छब्बीस अक्षर-पर्यन्त के वर्णिक छन्दों की निम्नजाति-संज्ञा स्वीकार की है—

उच्छ्रा	=	१ अक्षर	सूहृती	=	९ अक्षर
अत्युक्ता	=	२ अक्षर	पक्ति	=	१० अक्षर
मध्या	=	३ अक्षर	त्रिष्टुप्	=	११ अक्षर
प्रतिष्ठा	=	४ अक्षर	जगती	=	१२ अक्षर
सुप्रतिष्ठा	=	५ अक्षर	अतिजगती	=	१३ अक्षर
गामथी	=	६ अक्षर	शक्वरी	=	१४ अक्षर
उष्णिक्	=	७ अक्षर	अतिशक्वरी	=	१५ अक्षर
अनुष्टुप्	=	८ अक्षर	अष्टि	=	१६ अक्षर

अत्यष्टि	=	१७ अक्षर	आकृति	=	२२ अक्षर
घृति	=	१८ अक्षर	विकृति	=	२३ अक्षर
अतिघृति	=	१९ अक्षर	सस्कृति	=	२४ अक्षर
कृति	=	२० अक्षर	अतिकृति	=	२५ अक्षर
प्रकृति	=	२१ अक्षर	उत्कृति	=	२६ अक्षर

किन्तु प्राकृतपिगल, वाणीभूषण और वृत्तमौक्तिक में यह परम्परा दृष्टि-गोचर नहीं होती है। इन तीनों ग्रन्थों में एकाक्षर, द्व्यक्षर, त्र्यक्षर आदि सज्ञा का ही प्रयोग मिलता है। संभवतः मध्ययुगीन हिन्दी-परम्परा के निकट आ जाने के कारण ही इन ग्रन्थकारों ने वैदिक-परम्परा का त्याग कर सामान्य प्रणालिका अपनाई है।

८ विषयसूची—

प्रस्तुत ग्रन्थ के द्वितीय खण्ड के बारहवें प्रकरण में दोनों खण्डों के प्रत्येक प्रकरणस्थ प्रतिपाद्य विषय की विस्तृत अनुक्रमणिका ग्रन्थकार ने दी है। वर्ण्य विषय के साथ साथ छन्द-नाम, नामभेद और प्रत्येक अक्षर की प्रस्तारसख्या का भी उल्लेख है। इस प्रकार की अनुक्रमणिका अन्य छन्द-ग्रन्थों में प्राप्त नहीं है, केवल प्राकृतपिगल में प्रथम परिच्छेद के अंत में भाषिक-छन्द-सूची और द्वितीय परिच्छेद के अंत में वर्णिकवृत्त-सूची गद्य में प्राप्त हैं। इस प्रकार की बृहत्सूची जिस विधिवत् ढंग से दी गई है उससे यह प्रमाणित होता है कि लेखक का ज्ञान बहुत विस्तृत रहा है और उसने छन्दशास्त्र के प्रतिपादन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने का प्रयत्न किया है और वह इसमें सफल भी हुआ है।

निष्कर्ष—उपयुक्त छन्द-ग्रन्थों के साथ तुलना करने पर यह स्पष्ट है कि सभी दृष्टियों से अन्य ग्रन्थों की अपेक्षा वृत्तमौक्तिक छन्दशास्त्र का सर्वश्रेष्ठ एवं प्रौढ ग्रन्थ है। साथ ही मध्ययुगीन हिन्दी-साहित्य में जो स्थान और महत्त्व प्राकृतपिगल का है उससे भी अधिक महत्त्व इस ग्रन्थ का है क्योंकि जहाँ प्राकृतपिगल में सर्वथा छन्द के उद्भव के अक्षर प्राप्त होते हैं वहाँ वृत्तमौक्तिक में सर्वथा (मदिरा, मालती आदि ६ भेद) और घनाक्षरी छन्द सोदाहरण प्राप्त हैं। मध्ययुगीन हिन्दी-साहित्य की दृष्टि से इसमें वे सब छन्द प्राप्त हैं जिनका प्रायः प्रयोग तत्कालीन कवि कर रहे थे। अतः संस्कृत और हिन्दी दोनों के साहित्यिक दृष्टिकोण से वृत्तमौक्तिक का छन्दशास्त्र में विशिष्ट स्थान और महत्त्व सुनिश्चित ही है।

वृत्तमौक्तिक और प्राकृतपिगल

वृत्तमौक्तिक और प्राकृतपिगल का आलोडन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि चन्द्रशेखर भट्ट ने वृत्तमौक्तिक के मात्रावृत्तनामक प्रथम खण्ड में न केवल प्राकृतपिगल का आधार ही लिया है अपितु पांचवां और छठा प्रकरण तथा कतिपय स्थलों को छोड़ कर पूर्णतः प्राकृतपिगल की छाया या अनुवाद के रूप में ही रचना की है। मुख्य अंतर है तो केवल इतना ही है कि प्राकृतपिगल की रचना प्राकृत-अपभ्रंश में है तो वृत्तमौक्तिक की रचना संस्कृत में है। दोनों ही ग्रन्थों की समानतायें इस प्रकार हैं—

१. दोनों ही ग्रन्थ मात्रावृत्त और वर्णवृत्त-नामक दो परिच्छेदों में विभक्त हैं। वृत्तमौक्तिक में परिच्छेद के स्थान पर 'खण्ड' शब्द का प्रयोग किया गया है।

२. प्रारम्भ से अन्त तक विषयक्रम और छन्दःक्रम एकसदृश है जो विषय सूची से स्पष्ट है।

३. रचनाशैली में पारिभाषिक (सांकेतिक) शब्दावली और उसका प्रयोग एक-सा ही है।

४. गाथा, स्कन्धक, दोहा, रोला, रसिका, काव्य और षट्पद-नामक छन्दों के प्रस्तारभेद और नाम एकसमान हैं। नामों में यत्किञ्चित् अन्तर अवश्य है, जो चतुर्थ परिशिष्ट(क) में द्रष्टव्य है। दोनों में भेदों के लक्षणमात्र ही हैं, उदाहरण नहीं हैं। वृत्तमौक्तिक में गाथा-छन्द के २७ के स्थान पर २५ भेद स्वीकार किये हैं।

५. रड्वा छन्द के सातों भेदों के उदाहरण दोनों में प्राप्त नहीं हैं।

६. लक्षणों की शब्दावली भी प्रायः समान है। उदाहरण के लिये कुछ पद्य प्रस्तुत हैं—

प्राकृतपिगल

दीहो संजुत्तपरो

बिदुजुग्रो पाडिग्रो य चरणते ।

स गुरु वंक दुमत्तो

अण्णो लहु होप सुद्ध एककल्लो ॥२॥

×

×

वृत्तमौक्तिक

दीर्घः सयुक्तपरः

पादान्तो वा विसर्गबिन्दुयुतः ।

स गुरुर्वक्त्रो द्विकलो

लघुरन्यः शुद्ध एककलः ॥६॥

×

×

सगणा भगणा दिग्गणइ

मत्त चउद्दह पअ पलई ।

सठइ वको विरइ तथा

हाकलि रुअउ एहु कहा ॥१७२॥

सगणंभंगणंनलघुयुतैः

सकल चरण प्रविरचितम् ।

गुरुकेन च सर्वं कलित

हाकलिवृत्तमिदं कथितम्॥२२॥

[चतुर्थं प्रकरण]

+

+

+

+

प्राकृतपिगल और वृत्तमौक्तिक में निम्न असमानतायें हैं—

१. प्राकृतपिगलकार ने छन्दों के उदाहरण पूर्ववर्ती कवियों के दिये हैं और वृत्तमौक्तिककार ने समग्र उदाहरण स्वरचित दिये हैं, प्रत्युदाहरण पूर्ववर्ती कवियों के अवश्य दिये हैं ।

२. शिखा, कामकला, रुचिरा, हरिगीत के भेद, मदिरा सवैया, मालती सवैया, मल्ली सवैया, मल्लिका सवैया, माधवी सवैया, मागधी सवैया, घनाक्षर और गलितक प्रकरण के १७ छन्द विशिष्ट हैं जो प्राकृतपिगल में प्राप्त नहीं हैं ।

३. प्रथम खण्ड छह प्रकरणों में विभक्त है ।

वृत्तमौक्तिक के द्वितीय खंड की रचना प्राकृतपिगल के अनुकरण पर नहीं है । रचना-शैली, शब्दावली, प्रकरण आदि सब पृथक् हैं । प्राकृतपिगल के द्वितीय परिच्छेद में केवल १०४ वर्णिक छन्द हैं और वृत्तमौक्तिक में २६५ वर्णिक छन्द, प्रकीर्णक, दण्डक अर्धसम, विषम, वंतालीय छन्द, यति-प्रकरण, गद्य-प्रकरण और विरुदावली आदि कई विशिष्ट प्रकरण हैं जो कि अन्यत्र दुर्लभ हैं ।

वृत्तमौक्तिक और वाणीभूषण

प्राकृतपिगलकार हरिहर के पौत्र, रविकर के पुत्र दामोदरप्रणीत वाणीभूषण प्राकृतपिगल का संस्कृत रूपान्तर है और इस ग्रंथ का वृत्तमौक्तिककार ने भी यथेच्छ प्रयोग किया है । प्रत्युदाहरणों में सुन्दरी, तारक, चक्र, चामर, निशिपालक, चञ्चला, मञ्जोरा, चर्चरी, क्रीडाचन्द्र, चन्द्र, घवल, गण्डका एवं दीपक (मात्रिक) के उदाहरणों का तो प्रयोग किया ही है किन्तु रुचिरा (मात्रिक) और किरिट (वर्णिक) छन्द के तो लक्षण एवं उदाहरण भी ज्यों के त्यों उद्धृत कर दिये हैं । अतः यह निःसंकोच मानना होगा कि पूर्ववर्ती वाणीभूषण का वृत्तमौक्तिककार ने पूर्णतया अनुकरण किया है ।

रोलावृत्तमवेहि
 नागपिङ्गलकविभणित,
 प्रतिपदमिह चतुरधिक-
 कलविंशतिपरिगणितम् ।
 एकादशमघि विरति-
 रखिलजनचिन्ताहरण,
 सुललितपदमदकारि
 विमलकविकण्ठाभरणम् ॥५६॥

या चरणे कलाना
 चतुरधिकविंशंदिता,
 सा किल रोला भवति
 नागकविपिङ्गलकथिता ।
 एकादशकलविरति-
 रखिलजनचिन्ताहरणा
 सुललितपदकुलकलित-
 विमलकविकण्ठाभरणा ॥५६॥

[द्वितीय प्रकरण]

+ +
 अक्षरगुरुलघुनियमविरहित
 भुजगराजपिङ्गलपरिगणितम् ।
 भवति सुगुम्फितपोडशकलक,
 वाणीभूषणपादाकुलकम् ॥७५॥

+ +
 गुरुलघुकृतगणनियमविरहित,
 फणिपतिनायकपिगलपदितम् ।
 रसविधुकलयुतयमकितचरण
 पादाकुलक श्रुतिमुखकरणम् ॥५॥

[तृतीय प्रकरण]

+ +
 पट्कलमादौ तदनु
 चतुस्तुरग परिसतनु,
 शेपे द्विकल कलय
 चतुष्पदमेव सचिनु ।
 छन्द पट्पदनाम
 भवति फणिनायकगीत,
 रुद्रे विरतिमुपैति
 नृपतिमुखकरमुपनीतम् ।
 उल्लालयुगलमत्र च
 भवेदष्टाविंशतिकलमित,
 शृणु पञ्चदशे विरतिस्थित-
 पठनादपि पण्डितजनहितम् ॥७७॥

+ +
 पट्पदवृत्त कलय
 सरसकविपिगलभणित,
 एकादश इह विरति-
 रथ च दहर्नविधुगणितम् ।
 पट्कलमादौ तदनु
 चतुस्तुरग परिसतनु,
 शेपे द्विकल रचय
 चतुष्पदमेव सचिनु ।
 उल्लालद्वयमत्र हि
 भवेदष्टाविंशतिकलयुत,
 यदि पञ्चदशे विरतिस्थित
 पठनादपि गुणिगणहितम् ॥५३॥

[द्वितीय प्रकरण]

+ +
 द्वितीय परिच्छेद
 नरेन्द्रमुदेहि । मुगेन्द्रमवेहि ॥२१॥
 + +

+ +
 द्वितीय-खण्ड--१ वृत्तनिरूपण प्रकरण
 नरेन्द्रविराजि । मुगेन्द्रमवेहि ॥२५॥
 + +

द्विजगणमोहर, भगणमुपाहर ।
भणति सुवासकमिति गुणनायक ॥५६॥

+ +
विनिधेहि चतु सगण रुचिर,
रविसख्यकवर्णकृन् सुचिरम् ।
फणिनायकपिङ्गलसभणित
कुरु तोटकवृत्तमिद गणितम् ॥१३५॥

+ +
पादयुग कुरु नूपुरसयुत-
मत्र कर वररत्नमनोहर,
वज्रयुग कुसुमद्वयसगत-
कुण्डलगन्धयुग समुपाहर ।
पण्डितमण्डलिकाहृतमानस-
कल्पितसज्जनमौलिरसालय,
पिङ्गलपत्रगराजनिवेदित-
वृत्तकिरीटमिद परिभावय ॥२२१॥

+ +
वाणीभूषण की अपेक्षा वृत्तमौक्तिक में निम्नलिखित विशेषतायें पाई जाती हैं —

(१) वाणीभूषण में केवल ४३ मात्रिक छन्द हैं जब कि वृत्तमौक्तिक में ७६ मूल छन्द और २०६ छन्द-भेद हैं । निम्न छन्दों का प्रयोग वाणीभूषणकार ने नहीं किया है —

रसिका, वाव्य, उल्लाल, चौबोला, भुल्लणा, शिखा, दण्डकला, वामकला, हरिगीत के भेद और पचम सबैया-प्रकरण तथा छठा गलितक प्रकरण के पूर्ण छन्द ।

(२) गाथा, स्कन्धक, दोहा, रोला, रसिका, वाव्य, और षट्पद के प्रस्तारभेद, नाम एव लक्षण तथा रड्डा छन्द के सातों भेदों के लक्षण वाणीभूषण में नहीं हैं ।

(३) वाणीभूषण में ११२ समवर्णिक छन्द हैं जब कि वृत्तमौक्तिक में २६५ छन्द हैं । इसका वर्गीकरण चतुर्थ परिशिष्ट (ख) में देखा जा सकता है ।

द्विजमिह धारय, भमनु च कारय ।
भवति सुवानकमिति गुणलासक ॥७२॥

+ +
यदि वै लघुयुग्मगुरुक्रमत
रविसम्मितवर्ण इह प्रमित ।
अहिभूपतिना फणिना भणित
सखि तोटकवृत्तमिद गणितम् ॥१६६॥

+ +
पादयुग कुरु नूपुरराजित-
मत्र कर वररत्नमनोहर,
वज्रयुग कुसुमद्वयसङ्गत-
कुण्डलगन्धयुग समुपाहर ।
पण्डितमण्डलिकाहृतमानस-
कल्पितमज्जनमौलिरसालय,
पिगलपत्रगराजनिवेदित-
वृत्तकिरीटमिद परिभावय ॥५८१॥

+ +

(४) वृत्तमौक्तिक में ७ प्रकीर्णक, ८ दण्डक, ८ विषम १२ वंतालीय, ७४ विरुदावली और २ खण्डावली छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण प्राप्त हैं जब कि वाणीभूषण में इन छन्दों का उल्लेख भी नहीं है।

(५) वाणीभूषण में अर्द्धसम छन्दों में केवल पुष्पिताग्रा छन्द है जब कि वृत्तमौक्तिक में १० छन्द हैं।

(६) वाणीभूषण में मतिनिरूपण और गद्य-निरूपण-प्रकरण नहीं है।

(७) वृत्तमौक्तिक में दोनो खण्डों के प्रकरणों की सूची है जिसमें छन्द-नाम, नामभेद एवं प्रस्तार सख्या दी है, जब कि वाणीभूषण में सूची नहीं है।

अतः इस तुलना से स्पष्ट है कि वाणीभूषण एक लघुकाय छन्दोग्रन्थ है जब कि वृत्तमौक्तिक छन्दों का आकर और महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

वृत्तमौक्तिक और गोविन्दविरुदावली

वृत्तमौक्तिक के नवम विरुदावली प्रकरण में चण्डवृत्तों के प्रत्युदाहरण देने हुए ग्रथकार ने श्री रूपगोस्वामी कृत गोविन्दविरुदावली का मुक्त हृदय से प्रयोग किया है। गोविन्दविरुदावली के एक या दो ही उदाहरण ग्रहण नहीं किये हैं अपितु समग्र विरुदावली ही उद्धृत कर दी है, केवल गोविन्दविरुदावली का मंगलाचरण और उपसंहार मात्र ही अवशिष्ट रहा है।^१

विरुदावली छन्द-श्रम में दोनो में अन्तर है; जो तालिका से स्पष्ट है—

गोविन्दविरुदावली		वृत्तमौक्तिक		पृष्ठांक
क्रम-सख्या	नाम	क्रम-सख्या	नाम	
१	वर्द्धित	४	वर्द्धित	२२२
२	वीरभद्र	६	वीर (वीरभद्र)	२२५
३	समग्र	५	रण (समग्र)	२२४

१-भादि—इय मङ्गलसख्या स्याद् गोविन्दविरुदावली ।

यस्याः पठनमात्रेण श्रीगोविन्दः प्रसीदति ॥

अन्तः—स्युरत्यन्नः सुरिधरमतिर्गतात्मानिर्गतात्स्वन ।

अवनः शृण्वे भवेद् यः स विरुदावलीपाठकः ॥

यः स्तोति विरुदावल्या मधुरामण्डले हरिम् ।

अनया रम्यया हरिर्न दूषणं मेव प्रसीदति ॥

४	अच्युत	३	अच्युत	२२१
५	उत्पल	६	उत्पल	२२८
६	तुरङ्ग	२०	तुरग	२३४
७	गुणरति	१०	गुणरति	२२६
८	मातङ्गखेलित	८	मातङ्गखेलित	२२६
९	तिलक	२	तिलक	२२०
१०	पङ्केरुह	२१	पङ्केरुह	२३५
११	सितकञ्ज	२२	सितकञ्ज	२३८
१२	पाण्डूत्पल	२३	पाण्डूत्पल	२३६
१३	इन्दीवर	२४	इन्दीवर	२४०
१४	अरुणाम्भोरुह	२५	अरुणाम्भोरुह	२४२
१५	फुलाम्बुज	२६	फुलाम्बुज	२४३
१६	चम्पक	२७	चम्पक	२४५
१७	वञ्जुल	२८	वञ्जुल	२४६
१८	कुन्द	२९	कुन्द	२४७
१९	बकुलभासुर	३०	बकुलभासुर	२४८
२०	बकुलमगल	३१	बकुलमगल	२४९
२१	मञ्जरीकोरक	३२	मञ्जरीकोरक	२५१
२२	गुच्छ	३३	गुच्छक	२५२
२३	कुमुम	३४	कुमुम	२५३
२४	दण्डकात्रिभगी कलिका	१	दण्डकात्रिभगी कलिका	२५५
२५	विदग्धात्रिभगी कलिका	२	संपूर्णा विदग्धात्रिभगी- कलिका	२५६
२६	मिश्रा कलिका	३	मिश्रकलिका	२५८
२७	साप्तविभक्तिकी कलिका	१	साप्तविभक्तिकी कलिका	२६१
२८	अक्षमयी कलिका	२	अक्षमयी कलिका	२६२
२९	सर्वलघुकलिका	३	सर्वलघुक-कलिका	२६४

गोविन्दविरदावली के अतिरिक्त जिन चण्डवृत्तों के लक्षण वृत्तमीतिक में दिये गये हैं उनके उदाहरण एक-एक चरण के ही प्राप्त हैं, पूर्ण उदाहरण या प्रत्युदाहरण प्राप्त नहीं हैं। इन चण्डवृत्तों की तालिका इस प्रकार है—

१ पुरुषोत्तम, ७ शाक, ११, कल्पद्रुम, १२ कन्दल, १३ अपराजित, १४ नर्तन, १५ तरत्समस्त, १६ वेष्टन, १७ अस्खलित और १६. समग्र ।

पल्लवित-नामक विरुदावली गोविन्दविरुदावली म नही है । चन्द्रशेखरभट्ट ने इसका प्रत्युदाहरण गोविन्दविरुदावली में प्रदत्त फुल्लाम्बुज के उदाहरणस्थ अश का दिया है ।

वृत्तमौक्तिक में चण्डवृत्त के ३४ भेद, त्रिभगी-कलिका के ३ भेद और विरुदावली के तीन भेद माने हैं जब कि गोविन्दविरुदावली में इनका वर्गीकरण इस प्रकार है—

चण्डवृत्त-कलिका के दो भेद हैं—१ नख और २ विशिख ।

नख के ६ भेद है—१. वर्धित, २ वीरभद्र, ३ समग्र, ४ अच्युत, ५ उत्पल ६ तरङ्ग, ७ गृणरति, ८ मातगखेलित और ९ तिलक ।

विशिख के ११ भेद हैं—१ पङ्केरुह, २ सितकञ्ज, ३ पाण्डूत्पल, ४ इन्दीवर, ५ अरुणाम्भोरुह, ६ फुल्लाम्बुज, ७ चम्पक, ८ वञ्जुल, ९ कुन्द, १० बकुलभासुर और ११. बकुलमगल ।

द्विगादिगणवृत्त-कलिका मजरी के तीन भेद हैं—१ मञ्जरी-कोरक, २ गुच्छ और ३ कुसुम ।

त्रिभगी-कलिका के दो भेद हैं—१ दण्डकत्रिभगी कलिका और २ विद्वग्ध-त्रिभगी-कलिका ।

मिश्रकलिका के ४ भेद हैं—१ मिश्राकलिवा, २ साप्तविभक्तिकी कलिका, ३ अक्षमयी-कलिवा और ४ सर्वलघु कलिका ।

इस प्रकार गोविन्दविरुदावली में विरुदावली के कुल २६ भेदों का दिग्दर्शन है तो वृत्तमौक्तिक में ४० विरुदावलियों और ३४ कलिकाओं का निरूपण है ।

वृत्तमौक्तिक में उद्धृत अप्राप्त ग्रन्थ

प्रस्तुत ग्रन्थ में चन्द्रशेखरभट्ट ने छन्दो के प्रत्युदाहरण देते हुए जिन जिन ग्रन्थकारों और जिन जिन ग्रन्थों का उल्लेख किया है उनमें से कतिपय ग्रन्थ अद्यावधि अप्राप्त हैं । अप्राप्त ग्रन्थों की अक्षरानुक्रम से तालिका इस प्रकार है—

संख्या	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थकार	उल्लेख-पृष्ठाद्
१	उदाहरणमञ्जरी	तदमीनाथ भट्ट	१०, १३, १६ आदि

२	कृष्णकुतूहल-महाकाव्य	रामचन्द्र भट्ट	१०५, १०७ आदि
३	दशावतारस्तोत्र	"	१२६
४	नन्दनन्दनाष्टक	लक्ष्मीनाथ भट्ट	१४४
५	नारायणाष्टक	रामचन्द्र भट्ट	१६७
६	पवनदूतम्	चन्द्रशेखर भट्ट	१३६
७	पाण्डवचरित-महाकाव्य	"	६२, १२१ आदि
८	शिको-काव्य	"	१५६
९	शिवस्तुति	लक्ष्मीनाथ भट्ट	४५
१०	सुन्दरीध्यानाष्टक	"	१४४

इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे स्थल हैं जिनमें केवल ग्रन्थकार के नाम हैं और विषय का संकेत है किन्तु उनके ग्रन्थों का कोई उल्लेख नहीं मिलता ।

१	राक्षसकवि	दक्षिणानिलवर्णन	१५३
२	लक्ष्मीनाथभट्ट	खड्गवर्णन	१६०
३	"	देवीस्तुति	४३
४	शम्भु	छन्दःशास्त्र	१०६, १३६, १६७ आदि

वृत्तरत्नाकर-नारायणो-टीका में (पृ. १४५) पर शम्भु-प्रणीत छन्दश्चूडामणि ग्रन्थ का उल्लेख है । संभवतः यही शम्भु हों ! किन्तु ग्रन्थ अप्राप्त है ।

मालती छन्द का प्रत्युदाहरण देते हुये भारवि रचित निम्न पद्य दिया है—

अयि विजहीहि दृढोपगूहनं, त्यज नवसङ्गमभीष वल्लभम् ।

अरुणकरोद्गम एष वतंते, वरतनु सम्प्रवदन्ति कुक्कुटाः ॥ पृ. १००

इसका उल्लेख छन्दोमञ्जरी (पृ. ५६) में भी है किन्तु भारवि कृत किरा-तार्जुनीय काव्य (मुद्रित) में यह पद्य प्राप्त नहीं है । अतः भारवि कृत किस ग्रन्थ का यह पद्य है, अन्वेषणीय है ।

प्रस्तुत संस्करण की विशेषतायें

ग्रन्थकार ने प्रस्तुत ग्रन्थ में ६७१ छन्दों के लक्षण एवं उदाहरणों का निरूपण किया है । इन छन्दों के अतिरिक्त मैने ग्रथान्तरों से पाद-टिप्पणियों में ७७ और पंचम परिशिष्ट में १३८१ छन्दों के लक्षण दिये हैं । अर्थात् इन संकलन में २१२६ छन्दों का दिग्दर्शन है जो कि इस संस्करण की प्रमुख विशेषता है ।

इस सस्करण मे मूल ग्रन्थ के पश्चात् दो टीकायें श्रीर ८ परिशिष्ट दिये हैं जिनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :—

(१) वृत्तमोक्षितक-वार्तिक-दुष्करोद्धार-टीका

इस टीका श्रीर टीकाकार लक्ष्मीनाथ भट्ट का परिचय प्रारभ मे कवि-वश-परिचय मे दिया जा चुका है, अत यहाँ पिष्टपेपण अनावश्यक है ।

(२) वृत्तमोक्षितक-दुर्गमबोध-टीका

इस दुर्गमबोधटीका के प्रणेता महोपाध्याय मेघविजय १८ वी शताब्दी के बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न विशिष्टतम विद्वान् है । इनका जन्म सवत्, जन्म स्थान श्रीर गार्हस्थ्य जीवन का ऐतिह्य परिचय अद्यावधि अप्राप्त है । श्रीवत्सलोपाध्याय प्रणीत 'विजयदेवमाहात्म्य' पर मेघविजयजी रचित विवरण की स १७०६ की लिखित हस्तलिखित' प्रति प्राप्त होने से यह निश्चित है कि विवरण की रचना १७०६ के पूर्व ही हो चुकी थी । अत यह अनुमान सहज-भाव से लगाया जा सकता है कि इस रचना के समय इनकी अवस्था कम से कम २०-२५ वर्ष की अवश्य होगी । अतः १६८५ श्रीर १६६० के मध्य इनका जन्म-समय माना जा सकता है ।

मेघविजयजी श्वेताम्बर-जैन-परम्परा मे तपागच्छीय अकबर-प्रतिबोधक जगद्गुरु हीरविजयसूरि की शिष्य-परम्परा मे कृपाविजयजी के शिष्य हैं^१ । विजयासिंहसूरि के पट्टधर विजयप्रभसूरि ने इनकी उपाध्यायपद प्रदान किया था ।^२

मेघविजयजी-गुम्फत साहित्य को देखने पर यह साधिकार कहा जा सकता है कि ये एकदेशीय विद्वान् न होकर सार्वदेशीय विद्वान् थे । काव्य-साहित्य, पादपूर्ति, ध्याकरण, छन्द, अनेकार्थ, न्यायशास्त्र, दर्शनशास्त्र, ज्योतिष, सामुद्रिक श्रीर अध्यात्मशास्त्र आदि प्रत्येक विषय के ये प्रगाढ पण्डित थे श्रीर इन्होंने प्रत्येक विषय पर साधिकार वचंस्वपूर्ण लेखिनी चलाई है । इनका साहित्य-सर्जना काल वि स १७०६ से १७६० तक का तो निश्चित ही है । वर्तमान समय में प्राप्त इनकी रचित साहित्य-ताम्रों की सूची निम्न है—

१-विजयदेवमाहात्म्य प्रान्तपुष्पिका

२-दुष्करोद्धार प्रशस्ति

३-देवानन्द महात्म्य प्रशस्ति

१	सप्तसन्धान-महाकाव्य	र. सं. १७६० ^१	प्रकाशित
२	दिग्विजय-महाकाव्य		"
३	शान्तिनाथचरित्र (नैपथीय-पादपूर्ति)		"
४	देवानन्द-महाकाव्य (माघ-पादपूर्ति)		"
५	किरातसमस्यापूर्ति ^२		अप्रकाशित
६	मेघदूत-समस्यालेख (मेघदूत-पादपूर्ति)		प्रकाशित
७	लघुत्रिपष्टिशलाकापुरुषचरित्र		अप्रकाशित
८	भविष्यदत्तचरित्र		प्रकाशित
९	पञ्चाख्यान		अप्रकाशित
१०	पाणिनिद्विधाश्रयविज्ञप्ति-लेख ^३		"
११	"	४	"
१२	विज्ञप्तिका		प्रकाशित ^४
१३	गुरुविज्ञप्ति-लेखरूप-चित्रकोशकाव्य		अप्रकाशित ^५
१४	विज्ञप्तिपत्र		"
१५	"	अपूर्ण ^६	"
१६	"		"
१७	"	अपूर्ण ^७	"
१८	चन्द्रप्रभा-ध्याकरण (हैमकौमुदी)	२० सं० १७५७ ^{१२}	प्रकाशित
१९	हैमशब्दचन्द्रिका		"
२०	हैमशब्दप्रक्रिया ^८		अप्रकाशित

१-विषयदूरतमुनीन्द्रनां प्रमाणात् परिवारसरे । [सप्तसन्धान प्रकाशित]

२-देवें, दिग्विजय-महाकाव्य-प्रस्तावना

३-४ भाण्डारकर ओरियन्टल रिसेर्च इन्स्टीट्यूट पूना २११A, १८८२-८३

५-विज्ञप्ति-लेखसंग्रह प्रथम भाग (तिथी जैन ग्रन्थमाला, बम्बई)

६-समयजैन-धर्मालय, बीकानेर

७-राजस्थान प्राञ्चविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, सं० २०४१३

८, ९, १०-,, ,, ,, शाखा कार्यालय बीकानेर, मोतीचंद सजाधी-संग्रह,

पृ० २८४

११-विषयजले से गुरुवः वीतसार्थीन्दुवसरते । [चन्द्रप्रभाप्रकाशित ७]

१२-भाण्डारकर ओरियन्टल रिसेर्च इन्स्टीट्यूट, पूना

२१	विष्णुमणि-परीक्षा* (मन्मथ्यापन्नवर्णक मन्दोत्तोराम्याय- शृंग तरुविष्णुमणि वा परीक्षा)	धर्मकावित्त
२२	मुनिप्रबोध	प्रकावित्त
२३	धर्ममञ्जुषा	धर्मकावित्त
२४	मेघमहोदयधर्मप्रबोध	प्रकावित्त
२५	हस्तमञ्जीम म्बोपन-टीका-महित	"
२६	रमसनाम्न	उत्सव, मेघमहोदय-धर्मप्रबोध
२७	उदयदीपिका, २० सं० १७५२	धर्मकावित्त
२८	प्रमनगुप्तरौ	"
२९	वीर्यायन्त्रविधि	प्रकावित्त
३०	मातृकाप्रसाद २० सं० १७५७*	धर्मकावित्त
३१	सप्तबोध	धर्मपत्र*
३२	सहस्रगीता	प्रकावित्त
३३	विजयदेवमातासम्बन्धविवरण	"
३४	वृत्तमोचिण्ड-दुर्गमबोध* टीका	(प्रस्तुत)
३५	पञ्चतोर्योस्तुति मटीक*	धर्मकावित्त
३६	भक्त्यामरस्तोत्र-टीका*	"
३७	पत्तुविदातिजिनस्तप*	"
३८	भादिनापस्तोत्र* अपूर्ण	"
गुजैर-भाषा में रचित कृतिये		
३९	विजयदेवसूरिनिर्वाणरास*	धर्मकावित्त
४०	शृषाविजयनिर्वाणरास*	"
४१	जैनधर्मदोषकस्याध्याय**	"
४२	जैनशासनदोषकस्याध्याय**	"

१-दसका में सम्पादन कर रहा हूँ जो राजस्थान प्राञ्चविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से प्रकाशित होगा।

२-सर्वरसदेवकाव्यंरवभूमिते षोडशस्कन्दे ।

श्रीधर्मनगरे षषः पूर्णश्रियमतिश्रयत् । [मालुकाप्रसाद प्रकाशित]

३,४,५-देसैं दिग्विजयमहाकाव्य - प्रस्तावना

६-महोपाध्याय विनयसागर-सप्तह, कोटा

७-राजस्थान प्राञ्चविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, सं. २०४१५

८-११-देसैं, दिग्विजय-महाकाव्य - प्रस्तावना

४३	आहारगवेपणा-स्वाध्याय ^१	अप्रकाशित
४४	चौवीस जिनस्तवन ^२	"
४५	पार्श्वनाथस्तवन ^३	"
४६	मक्षीपार्श्वनाथस्तवन ^४	"

वृत्तमौक्तिक की दुर्गमबोध नामक टीका की रचना मेघविजयजी ने अपने शिष्य भानुविजय के पठनार्थ सं० १६५५ में की है। भट्ट लक्ष्मीनाथीय 'दुष्करोद्धार' टीका के समान ही यह टीका भी वृत्तमौक्तिक के प्रथम खण्ड, प्रथम गाथा-प्रकरण के पद्य ५१ से ८६ तक अर्थात् ३६ पद्यों पर रची गई है। पूर्व टीका की तरह यह भी ९ प्रकरणों में विभक्त है। इसमें वर्णोद्दिष्ट और वर्णनष्ट एक-साथ दे दिये हैं और वृत्तस्थ गुरु-लघु-ज्ञान का स्वतन्त्र प्रकरण नहीं है। प्रस्तार जैसे गहन विषय को मेघविजयजी ने अपनी लेखिनी द्वारा सरलतम बना दिया है। प्राकृत-पिगल, वाणीभूषण और छन्दोरत्नावली आदि ग्रन्थों के उद्धरण और अनेकों चित्र देकर प्रत्येक प्रकरण के वर्ण्य विषय का विशदता के साथ स्पष्टीकरण किया है। भाषा में प्रवाह और सरलता है। कहीं-कहीं देश्य शब्दों का प्रयोग भी मिलता है।

यह टीका अद्यावधि अज्ञात और अप्राप्त थी। इसकी स्वयं टीकाकार द्वारा लिखित एक मात्र प्रति मेरे निजी संग्रह में है।

परिशिष्टों का परिचय

प्रथम परिशिष्ट—

इस परिशिष्ट में वृत्तमौक्तिककार द्वारा स्वीकृत पारिभाषिक-शब्दावली दी गई है। टगणादि गण, इनका प्रस्तारभेद, नाम तथा उनके पर्याय यहाँ क्रमशः दिये हैं और अन्त में इस पद्धति से मगणादि ८ गणों के पर्याय दिये हैं।

पाद-टिप्पणियों में स्वयम्भूछन्द, वृत्तजातिसमुच्चय, कविदर्पण, हेमचन्द्रीय-छन्दोनुशासन, प्राकृतपिगल, वाणीभूषण और वाग्बल्लभ के साथ इस पद्धति की तुलना की है अर्थात् इन ग्रन्थकारों ने इस प्रणाली को किस रूप में स्वीकार किया है, कौन-कौन से शब्द स्वीकृत किये हैं, कौन-कौन से शब्द इन ग्रन्थों में नहीं हैं और कौन-कौन से नये पारिभाषिक शब्दों को स्वीकृत किया है; इन सब का दिग्दर्शन है।

१ - ३- देखें, दिग्विजय-महाकाव्य - प्रस्तावना.

४-महोपाध्याय विनयसागर-संग्रह, कोटा.

द्वितीय परिशिष्ट—

(क) मात्रिक छन्दो का अकारानुक्रम—इसमें मात्रिक छन्द ७६ और गाय, स्कन्धक, दोहा, रोला, रसिका, काव्य और पट्पद आदि के २१८ भेदों के नामों को अकारानुक्रम से दिया है।

(ख) वर्णिक छन्दो का अकारानुक्रम—इसमें वर्णिक सम-छन्द, प्रकीर्णक, दण्डक, अर्द्धसम, विषम और वंतालीय-छन्दो का एव टिप्पणियों में उद्धृत छन्दो का अकारानुक्रम दिया है। छन्दो के आगे () कोष्ठक में प्रकीर्णक का प्र, दण्डक का द, अर्द्धसम का अ, विषम का वि, वंतालीय का वं और टिप्पणी का टि दिया है। सकेत-कोष्ठक में ग्रन्थकार ने जो छन्दो के नाम-भेद दिये हैं वे भी अकारानुक्रम में सम्मिलित हैं, वे नाम-भेद भी () कोष्ठक में दिये हैं।

(ग) विरुदावली-छन्दो का अकारानुक्रम—इसमें कलिका-विरुदावली, चण्डवृत्त-विरुदावली आदि समस्त विरुदावली-छन्दो का अकारानुक्रम दिया है।

तृतीय परिशिष्ट—

(क) पद्यानुक्रम—इसमें प्रतिपाद्य विषय के पद्यों और छन्द के लक्षण-पद्यों को अकारानुक्रम से दिया है। वंतालीय-प्रकरण की लक्षण-कारिकायें भी इसी में अकारानुक्रम से सम्मिलित कर दी गई हैं।

(ख) उदाहरण-पद्यानुक्रम—इसमें ग्रन्थकार द्वारा स्वरचित-उदाहरण, पूर्ववर्ती कवियों के प्रत्युदाहरण, गद्यांश के उदाहरण और टिप्पणियों में उद्धृत उदाहरण अकारानुक्रम से दिये हैं। गद्यांश के लिये कोष्ठक () में ग, और टिप्पणी के लिये टि का सकेत दिया है। यति-प्रकरण में उद्धृत और विरुदावली में प्रयुक्त एक-एक चरण के पद्यों को भी अकारानुक्रम में सम्मिलित किया गया है।

चतुर्थ परिशिष्ट—

क (१) मात्रिक छन्दो के लक्षण एव नाम-भेद—प्रारम्भ में सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची और सकेत देकर वृत्तमौक्तिक के अनुसार छन्द-नाम और उसके टगणादि में लक्षण एव प्रतिचरण की माशायें दी हैं। पश्चात् सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची के २२ ग्रन्थों के साथ छन्द नाम और लक्षणों की तुलना की गई है। जिन-जिन ग्रन्थों में वृत्तमौक्तिक-लक्षण-सम्मत छन्द का वही नाम है तो उन ग्रन्थों के अंक दे दिये हैं और लक्षण यही होते हुये भी नाम यदि पृथक् है तो वह नाम-भेद देकर

उन-उन ग्रन्थों के अक्षर लगा दिये हैं। ग्रन्थ-विस्तार-भय से यहाँ पर ग्रन्थों के नाम न देकर उनके अक्षर दिये हैं।

क (२) गायत्रि छन्द-भेदों के लक्षण एवं नामभेद—इसमें गायत्रि, स्कन्धक, दोहा, रोला, रसिका, काव्य और षटपद नामक छन्दों के प्रस्तार सख्या-क्रम से लक्षण, छन्द-नाम और नामभेद दिये हैं। इन छन्दों के प्रस्तारभेद कुछ ही ग्रन्थों में प्राप्त हैं, समग्र ग्रन्थों में नहीं हैं, इसलिये अक्षरों का प्रयोग न करके ग्रन्थनाम-शीर्षक से ही दिये हैं।

ख वर्णिक-छन्दों के लक्षण एवं नामभेद—इसमें वर्णिक-सम, प्रकीर्णक, दण्डक, अर्द्धसम, विषम और वैतालीय-छन्दों के वृत्तमौक्तिक के अनुसार छन्द-नाम और लक्षण दिये हैं। लक्षण मगणादिगणों के सक्षिप्त रूप 'ग य र स त. ज भ न ल ग' रूप में दिये हैं। पश्चात् सन्दर्भ-ग्रन्थों के अक्षर, नामभेद और अक्षर दिये हैं। यह प्रणालिका 'क १ मात्रिक-छन्दों के लक्षण एवं नामभेद' के अनुसार ही है।

केवल २६५ वर्णिक सम-छन्दों में से ६१ छन्द ही ऐसे हैं जिनके कि नाम-भेद प्राप्त नहीं है। एक ही छन्द के एक से लेकर आठ तक नामभेद प्राप्त होते हैं। नामभेदों की तुलना से यह स्पष्ट है कि इसका प्रयोग कितना व्यापक था। ऐसा प्रतीत होता है कि नाम निर्वाचन के लिये छन्द शास्त्रियों के सम्मुख कोई निश्चित परिपाटी नहीं थी, वे स्वेच्छा से छन्दों का नाम-निर्वाचन कर सकते थे, अन्यथा इतने नामभेद प्राप्त नहीं होते।

ग छन्दों के लक्षण एवं प्रस्तार-सख्या—इसमें वृत्तमौक्तिक में प्रयुक्त एकाक्षर से षड्विंशतिक्षर तक के सम-वर्णिक छन्दों के क्रमशः नाम देकर 'S, 1' गुरु-लघुरूप में लक्षण दिये हैं पश्चात् उसकी प्रस्तारसख्या दिखाई है कि यह भेद प्रस्तारसख्या की दृष्टि से कौन सा है। मैंने यथासाध्य समग्र छन्दों की प्रस्तार-सख्या देने का प्रयत्न किया है, फिर भी कतिपय छन्द ऐसे हैं जिनकी प्रस्तार-सख्या प्राप्त नहीं हुई है। तज्ज्ञों से निवेदन है कि इसकी पूर्ति करने का वे प्रयत्न करें।

प्रकीर्णक, दण्डक, अर्धसम और विषम छन्दों के नाम और लक्षण 'S, 1' प्रणालिका से ही दिये हैं।

पञ्चम परिशिष्ट—

इस परिशिष्ट में जिन छन्दों का वृत्तमौक्तिक में उल्लेख नहीं है और जो सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची के २१ ग्रन्थों में प्रयुक्त हैं उन छन्दों को भी छन्द शास्त्रविषयक

जिज्ञासुओं के लिये प्रस्तार-संख्या के क्रम से दिये हैं। प्रारंभ में प्रस्तार-संख्या, छन्द-नाम, लक्षण और सन्दर्भग्रन्थ के अंक, नामभेद तथा अंक दिये हैं। यह पद्धति 'क. (१) मात्रिक-छन्दो के लक्षण एवं नामभेद' के अनुसार ही है।

इसमें अक्षरानुक्रम से इतने विशिष्ट छन्द प्राप्त हैं :—

४ अक्षर	१२	छन्द	१६	अक्षर	३६	छन्द	
५	"	२७	"	१७	"	२७	"
६	"	५५	"	१८	"	३३	"
७	"	१२०	"	१९	"	२५	"
८	"	८९	"	२०	"	१६	"
९	"	५७	"	२१	"	१८	"
१०	"	९८	"	२२	"	२०	"
११	"	१०३	"	२३	"	१८	"
१२	"	११२	"	२४	"	२१	"
१३	"	९०	"	२५	"	२०	"
१४	"	७७	"	२६	"	२७	"
१५	"	३८	"				

इस प्रकार वर्णिक-सम के ११३९, प्रकीर्णक वृत्त २४, दण्डक-वृत्त ६६ तथा अर्धसमवृत्त १५२ अर्थात् कुल १३८१ अवशिष्ट प्राप्त-छन्दों का इसमें संकलन है।

विषमवृत्त के भी सैंकड़ों छन्द और वृत्तालीय के प्रस्तार-भेद से अनेकों भेद प्राप्त होते हैं। जिनका संकलन इस सग्रह में समयाभाव से नहीं किया जा सका।

पृष्ठ परिशिष्ट—

वृत्तमौक्तिक में गाथा, स्कन्धक, दोहा, रोला, रसिका, काव्य और पद्य के प्रस्तार-भेद से भेदों के नाम एवं संक्षेप में लक्षण प्राप्त हैं किन्तु इनके उदाहरण प्राप्त नहीं हैं। ग्रन्थान्तरो में भी इनके उदाहरण प्राप्त नहीं हैं। केवल कविदर्पण में गाथा-भेदों के उदाहरण और वाग्बल्लभ में गाथा और दोहा-भेदों के लक्षणयुक्त उदाहरण प्राप्त होते हैं। अतः गाथा और दोहा-भेदों के स्वरूप का दिग्दर्शन कराने के लिये इस परिशिष्ट में वाग्बल्लभ से गाथा और दोहा-भेदों के लक्षण-युक्त उदाहरण उद्धृत किये हैं।

सप्तम परिशिष्ट—

इस परिशिष्ट में ग्रन्थकार चन्द्रशेखर भट्ट ने वृत्तमीक्षितक में छन्दों के प्रत्युदाहरण देते हुए जिन ग्रन्थकारों और ग्रन्थों के उद्धरण दिये हैं उनकी अकारानुक्रम से सूची दी है। कतिपय स्थलों पर 'अन्ये च' 'यथा वा' कह कर जो उद्धरण दिये हैं, उनका भी मैंने इस सूची में उल्लेख कर दिया है।

अष्टम परिशिष्ट—

इस परिशिष्ट में मैंने अनेक सूचीपत्रों के आधार से 'छन्द' शास्त्र के ग्रन्थ और उनकी टीकायें शीर्षक से ग्रन्थों की अकारानुक्रम से विस्तृत सूची दी है। इसमें ग्रन्थ का नाम, उसकी टीका, ग्रन्थकार एवं टीकाकार का नाम तथा यह ग्रन्थ कहा प्राप्त है या किस सूची में इसका उल्लेख है, संकेत किया है। शोध करने पर और भी अनेको ग्रन्थ प्राप्त हो सकते हैं। मैं समझता हूँ कि छन्द शास्त्रियों और शोधकर्त्ताओं के लिये यह सूची अवश्य ही उपादेय एवं मार्ग दर्शक सिद्ध होगी।

प्रति-परिचय

मूल ग्रन्थ का सम्पादन पाच प्रतियों के आधार से किया गया है जिसमें तीन प्रतियाँ प्रथम खण्ड की हैं और दो प्रतियाँ द्वितीय खण्ड की हैं। इन पाचों प्रतियों का परिचय इस प्रकार है—

वृत्तमीक्षितक, प्रथम खण्ड

१ क सज्ञक, आदर्श प्रति

अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर सख्या ५५२७

माप—२६ ५ cm × ११ ३ cm

पत्र सख्या ४१, पक्ति ७, अक्षर ३६

लखन-काल १८वीं शती का पूर्वाद्ध

शुद्धलेखन, शुद्धतम प्रति

२ ख सज्ञक प्रति

अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर सख्या ५५२८

माप—२५ २ cm × १० ६ cm

पत्र सख्या २३, पक्ति १०, अक्षर ४२

लेखन काल १६६० के लगभग, संभवतः लालमणि मिश्र की ही लिखी हुई है।

अपूर्ण प्रति। शुद्धलेखन, शुद्धतम प्रति

३ ग मञ्जक प्रति

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर सख्या ५८३

माप—२५ ८ cm × १० ७ cm

पत्र सख्या १० , पक्ति १८ , अक्षर ५६

लेखनकाल अनुमानत १८वीं शती का प्रथम चरण, लिपि सुन्दर है किन्तु अशुद्ध है ।

इसमें रचना और लेखन-प्रशस्ति नहीं है ।

वृत्तमौक्तिक द्वितीय खण्ड

१ क सञ्जक. आदर्श प्रति

अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर सख्या ५५३०

माप—२५ २ cm × १० ६ cm

पत्र सख्या १६६ ; पक्ति ७ , अक्षर ३६

लेखनकाल १६६० वि० लेखक—लालमनि मिश्र

लेखनस्थान—अर्गलपुर (आगरा)

शुद्धतम एवं सशोधित प्रति है । लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है—

“॥सवत् १६६० समये श्रावणवदि ११ रवौ शुभदिने लिखित शुभस्थाने अर्गलपुरनगरे लालमनिमिश्रेण । शुभम् । इद ग्रथसख्या ३८५० ।”

२ ख सञ्जक प्रति

अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर सख्या ५५२६

माप २६ ५ cm × ११ ३ cm

पत्रसख्या १६१, पक्ति ७, अक्षर ३६

लेखनकाल १८वीं शती का पूर्वार्द्ध

शुद्धलेखन, शुद्धप्रति लेखन प्रशस्ति नहीं है ।

दोनों टीकाओं की अद्यावधि एक-एक ही प्रति प्राप्त होने से उन्हीं के आधार से सम्पादन किया है । दोनों टीकाओं की प्रतियों का परिचय इस प्रकार है—

वृत्तमौक्तिक वार्त्तिकबुष्करोद्धार

टी० लक्ष्मीनाथ भट्ट

अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर सख्या ५५३३

माप २७ ५ cm × ११ ५ cm

पत्र संख्या ३८, पक्ति ७; अक्षर ३७
 लेखनकाल १६६० वि० लेखक - लालमनि मिश्र
 लेखन स्थान - अगलपुर (आगरा)
 शुद्ध एव सशोधित पूर्णप्रति एकमात्र प्रति
 लेखन-प्रशस्ति इस प्रकार है —

“॥ सवत् १६६० समये भाद्रपदशुदि ३ भौमे शुभदिने अगलपुरस्थाने लिखित
 लालमनिमिश्रेण । शुभ भूयात् । श्रीविष्णवे नम ॥”

वृत्तमौक्तिकदुर्गमबोध

टी० महोपाध्याय मेघविजय

महोपाध्याय विनयसागर सग्रह, कोटा, पोथी २३, पत्र ११

माप २५.५ cm × १०.७ cm

पत्रसंख्या १०, पक्ति २१; अक्षर ६०

लेखनकाल १८वीं शती टीकाकार - महोपाध्याय मेघविजय द्वारा
 स्वयं लिखित शुद्ध एव सशोधित एकमात्र प्रति पत्र २-५ तक
 प्रस्तार चित्र

सम्पादन-शैली

सम्पादन में प्रथम खण्ड की तीनों प्रतियों को क, ख, ग और द्वितीय-खण्ड की दोनों प्रतियों को क, ख, सज्ञा प्रदान की है ।

प्रथमखण्ड की ख सज्ञक प्रति और द्वितीयखण्ड की क सज्ञक प्रति एक ही व्यक्ति की लिखी हुई और प्रथमखण्ड की क सज्ञक और द्वितीयखण्ड की ख सज्ञक प्रति सम्भवत इसी प्रति की प्रतिलिपि हो, क्योंकि दोनों में अतीव सामोप्य होने से विशेष पाठ-भेद प्राप्त नहीं होते ।

दोनों खण्डों की क सज्ञक प्रति को मैंने आदर्श माना है और अन्य प्रतियों के पाठभेदों को मैंने टिप्पणी में पाठान्तर-रूप में दिये हैं । कतिपय स्थलों पर प्रतिलिपिकार के भ्रम से जो अश या पकितया क सज्ञक प्रति में छूट गई हैं वे ख सज्ञक प्रति से मूल में सम्मिलित कर दी गई हैं और कतिपय शब्द ख प्रति के शुद्ध होने से उसे मूल में रखकर क प्रति के पाठ को पाठान्तर में दे दिया है ।

ग्रथकार ने प्रत्युदाहरणों और नामभेदों में जिन ग्रथों का उल्लेख किया है उन ग्रथों के स्थान, सर्गसंख्या और पद्यसंख्या टिप्पणी में दी गई हैं और जिन प्रत्यु

दाहरणों के कही-कही पूर्णपद्य न देकर एक-एक चरण-मात्र दिये हैं उन्हें पूर्णरूप में टिप्पणी में दे दिये हैं ।

इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा-उपजाति, वशस्थविला-इन्द्रवशा-उपजाति और शालिनी-वातोर्मी-उपजाति के ग्रथकार ने १४-१४ भेद स्वीकार किये हैं किन्तु उनके नाम, लक्षण एव उदाहरण न होने से मैंने टिप्पणी में इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा-उपजाति और वशस्थविला-इन्द्रवशा-उपजाति के १४-१४ भेदों के नाम, लक्षण एव उदाहरण अन्य ग्रथों के आधार से दिये हैं तथा शालिनी-वातोर्मी-उपजाति एव रथोद्धता-स्वागता-उपजाति के टिप्पणी में लक्षणमात्र दिये हैं क्योंकि अन्य ग्रथों में इनके नाम और उदाहरण पूर्णरूप में मुझे प्राप्त नहीं हुये ।

कतिपय स्थलों पर लक्षण स्पष्ट न होने से एव उदाहरण न होने से मैंने टिप्पणी में लक्षणों को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है, साथ ही अन्य ग्रथों से प्राप्त उदाहरण भी दिये हैं । गद्यादि छंदभेदों के लक्षण और नाम टिप्पणी में देकर इन भेदों को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है ।

प्रतियो में छन्द के प्रारम्भ में कही 'अथ' का प्रयोग है और कही नहीं है, कही नाम के साथ 'वृत्त' या 'छन्द' का प्रयोग है और कही नहीं है तथा छन्द के अंत में केवल नाम ही प्राप्त है, किन्तु मैंने ग्रथ में एकरूपता रखने के लिये प्रारम्भ में 'अथ' और छन्द का नाम और अंत में 'इति' और छन्द नाम का सर्वत्र प्रयोग किया है । इसी प्रकार श्लोक-सख्या में भी एकरूपता की दृष्टि से मैंने प्रत्येक प्रकरण की श्लोक-सख्या पृथक् पृथक् दी है ।

गोविन्दविरुदाबली के पाठान्तर मैंने राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ग्रन्थाक २३४८० पत्र ८ पक्ति १६. अक्षर ४१ की प्रति से दिये हैं ।

पाठान्तर, टिप्पणियाँ और परिशिष्टों द्वारा मैंने यथासम्भव इस ग्रन्थ को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास किठा है किन्तु मैं इसमें कहाँ तक सफल हुआ हूँ इसका निराय तो एतद्विषय के विद्वान् ही कर सकेंगे ।

आभार प्रदर्शन—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के सम्मान्य सञ्चालक, मनीषी पद्मश्री मुनि श्री जिनविजयजी पुरातत्त्वाचार्य ने इस ग्रन्थ के सम्पादन का कार्य प्रदान कर मुझे जो साहित्य-साधना का अवसर दिया तथा प्रतिष्ठान के उप-संचालक, सम्माननीय श्री गोपालनारायणजी बहुरा, एम ए ने जिस आत्मीयता

के साथ समय-समय पर परामर्श एव सहयोग देकर कृतार्थ किया, उसके लिये मैं इन दोनों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ ।

श्री अग्रचन्दजी नाहटा के सत्प्रयत्न से अनूप सस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर के सरक्षक बीकानेर के महाराजा एव व्यवस्थापको ने वृत्तमौक्तिक की प्रतिया सम्पादनार्थ प्रदान की; अत मैं इन सब का आभारी हूँ ।

पो० श्री कण्ठमणिशास्त्री कांकरोली, श्री गगाधरजी द्विवेदी जयपुर, श्री भवरलालजी नाहटा कलकत्ता, डॉ० श्री नारायणसिंहजी भाटी एम ए, पी एच डी, सचालक राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर, श्रीबद्रीप्रसाद पचौली एम ए, एव इण्डिया ऑफिस लायब्रेरी, लन्दन, के व्यवस्थापक आदि ने परामर्श देकर एव ग्रन्थों की आद्यन्त-प्रशस्तिया भेज कर जो सहयोग प्रदान किया है उसके लिये मैं इन सब का उपकृत हूँ ।

मेरे परममित्र श्री लक्ष्मीनारायणजी गोस्वामी का अभिनन्दन मैं किन शब्दों में करूँ ! इस ग्रन्थ को शुद्ध एव श्रेष्ठ बनाने का सारा श्रेय ही इन्हीं को है ।

साधना प्रेस जोधपुर के सचालक श्री हरिप्रसादजी पारोक भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इसके मुद्रण में पूर्ण सहयोग दिया है ।

अन्त में, मैं अपने पूज्य गुरुदेव श्रीजिनमणिसागरसूरिजी महाराज का अत्यन्त ही ऋणी हूँ कि जिनकी कृपा और आशीर्वाद से आज मैं इस ग्रन्थ का सम्पादन करने योग्य बन सका ।

श्रीमती सन्तोषकुमारी जैन (मेरी धर्मपत्नी) के सहयोग और प्रेरणा से मैं इस कार्य में सलग्न रहा इसके लिये उसको भी साधुवाद ।

धानुष निवास, जोधपुर

—म विनयसागर

२४-५-६५

परिभाषिक-शब्द

शब्द	गण, कला-मात्रा	पृष्ठ- सख्या	पद्य- सख्या	शब्द	गण, कला-मात्रा	पृष्ठ- सख्या	पद्य- सख्या
अधिप	1 5 5	4	34	गजपति	1 5 1	4	31
अमृत	5 1 5	4	35	गजाभरण	1 1 5	3	28
अहि	1 5 1 5	3	18	गण्ड	5 1 1	4	32
अहिगण	5 1 1 1	3	20	गन्ध	1	4	32
अनन्द	5 1	3	24	गरुड पर्याय	5 1 5	4	35
इन्द्रासन	1 5 5	3	20	गुरुगुप्त	5 5	3	22
ऐरावत	1 5 5	4	34	गोपाल	1 5 1	4	31
कङ्कण	5	24	176	घग्ग	1 1 5 1 1	3	18
कनक	5	3	26	घाप	1 1 1 5	3	20
कनक	1	4	37	घामर	5	3	26
कमल	5 1 5 1	3	18	चित्त	5 1 2 5	3 5 2	3 5 2
कमल	1 1 5	3	28	चिर	1 5	3	23
कर	1 1 5	3	28	चिरालय	1 5	3	23
करतल	1 1 5	3	21	चिह्न	1 5	3	23
करताल	5 1	3	24	चूतमाला	1 5	3	23
कर्ण	5 5	3	21	जगण	1 5 1	4	38
कर्णपर्याय	5 5	3	30	जङ्गापुगल	5 1 1	4	32
कर्णसमान	5 5	3	22	जोहल	5 1 5	4	35
कलि	5 5 1 1	3	18	टगण	पञ्चमात्रा	2	15
काहल	1	4	32	ठगण	पञ्चमात्रा	2	15
कुच-पर्याय	1 5 1	4	31	डगण	घतुर्मात्रा	2	15
कुञ्जर-पर्याय	1 5 5	4	34	ढगण	त्रिमात्रा	2	15
कुण्डलर	5	3	26	णगण	द्विमात्रा	2	15
कुम्भीगुप्त	5 5	6 5	6 4	सगण	5 5 1	4	38
कुमुद	1 5 1 1	3	20	साटङ्क	5	4	37
"	1	80	20 4	साण्डय	1 1 1	3	25
केपूर	5	4	37	सात	5 1 1	4	32
ग	5			सारापति	1 5 5	4	34
गज	धनुर्मात्रा	4	36	सात	5 1	3	24

शब्द	गण बला-मात्रा	पृष्ठ- संख्या	पद्य- संख्या	शब्द	गण, बला मात्रा	पृष्ठ- संख्या	पद्य- संख्या
तुम्बुद	15	१६१	५२६	प्रहरणनामानि	पञ्चमात्रा	४	३६
तुम्हम	चतुर्मात्रा	४	३६	फणि	51	३	२६
तुपे-पर्याय	51	३	२४	घाण	1111	४	३३
तोमर	15	३	२३	घाण	1	४	३०
वण्ड	1	४	३७	बलभद्र	511	४	३२
बहन	511	४	३२	बाहु	115	३	२६
द्विजजाति	1111	४	३३	भागण	511	४	४०
द्विजवर	1111	४	३३	भामिनी-पर्याय	111	३	२५
धर्म	51111	३	१६	भाय	111	३	२५
घातु	11151	३	१६	भुजङ्ग	515	४	३५
ध्रुव	15111	३	१६	भुजबण्ड	115	३	२६
ध्वज	15	३	२३	भुजाभरण	115	३	२६
नगण	111	४	४०	मूपति	151	४	३१
नरेन्द्र-पर्याय	151	४	३१	मयण	555	४	३६
नायक	151	४	३१	मनोहर	55	३	२०
नारी	111	३	२५	मानस	5	३	२६
निर्याण	51	३	३४	मुग्धाभरण	5	३	२६
नूपुर	5	३	२६	मुनिगण	1111	४४	६३
पञ्जी	515	३३	६१	मृगोन्म	515	४	३५
पक्षिराज	515	५४	६४	मेघ	155	४	३४
पञ्चशर	1111	४	३३	मेघ	1	४	३७
पटह	51	३	२४	यक्ष	515	४	३५
पत्र	15	३	२३	यगण	155	४	३६
पदपर्याय	511	४	३२	रगण	515	४	३६
पदाति	चतुर्मात्रा	४	३६	रज्जु	151	४	३१
पयोधर	151	३	२१	रति	511	४	३२
परम	11	३	२७	रत्न	115	३	२६
पवन	15	३	२३	रथ	चतुर्मात्रा	४	३६
पवन	151	४	३१	रबन	155	४	३४
पाणि	115	३	२६	रस	15	३	२३
पापगण	11111	३	२०	रस	1	४	३०
पितामह	511	४	३२	रसना	5	३	२६
पुरुष	1	४	३०	रसलान	55	३	२०
प्रहरण	115	३	२६	रतिक्	55	३	२०

शब्द	गण, कला-मात्रा	पृष्ठ- सख्या	पद्य- सख्या	शब्द	गण, कला मात्रा	पृष्ठ- सख्या	पद्य- सख्या	
रूप		१	४	३८	शिल्लर	११११	४	३३
ल, लघु		१			शेखर	११५१	३	२०
लहलहित		५५	३	२८	शेष	११११५	३	१६
षक		५	३	२६	सगण	११५	४	३६
षञ्ज		११५	३	२६	सागर	५१	३	२४
षलय		१५	३	२३	सात्विकभाव	१११	३	२५
षलय		५	३	२६	मुनरेन्द्र	१५५	४	३४
षमुचरण		५११	३	२२	मुप्रिय	११	३	२७
षास		१५	३	२३	मुम तिलम्बित	१५५	३	२८
षिप्र		११११	३	२२	सुरतलता	५५	३	२८
षिराट्		५१५	४	३५	सुरपति	५१	३	२४
षिहण		५१५	४	३५	सूर्य	१५५१	३	१६
षीणा		५१५	४	३५	सूर्य	५१५	३	२०
शक		५१५	३	१६	हर	५५५	३	१६
शङ्ख		१	४	३८	हस्त	११५	३	२६
शब्द		१	४	३८	हस्तापुध-पर्याय	११५	३	३०
शर		१	४	३७	हार	५	४	३७
शशि		११५५	३	१६	हारावलि	५	३	२६
शालि		११११११	३	१६	होर	५५१	३	२०

॥१॥

॥१॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ युष्मान्यावुचिरत्तर्कविशेषितस्तत्त्वावि
 देकत्तकचेतयत्रचराचरत्तकमिदवाकितेतायत्तरमयज्जिह्वसुदरितभोतिव
 यतोयसिमन्पुनस्त्रीपतेपीहसक्रीतिवत्तदज्ञानसामानन्दकन्दमहः ॥ शश्वि
 भिकोदधीकरकलितपुर्वीवयमगीतस्वदृष्टास्त्रिच्यदीपविरतुनास्तिपुला
 तयायाराध्यश्रीपितृचरणसीवासुमतिनातदीयभिवागिसीविरचितपयर्गभ्यतद्
 ह्यम् ॥ श्रीलक्ष्मीनाथभट्टस्यप्रवृत्तनापदोक्तुजयाश्रीचन्द्रशेखरकविसुतदत्त
 किकम् ॥ श्रीमद्विगलनागोक्तद्वन्द्वचरणसुमहोदधि ॥ विश्वप्रसादीशभवन्म
 गोप्यद्वैतनिभ ॥ १॥ अलसा आहोतेकेचिद्वन्निमुद्रियकरिचिदत्तत्तनाकयभवतुवा

॥१॥

५७३
१

चंद्रशेखरी
विगलनाग
का
४१॥
३

करुविरवाभायवलत्तपरोपवम्याचन्द्रशेखरश्रुके ॥ ३३ ॥ इत्यालकारिकव
 किचुडमणिलक्ष्मणपरमाचापोकुललोपनिपत्रुह्याणवकाणधारश्रील
 क्ष्मीनाथभट्टात्मजकविशेखरश्रीचन्द्रशेखरभट्टविरचितश्रीदत्तमोक्तिकेपिदु
 लवार्तिकगात्रास्यप्रथमापरिलेद ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ एभमम् ॥ ॥ ॥

मगनामरि
४१॥

॥१॥

श्रीमन्मन्मन्मन् श्रीकृष्णाय नमः शिरदिव्यहमाजलमस्कालालकमलभ्यलश्या
 दाडाइयाविधायारवयती जलककस्याहिरुदेनेनायभसाइदशुगारीश सपयहमन हो
 भनिकरम् १-अनमशिवय मात्रहत्त सुक्ताप्रकोवइलक फण्डिभणितानिअथवउरोभ
 कृती वीहृन्सि कययतिस्फुट १ योमासाश्री मया श्रीमीमयाव श्री १अथर लरिनि
 यथा शमकुसु १ उतिकासरहत्त अथइसर तत्रसय गोवेत्कामभनागप्रोक्तपयथावदेक
 केलीतलम् कम् १ अथमरी नेगामरीदरत्यहीक्यासामापतानमास्तो॥मरी ५ अथसा रास
 वक्रनेविसाराप्रत्रायकाकत कालानर्गना न्यत्रा इदममु द्विलहतिमधुरिनि।प्रथाप्रतिप्रव १

नैडवेध
 री
 १९१७

योनिधिवोपासुद्रापीतिप्यातरम्।श्रीमल्लस्वामीनाथसकलाममपाराकने३७।या
 त्रिदिवसुतनेयविनयोपपत्तेश्रीचन्द्रमवरकेविकिलतत्प्रवध।विहृदमायभु
 विनह चैसैवसाधेएणिकतथ्यसहिजीवनदेतवेप्यथाश्रीरुतेमोक्तकमिदं
 स्मीनायेनहरितयत्रात्।जीयसाचन्द्रकजीचतुर्जीवलोकस्या॥७॥ १इत्या
 ोद्गमिक चकचडाभणिकाठदवत्रमस्त्रपरसाचार्यसकलोपनिषदुक्त्यासैव।
 नाकर्णधारपीनेस्मीनाथ।भाहाहाजकीवेवेगम्श्रीचन्द्रवैरवामदीवरिविह
 श्रीवृत्तेमोक्तिकेपिदुतवाक्तेकवर्णवहायोइतीय परिच्छेद ॥२॥समाप्तम्
 यवाक्तेकइतीयवर्ण ॥ यथसरवा १८५०२५३५॥ ॥शुभमस्तु॥

विमलका
 किंक
 धाम ५
 २२५

श्रीगणेशाय नमः प्रणम्य तद्गणेशं विम्बरिणाम् प्रीयंशु श्रीचन्द्रोत्तरकोटवर्तिके वृत्तमौ
 लिके ॥ १ ॥ अत्रः समांममानो चन्द्रो दिशदिदुक्ताया श्रीलक्ष्मीनाय भद्रं नृकरी क्रियते नमो
 ॥ २ ॥ अत्रान्तं कौन्सिकपणित्तं द्यौतु कार्यं मानाणा मुदिष्टमुच्यते । तत्र त्रयोदशविभेदभिन्ने
 उषद्धलप्रस्तापणोदिरद्विभेदपणित्तिलिकिताष्टोत्तरपृष्ठा । प्रथमप्रत्ययस्वरूपे तत्रको
 रमाह । सिद्धिंशुकेन । दद्यादिति । दद्यात्पूर्वगोकाचल्लक्षारुपरिणाम्यत् भयतः ॥ अत्रोक्तयुक्तं
 शीघ्रस्थित्यान्वितं पदयोक्तं ॥ ५ ॥ उच्चैर्गते श्वतयोकेमीत्रेदिष्टे विजानीयात् । तस्मिन्ना निवि
 तिरेपदपूर्वगोकाचल्लदद्यात् ॥ तत्र गालं चारुपण्यं चानुरोक्तं भयतः उपर्यधेयत्पार्थः ॥ अथपश्च

राम

॥ एकमात्रादिनिर्वाहकमात्रं ब्रह्मराजतत्रजातिमात्राप्रकीर्णप्रस्तारोद्गीर्णभेकाद्
 ॥ १ ॥ ॥ प्राम ॥ १११ ॥ ॥ समाक्षश्चायं वृत्तमौलिकवार्तिके दुक्तरादौ ॥ ॥ अथमस्त ॥ ॥
 गाराजायनमः ॥ ॥ संवत् १९२० समेय भारपुस्तुदि ३ भौमि सुभदिने अर्गलप्रस्थानेति
 लिङ्गमालमनिमिअण ॥ ॥ अथभूपात ॥ ॥ श्रीबिम्बरनमः ॥ ॥ ॥

रत्नमौलिक छेदे. येश ~~...~~

राम
३८
शरकैलत

कविशेखर-भट्टश्रीचन्द्रशेखरप्रणीतं

वृत्तमौक्तिकम्

प्रथमः खण्डः



प्रथमं गाथाप्रकरणम्

[मङ्गलाचरणम्]

युष्मान् पातु चिरन्तन किमपि तत्सत्य चिदेवात्मक,
प्रोत यत्र चराचरात्मकमिद वाक्चेतसोर्यत्परम् ।
यस्माद् विश्वमुदेति भाति च यतो यस्मिन्पुनर्लीयते,
यद्वित्त श्रुतिशान्तदान्तमनसामानन्दकन्द मह ॥ १ ॥
अमुष्मिन् मे दर्वो करकलितदुर्बोधविषमे,
मति छन्द शास्त्रे यदपि चरित नास्ति विपुला ।
तथाप्याराध्यश्रीपितृचरणसेवा^१ सुमतिना,
तदीयाभिर्वाग्मिर्विरचितपथे गम्यत इह ॥ २ ॥
श्रीलक्ष्मीनाथभट्टस्य पितुर्नत्वा पदाम्बुजम् ।
श्रीचन्द्रशेखरकविस्तनुते वृत्तमौक्तिकम् ॥ ३ ॥
श्रीमत्पिङ्गलनागोवत्छन्द शास्त्रमहोदधि ।
पितृप्रसादादभवन् मम गोप्यदसन्निभ^२ ॥ ४ ॥
अलसा प्राकृते केचिद् भवन्ति सुधिय इवचित् ।
तत्सन्तोषाय भवतु धार्तिक वृत्तमौक्तिकम् ॥ ५ ॥
यो नानाविधमात्राप्रस्तारात् सागर प्राप्य ।
गण्डमवञ्चयदतुल स हि नाग पिङ्गलो जयति ॥ ६ ॥

गुह्यधुस्मिति

दीर्घं सयुक्तपर परदान्तो वा विसर्गं चिन्दुयुत ।
स गुरवंको द्विकलो लघुरन्य शुद्ध एककल ॥ ७ ॥

यथा -

गौरीवर भस्मविभूषिताङ्ग, इन्दुप्रभाभासितभालदेशम् ।
गङ्गातरङ्गावलिभासमानमूर्द्धानिमानन्दितमानमामि ॥ ८ ॥
रेफहकारव्यञ्जनसयोगात् पूर्वसस्थितस्य भवेत् ।
वंकल्पिक लघुत्व वर्णस्योदाहरन्ति विद्वांस ॥ ९ ॥

यथा -

जयति प्रदीपितकामो मम मानसहृदनिमज्जनाश्रित्यम् ।
यस्य गलगरलदम्भान् मालिन्यमन्तरस्थित^१ लग्नम् ॥ १० ॥

विकल्पस्थिति

यद्यपि दीर्घं वर्णं जिह्वा लघु पठति भवति सोऽपि लघु ।
वर्णास्त्वरित पठितान् द्वित्रानेक विजानीत^२ ॥ ११ ॥

यथा -

अरे रे* ! कथय वार्त्ता दूति तस्यातिचित्रा
मम सविधमुपैव्यत्येष कृष्ण कदा नु ।
इति चट्टु कथयन्त्या राधिकाया तदानी
मति-डगमगदेह केशवोप्याऽऽविरासीत् ॥ १२ ॥

काव्यलक्षणेऽनिष्टफलवेदनम्

कनकतुला यद्वद्यहि सहते परमाणुवैपम्यम् ।
श्रवणतुला नहि तद्वच्छब्दोभङ्गेन वैपम्यम् ॥ १३ ॥
लक्षणविकल काव्य पण्डितससत्सु यो बुध पठति ।
हस्ताग्रलग्नखङ्गै कृत्त शीर्षं न जानाति ॥ १४ ॥

मात्राणां गणव्यवस्थाप्रस्तारश्च

रसबाणवेददहने पथाभ्या चैव सम्मिता मात्रा ।
येषां ते प्रस्ताराष्ट-ठ-ड-ढ गेत्येव सज्ञका प्रोक्ता ॥ १५ ॥
ट-त्रयोदशभेदा स्युरष्टौ भेदोऽष्टकारजा ।
इस्य भेदा पञ्च टस्य त्रयो ढावन्तिमस्य तु^३ ॥ १६ ॥
शुरो भ्राचस्याधो^४ लघुकमवधेहि प्रथमत-

स्तत दोषान् वर्णानुपरितनतुल्यान् घटयत^५ ।

१ क स भेत्तरस्थितं । अत स्थितमिति पाठ तमौखिक (सं०) । २ ग विजानीयान् ।

३ ग प्रथमस्य द्वयं स्मृतम् । ४. ग पूर्वोपाधो । ५ अ ग विरचय ।

*अत्र 'रे रे' इति सप्रपठनीये स्त ।

स्थले शून्ये तद्वद् घटय* गुरुमेवेति नियमो,

लघुं सर्वो वर्णो भवति पदमध्ये च शिशुका २ ॥ १७ ॥

मात्राप्रस्तारे खलु यावद्भिः स्यात् कलापूर्ति ।

तावन्तो गुरुलघवो देया इत्यनियम प्रोक्त ॥ १८ ॥

मात्रागणानां नामानि

हर-शशि-सूर्या शक्र शेषोप्यहि-कमल-घातृ-कलि-चन्द्रा ।

ध्रुव-धर्म-शालिसज्ञा पण्मात्राणां त्रयोदशैव भिदा ३ ॥ १९ ॥

इन्द्रासनमथ सूर्यश्चापो हीरश्च शेखर कुसुमम् ।

अहिगण-पापगणाविति पञ्चकलस्यैव सज्ञा स्युः ॥ २० ॥

गुरुयुग्मं किल कर्णो गुर्वन्तं करतलो भवति ।

गुरुमध्यमं पयोधर इति विज्ञेयस्तृतीयोऽपि ॥ २१ ॥

आदिगुरुर्वसुचरणो विप्रो लघुभिदचतुभिरेव स्यात् ।

इति हि चतुष्कलभेदा पञ्चैव भवन्ति पिङ्गलेनोक्ता ॥ २२ ॥

ध्वज-चिह्न-चिर-चिरालय-तोमर-पत्राणि चूतमाले च ।

रस-वास-पवन-वलया भेदास्त्रिकलस्य लघुकमालम्ब्य ॥ २३ ॥

करताल-पटह-ताला सुरपतिरानन्दतूर्यपर्याया ।

निर्वाण-सागरावपि गुर्वादित्रिकलनामानि ॥ २४ ॥

सात्विकभावास्ताण्डवनारीणां भामिनीनां च ।

नामानि यानि लोके त्रिलघुगणस्यैव तानि जानोत ॥ २५ ॥

नूपुर-रसना चामरं फणि मुग्धाभरण-वनक-कुण्डलकम् ।

वक्रो मानस-चलयो हारावलि रिति गुरोश्च नामानि ॥ २६ ॥

सुप्रिय-परमो कथितो द्विलघोरिति नाम सशेषात् ।

अथ कथयामि चतुष्कलनामान्यन्यानि पिङ्गलोक्तानि* ॥ २७ ॥

सुरतलता गुरुयुगलं वर्णसमानेन रसिध-रसलानी ।

सम्बन्ध-सुमति-मनोहर-सहस्रहितानां च नाम्नापि ४ ॥ २८ ॥

वर-पाणि-वमल-हस्ता प्रहरण भुजदण्ड-बाहु-रत्नानि ।

वय ५ गजभुजयोरेरप्यभरणं स्याच्चतुष्कले सज्ञा ॥ २९ ॥

वर्णपर्याया शब्दा गुरुयुगस्य वाचका ।

हस्तायुधस्य पर्याया गुर्वन्तस्यैव शेषका ॥ ३० ॥

१ ग. पुष रचय । २ श नियम । ३ ग भेद । ४ ल ग नामानि ।

५. ग वयो ।

* टि. इष्टस्य-शाहरदेवतम् । (परि० १. गाथा २१-२२) ।

भूपति-नायरु-गजपति-नरेन्द्र-कुचवाचका शब्दा ।
 गोपाल-रज्जु-पवना मध्यगुरोर्बोधका^१ ज्ञेया ॥ ३१ ॥
 दहन-पितामह-ताता पदपर्यायश्च गण्ड^२-वलभद्वी ।
 जङ्घायुगल रतिरित्यादिगुरी स्युश्चतुष्कले सज्ञा ॥ ३२ ॥
 द्विज-जाति-शिखर-विप्रा परमोपायेन^३ पञ्चशर-वाणी ।
 द्विजवर इत्यपि कथिता^४ लघुकचतुष्कले गणे सज्ञा ॥ ३३ ॥
 सुनरेन्द्राधिप-कुञ्जरपर्याया रदन-भेषयोश्चापि ।
 ऐरावत तारापतिरित्यादि लघोश्च पञ्चमात्रस्य ॥ ३४ ॥
 वीणा-विराट्-मृगेन्द्रामृत-विहगा गरुडपर्याया ।
 जोहल^५-यक्ष-भुजङ्गा मध्यलघो पञ्चमात्रस्य ॥ ३५ ॥
 विविधप्रहरणनामा पञ्चकल पिङ्गलेनोक्त ।
 गज-रथ-तुरङ्गम-पदातिसन्नक स्याञ्चतुर्मात्र ॥ ३६ ॥
 ताटङ्क-हार-नूपुर-केयूरकमिति भवन्ति गुरुभेदा ।
 शर-मेरुदण्ड कनक लघुभेदा इति विजानीत ॥ ३७ ॥
 शब्द रूप-रस गन्ध काहलं पुष्प शङ्ख-वाणनामभि ।
 सत्प्रबन्ध इह वृत्तमौक्तिके शायता लघुकनाम पण्डिता ॥ ३८ ॥

वर्णवृत्तानां गणसज्ञा

मस्त्रिगुरुरादिलघुको यगणो रगणश्च लघुमध्य ।
 अन्तगुरु सस्तगणोऽप्यन्तर्लघुमध्यगुरुको ज ॥ ३९ ॥
 आदिगुरुर्भगणोऽपि च नगणस्त्रिलघुर्मत सद्भि ।
 इति पिङ्गलप्रकाशित गणसज्ञा वर्णवृत्तानाम् ॥ ४० ॥

गणदेवता

पृथ्वी-जल शिलि-पवना गगन द्युमणीदु-पत्रगान् क्रमत^१ ।
 इत्यष्टौ गणदेवान् पिङ्गलकथितान् विजानीत ॥ ४१ ॥

गणानां मंत्रा

मगणस्त्रिलघू* मित्रे भृत्यो भयगणो स्मृती ।
 उदासीनो जतगणावरी रसगणो मती ॥ ४२ ॥

गणदेवानां फलाफलम्

मगणो प्रद्विकार्यं यगण सुखसम्पदो धत्ते ।
 रगणो ददाति रमण 'सगणो देशाद् विवासयति'^२ ॥ ४३ ॥

१ ग बोधिका । २ ग गण्ड । ३ ग परमोपासन । ४ ग नास्ति पाठ । ५ ग जोहल । ६ ल ग पृथ्वीजलशिलिकान्ता गगनं सप्तेश्य चन्द्रमा मात । ७ ग त्रिगुह । ८ * ग जगणो रजमादिपात्येव ।

*तगण शून्य^१ तनुते जगणो रुजमादधात्येव ।
 भगणो मङ्गलदायी नगण सकल फल दिशति* ॥ ४४ ॥
 इति पिङ्गलेन कथितो गणदैवाना फलाफलविचार ।
 ग्रन्थस्यादौ कविना बोद्धव्य सर्वथा यत्नान् ॥ ४५ ॥
 मित्रद्वयेन ऋद्धि स्थिरकार्यं भृत्ययोर्भवति ।
 मित्रोदास्ताभ्यामपि कार्याभावश्च बन्धोऽपि ॥ ४६ ॥
 मित्रारिभ्या वान्धवपीडा कार्यं च मित्रभृत्याभ्याम् ।
 भृत्याभ्यामुग्रो^२ऽमुख^३-मुदास्तभृत्यो धन हरते ॥ ४७ ॥
 भृत्योदासीनाभ्या भृत्यारिभ्या^४ च हाक्रन्द^५ ।
 अल्प कार्यमुदास्तान् मित्रात् सजायतेप्युदास्ताभ्याम् ॥ ४८ ॥
 सम्बन्धसम्बन्धं न भवत्युदास्तश्च न वैरिण^६ कुरुते ।
 शत्रोर्मित्रान्न फल स्त्रीनाश शत्रुभृत्ययोर्भवति ॥ ४९ ॥
 शत्रुदासीनाभ्या घननाश सर्वथा भवति ।
 शत्रुभ्या नायकमृतिरिति फलमफल गणद्वये कथितम् ॥ ५० ॥

मात्रोद्दिष्टम्

दद्यात् पूर्वयुगाङ्कान् लघोरुपरि गस्य तूभयत ।
 अन्त्याङ्क गुरुशीर्षस्थितान् वितुम्पेदथाङ्काश्च ॥ ५१ ॥
 उर्वरितैश्च^७ तथाङ्कमात्रोद्दिष्ट विजानीयात् ।

मात्रानष्टम्

अथ मात्राणा नष्ट यददृष्ट^८ पृच्छते रूपम् ॥ ५२ ॥
 यत्कलकप्रस्तारो लघव कार्याश्च तावन्त ।
 दत्त्वा पूर्वयुगाङ्कान् पृष्ठाङ्क^९ लोपयेदन्त्ये ॥ ५३ ॥
 उर्वरितोवरितानामङ्काना यत्र^{१०} लभ्यते भाग ।
 परमात्रा च गृहीत्वा स एव गुरुतामुपागच्छेत् ॥ ५४ ॥

वर्णोद्दिष्टम्

द्विगुणानङ्कान् दत्त्वा वर्णोपरि लघुशिर स्थितानङ्कान् ।
 एकेन पूरयित्वा वर्णोद्दिष्ट विजानीत ॥ ५५ ॥

* * ग प्रती - त्याजयति सोऽपि देव, तगण शून्यफल च विदधति ।

भगण भगणो दायी, नगणात् सर्व समीचीनम् ।

१ छ शून्य फलन विदधति । २ ख ग मरे । ३ क सल । ४ ग भृत्या
 विभ्या । ५ ग महाशब्द । ६ ग वैरिणा । ७ ग उर्वरितैश्च । ८ ग विद्विद्धि
 यत्र । ९ ग प्रशगाङ्क । १० ग नास्ति पाठ ।

वर्णनष्टम्

नष्टे पृष्ठे भाग कर्तव्य पृष्ठसख्याया ।
समभागे ल^१ कुर्यात् विपमे दत्त्वंकमानयेद् गुरुकम् ॥ ५६ ॥

वर्णमेह

कोष्ठानेकाधिकान् वर्ण^२ कुर्यादाद्यन्तयो पुन ।
एकाङ्कमुपरिस्थाङ्कद्वयैरन्यात् (न^३) प्रपूरयेत् ॥ ५७ ॥

वर्णमेहरय सर्वगुर्वादिगणवेदकम्^४ ।

प्रस्तारसख्याज्ञानञ्च फल तस्योच्यते बुधै ॥ ५८ ॥

वर्णपताका

दत्त्वा पूर्वयुगाङ्कान् पूर्वाङ्कैर्योजयेदपरान् ।
अङ्क पूर्व यो वं भूतस्तत पक्तिसञ्चार ॥ ५९ ॥

अङ्का पूर्व भूता येन तमङ्क भरणे^५ त्यजेत् ।

अङ्कश्च पूर्व य सिद्धस्तमङ्क नैव साधयेत् ॥ ६० ॥

प्रस्तारसरयया चैवमङ्कविस्तारकल्पना ।

पताका सर्वगुर्वादिवेदिकेय विशिष्य तु ॥ ६१ ॥

मात्रामेह

एकाधिककोष्ठाना द्वे द्वे पक्ती समे कार्ये ।
तासामन्तिमकोष्ठेष्वेकाङ्क पूर्वभागे तु ॥ ६२ ॥

एकाङ्कमयुक्पक्ते समपङ्क्ते पूर्वयुग्माङ्कम् ।
दद्यादादिमकोष्ठे यावत् पङ्क्ति प्रपूर्ति स्यात् ॥ ६३ ॥

आद्याङ्केन तदीयं शीर्षाङ्कैर्वामभागस्थै ।

उपरिस्थितेन कोष्ठ विपमाया पूरयेत् पक्ती ॥ ६४ ॥

समपक्ती कोष्ठानां पूरणमाद्याङ्कमपहाय ।

उपरिस्थाङ्कैस्तदुपरिसस्थैर्वामस्थितैरङ्कै ॥ ६५ ॥

मात्रामेहरय प्रोक्त पूर्वोक्तफलमागिति ।

मात्रापताका

अथ मात्रापताकाऽपि कथ्यते कवितुष्टये ॥ ६६ ॥

दत्त्वोद्दिष्टवदङ्कान् वामावर्तेन लोपयेदन्त्ये^६ ।

अवशिष्टो वं योऽङ्कस्ततो भवेत्^७ पक्तिसञ्चार ॥ ६७ ॥

एवंकाङ्कस्य लोपे तु ज्ञानमेकगुरोर्भवेत् ।

द्विन्यादीनां विलोपे तु पक्तिद्विन्यादिव्योधिनी ॥ ६८ ॥

१. ग सपु । २. ल वर्णान् । ३. ल ग वेदनम् । ४. ग भरण । ५. ग. अश्वे ।
६. ग नास्ति पाठ ।

द्व्ययस्यगुणलघुज्ञानम्

पृष्ठे वर्णच्छन्दसि कृत्वा वर्णास्तथा मात्राः ।
वर्णाङ्केन कलाया लोपे गुरवोऽवशिष्यन्ते^१ ॥ ६६ ॥

वर्णमकंटी

मकंटी लिख्यते वर्णप्रस्तारस्यातिदुर्गमा ।
कोष्ठमक्षरसंख्यातं^२ पंक्ती^३ रचय पट् तथा ॥ ७० ॥
प्रथमायामाद्यादीन् दद्यादङ्कांश्च सर्वकोष्ठेषु ।
अपरायां तु द्विगुणान् अक्षरसंज्ञेषु तेष्वेव ॥ ७१ ॥
आदिपंक्तिस्थितैरङ्कैर्विभाव्यापरपंक्तिगान् ।
अङ्कांश्चतुर्यपंक्तिस्थकोष्ठकानपि पूरयेत् ॥ ७२ ॥
^४पूरयेत् पष्ठ-पञ्चम्याव (म) द्वैस्तुर्याङ्कसम्भवंः ।
एकीकृत्य चतुर्यस्थ-पञ्चमस्थाङ्कान् सुधीः ॥ ७३ ॥
कुर्यात् पंक्तितृतीयस्थकोष्ठकानपि पूरितान् ।
वर्णानां मकंटी सेय पिङ्गलेन प्रकाशिता ॥ ७४ ॥
वृत्तं भेदो मात्रा वर्णा गुरवस्तथा च लघवोऽपि ।
प्रस्तारस्य^५ पठेते ज्ञायन्ते पंक्तितः क्रमतः ॥ ७५ ॥

मात्रामकंटी

कोष्ठान् मात्रासम्मितान् पंक्तिपट्कं^६,
कुर्यान् मात्रामकंटीसिद्धिहेतोः ।
तेषु द्वयादोनादिपंक्ति (का) वथाङ्कां-
स्त्यक्त्वाऽऽद्याङ्कं सर्वकोष्ठेषु दद्यात् ॥ ७६ ॥
दद्यादङ्कान् पूर्वयुग्माङ्कतुल्या-
स्त्यक्त्वाऽऽद्याङ्कं पक्षपंक्तावथाऽपि ।
पूर्वस्थाङ्कैर्भावयित्वा ततस्तान्,
कुर्यात् पूर्णाक्षेत्रपंक्तिस्थकोष्ठान् ॥ ७७ ॥
प्रथमे द्वितीयमङ्कं द्वितीयकोष्ठे च पञ्चमाङ्कमपि ।
हत्वा बाणद्विगुणं तद् द्विगुणं नेत्रतुर्ययोर्दद्यात् ॥ ७८ ॥
एकीकृत्य तथाङ्कान् पञ्चमपंक्तिस्थितान् पूर्वान् ।
दत्वा तथैकमङ्कं कुर्यात्तेनैव पञ्चमं^७ पूर्णम्^८ ॥ ७९ ॥

१. ग. विनिश्चयते । २. ग. सजातं । ३. ग. पंक्ति । ४. ग. पूरयत्पष्ठपञ्चम्या वेर्षः
५. ग. प्रस्तारश्च । ६. ग. पट्के । ७. ग. पञ्चमा । ८. ग. पूर्णम् ।

त्यक्त्वा पञ्चममङ्कं पूर्वोक्तानेव भावमापाद्य ।
 दत्त्वा तथैवमङ्कं पष्ठ^१ कोष्ठं प्रपूरयेद्^२ विद्वान् ॥ ८० ॥
 कृत्वैवय चाङ्कानां पञ्चमपक्तिस्थितानां च ।
 त्यक्त्वा पञ्चदशाङ्कं हित्वैकं पूरयेन् मुनेः^३ कोष्ठम् ॥ ८१ ॥
 एवं निरवधिमात्राप्रस्तारेष्वङ्कबाहुल्यात् ।
 *प्रकृतानुपयोगवशात् कृतोऽङ्कविस्तारः ॥ ८२ ॥
 एव पञ्चमपक्तिं कृत्वा पूर्णां च प्रथममेकाङ्कम्^४ ।
 दत्त्वा पञ्चमपक्तिस्थितैरथाङ्कैः प्रपूरयेत् पष्ठीम् ॥ ८३ ॥
 एकीकृत्य तथाङ्कान् पञ्चम-पष्ठस्थितान् विद्वान् ।
 कुर्याच्चतुर्थपक्तिं पूर्णां नागाज्ञया तूर्णम् ॥ ८४ ॥
 वृत्त प्रभेदो मात्राश्च वर्णा लघुगुरू तथा ।
 एते पट्पंक्तिनतः पूर्णप्रस्तारस्य विभान्ति वै ॥ ८५ ॥

नष्टादिफलम्

नष्टोद्विष्टं यद्वन् मेरुद्वितयं तथा पताका च ।
 मकंटीकाऽपि तद्वत् कौतुकहेतुनिबध्यते तज्ज्ञः ॥ ८६ ॥

प्रस्तारसंख्या

पङ्क्तिशक्तिः सप्तशतानि चैव,
 तथा सहस्राण्यपि सप्तपक्तिः ।
 लक्षानि^५ दृग्देवसुसम्मितानि,
 कोटश्चस्तथा रामनिशाकरैः स्युः ॥ ८७ ॥

१३४२१७७२६ समस्तप्रस्तारपिण्डसंख्या ।

एकाक्षरादिपङ्क्तिविकसितिवर्णान्तवर्णवृत्तानाम् ।
 उक्ताः समस्तसंख्या लक्ष्यन्ते जातयश्चार्याः^६ ॥ ८८ ॥

गाथाभेदाः

मुनिवाणकला गाथा विगाथापि तथा भवेत् ।
 वेदवाणकला गाह्यं^७ पष्ट्यो(यु)द्गाथा भवेत् पुनः ॥ ८९ ॥
 गाहिनी स्याद् द्विपष्ट्या तु मात्राणां सिद्दिनी तथा ।
 चतुःपष्ट्या चलाना तु स्कन्धक कथ्यते बुधैः ॥ ९० ॥

१. ग. मासि पाठः । २. ग. वै पूरयेद् । ३. ग. मासि पाठः । ४. ए. प्रकृतोपयोग-
 वशात् । ५. ग. एतेषु । ६. ए. य. लक्षानि पञ्चाशदष्टसंख्या, हीनाणि कोटयो मय-
 पविनतस्यः । ७. ग. य लक्षो जातयश्चार्याः । ए. चार्याः । ८. ग. बुधा ।

१ गाथा

प्रथमे द्वादशमात्रा मात्रा ह्यष्टादश द्वितीये तु^१ ।
 दहने द्वादशमात्रास्तुर्ये दशपञ्च सम्प्रोक्ता ॥ ६१ ॥
 इति गाथाया लक्षणमार्यासामान्यलक्षण चाऽयम् ।
 पठे जो वा विप्रो विपमे न हि जो गणाश्च गुर्वन्ता ॥ ६२ ॥
 सप्त हरय सहारा पठे रज्जुद्विजोऽपि वा भवति ।
 चरमदले लघु पठ विपमे पवनस्तु नैव स्यात् ॥ ६३ ॥

पथा-

गोकुलहारी मानसहारी वृन्दावनान्तसञ्चारी ।
 पमुन'कुञ्जविहारी गिरिवरधारी हरि पायात् ॥ ६४ ॥
 एकस्मात् कुलीना द्वाभ्यामप्यभिसारिका भवति ।
 नायकहीना रण्डा वेश्या बहुनायका भवति ॥ ६५ ॥

गाथाया, पञ्चविंशतिभेदा

सर्वस्या गाथाया मुनिवाणसमाख्यया कला ज्ञेया ।
 प्रथमे दले खरामैरपरेऽपि दलेऽश्वपक्षाभ्याम्^२ ॥ ६६ ॥
 नखमुनिपरिमितहारा वह्निमिता यत्र लघव स्यु ।
 सा गाथाना गाथा प्रथमा खान्यक्षरा लक्ष्मी ॥ ६७ ॥^३
 एकैकगुरुवियोगाल्लघुद्वयस्यापि सयोगात् ।
 अस्या भवन्ति भेदा शरपक्षाभ्या मित्ता एव ॥ ६८ ॥^४
 मुनिपक्षाभ्या हारा लघवो दहनैश्च स प्रथम ।
 विधुवाणैर्लघव स्युर्गुरवो दहनैश्च सोऽन्त्य स्यात् ॥ ६९ ॥
 त्रिंशद्वर्णा लक्ष्मी वदते सर्वेपण्डिता कवय ।
 नश्यत्येकैको यद्वर्णं कथयामि तानि नामानि ॥ १०० ॥^५
 लक्ष्मोऽर्द्धद्विबुद्धि^६ लंज्जा विद्या क्षमा च वै देही^७ ।
 गौरी घात्री चूर्णा^८ छाया कान्तिर्महामाया ॥ १०१ ॥
 कीर्ति सिद्धिर्मान्नी^९ रामा विश्वा च वासिता च मता ।
 शोभा हरिणी चक्री कुररी^{१०} हृसी च सारसी च मता ॥ १०२ ॥

१. ग ऽपि । २ ग प्रथमदले च लक्ष्मी श्वरपक्षाभ्या मित्ता एव । स श्वरपक्षाभ्याम् ।
 ३-४ ग पद्यत्रयं ६७ ६८ नास्ति । ५. ख ग. पद्यमक १०० नास्ति । ६ ग बुद्धि ।
 ७ ख ग देही च । ८ ग पूर्णा । ९ ग मान्नी । १० ग, कुरगी ।

इति भेदाभिधाः पित्रा रचितायामतिस्फुटम् ।

उदाहरणमञ्जुर्वा बोध्यतासामुदाहृतिः* ॥ १०३ ॥

इति गायः

२. विगाया

यस्या द्वितीयचरणे मात्राः शरभूमिभिः प्रोक्ताः ।

सैव विगाया तुयें चरणे वसुभूमिसंख्यकाश्च कलाः ॥ १०४ ॥

* टिप्पणी—भट्टलक्ष्मीनाथविरचिताया पिङ्गलप्रदीपाख्याया प्राकृतपिङ्गलवृत्ती गायच्छन्दसः सप्तविंशतिभेदाः—

१ लक्ष्मीः	२७ गुरु	३ लघु	३० अक्षर
२ ऋद्धिः	२६ गुरु	५ लघु	३१ अक्षर
३ बुद्धिः	२५ गुरु	७ लघु	३२ अक्षर
४ लज्जा	२४ गुरु	९ लघु	३३ अक्षर
५ विद्या	२३ गुरु	११ लघु	३४ अक्षर
६ क्षमा	२२ गुरु	१३ लघु	३५ अक्षर
७ देही	२१ गुरु	१५ लघु	३६ अक्षर
८ गौरी	२० गुरु	१७ लघु	३७ अक्षर
९ घात्री	१९ गुरु	१९ लघु	३८ अक्षर
१० चूला	१८ गुरु	२१ लघु	३९ अक्षर
११ छाया	१७ गुरु	२३ लघु	४० अक्षर
१२ कान्ति	१६ गुरु	२५ लघु	४१ अक्षर
१३ महामाया	१५ गुरु	२७ लघु	४२ अक्षर
१४ कीर्तिः	१४ गुरु	२९ लघु	४३ अक्षर
१५ सिद्धिः	१३ गुरु	३१ लघु	४४ अक्षर
१६ मानिनी	१२ गुरु	३३ लघु	४५ अक्षर
१७ राया	११ गुरु	३५ लघु	४६ अक्षर
१८ गाहिनी	१० गुरु	३७ लघु	४७ अक्षर
१९ विरवा	९ गुरु	३९ लघु	४८ अक्षर
२० वासिता	८ गुरु	४१ लघु	४९ अक्षर
२१ सोमा	७ गुरु	४३ लघु	५० अक्षर
२२ हरिणी	६ गुरु	४५ लघु	५१ अक्षर
२३ चक्री	५ गुरु	४७ लघु	५२ अक्षर
२४ सारसी	४ गुरु	४९ लघु	५३ अक्षर
२५ कुररी	३ गुरु	५१ लघु	५४ अक्षर
२६ तिही	२ गुरु	५३ लघु	५५ अक्षर
२७ हत्ती	१ गुरु	५५ लघु	५६ अक्षर

मध्येऽस्मिन् तिही-गाहिनीति द्वौ भेदौ नैव स्वीयते ।

यथा-

त्तरणितनूजातीरे चीरेऽपहृतेऽपि वीरेण ।
हिमनीरे रमणीनामकुटिलधारेव मनसि संजज्ञे ॥ १०५ ॥

इति विगाथा

३. गाहू^१

पूर्वाद्धे च पराद्धे सप्ताधिकविंशतिमात्राः ।
अर्द्धद्वयेऽपि यस्याः षष्ठी लः सैव गाहू स्यात् ॥ १०६ ॥

यथा-

अतिचटुलचन्द्रिकाञ्चितचञ्चलनवकुन्तलं किमपि ।
राधावितनुज^२वाधासाधारणमौषधं जयति ॥ १०७ ॥

यथा पा -

कलशीगतदधिचोरं रदजितहीरं स्फुरञ्चीरम् ।
राधावदनचकोर नन्दकिरोरं नमस्यामः ॥ १०८ ॥

इति गाहू ।

४. उद्गाथा

यस्या द्वितीयचरणे चतुर्थचरणे भवन्ति वै मात्राः ।
वसुविद्युसस्यायुक्ता. सोद्गाथा पिङ्गलेन सम्प्रोक्ता ॥ १०९ ॥

यथा -

उपवनमध्यादभिनवविलोकनासक्तराधिवावृष्णी ।
अन्योन्यगमनवेलामपेक्षमाणौ^३ न जग्मतुः क्वापि ॥ ११० ॥

इत्युद्गाथा

५. गाहिनो

यस्या द्वितीयचरणे वसुविधुमात्रा भवन्ति तुर्ये तु ।
पादे विंशतिमात्रा सा गाहिनिका तु सिहिनी विपरीता ॥ १११ ॥

यथा-

स जयति मुरलीवादनकेलिकलाभिर्विमोहयन् गोपीः ।

वृन्दावनान्तभूमौ रासरसाक्षिप्तविबुध^१विधिरुद्रमूलः ॥ ११२ ॥

इति गहिनी ।

६. सिहिनी

यस्या द्वितीयचरणे विशतिमात्रा मनोहराकारगुणाः ।

सा सिहिनी प्रदिष्टा नागाधिपपिङ्गलेन सम्प्रोक्ता ॥ ११३ ॥

यथा -

वन्देऽरविन्दनयनं वृन्दारकवृन्दवन्दितपदाम्भोजम् ।

नन्दानन्दनिधानं नवजलधरश्चिरमन्दिरारमणम् ॥ ११४ ॥

इति सिहिनी

७. अथ स्कन्धकम्

यस्य द्वितीयचरणे चतुर्यं चरणे च विशतिमात्राः स्युः ।

स स्कन्धक^२ इति कथितो यस्मिन्नष्टौ गणाश्चतुर्मात्राभिः ॥ ११५ ॥

यथा-

राधामुखाब्जतरणिः तरणिः संसारसागरोत्तरणविधौ ।

स जयति निजभक्तानां कामितदाता दुरन्तशक्तिसहायः ॥ ११६ ॥

स्कन्धकस्याऽऽष्टाविशतिभेदाः

नन्दो^३ भद्रः शिवः शेषः सारङ्ग-ब्रह्म-धारणाः^४ ।

वरुणो मदनो नीलः तालाङ्कः शेषरः शरः ॥ ११७ ॥

गगनं शरभो विमतिः शीरं नगरं नरः स्निग्धः ।

स्नेहलु-मदकल-भूपा^५ शुद्धः कुम्भः सरिः कलशः ॥ ११८ ॥

शशीति सप्तका भेदाः स्कन्धकस्य प्रकीर्तिताः ।

वमुपशमितास्ते स्युः गुरुह्यासाल्लवृद्धितः ॥ ११९ ॥

त्रिंशद्गुरवो यस्मिन् वेदा लघवश्च स प्रथमः ।

यसुप्तारलघवो यस्मिन् गुणत्रयं चैव सोऽन्त्यः स्यात् ॥ १२० ॥

१. ग. विबुध इति पाठो नास्ति । २. ग. स्कन्धं । ३. ग. भाद्रो । ४. ग. धारिण ।
५. ग. स्नेहलुकमलभूपासाः ।

वसुपक्षपरिमितानामुदाहृति स्वप्रबन्धे तु ।

एतेषामतिरुचिरा पितृचरणौ स्फुटतया प्रोक्ता ॥ १२१ ॥*

इति स्कन्धम् ।

इति धीवृत्तमौचित्ये वातिके^१ प्रथम गायप्रकरण समाप्तम् ।

१ ग नास्ति पाठ ।

*टिप्पणी—भट्टलक्ष्मीनाथविरचिताया विज्ञानप्रदीपाख्याया प्राकृतपिञ्जलवृत्तौ गुरुह्रास-सप्त-
वृद्धधनुपातेन स्कन्धकस्याष्टाविंशतिभेदा प्रदर्शितास्तद्यथा—

१ नन्द	३० गुरु	४ लघु	३४ अक्षर
२ भद्र	२६ गुरु	६ लघु	३५ अक्षर
३ दोष	२८ गुरु	८ लघु	३६ अक्षर
४ सारङ्ग	२७ गुरु	१० लघु	३७ अक्षर
५ शिव	२६ गुरु	१२ लघु	३८ अक्षर
६ ब्रह्मा	२५ गुरु	१४ लघु	३९ अक्षर
७ वारण	२४ गुरु	१६ लघु	४० अक्षर
८ वरुण	२३ गुरु	१८ लघु	४१ अक्षर
९ नील	२२ गुरु	२० लघु	४२ अक्षर
१० मदन	२१ गुरु	२२ लघु	४३ अक्षर
११ तालाङ्क	२० गुरु	२४ लघु	४४ अक्षर
१२ दोषर	१९ गुरु	२६ लघु	४५ अक्षर
१३ वार	१८ गुरु	२८ लघु	४६ अक्षर
१४ गगनम्	१७ गुरु	३० लघु	४७ अक्षर
१५ शरभ	१६ गुरु	३२ लघु	४८ अक्षर
१६ विमति	१५ गुरु	३४ लघु	४९ अक्षर
१७ क्षीरम	१४ गुरु	३६ लघु	५० अक्षर
१८ नगरम्	१३ गुरु	३८ लघु	५१ अक्षर
१९ नर	१२ गुरु	४० लघु	५२ अक्षर
२० स्निग्ध	११ गुरु	४२ लघु	५३ अक्षर
२१ स्नेह	१० गुरु	४४ लघु	५४ अक्षर
२२ मदकाल	९ गुरु	४६ लघु	५५ अक्षर
२३ भूपाल	८ गुरु	४८ लघु	५६ अक्षर
२४ मुद्ग	७ गुरु	५० लघु	५७ अक्षर
२५ सरित्	६ गुरु	५२ लघु	५८ अक्षर
२६ बुध्म	५ गुरु	५४ लघु	५९ अक्षर
२७ शतना	४ गुरु	५६ लघु	६० अक्षर
२८ धनी	३ गुरु	५८ लघु	६१ अक्षर

द्वितीयं पदपद-प्रकरणम्

१. दोहा

त्रिदशकला विषमे रचय सम एकादश धेहि ।
दोहालक्षणमेतदिति कविभिः कथितमवेहि ॥ १ ॥
टगण-डगण-ढगणाः क्रमत इति विषमे च पतन्ति ।
समपादान्ते चैककलमिति दोहां कथयन्ति ॥ २ ॥

यथा—

गोरीविचित्रतनुशकल मस्तकराजितगङ्गा ।
जय वृषभध्वज पुरमथन महादेव नि सङ्गः ॥ ३ ॥
दोहायाः त्रयोविंशतिभेदाः
यस्याः प्रथमतृतीये पादे जगणा भवन्ति सा कर्तुः^१ ।
स्वपञ्चगृहीतस्त्रीषद्^२ दोहादोषं प्रकाशयति ॥ ४ ॥
भ्रमर-भ्रामर-शरमाः श्येनो मण्डूक^३-मर्कटौ करभः ।
मदकल-ययोधर-चलाः नरो मराल^४स्तथा त्रिकलः ॥ ५ ॥
वानर-कच्छो मत्स्यः शार्ङ्गलोप्यहिवरो व्याघ्रः ।
उन्दुर-शुनक-बिडालाः सर्पश्चैते प्रभेदाः स्युः ॥ ६ ॥
रसपक्षवर्णयुक्तो द्वाविंशतिगुरुक-वेदलघुसहितः ।
कथितः प्रथमो भेदः गुरुगून्यः सर्वलघुकोऽन्त्यः ॥ ७ ॥^{*}
एकैकस्य गुरोर्लोपाल्लघुद्वयविवृद्धितः ।
दोहाभेदस्समुद्दिष्टास्त्रयोविंशतिसंख्यकाः ॥ ८ ॥
स्फुटतरमेते भेदाः समुदाहृत्य प्रदर्शिताः पित्रा ।
स्वनिदग्धे^५ कविवर्येस्तत एव विलोकनीयास्ते ॥ ९ ॥
इति दोहा ।

१. ग. कर्तुः । २. ग. ताषद् । ३. ग. सङ्गः । ४. ग. मरालः । ५. ग. पञ्चदश ९-७. नास्ति ।

*टिप्पणी—अट्टलक्ष्मीनापप्रणीते पिङ्गलप्रदीपे गुरुहास-त्रयुषुद्वयपुपातेन दोहा-द्विपञ्चदशः त्रयोविंशतिभेदानां वर्गीकरणम्—

१ भ्रमरः	२२ गुरु	४ सपु	२६ घसर
२ भ्रामरः	२१ गुरु	६ सपु	२७ घसर
३ शरमः	२० गुरु	८ सपु	२८ घसर

२. रसिका

द्विजवरयुगलमुपनय,
 दहनलघुकामिह रचय ।
 इति विधिशरभववदन-
 चरणमिह कुरु सुवदन ।
 इति हि रसिकमनुकलय,
 भुजगवर कथितमभय ॥ १० ॥

यथा -

जय जय हर वृषगमन,
 तरणिदहन विधुनयन ।
 नयनदहन जितमदन,
 निजशरकृतपुरकदन ।
 मम हृदयगतमपनय-
 मयिनयमधिकमपनय ॥ ११ ॥

४ श्येनः	१६ गुरु	१० लघु	२६ अक्षर
५ मण्डूकः	१८ गुरु	१२ लघु	३० अक्षर
६ मर्कटः	१७ गुरु	१४ लघु	३१ अक्षर
७ करमः	१६ गुरु	१६ लघु	३२ अक्षर
८ नरः	१५ गुरु	१८ लघु	३३ अक्षर
९ मरालः	१४ गुरु	२० लघु	३४ अक्षर
१० मदकलः	१३ गुरु	२२ लघु	३५ अक्षर
११ पयोधरः	१२ गुरु	२४ लघु	३६ अक्षर
१२ चलः	११ गुरु	२६ लघु	३७ अक्षर
१३ वानरः	१० गुरु	२८ लघु	३८ अक्षर
१४ त्रिकलः	९ गुरु	३० लघु	३९ अक्षर
१५ कच्छपः	८ गुरु	३२ लघु	४० अक्षर
१६ मत्स्यः	७ गुरु	३४ लघु	४१ अक्षर
१७ शार्दूलः	६ गुरु	३६ लघु	४२ अक्षर
१८ अहिवरः	५ गुरु	३८ लघु	४३ अक्षर
१९ व्याघ्र	४ गुरु	४० लघु	४४ अक्षर
२० बिडालः	३ गुरु	४२ लघु	४५ अक्षर
२१ शुनकः	२ गुरु	४४ लघु	४६ अक्षर
२२ उन्दुरः	१ गुरु	४६ लघु	४७ अक्षर
२३ सर्प	० गुरु	४८ लघु	४८ अक्षर

रसिकाया ऋष्टी भेदाः

यस्याश्चतुष्कलद्वयमादौ स्यात् पुनरपि विकलः ।

एवं पट्टपदयुक्ता या सौककच्छा^१ भुजङ्गमप्रोक्ता ॥ १२ ॥

अत्र लघुयुगवियोगादेर्कैकगुरोश्च संयोगात् ।

ऋष्टी भवन्ति भेदाः शोपाः स्पुर्दण्डकन्यायात् ॥ १३ ॥

रसिका हंसी रेखा तालाङ्का कम्पनी च गम्भीरा ।

काली कलद्राणी इत्यष्टौ भेदनामानि ॥ १४ ॥

उदाहरणमञ्जयामुदाहृतिरतिस्फुटाः ।*

एतेषामपि भेदानां द्रष्टव्या कविपण्डितैः^२ ॥ १५ ॥

इति रसिका

३. रोसा

या चरणे कलानां चतुरधिकविंशैर्गदिता,

सा किल रोसा भवति नागकविपिङ्गलकथिता ।

एकादशकलविरतिरखिलजमचिन्ताहरणा,

सुललितपदकुलकलितविमलकविकण्ठाभरणा ॥ १६ ॥

यथा-

अरिगणमभितापयति विबुधलोकानुपगच्छति,

धरणिविवरगतभुजगनिकरमभितापेन चर्षति ।

सकलदिगीशपुरमभिनिजतापैरभियोजयति,

भूप कथं प्रतापस्तव^३ कीर्त्ति न शोषयति ॥ १७ ॥

१. ग. दासो कृच्छा । ख. या सा कच्छो । २. ग. केषिव् पण्डितैः । ३. ग. प्रस्तावस्तव ।

* टिप्पणी—भट्टलक्ष्मीनाथप्रणीते पिङ्गलप्रदीपे गुरुवृद्धि-लघुह्लासानुक्रमेण रसिकाया ऋष्टी भेदाः—

१ रसिका	६६ लघु	० गुरु	६६ मात्रा
२ हंसी	६४ लघु	१ गुरु	" "
३ रेखा	६२ लघु	२ गुरु	" "
४ तालाङ्कनी	६० लघु	३ गुरु	" "
५ कम्पनी	५८ लघु	४ गुरु	" "
६ गम्भीरा	५६ लघु	५ गुरु	" "
७ काली	५४ लघु	६ गुरु	" "
८ कलद्राणी	५२ लघु	७ गुरु	" "

रोलायाः त्रयोदशभेदाः

कुन्दः करतल-मेघौ तालाङ्को रुद्र-कोकिलौ कमलम् ।
 इन्दुः शम्भुश्चमरो गणेश-शेषौ सहस्राक्षः ॥ १८ ॥
 त्रयोदशगुरुर्यत्र सप्ततिर्लघवस्तथा ।
 स आद्यभेदो^१ विज्ञेयस्सोऽन्त्य एकगुरुर्यतः ॥ १९ ॥
 एकैकस्य गुरोर्नाशा^२ लघुद्वयनिवेशतः^३ ।
 भेदास्त्रयोदश ज्ञेया रोलायाः^४ कविशेखरैः ॥ २० ॥
 त्रयोदशैव भेदानामुदाहृतिरुदीरिता ।
 उदाहरणमञ्जर्या^५ द्रष्टव्या तत एव हि ॥ २१ ॥

इति रोला ।

५. गन्धानकम्

रचय प्रथमं पदं मुनिविधुवर्णरचितं,
 तथा द्वितीयमपि वसुविधुवर्णैर्मकचितम्^६ ।
 तथान्यदलमपि यतिगणनियमरहितं,
 गन्धानकवृत्तमवधेहि कविपिङ्गलगदितम् ॥ २२ ॥

१. ग. आदिभेदो । २. ग. ह्यत्तात् । ३. ग. विवृद्धितः । ४. ग. रोलायां ।
 ५. ग. यत्तम् ।

* टिप्पणी—भट्टलक्ष्मीनाथप्रणीते पिङ्गलप्रदीपे रोलायाः त्रयोदशभेदानां गुह्यहास-
 लघुवृद्धधनुसारेण प्रदर्शनम्—

१ कुन्दः	१३ गुरु	७० लघु	६६ मात्रा
२ करतलः	१२ गुरु	७२ लघु	" "
३ मेघ.	११ गुरु	७४ लघु	" "
४ तालाङ्क	१० गुरु	७६ लघु	" "
५ कालरुद्रः	९ गुरु	७८ लघु	" "
६ कोकिलः	८ गुरु	८० लघु	" "
७ कमलम्	७ गुरु	८२ लघु	" "
८ इन्दुः	६ गुरु	८४ लघु	" "
९ शम्भुः	५ गुरु	८६ लघु	" "
१० चामरः	४ गुरु	८८ लघु	" "
११ गणेशवरः	३ गुरु	९० लघु	" "
१२ सहस्राक्षः	२ गुरु	९२ लघु	" "
१३ शेषः	१ गुरु	९४ लघु	" "

यथा-

लक्ष्मण दिशि दिशि विलसति घनमनु शम्पा,
 इयमपि चञ्चलतरङ्गचलजलरुहपम्पा ।
 दयितोदन्त सम्प्रति^१ कथमपि न ह्यवगत,
 सोढ शक्यो विरह कथमिह हि मयकानुगत^२ ॥ २३ ॥

यथा वा-

गर्जति जलघर परिनृत्यति शिखिनिवह,
 नोपवनीमवधूय वहति दक्षिणगन्धवह ।
 दूरे दयित कथय सखि ! किमिह हि^३ करवे,
 प्रज्वालय दहन कटिति^४ शलभमनुकरवे ॥ २४ ॥

इति गन्धानकम् ।

५ चौपैया छ व

चौपैया छन्द कविकुलचन्द्र कथयति पिङ्गलनाग,
 कुरु सप्तचतुष्कलगणमिह पुष्कलमधिगुरुचरणविभाग ।
 इह दिग्बसुसूर्ये पण्डितवर्यैर्यैतिरिह मात्रास्त्रिशत्,
 यस्मिन् किल^५ कथिते कविजनमयिते राजति नृपवरससत् ॥२५॥
 या विशत्यधिकशतैर्मात्राणामेकपादेषु ।
 सा चौपैया न्यस्यादशीत्यधिकशतचतुष्टयकलाका ॥ २६ ॥

यथा-

चेत स्मरमहित कमलासहित दारितदारुणकस,
 हृतधेनुकदानवमिच्छामानवमृपिजनमानसहसम् ।
 यमुनावरतीरे तरलसमीरे कारितगोपीरास,
 भवबाधाहरण राधारमण कुन्दकुमुमसमहासम् ॥
 व्रजजबकुलपाल लालितवाल वादितमृदुरववश,^६
 रोचनयुतभाल धृतवनमाल शोभिततरलवतसम् ।
 दितिजव्रजकाल वादितताल कृतसुरमुनिगणशस,
 रुचिकलिततमाल जितधनजाल भासितथादययशम् ॥
 सरसीरुहगयन जयतामयन षष्ठतलस्थितहार,
 धृतगोपमुषेप कुञ्चितकेश स्मितजितनयधनसारम् ।

१ ग दयितोदन्तमिश्रणी । २ ए ग न सहनमिह कुर्वन् मरणं क्षरणमनुगत । ३ ग कारितं वाक्यं । ४ ए ग भटिति । ५ ग कस । ६ ग मृदुरववश ।

जितनयनचकोरं नन्दकिशोर गोपीमानसधोरं,
 कृतराधाधारं सञ्जनतारं दितिसुतनशकठोरम् ॥
 नवकलितकदम्बं जगदवलम्ब सेवितयमुनातीरं,
 नन्दितसुरवृन्दं जगदानन्द गोपीजनहृतचीरम् ।
 धृतधरणीवलय करुणानिलय दन्तबिनिर्जितहीरं,
 भवसागरपारं भुवनागारं नन्दसुत यदुवीरम् ॥ २७ ॥

इति षोडश्या

६. घत्ता

पिङ्गलकविकथिता त्रिभुवनविदिता घत्ता द्विरसकला भवति ।
 कुरु सप्तचतुष्कल-मन्त्रात्रकल-त्रिलघुकमेतदपि द्विपदि ॥ २८ ॥
 प्रथम दशसु यतिः स्याद् वसुमात्राभिद्वितीयाऽपि ।
 दहनावनिभिः पुनरपि यतिरिह(य)मेकाद्वंघत्तायाः ॥ २९ ॥

घत्ता-

भववाधाहरण राधारमण नन्दकिशोर स्मर हृदय ।
 यमुनायास्तीरे तरलसमीरे कृतमनुराम त्वमनुसर^१ ॥ ३० ॥

इति घत्ता ।

७. घत्तानन्दम्

अहिपतिपिङ्गलकथितमयुतगुणयुतमिह भवति घत्तानन्दम् ।
 यद्येकादशविरतिर्मुनिषु च भवति यतिरधिकजनितानन्दम् ॥ ३१ ॥
 आदौ षट्कलमिह रचय डगणत्रयमिह धेहि ।
 ठगण डगण द्वयमपि घत्तानन्दे धेहि ॥ ३२ ॥

घत्ता^२-

दितिसुतनिवहगञ्जनमसुखमञ्जनमनुगतजनतापहरणम् ।
 निखिलमानसरञ्जनमतिनिरञ्जनमस्तु किमपि महः शरणम् ॥ ३३ ॥

इति घत्तानन्दम्

८[१] काव्यम्

अथ षट्पदहेतुत्वात् काव्य सम्यङ् निरूप्यते ।
 लक्ष्यलक्षणसयुक्तं प्रोल्लाल^३ सप्रभेदकम् ॥ ३४ ॥

१. घ. तमनुसर । २. घ. तद्वध्या । ३. छ. घ. प्रोल्लासम् । उल्लासस्थाने
 छ. घ. प्रती सर्वत्रापि उल्लासं विद्यते ।

टगणमिहादौ कलय जलधिकलत्रयमनु च कुरु ।
 टगण चान्ते रचय दहनयुतविप्र ज कुरु ॥ ३५ ॥
 एकादशकलविरतिरथ दहनविधुभिरपि भवति ।
 काव्य भुजगकविरिति बुधजनसुखकरमनुवदति ॥ ३६ ॥

यथा-

मुकुटविराजितचन्द्र चन्द्रकलोपमतिलकवर,
 तिलकदहनवरनयन नयनजितमदनमनोहर ।
 अमरनिकरकृतमनन मनननिरवधिकरुणाकर,
 करधृतमनुजकपाल विबुधजनतिमिरविभाकर ॥ ३७ ॥

६. उल्लालम्

आदौ त्रयस्तुरगास्तदनु त्रिकलो रसस्तथा तुरग ।
 त्रिकलश्चान्ते यस्मिन्ललाल त विजानीयात् ॥ ३८ ॥
 पट्पदवृत्त द्वाभ्या वृत्ताभ्या जायते यस्मात् ।
 काव्योल्लालौ तस्मान्निरूपितौ वृत्तमौखिके स्फुटत ॥ ३९ ॥
 प्रस्तारस्तु द्विधा प्रोक्तौ गुरुलघ्वादिभेदत ।
 अत्र लघ्वादिभेदेन प्रस्तारपरिकल्पना ॥ ४० ॥
 चतुरधिका इह चत्वारिंशद् गुरवो भवन्ति काव्येऽस्मिन् ।
 यद् गुरुहीन वृत्त शक्र तन्नामतो वृत्तम् ॥ ४१ ॥

यथा -

अभिनवजलधरपटलसदृशतर कनकवसनधर,
 परिणतशशधरवदन समरविधिकरणचतुरतर ।
 अविरतवितरणनिपुण सकलरिपुकुलवनकरिवर,
 विदलितगजदलतुरग विगतभय जय जय यदुधर ॥ ४२ ॥

काव्यस्य पञ्चचत्वारिंशद्भेदा

यथा यथाऽस्मिन् वलयो विवर्द्धते,
 तथा तथा नाम विधिविधोयत्ताम् ।
 पठन्तु १ सम्भु प्रथम ततो बुधा,
 भूङ्ग तदन्ते श्रुतियुग्मसम्भवम् ॥ ४३ ॥

आदाय गुरुविहीन शक्र भेदान् बुधा पठत ।
 इन्द्रियवेदंगितान् नागाधिपपिङ्गलप्रोक्तान् ॥ ४४ ॥
 अथ लघुयुग्मविलोपा'देकैकगुरोर्विवृद्धित क्रमशः ।
 बाणाम्बुधिपरिगणिता भेदा सम्यक् प्रदर्शयन्ते ॥ ४५ ॥

षष्ठा-

शक्र शम्भु सूर्यो गण्ड स्कन्धस्तथा विजय ।
 तालाङ्क-दर्प-समरा सिंह शेषस्तथोत्तेजा ॥ ४६ ॥
 प्रतिपक्ष परिधर्मो मराल-दण्डी मृगेन्द्रश्च ।
 मर्कट-मदनो राष्ट्रो वसन्त-कण्ठी मयूरोऽपि ॥ ४७ ॥
 बन्धो भ्रमरोऽपि तथा भिन्नोऽय स्यान्महाराष्ट्र ।
 बलभद्रोऽपि च राजा बलितो रामस्तथा च मन्थान ॥ ४८ ॥
 मोहो बली तत स्यात् सहस्रनेत्रस्तथा बालः ।
 दृप्त शरभो दम्भो दिवसोद्गम्भी तथा च बलिताङ्क ॥ ४९ ॥
 तुरगो हरिणोऽप्यन्धो भृङ्गश्चैते प्रसख्याताः ।
 वास्तुकारये ह्यदसि बाणाम्बुधिभिर्मिता भेदा ॥ ५० ॥
 पादे यत्यनुरोधात् तृतीयजगणानुरोधाच्च ।
 वेदाङ्कलघुकयुक्तश्चन्द्रगुरुर्यं स आद्य स्यात् ॥ ५१ ॥
 शरवेदमिता भेदा काव्यवृत्तस्य दर्शिता ।
 उदाहरणमञ्जर्या बोध्यन्तेपामुदाहृति ॥ ५२ ॥*

इति काव्यम् ।

१ ग हासाद ।

टिप्पणी - भट्टलक्ष्मीनाथप्रणीते पिङ्गलप्रदीपे काव्यवृत्तस्य गुरुवृद्धि-लघुह्रासक्रमेण पञ्च-
 चत्वारिंशद्भेदाना वर्गीकरणम्—

१ शक्र	० गुरु	६६ लघु	६६ अक्षर
२ शम्भु	१ गुरु	६४ लघु	६५ अक्षर
३ सूर्य	२ गुरु	६२ लघु	६४ अक्षर
४ गण्ड	३ गुरु	६० लघु	६३ अक्षर
५ स्कन्ध	४ गुरु	५८ लघु	६२ अक्षर
६ विजय	५ गुरु	५६ लघु	६१ अक्षर
७ दर्प	६ गुरु	५४ लघु	६० अक्षर
८ तालाङ्क	७ गुरु	५२ लघु	५९ अक्षर
९ समर	८ गुरु	५० लघु	५८ अक्षर
१० सिंह	९ गुरु	४८ लघु	५७ अक्षर

११ शेषः	१० गुरु	७६ लघु	८६ अक्षर
१२ उत्तेजाः	११ गुरु	७४ लघु	८५ अक्षर
१३ प्रतिपक्षः	१२ गुरु	७२ लघु	८४ अक्षर
१४ परिधर्मः	१३ गुरु	७० लघु	८३ अक्षर
१५ मरालः	१४ गुरु	६८ लघु	८२ अक्षर
१६ मृगेन्द्रः	१५ गुरु	६६ लघु	८१ अक्षर
१७ दण्डः	१६ गुरु	६४ लघु	८० अक्षर
१८ मर्कटः	१७ गुरु	६२ लघु	७९ अक्षर
१९ मदनः	१८ गुरु	६० लघु	७८ अक्षर
२० महाराष्ट्रः	१९ गुरु	५८ लघु	७७ अक्षर
२१ वसन्तः	२० गुरु	५६ लघु	७६ अक्षर
२२ वृषः	२१ गुरु	५४ लघु	७५ अक्षर
२३ मयूरः	२२ गुरु	५२ लघु	७४ अक्षर
२४ बन्धः	२३ गुरु	५० लघु	७३ अक्षर
२५ अमरः	२४ गुरु	४८ लघु	७२ अक्षर
२६ द्वितीयो महाराष्ट्रः	२५ गुरु	४६ लघु	७१ अक्षर
२७ बलमद्रः	२६ गुरु	४४ लघु	७० अक्षर
२८ राजा	२७ गुरु	४२ लघु	६९ अक्षर
२९ बलितः	२८ गुरु	४० लघु	६८ अक्षर
३० रामः	२९ गुरु	३८ लघु	६७ अक्षर
३१ मन्वानः	३० गुरु	३६ लघु	६६ अक्षर
३२ बली	३१ गुरु	३४ लघु	६५ अक्षर
३३ मोहः	३२ गुरु	३२ लघु	६४ अक्षर
३४ सहस्राक्षः	३३ गुरु	३० लघु	६३ अक्षर
३५ बालः	३४ गुरु	२८ लघु	६२ अक्षर
३६ दुप्लः	३५ गुरु	२६ लघु	६१ अक्षर
३७ धारमः	३६ गुरु	२४ लघु	६० अक्षर
३८ दम्भः	३७ गुरु	२२ लघु	५९ अक्षर
३९ अहः	३८ गुरु	२० लघु	५८ अक्षर
४० उद्दम्भः	३९ गुरु	१८ लघु	५७ अक्षर
४१ बलितार्द्रः	४० गुरु	१६ लघु	५६ अक्षर
४२ गुरङ्गः	४१ गुरु	१४ लघु	५५ अक्षर
४३ हरिणः	४२ गुरु	१२ लघु	५४ अक्षर
४४ धन्वः	४३ गुरु	१० लघु	५३ अक्षर
४५ भृङ्गः	४४ गुरु	८ लघु	५२ अक्षर

१०. षट्पदम्

षट्पदवृत्तं कलय सरसकविपिङ्गलभणितं ,
 एकादश इह विरतिरय च दहनैर्विधुगणितम् ।
 षट्कलमादौ तदनु चतुस्तुरग परिसतनु ,
 शेषे द्विकल रचय चतुष्पदमेवं सचिनु ॥
 उल्लालद्वयमत्र हि भवेदष्टाविंशतिकलयुतम् ।
 यदि षड्चदशे विरतिस्थितं षठ्नादपि गुणिगणहितम् ॥ ५३ ॥
 दहनगणनियमविरहितकाव्यं सोल्लालचरणयुगलेन ।
 कथयति पिङ्गलनागः षट्पदवृत्तं मनोहारि ॥ ५४ ॥

पद्या-

जय जय नन्दकुमार भारसुन्दर वरलोचन ,
 लोचनजितनवकज कञ्जनिभशय भवमोचन ।
 नूतनजलधरनील शीलभूषित गतदूषण ,
 दूषणहर घृतभाल भालभूषितवरभूषण ॥
 दूषणगणमिह^१ मम निखिलमपि कुरु दूरे नन्दकिशोर ।
 तव चरणकमलयुगलमनुदिनमनुमेवे नयनचकोर ॥ ५५ ॥

षट्पदवृत्तस्यैकसप्ततिर्भेदाः ।

वेदयुग्मगुरुन् काव्यादुल्लालाद् रसपक्षकान् ।
 श्रादाय तस्य स्थाने तु लघुद्वयनिवेशतः^२ ॥ ५६ ॥
 भेदाः स्युर्भूमिमुनिभिर्गृहीत्वान्त्य तु सर्वलम् ।
 श्रावस्तु रविलो विन्दुर्मुनिग सोऽजयः स्मृत ॥ ५७ ॥
 विजय-बलि-कर्ण-धीरा वैताल-बृहन्नरी मवर्कः ।
 हरि-हर-विधीन्दु-चन्दन-शुभङ्कराः श्वा च सिंहश्च ॥ ५८ ॥
 शार्ङ्ग-ल-कूर्म-कोकिल-खर-कुञ्जर-मदन-मत्स्य-तालाङ्का ।
 शेषः सारङ्गोऽपि च पयोधरः कुन्द-कमले च ॥ ५९ ॥
 वारण-जङ्गम-शरभास्तथा द्युतीष्टोऽपि दाता च ।
 शर-मुशर-समर-सारस-शारद-मद-मदकरा मेरुः ॥ ६० ॥
 सिद्धिर्बुद्धिः करतल-कमलाकर-धवल-मानस-ध्रुवकाः ।
 कनक कृष्णो रुञ्जन-मेघकर-ग्रीष्म-गरुड-शशि-सूर्याः ॥ ६१ ॥

शाल्यो नवरङ्ग-मनीहरो गगन-रत्न-नर-हीराः ।

भ्रमरः शोखर-कुसुमाकरो ततो दीप्त-शख-वसु-शब्दाः ॥ ६२ ॥

इति भेदाभिधा. पित्रा रचितायामपि स्फुटम् ।

उदाहरणमञ्जर्यामुक्तं तासामुदाहृतिः* ॥ ६३ ॥

इतिपङ्कपदम् ।

* टिप्पणी—मट्टलक्ष्मीनाथप्रणीते पिङ्गलप्रदीपे पट्पदच्छन्दसः, गुरुहास-लघुट्टिद्विपरिपाठया
एकसप्ततिभेदानामुदाहरणानि—

१ अजय	७० गुरु	१२ लघु	८२ अक्षर
२ विजयः	६९ गुरु	१४ लघु	८३ अक्षर
३ बलिः	६८ गुरु	१६ लघु	८४ अक्षर
४ कर्णः	६७ गुरु	१८ लघु	८५ अक्षर
५ वीरः	६६ गुरु	२० लघु	८६ अक्षर
६ वैतालः	६५ गुरु	२२ लघु	८७ अक्षर
७ बृहन्नलः	६४ गुरु	२४ लघु	८८ अक्षर
८ मर्कटः	६३ गुरु	२६ लघु	८९ अक्षर
९ हरिः	६२ गुरु	२८ लघु	९० अक्षर
१० हरः	६१ गुरु	३० लघु	९१ अक्षर
११ अह्या	६० गुरु	३२ लघु	९२ अक्षर
१२ इन्दुः	५९ गुरु	३४ लघु	९३ अक्षर
१३ अन्दनम्	५८ गुरु	३६ लघु	९४ अक्षर
१४ गुमद्वरः	५७ गुरु	३८ लघु	९५ अक्षर
१५ कषा	५६ गुरु	४० लघु	९६ अक्षर
१६ सिंहः	५५ गुरु	४२ लघु	९७ अक्षर
१७ दार्दूलः	५४ गुरु	४४ लघु	९८ अक्षर
१८ भ्रमः	५३ गुरु	४६ लघु	९९ अक्षर
१९ कौविसः	५२ गुरु	४८ लघु	१०० अक्षर
२० क्षरः	५१ गुरु	५० लघु	१०१ अक्षर
२१ कुञ्जरः	५० गुरु	५२ लघु	१०२ अक्षर
२२ मदनः	४९ गुरु	५४ लघु	१०३ अक्षर
२३ मरस्यः	४८ गुरु	५६ लघु	१०४ अक्षर
२४ तासादुः	४७ गुरु	५८ लघु	१०५ अक्षर
२५ रोषः	४६ गुरु	६० लघु	१०६ अक्षर
२६ मारुङ्गः	४५ गुरु	६२ लघु	१०७ अक्षर
२७ पयोधरः	४४ गुरु	६४ लघु	१०८ अक्षर

काव्यपट्पदमीर्षोपा

काव्यपट्पदयोश्चापि दोषा पन्नगभाषिता ।
 वक्ष्यन्ते यान् विदित्वैव काव्यं कर्तुं मिहार्हति ॥ ६४ ॥
 पददुष्टो भवेत्पङ्क्तु कलाहीनस्तु सञ्जकः ।
 कलाधिको वातूलः स्यात् तेन घ्नून्यफलश्रुतिः ॥ ६५ ॥
 अघोऽलङ्काररहितो वधिरौ भलवर्जितः ।
 प्राकृते सस्कृते चाऽपि विज्ञेय पददूषणम् ॥ ६६ ॥
 गणोट्टवणिका यस्य पञ्चत्रिकलवा भवेत् ।
 स मूक कथ्यतेऽर्थेन विना स्याद् दुर्बलस्तथा ॥ ६७ ॥

२८ कुन्द	४३ गुरु	६६ लघु	१०६ अक्षर
२९ कमलम्	४२ गुरु	६८ लघु	११० अक्षर
३० वारस्य	४१ गुरु	७० लघु	१११ अक्षर
३१ शरभ	४० गुरु	७२ लघु	१११ अक्षर
३२ जङ्गम	३९ गुरु	७४ लघु	११३ अक्षर
३३ घृतीष्टम्	३८ गुरु	७६ लघु	११४ अक्षर
३४ दाता	३७ गुरु	७८ लघु	११५ अक्षर
३५ शर	३६ गुरु	८० लघु	११६ अक्षर
३६ सुगर	३५ गुरु	८२ लघु	११७ अक्षर
३७ समर	३४ गुरु	८४ लघु	११८ अक्षर
३८ सारस	३३ गुरु	८६ लघु	११९ अक्षर
३९ शारद	३२ गुरु	८८ लघु	१२० अक्षर
४० मेरु	३१ गुरु	९० लघु	१२१ अक्षर
४१ मदकर	३० गुरु	९२ लघु	१२१ अक्षर
४२ मद	२९ गुरु	९४ लघु	१२३ अक्षर
४३ सिद्धि	२८ गुरु	९६ लघु	१२४ अक्षर
४४ वृद्धि	२७ गुरु	९८ लघु	१२५ अक्षर
४५ कारतलम्	२६ गुरु	१०० लघु	१२६ अक्षर
४६ कमलाकर	२५ गुरु	१०२ लघु	१२७ अक्षर
४७ धवल	२४ गुरु	१०४ लघु	१२८ अक्षर
४८ मन	२३ गुरु	१०६ लघु	१२९ अक्षर
४९ ध्रुव	२२ गुरु	१०८ लघु	१३० अक्षर
५० कनकम्	२१ गुरु	११० लघु	१३१ अक्षर
५१ कृष्ण	२० गुरु	११२ लघु	१३२ अक्षर

हठात्कृष्णाश्चरैश्चापि कठोर केकरोऽपि च ।
 श्लेष प्रसादादिगुणैर्विहीन काण उच्यते ॥ ६८ ॥
 सर्वैरङ्गै सम शुद्ध स लक्ष्मीक स रूपवान् ।
 काव्यात्मा पुरुष कोऽपि राजते वृत्तमौक्तिके ॥ ६९ ॥
 दोषानिमानविज्ञाय यस्तु काव्य चिकीर्षति ।
 न ससदि स मान्य स्यात् कवीनामतदहण ॥ ७० ॥
 एते दोषा समुद्दिष्टा सस्कृत प्राकृतेऽपि च ।
 विशेषतश्च तत्रापि केचित्प्राकृत एव हि ॥ ७१ ॥

इति शास्त्रमौक्तिके द्वितीय पटपदकरण समाप्तम् ।

५२ रञ्जनम्	१९ गुरु	११४ लघु	१३३ अक्षर
५३ मेघवर	१८ गुरु	११६ लघु	१३४ अक्षर
५४ शीघ्र	१७ गुरु	११८ लघु	१३५ अक्षर
५५ गरुड	१६ गुरु	१२० लघु	१३६ अक्षर
५६ शशी	१५ गुरु	१२२ लघु	१३७ अक्षर
५७ सूय	१४ गुरु	१२४ लघु	१३८ अक्षर
५८ शल्य	१३ गुरु	१२६ लघु	१३९ अक्षर
५९ नवरङ्ग	१२ गुरु	१२८ लघु	१४० अक्षर
६० मनोहर	११ गुरु	१३० लघु	१४१ अक्षर
६१ गगनम्	१० गुरु	१३२ लघु	१४२ अक्षर
६२ रत्नम्	९ गुरु	१३४ लघु	१४३ अक्षर
६३ नर	८ गुरु	१३६ लघु	१४४ अक्षर
६४ हीर	७ गुरु	१३८ लघु	१४५ अक्षर
६५ धमर	६ गुरु	१४० लघु	१४६ अक्षर
६६ वासर	५ गुरु	१४२ लघु	१४७ अक्षर
६७ कुमुदाकर	४ गुरु	१४४ लघु	१४८ अक्षर
६८ दीप	३ गुरु	१४६ लघु	१४९ अक्षर
६९ वाह	२ गुरु	१४८ लघु	१५० अक्षर
७० वसु	१ गुरु	१५० लघु	१५१ अक्षर
७१ गण	० गुरु	१५२ लघु	१५२ अक्षर (१५२मात्र)

तृतीयं रङ्गा-प्रकरणम्

१. पञ्चटिका

डगणाश्चतुरः पादे विधेहि,
अन्ते गणमिह मध्यगमवेहि ।
इति पञ्चटिका निखिलचरणेषु,
षोडशमात्रा सर्वचरणेषु ॥ १ ॥

पद्या-

गाङ्ग वन्द्य परिजयति वारि,
निखिलजनानां दुरितविनिवारि^१ ।
भवमुकुटविराजिजटाविहारि,
मज्जज्जनमानसतापहारि ॥ २ ॥

इति पञ्चटिका ।

२. अडिल्ला^२ [अरिल्ला]

सर्वे डगणा अरिल्ला छन्दसि,
नायकमत्र नयति तं नन्दसि ।
षोडशमात्रा विदिता यस्मि-
अन्ते सुप्रियमपि कुरु तस्मिन् ॥ ३ ॥

पद्या-

हरिरुपगत इति सखि ! मयि वेदय,
कुञ्जगृहोदरगतमपि खेदय ।
इह यदि सपदि सविधमुपयास्यति,
रदवसनामृतमिदमनुपास्यति ॥ ४ ॥

इति अरिल्ला ।

३. पादाकुलकम्

गुरुलघुकृतगण^३-नियमविरहित,
फणिपतिनायकपिङ्गलगदितम् ।
रसविधुकलयुतयमकितचरणं,
पादाकुलकं श्रुतिमुखकरणम् ॥ ५ ॥

यथा-

जलभरदान^१-हरितवनभागः,
शीतलमारुतकृतपरभागः^२ ।
चञ्चलचपलाधृतवनमालः,
समुपागत इह जलधरकालः ॥ ६ ॥
इति पादाकुलकम् ।

४. शीबोला

रसविधुकलकमयुगमवधारय,
सममपि वेदविधूपमितम् ।
सर्वमपि पष्टिकलं विचारय,
; शीबोलास्यं फणिकथितम् ॥ ७ ॥

यथा-

दिशि दिशि विलसति जलधरगजित-
मर्थताकेकां राजयते ।
सा मम चेतः कुरुते तजित-
मपि कां कान्तो भासयते ॥ ८ ॥
इति शीबोला ।

५. रड्डा^३

विषमचरणेषु ढगण^४मुपनय
ढगणत्रयमनुविरचय
जगणमुत^५ विप्रमन्त्यमुपनय
ढगणत्रयमपि रचय
समेऽन्ते^६ सर्वलघु विरचय ।
दोहाचरणचतुष्टयं तेषामन्ते धिहि ।
फणिपतिपिङ्गलभापितं रड्डा^७वृत्तमवेहि ॥ ९ ॥
विषमः शरविधुमात्रो द्वादशमात्रास्तथा द्वितीयोऽपि ।
तुर्यो रुद्रकलाक. प्रथमान्ते जगणविप्रनियमः स्यात् ॥ १० ॥

१. जलधरदाय । २. परिभाषः । ३. ग. धरवज । ४. ग. टगण । ५. ग. मनु ।
६. स. ग. ताम ते । ७. ग. रड्डा । ग. प्रतो रड्डाया रचामे सर्वत्रापि रचयायाः प्रयोगो
विद्यते ।

अपरान्ते लघुयुगनियम स्यात् कलाद्वयम् ।
समादौ स्याच्चतुर्थान्ते त्रिलघुर्गण ईरित ॥ ११ ॥

यथा-

पिकरुतमिदमनुविलसति दिक्षु
किन्नुककलिका विकसति^१
बहति मलयमरुदयमपि मुलघु
विरुतमलिरपि बलयति
विकसति मञ्जुल^२मञ्जरिरपि च ।

इति मधुरनुवनमनुसरति बहुलीभूय सुकेशि ।
हरिरपि विनमति चरणयुगमनुसर त हृदयेषि । ॥ १२ ॥

रङ्गाया सप्तभेदा

अर्थतस्या सप्तभेदा कथ्यन्ते पिङ्गलोदिता ।
यान् विधाय कवि काव्यगोष्ठ्या बहुमतो भवत् ॥ १३ ॥
प्रथमा करमी प्रोक्ता ततो नन्दा च मोहिनी ।
चारुसेना चतुर्थी स्यात्तथा^३ भद्रापि पञ्चमी ॥ १४ ॥
राजसेना तु षष्ठी स्यात् तथा तालङ्किनी मता ।
सप्तमी कथिता रङ्गा भेदा लक्षणमुच्यते ॥ १५ ॥

५[१] करमी

विपभेऽग्निविद्युकलाको रुद्रकलाको द्वितीयोऽपि ।
तुर्योऽपि रुद्रमात्र पञ्चपदानोह कथितानि ॥ १६ ॥
एव पञ्चपदानामग्रे दोहापि यस्यास्ताम ।
करमीति नागराज कथयन्ति शणकपला तु दोहावत् ॥ १७ ॥

इति करमी ।

५[२] नन्दा

विपमेपु वेदविधुर्निद्वितीयतुर्यौ^४ च रुद्रमात्राभि ।
अग्र दोहा यस्या^५ ता न दामामनन्ति वत्तज्ञा ॥ १८ ॥

इति नन्दा ।

५[३] मोहिनी

अयुजि पदे नवमात्राः समेऽपि दिग्भद्रसंख्याभिः ।

पुरतो दोहा यस्यां शेषस्तां मोहिनीमाह ॥ १६ ॥

इति मोहिनी ।

५[४] चारुसेना

असमपदे शरचन्द्राः^१ समयोरेकादशैव यस्यास्ताम् ।

दोहाविरचितशीर्षा^२ भणति फणीन्द्रस्तु^३ चारुसेनेति ॥ २० ॥

इति चारुसेना ।

५[५] भद्रा

विपमेषु पञ्चदशभिर्द्वितीयतुयो^४ च सूर्यसंख्याभिः ।

या दोहाङ्कितशीर्षा सा भद्रा भवति पिङ्गलेनोक्ता ॥ २१ ॥

इति भद्रा ।

५[६] राजसेना

पूर्ववदेव हि विपमे समे क्रमादेव सूर्यरुद्रैश्च ।

पूर्ववदेव हि दोहा यत्र स्याद् राजसेना सा ॥ २२ ॥

इति राजसेना ।

५[७] तालङ्कनी

विपमे पदेषु (च) यस्यां षोडशमात्रा विराजन्ते ।

पूर्ववदेव हि समयोर्दोहाऽपि च पूर्ववद्भवति ॥ २३ ॥

तालङ्कनीति कथिता सा रट्टा नागराजेन ।

एव सप्तविभेदा विविच्य सम्यक् प्रदर्शिताः क्रमशः^५ ॥ २४ ॥

उदाहरणमेतेषां ग्रन्थविस्तरशङ्कया ।

नोक्तं सुबुद्धिभिस्तद्धि^६ स्वयमूह्य^७ महात्मभिः ॥ २५ ॥

इति श्रीयुक्तमौक्तिकवार्तिके^१ तृतीय रट्टा^२-प्रकरणं समाप्तम् ।

१. ग. घःश्री । २. ल. ग. घ. । ३. ग. अमतः । ४. ग. तद् । ५. ग. विरचय ।
६. ग. 'वातिके' कात्ति । ७. ग. घईवा ।

चतुर्थं पद्यावती-प्रकरणम्

१. पद्यावती

यदि योगङ्गणकृत-चरणविरचित-द्विजगुरुयुगकरवसुचरणाः ,
नायकविरहितपद-कविजनकृतमद-पठनादपि मानसहरणा ।
इह दशवसुमनुभिः^१ क्रियते कविभिविरतियदि युगदहनकला ,
सा पद्यावतिका फणिपतिभणिता त्रिजगति राजति गुणबहुला ॥ १ ॥

पद्या^२ -

करयुगधृतवंशी रुचिरवतंसी गोवर्द्धनधारणशीलः ,
प्रियगोपविहारी भवसन्तारी वृन्दावनविरचितलोलः ।
धृतवरवनमाली निजजनपाली वरयमुनाजलरुचिशाली^३ ,
मम मङ्गलदायी कृतभवमायी^४ वरभूषणभूषितमाली^५ ॥ २ ॥

इति पद्यावती ।

२. कुण्डलिका

दोहाचरणचतुष्टय प्रथम नियतमवेहि,
कुण्डलिका फणिरनुवदति काव्य तदनु विधेहि ।
काव्य तदनु विधेहि पदं प्रतिभयमकितचरणं,
तदुभयविरती भवति पुनरपि च^१ तदुभयपठनम् ।
तदुभयसुपठनसमयरचितकरकविजनमोहा ।
कुण्डलिका सा भवति भवति यदि पूर्वं दोहा ॥ ३ ॥

पद्या-

चरणं शरण भवतु सव मुरलीवादनशील,
सुरगणवन्दितचरणयुग वनभुवि विरचितलील ।
वनभुवि विरचितलील दुष्टजनखण्डनपण्डित,
दुर्जनजनहृदि कील गण्डयुगकुण्डलमण्डित ।
दुर्जनजनहृदि कील^२ भीतभयतापविहरण^३,
मुनिजनमानसहस हरतु मम तापं चरणम्^४ ॥ ४ ॥

१. ग. मुनिभिः । २. ग. तदप्या । ग. प्रती पद्या शब्दस्य स्थाने सर्वत्र तदप्या
पाठो दृश्यते । ३. ग. माली । ४. ग. नववरदायी । ५. ग. माली । ६. ग. नास्ति
पाठः । ७. ग. नास्ति पाठः । ८. स विहरण । ९. स. चरण, ग. चरणम् ।

३. गगनाङ्गणम्

टगण^१मिहादौ रचयत विरमित^२विनतानन्दन^३,
मध्ये नियमविरहितं रविकृतयति कविवन्दनम्^४ ।
शरपक्षकलितकलाक^५-नखमित^६-वर्णविकासितं,
गगनाङ्गणमिदं भवति फणिपतिपिङ्गलभाषितम् ॥ ५ ॥

यथा -

मानसमिह मम कृन्तति कोकिलविरुतमकारणं,
कलितशरासनसायकमतनुः कलयति मारणम् ।
मधुसमये कथमपि^७ सखि^८ ! जीवं निजमपि धारये,
रुचिरमधुभिदमन्तरा क्षणमपि सोढुमपारये ॥ ६ ॥

इति गगनाङ्गणम् ।

४. द्विपदी

श्रादौ टगणसमुपरचितं तदनु च शरडगणसुविहितम् ।
गान्तं द्विपदीवृत्तं वसुपक्षकलं फणिपतिभणितम्^९ ॥ ७ ॥

यथा -

मम मानसमभिलषति सखि-कृतरासकेलिरसनायके ।
निजरुचिजितनूतनजलघर-मुरलीनादमुखदायके ॥ ८ ॥

इति द्विपदी ।

५. भ्रूलला^{१०}

प्रथममिह दशसु यतिरनु च तदवधि भवति,
तदुपरि च मुनिविधुभिरत्र युक्ता ।
इति^{११} हि विधियुग्दला मुनिदहनकृतकला
भ्रूलला भवति शृणुनियममुक्ता ॥ ९ ॥

यथा -

करविधूतवंशरवकृतहृदय-चित्तभव
गोकुलानन्दकररुचिररासे ।

१. ग. डगण । २. ग. विरचित । ३. ग. विनतानन्द । ४. ग. कविवन्दन ।
५. ग. कला । ६. ग. नखमित । ७. ग. कवितमपि । ८. ग. सखी । ९. ग.
भाषितम् । १०. ग. भ्रूलला । ११. ग. इह ।

मम सविधमुपयासि मम वचनमनुपासि

वल्लवीरभिभूय जनितदासे' ॥ १० ॥

इति भुल्लणा* ।

१. ग. हासे ।

'टिप्पणी—श्रीकृष्णमद्वेन वृत्तमुक्तावत्या द्वितीयगुम्फेऽस्य छन्दसः भुल्लण-उपभुल्लण-सुभुल्लन-अतिभुल्लननामभिश्चत्वारो भेदाः प्रदक्षितास्ते चात्राविवल समुद्घ्रियन्ते—

अथ भुल्लनच्छन्दः

यस्य चरणे सप्त पञ्चकलास्ततो द्वे कले तज् भुल्लन नाम । यद्यपि पञ्चकलभेदा अवि-
शेषेणैव गृहीतास्तथापि प्रतिगण द्वितीया कला परया कलया मिश्रितो द्वैजिकेत्यनुभव-
साक्षिकम् ।

यथा—

शेषपतगोशवितुधेशभुवनेशभूतेशसविशेषमुनिदेशघरणी,
कन्दलितमुन्दरानन्दमकरन्दरसगज्जनमिलिन्दभवसिन्धुतरणी ।
ज्ञानभण्डनपरा कर्मखण्डनघरा शमनदण्डनपरा भूतिहरणी,
निरयमिह वक्ति मुनिवृन्दमनुरक्तिमज्जयति हरिभक्तिरासकितकरणी ॥ ६१ ॥

अष्टत्रिंशत् कल उपभुल्लम् । तस्मिंश्चोपान्त्यो गुरुरन्त्यो लघुर्नियत ।

यथा—

चण्डभुजदण्डसदखण्डकोदण्ड(क्ष)शिखण्डशरखण्डभरदण्डतविपक्ष,
पर्वभूतशर्वरीनाषरुचिगर्वहरसर्वहृदखर्वसुखलीलनवलक्ष ।
दुष्टनरदुष्टतरपुष्टनयजुष्टजनतुष्टमतिपुष्टचरितौघकृतिदक्ष,
तक्षरासमसकृतरक्षणासपक्षगणलक्षितमुनक्षरा जयेश गतलक्ष ॥ ६२ ॥

बलाहयाधिक्येन एकोनचत्वारिंशत्कलचरणमपि सम्भवति, तच्च सुभुल्लन नाम ।

यथा—

चूतनवपल्लववपायकलकण्ठवलमञ्जुकलकीविलाकूजितनिदान,
माधुरीमधुरमधुपानमत्तालिक्लवल्लवीतीरभङ्गारसुखदानम् ।
चारुमलयचलोद्योतपवमानजयजागरेतचित्ताभवसायकवितानम्,
पदप सखि पदप कुसुमाकरमुदित्वर मा कल्प मानसे मानमतिमानम् ॥ ६३ ॥

चत्वारिंशत्कल अतिभुल्लनमपि स्वीक्यायम् ।

यथा—

वासकैलासमविलासहरहासमधुमाससुविकाससितमारससमानगति,
सारदनुपारकरसारधनसारसरहाराहिमपारदविसारसमुदारमनि ।
बालकमृणालमृदुमालतीजालहविचालितविशालविवुघालयमरालतति,
राजमृगराजवर राजते तव यशो राम सुरराजसुमभाजितसमाजनति ॥ ६४ ॥

६. खञ्ज ।

नवजलधिकलमितगणमिह^१ समुपनय
 तदनु च कुरुत रगणमपि फणिभणितखञ्जके ।
 इति विधिविरचितदलयुगमिह भवति
 निखिलभुवनगतवरकविजनहृदयसुखसञ्जके ॥ ११ ॥

यथा-

निजतनुरुचिविजितनवजस्रधररुचि-
 विधृतरुचिरतर^२मुकुट हरिरिह मम हृदि भासताम् ।
 मम हृदयमधिरतमनुभवतु तव
 निजजनसुखवितरणरसिकचरणसरसिजदासताम् ॥ १२ ॥
 इति खञ्जा ।

७. शिखा

रसजलधिकलमुपनयत फणिरिति वदति सकलकविसखा हि ।
 अपरखदलमथ मुनिकृतमुभयमपि जगणविरतिगमिति^३ भवति शिखा हि ॥ १३

यथा-

विकचनलिनगतमधुरमधुकरकलरवमनुकलय सुकेशि !
 हरिरिति विनमति चरणयुगमपि मयि^४ कुरु हृदयमपरुषमति^५ सुवेदि ! ॥ १४ ॥
 इति शिखा ।

८. माला

जखनिधिकलमिह^६ नवगणमुपनय तदनु च
 रगणमपि हि गुरुयुगलणमथ कुरु पिङ्गलप्रोक्तम् ।
 गाथोत्तराद्धंसहितं मालावृत्तं विजानीहि ॥ १५ ॥

यथा-

अपितहृदय करयुगकृतवसन वसनहरण-
 परवशयुवतिकृतविनतिरभयमान्ततद्वासाः* (?) ।
 तीरे कदम्बशाली वरवनमाली हरिः पायात् ॥ १६ ॥
 इति माला ।

१. ग. कलमगुलनगणमिह । २. ग. वर । ३. ग. विरचितमिति । ४. ग. तम् ।
 ५. ग. हृदि रयमति । ६. ग. तिह । ७. ग. इतप्रातः ।

६ चुलिमाला^१

यदि दोहादलविरतिकृत,
 गरकलकुमुमगणो हि विराजति ।
 फणिनायकपिङ्गलरचित,
 चुलिमाला किल जातिषु राजति ॥ १७ ॥

पद्या-

क्षणमुपविश वनभुवि हरे,
 मम पुनरागमनाञ्जघि पालय ।
 उपयाता^२मिह मम सखी^३,
 तामङ्गे राधामुपलालय^४ ॥ १८ ॥
 इति चुलिमाला ।

१० सोरठा

सोरठाख्य तत्तु फणिनायक भणित भवति ।
 दोहग्वृत्त यत्तु विपरीत कविजनभवति ॥ १९ ॥

पद्या-

रूपविनिर्जितमार । सकलयादवकुलपालक ।
 जय जय नन्दकुमार । गोपगोपीजनलालक ! ॥ २० ॥

पद्या या-

गलकृतमस्तकमाल । भालगतदहनविराजित ।
 जय जय हर ! भूतेश ! शेषवृत्तभूषणभासित ॥ २१ ॥

इति सोरठा

११ हाकति

सगर्णं^१ भंगर्णं प्रंलघुमुत्तं,
 सकल चरण प्रविरचितम्^२ ।
 गुरुवेन च सर्वे कलित,
 हापत्तिवृत्तमिदं कथितम् ॥ २२ ॥

प्रथमद्वितीयचरणो द्वाणविय तृतीयतुर्यो च ।
 दशमपी^३ सयलेषु च भाद्रा वेदन्दुभि प्रोक्ता ॥ २३ ॥

१. ग घृत्तोद्यामा । २. ल. उनुयाता । ३. क ग सती । ४. ग पालय ।
 ५. ग सगुर्णं । ६. क प्रविरचित ।

यथा-

विकृतभयानकवेपकलं,
चरणाङ्कितवरभूमितलम् ।
व्योमतलामलकम्बुगलं,
नौमि विभूषितभालतलम् ॥ २४ ॥

यथा वा^१-

यमुनाजलकेलिपु कलितं,
वनिताजनमानसवलितम् ।
सुरभीगणसङ्घा^२च्चलितं,
नौमि हृदा बलसंम्मिलितम् ॥ २५ ॥
इति हाकलि ।

१२. मधुभारः

डगणमवधेहि, जगणमनु देहि ।
मधुभारमाशु, परिकलय वासु ॥ २६ ॥

यथा-

उरसि कृतमाल, भक्तजनपाल ।
रुचिजिततमाल, जय नन्दबाल ॥ २७ ॥
इति मधुभारः ।

१३. आभीरः

अन्ते जगणमवेहि,
विधुयुगकला विधेहि ।
आभीरं परिशोभि,
कविजनमानसलोभि ॥ २८ ॥

यथा -

द्रजभुवि रचितविहार,
श्रुतिशतकलितविचार ।
यदुकुलजनितनिवास,
जय भूतलकृतरास^३ ॥ २९ ॥
इत्याभीरः ।

१४. दण्डकला

वेदङ्गणविरचितमनु^१ च^२ टगणकृत^३-मन्ते ङगणद्वयविहित,
गुरुकृतपदविरत कविजनमुमत दण्डकलास्यमिद विदितम् ।
वरफणिकुलपतिना विमलसुमतिना पक्षदहनकृतचरणकल,
गगनेन्दुधिराजित-योगविकासित-वेदावनिवृत्यतिविमलम् ॥ ३० ॥

पद्या-

खरकेशिनिपूदन-विनिहतपूतन-रचितदितिजकुलबलदलन,
बाणावलिमालित-सङ्गरपालित-पार्थविलोकितशुभवदनम् ।
कृतमायामानव-रणहतदानव-दुस्तरभवजलराशितरि,
सुरसिद्धि^४-विधायक-यादवनायकमशुभहर प्रणमामि हरिम् ॥ ३१ ॥

इति दण्डकला ।

१५ कामकला

यदि रसविधुमात्राणामन्ते विरतिभवेत्तदा संव^५ ।
कामकलेति फणीश्वरपिङ्गलकथिता मता सिद्धि^६ ॥ ३२ ॥

पद्या-

कमलाकरलालितपदकमल निजजनहृदयविनाशित^७शमल,
पीतवसनपरिभासितममल जितकम्बुमनोहरविमलगलम् ।
नामिकमलगतविधिवृतनमन फणिमणिकुण्डलमण्डितवदन,
नोमि जलधिशयमतिरुचिसदन दानयनिचहसमरवृतकदनम् ॥ ३३ ॥

इति कामकला ।

१६ रुचिरा

सप्तचतुष्कलकलितसकलदल-मगत्याहितकुण्डलरुचिरा ।
न कुरु पयोधरमिह फणिपतिवर-भणितमिद वृत्त रुचिरा ॥ ३४ ॥

पद्या-

कस्य तनुमंजुजस्य सितासित-सङ्गममधिविधित पतिता ।
यस्य कृते करभोरु विपीदसि मिहिरातपनिहिते^८च सता ॥ ३५ ॥

इति रुचिरा ।

१. ग. तनु । २ ग 'च मासित । ३. ग विरचिन । ४ ग. तिद्ध । ५ ग.
संव । ६ ग सद्भ्यः । ७ दूरपदिमानित । ८ ग विहितेव ।

१७. दीपकम्

ढगणं कुरु विचित्र-

मन्ते जगणमत्र ।

मध्ये द्विलमवेहि^१,

दीपकमिति विधेहि ॥ ३६ ॥

यथा-

शेषविरचितहार,

पितृकाननविहार ।

जय जय हर ! महेश,

शोरीकृतसुवेप ! ॥ ३७ ॥

प्रथवा-

तुरगैकमुपधाय,

सुनरेन्द्र^२मवधाय ।

इति^३ दीपकमवेहि,

धु मन्तमधिधेहि ॥ ३८ ॥

यथा^४-

क्षणमात्रमतिवल्गु,

जगदेतदतिफलु ।

धनलोभमपहाय,

नम पद्मनयनाय ॥ ३९ ॥

इति दीपकम् ।

१८ सिंहविलोकितम्

सगणद्विजगणविरचितचरणं,

चरणे रसभूमिकलाभरणम् ।

फणिनायकपिङ्गलभणितवरं,

वरसिंहविलोकितहृदयहरम् ॥ ४० ॥

यथा-

हतद्रूपणकृतजलनिधितरणं,

रणभुवि^५कृतदानवकुलमरणम् ।

रणरणितशरासन^६भङ्गकर,

करकलितशिरो नम^७ देववरम् ॥ ४१ ॥

इति सिंहविलोकितम् ।

१. ग. द्विकलमवेहि । २. ग. सुनवेन्द्र । ३. व. द्रह । ४. ग. उव
५. ग. 'रण' नास्ति । ६. ग. शरासन । ७. ग. मम् ।

१९. प्लवङ्गमः

आदावादिगुरुं कुरु पट्कलभापितं,
 [पञ्चकलं तदनु च डगणं विभूषितम् ।
 अन्ते नाद्यकमथ रचय गुरुविकासितं] १
 घृतमिदं प्लवङ्गममहिपतिसुभापितम् ॥ ४२ ॥

यथा-

कुञ्चितचञ्चलकुन्तलकलितवराननं,
 वेणुविरावदिनोदविमोहित^१काननम् ।
 मण्डलनायकदानवखण्डनषण्डित,
 चिन्तय चण्डकरोपमकुण्डलमण्डितम् ॥ ४३ ॥
 इति प्लवङ्गमः ।

२०. लीलावती

लघुगुरवर्णं रचित-नियमविरहित-वसुडगणकृत-वरणविरचिता,
 सगणद्विजवर-जगण-भगण-गुरुयुगकृतपदमतिरमकसुकथिता ।
 लीलावतिका पक्षदहनकृतकला वरकविजनहृदयमहिता,
 विरचितललितपद-जनहृदयकृतमद-फणिनायकपिङ्गलभणिता ॥ ४४ ॥

यथा-

गुञ्जावृत्तभूषणमखिलजनहतदूषणमधिकवृत्तरासकलं,
 करयुगधृतमुरलि नवजलधर^२नील वृन्दावनभुवि चपलम् ।
 हतगोपीमान नारदकृतगान लीलाबलदेवधृतं,
 स्मर नन्दतनूज सुरवरकृतपूजं मम हृदयमुनिजननुतम् ॥ ४५ ॥
 इति लीलावती ।

२१[१] हरिगीतम्

अस्यो प्रथम विरचय ठगण तदनु टगणविराजितं,
 रचय शरकल तदनु दहनमिदमन्ते गुरुविकासितम् ।
 वसुपक्षकलाक कविजनससदि हृदयमुत्तदायकं,
 हरिगीतमिति घृतमहिपतिकविनृपतिजल्पितनायकम् ॥ ४६ ॥

१. कोट्टवास्तगतोऽयं पाठः ए. ग. प्रतावेवास्ति । पाठेऽस्मिन् पञ्चकल-वसुडगणयो-
 विधानं दृश्यते तत्रैव प्राकृतवैज्ञानिकविदो 'पञ्चकल चण्डकल तथा वहि विजण्' इति
 नियमान् । (स०)

२. ग. विमोहित । २ मदनजलधर ।

यथा-

रचय कदलीदलनवशयन कमलदलावलिमालित,
वीजय मृदुपवनेन घनाघनसुन्दरविरहदालितम् ।
अङ्गकमपि घनसारविराजितचन्दनरचनलालित,
कुरु मम वचनमानय कमलाननवनमालिनमालि तम् ॥ ४७ ॥

इति हरिगीतम्*

२१. [२] हरिगीत[क]म्

अन्ते यदि गुरुयुगकृतचरण नून भवेदिदं हि तदा ।
हरिगीत[क]मिति फणीश्वरपिङ्गलकथित विजानीत ॥ ४८ ॥

यथा-

उरसि विलसिता'ऽनुपमनलिनकृतमधुकररुतपुतवनमाल,
मुनिजनयमनियमादिविनाशकसकलदनुजकुलविकरालम् ।

१ ग विशलता ।

* टिप्पणी—धीकृष्णभट्टेन वृत्तमुक्तावल्या द्वितीयगुम्फे 'हरिगीत' वृत्तास्य अनुहरिगीत मन्द्रहरि-
गीत लघुहरिगीतञ्चेति त्रयो भेदा स्वीकृतास्ते यथा—

'अन्त्यगुरुमात्रेण हीन अनुहरिगीतम् । यथा —

नवकोकिलाकुलललितकलकलकलितजागरकाम

भतिधीरमलयसभीरघोरशिखिलितमधुकरदाम ।

सखि भूरिकुसुमपरागपूरितकुञ्जमञ्जुलघाम,

परिपश्य मानिनि मधुदिन रमयेन सन्तनु साम ॥ ४६ ॥

यदा तु अनुहरिगीतस्यादौ कलाद्वय वक्ष्यंते तदा मन्द्र(हरि)गीत उत्प्रेक्षितं भवति । यथा-

जलधरधामधारण मोहतारण भवनिवारणशील,

मधुमुरनरकगञ्जन दुरितभञ्जन नयनरञ्जनलील ।

त्रिभुवनभव्यभावक निजजननायक कलितपावकपान,

जय रसकेलिभाजन सुरभाजन कृतसभाजनमान ॥ ५० ॥

अथ कलाद्वयहामे लघुहरिगीतम् । यथा --

मल्लिकानवमल्लिकासुमत्लिकारसपीन,

मालिकानवमालिकाकमलालिकामधुलीन ।

सोऽधुना विकरालकालकलाकुलोद्यत एव,

कुन्दकाननकौतुकी मा धाव मधुकरदेव ॥ ५१ ॥"

मुरलीरव^१-मोहनमनु^२-मोहितनिखिलयुवतिजन^३-कृतरास,
विलसतु मम हृदि किमपि गोपिकाजनमानसजनितविलासम् ॥ ४६ ॥

इति हरिगीत[क]म् ।

२१ [३] मनोहर हरिगीतम्^४

इयमेव यदि विरामे गुर्वन्त शरकल भवति ।
नैयत्येन कवीन्द्रैर्वसुपक्षकल मनोहर कथितम् ॥ ५० ॥

एतदनुसारेण पाठान्तर यथा-

उरसि विलसितानुपमनलिनकृतमधुकररुतयुतमाल,
मुनिजनयमनियमादिविनाशकसकलदनुजकुलकालम् ।
मुरलीरवमोहनमनुमोहितनिखिलयुवतिकृतरास,
विलसतु मम हृदि किमपि गोपिकामानसजनितविलासम् ॥ ५१ ॥

इति मनोहर हरिगीतम्

२१ [४] हरिगीता

रन्ध्रैर्मुनिभि सूर्यै वृत्तविरतिर्भाविता कविभि ।
इद(य)मेव हि हरिगीता फणिनायकपिङ्गलोदिता भवति ॥ ५२ ॥

यथा-

भुजगपरिवारित-वृषभधारित-हस्तडमरुविराजित,
वृत्तमदनगञ्जन मधुभभञ्जन-सुरमुनिगणसभाजितम् ।
हिमकरणभासित-दहनभूयित-भालमुमया सङ्गत,
घृतवृत्तियाससममलमानसमनुसर सुखदमङ्ग तम् ॥ ५३ ॥

इति हरिगीता ।

२१ [५] अपरा हरिगीता

इयमेव वेदचन्द्रै वृत्तविरतिर्भाविता कविभि ।
पितृचरणैरतिविगदा पिङ्गलयिघृतावुदाहृता स्फुटत ॥ ५४ ॥

सदुदाहरण यथा^५-

सखि ! बध्नमीति मनो भूग जगदेव धूयमवेदयते,
परिभिद्यते मम हृदयमर्म न दामं सम्प्रति वीदयते ।

१. ग दर । २ मम । ३ ग 'जन' नास्ति । ४. ग प्रती दन्दसोऽय सशयो
दाहृते न ह्य । ५. ४ ग प्रती नास्तिपुदाहरणपद्यमिदम् ।

परिह्रीयते वपुषा भृश नलिनीव हिमततिसङ्गता,
नुदती वने^१ वदतीति सा मुदती रतीशवसगता ॥ ५५ ॥

इत्यपरा हरिगीता ।

२२ त्रिभङ्गी

प्रथम दशसु च^२ यतिरनु च वसुपु यतिरथ च तदधिकृति-रस^३कथित,
शेषे गुरुगदित त्रिभुवनविदित जगणविरहित जगति हितम् ।
वसुडगणकृतचरण-मधिकसुखकरण-सकलजनशरण मतिसुमति,
वदतीति त्रिभङ्गीमिह निरनङ्गीकृतरतिसङ्गी फणिनृपति ॥ ५६ ॥

यथा-

वरमुक्ताहार हृदि कृतभार विरहितसार कुरु मुपित,
छादय विधुविम्ब न कुरु विलम्ब हर निकुम्ब कमलकृतम् ।
जहि^४ मलयजपवन लघु लघुवहन तनुकृतदहन मोहकर,
मम चित्तमधोर रदजितहीर यदुवरवीर याति परम् ॥ ५७ ॥

इति त्रिभङ्गी ।

२३ दुर्मिलका

यत्राज्यो डगणा कविसुखकरणा प्रतिपदगुम्फनललितयुता
गगनावनिरचिता वसुपु च कथिता यत्र वेदविद्युतिरुद्रिता ।
द्वात्रिंशन्माना स्युरतिविचित्राश्चरणे यस्मिन् कविगणिता
जनहृदि सुखदात्री बुद्धिविधात्री सा दुर्मिलका फणिभणिता ॥ ५८ ॥

यथा-

हैयङ्गवचोर नन्दकिशोर तन्दुलकणरुचिसमरदन,
घनकुञ्चितकेश मञ्जुलवेप विजितमनुजसुररुचिसदनम् ।
अपरिस्फुटगदन दधियुतवदन नौमि दितिजवरशकटहर,
मुक्ताभूपालकमद्भुतबालकमखिलमुनिजनहृदि सुखकरम्^५ ॥ ५९ ॥

इति दुर्मिलका ।

१ 'वदती पर' इति पाठ पिङ्गलप्रदीपे । २ ग नास्ति । ३ क घय । ४ ग नास्ति । ५ 'मुक्ताभूपालकमद्भुतबालकमुषिजनहृदये सौन्दर्यकरम्' इति पाठे श्रुतिकदुस्त्व-
दोषनिवृत्ति स्यात् (स)

२४. हीरम्

आदिगयुत-वेदलयुत-नागरचितपट्कलं,
 वह्निगदित-लोकविदितमन्त्यकथितमध्यकलम् ।
 भाति यदनु-पादमतनु-कान्तिसुतनुसङ्गत,
 हीरमहिपवीरकथितमोदृगखिलसम्मत् ॥ ६० ॥

यथा-

चन्द्रवदन-कुन्दरदन-मन्दहसनभूषणं,
 भीतिकदन-नीतिसदन^१-कान्तिमदनदूषणम् ।
 धीरमतुलहीरवहुलचीरहरणपण्डित,
 नौमि विमलघूतकमलनेत्रयुगलमण्डितम् ॥ ६१ ॥

यथा वाऽस्मत्तातचरणानाम्-

पाहि जननि ! शम्भुरमणि ! शुम्भ^३दलनपण्डिते !
 तारतरलरत्नखचितहारवलयमण्डिते ।
 भालरुचिरचन्द्रशकलशोभि^३सकलनन्दिते^४ !
 देहि सततभक्तिमतुलमुक्तिमखिलवन्दिते ! ॥ ६२ ॥
 इत्यादिमहारकविप्रबन्धेषु शतशः प्रत्युदाहरणानि ।
 इति हीरम्* ।

१. ग. नास्ति । २. ग. शम्भु । ३. ग. कलशशोभि । ४. ग. सकलसनन्दिते ।

*टिप्पणी—वृत्तमुत्तावल्यां द्वितीयगुम्फे 'हीर'वृत्तास्य सुहीर हीर लघुहीरक परिवृत्ताहीरक-
 चेति चत्वारो भेदा निबद्धास्तेऽत्र प्रदर्शयन्ते—

प्रतिपट्कल यत्या रहित सुहीरम् ।

यथा-

रासललितलासकलितहासवलितशोभन,
 लोकसकलशोवशमलमोकमखिललोभनम् ।
 जातनयनपातजनितशातमुदितभारम,
 भाति मदनमानकदनमोशबदनसारसम् ॥ ५५ ॥

यथा-

प्रतिपट्कल यत्या सहित हीरम् ।
 सञ्जनवरगञ्जनकरमञ्जनरुचिराजित,
 कामहृदभिराममलिलसामरतिषभाजितम् ।
 नीलकमलशीलमुदितकीलधिरह्मोचन,
 जातिकुटिलपाति, मुदति भाति तव विलोचनम् ॥ ५६ ॥

२५. जनहरणम्

गगनविधुयतिमहित-वसुजयतिसहित-
 मनु वसुजविहितचरणयति,
 कुरु मुनिमुनिगणकल^१-विगन^२सकलमल-
 वरसगणवहुलपदविरतिम् ।
 वसुडगणकृतचरण सकलसुखकरण-
 मधिकरुचिघरणकविशरण,
 फणिवरनृपतिरचित-निखिलमनुजहित-
 सकलगुरुरहितजनहरणम् ॥ ६३ ॥

यथा-

वरजलनिधिजलशय निरुपमरुचिचय
 सुरगणहृतभय गतकुमते,
 बहुदितिसुतकुलहर निजजनसुखकर
 सुरमुनिगणवरकृतसुमते ।
 अमलकनकसुवसन कटिधृतसुरसन
 कुसुमनिभहसन सुखकरण,
 तव भवतु पदकमलमधिकतरविमल
 सुखद शुभयुगल भवतरणम् ॥ ६४ ॥

इति जनहरणम् ।

१ अत्र मुनिगणो विप्रगणपर्याय (स.) । २. ग. गलित ।

अत्र पटकलस्य सर्वलघुत्वे, तुर्याक्षरस्यैव गुरुत्वे वा छन्दोऽन्तरमुत्प्रेक्षितं भवति ।
 तच्च लघुहीरक परिवृत्तहीरक चेति व्यवहृत्तव्यम् । इयमपि यथा—

विरहगरलभरितलरलकुटिलसरसलोचना,
 चरणनखरकलितमदनयुवतिमदविमोचना ।
 अमलकमलरजनिर्मणमुकुरविलसितानना,
 त्वमिह जयसि सुतनु किरणवलितसकलकानना ॥ ५७ ॥

विलसदङ्ग रुचितरङ्ग ललितरङ्ग रञ्जनी,
 लसदपारपटिमभारमदनशरगञ्जनी ।
 सबलयामसुखदवामतरललामलीलना,
 जयसि नामहृदभिरामरतिनिकामशीलना ॥ ५८ ॥

२६ मदनगृहम्

प्रथमं द्विल^१सहितं वरगुरुमहितं
 विरती विमलसकल^२-चरणे श्रुति^३-सुखकरणे,
 नवडगणविकासितं मध्यविराजित-
 जनशुभदायकदेहघरं फणिभणितवरम् ।
 गगनावलिकल्पित-वसुमितजल्पित-
 वेदविधूदितप्रतिसहित^४ वसुयतिमहित,^५
 गगनोदधिमात्रं भवति विचित्रं
 मदनगृहं पवनविरहित^६ सकलकविहितम् ॥ ६५ ॥

पथा-

सुरनतपदकमलं हृतजनशमलं
 वारिजविजयिनयनयुगलं वारिद^७विमलं,
 दितिमुतकुलविलयं कमलानिलयं
 क्ल^८करयुगलकलितवलयं केलिपुं सलयम् ।
 चन्द्रकचित^९-मुकुटं विनिहतशकटं
 दुष्टकसहृदि बहुविकटं मुनिजननिकटं,
 गतयमुनारूपं कृतबहुरूपं
 नमतारूढहरितनीप^{१०} श्रुतिशतदीपम् ॥ ६६ ॥

पथा वाऽस्मत्पितु शिष्यस्तुली—

करकलितकपालं धृतनरमालं
 भालस्थानलहृतमदनं कृतरिपुकदनं,
 भवभयभरहरण^{११} गिरिजारमणं
 सकलजनस्तुतशुभचरितं गुणगणभरितम्^{१२} ।
 कृतफणिपतिहारं त्रिभुवनसारं
 दक्षमखक्षयसक्षुब्धं रमणीलूब्धं,
 गलराजितगरलं गङ्गाविमलं
 वैलाशाचलघामकरं प्रणमामि हरम् ॥ ६७ ॥
 इति प्रशुदाहरणम् ।
 इति मदनगृहम् ।

१ ग द्विलसहितम् । २ ग कमलम् । ३ ग प्रति । ४ क्ल महितम् । ५ ग वसुयतिमहितं नास्ति । ६ पवनविरहितं मदनगृहं इति पाठात् श्रुतिशतदीपकशेषोपनिरासं स्यात् । (स०) ७ ग वारिजः । ८ ग चरणम् । ९ ग चन्द्रकशुतः । १० ग हरितानीपम् । ११ क्ल ग भवभयभयहरणम् । १२ ग प्रतीकविहितम् ।

२७ मरहट्टा [महाराष्ट्रम्]

प्रथमं कुरु टगणं पुनरपि डगण शरपरिमितमतिशोभि,
 शेपे कुरु हार लघुमय सार कविजनमानसलोभि ।
 गगनेन्दौ विरति तदनु वसुर्याति पुनरथ विधुयुगलेऽपि,
 मरहट्टावृत्ते कविजनचित्ते नवयुगरचितकलेऽपि ॥ ६८ ॥

यथा-

गर्वावलिभासुर हतकंसासुर भुवि कृतविमलविलास,
 मुरलीभासितकर वृषभासुरहर वरतरुणीकृतरास^१ ।
 दावानलवालक^२ गोधनपालक हिमकरकरनिभहास,
 कृपया कुरु दृष्टि मयि सुखवृष्टि मुनिहृदि^३ जनितविकास ॥ ६९ ॥

इति मरहट्टा ।

इति श्रीवृत्तमौक्तिके धार्तिके चतुर्थे पद्यावलीप्रकरणम् ।

पञ्चमं सवया-प्रकरणम्

अथ सवया^१

सप्तभकारविभूपित पिगलभापितमन्तगुत्पहित^२,
 अन्यदथापि तथैव भभूपितमन्तगुरुद्वयसविहितम् ।
 अष्टसकारमयो गुरुसङ्गतमेतदथान्यदपि प्रथित,
 सप्तजकारविराजितमन्त्यलघु^३ गुरु^४मासितमन्यदिदम् ॥ १ ॥
 अन्यदिद [मुनिनायकभापितमन्त्यलघुं गुरुयुग्मसुयुक्त,
 योगचतुष्कलपूजित]^५मन्यदिद युगकह्लिकलाभिरमुक्तम्^६ ।
 पण्डितमण्डलिनायकभूपतिमानसरञ्जनमद्भुतवृत्त,
 सर्वमिद सवयामिधमुक्तमशेषकवीन्द्रविमोहितचित्तम् ॥ २ ॥

अथैतेषां भेदानां नामानि

मदिरा मालती मल्ली मल्लिका माधवी तथा ।
 मागधीति च नामानि तेषामुक्तान्यशेषत ॥ ३ ॥

ऋषेणोदाहरणानि^७, यथा^८—

१ मदिरा सवया

भालविराजितचन्द्रकल नयनानलदाहितकामवर,
 बाहुविराजितशेषफणीन्द्रफणामणिभामुरकान्तिधरम् ।
 भूधरराजसुतापरिमण्डितखण्डित^९नूपुरदण्डधर,
 नोमि महेशमशेषसुरेशविलक्षणवेषमुमेश^{१०} 'हरम् ॥ ४ ॥

इति मदिरा सवया ।

२ मालती सवया

चन्द्रवचारुचमत्कृतिचञ्चलमौलिविलुम्पित-^{११}चन्द्रविशोभ,
 वन्यनवीनविभूपणभूपितनन्दसुत वनिताधरलोभम् ।
 धेनुकदानवदारणदश-दयानिधिदुर्गमवेदरहस्य
 नोमि हरिं दितिजावलिमालित^{१२}-भूमिभरापनुद सुयदास्यम् ॥ ५ ॥

इति मालती सवया ।

१ ग सवईया । २ ग विहितम् । ३ म ग सपु । ४ ग मुनि । ५ कोष्क-
 ल्तोङो नास्ति क प्रतो । ६ ग क्लारसमुत्तम् । ७ ग तासां ऋषेणोदाहरणानि ।
 ८ ग तद्वपयः । ९ क प्रतो 'खण्डित' इत्यो षेव । १० ग मुनेः । ११ ग विल-
 पितम् । १२ ग दितिजावलिभारित ।

३ मल्लो सवया

गिरिराजसुताकमनीयमनङ्गविभङ्गकर गलमस्तकमाल,
 परिधूतगजाजिनवाससमुद्धतनृत्यकर विगृहीतकपालम् ।
 गरलानलभूपित दोनदयालु मदभ्रमरोद्धत^१-दानवकाल,
 प्रणमामि विलोलजटातटगुम्फितशेष^२ क्लानिधिलालितभालम् ॥ ६ ॥

इति मल्लो सवया ।

४ मल्लिका सवया

धुनोति मनो मम चम्पककाननकल्पितकेलिरय पवन,
 कथामपि नैव करोमि तथापि वृथा कदन कुरुते मदन ।
 क्लानिधिरेव वलादयि । मुञ्चति वह्निक्लापमलीकहिम
 विधेहि तथा मतिमेति यथा सविधेन पथा व्रजभूमहिम् ॥ ७ ॥

इति मल्लिका सवया ।

५ माघधी सवया

विलोलदिलोचनकोणविलोकित मोहितगोपवधूजनचित्त,
 मयूरकलापविकल्पितमौलिरपारक्लानिधिवालचरित्र ।
 करोति मनो मम विह्वलमिन्दुनिभस्मितसु दरकुन्दमुदन्त,
 सखीमिति^३ कापि जगाद हरेरनुरागवशेन विभावितमन्त ॥ ८ ॥

इति माघधी सवया ।

६ मागधी सवया

माघव^४विद्युदिय गगने तव कलयति पीतवसनमभिरामम्,
 जलधरनीलगगनपद्धतिरपि तव तनुश्चिमनुसरति निकामम् ।
 इन्द्रशरासनमपि तव वक्षसि भासितवरवनमालाशोभ
 [कुरु मम वचन सफल्य हृदय राधाधरमधुविरचितलोभम्^५] ॥ ९ ॥

इति मागधी सवया ।

उक्तानि सवयाख्यानि छन्दास्येतानि कानिचित् ।
 ऊह्यानि लक्ष्यमालोच्य^६ शेषाणि निजबुद्धित ॥ १० ॥

१ ग मबोधक । २ ग सखीरिति । ३ ग मागध । ४ चतुर्थचरण क प्रसो नास्ति । ५ ग धालोच्य ।

७ घनाक्षरम्^१

रसभूमिवर्णयतिक्^२ तदनु च दारभूमिविरतिक यत्तु^३ ।

विधुवह्निवर्ण^४ सङ्गतमिदमप्रतिम घनाक्षर वृत्तम् ॥ ११ ॥

यथा-

रावणादिमानपूर-द्वरनाशनेति वीर

राम कि विशालदुर्गमायाजालमेव ते,

मंथिलीविलासहास धूतसिन्धुवासर(रा)स^५

भूतपतिदारासनभङ्गकर^६ भासते ।

दीनदु खदानसावधान पारावारपार^७-

यान-वीरवानरेन्द्रपक्ष कि महामते^८,

ते रणप्रचण्डबाहुदण्डमेव हतुमत्र

वाणदावदग्धशत्रुसैनिका प्रकुर्वन्ते ॥ १२ ॥

इति घनाक्षरम् ।

इति वृत्तमीशितके वात्तिके^९ पञ्चम सधया^{१०} इकरणम् ।



१ ग सधया घाया । २ ग य ति । ३ ग यत्तु । ४ ग विधुर्को वृत्ती ।
५ ग वासतार । ६ ग सगकर । ७ ग पारावान । ८ ग भाति । ९ ग
सधया ।

पठं गलितकप्रकरणम्

अथ गलितकानि—

१. गलितकम्

शरकल पञ्चपरिमित जलधिकलयुग
प्रविलसति यस्मिन्शरणे लघुगुर्वनुगम्^१ ।
विधुयुगकलारचितमहिपतिफणिकलितकं
वरकविजनमानसहर^२ भवति गलितकम् ॥ १ ॥

यथा—

मल्लि^३—मालतियूथिपङ्कजकुन्दकलिके,
कुमुदचम्पककेतकिपरिमलबलदलिके^४ ।
मलयपर्वतशीतल त्वयि जातपवनः,
हरिवियोगतनोरिय मम कथं दहन. ॥ २ ॥

इति गलितकम् ।

२ विगलितकम्

ठगणद्वय^५ भवति चतुष्कलद्वयसङ्गत
तदनु च शरकल भवति सुललितकविसम्मतम् ।
दहनपक्षकलाविलसितविमलसकलचरण,
विगलितकमेतत् फणिपतिमधिकसुखकरणम् ॥ ३ ॥

यथा—

भवजलघितारिणि^६ सकलतापहारिणि गङ्गे,
अघदहनकारिणि रुचिधारिणि हरकृतसङ्गे ।
गिरिनिकरदारिणि मनोहारिणि तरलभङ्गे,
स्वपिमि वारिणि हसहारिणि तव विलसदङ्गे ॥ ४ ॥

इति विगलितकम् ।

३ सङ्गलितकम्

डगणयुगेन विराजित,
पञ्चकलेन सभाजितम् ।
सङ्गलितकमिति कल्पित,
फणिपतिपिङ्गलजल्पितम् ॥ ५ ॥

१. ग. गुर्वनुगः । २. ग मानसहर तवति । ३. ग. मल्लिका । ४. ग कुन्दचम्पकके
परिमलवल्लिके । ५. ख टगणद्वयम् । ६. ग. भवजलघितारिणि ।

धृतिमवधारय मानसे,
हरिमपि^१ गततनुरानशे ।
सखि । तव वचनं मानये,
ननु वनमालिनमानये ॥ ६ ॥
इति सङ्गलितकम् ।
४. सुन्दरगलितकम्

ठगणद्वयेन भापित,
लादित्रिकलविकासितम्^२ ।
सुन्दरगलितकनामकं,
वृत्तममलरुचिधामकम् ॥ ७ ॥

पद्या-

विगलितचिकुरविलासिनी,
नवहिमकरनिभहासिनीम् ।
सुवलराधिकान्तामये^३,
तनुजितकनकां कामये ॥ ८ ॥
इति सुन्दरगलितकम् ।
५. भूषणगलितकम्

ठगणद्वितय प्रथम चरणे,
रसभूमिसुसह्यकलाभरणे ।
त्रिकलद्वितय पुनरेव यदा,
फणिभापित-भूषणकेति तदा^४ ॥ ९ ॥

पद्या-

रुचिरवेणुविरावविमोहिता
द्रुतपदाः श्रुतरासरसं^५ हिता ।
हरिमदूरवने हरिणेक्षणा
रत्नमनुजम्भुरनन्यगतेक्षणाः^६ ॥ १० ॥
इति भूषणगलितकम् ।
६. सूक्तगलितकम्

पट्कृतं प्रथममय वेदत्रिकलयुत,
पुनरपि यच्चरणोपगतवलयचितम् ।

१. ग. हरिमपगत । २. ग. विस्तातिनम् । ३. ग. सुवलराविकात् । ४. ग. यदा ।
५. स. ग. रते । ६. ग. क्षणम् ।

गगनपक्षकलाकृतचरणविकासित,

मुखगलितकमिद वरफणिपतिभाषितम् ॥ ११ ॥

यथा-

ब्रह्म भवादिकनुतपदपङ्कजयुगल,

नाशितभक्तहृदयमतदारुणशमलम् ।

दीनकृपानिधि-भवजलराशितारक,

नौमि ह्रिं कमलनयनमशुभदारकम्^१ ॥ १२ ॥

इति मुल्लगलितकम् ।

७. विलम्बितगलितकम्

आदौ पट्कल तदनु चान्तगेन सहित,

जलनिधिकलचतुष्कमहिनायकेन विहितम् ।

समगणे जगणेन सहित^२ फणीन्द्रभणित,

विलम्बिताख्यमेतदखिलसुकवीन्द्रगणितम्^३ ॥ १३ ॥

यथा-

नमामि पङ्कजानन सकलदुःखहरण,

भवाम्बुराशितारक निखिलवन्यचरणम्^४ ।

कपोललोलकुण्डल^५ ब्रजवधूजनसहित,

विलासहासपेशल सरसरासमहितम् ॥ १४ ॥

इति विलम्बितगलितकम् ।

८ [१] समगलितकम्

उगणविभूष प्रथममवेहि पञ्चकलयुगयुत^६,

तदनु चतुष्कलयुगसहित विरतौ लगुरुमहितम्^७ ।

शरयुगमात्रासहितमनुत्तमपिङ्गलभाषित,

समगलितकमिदमतिमुखकरमुललितपदभाषितम् ॥ १५ ॥

यथा-

निखिलसुरगणविनुतपङ्कजकोमलचरणयुगल,

पीतवसनविलसितशरीरमनुत्तमकम्बुगलम् ।

नौमि निगमपरिगदितमपारगुणयुतमिन्दुमुख,

नन्दतनूज निखिलगोपवधूजनदत्तसुखम् ॥ १६ ॥

इति समगलितकम् ।

१ ग दायकम् । २ ग रहितम् । ३ ग गदितम् । ४. ग क.दां चरणम् ।

५ ग कुञ्ज । ६ ग ज्युतम् । ७ ग सधुगुरुसहितम् ।

८ [२]. अपरं समगलितकम्

समगलितक प्रभवति^१ विपमे यदि डगणत्रिकलाभ्या कलितकम्^२ ।

मुखगलितक समचरणे किल भवति निखिलपण्डितमुखवलितकम्^३ ॥ १७ ॥

यथा-

विभूतिसित शिरसि निवसिता^४ नुपमनदीभवपङ्कजविलसितम् ।

अहिप^५-रुचिर किमपि विलसिता^६ मम हृदि वेदरहस्यमतिमुचिरम् ॥ १८ ॥

इति द्वितीय समगलितकम् ।

८ [३] अपर सङ्गलितकम्

विपरीतस्थितसकलपदयुतमेव समगलितक सङ्गलितकम्^७ ॥ १९ ॥

विपरीतपठितमिदमेवोदाहरणम् । यथा-

शिरसि निवसिता^८ नुपमनदीभवपङ्कजविलसित विभूतिसितम् ।

किमपि विलसिता मम हृदि वेदरहस्यमतिमुचिर अहिप^९-रुचिरम् ॥ २० ॥

इति द्वितीय सङ्गलितकम् ।

८ [४] अपर लम्बितागलितकम्

शरमितडगणं स्याद् भाविता^{१०} निखिलपादे

विपमजगणमुक्ता चान्तगा^{११} विगतवादे ।

युगयुगकृतमात्राः कल्पिता^{१२} यदनुपाद,

फणिपतिमणितेय लम्बिता त्यज विपादम् ॥ २१ ॥

यथा-

राजति वशीरुतमेतत् वाननदेशे,

गच्छति वृष्णे तस्मिन्नथ मञ्जुलक्षेसे ।

याहि मया साद्वंमितो रासाहितचित्ते,

तत्सविके प्रेमविलोले तेन च वित्ते^{१३} ॥ २२ ॥

इति द्वितीय लम्बितागलितकम् ।

९ विक्तिपिकागलितकम्

दारोदितकलो यदि भाति^{१४} गणो विपमस्थितियुत

समस्थित (ति) विभूषितेन तदनु चतुष्कलेन युत ।

१. ग 'समगलितक' नास्ति, भवति च । २. ग. सकलितकम् । ३. ग. मुखवलितकम् ।
४. ग. निवासिता । ५. ग. अहिप । ६. ग. विलसिता । ७. ग. नास्ति । ८. ग.
विलसिता । ९. अ. ग. अहिप । १०. ग. भाविता । ११. ग. चान्तगावितवादे ।
१२. ग. कल्पिता । १३. ग. वित्ते । १४. ग. भाति ।

शरोदितगणैः परिभावितसकलचरणैः सहिता^१,
कवीन्द्रकथितान्तगुरुः^२ किल विक्षिप्तिका महिता^३ ॥ २३ ॥

यथा-

चन्द्रकचितमुकुटमखिलमुनिजनहृदयसुखकरणं,
धृतवेणुकलं वरभक्तजनस्याद्भुतं शरणम् ।
वृन्दावनभूमिषु बल्लवनारीमनोहरणं,
रुचिरं निजचेतसि चिन्तय गोवर्द्धनोद्धरणम्^४ ॥ २४ ॥
इति विक्षिप्तिकागलितकम् ।

१०. ललितागलितकम्

पूर्वं कथिता विक्षिप्तिकैव^५ चरणमुकलिता,
ठगणे^६ चतुष्कलेन भूपिता प्रभवति ललिता ॥ २५ ॥

यथा-

कमलापतिं कमलसुलोचनमिन्दुनिभाननं,
मञ्जुलपरिपीतवाससमपारगुणकाननम् ।
सनकादिकमानसजनितनिवाससमस्तनुतं,
प्रणमामि हरिं निजभक्तजनस्य हिते निरतम् ॥ २६ ॥
इति ललितागलितकम् ।

११. विषमितागलितकम्

पूर्वं^७ द्वितीयचरणे विषमस्थितिकपञ्चकलः,
तुर्ये^८ तृतीयचरणे प्रथम भवति चतुष्कलः ।
सकले समस्थित(ति)वेदकलो^९ विरतौ विरचिता,
या(यो)गेन^९ शरोक्तगणेन च सा भवति विषमिता ॥ २७ ॥

यथा-

वेणुं करे^{१०} कलयता सति ! गोपकुमारकेण,
पीताम्बरावृतशरीरभृता भयतारकेण ।
प्रेमोद्गतस्मितरुचा यनजभूषणशोभिना,
चेतो ममाऽपि क्वलीकृतं मानसलोभिना ॥ २८ ॥
इति विषमितागलितकम् ।

१. ग. सहिताः । २. ग. गुरुः । ३. ग. महिताः । ४. ग. धरणम् । ५. ग. विक्षिप्तिकः कविता च । ६. ग. ठगणेन । ७. ग. तुर्यं । ८. ग. कस्यो । ९. ग. तागेन । १०. ग. वेणुकरे ।

१२ मालागलितकम्

पद्कलविरचित तदनु च दश^१-सख्यडगण-

परिभावितचरणमुदेति मालाभिध गलितकम् ।

मध्यगुरुजगणेन विरचितसमस्तसमगण-

रसोदधिकलकमहीन्द्रफणिवदने^२ वलितकम् ॥ २६ ॥

यथा^३-

कालियकुलविभञ्जक-मसुरविडम्बक-दनुजविलुम्पक-

मखिलजनस्तुतगुभचरितमुनिनुत,

नोमि विमलतर सकलमुखकर कलिकलुपहर,

भवजलधितरि हरि पालने सुनियतम् ।

वसहृदि विकट मुनिगणनिकट विनिहतशकट

परिधृतमुकुट जगद्विरचनेऽतिचतुर,

भक्तजनशरण भवभयहरण वरमुखकरण

स्वपदवितरण जगन्नाशने धृतधुरम् ॥ ३० ॥

इति मालागलितकम् ।

१३ मृगमालागलितकम्^४

मालाभिख्यमेव^५ हि भवति चतुष्कल-

युगरहित फणिवदित्त^६ मृगधूर्वम् ॥ ३१ ॥

यथा^७-

वन्दे नन्दनन्दनमनवरत मरकतमुतनु धृतरुचि मुरारिमा(भी)श,

वादितवशमानतमुनिजन-नारदविरचितगानमवनीमणीमनीपम् ।

कारितरामहासपरवशरत विरचितसुरत विततकुङ्कुमेन पीत,

त देव प्रमोदभरसुविदित मुदितसुरनृत सततमात्मजेन गीतम् ॥ ३२ ॥

इति मृगमालागलितकम् ।

१४ जवृगलितकम्

मृगधूर्वकमेव टगणयुगलेन रहितपदमुद्गलितकम् ॥ ३३ ॥

यथा^८-

नन्दनन्दनमेव कलयति न किञ्चिदिह जगति सारमपर,

पुत्रमिश्रकलत्रमखिलमपि चित्रघटितमिव भाति न परम् ।

१. ग शरतस्य । २. ग फणिवदने । ३. ग ऋषभमुदाहरण, उदाहरण भाति ।

४. ग मृगमालागलितकम् । ५. ग मालाभिख्यमेव । ६. ग वित । ७. ग ऋषभमु-
दाहरण, उदाहरण भाति । ८. ग सप्तशानुत्तारादेव किञ्चिदिह/हरणमूह्यम्, उदाहरण भाति ।

सावधानतयैव लवमपि मन परमचलमिद न विदित
भावयन्तु दिवानिशमनिमिपमात्मनि परमपद प्रमुदितम् ॥ ३४ ॥

इत्युद्गलितकम् ।

एव गलितकादीनि वृत्ताभ्युक्तानि कानिचित् ।
लक्ष्याणि लक्ष्यमालक्ष्य शेषाणि निजबुद्धित * ॥ ३५ ॥

इति गलितक-प्रकरणं षष्ठम् * ।

[ग्रन्थकृतप्रशस्तिः]

रुध्रसूर्याश्वसरायात मानाच्छन्द इहोदितम् ।
सप्रभेदवसुद्वन्द्वशतद्वयमुदीरितम् २८८ ॥ ३६ ॥
सोदाहरणमेतावदस्मिन्खण्डे मयोदितम् ।
प्रस्तारसरयया तेषा भाषणे पिङ्गल क्षम ॥ ३७ ॥
^३श्रीचन्द्रशेखरवृते रचिरतरे वृत्तमौक्तिकेऽमुष्मिन् ।
मात्रावृत्तविधायकखण्ड सम्पूर्णतामगमत् ॥ ३८ ॥
द्याणमुनितर्कचन्द्रं [१६७५] गणितेव्दे वृत्तमौक्तिके रचिरम् ।
माघे धवलपक्षे पञ्चम्या चन्द्रशेखररचक्रे * ॥ ३९ ॥

* इत्यालङ्कारिचक्रचूडामणि छन्द शास्त्रपरमाद्याय सकलोपनिषदरहस्यार्णव-
वर्णधारधीलक्ष्मीनाथभट्टारमञ्ज-कविशेखर श्रीचन्द्रशेखरभट्ट-
विरचिते धीवृत्तमौक्तिके पिङ्गलशास्त्रिके
मात्राख्य प्रथम परिच्छेदे ।

धीरस्तु ।

१. ग पूर्णं पद्य नास्ति । २. ग इति वृत्तमौक्तिके गलितक प्रकरणं षष्ठं । तदनन्तरं ग प्रती निम्नपद्य वर्तते—

जनकुलपाल साहित्यबालं वादितमृदुतरदास,
रोधनपुत्रभाल धृतपनमाल शोभिततरलपशालम् ।
दितिप्रज्जाल वादिततास वृत्तमुरमुनिगणशत,
रचिरगलिततमाल जिनघनजाल भासितपादधनम् ॥

३. ग इति धीमच्छन्दशस्त्रवृते रचिरवरे वृत्तमौक्तिकेऽमुष्मिन् मात्रावृत्तविधायकखण्ड समाप्तम् । ४. ग पूर्णं पद्य नास्ति । ५. ग 'इत्याल प्रारभ्य 'परिच्छेद' पद्यतं पाठ नास्ति' ।

श्रीलक्ष्मीनाथभट्टसूनु-कविचन्द्रशेखरभट्टप्रणीतं

वृत्तमौक्तिकम्

द्वितीयः खण्डः

प्रथमं वृत्तनिरूपण - प्रकरणम्

[मङ्गलाचरणम्]

गिरोऽदिव्यद्^१ गङ्गाजलभवकलालोलकमला-

न्यल शुण्डादण्डोद्धरणविषयान्यारचयता ।

जटाया वृष्टाया द्विरदवदनेनाथ रभसा,

दुदश्रुर्गोरीश क्षपयतु मन क्षोभनिकरम् ॥ १ ॥

मात्रावृत्तान्युक्त्वा यौतूहलत फणीन्द्रभणितानि ।

अथ चन्द्रशेखरकृती वर्णच्छन्दासि कथयति स्फुटत ॥ २ ॥

[अर्थैकाक्षर वृत्तम्]

१ धी

यो ग । सा थी ॥ ३ ॥

पद्या-

श्री र्मा मव्यात् ॥ ४ ॥

इति धी १

२ अथ इ-

ल इ रि-ति ॥ ५ ॥

पद्या-

दा म यु ए ॥ ६ ॥

इति इ २

अर्थैकाक्षरस्य प्रस्तारगत्या द्वावेव भेदो भवत^१ ।

इत्यैकाक्षरं वृत्तम् ।

अथ द्व्यक्षरम्

तत्र-

३. कामः

गो चेत् कामो ।

नाग-प्रोक्तः ॥ ७ ॥

यथा

वन्दे कृष्णम् ।

केली-तृष्णम् ॥ ८ ॥

इति कामः ३.

४. अथ मही

लग्नी महीम् ।

वदत्यहिः ॥ ९ ॥

यथा-

रमापते ।

नमोऽस्तु ते ॥ १० ॥

इति मही ४.

५. अथ सारम्

वक्र-लौ च ।

सार-मन्त्र ॥ ११ ॥

यथा-

कंस-काल ।

नौमि बाल ॥ १२ ॥

इति सारम् ५.

६. अथ मधुः

द्विलक्ष्मि ।

मधुरिति ॥ १३ ॥

यथा-

मतिमव ।

मम भव ॥ १४ ॥

इति मधुः ६.

अत्रापि द्व्यक्षरस्य प्रस्तारगत्या चत्वार ४ एव भेदा भवन्तीति, तावन्तोप्युक्ताः ।

इति द्व्यक्षरम् ।

अथ त्र्यक्षरम्

तत्र-

७. ताली

पादे या म प्रोक्ता ।

ताली सा नागोक्ता ॥ १५ ॥

यथा-

गोवृन्दे सञ्चारी ।

पायाद् दुग्धाहारी ॥ १६ ॥

इति ताली ७. 'नारी'श्चग्यत्र ।

८ अथ शशी

शशीवृत्तमेतत् ।

यकारो यदि स्यात् ॥ १७ ॥

यथा-

मुदे नोऽस्तु कृष्णः ।

प्रियायां सतृष्णः ॥ १८ ॥

इति शशी ८.

९. अथ प्रिया

वल्लकी राजते ।

सा प्रिया भासते ॥ १९ ॥

यथा-

राधिका-रागिणम् ।

नौमि गोचारिणम् ॥ २० ॥

इति प्रिया .९

१०. अथ रमणः

त्रियते सगणः ।

फणिना रमणः ॥ २१ ॥

यथा-

सस्ति मे भविता ।

हरिरप्यचिता ॥ २२ ॥

इति रमणः १०.

११. अथ पञ्चालम्^१

पादेषु तो यहि ।

पञ्चाल-वृत्तं हि ॥२३॥

यथा-

शं देहि गोपेश ।

मन्दे महत्केस ॥ २४ ॥

इति पञ्चालम् ११.

१२. अथ मृगेन्द्रः

नरेन्द्रविराजि ।

मृगेन्द्रमवेहि ॥ २५ ॥

यथा-

विलोलवतंस ।

नमो घृतवंश ॥ २६ ॥

इति मृगेन्द्रः १२.

१३. अथ मन्दरः

भो यदि मुन्दरि ।

मन्दरमेव हि ॥ २७ ॥

यथा-

चञ्चलकुन्तल ।

नौमि सुमङ्गल ॥ २८ ॥

इति मन्दरः १३.

१४. अथ कमलम्

नमनुकलय ।

कमलममल ॥ २९ ॥

यथा-

अहिपवलय ।

सामिह कलय ॥ ३० ॥

इति कमलम् १४.

अत्रापि त्र्यक्षरस्य प्रस्तावगत्या अष्टौ भेदा भवन्तीति तावन्तोप्युदाहृताः ।

इति त्र्यक्षरम् ।

१. क. प्रती पाञ्चालवृत्तस्य लक्षणमुदाहरणे नोल्लिखिते ।

अथ चतुरक्षरम्

सत्र-

१५. तीर्णा

यस्मिन् कर्णो वृत्ते स्वर्णो ।
सा स्यात् तीर्णा नागोत्कीर्णा ॥ ३१ ॥

यथा-

गोपीचित्ताकर्णे सक्तम् ।
न्दे कृष्णं गोभिर्युक्तम् ॥ ३२ ॥
इति तीर्णा १५. 'कन्या' इत्यन्यत्र ।

१६. षय घारो

पक्षिभासि मेरुघारि ।
वारिराशि वर्णवारि* ॥ ३३ ॥

यथा-

गोपिकोडुसङ्घचन्द्र ।
नौमि जन्मपूतनन्द ॥ ३४ ॥
इति घारो १६.

१७. षय नगाणिका

विधेहि ज ततो गुहम् ।
नगाणिका भवेदरम् ॥ ३५ ॥

यथा-

विलोलमौलिभासुरम् ।
नमामि संहतासुरम् ॥ ३६ ॥
इति नगाणिका १७.

१८. षय शुभम्

द्विजवरमिह यदि ।
विदधत, शुभमिति ॥ ३७ ॥

यथा-

अशुभमपहरतु ।
हृदि हरिहृदयतु ॥ ३८ ॥
इति शुभम् १८.

अत्रापि चतुरक्षरस्य प्रस्तारगत्या षोडश १६ भेदा भवन्ति, तेषु चाद्यन्तभेद-
युक्ता ग्रन्थविस्तरसाङ्ख्याञ्च चत्वारो भेदा प्रदक्षिताः, शेषभेदा* शुधीभिरूह्या इति ।*

इति चतुरक्षरम् ।

१. य. वर्णवारि ।

*शेषभेदा. पञ्चमपरिनिष्टे इष्टव्याः ।

अथ पञ्चाक्षरम्

तत्र-

१६ सम्मोहा

आदौ म प्रोक्त पश्चात् कर्णोक्तम् ।
वाणार्णयुक्त सम्मोहावृत्तम् ॥ ३६ ॥

पथा-

वन्दे गोपाल दैत्याना कालम् ।
गोपीगोपाना पाल दीनानाम् ॥ ४० ॥

इति सम्मोहा १६

२० अथ हारी

यस्मिन् तकार पक्षोक्तहारः ।
पञ्चार्णयुक्त हारीति वृत्तम् ॥ ४१ ॥

पथा-

भ्रानन्दकारी गोपीविहारी ।
मा पातु बाल बेलीरसाल ॥ ४२ ॥

इति हारी २०

२१ अथ हस

आदिरथान्त कुण्डलयुक्त ।
मध्यगत सो यत्र स हस ॥ ४३ ॥

पथा -

नन्दकुमार सुन्दरहार ।
गोकुलपाल पातु स बाल ॥ ४४ ॥

इति हस २१

२२ अथ प्रिया

सगणाहिता लग-सयुता ।
भवतीह या किल सा प्रिया ॥ ४५ ॥

पथा -

सखि ! गोकुले सुखसकुले^१ ।
ब्रजसुन्दरो ननु निर्दय ॥ ४६ ॥

इति प्रिया २२-

२३. अय यमकम्

नमिह कुह लयुगमय ।
इति यमकमनुकलय ॥ ४७ ॥

यथा-

असुरयम शमिह मम ।
अनुकलय फणिवलय ॥ ४८ ॥

यथा वा-

लुपहर धरणिधर ।
दलितभव सुजनमव ॥ ४९ ॥

इति यमकम् २३

अत्र प्रस्तारगत्या पञ्चाक्षरस्य द्वात्रिंशद् ३२ भेदा भवन्ति, तेषु कतिचनोक्ताः शेषास्तूह्या ।*

इति पञ्चाक्षरम् ।

अय पडक्षरम्

तत्र-

२४ शेषा

नागाधीशप्रोक्त सर्वैर्दीर्घैर्युक्तम् ।
पङ्क्तिर्वर्णवृत्त* शेषाख्य स्याद् वृत्तम् ॥ ५० ॥

यथा-

वसादीना काल भोगोपीना पाल ।
पायान्मायावाल मुक्ताभूषामाल * ॥ ५१ ॥

इति शेषा २४

२५ अथ तिलका

यदिसद्वितयाचित सर्वं पदा ।
तिलकेति फणिवंदतीह तदा ॥ ५२ ॥

यथा-

कमनीयवपु शकटादिरिपु ।
जयतीह हरि भवमिन्धुतरि ॥ ५३ ॥

इति तिलका २५

१ ग विग्न इव । २ ल माल ।

*टिप्पणी—नेपभेदा पञ्चमपरिगण्ये द्रष्टव्या ।

२६. अथ विमोहम्

पक्षिराजद्वय यत्र पादस्थितम् ।

पिङ्गलेनोदित तद् विमोह मतम् ॥ ५४ ॥

यथा-

गोपिकामानसे य सदा व्यानशे ।

पातु मा सेवक सोऽहनद्यो बकम्^१ ॥ ५५ ॥

इति विमोहम् २६.

'विज्जोहा' इति स्त्रीलिङ्ग पिङ्गले*^१ ।

२७ अथ चतुरसम्

प्रथमनकार^२ तदनु यकारम् ।

कुरु चतुरसे फणिकृतशसे ॥ ५६ ॥

यथा-

विनिहतकस तरलवतसम् ।

नम घृतवश सुरकृतशसम् ॥ ५७ ॥

इति चतुरसम् २७

'चउरसा' इति स्त्रीलिङ्ग पिङ्गले*^२ ।

२८ अथ मन्यानम्

पादे द्वित देहि पङ्कवर्णमाधेहि ।

जानीहि नागोक्तमन्यानमेतद्धि ॥ ५८ ॥

यथा-

धूतासुराधीश गोगोपकाधीश ।

मा पाहि गोविन्द गोपीजनानन्द^३ ॥ ५९ ॥

इति मन्यानम् २८. स्त्रीलिङ्गमन्यत्र ।

२९ अथ शङ्खनारी

यदा स्तो यकारो रसप्रोक्तवर्णो ।

तदा शङ्खनारी फणीन्द्रोदिता स्यात् ॥ ६० ॥

यथा

व्रजे रासकारी मनस्तापहारी ।

वधूभि समेतो हरि. पातु चेत ॥ ६१ ॥

इति शङ्खनारी २९ 'सोमराजो' त्यन्यत्र ।

१. ख. पक्षिराज इति । २ क ख. पुस्तके 'नकार' स्थाने 'नमस्कार' पाठ

सोऽसमीचीन । (स०) ३. ख. प्रमन्द ।

*टिप्पणी—१ प्राकृतपञ्जलमपरिच्छेद २ पद्य ४५

*टिप्पणी—२ " " " ४७

३०. अथ सुमालतिका

जकारयुगेन विभाति युतेन ।

अहिर्वदतीति सुमालतिकेति ॥ ६२ ॥

यथा-

ब्रजाधिपवाल विभ्रूपितवाल ।

सुरारिविनाश नमाम्यनलाग ॥ ६३ ॥

इति सुमालतिका ३०. 'मालती'ति पिङ्गले* ।

३१. अथ तनुमध्या

यस्या शरयुग्मं कुन्तीसुतयुग्मे ।

ग्रन्थः खलु साध्या सा स्यात्तनुमध्या ॥ ६४ ॥

यथा-

राघामुखकारी वृन्दावनचारी ।

कसामुरहारी पायाद् गिरिधारी ॥ ६५ ॥

इति तनुमध्या ३१.

३२. अथ दमनकम्

नगणयुगलमिह रचयत ।

दमनकमिति परिकलयत ॥ ६६ ॥

यथा-

ब्रजजनयुत सुरगणवृत् ।

जय मुनिनुत ब्रजपतिमुत ॥ ६७ ॥

इति दमनकम् ३२.

अत्र प्रस्तारगत्वा षडक्षरस्य चतु पष्टि. ६४ भेदा भवन्ति, तेषु आद्यन्त-
सहिता कियन्तो भेदा उक्ता, शेषभेदा सुधीभिरुह्या । ग्रन्थविस्तरशङ्कया
नात्रोक्ता इति ।*३

इति षडक्षरम् ।६।

अथ सप्ताक्षरम्

तत्र-

३३. शीर्षा

वर्णा दीर्षा यस्मिन् स्युः पादेऽशीणा सख्याका ।

नागाधीशप्रोक्त तत् शीर्षामिथ्य वृत्त स्यात् ॥६८॥

यथा-

मुण्डाना मालाजालै-भास्वत्कण्ठं भूतेशम् ।

कालव्यालैः खेलन्तं वन्दे देव गौरीशम् ॥ ६९ ॥

इति शीर्षा ३३.

* स भास ।

*टिप्पणी—१ प्राकृतपिङ्गलम-परिकल्पे २ पद्य ५५ ।

*टिप्पणी—२ शेषभेदा. पञ्चमपरिशिष्टे द्रष्टव्याः ।

३४ अथ समानिका

पक्षिराजभासिता जेन सविभूषिता ।

अन्तगेन शोभिता सा समानिका मता ॥ ७० ॥

यथा-

फुल्लपङ्कजानन केलिशोभिकाननम् ।

वल्लवीमनोहर नौमि राधिकावरम् ॥ ७१ ॥

इति समानिका ३४.

३५ अथ सुवासकम्

द्विजमिह धारय भमनु च कारय ।

भवति सुवासक-मिति गुणलासक ॥ ७२ ॥

यथा-

विवुधतरङ्गिणि भुवि कृत^१रिङ्गिणि ।

तरलतरङ्गिणि जय हरसङ्गिनि ॥ ७३ ॥

इति सुवासकम् ३५.

३६ अथ करहञ्चि

नगणमिह धेहि तदनु समवेहि ।

इति किन्[श]राचि भवति करहञ्चि ॥ ७४ ॥

यथा-

न्नजभुवि विलास युवतिकृत[रा]स ।

जय निहतदैत्य जघन^२कृतशैत्य ॥ ७५ ॥

इति करहञ्चि ३६.

३७ अथ कुमारललिता

जकारयुतकर्णा मुनीन्द्रमितवर्णा ।

लघुद्वितयमध्या कुमारललिता स्यात् ॥ ७६ ॥

यथा-

द्रजाधिपर्किशोर नवीनदधिचोरम् ।

कुमारललित [त] नमामि हृदि सत्तम् ॥ ७७ ॥

इति कुमारललिता ३७.

३८ अथ मधुमती

नगणयुगयुता तदनु ग-महिता ।

वदति मधुमती-महिरतिमुमतिः ॥ ७८ ॥

यथा-

दितिसुतकदन शशधरवदन ।
विलसतु हृदि न तनुजितमदन ॥ ७६ ॥

इति मधुमती ३८

३६ अथ मदलेखा

आद्यन्ते कृतकर्णा शैलैः सम्मितवर्णा ।
मध्ये भेन विशेषा नागोवता मदलेखा ॥ ८० ॥

यथा-

गोपाल कृतरास गो - गोपीजनवासम् ।
वन्दे कुन्दसुहास वृन्दारण्यनिवासम् ॥ ८१ ॥

इति मदलेखा ३६.

४०. अथ कुसुमतति

द्विजमनुकलय नमनु विरचय ।
अहिरनुवदति कुसुमततिरिति ॥ ८२ ॥

यथा-

विपमशरकृत कुसुमततियुत ।
युवतिमनुसर मनसि-शयकर ॥ ८३ ॥

इति कुसुमतति ४०.

अत्र प्रस्तारगत्या सप्ताक्षरस्य अष्टाविंशत्यधिकं शत १२८ भेदा भवन्ति, तेषु आद्यन्तमहित भेदाष्टकं प्रोक्तं, शेषभेदा ऊहनीया सुबुद्धिभिर्ग्रन्थविस्तर-
दाङ्क्या नाशोक्ता इति ।*

इति सप्ताक्षरम् ।

अथ अष्टाक्षरं वृत्तम्

तत्र-

४१. विद्युन्माला

सर्वे वर्णा दीर्घा यस्मिन्नष्टौ न्यागापीशप्रोक्ता ।
अष्टधाबद्धो विद्युन्माला स्याद् विद्युन्मालावृत्तं तत् स्यात् ॥ ८४ ॥

यथा-

कण्ठे राजद्विद्युन्माला श्यामाम्भोदप्रत्यो बाल ।
गो-गोपीना नित्यं पाल पायात् कसादीनां बाल ॥ ८५ ॥

इति विद्युन्माला ४१

*१ शेषभेदा पञ्चमपरिनिष्टे इष्टभ्या ।

४२. अथ प्रमाणिका

शरैस्तथा च कुण्डलैः क्रमेण याऽतिशोभिता ।
गिरीन्द्रवर्णभासिता प्रमाणिकेति सा मता ॥ ८६ ॥

यथा-

विलोलमौलिशोभितं ब्रजाङ्गनासु लोभितम् ।
नमामि तन्ददारकं तटस्थचौरहारकम् ॥ ८७ ॥

इति प्रमाणिका ४२.

४३. अथ मल्लिका

हारमेरुमत्र देहि तं पुनः क्रमादवेहि ।
धेहि योगवर्णमासु (शु) मल्लिका कुरुष्व वासु ॥ ८८ ॥

यथा-

वेणुरन्ध्रपूरकाय गोपिकासु मध्यगाय ।
वन्धुहारमण्डिताय मे नमोऽस्तु केशवाय ॥ ८९ ॥

इति मल्लिका ४३.

इयमेव ग्रन्थान्तरे अष्टाक्षरप्रस्तारे समानिका इत्युच्यते । अस्माभिस्तु सप्ताक्षरप्रस्तारे समानिका प्रोक्तेति विशेषः ।

४४. अथ तुङ्गा

द्विजवरगणयुक्ता तदनु करतलोक्ता ।
पुनरपि गुरुसङ्गा फणिपतिकृततुङ्गा ॥ ९० ॥

यथा-

व्रजविहरणशीलः युवतिषु कृतलीलः ।
हृदि विलसतु विष्णुः दितिसुतकुलजिष्णुः ॥ ९१ ॥

इति तुङ्गा ४४.

४५. अथ कमलम्

नगण-सगणाचितं लघुगुरुविराजितम् ।
फणिनूपविकासितं कमलमिति भाषितम् ॥ ९२ ॥

यथा-

वरमुकुटभासुरः व्रजभुवि हतासुरः ।
व्रजनूपतिनन्दनः जयति हृदि चन्दनः ॥ ९३ ॥

इति कमलम् ४५.

४६ अथ माणवकक्रीडितकम्

भेन युत तेन चित दण्डकृत हारवृतम् ।
वेदर्यति नागमत माणवकक्रीडितकम् ॥ ६४ ॥

श्या-

वेणुघर तापहर^१ नन्दमुत बालयुतम् ।
चन्द्रमुख भक्तसुख नीमि सदा शुद्धहृदा ॥ ६५ ॥
इति माणवकक्रीडितकम् ४६

४७ अथ चित्रपदा

भद्रितयाचितकर्णा शैलविकासितवर्णा ।
वारिनिघौ यतियुक्ता चित्रपदा फणिनोक्ता ॥ ६६ ॥

श्या-

वेणुविराजितहस्त गोपकुमारकरास्तम् ।
वारिदसुन्दरदेह नीमि कलाकुलगेहम् ॥ ६७ ॥
इति चित्रपदा ४७

४८ अथ मनुष्टुप्

सर्वत्र पञ्चम यस्य लघु षष्ठ गुरु स्मृतम् ।
सप्तम समपादे तु ह्रस्व तत्स्यादनुष्टुभम् ॥ ६८ ॥

श्या-

कमल ललितापाङ्गि कालालिकुलसङ्कुलम् ।
विलूलत् कुन्तल सुध्रु^१ कलयत्यतुल सुखम् ॥ ६९ ॥
इति मनुष्टुप् ४८.

४९ अथ जलदम्

कुरु नगणयुगल मनु च लयुगमिह ।
वरफणिपतिवृत्ति^२ कलय जलदमिति ॥ १०० ॥

श्या-

नवजलदविमल धुमनयनकमल ।
कलय मम हृदय-मलिलजनसदय ॥ १०१ ॥
इति जलदम् ४९

अत्र च प्रस्तारगत्या अष्टाक्षरस्य षट्पञ्चाशदाधिकं द्विशत २५६ भेदा-
स्तेषु आद्यन्तसहितं क्रियन्तस्समुदाहृता, शेषभेदा प्रस्तार्ये समुदाहृतं व्या इति ।
इत्यष्टाशरम् ।

१. 'तापहर' क प्रती मारि । २ अ फणिपतिवृत्तमथ ।

*टिप्पणी—अन्त्यातरेषु सप्तत्ये द्वेषभेदास्ते पञ्चमपरिगण्ये इष्टव्या ।

अथ नवाक्षरम्

तत्र-

५०. रूपामाला

नेत्रोक्ता माः पादे दृश्यन्ते यस्मिन्नङ्गा वर्णा भासन्ते ।
यच्छ्रुत्वा भूपाला मोदन्ते तद् रूपामालाख्य प्रोक्तं ते ॥ १०२ ॥

यथा -

भव्याभिः केकाभिः सम्मिश्राः कुर्वन्त सम्पूर्णाः सर्वाशाः ।
एते दन्तीन्द्राणां संकाशा भेषाः पूर्णास्तस्मात् सन्त्वाशाः ॥ १०३ ॥

इति रूपामाला ५०.

५१. महालक्ष्मिका

वैनतेयो यदा भासते साऽपि चेद् वह्निना भूष्यते ।
रन्ध्रवर्णा यदा सङ्गताः सा महालक्ष्मिका सम्मता ॥ १०४ ॥

यथा-

कानने भाति वंशीरुतं कामवाणावलीसंयुतम् ।
मानसं भावनादाहितं शीतय स्वं मनो याहि तम् ॥ १०५ ॥

इति महालक्ष्मिका ५१.

५२. अथ सारङ्गम्

नगणयकारप्रथितं लघुयुगलैः^१ सकथितम् ।
कविजनसञ्जातमदं कलयत सारङ्गमिदम् ॥ १०६ ॥

यथा-

सखि हरिरायाति यदा विरचितकम्पेन हृदा ।
न किमपि वक्तुं कलये कथमपि दृष्टे वलये ॥ १०७ ॥

यथा वा-

प्रणमत सर्वाघहरं दितिमुतगर्वापिहरम् ।
सुरपतितर्वाहरण विलसदखर्वाचरणम् ॥ १०८ ॥

इति सारङ्गम् ५२.

इदमेव सारङ्गिकेति पिङ्गले* नामान्तरेणोक्तम् ।

१. क. युगलैः ।

*टिप्पणी—१ प्राकृतपंगलम्-परि० २, पद्य

५३ अथ पाइन्तम

यस्यादिर्वे मगणवृत्तश्चान्तो हस्तेन विरचित ।
मध्ये भो यस्य विलसित तत् पाइन्त फणिभणितम् ॥ १०६ ॥

यथा-

गोपालाना रचितसुख सम्पूर्णो-दुप्रतिममुखम् ।
कालिन्दीकेलिपु ललिन वन्दे गोपीजनवलितम् ॥ ११० ॥

इति पाइन्तम् ५३ पाइन्ता इति पिङ्गले* ।

५४ अथ कमलम्

नगणयुगलमहित तदनु करविरचितम् ।
फणिकृतमतिविमल प्रभवति किल कमलम् ॥ १११ ॥

यथा-

तरलनयनकमल रुचिरजलदविमलम् ।
शुभदचरणकमल कलय हरिमपमलम् ॥ ११२ ॥

इति कमलम् ५४.

५५ अथ बिम्बम्

द्विजवरनरेन्द्रकर्णे प्रविरचितनन्दश्वर्णे ।
फणिनृपतिनागवित्त कविमुखदबिम्बवृत्तम् ॥ ११३ ॥

यथा-

लुलितनलिनालसाक्ष शठललितवाचिदक्ष ।
कलयसि सुरागिवक्ष त्वमपि मयि जातभिक्ष ॥ ११४ ॥

इति बिम्बम् ५५.

५६ अथ तोमरम्

सगण मुदा त्वमवेहि जगणद्वय च विधेहि ।
नदसह्यथा वर्णविधारि बुरु तोमर सुखकारि ॥ ११५ ॥

यथा-

कमलेषु 'सलुलितालि वयुली[कृत] वरमालि ।
अवलोकये वनमालि वपुरेति'* किं वनमालि ॥ ११६ ॥

इति तोमरम् ५६

१. * ' चिह्नमभ्यग-पाठो नास्ति एव प्रती ।

* गिष्पणी—प्रायतान्द्वयम्-परि. २ पद्य ८० ।

पद्या-

माघवमासि हिमाशुकर चिन्तय चेतसि तापकरम् ।
माघवमानय जातरस चित्तमिदं मम तस्य वशम् ॥ १३३ ॥

इति सारवती ६४

६५ अथ सुपमा

आदौ ज(त)गण पश्चाद् यगण यस्यामनु पाद स्याद् भगण ।
हार कथितश्चान्ते महिता सेय सुपमा नागप्रथिता ॥ १३४ ॥

पद्या-

गोपीजनचित्ते सवलित वृन्दावनकुञ्जे सललितम् ।
वन्दे यमुनातीरे तरल कसादिकदैत्यानां गरलम् ॥ १३५ ॥

इति सुपमा ६५

६६ अथ अमृतगति

नगण-नरेन्द्र-नविहिता तदनु च चामरमहिता ।
अमृतगति कविकथिता फणिभणितोदधिमथिता ॥ १३६ ॥

पद्या-

सखि मनसो मम हरण हरिमुरलीकृत^१करणम् ।
भव मम जीवितशरण किमु कलये निजभरणम् ॥ १३७ ॥

इति अमृतगति ६६.

६७ अथ मत्ता

आदौ कुर्यान् भगणसुयुवत श्रेय पश्चाद् भगणसुवित्तम् ।
अन्ते हस्त कुरु युतहार मत्तावृत्त कविजनसारम् ॥ १३८ ॥

पद्या-

वृ दारण्ये कुसुमितकुञ्जे गोपीवृन्दै सह मुखपुञ्जे ।
रासासक्त जलशरनीले प्रेरे वन्दे भुवि वृत्तलीलम् ॥ १३९ ॥

इति मत्ता ६७

६८ अथ त्वरितगति

नगणवृत्ता जगणधृता नगणहिता गुरसहिता ।
इति ह फणिभणति यदा त्वरितगतिर्भवति तदा ॥ १४० ॥

यथा-

सरसमतिर्यदुनृपति परमततिस्त्वरितगति ।
क्षपितमद कलितगद सकलतरिर्जयति हरि ॥ १४१ ॥

यथा वा-

क्षितिबिजिति स्थितिबिहिति-भ्रंतरतय परगतध्र ।
उरु ररुधुगुरु दुधुवु-युधि कुरुव स्वमरिकुलभ ॥ १४२ ॥
इति दण्डिनी*१

इति स्वरितगति ६८

६९ अथ मनोरमम्

नगणपक्षिराजराजित कुरु मनोरम सभाजितम् ।
जगणकुण्डलप्रकाशित फणिप-पिङ्गलेन भाषितम् ॥ १४३ ॥

यथा-

कलय भाय नन्दनन्दन सकललोकचित्तचन्दनम् ।
दितिज-देवराजवन्दन कठिनपूतनानिकन्दनम् ॥ १४४ ॥
इति मनोरमम् ६९

स्त्रीलिङ्गमिदमन्यत्र*२ । अत्रापि न तेन काचित् क्षति ।

७० अथ सलितगति

दहननमिह कलयत तदनु शरमपि कुरुत ।
वदति फणिनृपतिरिति पठत ललितगतिमिति ॥ १४५ ॥

यथा-

ललितललिततरगति हरिरिह समुपसरति ।
तव नविधमयि सुदति ! सफल्य निजजगुरति ॥ १४६ ॥
इति सलितगति ७०.

अत्र प्रस्नारगत्या दशाक्षरस्य चतुर्विंशत्यधिक सहस्र १०२४ भेदा भवन्ति
तेषु किमन्तो भेदा लक्षिता, शेषभेदा [स्तु सुधोभिरुह्या] *१ ।*२

इति दशाक्षरं वृत्तम् ।

१ ए प्रस्तायं तत्रापीया ।

*टिप्पणी—१ काभ्यादां तृतीय परिच्छेद पद्य ८५

*टिप्पणी—२ दशमंशरी द्वि० स्त० वा० ३४

*टिप्पणी—३ ए यात्ररेपूरतया शेषभेदा पञ्चमपरिच्छेदे द्रष्टव्या ।

५७ अथ भुजगशिशुसृता

नगणयुगलसद्विष्ट तदनु मगणनिर्दिष्टम् ।

भुजगशिशुसृतावृत्त कलयत फणिना वित्तम् ॥ ११७ ॥

पद्या-

अनुपमयमुनातीरे नवपवत (कमल) लसन्तीरे ।

प्रणमत कदलीकुञ्जे हरिमिह सुदृशा पुञ्जे ॥ ११८ ॥

इति भुजगशिशुसृता ५७

सृता इत्येव शम्भुप्रभृतिषु पाठ । भृता इति आधुनिका पठन्ति*

५८ अथ मणिमध्यम

आदिभकार देहि तत सोऽपि गणाते^१ नागमत ।

मध्यमकारो भाति यदा स्थान्मणिमध्य नाम तदा ॥ ११९ ॥

पद्या-

वल्लवनारीमानहर पूरितवगीरावपरः ।

शोकुलनेता गोपुचर पानु हरिस्त्वा गोपवर ॥ १२० ॥

इति मणिमध्यम ५८

५९ अथ भुजङ्गसङ्गता

सगण विधेहि सङ्गत जगण ततोऽपि सयुतम् ।

रगण च नागसम्मता कथिता भुजङ्गसङ्गता ॥ १२१ ॥

पद्या-

मम दह्यते मनो भृश परिभावयाङ्गक कृशम् ।

कथयामि य तमानये धृतिमालि येन धारये ॥ १२२ ॥

इति भुजङ्गसङ्गता ५९

६० अथ सुललितम्

दहन-नमिह वित्तनु चरणमनु च सुतनु ।

फणिपतिनृपतिवृत्ति कलय सुललितमिति ॥ १२३ ॥

पद्या-

कलितललितमुकुट निहतदितिजशकट ।

मम सुखमनुकलय करयुगधृतवलय ॥ १२४ ॥

इति सुललितम् ६०.

अत्र प्रस्तारगत्या नवाक्षरस्य द्वादशाधिकपञ्चशत भेदेषु ५१२ आद्यन्त-
महिता एवादशभेदा प्रदशिता, दोषभेदा ऊहनीया ॥ ६ ॥**

इति नवाक्षरं वृत्तम् ।

१. स गणोक्ते ।

* टिप्पणी—१ एदोमञ्जरी द्वि० स्त० वारिवा २४

• टिप्पणी—२ अर्वागिष्टा प्राप्तभेदा पञ्चमपरितिष्टे पर्यालोभ्या ।

अथ दशाक्षरम्

सप्त प्रथमम्—

६१ गोपाल

वह्नेस्सख्याका मा पादे यस्मि द्रन्ते हारश्चैको युक्तो यस्मिन् ।
नागाधीशप्रोक्त तद् गोपाल पक्त्यर्णैर्मुक्तं मुह्यद्भूपालम् ॥ १२५ ॥

यथा—

गो-गोपालाना वृन्दे मञ्चारी भूमो दृष्यद्द्वैत्याना सहारी ।
यद्वेषुक्ववार्णर्मोह सप्रापु गोप्य सोऽध्यान् मा य देवा नापु ' ॥ १२६ ॥
इति गोपाल. ६१

६२. अथ सयुतम्

सगण विधाय मनोहर जगणद्वय च ततोऽपरम् ।
गुम्सङ्गत फणिजल्पित सखि । सयुत परिवल्पितम् ॥ १२७ ॥

यथा—

सखि गोपवेशविहारिण शिखिपिच्छूडविधारिणम् ।
मधुमुन्दराधरशालिन ननु कामये वनमालिनम् ॥ १२८ ॥

यथा सा—

व्रजनायिका हतकालिय बलयन्ति या मनसालि यम् ।
सदय मया सह शालिन कुरु तामु त वनमालिनम् ॥ १२९ ॥

इति सयुतम् ६२

सयुता इति स्त्रीलिङ्ग पिङ्गले ।*

६३ अथ चम्पकमाला

घ्रादिभकारो यत्र घृत स्यात् प्रेयमि पश्चान् मौपि मत स्यात् ।
अन्तमनारो गेन युत स्यात् चम्पकमालावृत्तमिद स्यात् ॥ १३० ॥

यथा—

सवमह जाने हृदय ते कामिनि । वि कोपेन घृत ते ।
पद्मत्रपानैर्लोचनपानै कामितमाप्त चेतसि ता तै ॥ १३१ ॥

इति चम्पकमाला ६३

दशमयतीति अन्यत्र । रूपयतीनि च षवचित् नामान्तरेण इयमेव श्रेया ।

६४ अथ सारवती

भद्रितयाचित गवंपदा पण्डितमण्डलिजातमदा ।
गेन युता किल सारवती नागमना गुणभारवती ॥ १३२ ॥

१. सा परंवातापु ।

* टिप्पणी—प्राकृतसंज्ञकम्, परि० २, पद्य ६० ।

अथ एकादशाक्षरम्

तत्र-

७१. मालती

यस्या पादे हारा रुद्रं सख्याता,
 सर्वे वर्णास्तद्वद् यस्या विख्याता ।
 सर्वेषा नागाना भूपेनोक्ता सा,
 मालत्युक्तेये लोकाना पूर्णाशा ॥ १४७ ॥

यथा-

सिन्धूना पृष्ठा^१ यत्पृष्ठे लीयन्ते,
 देत्यात् सर्वे वेदा येनादीयन्ते ।
 यत्पुच्छोच्छालं देवेन्द्रा घूर्णन्ते,
 धर्मं सोऽव्यान्मायामीनस्तूर्णं ते ॥ १४८ ॥
 इति मालती ७१

७२ अथ बन्धु-

भ्रत्रितय-प्रविकाशितवर्णं,
 शेषविभूषितभासुरकर्णं ।
 पण्डितचेतसि राजति बन्धु,
 पिङ्गलनागकृतो गुणसिन्धु ॥ १४९ ॥

यथा-

श्यामललोलगजालिसदृश-
 श्चण्डसमीरणकम्पितवृक्ष ।
 वारिधरस्तरुभञ्जितनोडं,
 भूततिवृष्टिकृतावनिपीडं ॥ १५० ॥
 इति बन्धु ७२

इदमेवान्यत्र बोधकमिति नामान्तरेणोक्तं, पिङ्गले* तु उट्टवणिकान्तरकृत-
 लक्षणाभ्तरमादाय रूपभेद इति न कश्चिद्विशेष फलत इति समञ्जसम् ।

७३ अथ सुमुक्षी

कुरु चरणे प्रथमं नगणं,
 तदनु च पक्षमित जगणम् ।

१. च प्रेष्ठा ।

*टिप्पणी—१ प्राकृतपंगलम् परि० २, पद्य १००

लघुमय ग च जनः सुमुखी,
भवति^१ यतः किल सा सुमुखी ॥ १५१ ॥

यथा-

तरुणविधूपमितं वदन,
मम हृदये कुरुते मदनम् ।
इति कथयश्चरणी नमते^२,
हरिरनुधेहि दृश वनिते ॥ १५२ ॥
इति सुमुखी ७३.

७४. अथ शालिनी

कृत्वा पादे नूपुरी हारयुग्म,
धृत्वा वीणामद्धितां चामरेण ।
पुष्पप्रोत चापि^३ कर्णं दधाना,
नागप्रोक्ता शालिनीयं विभाति ॥ १५३ ॥

यथा-

चन्द्राकी^४ ते राम^५कीर्त्तिप्रतापी,
चित्र शत्रुक्षोणिपालापकीर्त्तिम् ।
भासागाढध्वान्तमध्वसयन्ती,
त्रैलोक्यस्य^६ श्वेतता सन्दधाते ॥ १५४ ॥

यतिरप्यत्र वेदलोकज्ञेया ।

इति शालिनी ७४.

७५. अथ वातोर्मा

पूर्वं पादे मगणेन प्रयुक्ता,
या वै पदचाद् भगणेनाथ युक्ता ।
वातोर्माय तगणान्तस्थकर्णा,
वेदलोकं स यती रद्रवर्णा ॥ १५५ ॥

यथा-

मायामीनोऽवतु लोक समस्त,
लीलागत्या क्षुभिताम्भोधिमध्य ।
घात्रे दास्यन्नयन वेदरूप,
य कल्पाब्धी जगृहे तिर्यंगाख्याम् ॥ १५६ ॥
इति वातोर्मा ७५.

१. स. भवति अतः । २. स. भवते । ३. स. वाणि । ४. स. मीन । ५. स.

७६. अथानयोवपजातिः

चेद् वातोर्मोचरणानां यदि स्यात्,

पाठः साद्धं शालिनीवृत्तपादः ।

इन्द्रप्रोवताः सम्भवन्तीह भेदा-

स्तेपां नामान्युपजातीति विद्धि ॥ १५७ ॥

यथा-

गोपं वन्दे गोपिकाचित्तचौर,

हास्यज्योत्स्नालुब्धहृद्यच्चकोरम् ।

शब्दायन्तं^१ धेनुसधे धुनानं,

वक्त्रं वशीमधरे सन्दधानम् ॥ १५८ ॥

इति शालिनी-वातोर्म्युपजातिः ७६.

अनयोरेकत्र पञ्चमाक्षरगुरुत्वादपरत्र च पञ्चमलघुत्वात् अल्पो भेद इति चतुर्दशोपजातिभेदाः, पदेन पदाभ्यां पदैश्च परस्परं योजनात् प्रस्ताररचनया जायन्त इत्युपदेशः ।

७७. अथ दमनकम्

दहनमितनगणरचितं,

तदनु कुरु लघुगुरुयुतम् ।

फणिवरनरपतिमथित,

दमनकमिदमिति कथितम् ॥ १५९ ॥

१. ख. गवन्तं ।

*टिप्पणी—१ छन्दसोऽयं चतुर्दशभेदानां नामलक्षणोदाहृतयो ग्रन्थकृताप्यनुलिखिता, नैव चाग्नयत्र ग्रन्थेषु भवन्ति समुपलब्धाः, अतश्चात्र प्रस्ताररीत्या चतुर्दशभेदानां लक्षणान्यथो निरूप्यन्ते—

१. दा. वा. वा. वा.
२. वा. दा. वा. वा.
३. दा. दा. वा. वा.
४. वा. वा. दा. वा.
५. दा. वा. दा. वा.
६. दा. वा. वा. दा.
७. दा. दा. दा. वा.

८. वा. वा. वा. दा.
९. दा. वा. वा. दा.
१०. वा. दा. वा. दा.
११. वा. दा. वा. वा.
१२. वा. वा. दा. दा.
१३. वा. वा. दा. वा.
१४. वा. वा. वा. दा.

अत्र 'दा' 'वा' इति संश्लेषेण शालिनी-वातोर्मो क्रमशो ज्ञेये ।

यथा -

हृदि कलयत मधुमयन,
गिरिकृतजलनिधिभयनम् ।

रचितसलिलनिधिशयन,
तरलकमलनिभनयनम् ॥ १६० ॥

इति दमनकम् ७७.

७८. अथ चण्डिका

ग्रादिशेषशोभिहारभूपितौ,
विभ्रती पयोधरावदूपितौ ।

स्वर्णशङ्खकुण्डलावभासिता,
चण्डिकाऽहिभूषणस्य सम्मता ॥ १६१ ॥

यथा-

व्यालकालमालिकाविकाशित,
भालभासितानलप्रकाशितम् ।

शैलराजकन्यकासभाजित,
नीमि चारुचन्द्रिकाविराजितम् ॥ १६२ ॥

इति चण्डिका ।

सेनिका इति अन्यत्र । क्वचिच्च श्रेणीति^१ रगण-जगण-रगण-लघु-गुरुभिर्नि-
मान्तर, फलतस्तु न कश्चिद्विशेषः । किञ्च इयमेव चण्डिका यदि लघुगुरुक्रमेण
त्रियते तदा सेनिका इत्यस्म-मतम् । अतएव भूषणकारोऽपि^२ हारशङ्खविपरीता-
भ्या रूपनूपुराभ्या लघुगुरुभ्या क्रमशो मण्डिता चण्डिकामेव सेनिकामुदाजहार ।
त-मतमवलम्ब्य वयमपि सलक्षणमुदाहराम ।

७९. अथ सेनिका

शरेण कुण्डलेन च त्रमेण,
महेश-वर्णसख्यया भ्रमेण ।

समस्तपादपूरण विधेहि,
फणिप्रयुक्त-सेनिकामवेहि ॥ १६३ ॥

१ छ रेणीति ।

*टिप्पणी—हारशङ्खकुण्डलेन मण्डिता या पयोधरेण वीणयाङ्किता ।

रूपनूपुरेण चापि दुर्लभा सेनिका भुजङ्गराजवत्सला ॥ २१२ ॥

[वाणीभूषण द्वि० ध०]

यथा-

सरोजसस्तरादि सविधेहि,
 पिकालिवक्त्रमुद्रण विधेहि ।
 मुरारिवश्यजीवमालि देहि,
 मृतामया-यथा च मामवेहि ॥ १६४ ॥
 इति सेनिका ७६.

८०. अथ इन्द्रवज्रा

हारद्वय मेरुयुत दधाना,
 पादे तथा नूपुग्युग्मक च ।
 हस्त सुपुष्प वलयद्वय च,
 सधारयन्ती जयतीन्द्रवज्रा ॥ १६५ ॥

यथा-

आलोक्य वेदस्य मुरारिभीति,
 यो वैत्यदाव दय(दद)दादिदेव^१ ।
 पाठीनदेह^२ कठिन वभार,
 मीन^३ स नो मङ्गलमातनोक्षु ॥ १६६ ॥
 इति इन्द्रवज्रा ८०

८१ अथ उपेन्द्रवज्रा

पयोधर कुण्डलयुग्मयुक्त,
 विधारयन्ती वरमेरुयुग्मम् ।
 सहारपुष्प दधती सुकर्ण-
 मुपे द्रवज्रा रभमेन भाति ॥ १६७ ॥

यथा-

पराम्युधावामिपवत्सुधाशु^४,
 विलोकिन्तु पूर्वदरीगतस्य ।
 महन्द्रसिंहस्य विभाति जिह्वा,
 सम पुर सामिलरानुविम्बम्^५ ॥ १६८ ॥
 इति उपेन्द्रवज्रा ८१.

१. स ददादिदेव । २ स पाठान्दरेह । ३ स विष्णु । ४ वरतराशे ।
 ५ स सामिसुधाशुविम्बम् ।

८२. अयानयोरुपजातयः

उपेन्द्रवज्राचरणेन युक्तं,

स्यादिन्द्रवज्राचरणं यदैव ।

नागप्रयुक्तादश्च तदैव भेदाः,

महेन्द्रसंख्या उपजातयः स्युः ॥ १६६ ॥

यथा-

मुखन्तवैणाक्षि ! कठोरमानोः,

सोढुं कर नालमिति ध्रुवाणः ।

षटेन पीतेन वनेषु राधां^१,

चकार कृष्णः परिघूतवाधाम् ॥ १७० ॥

इति उपजातिः ८२.

भेदाश्चतुर्दशतस्याः क्रमतस्तु प्रदर्शिताः ।

प्रस्तार्य स्वनिबन्धेषु पित्राऽतिस्फुटस्ततः ॥ १७१ ॥

विलोकनीयां भेदास्ते नास्माभिस्समुदाहृताः ।

कथितत्वाद् विदोषेण ग्रन्थविस्तराङ्क्या*^१ ॥ १७२ ॥

१. छ. राधा ।

*टिप्पणी—१. ग्रन्थकृता वृत्तस्यास्य भेदानां लक्षणोदाहरणार्थं स्वपितृधीलक्ष्मीनायभट्टकृतो-
दाहरणमञ्जरी द्रष्टव्येति समुचितम्, किन्तु उदाहरणमञ्जरीपुस्तकस्या-
द्याप्यनुपलब्धत्वादत्रास्माभिः 'प्राकृतपङ्क्त्या' २(१२२) नामलक्षणानि, छन्द-
सूत्र- (निर्णयसागरसंस्करण) स्य अनन्तदमंभृतटिप्पणीत उदाहरणानि
समुद्धृतान्यथ प्रदर्शितानि—

१. कीर्तिः [उ इ. इ. इ.]

२. वाणो [इ. उ. इ. इ.]

३. मासा [उ. उ. इ. इ.]

४. घाला [इ. इ. उ. इ.]

५. हसी [उ. इ उ इ.]

६. माया [उ. उ. उ. इ.]

७. जाया [इ. उ. उ. उ]

८. घाला [इ. इ. इ. उ.]

९. घाद्री [उ. इ. इ उ]

१०. मद्रा [इ. उ. इ उ.]

११. प्रेया [उ. उ. इ उ]

१२. राया [इ इ. उ उ]

१३. वर्य' [उ इ उ उ]

१४. वृद्धि [इ. उ. उ. उ.]

१. कीर्तिः -

(उ.) स मानसीं मेहमसः तितु.रां,

(इ) कन्यां कुलस्य स्थितये स्थितिः ।

(इ) मेना मुनीनामपि माननीया-

(इ) मात्मानुरूपा विधिनोपयेमे ॥

[कुमारसम्भव १।१८]

२ घाषी—

(इ.) यः पूरयन् कीचकरध्रभागान्,

(उ) दरीमुखोत्थेन समीरणेन ।

(इ.) उद्गास्यतामिच्छति किन्नराणां,

(इ.) तानप्रदायित्वमिषोपगन्तुम् ॥

[कुमारसम्भव १।८]

३. माला—

(उ.) कपोलकण्डू करिभिविनेतु,

(उ) विषट्टिताना सरलद्रुमाणाम् ।

(इ.) यत्र स्नुतक्षीरतया प्रसूत,

(इ) सानूनि गन्ध सुरभीकरोति ॥

[कुमारसम्भव १।९]

४. शाला—

(इ.) उद्वेजयत्यङ्गुलिपाष्णिभागान्,

(इ.) मार्गे शिलीभूतहिमेऽपि यत्र ।

(उ.) न दुर्घन्धोणिपयोधरार्ता

(इ.) भिन्दन्ति मन्दा गतिमश्वमुख्यः ॥

[कुमारसम्भव १।११]

५. हसी [विपरीताख्यानिकी]

(उ) पद तुपारस्त्रुतिघोररक्तं,

(इ) यस्मिन्नदृष्ट्वापि हतद्विपानाम् ।

(उ) विदन्ति मार्गं नखरन्ध्रमुक्ते-

(इ) मूकजाफलैः वेसरिणा किराताः ॥

[कुमारसम्भव १।६]

६. माया—

(उ) प्रसीद विश्राम्यतु धीरवज्र,

(उ) दारैर्मदीयै वतम सुरारिः ।

(उ) बिभेतु मोघीवृत्तबाह्वीयं,

(इ) स्त्रीभ्योऽपि कोपस्फुरिताधराम्यः ॥

[कुमारसम्भव ३।६]

७ जाया—

(इ) बालकमेणाय तपो प्रवृत्तो,

(उ.) स्वरूपयोग्ये गुरतप्रसङ्गे ।

- (उ) मनोरम यौवनमुद्बहत्या
(उ) गर्भोऽभवद् भूधरराजपत्या ॥

[कुमारसम्भव १।१६]

८ बाला—

- (इ) य सर्वसैला परिकल्प्य वत्स,
(इ) मेरी स्थिते दोग्घरि दोहदक्षे ।
(इ) भास्वन्ति रत्नानि महीपधीश्च,
(उ) पूयूपदिष्टां दुदुर्धरित्रीम् ॥

[कुमारसम्भव १।२]

९ आर्श—

- (उ) दिवाकराद् रक्षति यो गुहासु,
(इ) नीन दिवाभीतमिवा-षकारम् ।
(इ) क्षुद्रंऽपि नूत सारण प्रपन्ने,
(उ) ममत्वमुच्चै शिरसां सतीव ॥

[कुमारसम्भव १।१२]

१० भद्रा (प्राणानिकी)—

- (इ) अस्त्युत्तरस्या दिशि देवतात्मा
(उ) हिमालयो नाम नगाधिराज ।
(इ) पूर्वापरौ तोयनिधौ वगाह्य,
(उ) स्थित पृथिव्या इव मानदण्ड ॥

[कुमारसम्भव १।१]

११ प्रेमा—

- (उ) अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य,
(उ) हिम न सौभाग्यविलोपि जातम् ।
(इ) एको हि दोषो गुणसनिपात,
(उ) निमज्जतोन्दो किरणेष्विवाङ्क ॥

[कुमारसम्भव १।३]

१२ रामा—

- (इ.) यश्चाप्सरोविभ्रममण्डनानां
(इ) सम्पादयित्री शिखरैर्बिभति ।
(उ) बलाहकच्छेदधिभक्ताराया
(उ) मकालस ध्यामिव धातुमत्ताम् ॥

[कुमारसम्भव १।४]

८३. अथ रथोद्धता

स्वर्णशङ्खवलयं रसाहितं,
 सुन्दरं करतलेन सङ्गतम् ।
 पुष्पहारमथ राविनूपुरं,
 विभ्रती विजयते रथोद्धता ॥ १७३ ॥

यथा-

यामिनीमधिजगाम धामत.,
 कामिनीकुलमनन्तसीरिणोः ।
 नामनी कथयदाशु संगलत्-
 सामिनीवि सखि नन्दनन्दनम् ॥ १७४ ॥ ३

यथा यथा-

गोपिके तव सुतोऽपि केवलो,
 मायिनामयि^१ ममापि नायक. ।
 'नीतमेव नवनीतमेधय-
 त्येष यः कपटवेपनन्दनः'^२ ॥ १७५ ॥
 इति रथोद्धता ८३.

८४. अथ स्वागता

हारभूपितकुचास्तनुवाण-
 भ्राजिता कुसुमकङ्कणहस्ता ।

१. क मायिनामय । २. ख. 'चोरपत्यनुदिन गृहे गृहे, न तमेव नवनीतमेधयत् ।

१३. श्रुति —

- (उ.) प्रसन्नदिव्यामुबिबिक्तवात,
 (इ.) शङ्खस्वनानन्तरपुष्पवृष्टिः ।
 (उ) शरीरिणां स्वावरजङ्गमाना,
 (उ) सुलाभ तज्जन्मदिन बभूव ॥

[कुमारसम्भव १।२३]

१४. बुद्धिः—

- (इ.) यत्राङ्गुकाशेषविलज्जितानां,
 (उ.) यदुच्छ्रया किंपुरुषाङ्गनानाम् ।
 (उ) शरीगृह्णारविसम्बिम्बा-
 (उ.) स्तिरस्करिष्यो जलदा भवन्ति ॥

[कुमारसम्भव १।१४]

नूपुरेण च विराजितपादा,
स्वागता भवति चेत् किमिहाऽन्यत् ॥ १७६ ॥

यथा

वल्लवीनयनपङ्कजभानु,
दानवेन्द्रकुलदावकृशानु ।
राधिकावदनचन्द्रचकोर,
सकटादवतु नन्दकिशोर ॥ १७७ ॥

इति स्वागता* १ ८४

८५ अथ भ्रमरविलसिता [१ ५

पूर्वं म स्यात् तदनु च भगण,
पश्चाद यस्मिन् प्रकटितनगण ।
अन्ते लो ग कविजनसहिता,
सेय प्रोक्ता भ्रमरविलसिता ॥ १७८ ॥

यथा-

स्वान्ते चिन्ता परिहर वनिते,
नन्दादेशात् सपदि मुललिते ।
आगन्तास्मिन् हरिरिह न चिर,
कुञ्जे शय्या सफलम् सुचिरम् ॥ १७९ ॥

इति भ्रमरविलसिता ८५

*टिप्पणी— १ रथोद्धता—स्वागतोपजातिवृत्तास्यास्य ग्रन्थेऽस्मिन्लक्षणावाहरणायनुस्लिखितानि,
नैव च ग्रन्थान्तरेषु समुपलब्धानि, अतोऽत्र चतुदशभेदानां प्रस्तारगत्या निम्न
लक्षणा येव समुदधिमतेऽस्माभिः —

१- र	स्वा	स्वा	स्वा	८	स्वा	स्वा	स्वा	र
२	स्वा	र	स्वा	स्वा	९	र	स्वा	स्वा
३	र	र	स्वा	स्वा	१०	स्वा	र	स्वा
४	स्वा	स्वा	र	स्वा	११	र	र	स्वा
५	र	स्वा	र	स्वा	१२	स्वा	स्वा	र
६	र	र	र	स्वा	१३	र	स्वा	र
७	स्वा	र	र	र	१४	स्वा	र	र

अत्र 'र' कारेण रथोद्धता 'स्वा'शब्देन स्वागतेति च सर्वोच्चा ।

८६ अथ अनुकूला

नूपुरमुच्चैः कलितसुराव,
 पुष्पसुहारं सरससुवक्रम् ।
 रूपविराजत्सबलयहस्तं,
 स्यादनुकूला यदि किमिहाऽन्यत् ॥ १८० ॥

यथा-

गोकुलनारीवलयविहारी,
 गोघनचारी दितिमुतहारी ।
 नन्दकुमारस्तनुजितमारः,
 पातु सहारः सुरकुलसारः ॥ १८१ ॥

इति अनुकूला ८६.

८७. अथ मोटनकम्

वन्दे वलयद्वयसवलितं,
 हस्तद्वितय कलयन्तममुम् ।
 गन्धोत्तमपुष्पसुहारधर,
 नागस्य सदा प्रियमोटनकम् ॥ १८२ ॥

यथा-

कृष्णं कलये वनितावलये,
 नृत्ये सरसे ललिते सलये ।
 दिव्यैः कुमुमैः कलित मुकुटे,
 स्तुत्य मुनिभिर्वलितं लकुटे ॥ १८३ ॥

इति मोटनकम् ८७.

८८. अथ मुकेशी

विभ्राणा वलयौ सुवर्णचित्रौ,
 संराजत्करसङ्गशोभमानौ ।
 हाराभ्यां ललितं कुच दधाना-
 माद्यन्तं वुहते न कं मुकेशी ॥ १८४ ॥

यथा-

गोपालं कलये विलासिनीनां,
 मध्यस्थं कलचारुहासिनीनाम् ।

फुर्वन्त वदनेन वशाराय,
 यस्तासा प्रकटीचकार भासः^१ ॥ १८५ ॥
 इति मुकेशो ८८
 ८८. अथ सुभद्रिका

अतनुरचितबाणपञ्चकं,
 कुसुमकलितहारसङ्गतम् ।
 कुचमनूदधती च नूपुरं,
 मुदमिह तनुते सुभद्रिका ॥ १८६ ॥

यथा-

हृदि कलयतु कोपि बालकः,
 सुललितमुखलम्बितालकः ।
 अलिविलसितपङ्कजश्रिय,
 परिकलयति य स मत्प्रियम् ॥ १८७ ॥
 इति सुभद्रिका ८९.

९०. अथ बकुलम्

द्विजवरगणयुगलमिति,
 तदनु नगणमपि भवति ।
 सुकविफणिपतिविरचित-
 मनुकलयत बकुलमिति ॥ १८८ ॥

यथा-

अथय कमलनिचयमिह,
 बकुलसयनमनुरचय ।
 कुरु मणिहृत्तिमिरगृह-
 मिह हरिरुपसरति सखि ! ॥ १८९ ॥
 इति बकुलम् ९०.

अत्रापि प्रस्तारगत्या रुद्रसख्याक्षरस्य ऋष्टचत्वारिंशदधिक सहस्रद्वय २०४८
 भेदा भवन्ति । तत्र कियन्तोऽपि भेदा प्रोक्ताः, शेषभेदाः प्रस्तार्यं सूचनीया इति^१ ।*

इत्येकादशाक्षरम् ।

१. ल भावम् । २. पवितद्वय नास्ति क प्रती ।

*टिप्पणी—१ अन्त्याक्षरेण समुपलभ्यमाना. शेषभेदाः पञ्चमपरिशिष्टे पर्यवेक्षणीयाः ।

अथ द्वादशाक्षरम्

तत्र-

६१. आपीडः

यस्मिन् वेदानां संख्याका मा दृश्यन्ते,
पादे वर्णाः सूर्येः सम्प्रोक्ता जायन्ते ।
आपीडाख्यं दिव्यं वृत्तं धेहि स्वान्ते,
सम्प्रोक्तं नागानामीशेनैतत्कान्ते ! ॥ १६० ॥

यथा-

कूर्मो, नित्यं मामव्यादत्यन्तं पीनः,
यत्पृष्ठेऽद्रिः कस्मिन्चित्कोणे संलीनः ।
यः सर्वेषां देवानां कार्यार्थं जात-
स्त्रं लोके नानारत्नादाता विख्यातः ॥ १६१ ॥
इति आपीडः ६१.

। - अयमेवान्यत्र विद्याधरः* १ ।

६२. अथ भुजङ्गप्रयातम्

लघुः पूर्वमन्ते भवेद् यत्र कर्णः,
रवेः संख्यया यत्र चाऽऽभाति वर्णः ।
तकारत्रयं यत्र मध्ये सुयुक्तं,
भुजङ्गप्रयातं तदा भावि वृत्तम् ॥ १६२ ॥

यथा-

चलत्कुन्तलं केलिलोलाकुलाक्षं,
सदा बल्लवीलालितं नन्दवालम् ।
कपोलोलसत्कुण्डलालङ्कृताऽऽस्यं,
विलोलामलस्रगूललामं नमामि ॥ १६३ ॥
इति भुजङ्गप्रयातम् ६२.

६३. अथ लघुमीधरम्

मानुसंख्यामितैरक्षरैर्भासितं,
वेदसंख्यैस्तथा पक्षिभिः सोभितम् ।
सर्वनागाधिराजेन संभाषितं,
सद्धि लघुमीधरं मानसे सोभितम् ॥ १६४ ॥

यथा-

वेणुनादेन संमोहयन् गोकुले,
वल्लवीमानसं रासकेलीं व्यधात् ।
यः सदा योगिभिर्वन्दितस्तं तदा*,
गोपिकानायकं गोकुलेन्द्रं भजे ॥ १६५ ॥
इति लक्ष्मीधरम् ६३.

इदमेवान्यत्र स्वगिष्णी* इति नामान्तरं लभते ।

६४. अथ तोटकम्

यदि वै लघुयुग्मगुरुक्रमतः
रविसम्मितवर्णं इह प्रमितः ।
अहिभूपतिना फणिना भणितं,
सखि तोटकवृत्तमिदं गणितम् ॥ १६६ ॥

यथा-

अलिमालितमालतिभिलंलितं,
ललितादिनितम्बवतीकलितम् ।
कलितापहरं कलवेणुकलं,
कलये नलिनामलपादतलम् ॥ १६७ ॥
इति तोटकम् ६४.

६५. अथ सारङ्गकम्

जायेत हारद्वयेनाथ शङ्खेन,
यद्वै क्रमात् सूर्यसख्यातवर्णेन ।
सारङ्गकं तत्तु सारङ्गनेत्रेण,
संभाषितं सर्वनागाधिराजेन ॥ १६८ ॥

यथा-

श्रीनन्दसूनो कथं घृष्ट गोपाल,
गोपीषु घाष्ट्यं विघत्से महामाल ।
आस्थाय वालैः सहाय सुखस्थस्य,
भीतिर्न ते कंसतो गोकुलस्य ॥ १६९ ॥
इति सारङ्गकम् ६५.

१. ल. हवा ।

*दिप्यणी—छन्दोमञ्जरी, द्वि० स्त० का० ७१, एवं वृत्तरत्नाकर द्वि० प्र० ।

६६. छय मौक्तिकदाम

पयोनिधिभूपतिमन्त्र विधेहि,

स्वराशुविराजितवर्णमवेहि ।

फणीन्द्रविकासितसुन्दरनाम,

हृदा परिभावय मौक्तिकदाम ॥ २०० ॥

यथा-

स्ववाहुबलेन विनाशितकस,

कपोलविलोलललामवतस ।

समस्तमुनीश्वरमानसहस,

सदा जय भासितयादववश ॥ २०१ ॥

इति मौक्तिकदाम ६६

६७ छय मोदकम्

वेदविभावितभ परिभावय,

भानुविभासितवर्णमिहानय ।

भामिनि ! पिङ्गलनागसुभापित-

मोदकवृत्तमितीह निभालय ॥ २०२ ॥

यथा-

नन्दकुमार विपारगुणाकर,

गोपवधूमुखकजदिवाकर ।

मद्वचन हितमाशु निशामय,

कुञ्जगृह ननु याहि^१ निशामय ॥ २०३ ॥

इति मोदकम् ६७.

६८. छय सुन्दरी

कुसुमरूपरसेन समाहिता,

ललितनूपुररावविहारिणी ।

कुचपुगोपरिहारविराजिता,

हरति कस्य मनो न हि सुन्दरी ॥ २०४ ॥

यथा--

उदयददंदिवाकररञ्जरे^१,

ललितवर्तुलवाद्यविशेषम् ।

सकलदिग्रचित विहगारवै ,

स स्तमातनुते विधिभिक्षुक ॥ २०५ ॥

यथा वा, 'वाणीभूषणे'*-

असुलभा शरदिन्दुमुखीप्रिया,

मनसि कामविचेष्टितमीदृशम् ।

मलयमारुतचालितमालती-

परिमलप्रसरो हृतवासर ॥ २०६ ॥

इति सुन्दरी ६८

६६. अथ प्रमिताक्षरा

सुमुगन्धपुष्पकृतहारकुचा',

सग्सेन शखरचितेन यथा ।

वलयेन शोभितकरा कुरुते,

प्रमिताक्षरा रसिकचित्तमुदम् ॥ २०७ ॥

यथा-

हरपञ्च इ(ए)व बभुगिरय ,

पतगास्तथा जगति हसनिभा ।

यमुनापि देवतदिनीव बभौ,

हिमभाससा जगति सबलिते ॥ २०८ ॥

यथा वा भूषणे'*-

अभजद् भयादिव नभो वसुधा,

दधुरेकतामिव समेत्य दिश ।

अभवन् महीपदयुगप्रमिता,

तिमिरावलीकवलिते जगति ॥ २०९ ॥

इति प्रमिताक्षरा ६९

१०० अथ चन्द्रवर्त्म

पक्षिराजमथन कुरु चरणे,

स विधेहि भगण सुखकरणे ।

हस्तमत्र कुरु पिङ्गलकथित,

चन्द्रवर्त्म कविभिर्हृदि मथितम् ॥ २१० ॥

१ क हचा ।

*टिप्पणी—१ वाणीभूषणम् द्वितीय अध्याय, पद्य २५२

" २ " " २५४

यथा—

देवकूलिनि मिलद्वनसलिले,
 दिव्यपुष्पकलिते सुरनमिते ।
 चन्द्रशेखरजटावलिवलिते,
 देहि शं मम सदा भुवि ललिते ॥ २११ ॥

यथा या—

चन्द्रवर्त्मं पिहितं घनतिमिरै-
 राजवर्त्मं रहितं जनगमनैः ।
 इष्टवर्त्मं तदलङ्कुरु सरसे,
 कुञ्जवर्त्मनि हरिस्तव कुतुकी ॥ २१२ ॥

इति छन्दोमञ्जर्यामपि*१ ।

इति चन्द्रवर्त्मं १००.

इति प्रथमं शतकम् ।

१०१. अथ द्रुतविलम्बितम्

कुरु नकारमथो भगणं ततः,
 सरवनूपुरपुष्पगुरुं कुरु ।
 कलय शब्दमतो गुरुरन्ततो,
 द्रुतविलम्बितवृत्तमिदं सखि ! ॥ २१३ ॥

अथापि समपादस्थयोः पादान्तलघ्वोः वैकल्पिकं गुरुत्वम् ।

यथा—मत्कृत 'पाण्डवचरिते' महाकाव्ये कर्णवर्णनप्रस्तावे—

नृपु विलक्षणमस्य पुनर्वपु-
 स्सहजकुण्डलवर्त्मसुमण्डितम् ।
 सकललक्षणलक्षितमद्भुतं,
 न घटते रथकारकुलोचितम् ॥ २१४ ॥

यथा या, तत्रैव विदुरोक्तौ—

भिदुरमानसमाशुचिचक्षुषं,
 स विदुरो निनदरतिभीषणैः ।
 सकलवालपराश्रमवर्णनैः
 सदसि भूमिपतिं समबोधयत् ॥ २१५ ॥

यथा वा, छन्दोमञ्जर्याम्^{१*}-

तरणिजापुलिने नवपल्लवी-
परिपदा सह केलिकुतूहलात् ।
द्रुतविलम्बितधारविहारिणं,
हरिमहं हृदयेन सदा वहे ॥ २१६ ॥
इत्यादि रघुवंशमहाकाव्यादिषु च सहस्रशो निदर्शनानि ।
इति द्रुतविलम्बितम् १०१.

१०२. अथ वंशस्थविला

पयोधरं हारयुगेन सङ्गतं,
करं तथा पुष्पसुकङ्कणान्वितम् ।
सुरावयुक्तं दधती च नूपुरं,
विभाति वंशस्थविला सखे ! पुरः ॥ २१७ ॥

यथा-

विलोलमौलि तरलावतंसकं,
व्रजाङ्गनामानसलोभकारकम् ।
करस्थवशं परिवीतवालकं,
हरिं भजे गोकुलगोपनायकम् ॥ २१८ ॥
इति वंशस्थविला १०२.

नपुसकमिदमन्यन्^२ । वंशस्तनितमिति ववचित् ।

१०३. अथ इन्द्रवशा

कर्णं सुरूपं घृतकुण्डलद्वयं,
पुष्पं भुग्न्ध दधती च नूपुरम् ।
वक्षोजसंभूपितहारवोभिनी,
स्यादिन्द्रवशा हृदि मोददायिनी ॥ २१९ ॥

यथा-

वृर्मः दा(स)मव्यान् मम यः पयोनिघो,
पृष्ठे महापर्वतघोरधर्षणात् ।

* टिप्पणी--१ छन्दोमञ्जरी, द्वितीय स्तवक, कारिकाया ७४ उदाहरणम् ।

२ 'वदन्ति वंशस्थविलं जती जरी' छन्दोमञ्जरी द्वि० स्त० का० ६६

कद्रू^१विनोदेन सुखातिसभ्रमान्,
निद्रां जगामालसमीलितेक्षणः ॥ २२० ॥

यथा वा-

कम्पायमाना सखि ! सर्वतो दिश,
क्षम्पा दधाना नवनीरदावलिः ।
कम्पायित सविदधाति भानसं,
मा पाहि नन्दस्य सुतं समानय ॥ २२१ ॥

इति द्व-द्रवशा १०३.

१०४. अघानयोवृषजातयः

यदीन्द्रवशाचरणेन सङ्गता^२,
पादोऽपि वंशस्थविलस्य जायते ।
भेदास्तदा स्युः सुरराजसख्यकाः,
नागोदितास्तेप्युपजातिसशकाः ॥ २२२ ॥

इति वंशस्थविलेन्द्रवशोपजाति.*^१ ।

अनयोरप्येकत्र प्रथमाक्षर लघुः, अपरत्र च प्रथमाक्षरं गुरुरिति स्वल्पभेदत्वाच्चतुर्दशोपजातिभेदाः पूर्ववदेव प्रस्ताररचनया भवन्ति । तथा चात्र सर्वत्र स्वल्पभेदाच्छब्दोभ्यामुपजातयो भवतीति उपदिश्यत इति दिक् ।

१. ख. कुण्डविनोदेन । २. ख. सङ्गत ।

*टिप्पणी—१ क. ख. प्रती वंशस्थविलेन्द्रवशोपजातेरदाहरणं न विद्यते ।

*टिप्पणी—२ ग्रन्थकारेण वंशस्थविलेन्द्रवशोपजातेषु तस्य चतुर्दशभेदाः स्वीकृताः, पर तत्तद्भेदानां सक्षणोदाहरणादिभिः प्रतिपादनं नैव कृतम् । अतोऽत्रास्माभिरन्यग्रन्थापारेण तत्तन्नामलक्षणोदाहरणानि प्रस्तूयन्ते ।

१. वैरासिनी	[व. इ. इ. इ.]	८. वासन्तिका	[इ. इ. इ. व.]
२. रताश्यानिनी	[इ. व. इ. इ.]	९. मन्दहासा	[नं. इ. इ. व.]
३. इन्दुमा	[व. व. इ. इ.]	१०. शिशिरा	[इ. व. इ. व.]
४. पुष्टिदा	[इ. इ. वं. इ.]	११. वैयात्री	[व. व. इ. व.]
५. उपमेया	[व. इ. व. इ.]	१२. दादुचूडा	[इ. इ. व. व.]
६. तोरभेयी	[इ. व. व. इ.]	१३. रमणा	[व. इ. व. व.]
७. शीतानुरा	[व. वं. वं. इ.]	१४. शूमारि	[इ. व. व. व.]

१. धरातिकी—

- व. महाघमूतामधिया समन्ततः,
 इ. सनह्य सद्यः सुतरामुदायुधाः ।
 इ. तस्म्युक्विनप्रधितिपालसङ्कुले,
 इ. तस्याङ्गणद्वारि बहिः प्रकोष्ठके ॥

[कुमारसम्भव १५।६]

२ रताल्पानिकी—

- इ. पर्य रनन्वीतवधूमुलद्युतो,
 व. गता न हसीः श्रियमातपत्रजाम् ।
 इ. दूरेऽभवन् भोजबलस्य गच्छत,
 इ. शैलोपमातीतगजस्य निम्नगाः ॥

[शिशुपालवधम् १२।६१]

३ इण्डुमा—

- व. चमूप्रभु मन्मथमर्दनात्मजं,
 व. विजित्वरीभिर्विजयधियाश्रितम् ।
 इ. श्रुत्वा सुराणां वृत्तनाभिरागत,
 इ. चित्ते चिर चुक्षुभिरे महासुराः ॥

[कुमारसम्भव १५।२]

४ पुष्टिदा—

- इ. श्रुत्वेति वाच विपतो गरीयसी,
 इ. क्रोधादहङ्कारपरो महासुर ।
 व. प्रकम्पितारोपजगत्त्रयोऽपि स-
 इ. प्राकम्पनोच्चैदिवमम्यधाञ्च स ।

[कुमारसम्भव १५।३६]

५ उपमया [रामणीयकम्]—

- व. नितान्तमुत्तुङ्गतुरङ्गहेपितै-
 इ. ष्ट्यामदानद्विपवृ हितैः शतैः ।
 व. चलद्दृष्वजस्यन्दननेमिनि स्वने-
 इ. श्वाभून्निष्कृष्वःसमयाकुल नम ।

[कुमारसम्भव १५।४१]

६ सौरभेयी—

- इ. सङ्गेन यो गर्भतपस्विन शिशु
 व. वंराक एयोऽन्तमवाप्स्यति ध्रुवम् ।
 व. भ्रतस्करस्तस्करसङ्गतो ययो,
 इ. तद्वो निहन्मि प्रथम ततोप्यमुन ।

[कुमारसम्भव १५।४२]

७. शीलातुरा—

व निवार्यमाणं रभितो नुयायिभि-
 व. ग्रंहीतु कामैरिव त मुहुमुहु ।
 व अपाति गृध्रं रभिमौलि चाकुलै-
 इ भंविष्यदेतन्मरणोपदेशिभि ।

[कुमारसम्भव १५।२६]

८. वासंतिका—

इ अभ्याजतोऽभ्यागततूर्णतर्णका-
 इ निनर्माणहस्तस्य पुरो दुधुक्षत ।
 इ वर्गाद्गवा ह्रुकृतिचारु निर्येती-
 व मरमंधोरक्षत गोमतल्लिकाम् ।

[शिशुपालवध १२।४१]

९. मन्दाहासा—

व न जामदग्न्य क्षयकालरात्रिकृत्,
 इ स क्षत्रियाणां समराय वल्गति ।
 इ येन त्रिलोकीसुभटेन तेन ते,
 व कुतोऽवकाश सह विग्रहग्रहे ।

[कुमारसम्भव १५।३७]

१०. शिशिरा—

इ साऽवशमुन्मील्य विलोचने सहृत,
 व क्षण मृगेन्द्रेण सुपुप्सुना पुन ।
 इ संयात यात समयाऽपि विव्यये,
 व कथ सुराजम्भवमययाऽपवा ।

[शिशुपालवध १२।५२]

११. वेधात्री—

व प्रयाति मन्त्र (न्त्रै) प्रशम भुजङ्गमा
 व न मन्त्रसाध्यास्तु भवति घातव ।
 इ केचिच्च कञ्चिच्च ददाति पन्नगा,
 व सदा च सर्वं च तुदति घातव ।

[सौन्दरानन्द]

१२. दाह्यधूषा—

इ निम्ना प्रदेसा स्थलतामुपागमन्
 इ निम्नत्वमुच्चैरपि सर्वतदथ ते ।
 व. तुरङ्गमाणां व्रजतां सुरैः शठा-
 व. रथैर्गजेभ्यः परितः समीकृता ॥

[कुमारसम्भव १५।४४]

१०५ अथ जलोद्धतगति

अवेहि जगण ततोऽपि सगण,
विधेहि जगण पुनश्च सगणम् ।
फणोन्द्रकथिता जलोद्धतगति,
चकास्ति हृदये कृतातिमुमति ॥ २२३ ॥

यथा-

नवीननत्तिनोपमाननयन,
पयोदरुचिर पयोधिसायनम् ।
नमामि कमलामुसेवितहरि,
सदा निजहृदा भवाम्बुधितरिम् ॥ २२४ ॥
इति जलोद्धतगति १०५

१०६ अथ बंश्वदेवी

कर्णा जायन्ते यत्र पूर्वं नियुक्ता,
बह्लेस्सल्याका यद्वयेन प्रयुक्ता ।
वाणार्णेदिद्यता वाजिभिस्चापि भिन्ना,
नागेनोक्ता सा बंश्वदेवी विभाति ॥ २२५ ॥

यथा-

बन्दे गोविन्द चारिणी राजमान,
श्रीलक्ष्मीकान्त नागतल्पे शयानम् ।
अत्यन्त पीत वस्त्रयुग्म दधान,
पादर्वे तिष्ठत्या पद्मया सेव्यमानम् ॥ २२६ ॥
इति बंश्वदेवी १०६.

१३ रमणा-

व बली बलारातिबलाऽतिशासन,
इ दिग्दन्तिनादद्रवनासनस्वनम् ।
व महीधराम्भोधिनवारितक्रम,
व मयो रथ घोरमयाधिरुह्य स ॥
[कुमारसम्भव १५।८]

१४ कुमारी-

इ किं ब्रूय रे व्योमचरा महामुरा,
व स्मरारिसूनुप्रतिपक्षवतिन ।
व मदीयवाणव्रणवेदना हि सा
व ऽधुना कथं विस्मृतिगोचरीकृता ।
[कुमारसम्भव १५।४०]

१०७ अथ मन्दाकिनो

इह यदि नगणद्वय जायते,
तदनु च रगणद्वय दीयते ।
फणिपमुखसुमेरुमन्दाकिनी,
प्रभवति हि तदेव मन्दाकिनी ॥ २२७ ॥

यथा-

सखि ! मम पुरतो मुरारे कथा,
कुरु न कुरु तथा वृथाऽन्या कथाम् ।
दि मधुरिपुरेति वृन्दावन,
कलय मम तदा शरीरावनम् ॥ २२८ ॥

इति मन्दाकिनो १०७

क्वचिदियमेव प्रभेति*^१ नामान्तर लभते । 'सह शरधि निज तथा कार्मुकम्'
इत्यादि किराते*^२ । यथा वा- 'अतिसुरभिरभाजि पुष्पश्रिया' इति माघेऽपि । *^३

१०८ अथ कुसुमविचित्रा

विरचय विप्र तदनु च कर्णं,
पुनरपि तद्वत् कुरु रक्विवर्णम् ।
श्रुतिमितपादे विमलचरित्रा,
परमपवित्रा कुसुमविचित्रा ॥ २२९ ॥

*टिप्पणी-१ वृत्तारस्नाकर अ० ३, का० ६५

*टिप्पणी-२ सह शरधि निजस्तथा कार्मुक
वपुरतनु तथैव सर्वात्मितम् ।
निहितमपि तथैव पश्यन्नासि,
वृषभगतिरुपाययौ विस्मयम् ॥

[किरातार्जुनीयम् स० १८, प० १६]

*टिप्पणी-३ अतिसुरभिरभाजि पुष्पश्रिया-
मतनुतरत्तयेव सतानक ।
तरुणपरभूत स्वन रागिणा-
मतनुन रतये वसन्तानक ॥

[दिगुपालवधम् स० ६, प० ६७]

यथा-

मययुतचित्तौ विगतविलम्ब,
 कथमपि यातो हरितकदम्बम् ।
 तरणिसुतायास्तटभ्रुवि कृष्ण,
 स जयति गोपीवसनसतृष्ण ॥ २३० ॥

इति कुसुमविचित्रा १०८.

१०९ अथ तामरसम्

सरससुरूपसुगन्धसशोभ,
 कुचयुगलसङ्गमसवृत^१लोभम् ।
 रसयुतहारयुगाहितमुक्त,
 कलयत तामरस वरवृत्तम् ॥ २३१ ॥

यथा -

विलसति मालतिपुष्पविकास,
 न हि हरिदर्शनतो वनवास ।
 सखि । नवकेतकिकण्टककर्प्य,
 वनकलितोनुतनूरुहहर्ष ॥ २३२ ॥

इति तामरसम् १०९

११० अथ मालती

कलय नकारमतोपि नायकौ,
 तदनु विधारय पक्षिणा पतिम् ।
 कणिपतिपिङ्गलनागभायिता,
 कविहृदि राजति मालती मता ॥ २३३ ॥

यथा-

कलयति^२ चैतसि नन्ददारक,
 सकलवधूजनचित्त^३हारकम् ।
 निखिलविमोहकवेणुधारक,
 दितिमुत्तमद्विनाशवारकम् ॥ २३४ ॥

इति मालती ११०

कुत्रचिद् द्वयमेव यमुना इति नामान्तर लभते । 'अयि विजहीहि दृढोपगूहनम्'
इत्युदाहरणान्तर भारविस्थिरम्* ।

१११. अथ मणिमाला

आदौ विदधाना हारो वरमेरू,

युक्ता रववद्भ्या सन्नूपुरकाभ्याम् ।

कर्णे रसपुष्पोद्यत्कुण्डलयुग्मा,

द्वित्रा रसयुक्तैर्वर्णैर्मणिमाला ॥ २३५ ॥

यथा-

गौरीकृतदेह व्यालावलिमाल,

नृत्ये विद्युनान कृत्ति पुरकालम् ।

लोलानलकालं* सभूपितभाल,

कामै शरण त्व सप्राप्य शिवालम् ॥ २३६ ॥

इति मणिमाला १११

११२ अथ जलधरमाला

यस्यामादौ पदविरती वा कर्णा,

पक्षप्रोक्ता दिनकरसख्यावर्णा ।

मध्ये विप्रो जलनिधिशैलैश्छिन्ना,

नागप्रोक्ता जलधरमाला भिन्ना ॥ २३७ ॥

यथा-

शीतं पुष्पैरभिनवशय्या कृत्वा,

ताम्यच्चित्ता मलयजभूति धृत्वा ।

वक्षस्पीठे तव सुचिर ध्यायन्ती,

तिष्ठत्येषा शठविधिदोष पश्यन्ती ॥ २३८ ॥

इति जलधरमाला ११२

१ स कोलं ।

*टिप्पणी—१ अयि विजहीहि दृढोपगूहनम्
एवम नवसङ्गमभीरु ! बल्लमम् ।
अदणवरोद्गम एव वतते,
वरतनु ! सप्रवर्द्धित शुक्कुटा ॥

पद्यमिदं वृत्तभोक्तककारेण छन्दोमञ्जरीवृत्ता च भारवे स्वीकृतं किन्तु तद्वृत्तौ
निरात्राजुं नीये तु नास्त्वपसन्धिरस्य । पत्तोऽयम चोद्यम् ।

११३. अथ प्रियंवदा

कुसुमसङ्गतकरा रसाहिता,
विमलगन्धकुचहारभूषिता ।
सरुतनूपुरमुदोभिता सदा,
जयति चेतसि सखे ! प्रियंवदा ॥ २३६ ॥

यथा-

व्रजवधूजनमनोविमोहनं,
सरसकेलिषु कलानिकेतनम् ।
सरसचन्दनविलेपचर्चितं,
कलय चेतसि हरिं सदाचितम् ॥ २४० ॥

इति प्रियवदा ११३.

११४. अथ ललिता

हारद्वयाचितकुचेन भूषिता,
हस्तस्थितोज्ज्वलसुषुप्पकङ्कणा ।
पादे विरावयुतनूपुराञ्जिता,
चित्ते चकास्ति ललिता विलासिनी ॥ २४१ ॥

यथा-

गोपीषु केलिरससकचेतसं,
सूर्यात्मजा विलुलितातिवैतसम् ।
चित्तावमोहकरवैणुधारकं,
वन्दे सदा ललितनन्ददारकम् ॥ २४२ ॥

इति ललिता ११४.

इयमेव अन्यत्र सुललिता इति गणभेदेन उक्तम् । अतएव 'तो भो जरी सुललिता श्रुतो यतिः ।' इति वृत्तसारे सयति लक्षणं लक्षितमिति ।

११५. अथ ललितम्

धेहि भकारं तदनु च तगणं,
धारय नं वा तदनु च सगणम् ।
वाणविराम फणिपतिकलितं,
चेतसि वृत्तं कलयत ललितम् ॥ २४३ ॥

पथा-

चेतसि कृष्ण कलयति^१ ललित,
गोकुलगोपीजनहृदि वलितम् ।
वादितवश तरलितमुकुट,
कारितरास विनिहतशकटम् ॥ २४४ ॥

इति ललितम् ११५

इदमेव अन्यत्र ललना*^२ इत्युक्तम् ।

११६ अथ कामदत्ता

द्विजवर-सगणौ विधेहि तूणं,
जगणमथ ततोऽपि देहि कर्णम् ।
सरससुकविपिङ्गलेन वित्ता,
लसति कविमुखेषु कामदत्ता ॥ २४५ ॥

पथा-

कलपरिमलचञ्चलालिमाल,
सुललितदलमालतीविशालम् ।
वनमिदमलिसलुलद्रसाल,
हरिमिह हि विना सुखाय नालम् ॥ २४६ ॥

इति कामदत्ता ११६

११७ अथ वसन्तघटवरम्

यदा लघुगुंश क्रमेण भासते,
खराशुवर्णकेन चेद् विकासते ।
फणोन्द्रनागभाषित सुसत्वर,
विधेहि मानसे वसन्तचत्वरम् ॥ २४७ ॥

पथा-

मुदा विलोत्तमौलिगोपनायक,
हृदा सदैव चित्तमोददायकम् ।
यदा विभावयिष्यसि त्वमाशु रे,
तदा मुसे निमज्जितासि^३ भासुरे ॥ २४८ ॥

इति वसन्तघटवरम् ११७

१ ल ल वसयति । २ ल. निमज्जयति प्रभासुरे ।

* टिप्पणी—१ ए-द-गुंश टि०पु० ११७

१२८. अथ प्रमुदितवदना

सरसकविजनाहिता भाविता,
भवति सुकविपिङ्गलेनोदिता ।
सकलरसिकचित्तहृद्या तदा,
प्रमुदितवदना तु नो रो यदा ॥ २४६ ॥

यथा-

कलय सखि ! विराजि वृन्दावनं,
सहचरि ! कुरु मे शरीरावनम् ।
यदि कथमपि मानसे भावयेः,
यदुकुञ्जतिलकं तदेवानये ॥ २५० ॥
इति प्रमुदितवदना ११८.

इयमेव अन्यत्र प्रभा* ।

११९. अथ नवमालिनी

सखि ! नवमालिनी रसविरामां,
ननु कलयालि पूर्वयतिमुक्ताम् ।
नजभयकारभावितपदाढ्या,
फणिपतिनागपिङ्गलविभक्ताम् ॥ २५१ ॥

यथा-

इह कलयालि ! नन्दसुतवाल,
नवघनकान्तिनिजिततमालम् ।
सरसविलासरासवृत्तमाल,
मुनिवरयोगिमानममरालम् ॥ २५२ ॥

इति नवमालिनी ११९.

१२०. अथ तरलनयनम्

जलधि-नगणमिह रचयत,
रविमित लघुमिह कलयत ।
सुकविफणिपतिरिति वदति,
तरलनयनमिति हि भवति ॥ २५३ ॥

यथा-

तव कुसुमनिभहसितमयि,
 गततनुमनुकलयति मयि ।
 इति हि सखि ! हरिरनुवदति,
 परिकलय दृशमयि सुदति । ॥ २५४ ॥
 इति तरलनयनम् १२०

'अत्र प्रस्तारगत्या द्वादशाक्षरस्य पण्णवत्यधिक सहस्रचतुष्टय ४०६६ भेदा भवन्ति, तेषु कियन्त प्रदर्शिता शेषभेदा, सुधीभि प्रस्तार्य भूचनीया इति' ।^१
 इति द्वादशाक्षरम् ।

अथ त्रयोदशाक्षरम्

सप्र-

१२१ चाराह

यस्मिन् पादे दृश्यन्ते सयुक्ता पटकर्णा,
 सूर्याणामेकेनाप्राणा सख्याका वर्णा ।
 कर्णस्यान्ते यस्मिन् सप्रोक्तरचैको हार,
 सोऽय नागोक्तो चाराहो वृत्ताना सार ॥ २५५ ॥

यथा-

कल्पान्तप्रोद्यदवारा राशौ दृग्वा भग्न,
 य शोणीपृष्ठ दष्टाग्रे कृत्वा सलग्नम् ।
 हत्वा दैत्य दृप्यन्त सिन्धोर्मध्यादागात्,
 कुर्यात् काल^२ सोऽय सर्वेषां रक्षा वेगात् ॥ २५६ ॥
 इति चाराह १२१.

१२२ अथ नाया

हारौ वृत्वा स्वर्णमुमेरुद्वययुक्ती,
 प्रत्येक हस्ती बलयाभ्यामपि सक्ती ।
 मिथ्याचित्तस्यस्य दधाना^३यरवर्णे,
 माया सर्वेषां हृदये राजति तूर्णे^४ ॥ २५७ ॥

१ क प्रती '—' पठित्त्वं नास्ति । २ स कोल । ३ स हयानां वरवणम् ।

४ स तूर्णम् ।

* टिप्पणी-१ अथपद्येषु प्राप्तेष्वभेदा पञ्चमपरिशिष्टेऽवलोचनीया ।

एतस्या एवान्यत्र श्रुति नवयतिसहित भगण - तगण - यगण - सगण -
गुरुयुत मत्तमयूरमिति गणान्तरेण नामान्तरमुक्तम् । तथा च छन्दोमञ्जर्याम्
[द्वितीयस्तवके का ६७] 'वेदै र-ध्रैर्भो' यसगा मत्तमयूरम् ।' इति लक्षणात् ।
यथा-

वन्दे गोप गोपवधूमि कृतरास,
हस्ते वस रावि दधान वरहासम् ।
नद्ये कुञ्जे सविदधान नवकेलि,
लीलाक्ष राधामुखपद्माकरहेलिम् ॥ २५८ ॥
इति माया १२२

यथा वा,

अस्मद्वृद्धप्रपितामहश्रीरामऋभट्टविरचित कृष्णकृतहले महाकाव्य
रासवर्णनप्रस्तावे—

रासक्रीडासक्तवचस्कायमनस्वा,
सस्कारातिप्रापितनाटघादिविशेषा ।
वृन्दाग्न्य तालतलोदघट्टनवाचा-
मत्यासगाच्चक्रुरिमा मत्तमयूरम् ॥ २५९ ॥

यथा वा, छन्दोमञ्जर्याम् [द्वितीयस्तवके का० ६७]

लीलानृत्यन्मत्तमयूरध्वनिकान्त,
चञ्चत्रीपामोदिपयोदानिलरम्यम् ।
कामक्रीडाहृष्टमना गोपवधूमि,
कसध्वसी निर्जनवृन्दावनमाप ॥ २६० ॥

'गोरीमध्वामम्बुरुहाक्षीमहमोडे,'* त ससारध्वान्तविनाश हरिमोडे**

* टिप्पणी—१

'नीलारण्यस्थापितनुत्प्रासितशोका
सोकातीर्तयोर्गिभिरतद्विचरन्मृग्याम् ।
बालादिरयथांशुसमानद्युतिपुञ्जा
गोरीमध्वामम्बुरुहाक्षीमहमोडे ॥ १ ॥

[सङ्कराचार्यशृङ्गोरीदण्डकरतोत्र प० १]

** टिप्पणी—२

स्तोत्रे भक्त्या विष्णुमनादि जगदादि
यस्मिन्नेतत् समृतिचक्र भ्रमतीरपम् ।
यस्मिन् दृष्टे नश्यति तस्मत्तिचक्र,
त ससारध्वान्तविनाश हरिमोडे ॥ १ ॥

[सङ्कराचार्यशृङ्गोरीदण्डकरतोत्र प० १]

इति च श्रीशङ्कराचार्यविरचिते गौरोदशके हरिस्तोत्रे च । 'हा तातेति-
क्रन्दितमाकर्ण्यविपण्ण' *१ इत्यादि रघुवशे च सहस्रशो निदर्शनानि ।

इति मत्तमयूरम् १२२

१२३ अथ तारकम्

जलराशिविराजितहस्तसयुक्त,
चरणस्य तथा विरती गुरुवृत्तम् १ ।
हृदये कुरुताखिलमोहितचित्त,
फणिनायकभापित-तारकवृत्तम् ॥ २६१ ॥

यथा-

विमल कमल गरल मनुते सा,
सरसेन विसेन सुसेवितवेपा ।
अवन गमन तदनन्दितचित्त,
हृदये सदये तदये कुरु वित्तम् ॥ २६२ ॥

प्रथा वा, भूषणे *२-

अतिभारतर हृदि चन्दनपङ्क,
मनुते सरसीपवन विपशाङ्कम् ।
तव दुस्तरतारविमोगपयोधि-
नं हि पारमसौ भविता परमाथे ॥ २६३ ॥

इति तारकम् १२३

१२४ अथ कन्दम्

शर हारयुग्म क्रमादत्र सधेहि,
त्रय पवितसख्याकवर्णं तथा धेहि ।
इदं कन्दसज्ज समुक्त फणीन्द्रेण,
कवीना यथा मोदकन्द कवीन्द्रेण ॥ २६४ ॥

१ स वित्तम् ।

*टिप्पणी—१

हा तातेति क्रन्दितमाकर्ण्य विपण्ण-
स्तस्याविष्यन् वेतसगूढ प्रभव स ।
शल्यप्रोक्त वीक्ष्य मनुम्भ मुनिपुत्र,
तापादन्त शल्य इवासीत् क्षितिपोपि ॥

[रघुवशा स० ६, ५० ७५]

*टिप्पणी—२ बालीभूषणम् ३० पद्य २४८

यथा-

विलोलद्विरेफावलीनां विरावेण,
हिमाशोः कराणां च सङ्घेन दावेण ।
वपुर्मो सदा दाहितं शीतयस्वालि,
पुरो दर्शयित्वा वपुर्मालतीमालि ॥ २६५ ॥
इति कण्डम् १२४.

१२५. अथ पङ्कावलिः

भ कुरु तदनु नकारमिहानय,
धेहि जमथ जगण परिभावय ।
शंखमिह तदनु भामिनि मानय,
पङ्कमुपरिकलितावलिमानय ॥ २६६ ॥

यथा-

कोमलसुललितमालि^१मालिनि,
पङ्कजपरिमलसलुलितालिनि ।
कोकिलकलकल^२कूजितशालिनि,
राजति हरिरिह वञ्जुलजालिनि ॥ २६७ ॥
इति पङ्कावलिः १२५.

१२६. अथ प्रहृषिणी

कर्णाभ्या सुललितकुण्डलं दधाना,
शखाभ्यामतिसुरसा कुचाढधहारा ।
विश्राम ननु रवनूपुरस्य युग्मे,
बिभ्राणा सखि ! जयति प्रहृषिणीयम् ॥ २६८ ॥

यथा-

यदन्ते विलसति भूमिमण्डल त-
न्मालिन्यश्रियमुपयातमुज्ज्वलाभे ।
देवेन्द्ररभिकलितः स्तवप्रयोगै-
रस्माक वितरतु श स कीलदेहः ॥ २६९ ॥

यथा वा,

अस्मद्बुद्धप्रपितामह-महाकविपण्डितश्रीरामचन्द्रभट्टविरचिते कृष्णकृतहले
महाकाव्ये श्रीमगवदाविर्भाववर्णनप्रस्तावे—

सत्य सद्बसु वसुदेवदेवकीभ्या,
 रोहिण्यामुडुनि नभस्य कृष्णपक्षे ।
 पर्जन्ये कटति निशीथनीरवाया-
 मष्टम्या निगमरहस्यमाविरासीत् ॥ २७० ॥

इति प्रहर्षिणी १२६

१२७ अथ रुचिरा

पयोधरे वसुमितहारभूषिता,
 सुपुष्पिणी सरसविराविनूपुरा ।
 रसान्विता सकनकरावकङ्कणा,
 चतुर्धेति सखि ! रुचिरा विराजते ॥ २७१ ॥

यथा-

कलापिन निजदयिताविहारिण
 पयोधर सखि ! कलये विराविणम् ।
 हरिं विना मम सकल विपायित,
 हरे पुन सकलमिद सुखयितम् ॥ २७२ ॥

इति रुचिरा १२७

१२८. अथ चण्डी

कलय नयुगमिह धारय हस्त,
 तदनु च विरचय स किल शस्तम् ।
 चरणविरतियुतभासुरहारा,
 त्रिजगति वरसखि राजति चण्डी ॥ २७३ ॥

यथा-

सरभचरणयुतनूपुरशोभा,
 बहुविधविरचितमानसलोभा ।
 हरिगतवनमनुगच्छति राधा
 मसि मनसिजवृत्तमानसबाधा ॥ २७४ ॥

इति चण्डी १२८

१२६. अथ मञ्जुभाषिणी

करसङ्घिपुष्पयुतकङ्कणान्विता,

रसरूपरावमितनूपुराञ्चिता ।

कुचशोभमानवरहारघाग्निणी,

कुरुते मुद मनसि मञ्जुभाषिणी ॥ २७५ ॥

यथा-

जनितेन मित्रविरहेण दुःखिता,

मिलितुं तथैव वनिता हरेर्हरित् ।

विधुबिम्बचित्तभवयन्त्रपूजन,

कुसुमंस्तनोति नवतारकामयैः ॥ २७६ ॥

इति मञ्जुभाषिणी १२६

सुनन्दिनो इत्यन्यत्र । अन्यत्रेति शम्भौ । क्वचिदियमेव प्रबोधिता च** ।

१३०. अथ चन्द्रिका

कुरु नगणयुग धेहि पादे ततः,

तगणयुगलक गोऽपि चान्ते ततः ।

चरणमनु तथा कामवर्णान्विता,

हयरसविरतिश्चन्द्रिका पूजिता ॥ २७७ ॥

यथा'-

कलयत हृदये शैलसधारक,

मुनिजनमहित देवकीदारकम् ।

व्रजजनवनिता-दुःखसन्तारकं,

जलधररुचिर दैत्यसंहारकम् ॥ २७८ ॥

इति चन्द्रिका १३०.

यथा सा-

'इह दुरधिगमै किञ्चिदेवागमै ।' इत्यादि किराताजुनीये*२ । क्वचिदियमेव उत्पलिनो इति प्रसिद्धम् ।

१. एत यथा उदाहरण मारित ।

*टिप्पणी—१ एन्दोमञ्जरी, द्वितीयस्तवक, चारिवा ६६ एव १०२ ।

*टिप्पणी—२

'इह दुरधिगमैः किञ्चिदेवागमै

सततममुनर चर्यायन्तरम् ॥

धमुपतिविपिन वेददिग्भ्यापिन

पुरुषविष पत्र पच्योनि. परम् ॥

[किराताजुनीयम् प० ५, प० १८]

१३१ अथ कलहसः

सगणं विधेहि जगणं च सुयुक्तं,
 सगणद्वयं कुरु पुनः फणिवित्तम् ।
 गुरुमन्तर्गं कुरु तथा हृतचित्तं,
 कलहंसनामकमिदं वरवृत्तम् ॥ २७६ ॥

यथा-

नवनीतचोरममलद्युतिशोभं,
 व्रजसुन्दरीवदनपङ्कजलोभम् ।
 लालतादिगोपवनिताकृतरास,
 कलये हरिं निजहृदा वरहासम् ॥ २८० ॥
 इति कलहंसः १३१.

कुत्रचिदयमेव सिंहनाद इति, ववचिच्च कृदजाख्यमिति ।

१३२. अथ मृगेन्द्रमुखम्

कुरु भगणं तदनन्तरं नरेन्द्रं,
 तदनु च जं कुरु पक्षिणामथेन्द्रम् ।
 तदनु विधारय नूपुरं पदान्ते
 रचय मृगेन्द्रमुखं सुखेन कान्ते ! ॥ २८१ ॥

यथा-

कुमुदवनीपु सखे ! विधूतबन्धः,
 कमलवनस्थ सदा हृतातिगन्धः ।
 विधुरुदितो धवलीकृतातिलोकः,
 प्रतिरजनीपु च दत्तकौकशोकः ॥ २८२ ॥
 इति मृगेन्द्रमुखम् १३२.

१३३. अथ क्षमा

द्विजवर-सगणो धेहि वैनतेयं,
 यगणमय तथा पण्डितालियेयम् ।
 मुनिरचितयतिः सज्जनादिमेयं,
 फणिपतिकथिता राजति क्षमेयम् ॥ २८३ ॥

यथा-

कलयत हृदये नन्दगोपसूनुं,
 फणिपतिदमनं न्यववृत्तातिमानुम् ।

दशधरवदन राधिकारसाल,

सरसिजनयन पङ्कजालिमालम् ॥ २८४ ॥

इति क्षमा १३३.

इयमेव क्वचिद् गणान्तरेणापि क्षमैव* भवति ।

१३४ अथ लता

कलय नगण विधेहि तत कर,

जगणयुगल च देहि तत परम् ।

चरणविरतौ गुरु कुरु सम्मता,

रसकृतयतिर्मुंदा विहिता लता ॥ २८५ ॥

यथा-

कलय हृदये मुदा व्रजनायक,

ललितमुकुट सदा सुखदायकम् ।

युवतिसहित व्रजेन्द्रसुत हरि,

कनकवसन भवाम्बुनिधेस्तरिम् ॥ २८६ ॥

इति लता १३४.

१३५ अथ चन्द्रलेखम

कुरु न-सगणौ पक्षिराज च युक्त,

रचय रगण कामवर्णरमुक्तम् ।

तदनु च पुन कुण्डल धेहि शेष,

कलय फणिना भापित चन्द्रलेखम् ॥ २८७ ॥

यथा-

नमत सतत नन्दगोपस्य सूनु,

फणिप दमन दानबोलूकमानुम् ।

कमलवदन राधिकाया रसाल,

तरलनयन पङ्कजालीमुमालम् ॥ २८८ ॥

इति चन्द्रलेखम् १३५

चन्द्रलेखा* इत्यन्यत्र ।

* टिप्पणी—१ वृत्तान्तरात् (प० ३ वा० ७५) नारायणीटीकायां 'इय क्षमैव
धाधार्यो मत्तमेदेन सजातरार्थं पुनरुच्ये' ।

* टिप्पणी—२ छन्दोमञ्जरी, द्वितीयस्तबक, वारिका १०५

१३६ अथ सुद्युति

कुरु न-सगणौ पादे तकारौ तथा,
 कलय वलय स्यु कामवर्णा यथा ।
 रसपरिमितैर्वर्णैस्तथा स्याद यति ,
 फणिपकथिता सशोभते सुद्युति ॥ २८६ ॥

यथा-

वदनवसितंभूर्ङ्गयुता सद्वया,
 लूलितललिता लोलालसाक्षिद्वया ।
 सखि हरिगृहाद् याति प्रगे राधिका,
 सकलसुदृशा नित्य मनोवाधिका ॥ २६० ॥

इति सुद्युति १३६

१३७ अथ लक्ष्मी

कर्णे विराजिसरसकुण्डलान्विता,
 गन्धाढ्यपुष्पयुतकरेण शोभिता ।
 वक्षोरहे च विमलहारशोभिनी,
 लक्ष्मी सदा फलतु ममातुल फलम् ॥ २६१ ॥

यथा-

वन्दे हरि फणिपतिभोगशायिन,
 सर्वेश्वर सकलजनेष्टदायिनम् ।
 पीताम्बर मणिमुकुटादिभासुर,
 गो-गोपिकानिक्खरवृत हतासुरम् ॥ २६२ ॥

इति लक्ष्मी १३७

१३८ अथ विमलगति

जलधिमित नगणमिह कलय,
 तदनु च सखि सघृमिह रचय ।
 फणिपतिसुबलितमिति भवति,
 विदनु यति विमलगति मुदति ! ॥ २६३ ॥

यथा-

अभिनवसजलजलदविमल,
निजजनविहृतसकलशमल^१ ।
कमलसुललितनयनयुगल,
जय ! जय ! सुरनुतपदकमल ॥ २६४ ॥
इति विमलगति १३८

^१अत्रापि प्रस्तारगत्या त्रयोदशाक्षरस्य द्विनवत्युत्तरशतमष्टौ सहस्राणि च ८१६२ भेदा भवन्ति, तेषु कतिचन भेदा समुदाहृता, शेषभेदा सुधीभिः प्रस्तार्य समुदाहरणीया इत्यल पल्लवेन ।*

इति त्रयोदशाक्षरम् ।

अथ चतुर्दशाक्षरम्

तत्र-

१३९ सिंहास्य

यस्मिन्निन्द्रं सख्याता राजन्ते युक्ता वर्णा,
पादे सूर्याश्वं सख्याका सशोभन्त कर्णा ।
नागानामीशेनैतत् प्रोक्तं सिंहास्य कान्ते ।
भूपालानां चित्तानन्दस्थानं श्रेहि स्वान्तं ॥ २६५ ॥

यथा-

यो दैत्यानामिन्द्रं वक्षस्पीठे हस्तस्याग्रै-
भिद्यद् ब्रह्माण्डं व्याङ्गुर्योर्ल्व्व्यामूदनादुग्रै ।
दत्तालीकान्युन्मिथं निर्यद्विद्युद्बृद्धास्य-
स्तूर्णं सोऽस्माकं रक्षां कुर्याद्घोर(वीर)सिंहास्य ॥ २६६ ॥
इति सिंहास्य १३९

१४० अथ वसन्ततिलका

हारद्वयस्फुरद्दुरोजयुतदधाना,
हस्तं च गन्धबुसुमोज्ज्वलकङ्कणाढ्यम् ।
पादे तथा सरतनूपुरयुग्मयुक्ता,
चित्ते वसन्ततिलका किल चावसीति ॥ २६७ ॥

१ स समस्त । २ वक्त्रत्रयमास्ति क प्रती ।

* टिप्पणी- प्रन्यायतरेषु समुपलक्ष्यशेषभेदा पञ्चमपरिच्छिष्टे पद्यवेगलीयाः ।

यथा-

लोके त्वदीययशसा धवलीकृतेऽस्मिन्,
छायाभय निजशरीरकृत विमुच्य^१ ।
ज्योत्स्नावतीषु रजनीष्वभिसारिकाणा,
सङ्घ प्रियस्य सदन सुखत प्रयाति ॥ २६८ ॥

यथा वा, कृष्णकुतूहले—

पातु न पारयति यत्कथित पयस्त-
द्वध्नो विनाश्य दृढनाशयति स्वकीयान्^१ ।
खण्ड निधाय दधिखण्डमखण्डमेव,
क्षिप्त्वा मुखे निखिलमत्ति मुखे सुतस्ते ॥ २६९ ॥
इति चतुर्तिलका १४०

१४१ अथ चक्रम

कुण्डलकलितदहनमित नगण,
शङ्खसहितमिह विरचय सगणम् ।
कुण्डल^२नरपतिवरकविकलित,
रुमखिलकविजनहृदि ललितम् ॥ ३०० ॥

यथा-

कोकिलकलरवसुललितसमये,
शीतलमलयजपवनसुखमये ।
कामविशिखचयविदलितहृदये,
सुन्दरि ! परिहर हृदयमदमये ॥ ३०१ ॥

यथा वा वाणीभूषणे— [द्वितीयाध्याय, पद्य २५८]

सुन्दरि ! नभसि जलदचयरुचिरे,
देहि नयनयुगमतिघनचिकुरे ।
मानमिह न कुरु जलधरसमये,
किं तव भवति हृदयमिदमदय ॥ ३०२ ॥

इति चक्रम १४१

१४२ अथ प्रसम्भाषा

विभ्राणा कर्णो कलितललितताटङ्कौ (ङ्का),
वाणं सञ्छिन्ना द्विजविरचितगोभाढ्या ।

हस्ताग्रे राजद्विरचितवलयद्वन्द्वा,
स्तुत्या सप्रोक्ता वरकविभिरसम्वाधा ॥ ३०३ ॥

यथा

वन्दे गोपाल व्रजजनतरुणीधीर,
रासक्रीडायामभिगतयमुनातीरम् ।
देवाना वन्द्य हृत्तवरवनिताचीर,
वालं सयुक्त दितिसुतदलने वीरम् ॥ ३०४ ॥

इति असम्वाधा १४२

१४३ अथ अपराजिता

द्विजपरिकलिता करेण विराजिता,
कुचयुगकलिता प्रलम्बितहारिणी ।
भुवननिगदितातिशोभितवर्णिना,
कृतमुनिविरतिर्जयत्यपराजिता ॥ ३०५ ॥

यथा-

घतिरुचिदशनंः सभातमसा हर ,
दितिसुतरुधिरं सुरकनखाङ्कुर ।
जलभृदुडुगणौ सटाभिरुपाहरत्^१,
जयति हरितनुभंढानवि सहरत्^२ ॥ ३०६ ॥

इति अपराजिता १४३

१४४ अथ प्रहरणकलिका

रचयत नगणद्वयमथ भगण,
लघुगुरसहित कलयत नगणम ।
प्रहरणकलिवा मुनियतिसहिता,
फणिपतिकथिता कविजनमहिता ॥ ३०७ ॥

यथा -

नम मधुमथन जलनिधिसयन,
सुरगणनमित सरसिजनयनम् ।
इति गदनमतिर्भवति हृदि यदा,
भवजलनिधि[त]स्तरति सति ! तदा ॥ ३०८ ॥

यथा धा, कृष्णकुतूहले—

व्रजयुवतिभिरित्यभिमतवचसि,
प्रतिपदममृतद्रवमिव विकिरति ।
मनसिजविशिखप्रपत्तनविधुत-
स्वविरहदहनप्रशमनमकलि^१ ॥ ३०६ ॥

इति प्रहरणकलिका १४४

१४५. अथ धासन्ती

कर्णौ कृत्वा कुण्डलसहिती गन्ध पुष्प,
हस्ते धृत्वा कङ्कणमथ हार राजन्तम् ।
स्वर्णेनाढ्य नूपुरमथ धृत्वा राजन्ती,
नागप्रोक्ता राजति कविचित्ते वासन्ती ॥ ३१० ॥

यथा—

वन्दे गोपीमन्मथजनक कसारार्ति,
भूमे कार्यार्थं नृपु कृतमिथ्याविख्यातिम् ।
रासे वशीवादननिपुण कुञ्जे कुञ्जे,
लीसालोल गोकुलनवनारीणा पुञ्जे ॥ ३११ ॥

इति धासन्ती १४५.

१४६. अथ लोला

कर्णे कुण्डलयुक्ता हस्त स्वर्णसनाथ,
विभ्राणा वलयाढ्य हारी चोज्ज्वलपुष्पी ।
सध्वान च दधाना दिव्य नूपुरयुग्म,
नागोक्ता कविचित्ते कान्ता राजति लोला ॥ ३१२ ॥

यथा—

गोपाल कलयेऽह नित्य नन्दकिशोर,
वृन्दारण्यनिवास गोपीमानसचौरम्^२ ।
वशीवादनसक्त नव्ये कुञ्जकुटीरे,
नारीभिः वृत्तरास कालिन्दीवरतीरे ॥ ३१३ ॥

इति लोला १४६.

१४७ अथ नाग्दीमुखी

द्विजपरिकलिता हस्तयुक् कङ्कणाढ्या,
विरुतविलसितौ नूपुरौ धारयन्तौ ।
रसकनकयुते हारमुच्चैर्देवाना,
स्वरविरतियुता भ्राति नाग्दीमुखीयम् ॥ ३१४ ॥

पद्या-

नखगलदसृजा पान्तौ भीषणास्यः
सुरनृपतिमुखैर्देवसर्षेभ्यास्यः ।
भयजनकरवैर्नादयद्दिङ्मुखानि,
प्रकटयत् स व. सिंहवक्त्र. मुखानि ॥ ३१५ ॥
इति नाग्दीमुखी १४७,
१४८. अथ वंदर्भो

कर्णे वृत्त्वा कनकमुललितं ताटङ्कं,
सबिभ्राणा द्विजमथ वलय हस्ताग्रे ।
दिव्यं हारद्वितयमथ दधाना युक्तं
वेदैरिच्छन्ना जगति विजयते वैदर्भो ॥ ३१६ ॥

पद्या-

वन्दे नित्यं नरभृगुपतिदेहं व्यग्रं,
दैत्येदारो रस्यलदलनविधावत्युग्रम् ।
प्रह्लादस्याभिलषितवरदं सूक्तकारे,
सलिहान्तं रुधिरविलुलितं जिह्वाग्रम् ॥ ३१७ ॥
इति वैदर्भो १४८.
१४९. अथ इन्दुवदनम्

घेहि भगण तदनु घारय जकारं,
हस्तमथ कारय ततोऽपि च नकारम् ।
हारयुगलं तदनु देहि चरणान्ते,
नागवृत्तमिन्दुवदनं भवति भान्ते ! ॥ ३१८ ॥

पद्या-

नीमि घनिताविततरासरसयुक्तं,
योदुसकपूजनमनोहरणसकम् ।

देवपतिगर्वहरखण्डनमुदक्ष,

भूमिवलये निहतदैत्यगणलक्षम् ॥ ३१६ ॥

इति इन्दुवदनम् १४६

स्त्रोलिङ्गमन्यत्र* ।

१५० अथ शरभी

कर्णं स्वर्णोज्ज्वलललितताटङ्कयुक्तं ,

सविभ्राणा द्विजमथ रुत नूपुराढ्यम् ।

हार पुष्प वलययुगल धारयन्ती,

वेदैश्छिन्ना जयति शरभी पिङ्गलोक्ता ॥ ३२० ॥

यथा-

वन्दे कृष्ण नवजलधरश्यामलाङ्ग,

वृन्दारण्ये व्रजयुवतिभिर्जातसङ्गम् ।

कालिन्दीये सरसपुलिने क्रीडमानः,

कालीयाहे प्रथितयशसो धूतमानम् ॥ ३२१ ॥

इति शरभी १५०

१५१ अथ महिषूति

रचय नयुगल कुरु ततो भगण,

लघुगुरुसहित कुरु तथा जगणम् ।

मुनिविरतियुता फणिनृपस्य कृति ,

जगति विजयते सुविमलाऽहिषूति ॥ ३२२ ॥*

यथा-

सकलतनुभृता जलमपेयतर,

विगतवि[प]भय रचयितु कृपया ।

पतति तरुवराच्छिदरसि नन्दसुते,

भुवनभरसहा विजयतेऽहिषूति ॥ ३२३ ॥*

इति महिषूति १५१-

१५२ अथ विमला

रचय न-भूपती कुरु तथा भगण,

लघुवलयाचित च विरती जगणम् ।

एव सप्तमानं । २ पूर्णं पद्य मासिक प्रती ।

* टिप्पणी—१ वृत्तारत्नाकर' अ० ३, पं० ८२

फणिपतिभापिता रविहयैविरति-

वैरकविमानसेऽतिविमला जयति ॥ ३२४ ॥

यथा-

व्रजजननागरीदधिहृतावतुला,

तरणिमुतातटे हरितनुविमला^१ ।

वरवनितादृशा सुमुकृतैककला,

मम विमले सदा भवतु हृद्यचला ॥ ३२५ ॥

इति विमला १५२

१५३ अथ मल्लिका

कुरु गन्धयुग्मसहित मृगाधिपति,

रचयाशु सन्ततमथो नरावपि सम् ।

इह मल्लिका कलयता विलासवती,

नवपञ्चवैर्यैतियुता मुदो^२ जननीम् ॥ ३२६ ॥

यथा-

सखि ! नन्दसूनुरिह मे मनोहरण ,

जनताप्रसादसुमुखस्तमोहरण ।

भविता सहायकरणो जनानुगत ,

करवै कमत्र क्षरण वने सुखत ॥ ३२७ ॥

इति मल्लिका १५३

१५४ अथ मणिगणम

जलधिमित नगणमिह कलयत,

तदनु च लघुयुगमपि रचयत ।

सकलफणिनृपतिविरचितमिति,

निजहृदि कलयत मणिगणमिति ॥ ३२८ ॥

यथा-

भुजयुगसविलसितफणिवलय,

वृत्तसकलदितिमुत्बुलविलय ।

प्रलयसमयभयजनय सलय^३,

दुपगमनमपि सुगमनुक्लय ॥ ३२९ ॥

इति मणिगणम १५४

‘अत्रापि प्रस्तारगत्या चतुर्दशाक्षरस्य चतुरशीत्यधिकानि त्रिशतानि षोडश-
सहस्राणि च भेदास्तेषु कियन्तो भेदाः प्रदर्शिताः, शेषभेदाः सुधीभिराकरतः
स्वमत्या वा प्रस्तारं समूहनीया इति दिक्’* ।

इति चतुर्दशाक्षरम् ।

अथ पञ्चदशाक्षरम्

तत्र प्रथमम्-

१५५. लीलाखेलः

यस्मिन् वृत्ते रव्यद्भैः संख्याता दृश्यन्ते कर्णाः,

पादे पादे तिष्ठ्या सम्प्रोक्ताः संशोभन्ते वर्णाः ।

हारद्वैकोऽन्ते यस्मिन्नागानामीशेन प्रोक्तं,

लोकै वृत्तानांसारं लीलाखेलाख्यं तद्वृत्तम् ॥ ३३० ॥

यथा

देवैर्वन्द्यं त्रैलोक्यास्थानं देहं खर्वीकुर्वन्,

देत्यानामीशं भूम्यां ख्यातः^१ पातालस्थं कुर्वन् ।

स्वाराज्यं देवेशा धान्त्यन्तं स्थैर्याद्विद्यं संयच्छन्,

मामध्याद् गोविन्दो वैरोच्यानाशीः^२ पद्यं गजंन् ॥ ३३१ ॥

इति लीलाखेलः १५५.

यथा वा -

‘मा कान्ते पक्षस्यान्ते पर्याकाशे देशेस्वाप्सीः’, इति ज्यौतिषिकाणां कालपरि-
माणपरं उदाहरणमिति कण्ठाभरणे^३ । लीलाखेलस्य एतस्यैवान्यत्र सारङ्गिका^{*}
इति नामान्तरमुक्तम् ।

१५६. अथ मालिनी

द्विजकरबलयाद्या नूपुरारावयुक्ता,

श्रवणरचितपुष्पप्रोतताटङ्कयुग्मा ।

वसुरचितविरामा सर्वलोकैकवर्णा,

फणिपनृपतिकान्ता भासते मालिनीयम् ॥ ३३२ ॥

१. पवित्रप्रयं नास्ति कः प्रती । २. ल. चातः । ३. ल. वैरोच्यानाशीः

*टिप्पणी—१ अग्रयान्तरेषु प्राप्तशेषभेदाः पञ्चमपरिशिष्टे पर्यालोच्यः ।

*टिप्पणी—२ मा कान्ते ! पक्षस्यान्ते पर्याकाशे देशे स्वाप्सीः,

कान्ते क्वचनं दूरां पूर्णं चन्द्रं मत्वा रात्रौ चैत् ।

क्षुर्यामः प्राटंश्चेत्तद्वेत्तौ राहूः क्रूरः प्राणाय् ।

तस्मान्दृष्ट्वान्ते हृष्येत्यान्ते शय्येकान्ते वर्याव्या ॥

[कण्ठाभरण]

*टिप्पणी—३ प्राकृतपैगलम्-द्वितीयपरिशिष्टे, पद्य १५६ ।

यथा-

अयममृतमरीचिदिग्वधूकर्णंपूरं
सपदि परिविधातु कोऽपि कामीव कान्तः ।
सरस इव नभस्तोऽप्यन्तुविस्तारयुक्ता-
दुडुगणकुमुदानि प्रोच्चकैरुच्चिनोति ॥ ३३३ ॥

यथा वा, पाण्डवचरिते—

भवनमिव ततस्ते बाणजालं कुर्वन्,
गजरथहयपृष्ठे बाहुयुद्धे च दक्षाः ।
विघृतनिशितलङ्कारचर्मणा भासमाना,
विदधुरथ समाजे मण्डलात् सव्यवामात् ॥ ३३४ ॥

यथा वा, अस्मत्पितामहमहाकविपण्डितश्रीरायभट्टकृते शृङ्गारकल्लोले
खण्डकाव्ये—

मन इव रमणोनां रागिणी वारुणीयं,
हृदयमिव युवानस्तस्कराः स्व हरन्ति ।
भवनमिव मदीय नाथ दून्यो हि देश-
स्तव न गमनमीहे पान्य कामाभिरामा ॥ ३३५ ॥

यथा वा, कृष्णकुतूहले—

निरवधिदिनमाना य विना गोपवध्व-
स्तमभिकमभिसायं वीक्षमाणा ननन्दुः ।
स्मितमधुरमपाङ्गालोकन प्रीतिवल्या,
कुसुममिव तदीर्यं वीक्ष्य कृष्णोप्यतुष्टयत् ॥ ३३६ ॥
इति मालिनी १५६

१५७ अथ घामरम्

पक्षिराजभूपतिक्रमेण यद् विराजते,
बाणभूमिसख्ययाक्षरं च यत्र भासते ।
नागराजभाषित तदेव चारुचामर,
मानसे विधेहि पाठतोऽपि मोहितामरम् ॥ ३३८ ॥

यथा-

नौमि गोपकामिनीमनोविनोदकारण,
लीलयावधूतकंसराजमत्तवारणम् ।
कालियाहिमस्तकोल्लसन्मणिप्रकाशित,
नन्दनन्दन सदैव योगिचित्तभासितम् ॥ ३३८ ॥

यथा वा, भूषणे^१ *—

रासलास्यगोपकामिनोजनेन खेलता,
 पुष्पपुञ्जमञ्जुकुञ्जमध्यगेन दोलता ।
 तालनृत्यशालिगोपवालिकाविलासिना,
 माधवेन जायते सुखाय मन्दहासिना ॥ ३३६ ॥
 इति चापरम् १५७.

एतस्यैव अन्यत्र तूष्णकं *^२ इति नामान्तरम् ।

१५८. अथ भ्रमरावलिका

चरणे विनिधेहि सकारमिषूपमितं,
 कुच वर्णमपीपुनिशाकरसंप्रमितम् ।
 फणिनायकपिङ्गलचित्तमुदः कलिका,
 सखि ! भाति कवीन्द्रमुखे भ्रमरावलिका ॥ ३४० ॥

यथा—

कलकोकिलकूजितपूजितनू (त्न) वनं,
 वनजाक्षिनवीनसरोजवनीपवनम् ।
 हिमदोधितिकान्तिपय.परिघोतमिदं,
 जगदाशु विलोक्य^१ परित्यज मानमिदम् ॥ ३४१ ॥

यथा वा, भूषणे^३—

सखि ! सम्प्रति क प्रति मौनमिदं विहितं,
 मदनेन धनुः सशरं स्वकरे निहितम् ।
 नतिशालिनि का वनमालिनि मानकथा,
 रतिनायकसायकदुःखमुपैवि^४ वृथा ॥ ३४२ ॥
 इति भ्रमरावलिका १५८.

भ्रमरावलीति पिङ्गले^५ *

१. ल. जगदाशुचि सोषय । २. 'मुपैति' वाणीभूषणे ।

- *टिप्पणी—१ वाणीभूषणम्, द्वितीयाध्याय, प० २६२
 २ दन्दीमञ्जरी, द्वितीयस्तवक, कारिका ११७
 ३ वाणीभूषणम्, द्वितीयाध्याय, पद्य २६६
 ४ प्राकृतपेङ्गलम्, द्वितीयपरिच्छेद, प० १५४

१५६. अथ मनोहस

प्रथम विधेहि कर जकारविराजित,
जगण ततो भगणेन कारय भूपितम् ।
विनिधेहि पक्षिपति ततस्तिथिजाक्षर,
कुरु हसमेणविलोचने मनस परम् ॥ ३४३ ॥

यथा-

तनुजाग्निता ससि । मानस मम दह्यते,
तनुसन्धिरुष्णगदारवत् परिभिद्यते ।
अथर च शुष्यति वारिमुक्तमुशालिवत्,
कुरु मदगृह कृपया सदा वनमालिमत् ॥ ३४४ ॥

यथा वा-

नवमञ्जुवञ्जुलसुञ्ज्वूजितकौकिले,
मधुमत्तचञ्चलचञ्चरीककुलाकुले ।
समयेतिधीरसभोरकम्पितमानसे,
किमु चण्डि मानमनोरथे न विसिद्यसे ॥ ३४५ ॥
इति मनोहस १५६

१६०. अथ शरभम्

जलनिधिकृतमिह विरचय नगण ,
चरणविरतिमनुविरचय सगणम् ।
वरफणिपतिविरचितमतिरचिर ,
शरभमपिलहृदि विलसति सुचिरम् ॥ ३४६ ॥

यथा-

नभसि समुदयति सखि । हियकिरण ,
बहति सुलघुलघुमलयजपवनम् ।
त्यजति तिमिरमिदमपि (भि) जननयन ,
द्रुतमनुविरचय मधुरिपुशयनम् ॥ ३४७ ॥
इति शरभम् १६०

इदमेवायत्र शशिपला* इति नामान्तरेण उक्तम् ।

अथ मणिगुणनिकरसुजौ द्र-दसी, विश्व -

इदमेव हि यदि वगुयति ८ मणिगुणनिरास्यमीर्यते हि सदा ।
यदि तु रसे ६ विश्राम अगिति सभारया तदा लभते ॥ ३४८ ॥

अपि च

मणिगुणनिकरोदाहृतिरिह शरभोदाहृतौ ज्ञेया ।
स्रगुदाहरण ज्ञेयम् लक्षणवाक्ये तु शरभस्य ॥ ३४६ ॥

यथा वा-

नरकरिपुरवतु निखिलमुरगति-
रमितमहिमभरसहजनिवसति ^१ ।
अनवधिमणिगुणनिकरपरिचित ,
सरिदधिपतिरिव धृततनुविभव ॥ ३५० ॥
अयि । सहचरि । रुचिरतरगुणमयी ,
अदिमवसतिरनपगतपरिमला ।
स्रगिव निवसति लसदनुपमरसा ,
सुमुखि ! मुदितदनुजदलनहृदये ॥ ३५१ ॥

इति छन्दोमञ्जर्यामुदाहरणद्वय* यतिभेदेनोक्तम् । प्रकृत तु शरभमेव इति न
कश्चिद् विशेष ।

१६१ अय निशिपालकम्

धेहि भगण तदनु भूपतिमयो कर ,
देहि नगण च रगण कुरु तत परम् ।
नागनृपपिङ्गलसुभापितमुदीरित ,
वृत्तममल हृदि निधेहि निशिपालकम् ॥ ३५२ ॥

यथा-

गोऽतरुणीजनमनोहरणपण्डित,
हस्तशुगघारितसुवेणुपरिमण्डितम् ।
चन्द्रकविराजितविलोलमुकुट हृदा,
नोमि हरिपर्वतनयात्तटगत सदा ॥ ३५३ ॥

यथा वा, भूपणे ^२ -

चन्द्रमुखि ! जीवमुखि (पि) ! याति मलयानिले,
याति मम चित्तमिव पाति* मदनानिले ।

* क सनिखिल मुरगति । २ गाङ् वाणीभूपणे ।

* टिप्पणी—१ छन्दोमञ्जरी, द्वितीयस्तवक, कारिका १३३, १३२
२ वाणीभूपणम् द्वितीयाध्याय, पद्य २५६

तापकर-कामदार-शाल्यवरकीलितं^१,

मामिह हि पश्य जहि कोपमतिशीलितम्^२ ॥ ३५४ ॥

इति निशिपालकम् १६१.

१६२. अथ विपिनतिलकम्

रचय नगणं तदनु धेहि हस्तं मुदा,

नगणसहितं रगणयुग्ममन्ते सदा ।

रसनवयति फणिपभापितं सुन्दर

विपिनतिलकं कलय बाणविध्वक्षरम् ॥ ३५५ ॥

यथा-

नरवरपतेरिव नराः शशाङ्कांशवः,

तिमिरनिकरः सपदि चोरवद् गच्छति ।

अयमपि रविः सखि ! हुताधिकारिप्रभः,

कथयति विधोः खगकुलं जयं वदिवत् ॥ ३५६ ॥

यथा वा-

जयति करुणानिधिरशेषसत्तारकः,

कलितललितादिवनितामनोहारकः ।

सकलघरणीपकुलमण्डलीपालकः,

परमपदवीकरणदेवकीबालकः ॥ ३५७ ॥

इति विपिनतिलकम् १६२.

१६३. अथ चन्द्रलेखा

कर्णे ताटङ्कयुग्म पुण्याढ्यहारौ दधाना,

विभ्राणा नूपुरस्य द्वन्द्वं सुराव सुचित्तम् ।

पादान्ते धारयन्ती वीणा सुवर्णावियुक्ता,

नागोक्ता चन्द्रलेखा सप्ताष्टद्येदैरमुक्ता ॥ ३५८ ॥

यथा-

नित्य वन्दे महेश गौरीशरीराढ्ययुक्तं,

दग्धाज्ज पुरारि वेतालसङ्घैरमुक्तम् ।

विभ्राण चन्द्रलेखा नृत्येषु वृत्ति धुनान्,

गङ्गासञ्जातसङ्ग दृष्ट्या त्रिलोकी पुनानम् ॥ ३५९ ॥

इति चन्द्रलेखा १६५.

चण्डलेखा इत्यन्यत्र ।

१६४. अथ चित्रा

कर्णं द्वन्द्वं ताटङ्काभ्यां योजितं कारयित्वा,
 हारौ विभ्राणा स्वर्णाढिधं पुष्पयुक्तं तथैव ।
 तिथ्युक्तैर्वर्णैः संयुक्ता कङ्कणी धारयन्ती,
 शोभां घत्ते चित्रां चित्रा शब्दवन्नूपुराभ्याम् ॥ ३६० ॥

यथा-

कालिन्दीकूले केलीलोलं वधू^१सङ्घयुक्तं,
 वन्दे गोपालं रक्षायां नन्दगोपस्य सक्तम् ।
 हस्तद्वन्द्वे धृत्वा श्वासैर्वशिकां पूरयन्तं,
 दैतेयान् हृत्वा देवानां संकटं दूरयन्तम् ॥ ३६१ ॥
 इति चित्रा १६४.

चित्रमिदमन्यत्र^{१*} ।

१६५. अथ केसरम्

कुरु नगणं ततोऽपि च विधेहि भूपति,
 भगणपयोधरौ तदनु पक्षिणां पतिम् ।
 फणिपतिभाषितं तिथिविभाविताक्षरं,
 सुकविमनोहरं हृदि निधेहि केसरम् ॥ ३६२ ॥

यथा-

चिरमिह मानसे कलय नन्ददारकं,
 वरवनमालिनं दितिसुतापहारकम् ।
 ब्रजवनितारसोदधिनिमग्नमानसं,
 रवितनयातटे कलितपीतवाससम् ॥ ३६३ ॥
 इति केसरम् १६५.

१६६. अथ एता

प्रथमं करं रचय जगणमनु कान्ते !
 नगणद्वयं तदनु कुरु यगणमन्ते ।
 फणिभाषिता शरपरिकलितविरामा,
 कृतसंस्तुतिः सकलवरकविभिरैला ॥ ३६४ ॥

१. अ. धनू ।

*द्विष्णी—१ छन्दोमञ्जरी, द्वितीयस्तवक, कारिका १३६

धया-

हृदि भावये विमलकमलनयनान्त ,
जनपावन नवजलधररुचिकान्तम् ।
व्रजनायिकाहृदयमधिजनितकाम ,
वनमालिन सकलसुरकुलललामम् ॥ ३६५ ॥
इति एता १६६

१६७ अथ प्रिया

कुरु नगणयुग धेहि त भगण तत ,
प्रतिपदविरती भासते रगणोऽन्तत ।
मुनिरचितमति नगिराजफणिप्रिया ,
सकलतनुमृता मानसे लसति प्रिया ॥ ३६६ ॥
इदमेव हि यदि वसुयतिः रलिरिति मजा तदाप्नोति ।
लक्षणवाक्ये मुनियतिरुदिता वसुकृतयतिश्च यथा ॥ ३६७ ॥

धया-

कलय दशमुखारि हताखिलदानव ,
मुनिजनमखपालमृपा भुवि भानवम् ।
सरसिजनयनान्त शरासनभञ्जक ,
कपिकुलवरराज सदा प्रियसजकम् ॥ ३६८ ॥
इति प्रिया १६७

१६८ अथ जसव

पक्षिराज-नगणौ भगण द्वितय तत
कारयागु पदसोपकृतौ रगणौ मत ।
जसव फणिनागकृत सखि ! भासते ,
पङ्क्तिजाक्षरविरामयुत कविमानसे ॥ ३६९ ॥

धया-

वभ्रमोति हृदय जलघो तरणिर्यथा ,
दह्यते सखि ! तनुर्नलिनीव हिमागमे ।
वायुसोलवदक्षीव तनुभंभ वेपते ,
चन्दन शुचि सरोवदिद परिशुष्यति ॥ ३७० ॥
इति जसव १६९

१६६. अथ उडुगणम् ।

भुवनविरचितमिह लघुमुपनय ,

तदनु विघुकृतलघुमिह विरचय ।

उडुगणमखिलहृदयकृतसदन—

भृपिकृतविरतिभनुकुरु सुवदन ! ॥ ३७१ ॥

पद्या-

दहनगतमलकनकनिभवसन,

कटिधृतविरुतरुचिरवररसन ।

सुरकृतनमन जलनिधनिवसन,

शमनुविरचय कुसुमनिभहसन ॥ ३७२ ॥

इति उडुगणम् १६६.

‘अत्रापि प्रस्तारगत्या पञ्चदशाक्षरस्य द्वारिदेशत्सहस्राणि सप्तशतानि अष्ट पष्टुत्तराणि ३२७६८ भेदास्तेषु आद्यन्तसहिताः कियन्तः प्रोक्ताः, शेषभेदाः प्रस्तार्य लक्षणीया इति दिक्’* ।

इति पञ्चदशाक्षरम् ।

अथ षोडशाक्षरम्

तत्र-

१७०. राम

यस्मिन्नष्टौ पादस्थित्या युवता. संदृश्यन्ते कर्णाः,

संशोभन्ते पादे पादे शृङ्गारैः सख्याता वर्णाः ।

यस्मिन् सर्वस्मिन् पादे स्याद् वेदैर्वेदैर्द्विश्रामः,

सर्पाणामीशेन प्रोक्तः सच्छन्दः स्युः (स्तु) प्रेष्टो राम. ॥ ३७३ ॥

पद्या-

इन्द्राद्यैर्वेन्द्रैर्नित्यं बन्धः पायाल्लोकं राम,

लक्षणा दातुत्वे दक्षः सर्वेषा क्षत्राणां वामः ।

अङ्गीकृत्यात्यन्तं पित्रा दत्तमाशा शस्त्र वेगात्,

मातुर्मूर्च्छि च्छेदे^२ विभ्रद् यो वै हस्ते कम्प नागात् ॥ ३७४ ॥

इदमेवाऽन्यत्र ब्रह्मरूपकम्^{२*} इति नामान्तरं लभते ।

इति रामः १७०.

१. पवित्रत्रय नास्ति क. प्रती । २. ख. मातुर्मूर्च्छेदे ।

* टिप्पणी—१ ग्रन्थान्तरेषु पञ्चदशाक्षरकृतस्योपलब्धशेषभेदाः पञ्चमपरिशिष्टे द्रष्टव्याः ।

* टिप्पणी—२ प्राकृतपंगलम् द्वितीयपरिच्छेद, प० १७४

१७१. षय पञ्चचामरम्

शरेण नूपुरेण यत्क्रमेण भाविताक्षर,
 वसुप्रयुक्तभेदभाग् भवेच्च फोडशाक्षरम् ।
 फणीन्द्रराजपिङ्गलोक्तमुक्तमत्र भासुरं,
 विधेहि मानसे सर्व्व चारु पञ्चचामरम् ॥ ३७५ ॥

यथा-

कठोरठात्कृत्तिध्वनत्कुठारधारभीषणं,
 स्वयं कृतप्रतिज्ञया सहस्रवाहुद्रूपणम् ।
 समस्तभूमिदक्षिणे मन्त्रे मुनीन्द्रतोषणं,
 नतो महेन्द्रवासिनं भृगुन्तु^१ वशभूपणम् ॥ ३७६ ॥

यथा वा, अस्मद्वृद्धप्रपितामह-धोरामचन्द्रभट्टमहाकविपण्डितविरचित-दशाव-
 तारस्तोत्रे जामदग्न्यवर्णने—

अकुण्ठधार भूमिदार कण्ठपीठलोचन-
 क्षणध्वनद्ध्वनत्कृत्तिकवणत्कुठारभीषण ।
 प्रकामवाम जामदग्न्यनाम राम हैहय-
 क्षयप्रयत्ननिर्दय व्यय भयस्य जम्भय ॥ ३७७ ॥
 इति पञ्चचामरम् १७१.

एतस्यैव अन्यत्र नराक्षम्^{*} इति नामान्तरम् ।

१७२. षय नीलम्

वेद-भकारविराजितमद्भुतवृत्तवरं,
 भामिनि ! भावय चेतसि कङ्कणशोभि करम् ।
 पिङ्गलनागसुभापितमालि विमोहकर,
 नीलमिद रसभूमिविभाषितवर्णधरम् ॥ ३७८ ॥

यथा-

पर्वतधारिणि गोपविहारिणि 'नन्दसुते,
 सुन्दरि हारिणि'^२ कलाविदारिणि बालयुते ।
 पङ्कजमालिनि केलिपु शालिनि मे सुमति-
 वेंणुविराविणि भूम(भ)रहारिणि जातरति ॥ ३७९ ॥
 इति नीलम् १७२.

१. ल. भृगुः । '—' २. क. प्रतो नास्ति ।

*द्विष्णो—१. वाणीभूषणम्, द्वितीयाध्याय, प० २७३

१७३. अथ चञ्चला

'हारमेरुजक्रमेण यद्विराजते मुकेशि !,
पोडशाक्षरेण यद् विकसित भवेत् सुवेषि ! ।
पिङ्गलेन भाषित समस्तनागनायवेन,
तद्वि चञ्चलाभिध कवीन्द्रभोददायकेन ॥ ३८० ॥

यथा-

आलि ! रासजातलास्पलीलया सुशोभितेन,
गैरिकादिधातुवन्यभूषणानुभूषितेन ।
गोपिकाविमोहिराववशिकाविनोदितेन,
मन्मनो हृत व्रजाटवीपु केलिमोदितेन ॥ ३८१ ॥

यथा वा, भूषणे*—

आलि ! याहि मञ्जुकुञ्जगुञ्जतालिलालितेन,
भास्करात्मजाविराजिराजि^१तोरकाननेन ।
शोभिते स्थले स्थितेन सङ्गता यदूत्तमेन,
माधवेन भाविनी तडिल्लितेव नीरदेन ॥ ३८२ ॥

इति चञ्चला १७३.

एतस्यैवान्यत्र चित्रसङ्गम्* इति नामान्तरम् ।

१७४. अथ मदनललिता

कर्णं कृत्वा कनकरुचिर तादङ्कसहित,
सविभ्राणा द्विजमथ पुन. स्वर्णाढ्यवलया ।
हारो धृत्वा कुसुमकलितौ हस्तेन रुचिरा,
वेदं पङ्क्तिभिर्मदनललिता छिन्ना रसयति* ॥ ३८३ ॥

यथा-

कालिन्दीये तटभुवि सदा^१ केलीसु ललित,
राधाचित्तप्रणयसदन गोपेषु(पीसु) वलितम् ।
सविभ्राण विरुतरुचिर वश करतले,
ध्यायेन्नित्य व्रजपतिसुत चित्तेऽतिविमले ॥ ३८४ ॥
इति मदनललिता १७४.

१ स हारमेरुजक्रमेण सवद्विराजते पुरेण, यद्विकसित भवेत् मुकेशि पोडशाक्षरेण ।

२ अ रम्यतोरकाननेन । ३ स. तटपरिसरे ।

* टिप्पणी-१ वाणीभूषणम्, द्वितीयाध्याय, पद्य २७८

२. छन्दोमञ्जरी, द्वितीयस्तवक, कारिका १४८

१७५ अथ घाणिनी

कुरु नगण विधेहि जगण ततो भकार,
जगणमयोऽपि रेफयुतमन्तजातहारम् ।
पडधिकपक्तिवर्णकलित सुवृत्तसार,
कलयत घाणिनीति कविभि कृतप्रचारम् ॥ ३८५ ॥

यथा-

अनवरत खराशुतनयाचलज्जलौघं,
तटभुवि 'सलुप्ते' * १ ऽसिलनृणा विनाशिताघं ।
द्विजजनसाधिताऽनुपमसप्ततन्तुभोक्ता,
पशुपजनेहंरि सह वनोदन जघास १ ॥ ३८६ ॥
इति घाणिनी १७५.

१७६ अथ प्रवरललितम्

यकार पूर्वस्मिन् रचय मगण धारयाशु,
नकार हस्त च प्रथय रगण धेहि वासु ।
गुरु पादस्यान्ते विरचय फणीन्द्रेण गीत,
सुहास्ये विश्राम प्रवरललित नाम वृत्तम् ॥ ३८७ ॥

यथा-

तडिल्लोलैर्मैघैर्दिशि दिशि महाध्वानवद्भि-
गंजानीकाकारैरनवरतमाप सृजद्भि ।
व्रज भीत ३ दौक्ष्य द्रुतमचलराज कराग्रे,
दधद्रक्षा कुर्यात् भयजलनिघावत्युदग्रे ॥ ३८८ ॥
इति प्रवरललितम् १७६

१७७ अथ गरुडवृत्तम्

द्विजवरमन धेहि रगण नकार तत,
कुरु रगण ततोऽपि रगण पदान्ते मत ।
पडधिकपक्तिवर्णकलित समस्ते पदे,
गरुडरुत समस्तफणिराजचित्तास्पदे ॥ ३८९ ॥

१ ल विटपितले लुते । २ क वतोदन भुक्ति । ३ क्ष छस्र ।

*टिप्पणी—१ अत्र पादे नगणमनु जगणोपस्थितिर्युक्ता किम्वच 'सलुप्ते' इति पाठे यगणो जायते तदयुक्तम् ।

यथा-

मृगगणदाहके वननदीसर गोपके,
 ग्रसति तरुन् विलोलनिजहेतिजिह्वाशतै ।
 भयभरखिन्न^१डिम्भवदन निरीक्षयाशु य,
 दवदहन पपौ स दिशतान् मनोवाञ्छितम् ॥ ३६० ॥
 इति गदडहतम् १७७

१७८. अथ चकिता

देहि भमिह स कर्णं हारौ कुण्डलमवले !,
 धारय कुमुम पुष्पद्वन्द्व कामिनि ! तरले ! ।
 रूपवलयक पादप्रान्ते स्यादिह चकिता,
 पडसु च विरति काव्यव्यक्ति स्मरले^२ भविता ॥ ३६१ ॥

यथा-

कामिनि ! सुघने वृन्दारण्ये नन्दय नयन,
 भामिनि ! भवने भव्याकारे भावय शयनम् ।
 शीतलपवने धन्ये पुण्ये खञ्जननयने,
 त्वामिह कलये तल्पेऽनल्पे कुञ्जरगमने ॥ ३६२ ॥
 इति चकिता १७८

१७९ अथ गजतुरगविलसितम्

धारय रौहिण्यमथ पतगवरपति,
 कारय वह्निमेय नगणवरगुरुयतिम् ।
 पोडशवर्णधारि गजतुरगविलसित,
 भामिनि ! भावयेदमपि मुनियतिरचितम् ॥ ३६३ ॥

यथा

सुन्दरि ! नन्दनन्दनमिह धरणिवलये,
 मानिनि ! मानदानमपि^३ न हि न हि कलये ।
 भावय भावनीयगुणगणपरिकलित,
 चेतसि चिन्तयाशु सखि ! मुनिजनवलितम् ॥ ३६४ ॥
 इति गजतुरगविलसितम् १७९

क्वचिद इदमथ ऋषभगजविलसितम्^४ इति नामान्तरेणोक्तम् ।

१ ल भिन्न । २ ल तरले । ३ ल मानगोचरमुमिह न कलये ।

^४टिप्पणी—१ वृत्तरत्नाकर अ० ३, का० ६१, छदोमञ्जरी द्वि० स्त० का० १४६

१८० अथ शैलशिखा

धेहि भकारमत्र खगराजमवेहि तत
कारय न ततोऽपि भगणो भगणेन युत ।
नूपुरमेकसख्यमववेहि पदा-तगत
शैलशिखाभिध त्वमवधारय नागवृत्तम् ॥ ३६५ ॥

यथा-

गोपवधूमयूरवनितानवमेधनिभ,
दानवसङ्घद्वारणविधावतिसप्रतिभ ।
तुम्बरुनारदादिकमन सरसीपु गज,
वाञ्छितमातनोतु तव गोपपतेस्तनुज ॥ ३६६ ॥

इति शैलशिखा १८०

१८१ अथ ललितम

कारय भ ततोऽपि रगण विधेहि नगण
पक्षिपति विधारय पुनस्तथैव नगणम् ।
कङ्कणमन्तग कुरु समस्तपादविरती
धेहि मन सदैव ललिते फणीश्वरकृती ॥ ३६७ ॥
अत्रापि सप्तभिर्नवभि प्रायो विरतिर्भवतीति उपदिश्यते ।

यथा-

गोपवधूमुखाम्बुजविकासने दिनपति,
दानवसङ्घमन्तकारिदारणे भृगपति ।
लोकभयापह सकलवन्द्यपादयुगल,
श कुरता ममापि च विलोलनेत्रकमल ॥ ३६८ ॥

इति ललितम १८१

१८२ अथ सुकेसरम्

नगण-सगणो विधेहि जगण तत पर,
सगण-जगणो च नूपुरमयोऽनन्तरम ।
फणिनृपतिभापित रसविधूदिताक्षर,
बलय हृदये सदा सुखकर मुकेसरम् ॥ ३६९ ॥

यथा-

नरपतिसमूहकण्ठतटघट्टनोद्भवे
रुडुगणनिर्भं स्फुलिङ्गनिकरर्भयानक ।
बिलसति नृपेन्द्रशत्रुगणधूमकेतुवत
तव रणविधौ स्थित करसले कृपाणक ॥ ४०० ॥
इति सुकेसरम् १८२

१८३ अथ ललना

प्रथम कलय करतलमात्मना ह्यपथा^१,
 ललना नगणयुगलवती जभाकलिताम् ।
 फणिराजभणितगुण(रु)विराजितामतुला,
 कलयाशु सपदि सुजनमानसे वलिताम्^२ ॥ ४०१ ॥

यथा

विदधातु सकलफलमनारत तनुते,
 सनकादिनिखिलमुनिनतो वने वनिते । ।
 ब्रजराजतनय इह सदा हृदा कलित,
 स चराचरजनतनुमहोदधौ फलित ॥ ४०२ ॥

इति ललना १८३

१८४ अथ गिरिवरधृति

शरपरिमितमिह नगणमनु कुरुत,
 विधुविरचितमथ लघुमपि रचयत ।
 फणिपतिरिति किल मधुरमनुवदति,
 कलयत निजहृदि गिरिवरधृतिरिति ॥ ४०३ ॥

यथा —

विशिखनिचयहतनिखिलरजनिचर ।,
 निजभुजयुगवलरणविनिहतस्वर । ।
 विबुधनिहतभय । दशमुखकुलहर ।,
 दशरथनृपसुत । जय । जय । रघुवर । ॥ ४०४ ॥
 इति गिरिवरधृति १८४

अचलधृति^१ *इत्ययम् ।

^१अत्रापि प्रस्तायप्रत्ययः षोडशाक्षरस्य पञ्चपट्टिसहस्राणि पञ्चशतानि षट्
 त्रिंशदुत्तराणि ६५५३६ भदास्तेषु कियं तो लक्षिता शपभदा प्रस्ताय स्वेच्छया
 नामानि चारयज्या (विचार्यं) लक्षणीया इत्युपदिश्यत ।^२

इति षोडशाक्षरम् ।

१ ख ह्ययं ताम । २ ख वलितम् । ३ पक्तिप्रय नास्ति क प्रती ।

*द्विष्यन्ती—१ छ दोमञ्जरी द्वितीयस्तवक, का० १५५

, —२ षोडशाक्षरवृत्तस्योपलब्धशपभदा पञ्चमपरिशिष्टे पर्यालोच्या ।

अथ सप्तदशाक्षरम्

तत्र प्रथमम्-

१८५. लीलाघट्टम्

वृत्ते यस्मिन्नष्टौ पादे वर्णा सयुक्ता सदृश्यन्ते,
 हारश्चकं प्रान्ते यस्मिन् वर्णा शैलश्चन्द्रै शोभन्ते ।
 सर्वेषा नागाणामीशेनैतत्सप्रोक्तं धेहि स्वान्ते,
 भूपालानां चित्तानन्दस्थानं लीलाघृष्टास्य कान्ते ! ॥ ४०५ ॥

पथा-

वारा राशौ सेतु बद्ध्या लङ्कायामातङ्कोष दास्यन्,
 नानावर्णं सुग्रीवाद्यं लङ्काया' भिन्नं दुर्गं कुर्वन् ।
 सीताचित्ते प्रेमाधिक्यं लोहं कीलं ग्राणीयोत्कीर्णा,
 काकुत्स्थ कत्याण वुर्यादि युष्माव- ऋव्यादादिषु तीर्णं ॥ ४०६ ॥

इति लीलाघट्टम् १८५

१८६ अथ पृथ्वी

पयोधरविराजिता वरसुवर्णवत्कङ्कणा,
 सुगन्धकुसुमोज्ज्वला सरसहारसशोभिनी ।
 सुरूपयुतकुण्डला कनकरावसुन्नपुरा,
 वसुप्रथितसंस्थितिजंगति भाति पृथ्वी सदा ॥ ४०७ ॥

पथा-

हरिभूजगनायक निजगिरि भवानीपति,
 गजेन्द्रममराधिपो निजमरालमञ्जासन ।
 द्विजा विबुधवृत्तिनी जगति जायमाने नृप !,
 त्वदीयशशोज्ज्वले किल गवेपयन्त्यातुरा ॥ ४०८ ॥

पथा वा, कृष्णकूतहले—

अनेन नयतऽधुना महदुलूखल शालिनो,
 रयातियुगमन्तरा वकुभयोरिह क्रोमता ।
 इतीरयति केचन श्रद्धधुराशु गोपान्हुदा,
 पुरो विहरति स्वके शिशुकदम्बके नापरे ॥ ४०९ ॥
 इत्यादि शतशो निदर्शनानि काव्येषु ।

इति पृथ्वी १८६

१८७ अथ मालावती

द्विजविलसिता पयोधरविराजिता हारिणी,
सरसकरयुक्सुवर्णवलयो लसत्कुण्डला ।
विरुतयुतनूपुरा मुनिदिगीशसस्याक्षरा,
भुजङ्गपतिभापिता जगति भाति मालावती ॥ ४१० ॥

यथा-

वनचरकदम्बकेरपरसिन्धुशोभाधरे,
करजदशनायुर्धर्जलधिनीरमाच्छादयन् ।
रघुपतिरूपागत सखि ! निशाचराधीश्वर,
रणभुवि निहत्य दास्यति तवातुल सम्मदम् ॥ ४११ ॥
इति मालावती १८७

मालाधर इति पिङ्गले* नामान्तरम् ।

१८८ अथ शिखरिणी

सुरूप स्वर्णाढ्य श्रवणमधिताटङ्कयुगल,
सदा सविभ्राणा द्विजमथ सुपुष्पाढ्यवलयो ।
सुरूप हस्ताग्र तदनु दधती राजति रसे,
शिवैशिख्यन्ना नागप्रथितमहिमेय शिखरिणी ॥ ४१२ ॥

यथा-

दिशि स्फारीभूतं कविनिकरगीतैस्तव रण-
स्तवैर्वत्याचक्रैर्द्विगुणितरथ क्षोणितिलक ।
प्रतापो दावाग्निस्तव खरकरस्पर्शकठिनो,
विपक्षक्षोणीन्द्र प्रथितवनमत्र प्रभवति* ॥ ४१३ ॥

यथा वा, ममैव एवमदूते खण्डकाव्ये—

यदा कसादीना निधनविधये यादवपुरी,
गत श्रीगोविन्द पितृभवनतोऽक्रूरसहित ।
तदा तस्योन्मीलदविरहृदहनज्वालगहने,
पपात श्रीराघाकलिततदसाधारणरति ॥ ४१४ ॥

१ ख प्रवति ।

*टिप्पणी—१ प्राकृतपंगलम्, द्वितीयपरिच्छेद, पद्य १७८

यथा वा, कृष्णकुतूहले—

विना तत्तद्वस्तु क्वचिदपि च भाण्डानि भगवत्,
प्रसादान्ताऽभूवन् प्रतिभवनमित्यद्भुतमभूत् ।
भयोद्यद्वैलक्ष्याऽवितथवचसस्तच्चरणयो-
निपेनुस्ता हस्ताहतवसनमुक्तामणिगणा ॥ ४१५ ॥

यथा वा, रूपगोस्वामिकृत-हसदूतकाव्ये^१*—

दुकूल विभ्राणो दलितहरितालद्युतिहर,
जपापुष्पश्रेणीरुचिरुचिरपादाग्वुजतल ।
तमालश्यामाङ्गो दरहसितलीलाञ्चितमुख,
परानन्दाभोग स्फुरतु हृदि मे कोऽपि पुरुषः ॥ ४१६ ॥

यथा वा, श्रीशङ्कराचार्यकृत-सौन्दर्यलहरीस्तोत्रे^२*—

दृशा द्राघोयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा,
दवीयास दीन स्नपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनाऽय धन्यो भवति न च ते हानिरियता,
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकर ॥ ४१७ ॥^३
इत्यादि महाकविप्रवन्धेषु शतशो निदर्शनानि द्रष्टव्यानि ।

इति शिलरिणी १८८

१८९ अथ हरिणी

द्विजरसयुता कर्णद्वन्द्वस्फुरद्वरकुण्डला,
कुचतटगत पुष्पहार तथा दधती मुदा ।
विरुत्तललित सविभ्राण^३ पदान्तगनूपुर,
रसजलनिधिदिद्युध्या नागप्रिया हरिणी मता ॥ ४१८ ॥

यथा—

सपदि कपय शीयविशस्फुरत्करजद्विजा,
गिरिवरतरुनुम्बुद्नन्तस्तथोत्पथगामिनः ।
अहमहमिका कृत्वा वारानिधेरतिलङ्घने^३,
तटभुवि गता सप्रेक्षन्ते मुखानि परस्परम् ॥ ४१९ ॥

१. क. प्रती नास्तौदम्पद्यम । २. ख सविभ्राणा । ३. ल. सघते ।

* टिप्पणी—१ श्रीरूपगोस्वामिकृत-हसदूतम् प्रथमपद्यम्

२ शंकराचार्यकृत सौन्दर्यलहरी पद्य ५७

यथा वा, कृष्णकुतूहले—

हसितवदने दृष्ट्वा चेष्टा सुतस्य सविस्मये,
ययतुरथ ते गोपापत्यौ तदद्भुतमन्यत ।
तदनु कतिचिद् बाला मात्रे वलेन सहोचिरे,
मृदमनुपद कृष्ण प्राशीदिति प्रतिभाजुष ॥ ४२० ॥

यथा वा, लक्ष्यलक्षणयुक्त तत्रैव—

ग्रहिलहृदयोदञ्चत्तत्तद्गतिप्रतिभाजुषा,
त्रिभुवनपतिप्रत्यासत्तिस्फुरत्पुलकस्पृशाम् ।
शिथिलकबरीवन्धस्त्रस्तस्रजा हरिणीदृशा,
न समरसत कायप्रायो लघुगुरुरप्यभूत् ॥ ४२१ ॥

श्लेषार्थं ऊहनीय । यथा वा— 'अथ स विषयव्यावृत्तात्मा यथाविधिसूनवे'^{*१}
इत्यादि रघुवशे महाकाव्यादिसत्कविप्रबन्धेषु च भूमनिदर्शनानि ।

इति हरिणी १८६

१६० अथ मन्दाक्रान्ता

कणौ पुष्पद्वितयसहितौ गन्धवद्धस्तयुक्ता,
हार रूप तदनु वलय स्वर्णसञ्जातशोभम् ।
सविभ्राणा विरुत्तललितो नूपुरी वा पदान्ते
मन्दाक्रान्ता जयति निगमेश्छेदयुक्ता रसैश्च ॥ ४२२ ॥

यथा—

सिन्धोष्पारे दशमुखपुरी वानरास्तत्र दूता,
पम्पाशम्पाशतयुत्तचलन्नीलमेघावलीका ।
वास केकाकवलिततटे मादृशामृध्यमूके,
देवो वाम पुनर्यमतो भावि किं किं न जाने ॥ ४२३ ॥

*टिप्पणी— १ अथ स विषयव्यावृत्तात्मा यथाविधिसूनवे,
नूपतित्रुद दत्त्वा मुने सितातपधारणम् ।
मुनिवनतदृच्छायां देव्या तया सह सिन्धिये,
गलितवयसामिश्वानूणामिदं हि कृत्स्नतम् ॥

[रघुवश, स० ३, प० ७०]

यथा वा, कृष्णकुतूहले—

हृत्वा ध्वान्तस्थितमपि वसुप्रक्षिपत् पक्षम[राजि-]

स्पन्द विन्दन् व्रजति कुहचित् कैश्चनालक्ष्यमाण. ।

छिद्राणि द्राक् कलयति शयाशक्यशिक्यस्थभाण्डे^१,

निद्रा भक्त्वा द्रवति जवतस्ताडयत् सुप्तबालात् ॥ ४२४ ॥ (?)

इति मन्दाक्रान्ता १६०.

१६१ अथ वशपत्रपतितम्

कारय भ ततोऽपि रगण रचय न-भगणौ,

धेहि नकारमेखलयात् तदनु सुललितान् ।

व्योमसुघाशुभि कुरु ह्ये तदनु च विरति^२,

चेतसि वशपत्रपतित रचय फणिकृतम् ॥ ४२५ ॥

यथा-

जानकि । नैव चेतसि कृथा रजनिचरमति,

राधवदूततामुपगत कलय हृदि निजे ।

जल्पति मारुताविति तदा जनकतनयया-

दत्त^३ न मुद्रिकाऽपि कलिता जलपिहितदृशा ॥ ४२६ ॥

यथा वा-

‘सम्प्रति लब्धजन्म शनकं कथमपि लघुनि ।’ इति किराताजुनीये^४ *।

इति वशपत्रपतितम् १६१

स्त्रीलिङ्गमिति केचित् । वशवदनम् इति शाब्भवे तस्यैव नामान्तरमुक्तम् ।

१६२ अथ नहृटकम्

कुरु नगण तत कलय ज वद भ च ततो,

जगणयुग ततो रचय कारय मेरुगुरू ।

फणिपतिभायित मुनिविघ्नदित्तवर्णधर,

कधिजनमोहक हृदि विधारय नहृटकम् ॥ ४२७ ॥

१ ख भारो । २ ख विरति । ३ ख हन्त ।

*द्विष्णी—१ सम्प्रति लब्धजन्म शनकं कथमपि लघुनि,

क्षीणायस्युपेयुषि भिदा जलधरपटले ।

खण्डितविग्रह बलभिदो धनुरिह विविधा,

पूरयितु भवन्ति विभवसिखरमणिकच ॥४३॥

[किराताजु नीयम् स० ५, प० ४३]

यथा—

अनुलवमूर्च्छया क्षपितदेहलता गलता,
नयनजलेन दूषितमुखी^१ तव भूमिसुता ।
रघुवरमुद्रिका हृदि निधाय सुखातिशयै-
र्मुकुलितलोचना क्षणमभूदमृतस्नपिता ॥ ४२८ ॥

यथा वा, श्रीभागवते दशमस्कन्धे वेदस्तुती^२—

जय ! जय ! जह्यजामजितदोषगृहीत^१गुणाम् । इत्यादि ।

इति नहृदकम् १६२.

अथ कोकिलकम्

मुनिरसवेदैर्विरतिर्यदि कोकिलक तदेवमेव भवेत् ।
तदुदाहरण लक्षणवाक्ये ज्ञेय सुधीभिरिति ॥ ४२९ ॥

यथा वा, छन्दोमञ्जर्याम्^३—

लसदरुणक्षेप मधुरभाषणमोदकर,
मधुसमयागमे सरसकेलिभिरुल्लसितम् ।
अलिललितद्युति रविसुतावनकोकिलक,
ननु कलयामि त सखि ! सदा हृदि नन्दसुतम् ॥ ४३० ॥

गणविरचना सेव, विरतिकृत एवात्र भेद इति नामान्तरम् ।

इति कोकिलकम् ।

१६३ अथ हारिणी

कर्णं कृत्वा कनकललित ताटङ्कसराजित,
सविभ्राणा द्विजमथ रुतस्वर्णाचिती नूपुरी ।
पुष्प हारौ सरसबलय सधारयन्ती मुदा,
वेदै पद्भिर्विरचित्तयतिः सौलोदिता हारिणी ॥ ४३१ ॥

१. स. दूषितमुखा । २. स. गृभीतगुणाम् ।

* टिप्पणी—१ जय जय जह्यजामजितदोषगृभीतगुणां

स्वमसि यदात्मना समवददसमस्तभाग ।

अगजगदोक्ततामलिलसार्थवबोधक ते

भवचिदजयात्मना च चरतोऽनुषरेक्षिगमः ॥

[भागवत दशमस्कन्ध, प्र० ८७, श्लो० १४]

२. छन्दोमञ्जरी, द्वि० स्त० वा० १६७ ।

पया-

वद्ध्वा सिन्धु नगरमिह मे राम समायात्यय,
 रोद्धु^१ श्रुत्वा दशमुख इति प्रीतोऽभवत्तत्क्षणम् ।
 वाह्यो कण्डू गमयितुमना पश्चान्नर राघव,
 श्रुत्वाऽवज्ञाकलुषितमना लङ्केश्वरोऽभूत्तदा ॥ ४३२ ॥

इति हारिणी १६३

१६४ अथ भाराक्रान्ता

ग्रादो कुर्यान् भगण-भगणौ ततो नगणो मत,
 रेफ दद्यात्तदनुशुचिर विधेहि कर तत ।
 मेरु हार विरचय तत फणीश्वरभापिता,
 भाराक्रान्ता जलनिधिरसैविरामयुता मता ॥ ४३३ ॥

पया-

सिन्धोर्वन्ध रघुवरकृत निशम्य दशाननो,
 दध्यो मूर्द्धना^२ सपदि बहुधा व्यधाच्च विघ्ननम् ।
 शङ्के च्योतन्मणिकपटतो रघूत्तमरागिणी,
 सत्यामाख्या जगति तनुते तदा कमलालया ॥ ४३४ ॥

इति भाराक्रान्ता १६४

१६५ अथ मतङ्गवाहिनी

हारमेरुजक्रमेण जायते यदा विराजिता,
 शैलभूमिसख्यकाशरस्तथा भवेद् विकासिता ।
 पण्डितावलीविनोदकारिपिङ्गलेन भापिता,
 जायते मतङ्गवाहिनी गुणावलीविभूषिता ॥ ४३५ ॥

पया-

नीम्यह विदेहजापति शरासनस्य 'भञ्जक,
 बालिजीवहारिण विभीषणस्य राज्यसञ्जकम् ।
 लक्ष्यवेधने तथा सदा शरासनस्य'^३ धारिण,
 रावणद्रुह कठोरभानुवशदीप्तिकारणम् ॥ ४३६ ॥

इति मतङ्गवाहिनी १६५

१६६ अथ पञ्चकम्

रचय नगण स तस्थान्ते धेहि पश्चान्मकार,
 तदनु चरणे तस्य द्वन्द्व कारयाशु द्विहरम् ।
 समुनिविद्युभि पादे छिन्न पिङ्गलेन प्रयुक्त,
 कलय हृदये छन्द श्रुष्ठ पञ्चक वृत्तसारम् ॥ ४३७ ॥

यथा-

अयमिह^१ पुर पारावार चेतसा गम्यपार,
 सपदि सहित पाद सङ्घर्भापणो वीचिहस्तै ।
 कपिगणमहासेना चैय पारमुत्प्रेक्षमाणा,
 रचय यदिह न्याय शीघ्र वानराणा पते^२ तत् ॥ ४३८ ॥

इति पञ्चकम् १६६

१६७ अथ दशमुखहरम्

जलनिधिपरिमित नगणमिह विरचय,
 तदनु च शरपरिमितलघुमपि कलय ।
 सकलफणिगणनरपतिरेति हि वदति,
 सखि ! कलय निजहृदि दशमुखहरमिति ॥ ४३९ ॥

यथा-

जय ! जय ! रघुवर ! जलधितरणनिपुण !,
 दशरथसुत ! विबुधनिकरकथितगुण ! ।
 सुरविमतदशवदनकुलकदनकर ।
 सुरगणनुतचरण ! शमिह मम वितर ॥ ४४० ॥

इति दशमुखहरम् १६७

^१अत्रापि प्रस्तारगत्या सप्तदशाक्षरस्य एक लक्ष एकत्रिंशत् सहस्राणि द्विसप्त-
 त्तिश्च १३१०७२ भेदास्तेषु कियन्न् प्रोक्ता, शेषभेदा प्रस्तार्य समुदाहरणीया,
 इत्यलमतिविस्तरेण^{१*} ।

इति सप्तदशाक्षरम् ।

१ एत अयमपि । २ एत पते । ३ पश्चिमप्रथम भास्ति क प्रती ।

*टिप्पणी १—सप्तदशाक्षरस्यैवविभक्त्याविविधप्रभात्प्रभेदा पञ्चमपरिनिष्कृतमोहनीया ।

अथ अष्टादशाक्षरम्

तत्र-

१६८ अथ लीलाचन्द्र

अश्वं सरयाता यस्मिन् वृत्ते पादे पादे शोभन्ते कर्णा ,
पश्चाद् वेदै सरयाता हारा योगेश्चन्द्रैस्सयुक्ता वर्णा ।
लीलाचन्द्रारय वृत्त प्रोक्त नागानामीशेनैतन् कान्ते ^१,
रन्ध्राङ्कवर्णे सविच्छिन्न धेहि स्वान्ते भास्वनेनान्ते ॥ ४४१ ॥

यथा-

हालापानोद्धूणनेवान्तस्तुच्छीकुर्वत्कैलास भासा,
नीलाम्भोजप्रोद्यच्छोभावत् स्कन्ध द्वन्द्वे सराजद्वासा ।
माला वक्ष पीठे विभ्राणो न्यक्कुर्वन्ती कान्त्यालीन् तूर्ण,
तान्नाङ्कस्सर्वेषा लोकाना कल्याणौघ दद्यात् सम्पूर्णम् ॥४४२॥

इति लीलाचन्द्र १६८

१६९ अथ मञ्जीरा

पूर्वं ^१ कर्णवित्त्व कारय पश्चाद्धेहि भकार दिव्य,
हार वह्निप्रोक्त धारय हस्त देहि मकार चान्ते ।
रन्ध्रवर्णविश्राम कुरु पादे नागमहाराजोक्त,
मञ्जीराख्य वृत्त भावय शीघ्र चेतसि कान्ते ^१ स्वीये ॥ ४४३ ॥

यथा-

सिन्धुर्गम्भीरोऽय राजति गन्तार कपयस्तत्वार,
शैल शैले केकी कूजति वातोऽय मलयाद्रेर्विति ।
लङ्काया वंदही तिष्ठति कामोऽय पुरत सज्जास्र ,
सामग्रीय तावल्लक्ष्मण सर्वं पूर्वकृतस्याधीनम् ॥ ४४४ ॥

यथा वा, भूषणे^{१*}-

प्रीडध्वान्ते गर्जद्वारिद्वाराधारिणि काले गत्वा,
त्यक्त्वा प्राणानग्र कौलसमाचारानपि हित्वा यान्ती ।
कृत्वा सारङ्गाक्षी साहसमुच्चं केलिनिकुञ्ज शून्य,
दृष्ट्वा प्रागत्राण भावि कथ वा नाथ ^१ वद प्रेयस्या ॥४४५॥
इति मञ्जीरा १६९

१ स पूषम ।

*दिल्ली-१ वालीभूषणम्, द्वितीयाध्याय, पद्य २६४

२००. अथ चर्चरी

कुण्डलं दधती सुरूपसुवर्णं रावरसाहितं,
 तूपुरं कुचयुग्मसङ्गतदिव्यहारविभूषिता ।
 हस्तयुक्तसुरूपकङ्कणभासिता फणिभाषिता,
 चर्चरी कविमानसे परिभाति भावुकदायिनी ॥ ४४६ ॥

यथा—

रासकेलिरसोद्धतप्रियगोपवेष ! जगत्पते !
 दैत्यसूदन ! भोगिमहंन ! देवदेव ! महामते !
 कंसनाशन ! वारिजासनवन्द्यपाद ! रमापते !,
 चिन्तयामि विभो ! हरे ! तव पादुके त्रिदशैर्नुते ॥ ४४७ ॥

१ यथा वा, अस्मत्तातचरणानां श्रीनन्दनन्दनाष्टके—

मन्दहासविराजितं मुनिवृन्दवन्द्यपदाम्बुजं,
 सुन्दराधरमन्दराचलधारि चारु लसद्भुजम् ।
 गोपिकाकुचयुग्मकुङ्कुमपङ्कुरूपितवक्षसं,
 नन्दनन्दनमाधये मम किं करिष्यति भास्करिः ॥ ४४८ ॥

२ यथा वा, तेषामेव श्रीसुन्दरीध्यानाष्टके—

कल्पपादपनाटिकावृतदिव्यसौधमहार्णवे,
 रत्नसङ्घकृतान्तरीपसुनीपराजि विराजते,
 चिन्तितार्थविधानदशमुरत्नमन्दिरमध्यगां,
 मुक्तिपादपदल्लरोमिह सुन्दरीमहमाश्रये ॥ ४४९ ॥

यथा वा, भूषणे^{३*}—

कोकिलाकलकूत्रितं न शृणोषि सम्प्रति सादरं,
 मन्यसे तिमिरापहारि सुधाकर न सुधाकरम् ।
 दूरमुञ्चसि भूषणं विकलासि चन्दनमारते,
 कस्य पुण्यफलेन सुन्दरि ! मन्दिरं न सुखायते ॥ ४५० ॥

१. २. नन्दनन्दनाष्टक—सुन्दरीध्यानाष्टकञ्चेति पद्यद्वयं नास्ति क. प्रती ।

३. याणीभूषणम्, द्वितीयाध्याय, पद्य २६६

यथा वा, मार्कण्डेयमहामुनिविरचितचन्द्रशेखराष्टके—[प्रथम पद्यम्]

रत्नसानुशरोसन रजतादिशृङ्ग निकेतन,

सिञ्जिनीकृतपद्मगेश्वरमच्युतानलसायकम् ।

क्षिप्रदग्धपुरत्रय त्रिदशालयैरभिवन्दित,

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यम ॥ ४५१ ॥

यथा वा, शङ्कराचार्यकृत-नवरत्नमालिकास्तोत्रे—

कुन्दसुन्दरमन्दहासविराजिताधरपल्लवा-

मिन्दुविम्बनिमाननामरविन्दचारुविलोचनाम् ।

चन्दनागुरुपङ्क रूपिततुङ्गपीनपयोधरा,

चन्द्रशेखरवल्लभा प्रणमामि शैलसुतामहम् ॥ ४५२ ॥

इत्यादि महाकविप्रबन्धेषु सहस्रशो निदर्शनानि अनुसन्धेयानि ।

इति चर्चरी २०० इति द्वितीय शतकम् ।

२०१ अथ श्रीशचन्द्रः

यकार रसेनोदित सर्वपादेषु सधेहि युक्तं,

तथा धेहि पादे नगाधीशशीतागु^३सख्यातवर्णम् ।

कवीनामधीशेन नागाधिराजेन सभापित्त तत्,

मुदा श्रीडया शोभित चन्द्रसज्ञ हृदा धेहि^३ वृत्तम् ॥ ४५३ ॥

यथा— मुनीन्द्रा पतन्ति स्म हस्त नृपा कर्णयुग्मे तथाधु,

सभाया नियुक्ता दधु कम्पमुच्चंस्तदा स्तम्भमङ्गा ।

सुराणा समूहेन नाथाधि लोके तथान्योन्यवाच^४—

स्तदा रामसभिन्नवाणासनाढघातपूर्णा^५ त्रिलोके ॥ ४५४ ॥

यथा वा, भूपणे^६—

भ्रमन्ती घनुमुं चनाराचघारानिच्छे समस्ते,

नभः प्राङ्गणे पक्षिवाय्वो प्रयाते निरन्ते प्रशस्ते ।

१. नवरत्नमालिकाया पद्य क प्रती नास्ति । २ 'शीतागु' क प्रती नास्ति ।
३ धेहि । ४ छ. वाशो । ५ छ सनाघातपूर्णे ।

टिप्पणी—१ रा प्रा वि प्र द्र० स० १४२५० स्य उपरोक्तपद्य नास्ति, किन्त्वस्य स्थाने
निम्नोद्धृत पद्य वर्तते ।

‘पदान्यासतन्म्रीकृतशीलिचक्रवृट्कर्ममूर्ध्नि

भ्रमस्तुङ्गशृङ्गाङ्गुविशेषकीटैरवैर च दपेम् ।

भुजङ्गैश्चानि दवासवशतोच्चलच्चक्रवासाचनेन्द्र^७,

शिवायास्तु चन्द्रेन्दुचूडामणोरुताण्डवाङ्म्वर च ॥२६६॥

[वाणीभूपणम्. द्वि ध प २६८]

तथा चण्डगाण्डीवन्नाणावलीनीचरक्षाविरक्षा^१,

वभूवाङ्गराजो यथा न स्थितोऽसौ विपक्ष स्वपक्ष ॥ ४५५ ॥

इति श्रीडाचन्द्र २०१

२०२ अथ कुसुमितलता

कणौ^२ ताटङ्कप्रथितयशसो^३ धारयन्ती द्विज च,

प्रोद्यदरूपाढ्य कनककलित कङ्कण चादधाना ।

पुष्पाक्तौ हारो तदनु दधती राववनूपुरी च,

द्विन्ना बाणार्णो कुसुमितलता स्याद् रसैर्वाजिभिश्च ॥ ४५६ ॥

यथा-

घूर्णश्रेत्रात् हलकलनया^४ भिन्नपातालमूल,

तालाङ्के गाङ्ग क्षिपति रभसान्नागसाङ्क प्रवाहे^५ ।

हर्म्याणा सङ्घे^६ कुरुभिरभितश्चूर्णित घूर्णित च,

क्रीडार्थं बालैरिव विरचिते^७ क्रीडित शैलराजे ॥ ४५७ ॥

यथा वा-

'गौड पिप्टान्न दधि सकृशर निजेल मद्यमम्लम्।' इत्यादि वाग्भटे चिकित्साग्रन्थे ।^८*

इति कुसुमितलता २०२

२०३ अथ नन्दनम

रचय नकारपुस्त-जगण विधेहि पश्चाच्च भ,

कुरु जगण ततोऽपि रगण विधेहि रेफ तत ।

शिवरचिता विधेहि विरति तथा हर्यर्भासिता,

कविजननन्दन कुरु सखे^१ सदा हृदा नन्दनम् ॥ ४५८ ॥

यथा-

तव यशसा त्रिलोकवलये बलक्षतामागते,

बहुलनिशास्वपि प्रकटिताश्चकौरकैश्चञ्चव ।

जगति पद्म प्रवाहमतिभि सुख मरालैर्वृत,

सपदि गुहा गता हिमधिया मुनीश्वरा दुर्बला ॥ ४५९ ॥

१ ल विलसो । २ ल यशसो । ३ ल हसकलजया । ४ ल प्रवाहो ।
५ ल विरचित कौतुहात् ।

*टिप्पणी— १ आभ्यान्नाद्रूप पिणितमबल गुचकाक तिलाग्र,
गौड पिप्टान्न दधि सलवण विञ्जल मद्यमम्लम् ।
धानावत्तूर समानमयो गुर्वसाहस्य विदा हि
स्वर्ण चारात्रो हव्यगुग्गुवान् यजयेम्येन च ॥
[वाग्भट—पिप्टाङ्गहृदय, प ०१७ श्लो० ४२]

यथा वा, छन्दोमञ्जर्याम्*—

तरणिमुत्तातरङ्गपवनै सलीलमान्दोलित,

मधुरिपुपादपङ्कजरज सुपूतपृथ्वीतलम् ।

मुरहरचित्रचेष्टितकलाकलापसस्मारक,

क्षितितलनन्दन व्रज सखे । सुखाय वृन्दावनम् ॥ ४६० ॥

यथा वा, 'अहृत धनेश्वरस्य युधि य समेतमायोधनम्' । इत्यादि भट्टिकाव्ये** ।

इति नन्दनम् २०३

२०४ अथ नाराच

रचय न-युगल समस्ते पदे वेदसप्त्याकृत,

तदनु च कलयागु पक्षिप्रभु भासमान पदे ।

धमुहिमकिरणप्रयुक्ताक्षरोद्भासमान हृदा,

परिकलय फणोन्द्रनागोक्त-नाराचवृत्त मुदा ॥ ४६१ ॥

यथा—

सुरपतिहरितो गलत्कुन्तलच्छाद्यमान मुख,

सपदि विरहजेन दु खेन मित्रस्य पाण्डुप्रभम् ।

अनुहरति घनेन सञ्छादित किञ्चिदुद्यत्प्रभ,

समुदितवरमण्डलोऽप्य पुर शीतरश्मि प्रिये । ॥ ४६२ ॥

यथा वा, 'रघुपतिरपि तात वेदो विगुह्यो प्रगृह्य प्रियाम् ।' इत्यदि रघुवशे*** ।

पोडशाक्षरप्रभ्तारे नाराच , अथ तु नाराच इत्यनयोर्भेद ।

इति नाराच २०४.

मञ्जुला इत्यन्यत्र ।

१ पतिरपि नास्ति क प्रती ।

*टिप्पणी—१ छन्दोमञ्जरी, द्वि० स्तवक, का० १७५ या उदाहरणम्

२ अहृत धनेश्वरस्य युधि य समेतमायो धन,

तमहमितो विलोक्य विवुर्धं कृतोत्तमाऽऽयोधनम् ।

विभवमदेन निहनुतहियाऽतिमात्रसम्पन्नक

व्यथयति सत्पथादधिगताऽपवेह सपन्न कम् ॥

[भट्टिकाव्य, सर्ग १० प० ३७]

३ रघुपतिरपि जातवेदोविगुह्यो प्रगृह्य प्रिया,

प्रियसुहृदि विभीषणे सगमय्य श्रिय वरिण ।

रविमुनमहितेन तेनानुपात स सौमित्रिणा

मुजविजितविमानरत्नापिहृद प्रत्ये पुरीम् ॥

[रघुवग, स० १२, प० १४]

२०५. अथ चित्रलेखा

कर्णं कृत्वा कनकसुललित कुण्डलप्राप्तशोभ,
 सविभ्राणा द्विजमथ च कर कङ्कणेन प्रयुक्तम् ।
 पुष्प हारद्वयमथ दधती राववन्नूपुरी च,
 वेदैरश्वैर्मु निरचितयतिर्भासते चित्रलेखा ॥ ४६३ ॥

यथा-

श्रीमद्राजन्नयमिह गगने त्वत्प्रतापाहितस्य,
 छिद्रस्येन्दु. कलयति सुपमा मुद्रणे सीसकस्य ।
 ताराशोभा विदधति वियतो हारितस्य प्रतापै-
 स्कोटस्यैषा दिगपि किमु हरे कुङ्कुमैर्भाति कीर्णा ॥४६४॥

इति चित्रलेखा २०५.

२०६. अथ भ्रमरपदम्

कारय भ ततोऽपि रगणमथ नगणयुगल,
 धेहि नकारक तदनु च विरचय करतलम् ।
 भासिनमक्षरैर्गिरिवरहिमकरपरिमितै ,
 पिङ्गलभाषित भ्रमरपदमिदमतिललितम् ॥ ४६५ ॥

यथा-

नीलतम पटाधिगतमिद'मुडुगणमखिलं,
 मौक्तिकमेप कालनरपतिरतिललिततरम् ।
 वासवदिग्गतद्विजपतय इह कलितकर,
 यच्छति सोऽपि ताननुकलयति निजकरगणं ॥ ४६६ ॥

इति भ्रमरपदम् २०६.

२०७. अथ शार्ङ्गललितम्

आदौ मं सतत विधेहि तदनु ज्ञेय सरसिज,
 तत्पश्चाद् विरचय ज कलय स कर्णं तदनुगम् ।
 तस्यान्ते गुरु रुचहस्तमतुल जानीहि सरस,
 नव्यप्रेमभरालसे मुललिते शार्ङ्गललितम् ॥ ४६७ ॥

पद्या-

श्रीगोविन्दपदारविन्दमनिश वन्देऽतिसरस,
 मायाजालजटालमाकुलमिद मत्वाऽतिविरसम् ।
 वृन्दारण्यनिकुञ्जसञ्चरणतः सञ्जातसुपम,
 'दम्भोत्स्यंकुशसध्वज सरसिजप्रोद्भासमसमम् ॥ ४६८ ॥
 इति शार्ङ्गसललितम् २०७.

२०८. अथ सुललितम्

कलय नयुगलं पश्चाद्वक्त्रं तथातिमनोहर,
 तदनु विरचयेः कर्णौ पुष्यान्वितौ भगण ततः ।
 वितनु सुललित पक्षीन्द्र वा विलासिनीमुन्दरं,
 मुनिविरतियुत वेदैश्चिन्न ह्यैश्च विभावितम् ॥ ४६९ ॥

पद्या-

त्रिजगति जयिनरते ते भावा नवेन्दुकलादयः,
 परिणतिमधुरा. काम सर्वे मनोरमतां गताः ।
 मम तु तदखिल शून्यारण्यप्रभ सखि ! जायते,
 मुररिपुरहित तस्माद् भद्रे समाह्वय त हरिम् ॥ ४७० ॥
 इति सुसलितम् २०८.

२०९. अथ उपवनकुसुमम्

सलिलनिधिपरिमित नगणमिह विरचय,
 तदनु च रसनिगदितलघुमपि कलय ।
 कविजनहितसकलफणिपतिकथितमिह,
 हृदि कलय सुललितमुपवनकुसुममिति ॥ ४७१ ॥

पद्या-

असितवसनवरललितहलमशसधर !,
 निजतनुरुचिर्बिजितपुरमयनगिरिवर ! ।
 द्विविदक्षपिधरक्षदनकर ! नयरुचिचय !,
 जय ! जय ! कुरनरपतिनगरजनिनमय ! ॥ ४७२ ॥
 इति उपवनकुसुमम् २०९.

अत्रापि प्रस्तावगत्या अष्टादशाक्षरस्य लक्षद्वय द्वाघण्टिसहस्राणि चतुष्वत्वारिंशदुत्तर च शत २६२१४४ भेदास्तेषु कियन्तो भेदा प्रोक्ता, शेषभेदास्तूह्या सुधीभिरिति दिक् ।*१

इति अष्टादशाक्षरम् ।

अथ एकोनविंशाक्षरम्

तत्र प्रथमम्-

२१० अथ नागान व

अश्वाना सख्याका यस्मिन् सर्वस्मिन् पादे सदृश्यन्ते कर्णा,
पश्चाद् वाणं सप्रोक्ता हारा युक्ता रन्ध्रभूम्या चोक्ता वर्णा ।
सर्वेषा नागानामीशेनैतत् प्रोक्त नागानन्दाख्य वृत्त,
विश्वेषा यच्छ्रुत्वा समज्जत्यानन्दाना वारा राशी चित्तम् ॥ ४७३ ॥

यथा-

जैनप्रोक्ताना धर्माणा सर्वेभ्यो लोकेभ्य शिक्षा सदास्यन्,
यज्ञाना हिंसाङ्गाना तन्मूलाना वेदाना वा निन्दा कुर्वन् ।
सर्वस्मिन्त्रैलोक्ये भूताना रक्षारूपा धर्मानेवाधास्यन्,
कल्याण कुर्यात् सोऽय गोविन्द श्रीडायं बोद्धाभिख्यां गृह्णन् ॥४७४॥

इति नागानन्द २१०

२११ अथ शाङ्खलिक्रीडितम्

कर्णं कुण्डलपुष्पगन्धललित हार च वक्षोरुहे,
हस्तं कङ्कणयुग्मसुन्दरतर शब्दोल्लसन्नूपुरी ।
रूपाढ्या रसना तथैव च दधत्तीक्ष्णाद्युविच्छेदित,
श्रीमत्पिङ्गलभाषित विजयते शाङ्खलिक्रीडितम् ॥ ४७५ ॥

यथा

ते राजन्रतिचण्ड*कीर्त्तितटिनीडिण्डीरपिण्डाकृति-
ब्रह्माण्डातिलसत्करण्डनिहितश्वेताण्डजप्रोज्ज्वलम् ।
तन्वीगण्डविपाण्डुरद्युतिपुरस्फूर्जद्विधोमण्डल,
राहोमण्डक(ल)खण्डमेतदुदयत्याण्डलाशामुखे ॥ ४७६ ॥

१ पचितत्रय नास्ति क प्रती । २ ए राजस्ते परिपूणकीर्ति ।

*दिप्पणो—१ अष्टादशाक्षरवृत्तस्य प्र-चा-तरेषुवलक्षणेभेदा पञ्चमपरिघण्टे द्रष्टव्या ।

यथा वा, ममैव पाण्डवर्चरिते अर्जुनागमने द्रोणवाक्यम्—

ज्ञान यस्य ममात्मजादपि जनाः शास्त्रास्त्रशिक्षाधिकं,
पार्थः सोऽर्जुनसंज्ञकोऽत्र सकलः कौतूहलाद् दृश्यताम् ।
श्रुत्वा वाचमिति द्विजस्य कवची गोधाङ्गुलिप्राणवान्,
पार्थस्तूणशरासनादिरुचिरस्तत्राजगाम द्रुतम् ॥ ४७७ ॥

यथा वा, कृष्णकुसुहले—

उन्मीलन्मकरध्वजव्रजवधूहस्तावधूताञ्चल-
व्याजोदञ्चितवाहुमूलकनकद्रोणीक्षणादीक्षणे ।
उद्यत्कण्टककैतवस्फुटजनानन्दादिसंख्यामित-
ब्रह्माद्वैतसुखश्चिरं स भगवांश्चिक्रीड तत्कन्दुकैः ॥ ४७८ ॥

इत्यादि महाकविप्रबन्धेषु सहस्रश उदाहरणानि प्रत्युदाहरणत्वेन^१ द्रष्टव्यानि ।

इति शार्ङ्गलविक्रीडितम् २११.

२१२. अथ चन्द्रम्

प्रतिपदमिह कुरु नगणत्रितयमथ कलय,
जगणमिह नगणयुगलं तदनु च विरचय ।
चरणविरतिमनु रुचिरं कुमुममथ वितनु,
सकलफणिनृपतिकृत-चन्द्रमिति शृणु सुतनु ! ॥ ४७९ ॥

यथा -

नवकुलवनजनितमभ्रमरुदिह वहति,
किरणमनुकलयति विधुस्त्रिजगति सुमहति ।
सपदि सखि ! मम निजहित वचनमनुकलय,
समनुसर वनगतहरिं तनुमतिसफलम् ॥ ४८० ॥

यथा वा, भूषणे*—

अनुपहतकुमुमरसतुल्यमिदमधरदल-
ममृतमयवचनमिदमालि विफलयसि चल ।
यदपि यदुरमणपदमोश मुनिहृदि लुठति,
तदपि तव रतिवलितमेत्य धनतटमटति ॥ ४८१ ॥

इति चन्द्रम् २१२.

चन्द्रमासा इत्यस्यैव नामान्तरं पिङ्गले** ।

१. ख. 'प्रत्युदाहरणत्वेन' नास्ति ।

टिप्पणी—१. वाणीभूषणम्, द्वितीयाध्याय, पद्य ३००

टिप्पणी—२. प्राकृतपदसम्, परिच्छेद २, पद्य १६०

२१३. अथ धवलम्

द्विजवरगणमिह रचय जलनिधिपरिमितं,
 तदनु कलय सगणमथ चरणविरतिगतम् ।
 सकलकविकुलहृदयतलविलुठनकरणं,
 कणिपतिभणित-धवलमिह श्रुणु सुखकरणम्^१ ॥ ४८२ ॥

यथा-

जलमिह कलय सखि ! कनकयुतमिव विमलं,
 गगनतलमपि विगतजलधरमतिधवलम् ।
 गतवचनरचनमिदमपि शिखिकुलमवलं,
 नववपुरिदमव मम कुसुमविशिखतरलम् ॥ ४८३ ॥

यथा वा, भूषणे^२—

उपगत इह सुरभिसमय इति सुमुखि ! वदे,
 निधुवनमधि सह पिब मधु जहि रुपमपदे ।
 कमलनयनमनुसर सखि ! तव रभसपरं,
 प्रियतमगृहगमनमुचितमनुचितमपरम् ॥ ४८४ ॥

इति धवलम् २१३.

धवला इति पिङ्गले^{३*} ।

२१४. अथ शम्भुः

कुरु हस्तं स्वर्णविराजत्कङ्कणपुष्पोद्यद्गन्धैर्युक्तं,
 श्रवणं ताटङ्कमुरूपप्राप्तरसं हारद्वन्द्वं पश्चात् ।
 रसनायुग्मं कनकेनात्यन्तविराजद्वक्राभ्यां प्रान्ते,
 नवभूषणैः कथितं नागाचितशम्भ्वाख्यं वृत्तं कान्ते ! ॥ ४८५ ॥

यथा-

नवसन्ध्या वह्निजभोत्या पश्चिमसिन्धी मित्रे संमग्ने,
 नलिनीयं पङ्कजनेत्रं मीलयतीवात्यन्तं दोकेन ।
 हरितो यध्वः पतगौधानां विहृतंरञ्जनीर्नादं संदधुः^१,
 यरभृत्यांश्चाम्बरमुच्चैर्मानुसमूहारक्तं संवधुः ॥ ४८६ ॥

१. स. गुह्यारणम् । २. स संघञ्जुः ।

*टिप्पणी—१ वालीभूषणम्, द्वितीयाध्याय, पद्य ३०२

॥ २ प्राकृतपैगलम्, परि० २, पद्य १६२

यथा वा*१-

जय । मायामानवमूर्ते दानववशध्वसव्यापारी^१,
 वलमाद्यद्रावणहत्याकारण^२ लङ्कालक्ष्मीसहारी^३ ।
 कृतकसध्वसन-कर्माशसन गो गोपी-गोपानन्दी^४,
 वलिलक्ष्मीनाशन-लीलावामन-दैत्यश्रेणोनिष्कन्दी^५ ॥ ४८७ ॥

इति सप्तमं २१४

२१५ अथ मेघविस्फूर्जिता

यकार सदेहि प्रथममथ म देहि पश्चात्कार,
 कर तस्याप्यन्ते रचय रुचिर रेकयुग्म ततोपि ।
 गुरु तस्याप्यन्ते कलय ललित पद्मसच्छेदयुक्त,
 कुरु च्छन्द सार फणिपकथित मेघविस्फूर्जिताख्यम् ॥ ४८८ ॥

यथा-

विलोले^६ कल्लोलैस्तरणिदुहितु क्रीडन कारयन्त,
 लसद्वक्ष कसप्रभृतिकठिनान् दानवानहंयन्तम् ।
 सुराणा सेन्द्राणा ददतममय पीतवस्त्र दधान,
 सलील विन्यासैश्चरणरचितैर्मू मिभाग पुनानम् ॥ ४८९ ॥

यथा वा, कथिराक्षसकृतदक्षिणानिलवर्णने-

उदञ्चत्कावेरीलहरिपु परिष्वङ्गरङ्गे लुठन्त
 कुहूकण्ठी कण्ठीरवरवलवत्रासितप्रोपितेभा ।
 श्रमी चेत्रे मंत्रावरणितरुणीकेलिकङ्कल्लिमल्ली-
 चलदवल्लीहल्लीसकसुरभयश्चण्डि चञ्चन्ति वाता ॥४९०॥

इत्यादि ।

इति मेघविस्फूर्जिता २१५

२१६ अथ छाया

गुरुपादथ कर्णे कनकललित ताटङ्कमुग्मान्वित,
 द्विज गन्ध स्वर्ण पलयपुगल पुष्पाढघहारद्वयम् ।
 दधाना पादाते ललितविहसप्रोद्भासित नूपुर,
 रसं पदभिदिद्यन्ना फणिपकथिता छाया सदा राजते ॥४९१॥

१ स व्यापारिन् । २ स हिताकारण । ३ संहारिन् । ४ स गोपानदिन् ।
 ५ स निरगिन् । ६ स वपुटी ।

*टिप्पणी—१ काशीभूषणम्, २ शिवायाम्याय, पद ३०४

यथा-

भवच्छेदे दक्ष दितिसुतकुलध्वान्तस्य विध्वसने,
सदार्काभ वक्ष स्थलगतलसद्द्रत्नाशुभिर्भूपितम् ।
वधूभिर्गोपाना तरणितनयाकुञ्जेषु रासस्पृह,
सदा नन्दादीनाममितसुखद गोपालवेप भजे ॥ ४६२ ॥

इति छाया २१६

२१७ अथ सुरसा

कर्णद्वन्द्व विराजत कुसुमसुललित कुण्डलयुग,
सविभ्राणा ततोपि द्विजमथ च कर कङ्कणयुतम् ।
रूपाढ्या दिव्यरावा कुसुमविलसिता नूपुरयुता,
शैलैरश्वैश्च वाणैर्विरचितविरतिर्भाति सुरसा ॥ ४६३ ॥

यथा-

गोपाल केलिलोल व्रजजनतरुणी-रासरसिक,
कालिन्दीये निकुञ्जे पशुपसुतगणैर्वेष्टिततनुम् ।
वशीरावेण गोपीसुललितमनसा मोहनपर,
कसादीनामराति व्रजपतितनय नीमि हृदये ॥ ४६४ ॥

इति सुरसा २१७

२१८ अथ फुल्लदाम

कणीं स्वर्णाढ्यौ कुसुमरसमयी रूपरावाग्विती चेद्,
पुष्पोद्यदरूपी कनकविरचित नूपुर पुष्पशोभम् ।
हारी रावाढ्यौ विलसदमलगौ कङ्कणेनातिरम्यौ,
शस्वत्लोकाना सुकथितमतुल फुल्लदाम प्रसिद्धम् ॥ ४६५ ॥

यथा-

दीव्यद् देवाना परमधनकर कामपूर जनाना,
शस्वद्भक्ताना परिकलितकलाकोशल कामिनीनाम् ।
दिव्यानदाना परम^१निलयन वेदगम्य पुराण,
पुण्यारण्यानां गहनमहमिम नीमि मूर्द्धना नितान्तम् ॥ ४६६ ॥

इति फुल्लदाम २१८

२१६. अथ मृदुलकुसुमम्

रचय नगणमिह रसपरिमित^१मनुकलय,

शिशिरकिरणरचित कुसुमगणनमपि कुरु ।

सकलभुजगनरपतिकथितमिदमतिशय-

सुललितमृदुलकुसुममिति हृदि परिकलय ॥ ४६७ ॥

यथा-

अग्रि ! सहचरि ! निरुपममृदुलकुसुमरचित-

मनुकलय सरसमलयजकणलुलितमिति ।

वरविपिनगततस्वरतलकलितशयन-

मनुसर सरसिजनयनमनुपमगुणमिह ॥ ४६८ ॥

इति मृदुलकुसुमम् २१६

^१अत्रापि प्रस्तारगत्या एकोनविंशत्यक्षरस्य लक्षपञ्चक चतुर्विंशतिसहस्राणि अष्टाशीत्युत्तर शतद्वय ५२४२८८ भेदास्तेषु कतिपयभेदा प्रोक्ता, शेषभेदाः सुधीभि प्रस्तार्य उदाहरणीया, इत्युपदिश्यते^{१*} ।

इत्यूनविंशत्यक्षरम् ।

अथ विंशाक्षरम्

तत्र प्रथमम्-

२२० योगानन्द

यस्मिन् वृत्ते दिवसस्याता सलग्ना शोभन्तेऽयन्त पूर्णा कर्णा-

स्तद्वल्लीलालोले पादप्रान्ते विख्याता ख्याप्यन्तं नख्या वर्णा ।

श्रीमन्नागाधीशप्रोक्त विद्वत्सार हारोद्धार धेहि स्वान्ते,

तद्वद्वृत्त योगानन्द सर्वानन्दस्थान धैर्याधान कान्ते^१ ॥४६९॥

यथा-

वन्देऽहं तं रम्यं रम्यं कालं सर्वाभ्युदय देव दीप्त धीरं,

नाथ नव्याम्भोदप्रसूय काम श्रव्य राम मित्र सेव्य वीरम् ।

सर्वाधार भव्याकार दक्ष पात वसादीना काल बाल,

आनन्दाना वन्द विद्यासिन्धु सेवे येन क्षिप्त मायाजालम् ॥५००॥

इति योगानन्द २२०

१. एत. परिणम् । २ परिचयप नास्ति क प्रती ।

*टिप्पणी—१. रम्यसेवभेदाः पञ्चमपरिणिते विलोकनीयाः ।

२२१ अथ गीतिका

कुरु हस्तसगिमुशङ्खकङ्कणरूपरावसमन्वित,

वरपक्षिराजविराजित नवगन्धयुग्मविभूषितम् ।

कुरु बल्लकोरवधारिण रसमुग्धसुन्दररूपिणो-

रवयुक्तनूपुरमत्र घेहि विधेहि भाभिनि ! गीतिकाम् ॥ ५०१ ॥

यथा-

अयि ! मुञ्च मानमवेहि दानमुपैहि कुञ्जगत हरि,

नवकञ्जचारुविलोचन भयमोचन भवसन्तरिम् ।

कुरुपे विलम्बमकारण सखि ! साधयाशु मनोरथ,

ननु खिद्यसेऽतिभृश वृथैव जनुर्विधारयसे कथम् ॥ ५०२ ॥

यथा वा-

अलमीश-पावक-पाकशासन-वारिजासनसेवया,

गमित जनुर्जनकात्मजापतिरप्यसेव्यत नो मया ।

कहणापयोनिधिरेक एव^१ सरोजदामविलोचन,स पर करिष्यति दु खशेष^२मशेषदुर्गतिमोचन ॥ ५०३ ॥

'अथ सालतालतमालवञ्जुलकोविदारमनोरमा' इत्यादि । शिको काव्ये च प्रत्युदाहरण^३मिति ।

इति गीतिका २२१

२२२ अथ गण्डका^४

हारपुष्पसुन्दर विधेहि तन्मनोहर मनोहरेण,

नागराजकुञ्जरेण भाषित च रेण यत्प्रयोधरेण ।

अन्तगेन चामरेण राजित विराजित च काहलेन,

गण्डकेति यस्य नाम धारित सुषण्डितेन पिङ्गलेन ॥ ५०४ ॥

यथा-

देव! देव! वासुदेव! ते पदाम्बुजद्वय विभावयेम,

नाम पुष्पदाम^५धामतेजसा सदा हृदा विधारयेम ।

तावदेव सारवस्तु नाभ्यदस्ति किञ्चनात्र धारितेन,

वाजिराजिबुञ्जरादिसाधनेन तेन किं विभावितेन ॥ ५०५ ॥

१. ख एकः । २. ख कुलनाशः । ३. ख तदुदाहरणम् । ४. ख पुष्पदान ।

* टिप्पणी— १. इत्तस्यास्य निदिष्टलक्षणकारिका परिरुक्ता नैवास्ति किन्तु ग्रन्थवर्तुषेद-
भीष्ट तदुदाहरणैव परिज्ञायते—'यच्छन्दसि हारपुष्पयो (५१) नववारमनु-
प्रमेण योजन तदनु चामर-काहलयो (५१)-यस्तन भवेत्तद् गण्डकावृत्त स्यादिति ।

यथा वा, भूषणे^१ प्रत्युदाहरणम्—

दृष्टमस्ति वासुदेव विश्वमेतदेव शेष[वक्त्र]क तु^१,
 वाजिरत्नभृत्यदारमूनुगेहवित्तमादिवन्नव तु ।
 त्वत्पदाब्जभक्तिरस्तु चित्तसीम्नि वस्तुतस्तु सर्वदेव,
 शेषकाललुप्तकालदूतभीतिनाशनीह हन्त सैव ॥ ५०६ ॥
 क्वचिदियमेव चित्तवृत्तम् इति । केवल वृत्तमात्रमन्यत्र^{१*} ।

इति गण्डका २२२.

२२३. अथ शोभा

यकार प्रागस्ते तदनु च भगण कथ्यते यत्र बाले ।,
 ततोऽपि स्यात् पश्चाद् यदि भगणयुग स्यात्तकारद्वय च ।
 ततश्चान्ते हारद्वयमुपरितन कारयाशु प्रकाम,
 रसरश्चर्विच्छिन्ना मुनिविरतिगता भासते काऽपि शोभा ॥५०७॥

यथा—

रमाकान्त वन्दे त्रिभुवनशरण शुद्धभावेकगम्य,
 विरञ्चे स्रष्टार विजितघनहृत्ति वेदवाचावगम्यम् ।
 शिव लोकाध्यक्ष समरविजयिन कुन्दवृन्दाभदन्त (वदात),
 सहस्रार्चौरूप विधृतगिरिधर हार्दकञ्जे वसन्तम् ॥ ५०८ ॥

इति शोभा २२३

२२४ अथ सुवदना

आदौ मो यत्र बाले । तदनु च रगणो जह्वासुषटित,
 पश्चाद्देवो नकारस्तदनु च यगणस्तातेन रचित ।
 कामो^१ तत पाद्वंदेदो तदनु लघुगुरु ज्ञेया सुवदना,
 नागाधीनेन नुम्ना नयमितचरणा नव्या सुमदना ॥ ५०९ ॥

यथा—

श्रीमन्नारायण त नमत बुधजना मसारशरण,
 सर्वाध्यक्ष धनन्त निजहृदि मदय गोपीविहरणम् ।
 कल्याणाना निधान कलिमलदला वाचामविषय,
 शोराब्धौ भाममान दमिवदितिसुत वेदान्तविषयम् ॥ ५१० ॥

१. शेषवक्त्रभाजि 'वाचोभूषणे' ।

* टिप्पणी—१ वाचोभूषणम् टि० प०, पृष्ठ ३०८

२ अक्षयमञ्जरी, टि० स्वर्ण, का० २०६ एव वृत्तारत्नाकर, प० ३, वा १०३

यथा वा, हलाद्युधभट्टविरचितछन्दोवृत्तौ^१ *—

या पीनाङ्गोरुतुङ्ग^२ स्तनजघनघनाभोगालसगति-

यस्या कर्णावतसोत्पलरुचिजयिनी दीर्घे च नयने ।

सीमा सीमन्तिनीना^३ मतिलडहतया या च त्रिभुवने,

सम्प्राप्ता साम्प्रत मे नयनपथमसौ देवात् सुवदना ॥ ५११ ॥

इति सुषदना २२४.

२२५. अथ प्लवङ्गभङ्गमङ्गलम्

यदा लघुर्गुरु निवेश्यते तदा प्लवङ्गभङ्गमङ्गलम्,

जरी जरी जरी रसप्रयुक्तमुच्यते लगी सुमङ्गलम् ।

कवीन्द्रपिङ्गलोदित सुशङ्खहारभूषित मनोहर,

प्रमाणिका-पदद्वयेन पूर्यते च यच्च पञ्चचामरम् ॥ ५१२ ॥

यथा-

नवीनमेघसुन्दर भजेम भूपुरन्दर विभु वर,

प्रकामधामभासुर दधानमद्भुताम्बर^३ दयापरम् ।

विलासिनीभुजान्तरानिहृद्धमुग्धविग्रह स्मरातुर,

चराचरादिजीवजातपातकापह जगद्घुर-धरम् ॥ ५१३ ॥

इति प्लवङ्गभङ्गमङ्गलम् २२५

२२६. अथ शशाङ्कचलितम्

कर्णं पयोधरकरो यदा च भवतो विलासललिते,

ज्ञेयस्तत सुतनु^१ ज सुहस्तकलित. शशाङ्कचलिते ।

ततोऽपि चेद् भवति ज सुपाणिघटितो वसो च विरति-

स्ततो रसैरपि यति कलावति भवेत् पुना रसयति ॥ ५१४ ॥

यथा-

वृष्ण प्रणौमि सतत बलेन सहित सदा शुभरत,

कत्याणकारिचरित सुरैरभिनुत प्रमोदभणितम्^४ ।

कसादिदपंदलन च कलाकुतुकिन विलासभवन,

समारपारकरण परोदयकर सरोजनयनम् ॥ ५१५ ॥

इति शशाङ्कचलितम् २२६

१. या पीनो गाढतुङ्ग-हलाद्युधे । २. इयामा सीमन्तिनीना 'हलाद्युधे' । ३. ए. प्रबभूत वरम् । ४. ए. भरितम् ।

*टिप्पणी—१ पद्याय ७, कारिकाया २३ उदाहरणम् ।

२२७ अथ भद्रकम्

वेदसुसम्मितमादिगुरु कुरु जोहल कमल प्रिये ।
 अन्तगत कुरु पुष्पसुकङ्कणराजित विजितक्रिये ।
 रन्ध्ररसैरपि बाणविभेदितविशक कुरु वर्णक,
 कामकलारसरासयुते निजमानसे कुरु भद्रकम् ॥ ५१६ ॥

यथा-

चेतसि पादयुग नवपल्लवकोमल किल भावये,
 मञ्जुलकुञ्जगत सरसीरुहलोचन ननु चिन्तये ।
 आनय नन्दसुत सखि^१ मानय मेदुर रजनीमुख,
 कृञ्चितकेशममु परिशीलय कामुक कुरु मे सुखम् ॥ ५१७ ॥

इति भद्रकम् २२७

२२८ अथ अन्नवधिगुणगणनम्

रसपरिमितमिति सरसनगणमिति^१ विरचय
 विकचकमलमुखि^१ लघुयुगमनुमत्तमनुनय ।
 सुतनु^१ सुदति^१ यदि निगदसि बहुविधमनवधि
 गुणगणमनुसर नखलघुमितमनुलवमयि । ॥ ५१८ ॥

यथा-

अनुपमगुणगणमनुसर मुरहरमभिनव-
 मभिमत्तमनुमत^१ मतिशयमनुनयपरमव ।
 सकपटयदुवरकरधृतगिरिवरपरमयि
 कुरु मम सुवचनमफलय सखि न हि न हि मयि ॥ ५१९ ॥

इति अन्नवधिगुणगणनम् २२८

^१अत्रापि प्रस्तारगत्या विशत्यक्षरस्य दशसक्षमष्टवत्वारिंशत्सहस्राणि पट्ट-
 सप्तत्युक्तराणि पञ्चातानि च १०४८५७६ भेदा भवन्ति, तेषु चाद्यतसहिता
 विस्तरभीत्या कियतो भेदा लक्षिता, दोषभेदा सुबुद्धिभि प्रस्तार्य सूचनीया
 इति दिव् ।*

इति विराट्तरम् ।

१ ल मिहः । २ ल मनुगतः । ३ पश्चित्तनुष्य मासित क प्रतो ।

*टिप्पणी—१ सव्यदोषभेदा पञ्चमपरिगण्य समानोक्तनीयः ।

अथ एकविंशाक्षरम्

तत्र प्रथमम्—

२२६ अथ ब्रह्मानन्द

यस्मिन् वृत्ते पक्ति रयाता शोभन्तेऽत्यन्त कर्णा प्राग्ते चैकोहार,
नागाधीशप्रोक्तोऽपार सारोद्धारो ब्रह्मानन्दो वृत्ताना सार ।
विश्रामश्च प्रायो यस्मिन् वेध श्रोत्रे शंलेन्द्रे शस्त्रैर्वा स्यात् प्राग्ते,
विशत्या वर्णैरेकाग्रै समुक्तैर्लीलालोले सोऽय ज्ञेय कान्ते ॥५२०॥

यथा—

सर्वं कालव्यालग्रस्त मत्वा स्त्रीषु व्यासङ्ग हित्वा कृत्वा धैर्यं,
कालीन्दीये कुञ्जे कुञ्जे आम्यद्भृङ्गै सगीते भ्रातृमुक्त्वा कौर्यम् ।
श्रीगोविन्द वृन्दारण्ये मेघश्याम गायन्त वेणुक्वाणंमन्द,
ब्रह्मानन्द प्राप्याजस्र ध्यात्वा चेत साफल्य धेहि स्वान्तेऽमन्दम् ॥५२१

इति ब्रह्मानन्द २२६

२३० अथ स्रग्धरा

श्रादौ मो यत्र वाले । तदनु च रगण स्यात् प्रसिद्धस्तु यस्या,
पश्चाद् भ चापि न च त्रिगुणितमपि य धेहि कान्ते । विचित्रम् ।
शंलेन्द्रं सूर्यवाहैरपि च मुनिगणैर्दृश्यते चेद् विराम,
कामव्यासक्तचित्ते सुदति । निगदिता स्रग्धरा सा प्रसिद्धा ॥ ५२२ ॥

यथा, ममेव पाण्डवचरिते—

तुष्टेनाथ द्विजेन त्रिदशपतिसुतस्तत्र दत्ताभ्यनुज,
कर्णोपि प्राप्तमानस्सदसि कुरूपतेद्वन्द्वयुद्धार्थमागात् ।
जम्भाराति स्वसूनोरुपरि जलधरैस्सव्यघादातपत्र,
चण्डाशुश्चापि कर्णोपरिनिजकिरणानाततानातिशीतात् ॥५२३॥

यथा वा, मत्पितु एङ्गवर्णने—

सङ्ग्रामारण्यचारो विकटभटभुजस्तम्मभूभृद्विहारी,
शत्रुक्षोणीशचेतोमृगनिवरपरानन्दविक्षोभकारी ।
माघन्मातङ्गबुम्भस्यलगलदमलस्थूलमुक्ताप्रहारी,
स्फारीभूताङ्गपारी जगति विजयते खड्गपञ्चाननस्ते ॥ ५२४ ॥

यथा वा, कृष्णकुतूहले—

केशिद्वेषिप्रसूश्च क्वचिदय समये सशदासीषु कार्य-

व्यग्रासु प्रग्रहान्तग्रहणचलभुजाकुण्डलोद्ग्रीवसूनु ।

पुत्रस्नेहस्तुतोस्तनमनणुरणत्कङ्कणक्वाणमुद्यत्-

कम्पस्विद्यत्कपोल दविकचविगलद्दामबन्ध ममन्थ ॥५२५॥

इति धन्वरा २३०.

२३१ यय मञ्जरी*

कङ्कण कुरु मनोहर तदनु सुन्दर रचय तुम्बुर,

सुन्दरी कलय सुन्दरी तदनु पक्षिणामपि पति तत ।

भावमातनु तत पर सुतनु । पक्षिण च कुरु सङ्गत,

भावमेव कुरु मञ्जरी [तदनु] जोहल विरचयातत ॥५२६॥

रणनगणक्रमेण च सप्तगणा भान्ति यत्र सरचिता ।

नव-रस-रसयतिसहिता वदन्ति तज्ज्ञास्तु मञ्जरीमिति ताम् ॥ ५२७ ॥

यथा—

हारभूपुरकिरीटकण्डलविराजिता वरमनोहर,

सुन्दराधरविराजिवेणुरवपूरिताखिलदिग-तरम् ।

नन्दनन्दनमनङ्गवर्द्धनगुणाकर परमसुन्दर,

चिन्तयामि निजमानसे रुचिरगोपगोधनधुर-धरम् ॥ ५२८ ॥

यथा वा, श्रीशङ्कराचार्याणां नवरत्नमालिकायाम्—

दाडिमोकुसुममञ्जरीनिकरसुन्दरे मदनमन्दिरे,

यामिनीरमणखण्डमण्डितश्लिष्टके तरलकुण्डे (कुण्डले) ।

पाशमकुशमुदञ्चित दधति क्रोमले कमललोचने ।

तावके वपुषि सन्तत जननि ! मामक भवतु मानसम् ॥५२९॥

इति मञ्जरी २३१

२३२ यय नरेन्द्र*

कुण्डलवज्र रज्जुमुनिगणयुतहस्तविराजितशोभ ,

पाणिविराजिशय्युगवलयित-कङ्कणचामरलोभ ।

वामविशोभयोगवरविरतिगचन्द्रविलोचनवर्ण ,

पद्मगराजपिङ्गल इति गदति राजति वृत्तनरेन्द्र ॥ ५३० ॥

*टिप्पणी—१ मञ्जरीवरास्य सशण्डोदाहरणप्रत्युदाहरणानि नैव सन्ति च प्रती ।

माननि । मानकारणमिह^१ जहिहि नन्दय त सखि । कृष्ण,
चिन्तय चिन्तनीयपदमनुमतमाकलयाशु सतृष्णम् ।

जीवय जीवजातमुपगतमपि मा कुरु मानसभङ्ग ,

केवलमेव तेन सह सहचरि ! सन्तनु तत्तनुसङ्गम ॥ ५३१ ॥

यथा वा-

पञ्चमनादवापनपरमधुकरगीतमनोज्ञतडाग ,

पञ्चमनादवादपर^२परभृतकाननसत्परभाग ।

वल्लभविप्रयुक्तकुलवरतनुजीवनदानदुरन्त ,

किं करवाणि वक्षि^३ मम सहचरि ! सन्निधिमेति वसन्त । ५३२।

इति नरेन्द्र २३२

२३३ अथ सरसी

सहचरि ! नो यदा भवति सा कथिता सरसी कवीश्वरै-

र्यदि तु जभी जजी च भवतोपि जरी समनन्तर परै ।

इह विरती यदा शरविलोचनजे भवतो मुनीश्वरै ,

शिशिरकरैस्सदा भवति लोचनतो गणनापदाक्षरै ॥ ५३३ ॥

यथा-

नमत सदा जना प्रणतकल्पतरु जगदीश्वर हरि ,

प्रवलहृदन्धकारतरणि भवसागरपारसन्तरिम् ।

सकलमुरामुरादिजनसेवितपादमरोरुह पर ,

जलरुहशङ्ख चक्रकमनीयगदाधरसुन्दराम्बरम् ॥ ५३४ ॥

यथा वा-

'तुरगशताबुलस्य परित परमेकतुरङ्गजन्मन ।' इत्यादि माघकाव्ये^४ ।

इति सरसी २३३

सुरतहरिति अन्यत्र । सिद्धकम्^५ इति क्वचित् ।

१ क मानकारणमिह । २ ए पञ्चमनादगानपर । ३ ए वधि

*टिप्पणी—१ तुरगशताबुलस्य परित परमेकतुरङ्गजन्मन ,

प्रमथितभूत प्रतिपद्य मथितस्य भूत महीभूता ।

परिषलतो बलानुजबलस्य पुर सतत पुनथिय

दिचरविगतश्रियो जन्निपेदच तदाभवदन्तर महत् ॥ ६२ ॥

[गिणुपालवधम्-स० ३, प० ६२]

२ वृत्तरत्नाकर , नारायणीटीकायाम्-प्र ३, पा १०५

२३४. अथ रुचिरा

कुरु नगण ततो रचय भूमिपतिं दहनं च सुन्दर,
 तदनु विभेहि ज त्रिगुणित ललित विहग तत परम् ।
 मुनिमुनिभिर्भवेद् रुचिरतिरप्यतुला सुक्ला मनोहरा,
 सुकविवरैः परा निगदिता रुचिरा परमार्यतो वरा ॥ ५३५ ॥

यथा-

नयनमनोहर परमसौहृदकर सखि ! नन्दनन्दन,
 कनकनिभाशुक त्रिजगतीतिलक मुरलीविनोदनम् ।
 भुवनमहोदय घनसर्चि रुचिर कलये सदोन्नत,
 सुरकुलपालक श्रुतिनुत सदय दयित श्रिय पतिम् ॥ ५३६ ॥

इति रुचिरा २३४

२३५ अथ निरुपमतिलकम्

सुतनु ! सुदति ! सरसमुनिमितनगणमिह रचय,
 शिशिरकरजनयनमितमुपदमपि परिकलय ।
 कनककटकवलयकलितकरकमलमुपनय,
 फणियतिमणितमिह निरुपमतिलकमिति वथय ॥ ५३७ ॥

यथा-

जय ! जय ! निरुपम ! दिशि दिशि विलसितगुणनिवर !,
 करधृतगिरिवर ! विगणितगुणगणवरसुकर ! ।
 कनकवसनकटकमुकुटवलित ! मिलितललन !,
 विजितमदम ! दलितशकट ! सखलदितिजदलन ! ॥ ५३८ ॥

इति निरुपमतिलकम् २३५

*अत्रापि प्रस्तारगत्या एकविंशत्यक्षरस्य नवत्यक्ष सधनयतिगहस्ताणि
 द्विसप्तत्यक्षपञ्चाशदुत्तर एत २०६७१५२ भेदा भवन्ति, तेषु भेदमप्याय प्रोक्त,
 शेषभेदा सुधीभिः स्वबुद्ध्या प्रस्तार्यं सूचनीया इति दिम् ।**

इति एनविसाक्षरम् ।

१ छ तसोऽस्ति । २ वनित्रय नास्ति च प्रती ।

*द्विपयो—१ एनविसाक्षरपरद्वयस्य अद्यान्तरेण सम्यगेव भेदा एवमपरिदिष्टे इत्यस्या

अथ द्वाविंशत्यक्षरम्

तत्र प्रथमम्—

२३६ विद्यान द

यस्मिन् वृत्ते रुद्रप्रोक्ता कुन्तीपुत्रा नेत्रैर्नैर्नर्वर्णा पादप्रान्ते,
पङ्क्ति कर्णविश्राम स्यात् तदवद् यस्मिन् रम्यं पाण्डो पुत्रे स्यात् तस्यान्ते ।
धीमन्नागाधीशेनोक्त सार वृत्त श्रव्य भव्य नव्य काव्य कान्ते !,
बाले ! लीलालोले ! मुग्धे ! विद्यानन्द दिव्यानन्द सम्यग् धेहि स्वान्ते ॥५३६॥

यथा—

काशीक्षेत्रे गङ्गातीरे चञ्चलीरे विश्वेशाघ्निरुद्र सम्यग् ध्यात्वा,
कृत्वा तत्तन्मात्रायुक्तप्राणायाम शोच्य नश्यत्तत्तसङ्ग मुक्त्वा ।
मायाजाल सर्वं विश्व मत्वा चित्ते रम्य हर्म्यं पुत्रा किञ्चित्तै-
च्छस्वत्कामक्रोधक्रौर्याक्रान्त श्रान्त प्रान्ते नाह देह सोऽह तत्सत् ॥५४०॥

इति विद्यानन्द २३६

२३७ अथ हसी

यस्यामष्टौ पूर्वं हारास्तदनु च दिनपतिमित वरवर्णा,
दण्डाकारा कान्ते ! चञ्चतकरयुगविलसितवलमविलोले ।
तद्वद्दोर्धावन्त्यौ वणौ*यतिरिह विलसति वसुभुवनार्णो,
सा विज्ञेया हसी बाले ! प्रभवति यदि किल नयनयुगार्णा* ॥५४१॥

यथा—

प्रौढध्वान्ते प्रावृट्काल क्षितितलविलसिततरलितकन्दे,
कालिन्दीये कुञ्जे कुञ्जे त्वदभिसरणकृत सरभसवेपा ।
राधात्यन्त वाघायुक्ता प्रमरति मनसिजविशिखविलूना,
वन्यस्त्रग्भिर्विरचितभूपस्त्वमपि च विहरसि सरसकदम्बे* ॥ ५४२ ॥

यथा वा—

श्रीकृष्णेन क्रीडन्तीना क्वचिदपि वनभुवि मनसिजभाजा,
१ गोपालीना चन्द्रज्योत्स्नाविशदरजनिगुहजनितरतीनाम् ।
धर्मभ्रश्यतपत्रालीनामुपचितरभसविमललनुभासा,
१ रासक्रीडायासध्वसी मुदमुपनयति १ मलयगिरिवात ॥ ५४३ ॥

इति हसी २३७

*विहृ नगतोऽय पाठो नास्ति क प्रची । १ १ क रासक्रीडायायासध्वसमुदमुपनयमिद ।

*दृष्टिपणी—१ पाठोऽय सवषाऽगुड वणद्वयवर्द्धनाद्दीपद्वयरहितत्वाच्च । अतोऽस्मिन्
पादे यदि विरचित पदस्थाने सुष्टा पदयोजना स्यात्तद्दोषपरिहारसम्भव ।

२३८ अथ मदिरा

आदिगुरुं कुरु सप्तगण सखि । पिङ्गलभापितमन्तगुरु,
पक्तिविराजि-र्याति च तत कुरु सूर्यविभ्रसिर्याति च तत ।
चिन्तय चेतसि वृत्तमिद मदिरिति च नाम यत प्रथित,
सप्तमकारगुरुर्पाहित बहुभि कविभिर्वहुधा कथितम् ॥ ५४४ ॥

यथा-

मा कुरु भाविनि । मानमये वनमालिनि सन्तति शालिनि हे,
पाणितलेन कपोलतल न विमुञ्चति सम्प्रति किं मनुपे ।
योवनमेतदकारणक न हि किञ्चिदतोऽपि फल तनुपे,
कुञ्जगत परिशीलय त परिलम्बमिद सखि । किं कुरुपे ॥ ५४५ ॥

इति मदिरा २३८

इयमेव अस्माभिर्मात्राप्रस्तारे पूर्वखण्डे सवयाप्रकरणे मदिराभिसन्धाय
सवया इत्युक्त्वा, सा तत एवावधारणीया ।

२३९ अथ मन्द्रकम्

कारस्य भ ततोपि रमण ततो नरनरास्ततश्च न गुरु,
दिगूरविभिर्भवेच्च विरतिविलोचनयुगैरपीन्दुवदने । ।
कल्पय पादमत्र रुचिर कवीन्द्रवरपिङ्गलेन कथित,
मन्द्रकवृत्तमेतदत्रले । सुभापितमहोदधे सुप्रथितम् ॥ ५४६ ॥

यथा-

दिध्यसुगीतिभि सकृदपि स्तुवन्ति भवये (भुवि ये) भवन्तमभय,
भक्तिभराषनन्नक्षिरस कृताञ्जलिपुटा निरावृतभवम् ।
ते परमीश्वरस्य पदवीमवाप्य सुखमाप्नुवति विपुल,
मत्स्यंभुव स्पृशति न पुनर्मनोहरमुताङ्गनापरिवृता ॥ ५४७ ॥

इति मन्द्रकम् २३९

२४०. अथ शिपरम्

मन्द्रकमेव हि वृत्त यदि दशरमयुगविरति भवेत् ।
शिपर तदत्र भाते । कथित कविपिङ्गलेन तदा ॥ ५४८ ॥

यथा—

कृष्णपदारविन्दयुगल नमन्ति ननु ये जना सुवृत्तिन,
ससृत्तिसागर सुविपुल तरन्ति मुदितास्त एव वृत्तिन ।
दिव्यधुनीतरङ्गललिते तटे वृत्तकुटा स्मरन्ति परम,
धाम निरन्तर मनसि तज्जराकवलित जनुर्न चरमम् ॥ ५४९ ॥

इति शिलरम् २४०

मन्द्रकस्य गणा एव अत्रापि यतिकृत एव पर भेद ।

२४१ अथ अच्युतम्

सलयुग-निगमनगणमिह^१* कुरु पक्षि-पाणिमभाजित,
तदनु च रचय कमलमुखि । सखि । पुष्पहारविराजितम् ।
निगमशिशिरकरविरचितयतियोगवद्ध विभावित,
कविवरफणिपतिसुभाणितमिति^२ मानसे कलयाच्युतम् ॥ ५५० ॥

यथा—

सधनतिमिरभरभरितविपिनमात्मनेव विभावित,
न खलु सहचरि । वितनु विदलितमाश्रयामि सुजीवितम् ।
कनकनिभवसनमरुणनयनमानयाशु मनोहर,
मसृणमणिगणखचिततनुमपि हारयामि तमोहरम् ॥ ५५१ ॥

इति अच्युतम् २४१

२४२ अथ मदालसम्

कर्णं जकार रसयुग्म विधेहि सखि । कर्णं तत कुरु रस,
हार नकारमथ कर्णं नरेन्द्रमिह हस्त विधेहि च तत ।
सूर्याश्वसप्तयति कुर्याद् यथाभिरुचि पश्चाद् वसो च विरति^३,
नेत्रद्वयत कुरु पादान्तवर्णमिति वृत्त मदालसमिदम् ॥ ५५२ ॥

यथा—

शम्भो । जय प्रणमदम्भोजनामविधिदम्भोलिपाणितरणे-
रम्भोहगाढपरिरम्भोपभोगदिवि रम्भोपगीतसततम् ।
स्तम्भोदयप्रणतजम्भोपघाति^३ शिशुदम्भोपकल्पिततनो^४,
रम्भोदरप्रतिमशभो^५ जयामलविदम्भोधि^५वद्धंनविधो । ॥ ५५३ ॥

१ क सुभाणितमिति । २ ख विरति । ३ ख जम्भो घ घाति । ४ ख चिदम्भोधि ।

*दिप्पणी—१ सलयुगनिगमनगणमिह^१ इह—अच्युतवृत्ते लघुद्वयसहितच तुर्नगणमर्षाद्
चतुर्दशलक्षरमत्र 'कुरु' रचयेत्यथ ।

यथा वा-

मन्दाकिनीपुलिनमन्दारदामशतवृन्दारकाञ्चितविभो^१ !

नारायणप्रखरनाराचबिद्धपुरनाराघिद्रुकृतवता ।

गङ्गाचलाचलतरङ्गावलीमुकुटरङ्गावनीमतिपटो^२ !

गौरीपरिब्रह्मणौरीकृताद्धं तव गौरीदृग्नी श्रुतिगता ॥ ५५८ ॥

यथा वा, अस्मद्वृद्धप्रपितामहकविपण्डितमुख्यश्रीमद्रामचन्द्रभट्टकृतनारायणाष्टके-

कुन्दातिभासि शरदिन्दावखण्डरुचि वृन्दावनत्रजवधू-

वृन्दागमच्छलनमन्दावहामकृतनिन्दार्यवादकथनम् ।

वन्दान्विभ्यदरविन्दामनक्षुभित्तृन्दारकेश्वरकृत-

च्छन्दानुवृत्तिमिह नन्दात्मज भुवनकन्दाकृति हृदि भजे ॥ ५५५ ॥

इत्यादि महाकविप्रबन्धेषु शतशः प्रत्युदाहरणानि^३ ।

इति मवाल्सम् २४२.

२४३. अथ तद्वरम्

सहचरि ! रविहृयपरिमित सुनगणमिह विरचय,

तदनु सिधिरकरपरिमित कुमुममिह परिकलय ।

कविवरमकलभुजगपतिनिगदितमिदमनुसर,

नवरससुघटित-नरवरसुपठित-तरुवरमिति ॥ ५५६ ॥

यथा-

अवनतमुनिगण ! करधृतगिरिवर ! सदवनपर !,

त्रिभुवननिरुपम ! नरवरविलसित ! सक्पटवर ! ।

दमितदितिजकुल ! कलितसकलवल ! सततमदय !,

सम्भसविदितितकरिवर ! जय ! जय ! निगमनिलय ! ॥ ५५७ ॥

अथ प्रायोऽष्टाष्टरसंवित्रतिरित्युपदेशः ।

इति तद्वरम् २४३.

अत्रापि प्रस्तारगत्या द्वाविंशत्यक्षरस्य एकचत्वारिंशत्लशाणि चतुर्नवति-
सहस्राणि चतुरस्रर शतत्रयं ४१६४३०४ भेदा, तेषु भेदाष्टकमुष्णम् । शेषभेदास्तु
षास्त्ररोत्या प्रस्तारं प्रतिभावाद्भिरदाहर्त्तव्याः । इति दिङ्मात्रमुपदिश्यते^४ ।

इति द्वाविंशत्यक्षरम् ।

१. स विभो । २. स गतिपटो । ३. स. तदुदाहरणम् ।

* टिप्पणी—१. सन्धाः शेषभेदा इष्टव्या पञ्चमपरिदिष्टे ।

अथ त्रयोविंशतिशतम्

तत्र प्रथमम्—

२४४ दिव्यानन्द

कुन्तीपुत्रा यस्मिन् वृत्ते दिक्स्स्याता सैका शोभन्ते प्रान्ते चैको हार,
 रौद्रनैत्रैर्यस्मिन् सर्वैर्वर्णैर्वा सोऽप्य दिव्यानन्दरच्छन्दोऽग्रन्ये सार ।
 विश्राम स्यात् पङ्क्ति कर्णैर्यस्मिस्तद्वत् सार्द्धं ' पाण्डो पुत्रैर्वा स्यात्तस्यान्ते,
 वाले । लोलालोले ! कामक्रीडासक्ते ! पूर्वोक्त दिव्य वृत्त धेहि स्वान्ते ॥५५८॥

यथा—

वन्दे देव सर्वाधार विश्वाध्यक्ष लक्ष्मीनाथ त क्षीराब्धौ तिष्ठन्त,
 यो हस्तीन्द्र भक्त ग्राहप्रस्त मत्वा हित्वाप्त सर्वं स्त्रीवर्गं भासन्तम् ।
 आरूढ सौपर्णं पृष्ठेऽनास्तीर्णेषु प्राप्तश्चक्री वेगादेवोच्चैः क्रीडत्,
 व्यापाद्यामू नक्त^२ मध्ये ववन्न सद्यस्त दन्तीन्द्र ससारान्मुक्त कुर्वन् ॥५५९॥

इति दिव्यानन्द २४४

२४५ [१]. अथ सुन्दरिका

करयुक्तसुपुष्पद्वयललिता ताटङ्कमनोहरहारधरा,
 द्विजकर्णविराजत्पदयुगला गण्डेन सुमण्डितकुण्डलका ।
 यदि सप्तविभिन्ना शरविरति शर्वैरपि चेद्विहृतिविहिता,
 किल सुन्दरिका सा फणिभणिता नेत्राग्निक्ला कविराजहिता ॥५६०॥

यथा—

सखि ! पङ्कजनेत्र मुरहरण विज्ञ कमनीयकलाललित,
 वरमौक्तिकहार सुखकरण रम्य रमणीवलये वलितम् ।
 तरुणीजनचित्त वरतरुण भव्य भवभौतिविनाशकर,
 घनकुञ्चितकेश मुनिशरण नित्य कलयेऽखिलदैत्यहरम् ॥ ५६० ॥

इति सुन्दरिका २४५[१]

२४५[२] अथ पद्मावतिकेति

सुन्दरिकैव हि बाले ! यदि मुनिरसदशविरामिणी भवति ।
 विज्ञापयन्ति तज्ज्ञा पद्मावतिकेति नयनदहनकमलाम् ॥ ५६२ ॥

यथा—

सखि ! नन्दकुमार तनुजितमार कुण्डलमण्डितगण्डयुग,
 हतकसनरेश रचितसुवेश कुञ्चितकेशमशेषसुगम् ।

इयमेवास्माभिः पूर्वखण्डे भल्लिका सवया इत्युक्ता । सा तत एवावधारणीया ।

२४६. अथ मत्ताश्रीडम्

यस्मिन्नष्टौ पूर्व हारास्तदनु च मनुमित लघुमिह रचयेत्^१,
पादप्रान्ते चैक हारं विकचकमलमुखि ! विरचय नियतम् ।
मत्ताश्रीड वृत्तं वाले ! वसुतिथियतिवृत्तरतिसुखनिवह,
कुन्तीपुत्र वेदैरुक्त निगमनगणमपि विरचय सगणम् ॥ ५७२ ॥

पद्या-

मध्ये कालिन्दीये कुञ्जे सुरभिसमयमधुमधुरसुखरस,
रासोल्लासक्रीडारङ्गे युवतिसुभगभुजरचित्तवरवशम्^२ ।
सान्द्रानन्द^३ मेघश्याम मुरलिमधुर^४ रवविमुपितहरिण,
वृन्दारण्ये दौव्यत्पुण्ये स्मरत परममिह हरिमतवरत्नम् ॥ ५७३ ॥

इति मत्ताश्रीडम् २४६.

२५०. अथ कनकवलयम्

सुतनु ! सुदति ! मुनिमित्तमिह सुनगणमिति ह विरचय,
तदनु विकचकमलमुखि ! सखि ! खलु लघुयुगमुपनय ।
दहननयनमित्तलघुमिह पद्मगतमपि परिकलय,
कनकवलयमिति कथयति भुजगपतिरिति तदवय^५ ॥ ५७४ ॥

पद्या-

कनकवलयरचिनमुकुट ! विघ्नतलकुट ! निकटवस !,
शमितशकट ! कनकसुपट ! दलितदितिजसुभटदल ! ।
कमलनयन* ! विजितमदन ! युवतिवलयरचितलय !,
तरलवसन ! विहितभजन ! घरणिघरण ! जय ! विजय ! ॥ ५७५ ॥

इति कनकवलयम् २५०

^१ अत्रापि प्रस्तारगत्या त्रयोविंशत्यक्षरस्य त्र्यशीतिलक्षणि अष्टाशीतिमहस्याणि अष्टोत्तराणि षट्शतानि च ८३२८६०८ भेदा भवन्ति, तेषु अष्टौ भेदा प्रोक्ताः, शेषभेदाः प्रस्तायं गणयतिवर्णनामसाहित्यास्मामुदाहरणीया इति दिगुपदिश्यते* ।

इति त्रयोविंशत्संस्कारम् ।

१. ल. रचये । २. ल. परवजम् । ३. व. साग्रावश । ४. ल. मविनमपूट ।
५. ल. च तरव । ६. पवित्रप्रय नास्ति व प्रती । *—*विद्वज्जनोंश पाठ व प्रती नास्ति ।
*टिप्पणी—१. त्रयोविंशत्यक्षरस्य प्रस्तायतेषु सप्तदशभेदाः पञ्चमपरिच्छेदे पर्यालोप्याः ।

अथ चतुर्विंशोऽक्षरम्

तत्र प्रथमम्—

२५१ रामानन्द

आदित्यं सख्याता यस्मिन् वृत्ते दिव्ये श्रीनागाख्याते शोभन्तेऽन्यन्त वर्णा,
पङ्क्ति वर्णो द्वित्वं प्राप्त्यै द्विश्राम स्यात् सत्तरवैरसाख्यं स्यातास्तद्वद्वर्णा ।
कामक्रीडाकृतस्फीत प्राप्तानन्दे भव्याकारे चन्द्रागव्ये नव्ये कान्ते ।
वेदनैत्रैर्यस्मिन् पादे हारा सपत्कन्द रामानन्द वृत्त धेहि स्वान्ते ॥ ५७६ ॥

यथा—

रासोत्लासे गोपस्त्रीभिवृन्दारण्ये कालि दीये कुञ्जे कुञ्जे गुञ्जदभृङ्गे,
दिव्यामोदे पुष्पाकीर्णे घृत्वा वशी मन्द मन्द दिव्यैस्तानै सङ्गायन्तम् ।
कामक्रीडाकृतस्फीत तासामङ्गैः सङ्गा कुर्वन्तत काम वान्त,
सर्वानन्द तेजोरूप विद्वाध्यक्ष वन्दे देव भासन्त प्रात सायान्तम् ॥५७७॥

इति रामानन्द २५१

२५२ अथ दुर्मिलका

विनिधाय क्रर सखि । पाणितल कुरु रत्नमनोहरबाहुयुग,
सगण च तत कुरु पाणितल सखि । रत्नविराजितपादयुतम् ।
यदि योगरसरूपि पङ्क्तिविराजित-तत्त्वविभासितवर्णधरा,
भवतीह तदा किल दुर्मिलका सखि । नेत्रविभावसुभासिकला ॥५७८॥

यथा—

गिरिराजसुताकमनीयमनङ्गविभङ्गकर नृकपालधर,
परिधूतगजाजिनवाससमुद्धतनृत्यकर शशिखण्डवरम् ।
गरलानलभूपित दीनदयालमदभ्रमदोद्धतनीलगल,
प्रणमामि विलोलजटातटगुम्फितशेषकलानिधिभालतलम् ॥ ५७९ ॥

यथा वा, भूपणे*—

कति सन्ति न गोपकुले ललिता स्मरतापहृताश्च विहाय च ता,
रतिकैलिकलारसलालसमानसमागतमुज्जितमानरसम् ।
वनमालिनमालि नमस्य नमस्य नमस्य मुदस्य चिरस्य वृथा,
भविता परितापवती भवती युवती जनससदि हासकथा ॥ ५८० ॥

इति दुर्मिलका २५२

*टिप्पणी—१ वाणीभूपणम्, द्वि० प्र० पद्य ३१८

यमुनातटकुञ्जे सतिमिरपुञ्जे कारितरासविलासपरं,
मुखनिजितचन्द्रं विगलिततन्द्रं चिन्तय चेतसि चित्तहरम् ॥ ५६३ ॥

इति पद्मावतिका २४५[२].

२४६. अथ अद्रितनया

सहचरि ! चेन्नजौ भजगणौ भजौ च भवतस्ततो भलगुरु,
शिवविरतिस्तथैव विरतिः प्रभाकरभवा भवेच्च नियता^१ ।
प्रतिपदमत्र वह्निनयनाक्षरैरणय पादमिन्दुवदने !,
जगति जया प्रकाशितनया जनैः किल विभाविताऽद्रितनया ॥ ५६४ ॥

प्रकारान्तरेणापि लक्षणं यथा—

सुदति ! विधेहि नं तदनु जं ततोऽपि भगणं ततश्च जगणं,
तदनु च देहि भं तदनु ज ततोऽपि भगणं ततो लघुगुरु ।
कुरु विरतिं शिवे दिनकरे रतिं सुरचिरां विभावितनयां,
दहनविलोचनाक्षरपदां विधेहि सुभगे^२ ! मुदाऽद्रितनयाम् ॥ ५६५ ॥

यथा—

नयनमनोरम विकसित पलाशकुसुमं विलोक्य सरसं,
विकचसरोरुहां च सरसी विभाव्य सुभृश मनोऽतिविरसम् ।
गगनतल च चन्द्रकिरणैः कर्णरिव^३ विभावसोस्सुपिहित,
सहचरि ! जीवनं न कलये विना सहचरं विधेहि विहितम् ॥ ५६६ ॥

यथा वा—

‘विलुलितपुष्परेणुकपिशाप्रशान्तकलिकापलाशकुसुमम् ॥’ इत्यादि भट्टिकाव्ये^४*

इति अद्रितनया २४६.

अश्वललितमिदमन्यत्र^५*, तथाहि—

१. ल. नियता । २. ल. सुभगे । ३. ल. कर्णरिव ।

* टिप्पणी—१ ‘विलुलितपुष्परेणुकपिशा प्रशान्तकलिकापलाशकुसुमं,
कुसुमनिपातविचित्रवसुधं सदाब्दनिपतद् द्रुमोत्कराकुनम् ।
शशुननिनादनादिककुव्विलोलविपलायमानहरिण,
दूरिणविलोचनाधिवसति बभञ्ज पवनात्मजो रिपुवनम् ॥

[भट्टिकाव्य, स० ८, प. १३१]

२ वृत्तरत्नाकर—नारायणीटीका अ० ३, पा० १०६ ।

पवनविधूतवोच्चिचपल विलोकयति जीवित तनुभृता,
न पुनरहीयमानमनिश जरावनितया वशीकृतमिदम् ।
सपदि निपीडनव्यतिकर यमादिव नराधिपान्नरपशु,
परवनितामवेक्ष्य कुरुते तथापि हृतकुद्धिरद्वललितम् ॥ ५६७ ॥

इति प्रत्युदाहरणम्^१ ।

^१अत्रापि गणयतिवर्णविन्यासस्तु पूर्ववदेव, नाममात्रे भेद, फलतो न कश्चिद् विशेष ।^२

२४७ अथ मालती

अत्रैव सप्तभगणानन्तर गुरुद्वयदानेन मालतीवृत्त भवति । लक्षण च यथा-
इयमेव सप्तभगणादनन्तर भवति मालतीवृत्तम् ।
यदि गुरुयुगलोपहिता पिङ्गलनागस्तदाख्याति ॥ ५६८ ॥

यथा-

चन्द्रकचारुचमत्कृतिचञ्चलमौलिविलुम्पितचन्द्रकिशोभ,
वन्यनवीनविभूषणभूपितनन्दसुत वनिताधरलोभम् ।
धेनुकदानवदारणदक्ष-दयानिधि दुर्गमवेदरहस्य,
नीमि हरि दितिजावलिमालितभूमिभरापनुद^३ सुयशस्यम् ॥ ५६९ ॥

इति मालती २४७

इयमेव अस्माभि पूर्वखण्डे मालती सवया इत्युक्ता । [सा तत एवावलोकनीया]

० किञ्च—

२४८ अथ मल्लिका

सप्तजगणादनन्तरमपि चेल्लघुगुस्निवेशन भवति ।
जल्पति पिङ्गलनाग सुकविस्तन्मल्लिकावृत्तम् ॥ ५७० ॥

यथा-

धुनोति मनो मम चम्पककाननकल्पितकेलिरय पवन,
कथामपि नैव करोमि तथापि वृथा कदन कुरुते मदन ।
कलानिधिरेष बलादयि मुञ्चति वह्निकलापमलीकहिम^४,
विधेहि तथा मतिमेति यथा सविधेन पथा ब्रजभूमहिम^५ ॥ ५७१ ॥

इति मल्लिका २४८

१ ख उदाहरणम् । २-२ चिह्नगोप्यमथो नास्ति क प्रतो । ३ ख भरापनुदे ।

४ ख हित । ५ ख ब्रजभूमहित ।

तत्त्वेरात्मा यस्मिन् वृत्ते वर्णे रयाता ^१ छन्दोविद्भिः सद्भिः ससेव्य सर्वानन्द,
सोज्य नागाधीशेनोक्तो वृत्ताध्यक्ष ससाध्य पुम्भिश्चित्ते काम कामानन्द ॥५६०॥
यथा-

वन्ये पीते पुष्पमाला सद्ग्रथन्त ^२ श्रीमद्वन्दारण्ये गोपीवन्दे ^३ खेलन्त,
मायूरं पत्रैर्दिव्य छत्र कुर्वन्त वृक्षाणां शाखा घृत्वा हिन्दोले दोलन्तम् ।
वशीमोष्ठप्रान्ते कृत्वा सगायन्त तासां तन्नाम्नान्युक्त्वा गोपीराह्वयन्त,
दक्ष पाद वामे वृत्वा सतिष्ठन्त काल्पेवाक्षे ^४ मूले वन्दे कृष्ण ^५ भासन्तम् ॥५६१॥

इति कामानन्द २५७

२५८ अथ क्रीञ्चपदा

वारय भ म धारय स भ निगमनगणमिह विरचय रुचिर,
सञ्चितहारा पञ्चविरामा शरवमुमुनियुतसुरचित्तविरति ।
क्रीञ्चपदा स्यात् काञ्चनवर्णे गतिवशमुविजितमदगजगमने,
तत्त्वविभेदैर्वर्णविरामा बहुविधगतिरपि भवति च गणने ॥ ५६२ ॥

यथा

या तरलाक्षी कुञ्चितकेशी भद्रकलकरिवरगमनविलसिता,
फुल्लसरोजश्रेणिकटाक्षा मधुमदमुमुदितसरभसगमना ।
स्थूलनितम्बा पीनकुचाढ्या बहुविधसुखयुतसुरतसुनिपुणा,
सा परिणया सौख्यकरा स्त्री बहुविधनिधुवनसुखमभिलपता ॥ ५६३ ॥

यथा वा, हलायुधे ^{१*}

या कपिलाक्षी पिङ्गलकेशी कलिरुचिरनुदिनमनुनयकठिना,
दीर्घतरामि स्थूलशिरामि परिवृतबपुरतिशयकुटिलगति ।
श्रायतजङ्घा निम्नकपोला लघुतरकुचयुगपरिचितहृदया,
सा परिहार्या क्रीञ्चपदा स्त्री ध्रुवमिह निरवधिसुखमभिलपता ॥ ५६४ ॥
इति प्रत्युदाहरणम् ।

इति क्रीञ्चपदा २५८

२५९ अथ मल्ली

सगणाष्टकगुरुघटिता शरपक्षकवर्णविलसिता या स्यात् ।
तामिह पिङ्गलनाम कथयति मल्लीमिति स्फुटत ॥ ५६५ ॥

१ ख स्यात् । २ क सद्ग्रथन्त । ३ ख गोपीवन्दे । ४ ख त तिष्ठन्त
सत्कावन्दे । ५ क कृष्णे ।

*टिप्पणी—१ छन्दशास्त्रे हलायुधीयटीकाया प्र० ७, कारिकाया ३० उदाहरणम् ।

पया—

गिरिराजसुताकमनीयमनङ्गविभङ्गकर गलमस्तवभाल,
परिधूतगजाजिनवाससमुद्धतनृत्यकर विगृहीतकपालम् ।
गरलानलभूपित-दीनदयालमदभ्रमदोद्धतदानवकाल,
प्रणमामि विलोलजटातटगुम्फितशेषकलानिधिलालितभालम् ॥ ५६६ ॥
इति मल्ली २५६.

इयमेव मात्रावृत्ते मल्लीसवया इत्युक्ता ।

२६० अथ मणिगणम्

सुतनु ! सुदति ! वसुमितनगणमिह विधुसुमुखि ! सुविरचय,
तदनु विकचकभलसदृशमुखि ! सुरभिकुसुममपि कलय ।
गतिवशविदलितमदकलकरिवरगमन इह सुरमणि,
मणिगणमिति फणिपतिरपि कथयति विमलमतिरतिरणि^१ ॥ ५६७ ॥

पया—

निगमविदित सततमुदित परमपुरुषसुकृतसुललित^१,
सकलमनुजकलुषदहन तरलयुवविवचनविचलित ।
विकटगहनदहनकवल पिहितनयन मिलितसखिवल !
कलितविविधविबुधसुखचय जय जय दलितदितिजदल ॥ ५६८ ॥
इति मणिगणम् २६०.

*अत्रापि प्रस्तारगत्या पञ्चविशत्यक्षरस्य कोटिनय पञ्चत्रिंशत्लक्षाणि
चतुःपञ्चसहस्राणि द्वात्रिंशदुत्तराणि चतुःशतानि च ३३५५४४३२ भेदास्तेषु
दिगुपदर्शानार्थं भेदचतुष्टयमुक्त वृत्तान्तराणि च प्रस्तार्य सुधोभिरूह्यानीति
शिवम्*^१ ।

इति पञ्चविंशत्यक्षरम् ।

अथ षड्विंशाक्षरम्

तत्र प्रथम सर्वगुरुम्—

२६१ श्रीगोविन्दानन्द

यस्मिन् वृत्ते दिक्संख्याता कर्णा रामैः सपत्न्या शोभन्तेऽत्यन्त वामभंव्याकारा,
विश्रामः स्यात् षड्भिः कर्णैः पश्चादन्ते कुन्तीपुत्रैर्मौनैस्तेषां लोकं ख्याताहाराः ।
सर्वेषां नागानामीशेनाय प्रोक्तः सर्वान्त्यः प्रस्तारः षड्विंशत्याहारैस्तारैः,
सोऽय श्रीगोविन्दानन्ददृच्छन्दस्सारः सर्वाधार कार्यंश्चित्तोऽपारैश्छन्दस्कारैः

॥५६९॥

१. क. विलमतिरतिरणि । २. ल. सुफलित । ३. पठित चतुष्टय नास्ति क. प्रती ।

*टिप्पणी—१ पञ्चविंशत्यक्षरवृत्तास्योपलब्धशेषभेदा पञ्चमपरिशिष्टे लोकनीया ।

२५३. षष्प क्षीरौटम्

सादयुगं कुरु नूपुरराजितमत्र करं वररत्नमनोहर-
 चञ्चलुगं पुमुमद्वयसङ्गतवृष्टलगणपयुगं समुपाहर ।
 पण्डितमण्डनिवाहृतमालगवत्यातगञ्जनमोतिरमालग,
 पिङ्गलपद्मराजनिभेदिनपूतक्षीरौटमिद परिभाषय । ५८१ ॥

पद्या-

मल्लिलने मल्लिनासि क्षिमिलसिना रक्षिता भवतो वत पद्यपि,
 सा पुनरेति वरद्वरजनी तय या सनुने षष्पलानि जगन्त्वपि ।
 पट्टदकोटिष्विष्टितुष्टनकोटिष्विनिगंतमीरमगम्पदि,
 न त्वयि कोटिष्वि विधास्यति मादरमन्तरमुत्तरनागरमंसदि ॥ ५८२ ॥

इति क्षीरौटम् २५३.

२५४. षष्प तावो

पारय म त सुचरितभरिते न पुर स तमि ! सुमहितवृत्ते,
 धेहि मयुग्म नगणसुगहित पारय सुन्दरि ! दगणमिहान्ते ।
 भूजमुनीनैवेतिरिह षषिता द्वादशानिदच सुकव्यजनविता,
 तत्त्वविरामा भुजगविरचिता राजति चेतसि परमिति तन्वो ॥ ५८३ ॥

पद्या-

मा कुर भान पुर मम वचन शुद्धजगन भज सहचरि ! वृष्णं,
 वारितराग वलमितवनिता गोपवधूजनधुवतिगतृष्णम् ।
 कोकिलरावंमंधुवगविर्गने* स्फोटितवर्णयुगलपरितिना,
 दाहमुपेता मलयजसलिलैरसाम्प्रतिदेहजशरभरमिन्ना ॥ ५८४ ॥

पद्या वा, 'द्वन्द्वोवृत्तौ'* द्वादशाक्षरविरतिः—

षण्डमुग्गी सुन्दरधनजघना कुन्दममानशिलरदशनाग्रा,
 निष्कलवीणा श्रुतिमुगवचना अस्तकुरद्वतरसनयनान्ता ।
 निर्मुत्तपीनोन्नतवृच्चवसदा मत्तगजेन्द्रक्षलितगतिभावा,
 निर्भरसीला निधुवनविधये मुञ्जनरेन्द्र ! भवतु तव तन्वो ॥ ५८५ ॥
 इति प्रत्युदाहरणम् ।

इति तन्वो २५४.

१. स कृष्णम् । २. क मयुकरविरतिः ।

* टिप्पणी—[छन्दःशास्त्र-हलायुधोवटीका प० ७, वारिकाया २६ उदाहरणम् ।

२५५. अथ माधवी

तत्त्वाक्षरकृतवृत्तं यदि वसुभिर्नायकैर्भटितम् ।

तत्सखि ! पिङ्गलभणितं कथितं त्विह माधवीवृत्तम् ॥ ५८६ ॥

यथा-

विलोलविलोचनकोणविलोकितमोहितगोपवधूजनचित्तः,

मयूरकलापविकल्पितमौलिरपारकलानिधिबालचरित्रः ।

करोति मनो मम विह्वलमिन्दुनिभस्मितसुन्दरकुन्दसुदन्तः,

सखीमिति कापि जगाद् हरेरनुरागवशेन विभावितमन्तः ॥ ५८७ ॥

इति माधवी २५५.

इदमेवास्माभिः पूर्वखण्डे माधवी सवया इत्युक्ता ।

२५६. अथ तरलनयनम्

वसुमितलघुमिह सहचरि ! विकचकमलमुखि ! विरचय,

तदनु घटय सखि ! रसदशलघुमपि तरलनयन इह ।

सकलचरणमिति वसुमितमुनगणमनु कुरु सुरमणि,

फणिमणिरिह विभुरनुवदति सुहचिरमिति परिकलय ॥ ५८८ ॥

यथा-

कुसुमनिकरपरिकलितमधुरवनविहरणसुनिपुण,

सरभसविदलितकरिखरनखरदलितदितिजगण ।

करघृतगिरिवर विलसितमणिगण मुनिमतमुरहर,

फणिपतिविगणितगुणगण जय जय जय सदवनपर ॥ ५८९ ॥

इति तरलनयनम् २५६.

*अत्रापि प्रस्तारगत्या चतुर्विंशत्यक्षरस्य एकाकोटिः सप्तपट्टिलक्षाणि सप्त-
सप्ततिसहस्राणि षोडशोत्तरं शतद्वयं च १६७७७२१६ भेदास्तेषु भेदपट्कमुदा-
हृतं, शेषभेदाः प्रस्तार्य सुधीभिरुदाहरणीया, इति दिक् ।

इति चतुर्विंशत्यक्षरम् ।

अथ पञ्चविंशाक्षरम्

तत्र प्रथमम्—

२५७. कामानन्दः

यस्मिन् वृत्ते सावित्राः कौन्तेयाः कान्ताः यत्नादप्रान्ते कान्ते ! चैको मुक्ताहारः,

विश्रामः स्यात् पद्भिः कर्णभ्रंश्याकारैः सार्द्धैस्तैरेव स्यात् सोऽयं वृत्तानां सारः ।

१. पक्षितत्रय नास्ति क. प्रती ।

*द्वितीयो—१ चतुर्विंशत्यक्षरवृत्तस्य लक्ष्यतोऽभेदाः पञ्चमपरिशिष्टे पर्यवेक्षणीयाः ।

यथा-

श्रीगोविन्द सर्वानन्दश्चित्ते ध्येय वित्त मित्र स्वाराज्य स्त्रीवर्गं सर्वो हेय ,
 घृन्दारण्ये गुञ्जद्भृङ्गे पुष्पं कीर्णं श्रीलक्ष्मीनाय श्रीगोपीकान्त शश्वद्गोय ।
 द्वारे द्वारे व्ययं ससारे रे रे भ्राम भ्राम काम किं कुर्यास्त्व क्षाम चेत ,
 मायाजाल सर्वं चैतत् पश्यच्छ्रुवन्भ्राम्यतानायोनौ पूर्वं खिन्नोऽसि त्व भ्रात
 ॥ ६०० ॥

इति श्रीगोविन्दान व २६१

२६२ अथ भुजङ्गविजृम्भितम्

आदौ यस्मिन् वृत्ते काले^१ मगणयुग-तनननगणा रसी च लगी ततो-^२
 वस्वोशाश्वच्छेदोपेत चपलतरहरिणनयने विधेहि सुखेन वै ।
 पादप्रान्त यस्मिन् वृत्ते रसनरनयनविलसित मनोहरण प्रिये^३ ,
 नागाघोशेनोक्त प्रोक्त^४ विबुधहृदयसुखजनक भुजङ्गविजृम्भितम् ॥ ६०१ ॥

यथा-

ध्यानकाग्रालम्बाद्दृष्टिष्कमलमुखि । लुलितमलकं करे स्थितमानन,
 चिन्तासक्ता धून्या बुद्धिस्स्वरितगतिपतितरज्ञानातमुस्तमुता गता ।
 पाण्डुच्छायक्षाम वक्त्र मदजनति रहसि सरसा^५ करोपि न सकथा,
 को नामाय रम्यो व्याधिस्तव सुमुखि^६ कथय किमिद न खल्वसि नातुरा^७
 ॥ ६०२ ॥

यथा वा, हलायुधे*—

यै सनद्धानेकानोकैर्नरतुरगकरिपरिवृते सम तव शत्रव ,
 युद्धश्रद्धानुल्वात्मान^१स्त्वदभिमुखमथ गतभिय पतन्ति धृतायुधा ।
 तेऽथ स्वा दृष्ट्वा सप्रामे तुडिगनृपकृपणमनस पतन्ति दिगन्तर
 किं वा सोढु शक्य तैस्तैर्वहुभिरपि सविपविपम भुजङ्गविजृम्भितम् ॥ ६०३ ॥

इति प्रत्युदाहरणम् ।

इति भुजङ्गविजृम्भितम् २६२

२६३ अथ अणववाह

आदौ म तदनु च कुष्ठ सहचरि । रसपरिमितमिह नगण गण्य,
 हस्त सविरचय सखि । विकचकमलमुखि । तदनु च रुचिर कर्णम ।
 विश्राम सुतनु । सुदति । नवरसरसशरपरिमित इह वोभूयात्
 नागो जल्पति फणिपतिरतिशयमिति रतिकृतिधृतिरपवाह स्यात् ॥ ६०४ ॥

१ ख बाले । २ ख तनो । ३ ख घटा । ४ ख सरसा । ५ ख
 चातुरा । ६ ख लम्बात्मान ।

*टिप्पणी—१ छन्द सास्त्रहलायुधटीकाया अ० ७ कारिकाया ३१ उदाहरणम् ।

यथा-

श्रीकृष्ण भवभयहरमभिमतफलकरणनिपुणतरमाराध्य,
लक्ष्मीश दलितदितिजमवजितपरमवनतमुनिवरससाध्यम् ।
सर्वज्ञ गरुडगमनमहिपतिकृतरुचिरशयनमनघ नद्य,
त वन्दे कनकवसनतनुरुचिजितजलदपटलमजित दिव्यम् ॥ ६०५ ॥

यथा वा, हलायुधे^१ -

श्रीकण्ठ त्रिपुरदहनममृतकिरणशकलकलितशिरस रुद्र,
भूतेश हतमुनिभयमखिलभुवनमितचरणयुगमीशानम् ।
सर्वज्ञ वृषभगमनमहिपतिवृत्तबलयरुचिरकरमाराध्य,
त वन्दे भवभयनुदमभिमतफलवितरणगुरुमुमया युक्तम् ॥ ६०६ ॥

इति प्रत्युदाहरणम् ।

इति अथवाह २६३

२६४ अथ मागधी

अत्रैव वसुभगणानन्तर गुरुद्वयदानेन मागधीवृत्त भवति । तल्लक्षण यथा -

भगणाष्टकगुरुयुगला रसयुगवर्णा रसाग्निराशिकला ।
पद्मगपिङ्गलक्षपिता विज्ञेया मागधी सुधिया ॥ ६०७ ॥

यथा -

माधव विद्युदिय गगने तव सतनुते नवकाञ्चनरञ्जितवस्त्र,
नीरदवृत्तमिदं गगनेऽपि च भावयति प्रसभ तव देहमहास्त्रम् ।
इन्द्रशरासनजालमिदं तव वक्षसि भावयत^२ वनमालतिमाला,
मानय मे वचनं कुरु सम्प्रति सुन्दर चैतसि भावयतामिह बालाम ॥६०८॥

इति मागधी २६४

इयमेव च द्वात्रिंशत्कलका मागधी सवया इत्युक्ता पूर्वखण्डे । अत्र तु गुरुद्वयमधिकमिति षड्त्रिंशत्कलेति, ततो भेद । वर्णप्रस्तारत्वाच्च षड्विंशत्यक्षरनियम । *अतएव च जातिवृत्तसाकर्येण छन्दसन्दर्भवैचित्र्यीभावहृतीति सर्वत्र रहस्य चाकसीति छन्दशास्त्रेषु ।*

१ ख सतनुते । * *चिह्नगत्तोऽप्य पाठ क प्रती मास्ति ।

*टिप्पणी—१ छन्दशास्त्रहलायुधटीकायां प्र० ७, कारिकायां ३२ उदाहरणम् ।

अथान्त्य सर्वलघु—

२६५ अथ कमलदलम्

सहचरि । विकचकमलमुखि ! वसुमितसुनगणमिह विरचय,

तदनु सकलपदविशदसुरभिकुसुमपुगमपि परिकलय ।

रसपुगपरिमिनपदगतलघुमनुकलय कमलदलमिति,

तदिह मनसि कुरु सुरचिरगुणवति ! कथयति कणिपतिरपि ॥ ६०६ ॥

यथा—

कलुपशमन ! गहडगमन ! कनकवसन ! कुसुमहसन ! [जय,

ललितमुकुट ! दलितशकट ! कलितलकुट ! रचितकपट ! जय !

कमलनयन !] जलधिशयन ! धरणिधरण ! मरणहरण ! जय,

सदयहृदय ! पठितसुनय ! विदितविनय ! रचितसमय ! जय ॥ ६१० ॥

इति कमलदलम् २६५.

अत्रापि प्रस्तारगत्या रसलोचनवर्णस्य कोटिपट्टक एकसप्ततिलक्षाणि वसुसहस्राणि चतुःपट्टचुत्तराणि अष्टौ शतानि च भेदाः ६७१०८८६४ तेषु भेदपञ्चकमभिहित, शेषभेदा प्रस्तार्य गुरुपदेशत स्वच्छया नामानि आरचय्य सूचनीया इति सर्वमवदातमिति ।

इति पद्विंशत्यक्षरम् ।

उक्तग्रन्थमुपसहरति*—

लक्ष्यलक्षणसयुक्त मया छन्दोऽत्र कीर्तितम् ।

प्रत्युदाहरणत्वेन ववचित् प्राचामुदाहृतम् ॥ ६११ ॥

सुजातिप्रतिभायुक्त सालङ्कार स्फुरद्गुणम् ।

कुर्वन्तु सुधिय कण्ठे वृत्तमौक्तिकमुत्तमम् ॥ ६१२ ॥

सर्वगुर्वादिलघ्वन्तप्रस्तारस्त्वतिदुष्कर ।

इति विज्ञाय बाध्यन्तभेदकल्पनमीरितम् ॥ ६१३ ॥

पञ्चपट्टचधिक नेत्रशतक समुदीरितम् ।

स्यवत्वा लक्षणमिश्राणि^३ वर्णवृत्तमिति स्फुटम् ॥ ६१४ ॥

ययामति यथाप्रज्ञमवधार्य मनीषिभि ।

शोधनीय प्रयत्नेन वद्व सन्तोऽयमञ्जलि ॥ ६१५ ॥

१ [-] कोष्ठगर्तोऽत्र क प्रती नास्ति ।

२ पठितचतुष्टय नास्ति क प्रती । ३ ल नास्ति पाठ । ४ ल वृत्तानि ।

*टिप्पणी—१ सन्दशेषभेदा पञ्चमपरिशिष्टे पर्यालोचना ।

अत्र चेकाक्षरादिपङ्क्तिविशत्यक्षरावधिप्रस्तारपिण्डसंख्या—

रसलोचनसप्ताश्वचन्द्रदृग्वेदवह्निभिः ।

आत्मना योजितैर्वाभगत्या ज्ञेया भनीपिभिः ॥ ६१६ ॥

इत्यस्मत्पितृचरणप्रदीपित 'पिङ्गलप्रदीपभाष्य'* निर्दिष्टदिशा 'त्रयोदश कोटयो द्विचत्वारिंशल्लक्षाणि सप्तदशसहस्राणि पङ्क्तिविशत्युत्तराणि सप्तशतानि च १३४२१७७२६ समस्तप्रस्तारस्य ।

पङ्क्तिविशतिःसप्तशतानि चैव तथा सहस्राण्यपि सप्तपञ्चितः ।

लक्षाणि दृग्वेदसुसम्मितानि कोट्यस्तथा रामनिशाकरैः स्युः ॥६१७॥

इति मद्रुपदिष्टपूर्वखण्डोक्तपिण्डसंख्या च सिंहावलोकनशालिभिरनुसन्धा-
तव्या इति सर्वमनवद्यम् ।

इति श्रीलक्ष्मीनाथभट्टात्मज-कविशेखरध्वंशेश्वरभट्टविरचिते

* श्रीवृत्तमीवितके एकाक्षरादिपङ्क्तिविशत्यक्षर-

प्रस्तारेष्व्याद्यन्तभेदसहितवृत्तिरूपण-

प्रकरणं प्रथमम् ।



१ ल. वृत्तमीवितके पिङ्गलवाक्तिके एकाक्षरादिपङ्क्तिविशत्यक्षरान्तप्रस्तारे ।

* टिप्पणी—१ लक्ष्मीनाथभट्टकृताया प्राकृतपिङ्गलवृत्ती २११ पद्यस्य टीकायाम् ।

द्वितीयं प्रकीर्णक-प्रकरणम्

अथ प्रस्तारोत्तीर्णानि कतिचिद् वृत्तानि वर्णनियमरहिताग्न्यभिधीयन्ते । तत्र प्राचीनानां संग्रहकारिका—

१-४. अथ भुजङ्गविजृम्भितस्य चतवारो भेदाः

वेदैः पिपीडिका स्यान्नवभिः करभश्चतुर्दशभिः ।

पणवमिदं तु शरैश्चेन्माला इह मध्यगैर्लघुभिरधिकैः ॥ १ ॥

इति भुजङ्गविजृम्भितभेदनिरूपणम् १-४.*^१

*टिप्पणो—१ ग्रन्थकारेण द्वितीयखण्डस्य द्वादशप्रकरणे विज्ञापितमिदं यदस्य द्वितीय-
खण्डस्य द्वितीयप्रकरणे पिपीडिका-पिपीडिकाकरभ - पिपीडिकापणव-
पिपीडिकामालाचन्द्रदांसि लक्षणोदाहरणसहितानि निरूपितानि । परमत्र
चतुर्वृत्तानां लक्षणोदाहरणानि धर्वाचिदपि नैव दृश्यन्ते, केवलं त्वत्र प्राचीन-
संग्रहकारिकैव समुपलभ्यन्ते । वारिकायाः पूर्वापरसङ्गतिरहितत्वात् लक्षणा-
भ्यपि न प्रस्फुटीभवन्ति । अतः कनिकाससर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्यप्रणीताचन्द्रोद्गी-
शासनादेया चतुर्वृत्तानां लक्षणोदाहरणान्यथ प्रस्तूयन्ते । वृत्तान्येतानि
सन्ति पञ्चविंशत्यक्षरात्मक-भुजङ्गविजृम्भितस्यैव भेदरूपाणि ।

“मातनीजभ्रा पिपीडिका षण्णः ॥३८५॥

[व्या०] मध्यं त्रयणो नगणचतुष्टयं जभरा । जर्णैरिति षष्टभिः पञ्चदशभिश्च यतिः ।

पथा—

निष्प्रत्यहं पुण्यां लक्ष्मीमविरतमभिसपति यदि रमयितुं सुखं च यदीच्छसि,
स्थातुं न्यायोन्मीलद्वन्द्वं लघुभिरपि सह बहुभिरिह कुरु मा विरोधपदं तदा ।

विस्फूर्जत्पुत्रार श्रीहाकचलितसकलमृगकुलमजगरं भुजङ्गममुग्धद,

सङ्घातं कृत्वा पश्यतां श्लेषितपपुपमनसधिरचितरजा घटन्ति पिपीडिका ॥३८५॥

एवं च नीपरतः पञ्च दश-पञ्चदशसप्तपुटान्क्रमेण करभः ॥३९॥ पणवः ॥४०॥

माता ॥४१॥—॥३८६॥

[व्या०] एतैव पिपीडिका चतुर्भ्यो नगणैभ्यः परतः पञ्चभिः, दशभिः, पञ्चदशभिश्च
लघुभिर्षुटानां शेषणेषु तथैव स्थितेषु क्रमेण करभादयो भवन्ति । तेऽत्र पञ्चभिर्षुटाना-
पिपीडिकाकरभः । पथा—

५, अथ द्वितीयत्रिभङ्गी

प्रथमत इह कुरु सहचरि । दश-परममपि च भ
 कुरु शेषे गुरुयुग्म हस्तसुयुक्त,
 पुनरपि गुरुमुग-लघुयुग-गुरुयुगमपि कुरु,
 जल्पति नाग कृतराग पीतविभाग ।
 श्रुतिपदमिह सखि ! समभिति विरचय शुभदति ।
 वेदहगुक्ता विरतौ मात्रा कुरु युक्ता,
 वसुरसशशिमितकलमिह कलय सकलपद-
 भङ्गदभङ्गी सुखरङ्गी सज्जनसङ्गी ॥ २ ॥

१ ल वरतनु ।

*टि०—कण्ठस्थेय दासी श्यामापरभृतयुवतिरपि
 मधुपरिचयकलविदतिनिसर्गकलध्वने,
 भ्रूल्लीभङ्गे छेकाया हरिणनयनमचतुर-
 मलिललिततनु करभोरु ते सदृश दृश ॥ ३८६ ॥

वशाभिर्बुद्धापिपीलिकापणव । यथा—

रुदोऽमन्द कुन्दच्छाय शरदमलधनतुहिनविकच-
 कुमुदवनहरहसितसित शशाङ्ककरोज्ज्वल,
 तार पारावारापार स्थलजलनिगन्तलसकल-
 भुवनपयघवलनपरिचित प्रसाधितदिङ्मुख ।
 लोकाशोकच्छेद गत्वा दृढकठिनविकटदिग-
 वधितटघटनविवलनचलयितो विभुद्वयशश्चय
 प्रोत्तुङ्ग श्वेतप्राकारो ध्वनितगुणपणव तव जयति
 नृपवर नवललितवसतेजगत्त्रितयश्रिय ॥ ३८७ ॥

पञ्चदशभिर्बुद्धा पिपीलिकामाला । यथा—

उत्फुल्लाम्भोजाक्ष्यास्तस्या कुसुमशरसुभग तव विरहदव
 इह हि जयिनि समुपवरणविपये व्यघायि सखीजनै,
 अङ्गे वास कर्पूराम्भस्तिमितशुचितुहिनकिरणकरपरि-
 भवचतुरघवलमकुचतटयुगे सुमीवितकदाम च ।
 रम्भागुल्म लीलागार मलयजरसकलितवसुधामभिनव-
 विकचकुमुदवनदलसमुदयैश्च तल्पककल्पना,
 नब्द्या मौली मल्लीमाला तदिदमखिलमपि दवद्वतवहृदहि-
 परिचितमहिम विरचयति मुहु प्रदाहमहाज्वरम् ॥ ३८८ ॥

द्वकलघुदशकस्यान्ते भगण-गयुग-सगण-गुरुयुगलम् ।
लघुयुगलं गुरुयुगलं यदि घटित स्यात् त्रिभङ्गिकावृत्तम् ॥ ३ ॥

यथा

स जयति हर इह बलयितविषधर तिलकितसुन्दरचन्द्रः
परमानन्दः सुखकन्दः ।
वृषभगमन डमरुघरण नयनदहन जनितातनुभङ्गः -
कृतरङ्गः सज्जनसङ्गः ।
जयति च हरिरिह करघृतगिरिवर विनिहृतकंसनरेशः
परमेशः कुञ्चितकेशः ।
गहडगमन कलुषशमनचरणशरणजनमानसहंसः
सुवत्सः पालितवंशः ॥ ४ ॥

इति द्वितीयत्रिभङ्गी ५.

६. षष्प शालूरम्

कर्णद्विजवरगणमिह रसपरिमितमतिमुरुचिरमनुकलय करं,
शालूरममलमिति विकचकमलमुखि ! सखि ! सहचरि ! परिकलय वरम् ।
नेत्रानलकलमिदमतिशयसहृदय विशदहृदय सुखरसजनकम् ।
नागाधिपकथितमखिलविद्युधजनमथितमगणितगुणगणकनकम् ॥ ५ ॥

यथा-

गोपीजनबलयित - मुनिगणसुमहितमुपचितदितिसुप्तमदहरणं ,
व्यर्थीकृतजलधर-करघृतगिरिवर-गतभय-निजजनसुखकरणम् ।
वृन्दावनविहरण - परपदवितरण - विहितविविधरसरभसपरं ,
पीताम्बरधरमरणचरणकरमनुसर सखि ! सरसिजनयनवरम् ॥ ६ ॥

इति शालूरम् ६.

इति प्रकीर्णकं वृत्तमुक्तं सद्बृत्तमौचितके ।
प्रस्तारगत्या वृत्तानि क्षेपाभ्यूह्यानि पण्डितैः ॥ ७ ॥

इति प्रकीर्णक-प्रकरणं द्वितीयम् ।

तृतीयं दण्डक-प्रकरणम्

अथ दण्डका

तत्र यत्र पादे द्वौ नगणौ रगणाश्च सप्त भवन्ति स दण्डको नाम पङ्-
विंशत्यक्षरपादस्य वृत्तस्यानन्तर 'दण्डको नो र' [॥७।३३॥]* इति सूत्रकार
पाठात् सप्तविंशत्यक्षरत्वमेव युक्तं दण्डकस्य । प्रथमं तावदेकाक्षरश्रधादिवृत्तानां
भेकैकाक्षरवृद्ध्या प्रस्तारप्रवृत्तिरत ऊर्ध्वं पुनरेकैकरेफवृद्ध्या प्रस्तार ।
तल्लक्षणं यथा—

१ अथ चण्डवृष्टिप्रपात

नगणधुगलादनन्तरमपि यदि रगणा भवन्ति सप्तैव ।

दण्डक एव निगदितश्चण्डकवृष्टिप्रपात इति ॥ १ ॥

यथा—

इह हि भवति दण्डकारण्यदेशे स्थितिं पुण्यभाजा मुनीना मनोहारिणी,
त्रिदशविजयिवीर्यदृग्प्रदृशश्रीवलक्ष्मीविरामेण रामेण ससेविते ।

जनकयजनभूमिसम्भूतसीमन्तिनीसीमसीतापदस्पर्शपूताश्रमे,

भुवननमितदिव्यपद्याभिधानाम्बिकातीर्थयात्रागतानेकसिद्धाकुले ॥ २ ॥

इति चण्डवृष्टिप्रपात १

२ अथ प्रचितक

'शेष प्रचितक' [७।३६]* इति सूत्रकारोक्तदिशा [चण्डवृष्टिप्रपातादूर्ध्वं
अधिकैकरेफदानेन प्रस्तारे कृते दण्डक प्रचितक इति सज्ञा लभते । लक्षणं,
यथा—

यदि ह न-द्वयानन्तरमपि रेफा स्युर्वमुप्रमिता ।

प्रचितक इति तत्सज्ञा कथिता श्रीनागराजेन ॥ ३ ॥

यथा—

प्रथमकथितदण्डक] 'चण्डवृष्टिप्रपाताभिधानो मुने पिङ्गलाचार्यनाम्नो मत,
प्रचितक इतितत्पर' दण्डकानामिय जातिरेकैकरेफाभिवृद्ध्या यथेष्ट भवेत् ।

स्वरुचिरचितसज्ञया तद्विशेषैरशेषै पुन काव्यमन्येपि कुर्वन्तु वागीश्वरा,

भवति यदि समानसख्याक्षरैस्तत्र पादव्यवस्था ततो दण्डक पूजयतेऽसी जने

इति प्रचितक ३.

॥ ४ ॥

१ [-] कोष्ठकात्तयोऽशो नास्ति क प्रती । २ 'प्रचित इति तत् पर' इति हलामुणे ।

*टिप्पणी—१ छन्दशास्त्र ।

२ छन्दशास्त्र हलामुपटीका ।

३ अथ अर्णादयः

पितृचरणैरिह कथिताः प्रतिचरणविवृद्धिरेफा ये ।
 दण्डकभेदाः पिङ्गलदीपे^१*ऽप्यर्णादयः स्फुटतः ॥ ५ ॥
 तत एव हि ते विकुर्षः विज्ञेया रेफवृद्धितः प्राज्ञैः ।
 प्रस्तार्यं ते विधेया इत्युपदेशः कृतोऽस्माभिः ॥ ६ ॥

अत्रापि समानसख्याक्षर एव पादो भवतीति ध्येयम् । तत्रार्णो यथा—
 जय जय जगदीश विष्णो हरे राम दामोदर श्रीनिवासाच्युतानन्त नारायण,
 त्रिदशगणगुरो मुरारे [मुकुन्दासुरारे]^१ हृषीकेश पीताम्बर श्रीपते माधव ।
 गरुडगमन कृष्ण वैकुण्ठ गोविन्द विद्वम्भरोपेन्द्र चक्रायुधाघोक्षज श्रीनिधे,
 बलिदमन नृसिंह शीरे भवाम्भोधिघोराणंसि त्व निमज्जन्त^२ भभ्युद्धरोपेत्य माम्^३

इत्युवाहरणम्^३

इत्यर्णादयो दण्डकाः ३.

४ अथ सर्वतोभद्रः

रसपरिमितलघुकान्ते यदि यगणा स्युर्मुनिप्रमिताः ।
 दण्डक एव निगदितः पिङ्गलनागेन सर्वतोभद्रः ॥ ८ ॥

यथा—

जय जय मदुकुलाम्भोधिचन्द्र प्रभो वामुदेवाच्युतानन्तविष्णो मुरारे,
 प्रबलदितिजकुलोद्दामदन्तावलस्तोमविद्रावणे केसरीन्द्रामुरारे ।
 प्रणतजनपरितापोद्गदावानलच्छेदमेधौघनारायण श्रीनिवासा,
 चरणनख[ज]सुघा[शुच्छटोन्मेपनि शेषिताशेषविश्वान्धकारप्रकाश ॥९॥

एतस्यैव अन्यत्र प्रचित्तक इति नामान्तरम् ।

इति सर्वतोभद्रः ४.

१. [—] शीष्टगतोऽसौ नास्ति क. प्रती । २. एतत्तमज्जन्त । ३. क. इति प्रत्युवाहरणम् ।

*टिप्पणी—१. “अर्णादयः—प्रतिचरणविवृद्धिरेफाः स्युर्णाणं वम्यासजीभूतस्त्रीसाकरोद्दाम-

१८५

५. अथ अशोककुसुममञ्जरी

रगण-जगण-क्रमेण हि रन्ध्रगणा यत्र लघ्वन्ताः ।

पिङ्गलनागनिगदिता ज्ञेया साऽशोककुसुममञ्जरिका ॥ १० ॥

यथा-

राधिके विलोकयाद्य केलिकाननं पिकावलीविरावराजितं मनोरमं च,
सुन्दराङ्गि चारुचम्पकस्रगावली-विराजिते विलोलहारमण्डितेऽपरं च ।^१
मद्वचः^२ शृणुष्व ते हितं च वच्मि हे सखि प्रभोदकारणं मनोविनोदनं च,
फुल्लनागकेसरादिपुष्परेणुभूषितं भजाद्य नग्दन्न्दनं मनोहरं च ॥ ११ ॥

इति अशोककुसुममञ्जरी ५.

६. अथ कुसुमस्तवकः

सखि ! यत्र रन्ध्र-सगणाः श्रुतिपदघटिता विराजन्ते ।

कुसुमस्तवकं दण्डकमाह तदा तं तु पिङ्गलो नागः ॥ १२ ॥

यथा-

सखि ! नन्दसुतं कमनीयकलाकलितं करुणावहणालयमीशहर्षि,
रजनीशमुखं भवभीतिहरं नवनीतकरं भवसागरपारतरिम् ।
चपलारुचिरांशुकवल्लिधरं कमलावलिमालितमालि तमालहर्षि,
भवमोचन-पङ्कजलोचनरोचनरोचितभालमहं शरणं कलये ॥ १३ ॥

इति कुसुमस्तवकः ६.

७. अथ मत्तमातङ्गः

यत्र स्वेच्छा घटिता भवन्ति विहगाः^३ सरोजाक्षि ! ।

पिङ्गलभुजगाधिपतिः कथयति तं मत्तमातङ्गम् ॥ १४ ॥

यथा-

याम्बुने संकते रासखेलागतं गोपिकामण्डलीमध्यगं वेणुवाद्ये तरं,
मञ्जूगुञ्जावतंस जगन्मोहनं चारुहासश्रिया सञ्चितं कुन्तलैरञ्चितम् ।
दिव्यकेलीकलोल्लाससम्भावितं दासवृन्दापदुन्मूलकं कामनापूरकं,
कल्पवृक्षस्य भूले स्थितं चन्द्रिकोत्तसहाराञ्चित चेतसा कृष्णचन्द्रं भजे ॥ १५ ॥

इति मत्तमातङ्गः ७.

१. अ. द्वितीयचरणं क. प्रती नास्ति । २. क. से वच. । ३. ख. विगहगा ।

८. अ अतङ्गशेखरः

जगण-रगण-क्रमेण च रन्ध्रगणा यत्र लघ्वन्ताः (गुर्वन्ताः) ।
फणिपतिपिङ्गलभणिताः* स ज्ञेयोऽतङ्गशेखरः कविभिः ॥ १६ ॥

यथा-

विलोलचारुकुण्डलः स्फुरत्सुगण्डमण्डलः सुलोलमौलिकुन्तल स्मरोल्लसत्,
नवीनमेघमण्डलीवपुविभासिताम्बरप्रभातडित्ममाश्रितः स्मितं दधत् ।
मयूरचारुचन्द्रिकाचयप्रपञ्चचुम्बितोल्लसतिकरीटमण्डितः समुच्छ्वसन्,
विलासिनीभुजावलीनिरुद्धबाहुमण्डलः करोतु वः कृतार्थतां जनानवन्* ॥१७॥

इति अतङ्गशेखरः ८.

इति दण्डकाः

एवमन्येपि नकारद्वयानन्तरमनियतस्तकारैः दण्डकाः प्रवन्द्येषु दृश्यन्ते । तेऽस्मा-
भिरपि यत्तत्त्वादेवोपेक्षिताः ग्रन्थविस्तरभयाच्चेह न लक्षिता, इत्युपरम्यते** ।

इति धीवृत्तमोक्तिके[तृतीय]दण्डकप्रकरणम् ।

चतुर्थं अर्द्धं सम-प्रकरणम्

अथ अर्द्धसमवृत्तानि लक्ष्यन्ते—

चतुष्पद भवेत् पद्य द्विधा तच्च प्रकीर्तितम् ।

जातिवृत्तप्रभेदेन छन्द [शास्त्रविशारदं ॥ १ ॥

मात्राकृता भवेज्जातिवृत्ता वर्णकृता मतम् ।

तच्चापि त्रिविधं प्रोक्तं समाद्धं^१ समकं तथा ॥ २ ॥

विपमं चेति तस्यापि लक्ष्यते लक्षणं त्विह ।

चतुष्पदी समा यस्य तत्समं परिकीर्तितम् ॥ ३ ॥

यस्य स्यात् प्रथमं पादस्तृतीयेन समस्तथा ।

द्वितीयस्तु चतुर्थेन भवत्यर्द्धं समं हि तत् ॥ ४ ॥

यस्य पादचतुष्कं स्याद् भिन्नं लक्षणभेदतः ।

तदाहुर्विपमं वृत्तं छन्दशास्त्रविशारदा ॥ ५ ॥

समं तत्र मया प्रोक्तमयार्द्धसममुच्यते ।

यथा श्रीनागराजेन भाषितं सूत्रवृत्तिभिः ॥ ६ ॥

तत्र प्रथम—

१. पुष्पिताग्रा

यदि रसलघुरेफतो यकारो, विपमपदे परिभाति पद्मगोक्ता^१ ।

समं इह चरणे च नो जज्ञी रो, गुरुरपि चेज्जयतीह पुष्पिताग्रा ॥ ७ ॥

यथा—

सहचरि ! कथयामि ते रहस्यं, न खलु कदाचन तद्गूहं व्रजेया^२ ।

इह विपमविपमा गिर सखीना, सकपटचाटुतरा पुरस्सरन्ति ॥ ८ ॥

यथा या—

प्रसरति पुरतः सरोजमाला, तदनु मदान्धमधुव्रतस्य पङ्क्तिः ।

तदनु धृतशरासनो मनोभू^३स्तव हरिणाक्षि विलोकनं तु पश्चात् ॥ ९ ॥

इति या—

दिशि दिशि परिहासगूढगर्भा, पिशुनगिरो गुरुगञ्जनं च तादृक् ।

सहचरि ! हरये निवेदनीयं, भवदगुरोघवशादयं विपाकं । १० ॥

१ कोष्ठगोऽंश क. प्रती नारित । २ ख. पद्मगोक्ता । ३ ख. व्रजेयाम् । ४ क. मनोहर ।

अथ च-

इह मनु विपम पुरा कृतानां, विलसति जन्तुषु कर्मणा विपाक ।

भव जनकतनया क्व रामजाया, क्व च रजनीचरसङ्गमापवाद ॥ ११ ॥

इत्यादि महाकविप्रबन्धेषु सातदा प्रत्युदाहरणानि^१ ।

इति पुष्पिताग्रा १.

२ अथ उपचित्रम्

विपमे यदि भौ सलगा प्रिये । भौ च समे भगगा सरमाश्चेत् ।

फणिना भणित गणित गणै वृत्तमिद कथित ह्युपचित्रम् ॥ १२ ॥

पथा-

नवनीतकर कदणाकर, कासियगञ्जनमञ्जनवर्णम् ।

भवमोचन पङ्कजलोचन, चि तय चेतसि हे सगि । कृष्णम् ॥ १३ ॥

इति उपचित्रम् २

३ अथ वेगवती

विपमे यदि सावशनिर्गो, भ्रित्तय समके गुग्गुमम् ।

कविना फणिना भणितैव, वेदय चेतसि वेगवतीयम् ॥ १४ ॥

पथा-

सगि । नदमुत कमनीय, यादववशधुरन्धरमीशम् ।

सनकादिमुनीद्रविचिन्त्य, कृञ्जगत परिशीलय कृष्णम् ॥ १५ ॥

इति वेगवती ३

४ अथ हरिणप्लुता

विपमे यदि सी सगणो लगी, सति । समे नगणे भभरा कृता ।

कविना फणिना परिजल्लिता, सुमुग्धि । सा गदिता हरिणप्लुता ॥ १६ ॥

पथा-

नवनीरदवृत्तमनोहर^२, कनकपीतपटच्च्युतिमुन्दर ।

अलिदे तिलकीटनचन्दनस्तय तनोतु मुद मधुमूदन ॥ १७ ॥

इति हरिणप्लुता ४

५ अथ अपरवक्त्रम्

विपम इह पद तु नी रनी, गुग्गुपि चेद् घटित मुमध्यमे ।

सम इह चरणे नजी जरी, तदपरवक्त्रमिद भयेत्र विम् ॥ १८ ॥

१ ए त्नुदाहरणानि । २ ए रुन्दमनोहर ।

यथा—

स्फुटमधुरवचः प्रपञ्चनैः, कलितमिदं हृदयं तदैव ते ।

अलमलमधुना तत्राननं, न खलु कदापि विलोकयाम्यहम् ॥ १६ ॥

यथा वा, हर्षचरिते [प्रथमोच्छ्वासे]—

तरलयसि दृशं किमुत्सुका-मविरतवासविलासलालसे^१ ।

अवतर कलहसि वापिकां, पुनरपि यास्यसि पङ्कजालयम् ॥ २० ॥

इति प्रत्युदाहरणम् ।

इति अररवक्त्रम् ५.

६. अथ सुन्दरी

विपमे यदि सौ लगी लगी, समके स्मौ रलगा भवन्ति चेत् ।

घनपीनपयोधरे ! तदा, कथिता नागनूपेण सुन्दरी ॥ २१ ॥

यथा—

अयि मानिनि ! मानकारणं, ननु तस्मिन्न विलोकयाम्यहम् ।

कुक्षु सम्प्रति मे वचोऽमृतं, प्रियगेहं व्रज किं विडम्बनैः ॥ २२ ॥

यथा वा—

अथ तस्य विवाहकोतुकं, ललितं विभ्रत एव पार्थिवः ।

वसुवामपि हस्तगामिनी-मकरोदिन्दुमतीमिवापराम् ॥ २३ ॥^{*१}

इति रघुवंशादिमहाकाव्येषु शतशः प्रत्युदाहरणानि^२ ।

इति सुन्दरी ६.

७. अथ भद्रविराट्

यस्मिन् विपमे तजौ रगौ चेद्, मः सो जः समके गुरू भवेताम् ।

तद्वै कथितं कवीन्द्रवर्ये—स्तज्जं भद्रविराडिति प्रसिद्धम् ॥ २४ ॥

यथा—

यद्द्वेषुविवाहमोहितास्ता, गोप्त्रः स्वं वसनं च न स्मरेयुः^३ ।

द्वार्येव^४ निवारिता जनोघै-ध्वस्तव्ये कृतनिश्चया वभूवुः ॥ २५ ॥

इति भद्रविराट् ७

१. मरुतुपमानतत्रातलालिते 'हर्षचरिते' । २. ख. समुदाहरणानि । ३. ख. स्मरन्ति ४. क. द्वाप्येव ।

* टिप्पणी— १ रघुवंश, स० ८, पद्य १

८ अथ केतुमती

विषमे सजी सखि । सगी चेद्, भ समके रनौ गुरुयुगाभ्याम् ।
मिलितौ यदैव भवतस्तौ, केतुमतीति सा भवति वृत्तम् ॥ २६ ॥

यथा-

यमुनाविहारकलनाभि, कालियमौलिरत्ननटनाभि ।
विदितो जनेन परमेश, केवलभक्तितस्तु भुवनेश ॥ २७ ॥

इति केतुमती ८.

९ अथ वाङ्मती

यद्युग्मयोः रजौ रजौ कृती च, जरौ जरौ च युग्मयोर्गंसगतौ वा ।
हारशङ्खकक्रमैर्युग्मतश्च, सभानयोर्विपर्ययेण वाङ्मतीयम् ॥ २८ ॥

यथा-

काञ्चनाभ-वाससोपलक्षितश्च, मयूरचन्द्रिकाधर्यैविराजितश्च ।
नन्दनन्दन पुनातु सन्तत च, मनोविनोदन प्रकामभासुरश्च ॥ २९ ॥
अत्र समयो पादयो पादान्तगुस्त्वभवधेयम् ।

इति वाङ्मती ९.

१० अथ पट्पदावली

वाङ्मत्येव हि सुकले, विपरीता भवति चेद् वाले । ।
कथयति पिङ्गलनागस्ताभेता पट्पदावली रुचिराम् ॥ ३० ॥
ऊह्यमुदाहरणम् ।

इति पट्पदावली १०.

इत्यर्द्धसप्तमवृत्तानि कथितान्यत्र कानिचित् ।
सुधीभिरूह्याऽन्यानि प्रस्तायं स्वमनीषया ॥ ३१ ॥

इति धीयुक्तमोक्तिके [चतुर्थं] अर्द्धसप्तमप्रकरणम् ।



पञ्चमं विषमवृत्त-प्रकरणम्

अथ विषमवृत्तानि

भिन्नचिह्नचतुष्पादमुद्दिष्ट विषम मया ।

अथेदानीं तदेवात्र सोदाहरणमुच्यते ॥ १ ॥

तत्र प्रथमम्—

१ उद्गता

सजसा लघु प्रथमतस्तु, नसजगुरुकाणि युग्मत ।

स्युस्तदनु भनभा गयुता, सजसा जगौ चरमतरपदोद्गता ॥ २ ॥

यथा—

विललास गोपरमणीषु, तरणितनयातटे हरि ।

वशमधरदले कलयन्, वनिताजनेन निभृत निरीक्षित ॥ ३ ॥

इति उद्गता १.

अथोद्गताभेद

सजसा लघु प्रथमतस्तु, नसजगुरुकाणि युग्मत ।

स्युस्तदनु भनलजा गयुता, सजसा जगौ च खलु तुर्यतो भवेत् ॥ ४ ॥

तृतीयचरणे वा स्याद् भेद समुपलभ्यते । ततो भारवि माघादौ उद्गते-

यमुदीरिता । यथा—

अथ वासवस्य वचनेन, रुचिरवदनस्त्रलोचनम् ।

क्लान्तिरहितमभिराधयितु, विधिवत्तपासि विदधे धनञ्जय ॥ ५ ॥*

यथा वा, माघे**

तव घर्मेराज इति नाम, सदसि यदपण्डु पठयते ।

भौमदिनमभिदधत्ययवा, भृशमप्रक्षस्तमपि मङ्गल जना ॥ ६ ॥

इति उद्गताभेद १.

२. अथ सौरभम्

प्रथम द्वितीयमथ तुर्य-मिह सममुशन्ति पण्डिता ।

सौरभ यदि तृतीयपदे, विहगो नभौ गुरुरपीह दृश्यते ॥ ७ ॥

*टिप्पणी—१ किराताजुनीयम्, स० ११, पद्य १ ।

.. २ शिशुपालवधम्, स० १५, पद्य १७ ।

पया-

यमुनातटे विहरतीह, सरसविपिने मनोहरे ।
 रासकेलिरभसेन सदा, व्रजसुन्दरीजनमनोहरो हरि ॥ ८ ॥
 इति सौरभम् २
 ३ अथ ललितम्

न-युग च हस्तयुगल च, सुमुखि । चरणे तृतीयके ।
 भवति सुकविविदित ललित, कथित तदेव भुवने मनोहरम् ॥ ९ ॥

पया-

व्रजसुन्दरीसहचरेण^१, मुदिनहृदयेन गीयते ।
 सुललितमधुरतर हरिणा, कृष्णाकरेण सतत मुरारिणा ॥ १० ॥
 इति ललितम् ३

४ अथ भाव

पद्सख्याता हारा, पादेषु त्रिष्वेवम् ।
 अन्ते कान्त यस्मिन्, भ-त्रय-ग-द्वितय^२ वद भावम् ॥ ११ ॥

पया-

राधामाधायैना, चित्ते वाधा त्यक्त्वा ।
 कल्पान्ते य श्रीडेत्, त किल चेतसि भावय नित्यम् ॥ १२ ॥
 इति भाव ४

५ अथ वक्ष्यम्

कदाचिद्द्वंद्वंसमक, वक्त्र च विषम भवेत् ।
 द्वयोस्तयोक्षपान्तेषु, वृत्त तदधुनोच्यते ॥ १३ ॥

तत्र वक्ष्यम्-

मुग्ध्या वक्त्र मयी स्मरतां, सागराद् अ^३स्त्वनुष्टुभिः ।
 ख्यात सर्वगणैरेतत्, प्रसिद्ध तद्वलायुधे ॥ १४ ॥

पया-

मुखाम्भोज सदा स्मेर, नेत्र नीलोत्पल पुल्लम् ।
 गोपिकाना मुरारातेश्चेतोभृङ्ग जहारोच्चै ॥ १५ ॥
 इति वक्ष्यम् ५

१. ख समुदयेन । २. क. यत्रयगद्वितयम् । ३. धनुर्बाणैरानन्तर वगणो देय इत्यर्थे ।

६ अथ पथ्यावयवत्रम्

अपि च-

युजोश्चतुर्थतो येन (जेन), पथ्यावयवत्रं प्रकीर्तितम् ।
[एवमन्येऽपि भेदास्तु, विज्ञेया गणभेदतः ॥ १६ ॥]*

पथा-

रासकेलिसतृष्णस्य, कृष्णस्य मधुवासरे ।
आसीद् गोपमृगाक्षीणा, पथ्यावयवत्रं मधुश्रुतिः ॥ १७ ॥
इति पथ्यावयवत्रम् ६.

एवमन्यान्यपि गणविभेदात् ज्ञेयानि वक्त्रवृत्तानि ।

अथवा-

पञ्चम लघु सर्वत्र सप्तम द्विचतुर्थयो ।
गुरुपष्ठ तु पादाना शेषेष्वनियमो मतः ॥ १८ ॥
अतः श्रीकालिदासश्च स्वप्रबन्धे समुज्जगौ ।
तथान्येऽपि कवीन्द्राश्च स्वनिबन्धे यवन्धिरे ॥ १९ ॥

अथा-

वागर्थ्याविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ बन्धे, पार्वतीपरमेश्वरौ ॥ २० ॥**

किञ्च-

प्रयोगे प्रायिक प्राहुः वेप्येतद् वक्त्रलक्षणम् ।
लोकेऽनुष्टुबिति र्यातिस्तस्याष्टाक्षरता कृता ॥ २१ ॥
तथा नानापुराणेषु नानागणविभेदतः ।
वृत्तमष्टाक्षर वक्त्र, विषमाख्या प्रयाति हि ॥ २२ ॥
एव तु विषम वृत्त दिङ्मात्रमिह कीर्तितम् ।
शेषमाकर्तौ ज्ञेय, सुधीभिर्भावनापरैः ॥ २३ ॥
पदचतुरुद्ध्वं वृत्त मात्रासमकमेव च ।
उपस्थितप्रचुपित-मथान्यदपि वृत्तकम् ॥ २४ ॥
हृत्प्रयुधे प्रसिद्धत्वादत्र [नश्युत्] योगिन ।
तदग्रन्थगौरवभोत्या च मयका न प्रपञ्चितम्** ॥ २५ ॥

इति धीवत्तमोहितके षातिके द्वितीये वृत्तपरिच्छेदे
विषमवृत्तप्रकरण पञ्चमम् ।

[-] कोष्ठवर्त्यंशो नास्ति क प्रती ।

*टिप्पणी—१ रघुवश, स० १, प० १

**टिप्पणी—२ पदचतुरुद्ध्वं वादिवृत्तानां लक्षणाणि श्रीहलामुघरचित्त-छन्द सूत्रटीकानुसारेण
सक्षेपेणोद्ध्रियन्ते—

पदचबुह्वंम्—प्रथमचरणे अष्टौ वर्णा द्वितीयचरणे द्वादशाक्षरवर्णा, तृतीयचरणे पौष्टत्र
वर्णा, चतुर्थचरणे च विंशतिवर्णा भवति । अस्मिन् वृत्ते गुरुलघुनियमो
नास्ति ।

घापीड — [प्र च] लघु ६, गुरु २ । [द्वि च] लघु १०, गुरु २ ।

[तृ च] लघु १४, गुरु २ । [च च] लघु १८, गुरु २ ।

प्रत्यापीड — [प्र च] गुरु २, लघु ६ । [द्वि च] गुरु २, लघु १० ।

[तृ च] गुरु २, लघु १४ । [च च] गुरु २, लघु १८ ।

प्रत्यापीड — [प्र च] ग २, ल ४, ग २ । [द्वि च] ग २ ल ८, ग २ ।

[तृ च] ग २ ल १२ ग २ । [च च] ग २, ल १६, ग २ ।

मञ्जरी— [प्र च] १२ वर्णा । [द्वि च] ८ वर्णा ।

[तृ च] १६ वर्णा । [च च] २० वर्णा ।

लवली— [प्र च] १६ वर्णा । [द्वि च] १२ वर्णा ।

[तृ च] ८ वर्णा । [च च] २० वर्णा ।

अमृतधारा — [प्र च] २० वर्णा । [द्वि च] १६ वर्णा ।

[तृ च] १२ वर्णा । [च च] ८ वर्णा ।

उपस्थितप्रचुपितम्— [प्र च] म स ज भ ग ग । [द्वि च] स न ज र ग

[तृ च] न न स [च च] न न न ज य

वद्धमानम्— [प्र च.] म स ज भ ग ग [द्वि च] स न ज र ग

[तृ च] न न स न न स [च च] न न न ज य

शुद्धविराटवृत्तम् — [प्र च] म स ज भ ग ग [द्वि च.] स न ज र ग

[तृ च] स ज र [च च] न न न ज य



पठं वैतालीय-प्रकरणम्

१. अथ वैतालीयम्

विषमे रससह्यकाः कलाः, समकेऽष्टौ न कलाः पृथक्कृताः ।

न समात्र पराश्रया कला, वैतालीयेऽस्त्ये र-दण्ड-गाः ॥ १ ॥

विषमे रसमात्रा. स्युः समे चाष्टौ कलास्तथा ।

वैतालीयं भवेद् वृत्तं तयोरन्ते रलौ गुरुः ॥ २ ॥

यथा-

तव तन्वि ! कटाक्षवीधितैः, प्रचरद्भिः श्रवणान्तगोचरैः ।

विशिखैरिव तीक्ष्णकोटिभिः, प्रहृतः प्राणिति दुष्करं नरः ॥ ३ ॥

अस्य च भूयासि सप्रपञ्चमुदाहरणप्रत्युदाहरणानि पिङ्गलवृत्तौ सन्ति,
तानि तत एवावधेयानि । [नैपथकाद्ये च द्वितीये समे सन्ति तानि तत एवावधेयानि]*

इति वैतालीयम् १.

२. अथ श्रीपञ्चदशकम्

तत्रैवान्तेऽधिके गुरौ स्या-दौपञ्चदशकं कवीन्द्रहृद्यम् ।

फणिभाषितमुत्तम रसालं, पठनीयं कविपण्डितैरुदारैः ॥ ४ ॥

यथा-

परमर्मनिरीक्षणानुरक्तं, स्वयमत्यन्तनिगूढचित्तवृत्तिम् ।

अनवस्थितमर्थलुब्धमारदाद्, विपरीतं विजहीहि मित्रमेवम् ॥ ५ ॥

इति श्रीपञ्चदशकं वैतालीयम् २.

३. अथ आपातलिका

आपातलिका कथितेयं, भाद् गुरुकावथ पूर्ववदन्यत् ॥ ६ ॥

यथा-

पिङ्गलकेशी कपिलाक्षी, वाचा या विकटोन्नतदन्ती ।

आपातलिका पुनरेषा, नृपतिकुलेऽपि न भाग्यमुर्पति ॥ ७ ॥

इति आपातलिका १.

४. अथ तलिनम्

विषमपदैः रयात्तलिनाख्यम् ॥ ८ ॥

[ध्या०] दिपमंरेव चतुभिरापातलिकापदैर्नलिनारुय वंतालीयमित्यपं ।

यथा-

कुञ्चितकेशी नलिनाक्षी, स्थूलनितम्बा रुचिकान्ता ।
पद्मसुहस्ता रुचिरोष्ठी, गोष्ठीरसिका परिणेया ॥ ६ ॥

इति नलिनाख्य वंतालीयम्

५. अध्यापर नलिनम्

समचरणैरपि चाग्यदुदीते ॥ १० ॥

[ध्या०] समरेव चतुभिरापातलिकापादैरपर नलिन भयतीत्यर्थ ।

यथा-

पङ्कजलोचनमम्बुददेह, बालविनोद-सुनन्दितगेहम् ।
पद्मजशम्भुवृत्तस्तुतिमीश, चिन्तय कृष्णमपारमणीयम् ॥ ११ ॥

इति अपर नलिनाख्य वंतालीयम् ५

६ अथ दक्षिणान्तिका वंतालीयम्

द्वितीयलस्यान्त्ययोगत, पदेषु सा स्याद् दक्षिणान्तिका ॥ १२ ॥

[ध्या०] द्वितीयलघोरन्त्येन-तृतीयेन योगतश्चतुर्षु पादेषु यत्र सा दक्षिणान्तिका इत्यर्थः ।

अतएव शुद्धवंतालीयरय दिपमपदैर्दक्षिणान्तिका, समपदैरुत्तरान्तिका इति शम्भुरप्याह ।

यथा-

ववौ भरुदक्षिणान्तिको, वियोगिनीप्राणहारक ।
प्रकम्पिताशोकचम्पको, वसन्तजोऽनङ्गबोधक ॥ १३ ॥

यथा वा, भ्रमप्रत्युदाहरणम्^१—

नमोऽस्तु ते रुचिमणीपते, जगत्पते श्रीपते हरे ।
भवाम्बुधेरतारयाशु मा, विधेहि सन्मति शुभाम् ॥ १४ ॥

इति दक्षिणान्तिका वंतालीयम् ६

७ अथ उत्तरान्तिका वंतालीयम्

शुद्धवंतालीयस्य समपदैरुत्तरान्तिका ॥ १५ ॥

यथा-

सहसा सादितकसभूपति, घृतगोवद्धंनशैलमुद्धुरम् ।
यमुनाकुञ्जविहारिण हरि, यदुवीर कलयाम्यहर्निसम् ॥ १६ ॥

इति उत्तरान्तिका वंतालीयम् ७

८ अथ प्राच्यवृत्ति

तुर्यस्य तु शेषयोगत, प्राच्यवृत्तिरिह युग्मपादयो ॥ १७ ॥

[व्या०] [सत्पुर्मलकारस्य लयन-पञ्चमेन योगत प्राच्यवृत्तिर्नाम वंतालीयं युगपादयो-
समपादयोरित्यय ।]¹

यथा- हलायुधे—*¹

विपुलार्थमुवाचकाक्षरा , कस्य नाम न हरन्ति मानसम् ।

रसभावविशेषपेशला प्राच्यवृत्ति कविकाव्यसम्पद ॥ १८ ॥

यथा वा, सुल्हणे—

स्वगुणैरनुरञ्जितप्रज , प्राच्यवृत्तिपरिपालने रत ।

रणभूमिषु भीमविक्रमो, विन्ध्यवर्मनूपतिर्जयत्यसौ ॥ १९ ॥

यथा वा, मम¹ प्रत्युदाहरणम्—

कति सन्ति न गोपबालका , कामकेलिकलनासुकोविदा ।

अयि माधव ! एव केवल, चेतना ननु² परिक्षिणोति मे ॥ २० ॥

इति प्राच्यवृत्तिर्नाम वंतालीयम् ८

९ अथ उदीच्यवृत्तिर्वंतालीयम्

उदीच्यवृत्तिस्त्वयुगमयो , भवति तृतीयस्याद्ययोगत ॥ २१ ॥

[व्या०] अयुगमयो-प्रथमतृतीययो पादयो तृतीयस्य लघोराद्येन-द्वितीयेन योगाङ्क-
दीच्यवृत्तिर्नाम वंतालीयम् । यथा-

यथा- हलायुधे*²

अवाचकमनूजिताक्षर, श्रुतिदुष्ट श्रुतिकष्टमरुमम् ।

प्रसादरहित च नेष्यते, कविभि काव्यमुदीच्यवृत्तिभि ॥ २२ ॥

यथा वा, ममापि उदाहरणम्—

अवञ्चकमनिन्दित पर, परमेश परमार्थपेशलम् ।

अनाकलितवैभव विभ, जगता वन्द्यमनारत भजे ॥ २३ ॥

इति उदीच्यवृत्तिर्वंतालीयम् ९

१० अथ प्रवृत्तक वंतालीयम्

प्रवृत्तक पद्भिरेतयो ॥ २४ ॥

[व्या०] उदीच्यवृत्ति-प्राच्यवृत्तयोर्गुणप्रवृत्तयो पदे प्रवृत्तक, युक्पादे पञ्चमन पूर्व
सयुज्यते अयुक्पादे सूतीयेन पूर्वमित्यय ।

१ [-]कोष्ठागाशस्य स्थान 'समयोरित्यर्थ' इत्यश एवास्ति क प्रती ।

१ अ मर्मबोदाहरणम् । २ अ न तु ।

*टिप्पणी—१ छंद शास्त्र हलायुधटीका अ० ४ का० ३७ उदाहरणम्

२ ,, ,, ,, ,, ३८ ,,

यथा, हलायुधे*^१—

जयो भरतवशस्य^१, श्रूयता श्रुतमनोरसायनम् ।

पवित्रमधिक शुभोदय, व्यासवक्त्रकथित प्रवृत्तकम् ॥ २५ ॥

यथा वा, मम प्रत्युदाहरणम्—

हरिं भजत रे जना पर, श्रूयता परमधर्ममुत्तमम् ।

न काल इह कालयत्यसौ, सर्वधस्मरघनाघनद्युति^२ ॥ २६ ॥

इति प्रवृत्तक वंतालीयम् १०

११ अथ अपरान्तिका

अस्य युग्मरचिताऽपरान्तिका ॥ २७ ॥

[ध्या] अथ-प्रवृत्तकस्य समपदकृता-समपादलक्षणयुषतदचतुर्भि पादै रचिताऽपरान्तिका ।

यथा, हलायुधे*^३—

स्थिरविलासनतमोत्तिपेशला^३, [कमलकोमला]^४ङ्गी मृगेशणा ।

हरति कस्य हृदय न कामिन, सुरतकेलिकुशलाऽपरान्तिका ॥ २८ ॥

यथा वा, सुल्हणे—

तुङ्गपीवरघनस्तनालसा, चारुकुण्डलवती मृगेशणा ।

पूर्णचन्द्रवदनाऽपरान्तिका, चित्तमुन्मदयतीयमङ्गना ॥ २९ ॥

यथा वा मम प्रत्युदाहरणम्—

चारुकुण्डलयुगेन मण्डितो, बहिर्बह्कृतमौलिशेखर ।

व्रत भो पनसपिप्पलादयो, नन्दसूनुरिह नावलोकित ॥ ३० ॥

इति अपरान्तिका ११

१२ अथ चारुहासिनी

अयुक्कृता चारुहासिनी ॥ ३१ ॥

[ध्या०] प्रवृत्तकस्यैव विषयमपादलक्षणयुषतदचतुर्भि पादैरचिता चारुहासिनी नाम वंतालीयम् । किं तल्लक्षणम् ? चतुर्दशमात्रैश्च तृतीयेन च द्वितीययोग ।

१ इदं वररत्नभूताम् । २ ख युति । ३ कावली 'हलायुधे' । ४ कोष्ठगतोऽसौ नास्ति क प्रती ।

*टिप्पणी—१ छन्द शास्त्रहलायुधटीका अ० ४, वा ३६ उदाहरणम् ।

२ ४१ उदाहरणम् ।

यथा, हलायुध* १—

मनाक्प्रसूतदन्तदीधिति, स्मरोल्लसितगण्डमण्डला । "

कटाक्षललिता च कामिनी, मनो हरति चारुहासिनी ॥ ३२ ॥

यथा वा, चूत्तरत्नाकरटीकाया सुल्हणः प्रोवाच—

न कस्य चेत समन्मय, करोति सा सुन्दराकृति ।

विचित्रशक्योक्तिपण्डिता, विलासिनी चारुहासिनी ॥ ३३ ॥

यथा वा, मम प्रत्युदाहरणम्—

सुवृत्तमुक्तावलीघर, प्रतप्तचामीकराम्बरम् ।

मयूरपिच्छैर्विराजित, नमाम्यह नन्दनन्दनम् ॥ ३४ ॥

इति चारुहासिनी वंतालीयकम् १२

इति भीवृत्तमौक्तिके वंतालीयप्रकरण षष्ठम् ।



*टिप्पणी—१ छन्दशास्त्रहलायुधटीकाया अ० ४, कारिकाया ४० उदाहरणम्

सप्तमं यतिनिरूपणम्—प्रकरणम्

अथाभिधीयते चात्र यतिविच्छेदसञ्ज्ञिता ।
विरामधृतिविश्रामावसानपदरूपिणी ॥ १ ॥
समुद्रेन्द्रियभूतेन्द्ररसपक्षदिगादय ।
साकाक्षत्वादिभे शब्दा यत्या सम्बन्धमात्रिता ॥ २ ॥
तस्यास्तु लक्षण सम्यगुच्यते वृत्तमौक्तिके ।
आलोच्य मूलशास्त्राणि सोदाहरणमञ्जसा ॥ ३ ॥
यति सर्वत्र पादान्ते श्लोकस्याद्धे विशेषत ।
समुद्रादिपदान्ते च व्यक्ताव्यक्तविभक्तिके ॥ ४ ॥
क्वचित्तु पदमध्येऽपि समुद्रादौ तथैव च ।
अत्र पूर्वापरौ भागौ न स्यातामेकवर्णकौ ॥ ५ ॥
पूर्वन्तवत् स्वर सन्धौ क्वचिदेव परादिवत् ।
द्रष्टव्यो यतिचिन्ताया यणादेश परादिवत् ॥ ६ ॥
नित्य प्राक्पदसम्बन्धाश्चादय प्राक्पदान्तवत् ।
परेण नित्यसम्बन्धा प्रादयश्च परादिवत् ॥ ७ ॥

‘यति सर्वत्रपादात्’ इत्यादि कारिकाचतुष्टय यथास्थान व्याकरित्याम् । तत्र—यति सर्वत्र
सर्वंश्लेषु इत्ययं, पादान्त एव भवति । यथा—

[विशुद्धज्ञानदेहाय, शिवाय गुरवे नमः । इत्यादि ।

तस्यैव प्रत्युदाहरण यथा]^१—

नमस्तस्मै महादेवाय शशाङ्काद्धर्ममौलये । इति ।

श्लोकस्याद्धे विशेषत’ इत्यत्र सन्धिकार्याभावः । स्पष्टविभक्तिकत्वं च विशेषतो यत्र
भवति । तदयथा—

नमस्यामि सदोदभूतमिन्धनीभूतमन्मयम् ।

ईश्वरास्य पर ज्योतिरज्ञानतिमिरापहम् ॥

अत्रद्वरमित्यस्य मकारेण सयोगो न क्लृप्त्यः । समाप्ते तस्यैव प्रत्युदाहरण । यथा—

सुरामुरशिरोरत्नस्फुरत्किरणमञ्जरी—

पिञ्जरीवृत्तपादाञ्जद्वन्द्व वन्दामहे शिवम् ॥ इति ।

‘समुद्रादिपदान्ते च व्यक्ताव्यक्तविभक्तिके ।’ तत्र स्पष्टतन्त्रव्यक्तविभक्तिकः समासात्तभूत्
मध्यस्तविभक्तिकम् । यथा—

यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु । इत्यादि

वपश्ताध्यवतविभक्तिक इति । यतिः सधंश्रपादान्ते इत्यनेन सम्बध्यते ।

यथा-

वशीकृतजगत्कालं कण्ठेकालं नमाम्यहम् ।

महाकाल कलाशेषं शशिलेखाशिखामणिम् ॥

अपि च-

नमस्तुङ्गशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे ।

त्रैलोक्यतगरारम्भमूलस्तम्भाय शम्भवे ॥

वर्चित्तु पदमध्येऽपि समुद्रादौ यतिर्भवेत् ।

यदि पूर्वापरौ भागौ न स्यातामेकवर्णकौ ॥ ५ ॥

इति । चतुरक्षरा यतिर्भवति । यथा-

पर्याप्त ताप्तचामीकरकटकटटे श्लिष्टशीतेतराशौ ।

इत्यादि । यथा वा-

जन्मीलनीलपङ्केरुहरुचिररुचो देवदेवस्य विष्णोः ।

इत्यादि । तथा-

कूजत्कोयष्टिकोलाहलमुखरभुवः प्रान्तकूलान्तदेशाः ।

इत्यादि । तथा-

वैरिञ्चाना^१ तथोच्चारितरुचिरऋचां चाननानां चतुर्णाम् ।

इत्यादि ।

समुद्रादौ इति किम् ? पादमध्येऽपि यतिः । पदान्ते तु माऽभूत् । तद्यथा-

प्रणमत भवबन्धक्लेशनाशाय नारा-

यणचरणसरोजद्वन्द्वमानन्दहेतुम् ।

इत्यादि ।

पूर्वोत्तरभागयोरकाराक्षरत्वे तु पदमध्ये यतिर्दृश्यति ।

यथा-

एतस्या गण्डमण्डल-ममलं गाहते चन्द्रकक्षाम्^२ ।

इत्यादि । यथा-

एतस्या राजति मुखमिद पूर्णचन्द्रप्रकाशम् ।

इत्यादि । तथा-

सुरासुरशिरोनिघृष्टचरणारविन्दः शिवः ।

इत्यादि

पूथगितवत् स्वरः सन्धौ षवचिद्वेध परादिवत् । अस्यापमर्थः—घोऽय पूर्वपरयोरेकादेशः स्वरः सन्धौ विधीयते । स षवचित् पूर्वस्यान्तवद् भवति, षवचित् परस्यादिवद् भवति । तथा च पाणिनि. स्मरति—'ग्रन्तादिवच्च' [पा०सू० ६।१।८५] इति । तत्र पूर्वा-तवद्भावे यथा स्यात् । यथा—

स्यादस्थानोपगतयमुनासङ्गमे चाभिरामा^१ ।

इत्यादि । तथा—

जम्भारातीभकुम्भोद्भवमिव दधत. सान्द्रसिन्दूररेणुम् ।

इत्यादि । तथा—

दिवकालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्त्तये ।

स्वानुभूत्येकमानाय नम. शान्ताय तेजसे ॥

इत्यादि ।

परादिवद्भावे यथा—

स्कन्ध विन्ध्याद्रिमूर्द्धा निकपति [महिषस्याहितोऽसूनहार्पीत् ।

इत्यादि । तथा—

शूल शूल तु गाढ प्रहर हर हृषीकेश]^२ केशोऽपि वदत्र—

श्चक्रेणाऽकारि किं ते ।

इत्यादि ।

अत्र हि स्वरूपस्य परादिवद्भावे व्यञ्जनमपि तदमवतत्वात् तदादिवद् भवति ।

'यदि पूर्वापरी भागो न स्यातामेकवर्णको' इत्यन्तादिवद्भावे विधावपि सम्बन्धते । तेन—

अस्या वक्त्राब्जमवजितपूर्णेन्दुशोभ विभाति ।

इत्येवाविधा यति[नं]भवति । यथा वा स्वरः सन्धौ—

राकाचन्द्रादधिकमबलावक्त्रचन्द्र विभाति ।

तथा शेषेऽपि, यथा—

रामातरुणिमोहामानङ्गरङ्गप्रसङ्गिनी ।

इत्यादि^३ उन्नेयम् । 'यथादेश परादिवत्' भवतीति शेष । यथा—

विततजलतुपारास्वादुशुभ्राशुपूर्णा-

स्वविरलपदमाला इयामलामुल्लिखन्तः ।

इत्यादि ।

'नित्यं प्राषपदसम्बन्धाद्वाद्यः प्राक्पदान्तवत् ।' तेभ्य पूर्वा यतिनं कर्त्तव्या इत्यर्थे ।

यथा

स्वादु स्वच्छ सलिलमपि च प्रीतये कस्य न स्यात् ।

इत्यादि ।

नित्य प्रादपदसम्बन्धा इति किम् ? अग्रेषां पूर्वपदान्तवद्भावो माऽभूत् । तद्यथा—
मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्या ।

इत्यादि ।

'परेण नित्यसम्बन्ध प्रादपश्च परादिषत् ।' तेभ्यः परा यतिर्न भवतीत्यर्थं । तद्यथा—
दुःख मे प्रक्षिपति हृदये दुस्सहस्तद्वियोग ।

इत्यादि ।

'परेण नित्यसम्बन्धा' इत्यादि किम् ? कर्मप्रवचनीयसज्ञकेभ्य प्रादिभ्य परापि यतिर्यथा स्यादिति । तच्च यथा—

प्रिय प्रति स्फुरत्पादे मन्दायन्ते न खल्विति ।
श्रेयासि बहुविघ्नानि भवन्ति महतामपि ।

इत्यादि ।

अथ तु चादीनां प्रादीनां चैकाक्षराणामनेकाक्षराणां वा पादोते यतावादिबद्भाव इष्यते, न तु अनेकाक्षराणां पादमध्ये यती । तत्र हि पदमध्येपि च चामीकरादिधिव यतैरभ्यनुज्ञा-
तत्वात् । तत्र चादीनां यथा—

प्रत्यादेशादपि च मधुनो विस्मृतभ्रूविलासम् ।

इत्यादि ।

प्रादीनामपि, यथा—

दूरारूढ प्रमोद हसितमिव तथा दृष्टभारात् सखीभि ।

इत्यादि ।

एव माधुर्यसपत्तिनिमित्त यतिवन्धनम्^१ ।

न विना यतिसौन्दर्ये काव्य भव्यतर भवेत् ॥ ८ ॥

भरतादिमुनीन्द्रैरप्येवमेवाभिधीयते ।

तथाऽन्येपि कवीन्द्रास्तु यति बध्नन्त्यनुत्तमाम् ॥ ९ ॥

अन्यैरप्युक्तम्—

एव यथा यथोद्वेग सुधिया नोपजायते ।

तथा तथा मधुरतानिमित्त यतिरिष्यते ॥ १० ॥

इति । किञ्च—

पिङ्गले जयदेवश्च सस्कृते यतिमिच्छतः ।

श्वेतमाण्डव्य^२मुख्यैस्तु मुनिभिर्नानुमन्यते ॥ ११ ॥

तेन सस्कृते यतिरक्षार्या गुण । यतिभङ्गेन दोषोऽपीति तेषामाशय ।

अतएव मुरारिः*—

याञ्ज्वादित्यपराञ्चि यस्य कलहायन्ते मियस्त्व वृणु,
त्व वृण्वित्यभितो मुखानि स दशग्रीव. कथ वण्यताम् ॥

इत्यादि ।

जयदेवोऽपि**—

भाव शृङ्गारसारस्वतमयजयदेवस्य विष्वग् वचांसि ।

इति । एवमन्येऽपि—

कोष्ठोऽकृत्य जगद्धन कति वराटोभिर्मुद यास्यति ।

इत्यादि, महाकवीनां श्वरसाविति दिक् । अपि च—

*यतिभङ्गो नामघातुभागभेदे भवेद् यथा ।

पुनातु नरकारिश्चक्रभूषितकराम्बुज ॥ १२ ॥

दिविपद्वृन्दवन्द्य वन्दे गोविन्दपदद्वयम् ।

स्वरसन्धौ तु न श्रीशोऽस्तु भूत्यै भवतो यथा ॥ १३ ॥

न स्याद्विभक्तिभेदे भात्येष राजेति कुत्रचित् ।

ववचित्तु स्याद् यथा देवाय नमश्चन्द्रमौलये ॥ १४ ॥

चादयो न प्रयोक्तव्या विच्छेदात् परतो यथा ।

नम कृष्णाय देवाय च दानवविनाशिने ॥ १५ ॥

*टिप्पणी—१ 'सतुष्टे तिसृणा पुरामपि रिपो कण्ठूलदोमण्डली-

श्रीडाकृतपुन प्ररुद्धशिरसो वीरस्य लिप्सोर्वरम् ।

याञ्ज्वादित्यपराञ्चि यस्य कलहायन्ते मियस्त्व वृणु,

त्वा वृण्वित्यभितो मुखानि स दशग्रीव. कथ वण्यताम् ॥

[मुरारिकृत मनधंराधवम् अक-३, प० ४१]

२ 'साव्वी भाव्वीकचिन्ता न भवति भवत दाकंरे कर्कसाधि,

द्रासे द्रदयन्ति के स्वाममृतमृतमसि क्षीरनीर रसस्ते ।

माक्रन्द क्रन्द कान्ताधर धर न तुलो गच्छ यच्छन्ति भाव,

यावच्छृङ्गारसार शुभमिव जयदेवस्य चैदग्यवाच ॥

[जयदेवकृत-गीतगोविन्द-स० १२, प० १२]

३ देवेश्वरकृत-कविकल्पलताया शब्दस्तवकच्छ-दोऽभ्यासप्रकरणे ।

एकस्वरोपसर्गेण विच्छेदः श्रुतिसौख्यहृत्^१ ।

यथा पिनाकपाणिं प्रणमामि स्मरशाशनम् ॥ १६ ॥

इत्यादि, कविकल्पलतायां वाग्भटनन्दनेन देवेश्वरेणाभ्यधायि ।

छन्दोमञ्जरी^१ 'तु-

यतिजिह्वेष्टविश्रामस्थान कविभिरुच्यते ।

सा विच्छेदविरामाद्यैः पदैर्वाच्या निजेच्छया ॥ १७ ॥

इति सामान्यलक्षणमुक्तम् । किञ्च—

क्वचिच्छन्दस्यास्ते यतिरभिहिता पूर्वकृतिभिः,

पदान्ते सा शोभां व्रजति पदमध्ये त्यजति च ।

पुनस्तत्रैवासी स्वरविहितसन्धिः श्रयति तां,

यथा कृष्णः पुष्पात्वतुलमहिमा मां करुणया ॥ १८ ॥

इति छन्दोगोविन्दे^२ गङ्गादासेनाप्युक्तमित्युपरम्यते । इति सर्वमङ्गलम् ।

इति श्रीवृहामोक्तके वार्तिके द्वितीयपरिच्छेदे

यतिनिरूपण-प्रकरण सप्तमम् ।

१. क. ख. सौख्यहृत् ।

*टिप्पणी—१. छन्दोमञ्जरी, प्रथमस्तवक, प० १२, १३ ।

२. 'गोविन्दे' इत्यस्य स्थाने 'मञ्जरी' इति पाठ एव समीचीनोऽस्ति गङ्गादास-
कतंत्वात् ।

अष्टमं गद्यनिरूपणम्—प्रकरणम्

अथ गद्यानि

वाङ्मय द्विविधं प्रोक्तं पद्यं गद्यमिति नृमात् ।
तत्र पद्यं पुरा प्रोक्तं गद्यं सम्प्रति गद्यते ॥ १ ॥
असवर्णं सवर्णं च गद्यं तत्रासवर्णकम् ।
त्रिविधं कथितं तच्च कवीन्द्रैर्गद्यवेदिभिः ॥ २ ॥
चूर्णकोत्कलिकाप्रायवृत्तगन्धिप्रभेदतः ।

तत्र—

अकठोराक्षरं स्वल्पसमासं चूर्णकं विदुः ॥ ३ ॥
तद्धि वेदभंरीतिस्थं गद्यं हृद्यतरं भवेत् ।
आविद्धं ललितं मुग्धमिति तच्चूर्णकं त्रिधा ॥ ४ ॥

तत्र—

दीर्घवृत्ति-कठोरार्णमाविद्धं परिकीर्तितम् ।
स्वल्पवृत्तं कठोरार्णं ललितं कीर्त्यते बुधैः ॥ ५ ॥
मुग्धं मृदुक्षरं प्रोक्तमवृत्त्यल्पवृत्तिं वा ।
भवेदुत्कलिकाप्रायं दीर्घवृत्त्युत्कटाक्षरम् ॥ ६ ॥
वृत्त्यक^१देशसम्बद्धं वृत्तगन्धिं पुनः स्मृतम् ।
अथान् प्रमतश्चैपामुदाहरणमुच्यते ॥ ७ ॥

तत्र प्रथमं यथा—

१ शुद्धचूर्णकम्

स हि खलु त्रयाणामेव जगतां गतिं परमपुरुषं पुरुषोत्तमो दृप्तसमस्तदैत्य-
दानवभरेण भङ्गुराङ्गीमिमामवनिमवलोक्य कुरुणरसामृतपरिपूर्णाद्रिहृदयस्तथा
भुवो भारं अवतारयितुं रामकृष्णस्वरूपेण यदुकुलेज्वततार । यं प्रसङ्गनापि स्मृतो-
ऽभ्यर्चितं प्रणता वा गृहीतनामा पुंससंसारसागरपारमवलोकयति ।

इति शुद्धचूर्णकम् १

१[१] अथ आविद्धं चूर्णकम्

यथा—

दलदलिं सहकारमञ्जरीविगलंभकरन्दविन्दुसन्दोहसन्दानितमन्दानिलवीज्य-
मानदशदिशाभोगमुरभिसमयं समुपाजगाम । इत्यादि ।

इति आविद्धं चूर्णकम् १[१]

१ ल वृत्तकदेश । २ ल दरवलित ।

१[२]. अथ सलित चूर्णकम्

यथा-

सदाभिराम नाभिजितकाम रामणोयकधाम माधुर्यसौन्दर्यशौर्यादिगुणग्रामाभिराम भक्तजनपरिपूरितकाम सकललोकविश्रामधाम वामदेवाभिनन्द्यपौरुष राम जय जय ।

इत्यादि ।

इति सलित चूर्णकम् १[२]

मुग्धमपि द्विविधम् । अवृत्ति-अत्यल्पवृत्ति चेति । तत्र—

१[३]. अवृत्तिमुग्ध चूर्णकम्

यथा-

यत्र च नायिकाना नयनेः कमलमयमिव, वदनैः परिपूर्णचन्द्रमण्डलमयमिव, हस्तैः मृणालमयमिव, जघनेः^१ कदलीस्तम्भमयमिव विराजित भवनकुलम् ।

इत्यादि ।

इत्यवृत्तिमुग्ध चूर्णकम् १[३].

१[४]. अथ अत्यल्पवृत्तिमुग्ध चूर्णकम्

यथा-

कमलमिव चन्द्रविम्बमिव मुखं, मृणालमिव कामपाशमिव भुजयुगलं, मीनवृन्दमिव खञ्जरीटयुगमिव नीलोत्पलमिव एणनयनमिव नयनयुगलं, कोकयुग्ममिव सिन्दूरसमूहकमिव पुष्पगुच्छमिव कनककलशयुगलमिव वक्षोजयुगलम् ।

इत्यादि ।

इत्यल्पवृत्तिमुग्ध चूर्णकमिवम् १[४].

२. अथोत्कलिकाप्रायम्

यथा-

सङ्ग्रामसीमकण्डूलदोर्दण्डकुण्डलितकोदण्ड^२निर्गलितकाण्डप्रचण्डाघातखण्डिता रातिवृन्दनरपतिसीमन्तिनीनयनारविन्दाविरलविगलदम्बुनिकरकीर्णसप्तार्णवान्तर्भ्रं मत्कमनीयकीर्त्तिहस , त्रिजगत्कामिनीकर्णवितसानन्तसामन्तसन्तानशिरोमुकुटरत्नरागद्विगुणिताघ्निनखमयूखानवरतकलघोतदानसम्मानसन्तोषिताशेषयाचकचयविकर्णवाक्पीयूषप्रयाणकालकोलाहलसमुच्छ्रल^३त्पाथोधिपाथ प्लाविताशेषभुवनमण्डल , भयङ्करभेरीभाङ्गारसम्मर्द्दसभ्रान्तखण्डलातिचपलचलच्चारुचतुरचतुरङ्गचमूचक्रचक्रमगरभङ्गुरितफणिपतिफणानिकायविश्वविख्यातनिजान्ववायप्रखरतरतुरगखुरपुटोद्भूतधूलौघारान्धकाराकुलितचक्राङ्गनासमूहनीतिनिरस्तसमस्तप्रत्यूहब्यूहप्रतिनृपतिविलासिनीताटङ्कापसारणसावधानचतुर्दशविद्या -

निधानदानपथातीतमुरद्रुमकथासमारम्भरम्भादिविपनारीगणोद्गीयमानकमनीय -
कीर्त्तिभरभरणीयजनप्रवृद्धकृपापारावारवारणेन्द्रसमानसारसादितारातिथुवतिवचो-
वर्णदत्तकर्णकर्णवलिदीयमानोपमानमानवतीमानापमानोदनविशारदशारदेन्दुकुला-
वदातकीर्त्तिप्रीणिताशेषजनहृदयानुरूपसमरसीमव्यापादितारातिवर्गचक्रवर्त्तिमहा -
महोग्रप्रतापमार्तण्डसमरविजयी महाराजाधिराज. समाज्ञापयत्यशेषसामन्तगणान् ।
इत्यादि ।

यथा वा -

प्रणिपातप्रवर्णप्रधानाशेषसुरासुरादिवृन्दसौन्दर्यप्रकटकिरीटकोटिनिविष्टस्पष्ट-
भणिमयूखचन्द्राच्युरितचरणनखचक्रविनमोहामवामपादाङ्गुलनखरशिक्षरखण्डित-
ब्रह्माण्डभाण्डविवरनिस्सरत्क्षरदमृतकरप्रकरभास्वरसुरवाहिनीप्रवाहपवित्रीवृत्त -
विष्टपत्रयकैटभारे क्रूरतरससारापारसागरनानाप्रकारावर्त्तविवर्त्तमानविग्रहं मामगु-
गृहाण । इत्यादि ।

इत्युत्कलिकाप्राय गद्यम् २.

३. अथ वृत्तगन्धि गद्यम् ।

यथा-

समरकण्डूलनिविडभुजदण्डमण्डलीकृतकोदण्डसिञ्जनीटङ्कारोजजागरितवैस्ति-
नागरजनसस्तुतानेकविस्दावलीविराजमानमानोन्नतमहाराजाधिराज जय जय ।
इत्यादि ।

यथा वा, मालतीमाधवे^{१*}—

गतोऽहमवसोकिताललितकौतुक^१ कामदेवायतनम् । इत्यादि ।

यथा वा, कादम्बर्याम्—

पातालतालुतलवासिपु दानवेपु । इत्यादि ।

हरद्रवजितमन्मयो गुहृ इवाप्रतिहतशवितः । इत्यादि ।

यथा वा—

जय जय जनार्दन सुकृतिजनमनन्तज्ञागविकस्वरचरणपद्म पद्मनयन पद्मिनी-
विनोदराजहंसभास्वरयश.पटलपूरितभुवनकृहर हरकमलासनादिवृन्दारक्षवृन्दवन्द-
नीयपादारविन्द द्वन्द्वनिर्मुक्त^१योगीन्द्रहृदयमन्दिराविष्टतनिरञ्जनज्योति स्वरूप
नीरूप विश्वरूप स्वनाथनाथ जगन्नाथ मामनवधिदु खव्याकुल रक्ष रक्ष ।

इति वृत्तगन्धिगद्यम् ३

१. क. जानतकौतुकः । २. ख. द्वन्द्व द्वन्द्वनिर्मुक्त ।

*टिप्पणी—१ मालतीमाधवम्, प्रथमाङ्के विंशतिपद्यान्तर गद्यभागः ।

ग्रन्थान्तरे तु प्रकारान्तरेण चतुर्विधमेव गद्यं तल्लक्षणमुपलक्षितं विचक्षणैः ।

यथा—

वृत्तवन्धोज्जित गद्यं मुक्तकं वृत्तगन्धि च ।
भवेदुत्कलिकाप्रायं कुलकं च चतुर्विधम् ॥ ८ ॥

सत्र—

आद्यं समासरहित वृत्तभागयुतं परम् ।
अन्य दीर्घसमासाढ्यं तुर्यं चाल्पसमासकम् ॥ ९ ॥

तत्र मुक्तकं, यथा—

गुरुर्वचसि^१ पृथुररसि । इत्यादि ।

वृत्तगन्धि—'समरकण्डूल' इत्यादिर्नवोदाहृतम् ।

उत्कलिकाप्राये तु—व्यपगतघनपटलममलजलनिधिसदृशमम्बरतलं विलोचयते अञ्जन-
चूर्णपुञ्जश्यामल शार्वरं तमस्त्यायत । इत्यादि ।

यथा वा, प्राकृते चापि—

अणिसविमुमरणि^२ सिदसरविदलिदसमरपरिगदपवरपरबलहणिदमअगलहल-
हल्लिदसअलजलणिहिसरिससमत्तुसमूहसखुहिअवैरिणअरणाअरीणिदह जअ महाराअ
चक्कवट्टि करुणाअरा । इत्यादि ।

कुलकम्, यथा—

गुणरत्नसागर जगदेकनागर कामिनीमदनजनचित्तरञ्जन करुणापरायणनारा-
यणचरणस्मरणसमासादितपुरुषार्थचतुष्टयप्रार्थनीयगुणगण शरणागतरक्षणविच-
क्षण जय जय । इत्यादि ।

इति श्रीकविकेशरचन्द्रशेखरविरचिते श्रीवृत्तमोक्तिके वातिके
गद्यनिरूपणमष्टम प्रकरणम् ॥८॥

नवमं विरुदावली-प्रकरणम्

[प्रथमं कलिकाप्रकरणम्]

अथ विरुदावली

अथाऽथ विरुदावल्याः सोदाहरणमुच्यते ।
लक्षणं लक्षितारोप-विशेषपरिकल्पनम् ॥ १ ॥

तत्र-

यद्य-यद्यमयी राजस्तुतिविरुदमुच्यते ।
तदावली समाख्याता कविभिविरुदावली ॥ २ ॥

किञ्च-

कलिकाभिस्तु कलिता विरुदावलिका मता ।
सवर्णा कलिका प्रोक्ता विरुदावल्या मनोहरा ॥ ३ ॥

तत्र च

द्वादशार्द्धकलाः कार्याः चतुःषष्टिकलावधि ।
तद्भेदाश्चात्र कथ्यन्ते लक्ष्यलक्षणसंयुताः ॥ ४ ॥
द्विगा रादिश्च मादिश्च नादिर्गलादिरेव च ।
मिश्रा मध्या द्विमञ्जी च त्रिमञ्जी कलिका नव ॥ ५ ॥

तत्र-

१. द्विगाकलिका

चतुर्भिस्तुरगैः निर्जद्विगा मैत्री हयद्वये ।

यथा-

जय जय वीर ! क्षितिपति हीर !

इत्यादि । एष चरणचतुष्टयं बोद्धव्यमत्र । प्रथमविस्तरभवादस्मिन् प्रकरणे तृषंत्र पादमात्र-
पुराहियते ।

इति द्विगाकलिका १.

२. अथ रादिकलिका

वेदैः पञ्चकलैः कार्या मैत्र्यर्द्धे रादिका कला ॥ ६ ॥

यथा -

कामिनीकलितमुख यामिनीरमणमुख ।

इत्यादि ।

इति रादिकलिका २.

३. अथ मादिकलिका

अष्टभिः पट्कलैर्मादिर्मध्यर्द्धे विरतिमंता ।

यथा-

भूमीभानो प्रभवसि भुवने बहलारम्भः
सत्तदा नोघता बहुमानोज्वलतरदम्भः ।

इत्यादि ।

इति मादिकलिका ३.

४. अथ नादिकलिका

सानुप्रासस्तु नो नादिः—

यथा-

दलितशकट कलितलकुट
ललितमुकुट रचितकपट ।

इत्यादि ।

इति नादिकलिका ४.

५. अथ गलादिकलिका

—गाद्या गलादिरुच्यते ॥ ७ ॥

यथा-

वीरवर हीररद
चीरहर तीरचर ।

इत्यादि

इति गलादिकलिका ५.

६. अथ मिश्राकलिका

तिस्रस्तन्दुलवन्मिश्राः—

गलयोस्तिस्रस्तन्दुलवद्विग्यासो मिश्राः । यथा-

क्षीरनीरविवेकधीर सङ्गरवीर
गोपिकाचीरहर हरे जय जय ।

इति मिश्राकलिका ६.

७. अथ मध्याकलिका

—मध्या कलिकयोर्यदि ।

मध्ये गद्यं कलावापि गद्ययो रसपद्ययोः^१ ॥ ८ ॥

[श्या०] अस्यायं—मध्याकलिका तावत् द्विभेदा, तथा खादावन्ते च कलिका तयोः कलिकयोर्मध्ये यदि गद्यं भवतीत्येको भेदः । १। तथा असवर्णयोर्मैत्रीरहितयोगंक्षयोर्मध्ये वा कला-कलिका भवतीत्यपरो भेदः । २। इत्येवं द्विभेदा मध्याकलिका भवति । उह्यमुदाहरणम् ।

इति मध्याकलिका ७.

८. अथ द्विभङ्गी कलिका

द्वितुर्यो मधुरदिलिष्टी यद्ग्या लान्ताश्चतुर्गुः ।

अत्र भङ्गात्तयोर्मैत्री पद्भङ्गा स्यात् द्विभङ्गिका ॥ ९ ॥

यथा—

रङ्गरक्त सङ्गसक्त
घण्टचक्र दण्डशक्र
चन्द्रमुद्र सान्द्रभद्र
विष्णो जिष्णो !

इत्यादि ।

इति द्विभङ्गी कलिका ८.

९. अथ त्रिभङ्गी कलिका

तत्र—

त्रिभिर्भङ्गैस्त्रिभङ्गी स्यान्नवधा सा तु कथ्यते ।

विदग्ध-तुरगी पद्य-हरिणप्सुत-नर्तका ॥ १० ॥

भुजग-त्रिगते सार्द्धं वरतन्या द्विपादिका ।

युग्माणंभङ्गी श्यावृत्ती तनो भो मित्रिती ततः ॥ ११ ॥

तत्र—

९[१] विदग्ध-त्रिभङ्गी कलिका

विदग्धे—

यथा—

सदीपितशर-मन्दीवृतपर-नन्दीश्वरपद-भावन-पावन ।

इत्यादि ।

इति विदग्धत्रिभङ्गी कलिका ९ [१].

९[२] अथ तुरगत्रिभङ्गी कलिका

—तुरगे तद्वत् तमला. शेषगो गुरु. ।

३ अथ मादिकलिका

अष्टभि पट्कलेर्मादिर्मध्यर्द्धे विरतिर्मता ।

यथा-

भूमीभानो प्रभवसि भुवने बहलारम्भ-
सत्तदा नोघ्रता बहुमानोज्वलतरदम्भ ।

इत्यादि ।

इति मादिकलिका ३.

४ अथ नादिकलिका

सानुप्रासस्तु नो नादि —

यथा-

दलितशकट कलितलकुट
ललितमुकुट रचितकपट ।

इत्यादि ।

इति नादिकलिका ४

५ अथ गलादिकलिका

—गाद्या गलादिरुच्यते ॥ ७ ॥

यथा-

वीरवर हीररद
चीरहर तीरचर ।

इत्यादि

इति गलादिकलिका ५.

६ अथ मिश्राकलिका

तिसतन्दुलवन्मिश्रा.—

गमयोस्त्रिसतन्दुलवद्विग्यासो मिश्रा । यथा-

क्षीरनीरविवेकधीर सङ्घोरवीर
गोपिकाचीरहर हरे जय जय ।

इति मिश्राकलिका ६

७ अथ मध्याकलिका

—मध्या कलिकयोर् यदि ।

मध्ये गद्य कलावापि गद्ययो रसपद्ययोः^१ ॥ ८ ॥

[ध्या०] अस्यार्थ—मध्याकलिका तावत् द्विभेदा, तथा सादावन्ते च कलिना तयोः कलिकयोर्मध्ये यदि गद्य भवतीत्येको भेदः । १। तथा असवर्णयोर्मैत्रीरहितयोर्मध्योर्मध्ये वा कला-कलिका भवतीत्यपरो भेदः । २। इत्येव द्विभेदा मध्याकलिका भवति । उह्यमुदाहरणम् ।

इति मध्याकलिका ७

८ अथ द्विभङ्गी कलिका

द्वितुयीं मधुरदिलिप्यौ पङ्गा लान्ताश्चतुर्गुंरु ।

अत्र भङ्गात्तयोर्मैत्री पङ्भङ्गा स्यात् द्विभङ्गिका ॥ ९ ॥

यथा—

रङ्गरक्त सङ्गसक्त
चण्डचक्र दण्डशक्र
चन्द्रमुद्र सान्द्रभद्र
विष्णो जिष्णो ।

इत्यादि ।

इति द्विभङ्गी कलिका ८

९, अथ त्रिभङ्गी कलिका

तत्र—

त्रिभिर्भङ्गैस्त्रिभङ्गी स्यान्नवधा सा तु कथ्यते ।
विदग्ध-तुरगी पद्य हरिणप्लुत नर्तका ॥ १० ॥
भुजग-त्रिगते सार्द्धं वरतन्वा द्विपादिका ।
युष्माणभङ्गी न्यावृत्तो तनी भो मित्रिती तत ॥ ११ ॥

तत्र—

९[१] विदग्ध-त्रिभङ्गी कलिका

विदग्धे—

यथा—

सदीपितशर मन्दीवृत्तपर-नन्दीश्वरपद भावन-पावन ।

इत्यादि ।

इति विदग्धत्रिभङ्गी कलिका ९ [१].

९[२] अथ तुरगत्रिभङ्गी कलिका

—तुरगे तद्वत् तभला शेषगो गुरु ।

यथा-

चण्डीपतिप्रवण-पण्डीकृतप्रबल-खण्डीकृताहितविभो ।

इत्यादि ।

इति तुरगत्रिभङ्गी कलिका ६[२].

६[३]. अथ पद्यत्रिभङ्गी कलिका

त्रिभङ्गीभिः पदं: पद्यत्रिभङ्गी—

यथा-पद्मावतीत्रिभङ्गीदण्डकलादयोऽत्र स्पष्टाः पूर्वखण्डे समुदाहृतास्तास्त एव द्रष्टव्याः ।*

इति पद्यत्रिभङ्गी कलिका [६]३.

६[४]. अथ हरिणप्लुतत्रिभङ्गी कलिका

—हरिणप्लुते ॥ १२ ॥

पठभङ्गा त्रिरावृत्ता नयमा^१मिश्रितौ च भौ ।

यथा-

अतिनत-देवाराधित बहुविधसेवासाधित

सुरतररेवासि प्रिय-दायक आयक !

इत्यादि ।

इति हरिणप्लुतत्रिभङ्गी कलिका ६[४].

६[५]. अथ नर्तकत्रिभङ्गी कलिका

हरिणो नजलान्तश्चेन्नर्तकः—

[ध्या०] हरिणप्लुत एव नयमान्तरं यदि नगण-जगण-लघ्वन्तो भवेत् तदा नर्तकी भवतीति शेषः । यथा-

मनसिजरूपाराधित बहुबलभूपाद्याधित

बहुतरयूपासञ्जक निजकुलरञ्जक ।

इत्यादि ।

इति नर्तकत्रिभङ्गी कलिका ६[५].

६[६]. अथ भुजङ्गत्रिभङ्गी कलिका

—भुजगे पुनः ॥ १३ ॥

व्यावृत्ता मभला लान्ता युग्मे तुर्ये च भङ्गिनः ।

क्वचित्तुर्ये न भङ्गः स्यान् मिश्रितौ भगणौ ततः ॥ १४ ॥

१. क. नयना ।

*१टिप्पणी—३१, ३७, ४२, पृष्ठे द्रष्टव्याः ।

यथा-

दम्भारम्भामितवल जम्भालम्भाधिकवल
जम्भासम्भावितरण-मण्डित पण्डित ।

पञ्चिक्तुर्णे न भङ्गः, इति समुदाह्रियते । यथा-

जम्भारातिप्रतियल-दम्भावाधानतदल
सम्भारासादनचण-दारणकारण ।

इति भुजगत्रिभङ्गी कलिका ६[६].

६[७]. अथ त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका

तृतीये वृत्तभङ्गा त्रिमंनना भौ च वल्लिगता ।

व्यावृत्तास्तनभा भोऽन्ते ललितात्रिगता द्वये ॥ १५ ॥

[६ १०] अस्यार्थः— त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका साधद् द्विविधा, यत्र मननाः—मगण-नगण-नगणाश्च यो गणास्त्रिधारत्रयं भवन्ति, अन्ते भो—भगणद्वयं, तृतीये च वर्णे भङ्गः सा वल्लिगता-भिधाना त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका । यस्यां च व्यावृत्तास्तनभाः—तगण-नगण-भगणाश्च यो गणा भवन्ति, एतस्यान्ते भो—भगण एक एव भवति । परन्तु द्वये—द्वितीये वर्णे भङ्गः सा ललिता-भिधाना त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका इति द्वैविध्यम् । अनेन यथा—

६[७-१]. अथ वल्लिगता त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका

वाणाली-हृत्तरिपुगण तालाली-तत-शरवण

मालाली-वृत्ततनुवर-दायक नायक !

इत्यादि ।

इति वल्लिगताभिधाना त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका

[६[७-२]. अथ ललिताभिधाना त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका

नाकाधिपसमनायक पाकाधिकसुखदायक

राकाधिपमुखसायक सुन्दर !

इति ललिताभिधाना त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका

एव त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका द्विविधोदाहृता ६[७] *]

६[८]. अथ वरतनुत्रिभङ्गी कलिका

पृष्ठभङ्गा वरतनुश्चावृत्ता नयना लघु ।

भौ च—

यथा—

अविकलताराधिपमुख अधिगतनारायणमुख

बहुविधपारायणपर पण्डित मण्डित !

इत्यादि । किञ्च-

—भङ्गान्तसंयुक्ता छविरेपैव कथ्यते ॥ १६ ॥

यथा-

चतुरिमचञ्चद्गुणगण विवलदुदञ्चद्रणचण
मधुरिमचन्द्रस्तवकित कुङ्कुमभूपित ।

इत्यादि ।

इति द्विपदा धरतनुत्रिभङ्गी कलिका ६[८].

६[९]. अथ द्विपादिका युग्मभङ्गा कलिका

द्विपादिका च कलिका षड्विधा परिकीर्तिता ।

द्वचावृत्ता सा तु विज्ञेया छन्दःशास्त्रविशारदैः ॥ १७ ॥

तत्र-

मुग्धा प्रगल्भा मध्या च शिथिला मधुरा तथा ।
तरुणी चेत्यमो भेदा द्विपदाया उदीरिताः ॥ १८ ॥

तत्र-

६[९-१]. मुग्धा द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका

मतला मतलाश्चैव युग्मभङ्गा भयुग्मकम् ।

मुग्धा स्यात्—

यथा-

दण्डादेशाकम्पित चण्डाघीशालम्बित
वन्दन नन्दन !

इत्यादि ।

इति मुग्धा द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका ६[९-१].

६[९-२]. अथ प्रगल्भा द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका

—भद्वये कर्णौ चेत् प्रगल्भा तदा मता ॥ १९ ॥

[व्या०] भद्वये- भगणद्वयस्थाने आदेशरूपेण चेत् कर्णौ भवतस्तदा मुग्धैव प्रगल्भा मता इत्यर्थः । यथा-

देवाघीशाराधक सेवादेशासाधक
भूमीभानो

इत्यादि ।

इति प्रगल्भा-द्विपादिका-द्विभङ्गी कलिका ६[९-२].

६[६-३]. अथ मध्या द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका

उक्ता मभी समी मध्या भी नली वा भनी जली ।

ननसा लद्वय वापि शोषे वा नजना लघू ॥ २० ॥

[ध्या०] मध्यायं — मध्यायस्तत्रावत् चत्वारो भेदा लक्ष्यन्ते । यथा—मभी—मगण-भगणी, अथ च समी—सगण-मगणी, ततो भी—भगणद्वयं यत्र भवति, एतादृशी मध्या उच्यता—कथिता इत्यर्थे । इति प्रथमो भेदः ।

यथा—

नित्यं नृत्यं कलयति काली केलीमञ्चति चञ्चति ।

इत्यादि ।

इति मध्यायाः प्रथमो भेदः । १।

अथ मध्याया द्वितीयो भेदः

[ध्या०] 'नली वा भनी जली' इति । यत्र नली—नगणलघू, अथ च भनी—भगणनगणी, ततश्च जली—जगणलघू भवत । इति द्वितीयो भेदः ।

यथा—

रणभुवि मञ्चति रणभुवि चञ्चति ।

इत्यादि ।

इति मध्याया द्वितीयो भेदः । २।

अथ मध्याया तृतीयो भेदः

[ध्या०] 'ननसा लद्वय वापि' इति । ननसा—नगण-नगण सगणा, अथ च लघुद्वयं भवति यत्र स तृतीयो भेदः । यथा—

अतिशयमधिरणमञ्चति ।

इत्यादि ।

इति मध्याया तृतीयो भेदः । ३।

अथ मध्यायाश्चतुर्थो भेदः

[ध्या०] 'शोषे वा नजना लघू' इति । शोषे—चतुर्थे भेदे नजना—नगण-जगण-नगणा, अथ च लघू—लघुद्वयं यत्र भवति स चतुर्थो भेदः । यथा—

अतिशयमञ्चति रणभुवि ।

इत्यादि ।

इति मध्यायाश्चतुर्थो भेदः । ४।

एव मध्याया असकीर्णश्चत्वारो भेदाः सलक्षणाः समुदाहृत्य प्रदर्शिता ।

इति मध्या द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका ६[६-३].

६[६-४]. अथ शिथिला द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका

मुग्धाया भद्रये विप्रो यदि सा शिथिला मता ।

[व्या०] मुग्धाया-प्रथमोक्ताया भद्रये-भगणद्वयस्थाने आदेशन्यायेन यदि विप्र-
चतुर्लघ्वात्मको गणो भवति तदा सा शिथिला मता भवतीत्यर्थः ।

यथा-

केलीरङ्गारञ्जित-नारीसङ्गासञ्जित मनसिज ।

इत्यादि ।

इति शिथिला द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका ६[६-४].

६[६-५] अथ मधुरा द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका

द्विधावृत्ता ममला लान्ता भद्रयं मधुरा मता ॥ २१ ॥

[व्या०] अत्रत्य द्विधावृत्तत्वं पूर्वत्र सर्वत्र सबद्धम् । तथा च ममला-भगण-भगणलघवश्चेत्
द्विधावृत्ता सन्तो लान्ता-लघ्वन्ता भवन्ति । अथ च भद्रय-भगणद्वयं भवति तदा मधुरा मता-
सम्प्रता भवतीत्यर्थः । यथा-

तारादाराधिकमुख-पारावाराशयमुख-दायक नायक ।

इत्यादि ।

इति मधुरा द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका ६[६-५].

६[६-६] अथ तरुणी द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका

मधुरा भद्रये कर्णौ तरुणी समनन्तरम् ।

[व्या०] उक्ताया-मधुराया भगणभगणलान्ताया भद्रये-भगणद्वयस्थाने पूर्वोक्तन्यायेन
यदि कर्णौ भवतस्तदा तरुणी भवति ।

ताराहारानतमुख आरादारागतमुख-पाता-दाता ।

इत्यादि ।

इति तरुणी द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका ६[६-६].

इति द्विपादिका कलिका युग्मभङ्गिनो भेदा प्रोक्ता इति शेषः ।

इति विद्वायत्यामवान्तर-द्विभङ्गी-त्रिभङ्गी-कलिकाप्रकरण प्रथमम् ।

[विरुदावल्या द्वितीय चण्डवृत्त प्रकरणम्]

अथाभिधीयते चण्डवृत्त विरुदमुत्तमम् ।

शुद्धादिभेदसहित कलिका-कल्पनान्वितम् ॥ १ ॥

[ध्या०] धादिपदेन सकीर्णा गमितमिश्रिता गृह्यते ताश्च यथास्थानमुदाहरिष्याम ।
अथ महाकलिकारूप चण्डवृत्तम्, तच्च द्विविध-सलक्षण साधारणभेदेन ।

सत्र-

उत्कलक्षणसम्पूर्णं सलक्षणमुदीरितम् ।

अन्यत् साधारण प्रोक्त चण्डवृत्त द्विधा बुधे ॥ २ ॥

अथ परिभाषा

सत्र-

मधुर श्लिष्ट-सश्लिष्ट शिथिल ह्लादिभेदत ।

सयोगा पञ्चह्रस्वाच्च दीर्घाच्च दशधा मता ॥ ३ ॥

अनुस्वारविसर्गौ तु न दीर्घव्यवधायकौ ।

स्वस्ववर्गान्त्यस्युष्वा मधुरा इतरे पुन ॥ ४ ॥

श्लिष्टा सरेफशिरस सश्लिष्टास्त्वन्मयोगिन ।

यमात्रयुक्ता इत्युक्ता शिथिला ह्लादिनस्त्वमी ॥ ५ ॥

ह्रस्वरा साम्यमत्र नणयो खपयोस्तथा ।

जययोर्वध्वयोरह^१ सच्चयो^२ सशयोरपि ॥ ६ ॥

ह्यप्ययो^३ भ्वध्वयोश्चैव क्षच्छयोरित्सवर्णयो ।

शपयो त्सच्छयोश्चैव क्षययोरपि वणयो ॥ ७ ॥

श्लिष्टसश्लिष्टयोरुपतौ सत्राह्या मधुरेतरा ।

इत्येपा परिभाषाऽत्र रजते वृत्तमीकितके ॥ ८ ॥

इति परिभाषा

अथ चण्डवृत्तस्य महाकलिकारूपस्य स्थापकस्य ध्याप्यस्थापकभावेन पुरुषोत्तमादि-कुमु-
मा त चतुस्त्रिंशति ३४ प्रभेदा भवन्ति । तेषां चोद्देशकमोऽनुक्रमणिकाप्रकरणे स्फुटतर वक्ष्य-
माणत्वात्तद्दह प्रपञ्चयते ।

तत्र प्रथमम्-

१ पुरुषोत्तमश्चण्डवृत्तम्

एव सर्वत्र-

श्लिष्टो तुर्याष्टमी दीर्घो त्रि-पष्ठो सगणो च भ ।

पुरुषोत्तमश्चण्ड स्यात्—

[व्या०] अस्यार्थं—यत्र चतुर्थाष्टमी षणो श्लिष्टो-सरेफशिरस्को च, तृतीय पष्ठो च दीर्घो भवत । तत्र गणनियममाह—‘सगणो’ इति । सगणो भवत । ततश्च भ-भगणो भवति तत् पुरुषोत्तमाह्यं महाकलिकाह्य चण्डवृत्तं भवति । नवाक्षरमिदं वृत्तम् । अस्मिन् प्रकारे सर्वत्र विरामद्वयेभ्य भवतीत्युपदिश्यते । यथा-

दितिजार्द्धं जातप्रभ ।

इत्यादि ।

इति पुरुषोत्तमश्चण्डवृत्तम् १

२ अथ तिलक चण्डवृत्तम्

—सादो नो शेषगो च नो ॥ ९ ॥

मधुरो दशमो वर्णस्तिलकम्—

[व्या०] अस्यार्थं—यत्र सादो-सगणस्यादिभूतो नो-नगणो यत्र च सगणस्य शेषगो-शेषे च घत्तमानो नगणायेव भवत । मध्यभूतस्य सगणस्याद्यन्तयोर्नगणो भवत इति फलितोऽर्थः । किञ्च—दशमो वर्णो मधुर-स्ववर्गोऽत्यस्युक्त परसवर्णो भवति । तत्तिलक नाम चण्डवृत्तस्यावात्तरो भेद इति । पञ्चदशाक्षरमिदं पदम् । यथा-

विपमविशिखगणगञ्जितपरबल ।

इत्यादि । यथा या-

अमलकमलरुचिखण्डनपटुपद
नटनपटिमहूतकुण्डलिपतिमद
नवकुबलयकुलसुन्दररुचिभर
घनतडिदुपमितवन्धुरपटधर
तरणिदुहितुत्तमञ्जुलनटवर
नयननटनजितखञ्जनपरिकर
भुजतटगतहरिचन्दनपरिमल
पशुपयुवतिगणनन्दन वरकल
नवमदमधुरदृगञ्चलविलसित
मूखपरिमलभरसञ्चलदलिवृत

शरदुपमितशशिमण्डलवरमुख
 कनकमकरमयकुण्डलकृतमुख
 युवतिहृदयशुकपञ्जरनिभ(ज)भुज
 परिहितविचकिलमञ्जर (ञ्जुल) शिरसिज
 सुतनुवदनविकुचुम्बनपट्टतर
 दनुजनिविडमदडुम्बनरणखर
 धीर !

रणति हरे^१ तव वेणो नायों दनुजाश्च कम्पिता खिन्ना ।
 वनमनपेक्षितदयिता करवालान्प्रोक्ष्य धावन्ति ।

कुङ्कुमपुण्ड्रक गुम्फितपुण्ड्रक-
 सकुलकङ्कण कण्ठभरङ्गण
 देव ।

शारङ्गाक्षीलोचनभृङ्गावलिपानचारुभृङ्गार ।
 त्वा मङ्गलशृङ्गार शृङ्गाराधीश्वर स्तोमि ।

विरवमिद तिलकम् २.

३. अथ अच्युत चण्डवृत्तम्

—वाञ्छ्युत पुन ।

[ध्या०] अत्राय शब्दाद्यंश्चकार । तेन अच्युताख्य चण्डवृत्तमुच्यते इत्युक्तं भवति ।
 लक्षण गणनियमप्रवक्तव्यम्—

नयौ चेत् पञ्चमो दीर्घं पष्ठं श्लिष्टपरो नजौ ॥ १० ॥
 सर्वशेषे—

[ध्या०] अस्वार्थं — यत्र नयो-नगणयगणो चेद् भवत, किञ्च पञ्चमो षणो यत्र दीर्घो
 भवति, पष्ठो षणं श्लिष्टपर-श्लिष्ट पर स सप्तमो यस्य स सादृशो भवति । एव चत्वारो-
 ऽष्टौ वा पादा यथेष्ट भवन्ति । सर्वशेषे नजो-नगण जगणो भवत सोऽच्युताख्यचण्डवृत्तस्या-
 चात्तरो भेद इति । चतुर्विंशत्यक्षरमिदं पदम् । यथा—

प्रसरदुदार-श्रुतिभरतार-प्रगुणितहार-स्थिरपरिवार ।

इत्यादि । शेषेषु—

कृतरणरग । इत्यादि ।

यथा यथा—

जय जय धीर स्मररसधीर द्विजजितहीर प्रतिभटवीर
 स्फुरदुप(रु)हार-प्रियपरिवारच्छुरितविहार-स्थिरमणिहार

प्रकटितरास स्तवकितहास स्फुटपटवास-स्फुरितविलास
 ध्वनदालजाल-स्तुतयनमाल ब्रजकुलपाल प्रणयविशाल
 प्रविलसदस-भ्रमदवतस ववणदुखश-स्वनहृतहस
 प्रशमितदाव प्रणयिषु तावद्विलसितभाव स्तनितविराव
 स्तनघनरागश्रितपरभाग क्षतहरियाग त्वरितघृताग
 वृत्तरससग'
 वीर !

स्थितिनियतिमतीते धीरताहारिगीते,
 प्रियजनपरिवीते कुङ्कुमालोपपीते ।
 कलितनवकुटीरे काञ्च्युदञ्चकटीरे,
 स्फुर्तु रसगभीरे गोष्ठवीरे रतिर्न ॥
 अम्बाविनिहृतचुम्बामलतर-
 विम्बाधरमुखलम्बालक जय !
 देव !

दृष्ट्वा ते पदनखकोटिकान्तिपूर,
 पूर्णानामपि दाशिना शतैर्दुरापम् ।
 निर्विण्णो मुरहर मुक्तरूपदर्पः,
 कन्दर्पं स्फुटमशरीरतामयासीत् ॥
 इति अक्षुप्त चण्डवृत्तम् ३
 ४ अथ वद्धितञ्चण्डवृत्तम्
 —यदि श्लिष्टा, द्वि-नव-द्वादशा अपि ।

वद्धितो भनजा जोलः—

[व्या०] एतदुक्त भवति, यदि द्वि नव द्वादश अपि वर्णा श्लिष्टा—सरेफशिरस्काश्चेत्—
 स्पृस्तदा वद्धित इति नाम चण्डवृत्त भवतीति । तत्र च गणनियममाह—भनजा—भगण-
 नगणजगणा, अथ च जो-जगणा, ततो ल-लघुरित्यर्थ । प्रयोदशाक्षरमिदं पदं स्वेच्छया यत्र
 विनिवेशित भवति तद् वद्धिताख्य चण्डवृत्तम् । यथा—

दुर्जयपरवलगर्जनवर्जित ।

इत्यादि ।

यथा वा, श्रीगोविन्दविरुदाखल्याम्—

ब्रह्मा ब्रह्माण्डभाण्डे सरसिजनयन स्रष्टुमाक्रीडनानि,
 स्थाणुर्भक्तु च खेलाखुरलितमतिना तानि येन न्ययोजि ।

तादृक्कीडाण्डकोटीवृतजलकुडवा यस्य वैकुण्ठकुल्या,
कत्तंव्या तस्य का ते स्तुतिरिह कृतिभिः प्रोक्ष्य लीलायितानि ॥

अपि च-

निविडस्रत्तरापाडन्तरीणोष्मसंपद्^१-

विघटनपटुखेलाडम्बरोमिच्छटस्य ।

सगरिमगिरिराजच्छत्रदण्डायितश्री-

जंगदिदमघशत्रोः सव्यवाहू^२धिनीतु ॥

अभ्रमुपतिमदमार्द्विपदक्रम

विभ्रमपरिमललुप्तसुहृच्छ्रम

दुष्टदनुजदलदर्पविमर्दन

तुष्टहृदयमुरपक्षविवर्द्धन

दर्पकविलसितसर्गनिरगंल

सर्पतुलितभुजकर्णगकुण्डल^३

निर्मलमलयजचितविग्रह

नर्मलसितपरिवर्जितविग्रह^४

दुष्करकृतिभरलक्षणविस्मित-

पुष्करभवभयमर्दनसुस्मित

वत्सलहलघरतविकतलक्षण

वत्सरविरहितवत्ससुहृद्गण

गजितविजयिविशुद्धतरस्वर-

तजितखलगण दुर्जनमत्सर

धीर !

तव मुरलीध्वनिरमरीकामाम्बुधिवृद्धिशुभ्रागु ।

अचटुल्लगोकुलकुलजार्धैर्याम्बुधिपानकुम्भजो जयति ।

धृतगोवर्द्धन सुरभीवर्द्धन

पशुपालप्रिय रचितोपक्रिय

वीर !

भुजङ्गरिपुचन्द्रकस्फुरदखण्डचूडाङ्कुरे,

निरङ्कुशदृगञ्चलभ्रमिनिवद्धभूङ्गभ्रमे ।

१. गोवि. सम्पद् । २. गोवि. सत्यवाह । ३. गोवि. कुण्डल । ४. गोवि. नर्मल-
सितहृतसर्पविनिग्रह ।

पतङ्गदुहितुस्तटीवनकुटीरकेलिप्रिये,
परिस्फुरतु मे मुहुस्त्वयि मुकुन्द शुद्धा रतिः ।

इति विश्वमिदं वर्द्धितं ४.

५ अथ रणदचण्डवृत्तम्

—त्रि पञ्च-नव-सप्तमा ॥ ११ ॥

आदिरेकादशश्चैव श्लिष्टा जो रो जरौ लघु ।

सर्वशेषे रणाख्ये स्यात्—

[श्या०] इदमत्राकृतम् । यत्र त्रि-पञ्च-नव-सप्तमा वर्णा, आदिरेकादशश्चेति च पञ्चवर्णा श्लिष्टा भवन्ति । तत्र गलनियममाह—'जो रो जरौ लघु' जो-जगण रो-रणण भवतीति शेष । अथ च जरौ-जगणरणौ एव भवत, तत सर्वशेषे पदे चंको लघुर्भवति । तत् रणाख्य सविस्व महाकलिकारूपचण्डवृत्त भवति । द्वादशाक्षरमिदं पदम् । चतुर्दशाक्षर चान्य पदं भवति । विरामद्वयेषु एकैकस्याधिकस्य लघोर्दानादित्याद्य १ । पदविन्यासस्तु स्वेच्छया भवतीत्युपदेश । तथा चान्यपदे विरामद्वयेषु लघुदानाञ्जभक्ता-जगण-भगणी लघवो भवन्तीति वा २ । यथा—

प्रगल्भविक्रम प्रसप्पिसत्क्रम ।

इत्यादि ।

प्रपन्नवर्द्धनक प्रसन्नगर्द्धनक ।

इत्युत्तरम् ३ ।

एतस्य षाण्मत्र समग्र इति नामान्तरम् । तथोदाहृतमपि श्रीरूपस्वामिभि धीगोविन्द-विशुदावल्याम् । यथा—

अनिष्टखण्डन^४ स्वभक्तमण्डन

प्रयुक्तचन्दन प्रपन्नचन्दन

प्रसन्नचञ्चल स्फुरद्दृगञ्चल

श्रुतिप्रलम्बक-भ्रमत्कदम्बक

प्रविष्टकन्दरप्रकृष्टसुन्दर-

स्थविष्ठसुन्दरक-प्रसर्पेवन्धुरक^५

देव ।

वृन्दारकतरुवीते वृन्दावनमण्डले वीर ।

नन्दितवान्धववृन्द सुन्दरवृन्दारिका रमय ।

१ ख लघोर्दानादित्याद्य । २ ख च । ३ ख. इत्यन्तम् । ४. गोवि. अरिष्ट-खण्डन । ५. गोवि. क्षयिष्ठसिन्धुरप्रसर्पेवन्धुर ।

खलिनीहुम्बक मुरलीचुम्बक
जननीवन्दक - पशुपीनन्दक,
वीर ।

अनुदिनमनुरक्तः पद्मिनीचक्रवाले,
नवपरिमलमाद्यञ्चञ्चरीकानुकर्पी ।
कलितमधुरपद्मः कोऽपि गम्भीरवेदी,
जयति मिहिरकन्याकूलवन्याकरीन्द्रः ।
इति सविद्य सप्तप्रोवाहरणम् ।

इति रणश्चण्डवृत्तम् ५.

६. शय वीरश्चण्डवृत्तम्

—ममो नो वीरश्चण्डके ॥ १२ ॥

आद्यवर्णात्तु चत्वारो वर्णाः स्युर्मधुरेतराः ।

[ध्या०] अस्यार्थं — यत्र ममो-मगणभगणो, शय च नो-नगणो भवतः । किञ्च, आद्यवर्णात्-
प्रथमाक्षरात् चत्वारो वर्णाः मधुरेतरा - केवलं श्लिष्टा एवेत्यर्थः । तत् वीरश्चण्डकास्य चण्ड-
वृत्तं भवति । इदमपि द्वादशाक्षरमेव पदम् । अत्रापि पदविन्यासः पूर्ववदेव । बाहुल्येन द्वादश-
पदमिदं भवति, तथा दृष्टरवादिनि । यथा-

युद्धक्रुद्धप्रतिभटजयपर ।

इत्यादि ।

एतस्यैव अन्यत्र वीरभद्र इति नामान्तरम् । यथा-

उद्यद्विद्युद्युतिपरिचितपट
सर्पत्सर्पस्फुरदुरुभुजतट
स्वस्थस्वस्थत्रिदशयुवतिनुत
रक्षाक्षप्रियमुहृदनुसृत
मुग्धस्निग्धजजनकृतमुख
नद्यथ्रद्यस्वरविलसितमुख
हस्तन्मस्तस्फुटसरसिजवर
सज्जद्गज्जंतुत्पलवृपमदहर
युद्धक्रुद्धप्रतिभटलयकर
वर्णस्वर्णप्रतिमतिलकधर
रुप्यत्तुप्यद्युवतिपु कृतरस
भक्तव्यक्तप्रणय मनसि वस
वीर !

प्रचुरपरमहंसैः काममाचम्यमाने,
 प्रणतमकरचक्रैः शश्वदाक्रान्तकुक्षौ ।
 अघहर जगदण्डाहिण्डिहिन्दोलहासै,
 स्फुरतु तव गभीरे केलिसिन्धौ रतिर्नः ।
 उद्गीर्णतारुण्य विस्तीर्णकारुण्य
 गुञ्जालतापिञ्छपुञ्जाढ्यतापिञ्छ ।
 धोर !

उचितः पशुपत्यलंघ्रियायै नितरां नन्दितरोहिणीयशोदः ।
 तव गोकुलकेलिसिन्धुजन्मा जगदुद्दीपयति स्म कीर्तिचन्द्रः ।
 तविरुदं धोरभद्रोदाहरणमिदम् ।

इति धोरश्चण्डवृत्तम् । ६।

७. अथ शाकश्चण्डवृत्तम्

भौ रो लः पञ्चमः शिलष्टो दीर्घो नवम-सप्तमी ॥ १३ ॥
 द्वितीयो मधुरः शाके—

[व्या०] अथमर्थं.—शाके-शाकाख्ये चण्डवृत्ते प्रथम भौ-भगणो, अथ च रो-रणणः, ततो लो-लघुः । किञ्च-पञ्चमो षण् शिलष्टः-संयुक्तो भवति, नवमसप्तमी दीर्घो भवतः, द्वितीयो मधुरः-परसवर्णो षणो यत्र भवतीत्यर्थः । तत् शाकनामकं चण्डवृत्तं भवति । दशाक्षर पदं, विन्यासः पूर्ववत् । यथा—

सञ्चितचक्र-भुजाभिराम ।

इत्यादि ।

इति शाकश्चण्डवृत्तम् । ७ ।

८ अथ मातङ्गखेलित चण्डवृत्तम्

—ह्यथ मातङ्गखेलितम् ।

शिलष्टी वा मधुरी वाणदशमी रो यलो यदि ॥ १४ ॥

वाणे भङ्गश्च मंत्रो च प्रथमाष्टमपठकाः ।

तृतीयश्चात्र दीर्घा. स्यु —

[व्या०] इदमत्रानुसन्धेयम्—अथ मातङ्गखेलित-मातङ्गखेलिताभिधानं चण्डवृत्तं लक्ष्यत इति शेषः । अत्र चार्थं शाकारः । तथा च यत्र 'वाणदशमी' वाण-पञ्चम दशमश्चेति द्वौ षणो शिलष्टो मधुरो-परसवर्णो च भवतः । तथा रो-रणणो, अथ च यलो-यगणलघु यदि

भवतस्तथा वाणे-पञ्चमे भङ्गश्च-मंत्री च यदि भवति, तथा प्रपमाष्टमयष्टकाः वर्णा-
स्तृतीयश्च वर्णश्चेत्तवारोऽत्र वर्णा दीर्घाः स्पृस्तदा मातङ्गखेलिताभिधानं षण्डवृत्तं भवति ।
वशाक्षरं पदमिदम् । अत्र पदविन्यासः स्वेच्छया विधेयः । यथा-

साधितानन्तसारसामन्त ।

इत्यादि । यथा वा-

नाथ हे नन्द-गेहिनीशन्द
पूतनापिण्डपातने चण्ड
दानवे दण्डकारकाखण्ड-
सारपौगण्डलीलयोद्दण्ड
गोकुलालिन्दगूढ गोविन्द
पूरितामन्द-राधिकानन्द
वेत्तसीकुञ्ज-माधुरीपुञ्ज
लोकनारम्भजातसंरम्भ-
दीपितानङ्गकेलिभागङ्ग-
गोपसारङ्ग-लोचनारङ्ग-
कारिमातङ्गखेलितासङ्ग-
सौहृदाशङ्कयोपितामङ्क-
पालिकालम्ब चारुरोलम्ब-
मालिकाकण्ठ कौतुकाकुण्ठ
पाटलीकुन्दमाधवीवृन्द-
सेवितोत्तुङ्गशेखरोत्सङ्ग
मां सदा हन्त पालयानन्त
वीर !

स्फुरदिन्दीवरसुन्दर सान्द्रतरामन्दकन्दलीकन्द ।

मां तव पदारविन्दे नन्दय मन्थेन गोविन्द ॥

कुन्ददसन मन्दहसन^१

यद्धरसन रत्नमयसन^२

देव !

प्रपन्नजनतातमःक्षपणक्षारदेन्दुप्रमा-

प्रजाम्युगधिलोचना स्मरसामृद्धिसिद्धीपधिः ।

विडम्बितमुधाम्बुधिप्रवलमाधुरीडम्बरा,

विभर्तुं तव माघव स्मितकदम्बकान्तिर्मुदम् ।

इति श्रीगोविन्दविरुदायल्यां मातङ्गखेलितप्रत्युदाहरणम् ।

सषिषदमिदं मातङ्गखेलितम् ।८।

६. अथ उत्पलं षण्डवृत्तम्

—भद्वयं चोत्पलं मतम् ॥ १५ ॥

श्लिष्टौ द्विपञ्चमौ—

[ध्या०] अयमर्थः—भद्वय-भगणयोर्द्वयं, भगणचतुष्टयमित्यर्थः । सक्षये तया दर्शनादेवं ख्यातम् । किञ्च-तस्मिन्नेव भगणद्वये द्विपञ्चमौ-द्वितीयपञ्चमौ षणो' श्लिष्टौ-सरेफ-शिरस्को च भवतो यत्र तद् उत्पलनामकं षण्डवृत्तं भवतीत्यर्थः । षडक्षरं भगणद्वयपक्षे, भगण-चतुष्टयपक्षे तु द्वादशाक्षरमेव पदम् । पदविध्यासस्तु पूर्वपक्षेव । यथा—

सर्वजनप्रिय

सर्वसमक्रिय

इत्यादि । यथा वा, श्रीगोविन्दविरुदायल्याम्—

नत्तितशक्करं-चकृतकक्करं-
वृद्धमरुद्भर-तर्हंन निभंर-
दुष्टविमर्दन शिष्टविवर्द्धन
सर्वविलक्षण मित्रकृतक्षण
सद्भुजलक्षित-पर्वतरक्षित-
निधुरगज्जन-खिन्नसुहृज्जन
रुष्टदिवस्पति-गर्वसमुन्नति-
तर्जनविभ्रम निर्गलितभ्रम-
शक्कृतस्तद विस्फुरदुरसद
वीर !

बुद्धीनां परिमोहनः किल ह्लियामुच्चाटनः स्तम्भनो

दर्भोदग्रधियां' मनःकरटिनां वश्यत्वनिष्पादनः ।

कालिन्दीकलहंस हन्त वपुषामाकर्षणः सुभ्रुवां,

जीयाद् वैणवपञ्चमध्वनिमयो मन्त्राधिराजस्तव ।

काननारब्ध काकलीशब्द-
पाटवाकृष्ट-गोपिकादृष्ट
चातुरीजुष्ट-राधिकातुष्ट
कामिनीलक्ष-भोदने दक्ष
भामिनीपक्ष^१ माममु रक्ष,
देव ।

अजर्जरपतिव्रताहृदयवज्रभेदोद्घुरा,
कठोरतरमानिनी^२-निकरमानमर्मच्छिद^३ ।

अनङ्गघनुरुद्धतप्रचलचित्तिचापच्युता,
क्रियासुरघविद्विपस्तव मुद कटाक्षेपव ।

सविह्वमिदमुत्पलम् ।६।

१०. अथ गुणरतिशब्दवृत्तम्

—सो नो, लश्च दीर्घं तृतीयकम् ।

गुणरत्याख्य—

[ध्या०] अस्यार्थ—यत्र स-सगण भो-नगण ततो लश्च-सधुर्भवति । अत्र चतुर्वंशाक्षर-
पदविन्यासस्य अ-यत्रापि दृष्टत्वात् सनलानामावृत्तिरवगन्तव्या, तेन प्रकृतोदृषणिका सिद्धि-
र्भवति । किञ्च, तृतीयक-तार्तोयमजर दीर्घं भवति । तद् गुणरत्याख्य षण्ठवृत्त भवति ।
चतुर्वंशाक्षर पदम् । पदविन्यास पूर्ववदेव । यथा—

विदिताखिलसुख

सुख (प)भाधिकमुख ।

इत्यादि । यथा वा—

प्रकटीकृतगुण शकटीविघटन
निकटीवृत्तनवलकुटीवर वन-
पटलीतटचर नटलील मधुर
सुरभीकृतवन सुरभीहितकर
मुरलीविलसित-खुरलीहृतजग-
दरुणावर नव-तरुणायतभुज^४
वरुणालयसमकरुणापरिमल
कलभायितबल शलभायितखल

१ गोवि भामिनीपक्ष । २ गोवि कठोरपरवर्णिनी । ३ गोवि वर्मच्छिद ।
४ गोवि करुणापतभुज ।

धवलाधृतिधर^१ गवलाश्रितकर
सरसीकृतनर सरसीरुहघर
कलशीलितमुख कलशीदधिहर
ललितारतिकर ललितावलिपर
धीर !

हरिणीनयनावृत प्रभो करिणीवल्लभकेलिविभ्रम ।
तुलसीप्रिय दानवाङ्गनाकुलसीमन्तहर प्रसीद मे ॥

चन्दनचचित गन्धसमचित
गण्डविदत्तन-कुण्डलनत्तन
सन्दलदुज्ज्वल कुन्दलसद्गल
वञ्जुलकुन्तल^२ मञ्जुलकज्जल
सुन्दरविग्रह नन्दलसद्ग्रह
धीर !

रतिमनुवध्य गृहेभ्यः कर्षति राधां वनाय या निपुणा ।
सा जयति निसृष्टार्था^३ वरवंशजकाकली दूती ।

सविरुदा गुणरतिरियम् । १०।

११. अथ कल्पद्रुमश्चण्डवृत्तम्

तत्र-

—अन्त्यान्त्यो नवमः श्लिष्टपूर्वगः ॥ १६ ॥

कल्पद्रुमे तजो यश्च श्लिष्टाः षट्-त्रि-नव-द्विकाः ।

[श्या०] कोऽर्थः ? उच्यते—यत्र कल्पद्रुमे चण्डवृत्ते अन्त्यो-यमणः तस्यान्त्यो नवमो
वर्णः श्लिष्टपूर्वगः—श्लिष्टो वर्णः पूर्वगो यस्य स तावृशो भवति । तत्र च गणनियममाह—
तजो—तगणजगणौ, अथ च यश्च—यगणोपि भवति । एवं गणत्रयं यत्र भवति तदेतत् कल्पद्रु-
माख्यं चण्डवृत्तं भवति । नवाक्षरमिदं पदम् । पदविन्यासोपि पूर्ववत् । किञ्च—षट्त्रिनवद्विकाः—
षट्ठत्तौयनवमद्वितीयका घर्णाः श्लिष्टा भवन्ति । यत्र च नवमश्लेषादेव द्वितीये पदे प्रथम-
वर्णस्य गुणत्वं भवतीति भावः ।

यथा-

उद्विक्ततरस्थितगदं

प्रव्यक्तपरिस्थितसर्वं ।*

१. गोवि. हर । २. गोवि. कुङ्कुम । ३. गोवि. निसृष्टार्था तत्र । ४. ल.
प्रथमपरिस्थितशब्दं ।

एवं पदान्तरमपि बोद्धव्यम् ।

इति कल्पद्रुम १११ ।

१२ अथ कन्दलञ्चण्डवृत्तम्

कन्दले पञ्चम, शिलष्टो द्वितीये मधुरोऽनु भौ ॥ १७ ॥

[ध्या०] कन्दले-कन्दलाख्ये चण्डवृत्ते पञ्चमो घर्णं शिलष्टो भवति । द्वितीयो घर्णो मधुर-परसवर्णो भवति । तत्र गणनैत्यमाह-अत्रास्मिन् भो-भगणो एव स्तः । षडक्षरमेव पदम् । तत्कन्दलाभिधानं चण्डवृत्तं भवतीति । यथा-

पण्डितवर्द्धन ।

इत्यादि ।

इति कन्दलः ११२ ।

१३. अथ अपराजितञ्चण्डवृत्तम्

षडष्टदशमा दीर्घा द्वितीयो मधुरो यदि ।

अपराजितमेतत्तु भसजाश्च गुरुलंघु ॥ १८ ॥

[ध्या०] एतदुक्तं भवति । यत्र षडष्टदशमा-षष्ठाष्टमदशमा घर्णा दीर्घा भवन्ति । द्वितीयो घर्णो यदि मधुर-परसवर्णो भवति । यदि च भसजा-भगणसगणजगणा भवन्ति । अथ च गुरुस्ततो लघुश्चेद् भवति । तदेतत् अपराजिताख्यं चण्डवृत्तं भवति । एकादशाक्षरं पदम् । यथा-

गञ्जितपरवीर धीर हीर ।

इत्यादि ।

इति अपराजितम् ११३ ।

१४ अथ नर्त्तनञ्चण्डवृत्तम्

चतु सप्तमकी शिलष्टो सो रो लो यदि नर्त्तनम् ।

अष्टमो मधुर -

[ध्या०] अस्यार्थं - यदि चतु सप्तमकी बर्णा शिलष्टो भवतः, अष्टमो घर्णो मधुर-परसवर्णो भवति । किञ्च, यदि सो-सगणो स्याताम् । अथ च रो-रगण, ततो लो-लघुद्वयं स्यात् तदा नर्त्तन-नर्त्तनाख्यं चण्डवृत्तं भवति । इदमप्येकादशाक्षरं पदम् । यथा-

भुवनत्रयशनुम्प्रमह्यं ।

इत्यादि ।

इति नर्त्तनम् ११४ ।

१५. अथ तरस्तमस्तञ्चण्डवृत्तम्

-शिलष्ट-सशिलष्टमधुरा यदि ॥ १९ ॥

पट्त्रिपञ्चमका जो मः सगणो लघुयुग्मकम् ।
तरत्समस्तमित्याहुः—

[व्या०] एवमुक्तं भवति । यदि पट्त्रिपञ्चमका—पठतृतीयपञ्चमा वर्णाः श्लिष्ट-
सश्लिष्ट-मधुराः स्युः । तत्र गणनियममाह—जो—जगणः, मो—मगणः, सगणः गुर्वन्तश्चतुष्कलो
गणस्ततो लघुयुग्मक—लघुयुगल च यदि भवति तदा तरत्समस्तमिति नामक घण्टवृत्तमाहुश्चान्द-
सिका । एकादशाक्षरमेव पदम् । यथा—

निरस्तचण्डद्वेषिधराधर

इत्यादि ।

इति तरत्समस्तम् । १५।

१६. अथ वेष्टनञ्चण्डवृत्तम्

—दीर्घीं पट्पञ्चमो यदि ॥ २० ॥

वेष्टने सप्तमः श्लिष्टो नयो लघुचतुष्टयम् ।

[व्या०] अथमयं—वेष्टने—वेष्टनाख्ये चण्डवृत्तप्रभेदे यदि पट्पञ्चमो—पठपञ्चमको
वर्णो दीर्घीं स्याताम् । सप्तमश्च वर्णः श्लिष्टो भवेत् । गणनियममाह—नयो—नगणयगणो
स्तः, ततो लघुचतुष्टय यत्र भवति । दशाक्षर च पद भवति । तत् वेष्टनाभिधानं चण्डवृत्त
भवतीति । यथा—

मलयजसाराञ्चितहर ।

इत्यादि ।

इति वेष्टनम् । १६।

१७. अथ अस्खलितञ्चण्डवृत्तम्

तरो भलावस्खलिते त्र्यष्टपञ्चमसप्तमा ॥ २१ ॥

सश्लिष्टा दीर्घं आद्यः स्यात्—

[व्या०] कोऽयं ? उच्यते—अस्खलिते—अस्खलिताभिधाने चण्डवृत्ते यदि तरो—तगणरगणो
स्याताम् । अथ च भलो—भगणलघूस्तः । किञ्च, त्र्यष्टपञ्चमसप्तमा—तृतीयाष्टमपञ्चम-
सप्तमा घणश्चित्तं सश्लिष्टा अन्त्ययोगिन स्युः । आद्य—अद्यमो वर्णश्चेद् दीर्घं स्यात् तदा
अस्खलिताभिधानं चण्डवृत्तं भवति । दशाक्षरमेव पद भवति । यथा—

आवद्धशुद्धयुद्धप्रणय ।

इत्यादि ।

इति अस्खलितम् । १७।

१८. अथ पल्लवितञ्चण्डवृत्तम्

—दीर्घीं चैत्तुयंपञ्चमो ।

शिथिलो मधुरो वाऽत्र द्वितीयो भतनद्विजा ॥ २२ ॥

एतत् पल्लवितम्—

कुन्तललुठदुरङ्ग
 कुङ्कुमरुचिलसदम्बर
 लङ्गिमपरिमलडम्बर
 नन्दभवनवरमङ्गल-
 [मञ्जुलघुसृणमुपिङ्गल
 हिङ्गुलरुचिपदपङ्कज
 सञ्चितयुवतिसदङ्गज]^१
 सन्ततमृगपदपङ्किल
 सतनु मयि कुशलङ्किल
 वीर ।

गिरितटीकुनटीकुलपिङ्गले खलतृणावलिसञ्ज्वलदिङ्गले ।
 प्रखरसङ्गरासन्धुतिमिङ्गले मम रतिर्वलता व्रजमङ्गले ।
 जय चारुदाम ललनाभिराम
 जगतीललाम रुचिहारिवाम*
 वीर ।

उन्दितहृदयेन्दुमणिः पूर्णकल कुवलयोत्लासी ।
 परित शार्वरमथनो विलसति वृन्दाटवीचन्द्र ।

इति सुरग । २०।

एते महाकलिकारूपस्य चण्डवृत्तस्य विंशति शुद्धा प्रभेदा ।

अथ सङ्कीर्णा

तत्र-

२१. पङ्केरुह चण्डवृत्तम्

पङ्केरुह नयी पण्ठे भङ्गी मंत्री च दृश्यते ॥ २४ ॥

सा चेत् कवर्गरुचिता यथा लाभमनुक्रमात् ।

तथैव पण्ठो मधुरः स्वरभेदेऽपि तद्भिदा ॥ २५ ॥

[श्या०] एतस्यार्थ — यत्र नयो-नगणयगणी भवत । तथा पण्ठे षण्णं भगो मंत्री च दृश्यते ।
 किञ्च, सा मंत्री चेत् कवर्गेण यथालाभमनुक्रमात् रचिता स्यात् । तथा पण्ठो षण्णो मधुर-
 परसवर्णो यदि स्यात् तदा पङ्केरुह नाम चण्डवृत्त भवति । किञ्च, स्वरभेदेपि-इकारादिरुच-
 भेदेपि सति तद्भिदा पङ्केरुहभेदो भवतीति बोद्धव्यम् । पण्डक्षरमेव पदम् । पण्डिन्यातोपि पूर्ण
 धरिति बोद्धव्यम् ।

घर्षादिभ्ये' पदे 'लः-एको लघुरधिको देय इत्यर्थः, तेनात्य पवं प्रयोदशाक्षर भवति । तच्च, ज्वरत्रभलाभतमित्युपविश्यते । पदविन्यासस्तु स्वेच्छया विधेयः । यथा-

अनङ्गवर्जनं प्रसङ्गसञ्जनं ।

इत्यादि ।

अनङ्गमङ्गलं प्रसङ्गसञ्जनकं ।

इत्यन्तम् ।

अत्र च मधुरतृतीयत्वादेव विरुदावत्यन्तर-समप्राद् भिन्नमिदं समप्रमितिः ।

इति समप्रम् । १६।

२०. अथ तुरग^१श्चण्डवृत्तम्

—भनो जलो ॥ २३ ॥

मधुरी^२ युग्मनवमो चेच्चण्डतुरगाह्वयम् ।

[व्या०] अथमर्थः—यत्र भनो-भगण नगणो भवतः, सतो जलो-जगणलघू स्याताम् । किञ्च, युग्मनवमो षणो^३ चेत् मधुरी-परसवणो^४ स्तस्तदा तुरगाह्वयचण्डवृत्तं भवतीत्यर्थः । दशाक्षरं पदमिदम् । पदविन्यासः पूर्ववत् । यथा-

पण्डितगुणगणमण्डित ।

यथा वा-

सँव्वल^५ विचकिलकुण्डल
मण्डितवरतनुमण्डल
कुण्डलिपतिकृतसङ्गर
दण्डित^६ भुवनभयङ्कर
शङ्करकमलजवन्दित
किङ्करनुतिलवनन्दित^६
गञ्जितसमदपुरन्दर
चञ्चलदमनधुरन्धर
बन्धुरगतिजितसिन्धुर
चन्दनसुरमितकन्धर
सुन्दरभुजलसदङ्गद^६
सन्ततसखिगणरङ्गद
भङ्कृतिकरमणिकङ्कण

१. गोवि. तुरंग । २. क. मधुर । ३. गोवि. सवल । ४. गोवि. लण्डित ।

५. क. किङ्करनुतिलवनण्डित । ६. क. भुजलसदङ्गद ।

वर्णिकारकृतकर्णिकाद्युति वर्णिकापदनियुक्तगैरिका ।
मेचका मनसि मे चकास्तु ते मेचकाभरण भारिणी^१ तनु ।

मदनरसङ्गत सङ्गतपरिमल
युवतिविलम्बित लम्बितकचभर
कुमुमविटङ्कित टङ्कितगिरिवर
मधुरससञ्चित सञ्चितनरवर^२
वीर ।

भ्रूमण्डलतण्डवितप्रसूनकोदण्डचित्रकोदण्ड ।
हृतपुण्डरीकगर्भं मण्डय मे^३ पुण्डरीकाक्ष ।

सविन्द सितरञ्जमिदम् । २२ ।

२३ अथ पाण्डूत्पलञ्चण्डवृत्तम्

जय जय दण्ड-
प्रिय कचसण्ड-
ग्रथितशिलण्ड-
द्रज शशिलण्ड-
स्फुरणसपिण्ड-
स्मितवृत्तगण्ड
प्रणयकरण्ड
द्विजपतितुण्ड
स्मररसकुण्ड
दातपणिमुण्ड
प्रकटपिचण्ड-
स्थितजगदण्ड
वयणदण्डघण्ट
स्फुटरणघण्ट
स्फुरदुरगुण्डा-
वृत्तिभुजदण्डा-
हृतगलचण्डा-
मुरगण पण्डा-

[व्या०] एतेषां सितकञ्जादिभेदानाम्, शेषं स्पष्टम् । तत्र-

२२. सितकञ्जञ्चण्डवृत्तम्

जय कचचञ्चद्-
 द्युतिसमुदञ्च-
 न्मधुरिमपञ्च-
 स्तवकितपिञ्च-
 स्फुरित विरिञ्च-
 स्तुत गिरिगञ्ज^१-
 व्रजपरिगुञ्ज-
 न्मधुकरपुञ्ज-
 द्रुतमृदुशिञ्ज
 द्विपदहिगञ्ज
 व्रततिपु खञ्ज-
 व्रवरजसञ्ज^२-
 न्मरुदतिपिञ्ज
 प्रवलित^३मुञ्जा-
 नलहर गुञ्जा-
 प्रिय गिरिकुञ्जा-
 धित रतिसञ्जा-
 गर नवकञ्जा-
 मलकर भञ्जा-
 निलहर मञ्जी-
 रजरवपञ्ज ,
 परिमलसञ्जी-
 वितनवपञ्चा-
 शुगशरसञ्चा-
 रणजितपञ्चा-
 ननमद धीर ।

१. गोवि. गिरिकुञ्ज

२. गोवि. रसमञ्ज- । ३. गोवि. प्रवणित ।

कृपय सपङ्के
किल मयि घोर ।

उत्तुङ्गोदयश्चङ्गसङ्गमजुषा विभ्रत्पतङ्गत्विषा,
वासस्तुङ्ग'मनङ्गसङ्गरक्तशोटीयंपारङ्गत ।
स्वान्त रिङ्गदपाङ्गभिङ्गभिरल गोपाङ्गनाना किल',
भूयारत्व पशुपालपुङ्गव दृशोरव्यङ्ग रगाय मे ॥

विलसदलिकगतकृङ्कुमपरिमल
कटितटघृतमणिकिङ्किणिवरकल
नवजलधरकुललङ्गिभरुचिभर
मसृणमुरलिकलभङ्गिमधुरतर
घोर ।

श्रवतसितमञ्जुमञ्जरे तरुणीनेत्रचकोरपञ्जरे ।
नवकुङ्कुमपुञ्जपिञ्जरे रतिरास्ता मम गोपकृञ्जरे ।
पङ्केरुह सविददमिदम् । २१ ।

अथ सितकञ्जादयश्चण्डवृत्तस्य चत्वारो भेदा लक्ष्यन्ते । तत्र—

एतावेव गणौ यत्र मङ्गो मंत्री च पूर्ववत् ।
ऋमेण चादिवर्गस्तु रचिता सार्जप पूर्ववत् ॥ २६ ॥

[ध्या०] अस्याचं—यत्र एतो-नगण्यगणो एव-पूर्वोक्तो गणौ भवत । किञ्च, मङ्गो मंत्री च पूर्ववत्, पष्ठाक्षर एव भवतीत्यर्थे । एतच्च पटवर्णाय मपुररुहमपि लक्ष्यन्तीति बोद्धव्यम् । पूर्ववद् इत्यनेनैवोपर्यायित्वात् । किञ्च, सार्जप मंत्रो चादि-चतुर्विधं पूर्ववत् पद्यायं रचिता चेद् भवति । अथ शब्दात् स्वरान्तरेणाभेदेति सति तदा तत्तद्वैको भवतीत्यादि बोद्धव्यम् । षडक्षरमेव पदम् । षडविन्ध्यासोऽपि पूर्ववदेवेति च ॥ २६ ॥

तद्भेदत्रतुष्टयमाह साद्धेन श्लोकेन—

सितकञ्ज तथा पाण्डूत्वलमिन्द्रीयर तथा ।
अरुणाभोरुहञ्चेति त्रैय मंत्रेषुष्टयम् ॥ २७ ॥
विरुद्धेन सम चापि चण्डवृत्तस्य परिश्रुते ।

[ध्या०] सितकञ्ज, पाण्डूत्वल, इ-बोवद, अरुणाभोरुहञ्चेति सविददवृत्तस्य त्रैय तुष्टय पण्डितं—अपीतद्वन्द्व शास्त्रनिपुणमतिभिर्गोविन्दुर्वाचन ।
उदाहरणमेतेषा अमेर्णवोच्यते-पृष्ठा ॥ २८ ॥

१. गोवि स्तुव्य । २ गोवि गितम् ।

जनितवितण्डा-
जितबल भण्डी-
रदयित खण्डी-
कृतनवडिण्डी-

।

गण कलकुण्डी'-
कृतकलकण्ठी-
कुल मणिकण्ठी-
स्फुरितसुकण्ठी-
प्रिय वरकण्ठी-
रवरण वीर !

दण्डी कुण्डलिभोगकाण्डनिभयोरुदृण्डदोर्दण्डयोः,
श्लिष्टश्चण्डिमहम्बरेण निविडश्रीखण्डपुण्ड्रोज्ज्वलः ।
निर्द्धूतोद्यदचण्डरश्मिघटया तुण्डश्रिया मामकं
कामं मण्डय पुण्डरीकनयन त्वं हन्त हन्मण्डलम् ।
कन्दर्पकोदण्ड-दर्पक्रियोदृण्ड-
दृग्भङ्गिकाण्डीर संजुष्टभाण्डीर
धीर !
त्वमुपेन्द्र कलिन्दनन्दिनी-तटवृन्दावनगन्धसिन्धुर ।
जय सुन्दरकान्तिकन्दलैः स्फुरदिन्दीवरवृन्दवन्धुभिः ।
सविरुवं पाण्डुत्पलमिदम् ।२३।

२४. अथ इन्दीवरम्

जय जय हन्त
द्विप द्धिहन्त-
भंधुरिमसन्त-
पितजगदन्त-
मृदुल वसन्त-
प्रिय सितदन्त-
[स्फुरितदिगन्त
प्रसरदुदन्त]^१

प्रम चदनन्त-
 प्रियसख सन्त-
 स्त्वयि रतिमन्त.
 स्वमुदहरन्त]'
 प्रभुवर नन्दा-
 रमज गुणकन्दा-
 सितनवकन्दा-
 कृतिधर^१ कुन्दा-
 मलरद तुन्दा-
 त्तभुवन वृन्दा-
 वनभवगन्धा-
 स्पदमकरन्दा-
 न्वितनवमन्दा-
 रकुसुमवृन्दा-
 चितकच वन्दा-
 हनिखिलवृन्दा^२-
 रकवरवन्दी-
 डित विधुसन्दी-
 पितलसदिन्दी-
 वरपरिनिन्दी-
 क्षणयुग नन्दी-
 श्वरपतिनन्दी-
 हित जय वीर !

स्मितरुचिमकरन्दस्यन्दि वक्त्रारविन्द,
 तव पुरुपरहसान्विष्ट गन्ध मुकुन्द ।
 विरचित^३पशुपालीनेभ्रसारङ्गरङ्ग,
 मम हृदयतडागे सङ्गमङ्गीकरोतु ।
 अम्बरगतसुरविनतिविलम्बित
 तुम्बरुपरिभविमुरलिकरम्बित

[—] १. पक्षितचतुष्टय नास्ति क. प्रती । २. गोवि. धृतिधर । ३. ए. पंक्तिरियं
 नास्ति । ४. गोवि. परिचित ।

शम्बरमुखमृगनिकरकुटुम्बित
सभ्रमवलयितयुवतिविचुम्बित
धीर !

अम्बुजकुटुम्बदुहितुः कदम्बसम्बाधवन्धुरे पुलिने ।
पीताम्बर कुरु केलि त्व वीर ! नितम्बिनीघटया ॥

सबिह्वमिदमिन्दोवरम् । २४।

२५. अथ शरणाभोरहञ्चण्डवृत्तम्

जय रससम्पद्-विरचितभम्प
स्मरकृतकम्प-प्रियजनशम्प
प्रवणितकम्प-स्फुरदनुकम्प
द्युतिजितशम्प-स्फुटनवचम्प-
श्रितकचगुम्प श्रुतिपरिलम्ब-
स्फुरितकदम्ब स्तुतमुख डिम्भ-
पिय रविविम्बो-दयपरिजृम्भो-
न्मुखलसदम्भो-रहमुख लम्बो-
दभटभुज लम्बो-दरवरगुम्भो-
पमबु चविम्बो-ष्ठयुवतिचुम्बो-
द्भट परिरम्भोत्सुक कुरु श भो-
स्तडिदवलम्बो-जितमिलदम्भो-
घरसुविडम्बो-द्धुर नतशम्भो
रपिजितदम्भो^१-लिगरिमसम्भा-
वितभुजजृम्भा^२-हितमद लम्पा-
कमनसि सम्पादय मयि त पा-
किममनुकम्पालवमिह धीर !

दिव्ये दण्डधरस्वसुस्तम्भे फुल्लाटवीमण्डले,
वल्लीमण्डपभाजि लवधमदिरस्तम्बेरमाडम्बरः ।
कुर्वन्नञ्जनपुञ्जगञ्जनमति श्यामाङ्गकान्तिश्रिया,
लीलापाङ्गतरङ्गितेन तरसा मा हन्त सन्तर्पय ।

अम्बुजकिरणविडम्बक खञ्जनपरिचलदम्बक
चुम्बितयुवतिकदम्बक कुन्तललुठितकदम्बक
वीर !

प्रेमोद्वेल्लितवल्गुभिर्बलियितस्त्व वल्लवीभिर्विभो !
रामोल्लापितवल्तकीविततिभिः कल्याणवल्लीभुवि ।
सोल्लुण्ठं मुरलीकलापरिमलं^१ मल्लारमुल्लासयन्,
वाल्येनोल्लसिते दृशौ मम तडिल्लीलाभिरत्फुल्लय ।

सविरुदमिदमरणाम्भोरुहम् । २५।

एते कादिपञ्चवर्गोत्थापिताः पञ्चचण्डवृत्तस्य महाकलिकारूपस्य सङ्कीर्णाः
प्रभेदाः ।

अथ गभिताः

तत्र प्रभेदाः—

२६. फुल्लाम्बुजञ्चण्डवृत्तम्

पष्ठे भङ्गश्च मैत्री च नयावेव गणौ यदि ।
अन्तस्थस्य तृतीयेन यदि मैत्रीकृता भवेत् ॥ २६ ॥
स्वरोपस्थापिता श्लिष्टा रमणीयतरा क्वचित् ।
फुल्लाम्बुज तदुद्दिष्ट चण्डवृत्तं सुपण्डितैः ॥ ३० ॥

[ध्या०] कोऽयं ? उच्यते—यदि नयावेव—नगणपगणावेव गणौ स्तः । पष्ठे वर्णं भङ्गो
मैत्री च यदि अन्तस्थस्य यवर्गस्य तृतीयेन लकारेण कृता भवेत् । सापि क्वचित् स्वरोपस्थापिता
श्लिष्टा च स्यात् । तदा एतद्देशादृतमिदं नामतः फुल्लाम्बुज इति प्रसिद्धं सुपण्डितैश्चण्ड-
वृत्तमुद्दिष्टं—कथितमित्यर्थः । यथा—

व्रजपृथ्वल्ली^१-परिसरवल्ली-
वनभुवि तल्लीगणभृति मल्ली-
मनसिजमल्ली-जितशिवमल्ली-
कृमुदमतल्लीजुपि गत मल्ली-
परिपदि हल्ली-सकसुखमल्ली^२-
रत परिफुल्ली-कृतचलचिल्ली-

जितरतिमल्लीमद भर सल्ली-
लतिलक कल्या-तनुशततुल्या-
हवरसकुल्या-चट्टतिलखल्या-
प्रमथन कल्याणचरित धीर ।

गोपी सम्भृतचापल-चापलताचित्रया भ्रुवा भ्रमयन् ।
विलस यशोदावत्सल वत्सलसङ्घेनुसधीत ।

* वल्लवललनालीलावलमित
पल्लवरचना मल्लीविलसित
वल्लभकलनाखेलासमुदित
तत्सवधटना नीलालकवृत्त ।

तव चरणाम्बुजमनिश विभावये नन्दगोपाल ।
गोपालनाथ वृन्दावनभुवि यद् रेणुरञ्जिता धरणी ।*

सविरुद फुल्लाम्बुजनिदम् ।२६।

१ * *टिप्पणी—सङ्केता-तर्गताशस्य स्थाने निम्नाशो वर्त्तते गोवि-दविरुदावल्याम । परञ्च
वृत्तमौक्तिकवृत्ता चायमश पल्लवितञ्चण्डवृत्तस्य शिथिलद्वितीयवर्णोदा-
हरणरूपेण स्वीकृत, स च २३३ पृष्ठेऽवलोकनीया विद्वद्भि ।

वल्लवलीलासमुदयसमुचित
पल्लवरागाघरपुटविलसित
वल्लभगोपीप्रवणित मुनिगण
दुर्लभकेतीभरमधुरिमकण
मल्लविहरादभुततहणिमधर
फुल्लमृगाक्षीपरिवृतपरिसर
चित्तिलविलासापितमनसिजमद
मल्लिकलापामलपरिमलपद
रल्लकराजीहरमुमधुरकल
हल्लकमालापरिवृतकचकुल
धीर ।

वल्लवललनावल्ली करपल्लवशीलितस्कन्धम् ।
वल्लसित परिफुल्ल भजाम्यह कृष्णकङ्केल्लिम् ॥

२७. अथ अम्पक-अम्पकवृत्तम्

द्वितीयो मधुरो यत्र दित्थ. वयापि भवेद् यदि ।
भगो पट्टार चैतन् श्वेच्छात गदवलनम् ॥ ३१ ॥

अम्पक-अम्पकवृत्त इत्यात्—

[प्या०] आर्यायं — 'यत्र द्वितीयो वर्णो मधुर-परसवर्णो भवेत् : वयापि-दुप्रचित् यदि नित्योपि इत्यात् ।' तत्र गणनियमग्रह-भगो-भगवतगणो गणो भवेताम् । पट्टारं चैतन् परम् । अम्प, परसवर्ण इत्येच्छातो यत्र भवति इत्येच्छम्पक नाम अम्पकवृत्त इत्यात् । अथा—

मञ्चलदरण^१-मुदरनयन
वदरक्षयन वसवधरण
पल्लवचरण मञ्जुलघुगुण-
गिञ्जलमगुण चन्दनचन
मन्दनवचन गण्डितप्रकट
दण्डितविकट-गवितदनुज
पवितमनुज रक्षितधवल
लक्षितगवल पत्रगदलन
मन्नगवलन वधुरवलन
सिञ्जुलचलन^२ कल्पितसदन^३-
जल्पितमदन^४ मञ्जुलमुकुट
यञ्जुलकुट-रञ्जितकरभ
गञ्जितशरभ-मण्डलवलित
कुण्डलचलित-मन्दितपन
नन्दितपन-वन्यकमुपम
धन्यककुमुम^५-गर्भक धरण^६-
दग्भकशरण तर्णकवलित
धर्णकललित सा धरवलनय
डम्बर कलय
देव

१-१. क्ष. प्रती नास्ति पाठ । २. भोवि. सचलवरणचञ्चलकरणमुदरनयन । ३. क. वदन । ४. गोवि. मदन । ५. गोवि. सदन । ६. गोवि. धन्यककुमुम । ७. गोवि. विरण ।

दानवघटालवित्रे धातुविचित्रे जगच्चित्रे ।
 हृदयानन्दचरित्रे रतिरास्तां वल्लवीमित्रे ।
 रिङ्गदुरुभृङ्ग-तुङ्गगिरिशृङ्ग-
 शृङ्गस्तभङ्ग-सङ्गधृतरङ्ग
 वीर !

त्वमत्र चण्डामुरमण्डलीनां रण्डावशिष्टानि गृहाणि कृत्वा ।
 पूर्णान्यकार्पात्रंजसुन्दरीभिवृन्दाटवीपुण्ड्रकमण्डपानि ॥

सविरुवं चम्पकमिदम् ।२७।

२८. अथ वञ्जुलञ्चण्डवृत्तम्

—वञ्जुलं नजला यदि ।

पञ्चमो मधुरस्तत्र पद मुनिमित भतम् ॥ ३२ ॥

[ध्या०] अयमर्थः—यदि नजलाः—नगणजगणलघवः स्युः । किञ्च, तत्र पदे पञ्चमो वर्णा
 मधुरः—परसवर्णो भवति । पदमपि मुनिभिः—सप्तभिर्वर्णमितं—परिमितं यत्र तत् वञ्जुलं—
 वञ्जुलाख्यमतिमञ्जुलं चण्डवृत्तं मतं—सम्मतमित्यर्थः । पदरूपनं तु पूर्ववत् । यथा—

जय जय सुन्दर-विहसित मन्दर-
 विजितपुरन्दर निजगिरिकन्दर-
 रतिरसशन्धर मणियुक्तकन्धर
 गुणमणिमन्दिर हृदि बलदिन्दिर
 गतिजितसिन्धुर परिजनबन्धुर
 पशुपतिनन्दन तिलकितचन्दन
 विधिकृतवन्दन पृथुहरिचन्दन-
 परिवृतनन्दन^१-मधुरिमनिन्दन^२-
 मधुवन वन्दित-बुसुमसुगन्धित-
 वनवररञ्जित रतिरभसरञ्जित^३
 शिखिदलकुण्डल-सहकृतमण्डिल
 नवसिततण्डुल-जयिरदमण्डल
 रतिरणपण्डित वरतनुमण्डित
 नखपदमण्डित दशनविलण्डित
 धीर !

निनिन्द निजभिन्दिरा वपुरवेक्ष्य यासा श्रिय,
 रिचार्य गुणचातुरीमचलजा च लज्जा गता ।
 लसत्पशुपनन्दिनीततिभिराभिरानन्दित,
 भवन्तमतिमुन्दर व्रजकुलेन्द्र वन्दामहे ।
 रसपरिपाटी स्फुटरुवाटी
 मनसिजघाटी प्रियनतशाटी^१-
 हर जय वीर ।

सम्भ्रान्तं सपङ्कपातमभितो वेदैर्मुदा वन्दिता,
 सीमन्तोपरि गौरवादुपनिपद्देवीभिरप्यपिता ।
 श्रानन्न प्रणयेन च प्रणयतो तुष्टामना^२विकृतो^३,
 मृद्धी ते मुरलीरतिमु^४ररिपो शर्माणि निर्मातु न ।
 सविहद वञ्जुलमिवम् ।२८।

२६. अथ कुन्दञ्चण्डवृत्तम्

द्वितीयपष्ठो मधुरो श्लिष्टो वा क्वापि तो यदि ।
 स्याताम् भजो तदा कुन्दम्—

[व्या०] एतदुक्तं भवति । यदि द्वितीयपष्ठो षणो^१ मधुरो-परसषणो^२ क्वापि पदे श्लिष्टो वा, तो षणो^३ स्माताम् । अथ च भजो-भगणजगणो भवत, तदा कुन्द इति नाम चण्डवृत्तं भवति । षडक्षरमिदं पदम् । पदविन्यासस्तु पूर्ववत् । यथा—

नन्दकुलचन्द्र लुप्तभवतन्द्र
 कुन्दजयिदन्त दुष्टकुलहन्त
 रिष्टमुवसन्त मिष्टसदुदन्त
 सदलितमल्लि-कन्दलितवल्लि-
 गुञ्जदलिपुञ्ज-मञ्जुतरकुञ्ज-
 लब्धरतिरङ्ग हृद्यजनसङ्ग-
 शर्मलसदङ्ग हर्षकृदनङ्ग
 मत्तपरपुष्ट-रम्यकलघुष्ट
 गन्धभरजुष्ट पुष्पवनतुष्ट
 कृत्तखलक्ष^४ युद्धनयदक्ष

१. गोवि. प्रियनवशाटी- । २. गोवि हृष्टामना । ३. गोवि. भिष्टता । ४. गोवि यक्ष ।

वल्गुकचपक्ष-[वद्धशिलिपक्ष] १
पिष्टनततृष्ण तिष्ठ हृदि कृष्ण
वीर ।

तत्र कृष्ण केलिमुरली हितमहित च स्फुट विमोहयति ।
एत्र सुधोमिसुहृदा विपविपभेणापर ध्वनिना ।

सन्नीतदैतेयनिस्तार कल्याणकारुण्यविस्तार
पुष्पेपुकोदण्डटङ्कार-विस्फारमञ्जरीभङ्कार
धीर ।

रङ्गस्थले ताण्डवमण्डनेन ३ निरस्य मल्लोत्तमपुण्डरीकान् ।
कसद्विष चण्डमखण्डयद यो हृत्पुण्डरीके स हरिस्तवास्तु ।

सविहद कुन्दमिदम् । २६ ।

३०. अथ बकुलभासुरञ्चण्डवृत्तम्

—अथो ३ बकुलभासुरम् ॥ ३३ ॥

चतुर्भिस्तुरगं निर्जे पद यत्रातिसुन्दरम् ।

रसेन्दुमात्र सोल्लाल—

[व्या०] अस्यायं —अथ-कुन्दान्तर बकुलभासुर इति नामक चण्डवृत्त कथ्यत इति शेष ।
यत्र चतुर्भि-चतु सख्याकं निर्जे-जगणधिरहितं चतुर्विधंस्तुरगं-चतुष्कलं द्विजगण-कर्णं भगण-
सगणैरेवातिसुन्दर-अतिरमणीयं रसेन्दुमात्र-षोडशमात्र पद भवति । तच्च पद उल्लसत्सिद्ध
षोडश विशकावधिवाणाधिक विधेयमित्युपदेश । किञ्च, सोल्लाल-उल्ललनमेव उल्लाल
परावर्त्तन तेन सहित शृङ्खलावद्ध-यायेन घटितमित्ययं । तस्यैव बकुलभासुर चण्डवृत्त
सविहद भवतीति वाक्याय । यथा—

जय जय वशीवाद्यविशारद
शारदसरसोरुहपरिभावक-
भावकलितलोचनसञ्चारण
चारणसिद्धवधूधृतिहारक
हारकलापरुचाश्रितकुण्डल^४
कुण्डलसित^१ गोवर्द्धनभूषित
भूषितभूषणविच्छन्न^२ विग्रह
विग्रहखण्डितखलवृषभासुर

१ [-] क ख नास्ति पाठ । २ गोवि मण्डलेन । ३ ख अथ । ४ ख
सगणसगणै- । ५ गोवि रुचाञ्चितकुण्डल । ६ गोवि कुण्डलसद् । ७ गोवि विद्घन- ।

भासुरकुटिलकचापितचन्द्रक
 चन्द्रकदम्ब^१रुचाभ्यधिकानन
 काननकुञ्जगृहस्मरसङ्गर
 सङ्गरसोद्घुखाहुभुजङ्गम
 जङ्गमनवतापिच्छनगोपम
 गोपमनीपितसिद्धिपु दक्षिण
 दक्षिणपाणिगदण्डसभाजित
 भाजितकोटिशशाङ्कविरोचन
 रोचनया कृतचारुविशेषक
 शेषकमलभवसनकसनन्दन-
 नन्दनगुण मा नन्दय सुन्दर
^२सुन्दर मामव भीतिविनाशन^३
 वीर ।

भवत प्रतापतरणाबुदेतुमिह लोहितायति स्फीते ।
 दनुजान्धकारनिकराः शरण भेजुगुं हाकुहरम् ॥

पुलिनघृतरङ्ग-युवतिकृतसङ्ग
 मदनरसभङ्ग-गरिमलसदङ्ग
 धीर ।

पशुपु कृपा तव दृष्ट्वा दुष्ट^३महारिष्टवत्सकेशिमुखा ।
 दर्पं विमुच्य भीता पशुभाव भेजिरे दनुजा ॥

सविरद बकुलभासुरमिदम् । ३० ।

३१. अथ बकुलमङ्गलञ्चण्डवृत्तम्

—अन्तो बकुलमङ्गलम् ॥ ३४ ॥

चतुर्भिर्भगणैरेव ह्यैर्यत्र पद भवेत् ।

रसेन्दुकलक तत्र तृतीये शृङ्खलास्थिता ॥ ३५ ॥

[ध्या०] कोऽर्थं ? उच्यते । अन्त - बकुलभासुरानन्तर बकुलमङ्गल - बकुलमङ्गलाख्य
 चण्डवृत्तमुच्यते इति शेष ॥ ३४ ॥

पत्र चतुर्भि - चतु सख्याकं केवलैरादिगुरकं - भगणैरेव ह्यै - चतुष्कलं रसेन्दुकलक-
 षोडशमात्र पद भवेत् । किञ्च, तत्र - तस्मिन्पदे तृतीये अर्थात् तृतीये भगणे शृङ्खलास्थिता चे-

भवति, तदा बकुलमङ्गलाभिधानं खण्डयुक्तं सधिरुदं भवतीति वाक्यार्थः । पदविन्यासोपदेशस्तु पूर्ववदेव । षोडशमात्रस्वमुभयत्र समानं । परं तु धतुर्थभगणघटनमध्यभृङ्गलावन्धनमात्रमेव बकुलभासुराद् भेदं बोधयतीत्यवधेयं सुधीभिरिति शिवम् ॥३५॥

यथा-

त्वं जय केशव केशवलस्तुत
वीर्यविलक्षण लक्षणबोधित
केलिपु नागर नागरणोद्धत
गोकुलनन्दन नन्दनतिव्रत-
सान्द्रमुदण्पंक दण्पंकमोहन
हे सुपमानवमानवतीगण-
माननिरासक रासकलाश्रित
सस्तंनगौरवगौरवध्रुवत^१
कुञ्जशतोपित तीपितयीवत
रूपभराधिकराधिकयाचित
भीरुविलम्बित लम्बितशेखर
केलिकलालस^२लालसलोचन
शेषमदारणदारुणदानव-
मुक्तिदलोकन लोकनमस्कृत-
गोपसभावक भावकशर्मद
हन्त कृपालय पालय मामपि
देव !^३

पलायन^४ फेनिलवक्त्रता च बन्धं च भीतिं च मूर्तिं च कृत्वा ।
पवर्गदातापि शिखण्डमौले त्वं शास्त्रवाणामपवर्गदोऽसि ॥

प्रणयभरित - मधुरचरित
भजनसहित - पद्युपमहित
देव !

अनुभूय विक्रम ते युधि लब्धाः कादिशीकत्वम् ।

हित्वा^५ किल जगदण्ड प्रपलायाचक्रिरे दनुजाः ।

सधिरुदं बकुलमङ्गलमिदम् ॥३१॥

१ क कृत । २ गोवि. केलिकुलालस- । ३. गोवि. धीर । ४. गोवि. पराभव ।
५. गोवि. भित्त्वा ।

३२ अथ मञ्जरी कौरकचण्डवृत्तम्

मञ्जरी चात्र पूर्वं श्लोको लेखस्तदनन्तरम् ।

कौरकाख्य चण्डवृत्त पदसंख्यानखैर्यदि ॥ ३६ ॥

[ध्या०] अस्यायं — अभिधीयत इत्ययं । प्रथमतो मञ्जरी तत कलिका भवतीति लौकिकानां प्रसिद्धे । तत्र चतुर्भि भगणे शुद्धंराद्यन्तयमकाङ्कितं कौरकाख्य चण्डवृत्त । यदि पदस्य आद्यन्तयोयमकाङ्कितं — यमकेन अङ्कितं सयमकैरिति यावत्, शुद्धं — शृङ्खलारहितं चतुर्भि भगणे — आदिगुरुकैर्गणै पदम् । अथ च पदसंख्या यदि नखै — विशत्या भवति, तदा कौरकाख्य चण्डवृत्त भवति । शृङ्खलारहित्यमेवात्र पूर्वस्माद् भेद गमयतीति ॥ ३६ ॥

तत्र प्रथम मञ्जरी, यथा—

नवशिखिशिखण्डशिखरा^१ प्रसूनकोदण्डचित्रशश्रोव ।

क्षोभयति कृष्ण वेषो श्रेणीरेणीदृशा भवत् ॥

कौरकम्, यथा—

मानवतीमदहारिविलोचन
दानवसञ्चयधूकविरोचन
डिण्डिमवादिसुरालिसभाजित
चण्डिमशालिभुजागंलराजित
दीक्षितयौवतचित्तविलोभन
वीक्षित सुस्मितमार्दवशोभन
पर्वतसम्भृति^२निर्घुंतपीवर-
गवंतम परिमुग्धशचीवर^३
रञ्जितमञ्जुपरिस्फुरदम्बर
गञ्जितकेशिपराक्रमडम्बर
कोमलताङ्कितवागवतारक
सोमललाममहोत्सवकारक
हसरथस्तुतिशसितवशक
कसवधूथृतिनुन्नवतसक
रङ्गतरङ्गितचारुदृगञ्चल
सङ्गतपञ्चशरोदयचञ्चल
सुञ्चितगोपसुतागणशाटक
सञ्चितरङ्गमहोत्सवनाटक
तारय मामुरुससृतिशातन

१ क शिखण्डिशिखरा । २ गोवि. पर्वतसंपृति- । ३ ख शचीवर ।

धारय लोचनमत्र सनातन
धीर !

तुरगदनुसुताङ्गप्रावभेदे दधानः,
कुलिशघटितटङ्कोद्दण्डविस्फूर्जितानि ।
तदुरुविकटदष्ट्रोन्मु (मृ) ष्टकेयूरमुद्रः,
प्रथयतु पट्टता वः कैशवो वामबाहु ।
माधव विस्फुर दानवनिष्ठुर
धौवतरञ्जित सौरभसञ्जित
धीर !

पलितकरणी दशा प्रभो मुहुरन्धकरणी च मा गता ।
सुभगकरणी कृपा शुभैर्न तवाढधं करणी च मय्यभूत् ॥
सविद्यः कोरकोऽयम् ॥३२॥

३३. अथ गुच्छकञ्चण्डवृत्तम्

नसौ जनी जलो ऋमात् प्रयोजितौ बुधा यदा ।
तदा तु चण्डवृत्तक विभावयन्तु गुच्छकम् ॥ ३७ ॥

[व्या०] अथमर्थ—हे बुधा ! यदा नसौ—नगणसगणौ, अथ च जनी—जगणनगणौ,
ततश्च जलो—जगणलघू ऋमात्—प्रतिपद प्रयोजितौ भवत, तदा तु गुच्छक नाम चण्डवृत्त
विभावयन्तु—कुर्वन्तु । अत्रोभयत्र स्वार्थे क ॥३७॥ किञ्च—

षोडशार्णं पद चात्र पदान्यपि च षोडश ।
सानुप्रासानि यमकैरङ्कितानि च गुच्छके ॥ ३८ ॥

[व्या०] सुगमम् । यथा—

जय जलदमण्डलीद्युतिनिवहसुन्दर
स्फुरदमलकौमुदीमृदुहसितबन्धुर
व्रजहरिणलोचनावदनशशिचुम्बक
प्रचलतर'खञ्जनद्युतिविलसदम्बक
स्मरसरचातुरीनिचयवरपण्डित
प्रणययुतराधिकापटिमभरभण्डित
ववणदतुलवशिका'हृतपशुपमीवत
स्थिरसरमाधुरीकुलरमितदेवत

प्रथितशिखिचन्द्रकस्फुटकुटिलकुन्तल
 श्रवणतट^१ सञ्चरन्मणिमकरकुण्डल
 प्रथित तव^२ ताण्डवप्रकटगतिमण्डल
 द्विजकिरणघोरणीविजितसिततण्डुल
 स्फुरित तव दाडिमीकुसुमयुतकर्णक^३
 छदनवरकाकलीहृतचद्रुलतर्णक^४
 *प्रकटमिह मामके हृदि वससि माधव
 स्फुरसि ननु संततं सकलदिशि मामव^५
 घोर !

पुनागस्तवकनिबद्धकेशजूटः,
 कोटीरीकृतवरकेकिपक्षजूटः ।
 पाषाण्मां मरकतमेदुरः स तन्वा,
 कालिन्दीतटविपिनप्रसूनधन्वा ।^६
 गर्गप्रिय जय भर्गस्तुत रस
 सर्गस्थिरनिज-वर्गप्रवणित
 घोर !

दनुजवधूवैधव्यव्रतदीक्षाशिक्षणाचार्यः ।
 स जयति विह्वरपाती मुकुन्द तव शृङ्गनिर्घोषः ।
 सविह्वं गुच्छार्यं चण्डवृत्तम् ।३३।
 ३४. अय कुसुमञ्चण्डवृत्तम्
 चतुर्भिर्नगर्णयत्र पदं यमकितं भवेत् ।
 अनन्तनेत्रप्रमित कुसुम तत्प्रकीर्तितम् ॥ ३६ ॥

[व्या०] अनन्तं-शून्यं नेत्रं-द्वयं ताभ्यां प्रमितं-गणितं पदं यत्र तत्, विदालिपदमित्यर्थः ।
 शेषं सुगमम् ॥३६॥

शशा-

कुसुमनिकरनिचितचिकुर^१
 नखरविजितमणिजमुकुर
 सुभटपटिमरमितमथुर
 विकटसमरनटनचतुर

१. गोवि. श्रवणतट-। २. गोवि. प्रथिततव-। ३. गोवि. स्फुरितवरदाडिमीकुसुमयुत-
 कर्णकः । ४-४. गोवि. पंथितद्वयं नाम्नि । ५. क. नत्वा । ६. गोवि. रचितचिकुर ।

समदभुजगदमनचरण
 निखिलपशुपतिचयशरण^१
^२अमलकमलविशदचरण
 सकलदनुजविलयकरण^३
 मुदितमदिरमधुरनयन
 शिखरिकुहररचितशयन
 रमितपशुपयुवतिपटल
 मदनकलहघटनचट्टल
 विपमदनुजनिवहमयन
 भुवनरसदविशदकयन
 कृमुदमृदुलविलसदमल-
 हसितमधुरवदनकमल
 मधुपसदृशविचलदलक
 मसृणधुसृणकलिततिलक
 निभृतमुपितमथितकलश
 सततमजित मनसि विलस

धीर !

सखि! चातकजीवातुर्माघव सुरकेकिमण्डलोल्लासि ।
 तव दैत्यहंसभयद शृङ्गाम्बुदगर्जितं जयति ॥
 पुरुषोत्तम वीरव्रत यमुनाद्भुतसौरस्थित
 मुरलिध्वनिपूरक्रिय सुरभीव्रजनादप्रिय !

धीर !

जगतीसभावलम्बः स तव जयत्यम्बुजाक्ष दोस्तम्भः ।
 रभसाद्विभेद दनुजान् प्रतापनृहरिर्यतोऽभ्युदितः ॥
 सविषदं कुमुममिदम् ।३५।

एते महाकलिकारूपस्य चण्डवृत्तस्य नवभिर्मताः^१ प्रभेदाः । इत्येवं चतुस्त्रिंश-
 शतिः ३४ प्रभेदाः ।

^१इति ध्रुवृत्तमौक्तिके विद्यवावल्यां महाकलिकारूप-पुरुषोत्तमादिकुमुमात्^२
 सविषदमवान्तरं चण्डवृत्तप्रकरणं द्वितीयम् ।२।

१. क. चरण । २-२. गोवि. पंक्तिद्वयं नास्ति । ३. ख. नवगभिताः । ४-४. पंक्तिरियं
 नास्ति क. प्रती ।

[विरुदावल्या तृतीय त्रिभङ्गी-कलिकाप्रकरणम्]

१. अथ दण्डकत्रिभङ्गी कलिका

अथ त्रिभङ्गीकलिकासु दण्डकत्रिभङ्गीकलिकागमित तद्गतैव^१ लक्ष्यते । तद्भङ्गानां^२
बाहुल्यादेवास्या कलिकाया दण्डकत्रिभङ्गीति सज्ञा ।

अथाऽस्या लक्षण सम्यक् सोदाहरणमुच्यते ।
भङ्गबाहुल्यतश्चास्या सज्ञाप्या^३वर्थिका^४ भवेत् ॥१॥

यथा-

नगणयुगलादनन्तरमिह चेद् रगणा भवन्ति रन्ध्रमिता ।
विरुदावल्या कलिका कथितेय दण्डकत्रिभङ्गीति ॥ २ ॥

[ध्या०] रन्ध्राणि-नव कथिता इत्यत्र तदित्यध्याहार । भङ्गबहुत्वाच्चास्या दण्डक-
त्रिभङ्गी सज्ञेति फलितोऽर्थः । अत्र च पदरचनाया पदविन्यास स्वैच्छया भवतीति सिंहाव-
लोकनरीत्यावगन्तव्यम् । यथा-

चित्र मुरारे सुरवैरिपक्ष-
स्त्वया समन्तादनुबद्धयुद्ध ।
अमित्रमुच्चैरविभिद्य भेद,
मित्रस्य कुर्वन्नमित^५ प्रयाति ॥

श्रितमघजलधेर्वंहीन चरित्र सुचित्र विचित्र
फणित्र समित्र पवित्र लवित्र रुजाम् ।
जगदपरिमितप्रतिष्ठ पटिष्ठ बलिष्ठ गरिष्ठ
५अदिष्ठ सुनिष्ठ लघिष्ठ दविष्ठ^५ धियाम् ।
निखिलविलसितेऽभिराम सराम भुदा मञ्जुदाम-
न्नभाम ललाम धृतामन्दधाम नये ।
मधुमयनहरे मुरारे पुरारेरपारे ससारे
विहारे मुरारेरुदारे च दारे प्रभुम् ।
स्फुरितमिनमुत्तातरङ्गे विहङ्गेशरङ्गेण गङ्गे-
ऽटभङ्गे भुजङ्गेन्द्रसङ्गे सदङ्गन भो ।

१. ए अन्तर्गतैव । २ क. तद्भानां । ३. ए. सज्ञाप्यावर्थिकी । ४. गोवि
कुर्वन्नमित । ५-५. गोवि. वरिष्ठ अदिष्ठ सुनिष्ठ दविष्ठ ।

शिखरिवरदरीनिशान्तं प्रयान्तं सकान्तं विभागतं
 नितान्तं च कान्तं प्रशान्तं कृतान्तं द्विपाम् ।
 दनुजहर भजाम्यनन्तं सुदन्तं नुदन्तं दृगन्तं
 हसन्तं 'भजन्तं चरन्तं' भवन्त सदा ।
 वीर !

पीत्वा बिन्दुकण मुकुन्द भवतः सौन्दर्यसिन्धोः सकृत्-
 कन्दर्पस्य यशं गता विमुमुहुः के वा न साध्वीगणाः ।
 दूरे राज्यमयन्त्रितस्मितकला भ्रूवल्लरीताण्डव-
 क्रीडापाङ्गततरङ्गितप्रभृतयः कुर्वन्तु ते विभ्रमाः ॥

चारुतट - रासनट
 गोपभट पीतपट
 पद्मकर दैत्यहर
 कुञ्जचर वीरवर
 नर्ममय कुण्ण जय
 नाथ !

ससाराम्भसि दुस्तरोमिगहने गम्भीरतापत्रयी-
 कुम्भीरेण गृहीतमुग्रगतिना^१ क्रोशन्तमन्तर्भयात् ।
 दीप्रेणाद्य सुदर्शनेन विदुधवलान्तिच्छिदाकारिणा,
 चिन्तासन्ततिरुद्धमुद्धर हरे मच्चिन्तदन्तीश्वरम् ।

इति सविहदा दण्डकत्रिभङ्गी कलिका । १ ।

२. अथ सम्पूर्णा विदग्धत्रिभङ्गी कलिका

अथापरा सम्पूर्णा विदग्धत्रिभङ्गी कलिका लक्ष्यते । यथा-

युग्मे भङ्गस्तनी श्रुक्ती भी चान्ते यत्र मित्रितौ ।
 वसुसख्यं परे ह्यत्र^३ पदे सा स्यात् त्रिभङ्गिका ॥ ३ ॥
 विदग्धपूर्वा सम्पूर्णा कलिकाऽतिमनोहरा ।
 आद्यान्ताशी.पद्ययुक्ता—

[व्या०] एतद् युक्तं भवति । यत्र पदे-यस्यां कलिकाया वा युग्मे-द्वितीयाक्षरे भङ्गो भवति ।
 तथा तनी-तगणनगर्भो स्तः । तौ च श्रुक्ती-वारत्रयमुक्ती जेतु । अन्ते-तना अयान्ते^४ मित्रितौ-

१. गोवि. वसन्तं भजन्तं । २. गोवि. मतिना । ३. ख. भवेद् यत्र । ४. ख
 तनत्रयान्ते ।

सलग्नी भौ-भगणौ च यदि स्त । यत्र चंबविद्य वसुसह्य पद भवेत्, सा विदग्धपूर्वा-विदाघ-
शब्दपूर्वा सम्पूर्णा प्रथमलक्षितलक्षणविलक्षणा प्रतिमनोहरा विदाघत्रिभङ्गीकलिका स्यात्
इत्यन्वय । अष्टपदत्वमेव पूर्वोक्ताया सकाशात् र्थलक्षणं स्फुटमेव लक्षयति । एतदेव चास्या
सम्पूर्णत्वमिति । किञ्च, आद्यन्तयो कलिकाया इति शेष, आशी पद्यमुक्ता-आशी पद्याभ्या
युक्ता आशीर्वादियुक्तपद्याभ्यां सयुक्ता इत्यर्थ । आद्यन्तपदसाहित्यं च तत्कलिकामुक्तेषु पूर्वो-
क्तेषु सर्वेषु घण्डयुक्तेषु शेष मुधीभिरित्युपदेशरहस्य, अप्रेषि तथैव वक्ष्यमाणत्वादिति । इयमेव
च खण्डावलीति व्यपदिश्यते, तथा चाप्रे तथैव लक्षयिष्यमाणत्वादिति । यथा-

उद्वेलत्कुलजाभिमानविकचाम्भोजालिशुभ्राशव १

केलीकोपकपायिताक्षिललनामानाद्रिदम्भोलय ।

कन्दर्पञ्जरपीडितव्रजवधूसन्दोहजीवातवो,

जीयासुभंवतश्चिर यदुपते स्वच्छा कटाक्षच्छटा ॥ १

चण्डीप्रियन्त चण्डीकृतबलरण्डीकृतखलवल्लभ वल्लव
पट्टाम्बरधर भट्टारक बककुट्टाक ललितपण्डितमण्डित
नन्दीश्वरपति-नन्दीहितभर सदीपितरससागर नागर
अङ्गीकृतनवसङ्गीतक वर-भङ्गीलवहृतजङ्गमलङ्गिम
गोत्राहितकर गोत्राहितदय गोत्राधिपधृतिशोभनशोभन
वन्यास्थितबहुकन्यापटहर धन्याशयमणिचोर मनोरम
शम्पारुचिपट सम्पालितभव-कम्पाकुलजन फुल्ल समुल्लस
उर्वीप्रियकर खर्षीकृतखल दर्वीकरपतिगवितपवंत
घोर !

पिष्ट्वा सङ्ग्रामपट्टे पटलमकुटिले ३ दंत्यगोकण्टकाना,

त्रीडालोठीविघट्टे स्फुटमरतिकर नैचिकीचारकाणाम् ४ ।

वृन्दारण्य चकारखिलजगदगदङ्कारकारुण्यकारो ५,

य सञ्चारोचित व सुखयतु स पट्ट कुञ्जपट्टाधिराज ।

विच्छलसदधननीलकेश

चन्दनचचितचारुवेश

खण्डितदर्जनभूरिमाय,

मण्डितनिर्मलहारिकाय ।

घोर !

१ क शुभ्राशन । २ गोवि पद्य नास्ति । ३ क पटलमकुलिते । ४ गोवि
चारकाणाम् । ५ गोवि कारुण्यधार ।

गीर्वाण स्फुटमखिल विवर्द्धयन्त,
निर्वाण दनुजघटामु सघटय्य ।
कुर्वाण ब्रजनिलय निरन्तरोद्यत्-
पर्वाण मुरमथन स्तुवे भवन्तम् ॥

द्वितीया सम्पूर्णा सविरुदा विदाघत्रिभङ्गी कलिका । २।

एते चण्डवृत्तस्य गर्भितान्तर्गताः प्रभेदा ।

अथ मिश्रिताः

तत्र-

३. मिश्रकलिका

— मिश्रिता चाथ कथ्यते ॥ ४ ॥

आद्यन्ताशी पद्ययुक्ता गद्याभ्या चापि समुता ।
मध्यत कलिका कार्या सदण्डैर्भनजैर्गणै ॥ ५ ॥
विरुदेनान्विता चापि रमणीयतरा मता ।
पट्पदा सापि विज्ञेया छन्द शास्त्रविशारदं ॥ ६ ॥

[ध्या०] अस्वार्थ — अथ-विदाघत्रिभङ्गीकलिकानन्तर मिश्रिता मिश्राकलिका कथ्यते-
उच्यत इत्यर्थं । ता विशिनष्टि— कलिकाया आद्यन्तयोराशी पद्याभ्या युक्ता, तथा आद्यन्तयोरेव
गद्याभ्या च समुता मध्यतस्तयोरित्यर्थं, कलिका कार्या । कलिका विशिनष्टि सदण्डै-दण्डो
लघु^१ तत्सहितं भनजै-भगणनगणजगर्णरन्विता समुक्ता इत्यर्थं ॥४५॥

तथा विरुदेन चाप्यन्विता । अतएवातिरमणीयतरा मता-सम्मता । सापि च छन्द-
शास्त्रविशारदं पट्पदा विज्ञेया इत्युपविश्यत इति वाच्यार्थं । विरुदसाहित्य च विदाघ-
त्रिभङ्गीकलिकालक्षणकारिकायामप्यत्रथेय सुधीभिरिति शिवम् ॥६॥

अत्र चादौ आशी पद्य, ततो गद्य, ततश्च पट्पदीकलिका, तदनन्तरमपि गद्य, ततो
विरुद, अनन्तरमपि पद्यमेव । ततोपि विरुद धोर सम्बोधनोपलक्षित, सर्वान्ते चाशी पद्यम्,
इति क्रमेणोक्तलक्षणोपलक्षिता मिश्रा कलिका कार्या, इति फलितोर्थं ।

अथा-

उदञ्चदतिमञ्जुलस्मितसुधोमिलीलास्पद,
तरङ्गितवराङ्गनास्फुरदनङ्गरङ्गाम्बुधि ।
दृगिन्दुमणिमण्डलोसलिलनिर्भरस्यन्दनो,
मुमुन्द मुखचन्द्रमास्तव तनोतु शम्भतिलम् ।^२

दुष्टदुर्दमगरिष्टकण्ठीरवकण्ठविलखण्डनसेसदृष्टापद नवीनाष्टापदविस्फुटिपदा-
म्बरपरीत गरिष्टगण्डशैलसपिण्डवक्ष पट्ट पाटव—

दण्डितचट्टलभुजङ्गम
कन्दुकविलसितलङ्घिम
भण्डिल^१विचकिल^२मण्डित
सङ्गरविहरणपण्डित
दन्तुरदनुजविडम्बक
कुण्ठितकुटिलकदम्बक ।

खचित्ताखण्डलोपलविराजदण्डजराजमणिम[य]^३कुण्डलमण्डितमञ्जुलगण्डस्थ-
लविशङ्कटभाण्डीरतटीताण्डवकलारञ्जितसुहृन्मण्डल

नन्दविचुम्बित-कुन्दनिभस्मित
गन्धकरम्बित शन्दविवेष्टित
तुन्दपरिस्फुर-दण्डकडम्बर ।

^४दुर्जनभोजेन्द्रकण्टककण्ठकन्दोद्धरणो^५दामकुहाल वितम्रविपदारुणध्वान्त-
विद्रावणमातण्डोपमकृपाकटाक्ष शारदचन्द्र^६मरीचिमाधुर्यविडम्बितुण्डमण्डल

लोष्ठीकृतमणि कोष्ठीकुलमु[नि-
गोष्ठीश्वर मधुरोष्ठीप्रिय पर-
मेष्ठी]^७डित परमेष्ठीकृतनर
धीर ।

उपहितपशुपालीनेत्रसारङ्गतुष्टि,
प्रसरदमृतधाराघोरणीधीतविश्वा ।
पिहितरविमुधानु प्राशुतापिञ्छरम्या,
रमयतु बकहन्तु^८ कान्तिकादम्बिनी व ।

इति मिश्रकलिका १३।

अथ चण्डवृत्तस्य मिथित प्रभेद । एवमन्येपि ।

इति विरुदावल्या चण्डवृत्तमेव दण्डकत्रिभङ्गचाद्यन्तर-

त्रिभङ्गीकलिका प्रकरण तृतीयम् १३।

इति श्रीवृत्तभौतिके वार्तिके सलक्षण चण्डवृत्तप्रकरण समाप्तम् १४।

१. ख तण्डिल । २ क. विचकिल । ३ गोवि मणिम[य]नास्ति । ४ गोवि
दुर्जनभोजेन्द्रकण्टककन्दोद्धरणो । ५. गोवि. शारदाचण्ड- । ६ [-] कोष्टगतोशो नास्ति
क प्रती । ७ क. ख. बहकतु ।

[विरदावल्यां साधारणमत चण्डवृत्त चतुर्थप्रकरणम्]

अथ साधारणं चण्डवृत्तम्

तत्र-

स्वेच्छया तु कलान्यासः साधारणमिदं मतम् ।

न च सप्तदशादूर्ध्वं न वर्णत्रितयादधः ॥ १ ॥

त्रियते यैर्गणैराद्यान्तैरेव सकलाः कलाः ।

प्रस्वादिवर्णसयोगेष्वत्र वर्णस्य लाघवम् ॥ २ ॥

[प्या०] अस्यार्थः—स्वेच्छया इत्यादि शुभमम् । तत्राक्षरनियममाह—न चेति । न च सप्तदशवर्णादूर्ध्वं न वा वर्णत्रितयादधः कला कार्या इति शेषः । किञ्च नियमान्तरमाह—त्रियते इति । आद्यात्—ऽः इति यैरेव गणैः कलाप्रारम्भः क्रियते तैरेव सकला अपेक्षिताः कलाः कर्त्तव्या इति शेषः । अपि च 'प्रस्वादीति' प्रस्वेति आदिशब्देन-ङ्ग-प्र स्फु-स्मि-स्म-व्वेत्यादीनां संपुक्तानां वर्णानां सयोगेषु सति अत्र छन्दःशास्त्रे तत्प्रकरणस्थले वा पूर्वपूर्ववर्णस्य लाघवं-लघुत्वं अवगन्तव्यमित्युत्सर्गः ।

तत्र अक्षरे, यथा-

अङ्गण रिङ्गण ।

इत्यादि । संपुक्ते, यथा-

प्रणयप्रवण ।

इत्यादि । एव गणान्तरेपि बोद्धव्यम् ।

चतुर्वर्णं सर्वलघो यथा-

विधुमुख कृतमुख ।

इत्यादि । एव प्रस्तारान्तरेपि सर्वलघ्वादिस्थले स्वेच्छातः कलान्यासोद्रष्टव्यः ।

मात्रावृत्ते, यथा-

चतुष्कलद्वयेनापि कला जगणवर्जिताः ।

[प्या०] कर्त्तव्या इति शेषः । यथा—

तारापतिमुख सारापितमुख ।

इत्यादि ।

प्रस्तारद्वितयेष्वेव कलान्यासः स्वतः स्मृतः ॥३॥

[प्या०] स्वतः—स्वेच्छातो भवतीति स्मृत इत्यर्थः ॥३॥

साधारणमतं चैतद् दिङ्मात्रमिह दशितम् ।

विशेषस्तत्र तत्रापि नोक्तो विस्तारशङ्कया ॥ ४ ॥

[प्या०] तत्र तत्राप्येति—तत्प्रस्तारेषु इत्यर्थः ॥४॥

इति विरदावल्यामवसान्तरं साधारणमतं चण्डवृत्त-प्रकरणं चतुर्थम् ॥४॥

१ अथ साप्तविभक्तिकी कलिका

स्तुतिविधीयते विष्णो सप्तभिस्तु विभक्तिभि ।
यत्र सा कलिका सद्भिर्ज्ञेया साप्तविभक्तिकी ॥ १ ॥
अथोच्यते विभक्तीना लक्षण कविसम्मतम् ।
तत्तद्गणोपनिहित यथाशास्त्रमतिस्फुटम् ॥ २ ॥
भसो तु घटितो यत्र प्रथमा सा प्रकीर्तिता ।
नयाभ्या तु द्वितीया स्यात् तृतीया ननसा लघु ॥ ३ ॥
विभिस्तैस्तु चतुर्थी स्यात् यत्र यौ पञ्चमी तु सा ।
ताभ्या तु षष्ठी विज्ञेया यत्र सौ सप्तमी तु सा ॥ ४ ॥
विहाय प्रथमा ज्ञेया सर्वा साधारणे मते ।
स्थितास्तु गणसाम्येन स्वेच्छयैव यत * कला ॥ ५ ॥
उदाहरणमेतासा क्रमतो वृत्तमौक्तिके ।
कथ्यते कविसन्तोषहेतवे* हरिकीर्तने ॥ ६ ॥

[व्या०] सुलभार्थास्तु कारिका इति न ध्यात्यायन्ते । क्रमेणोदाहरणानि, यथा-

य स्थिरकरुण स्तजितवरुण ।
तपितजनक सम्मदजनक ॥ १ ॥
प्रणतविमाय जगुरनपायम् ।
घनरुचिकाय सुकृतिजना यम ॥ २ ॥
सुजनकलितकथनेन प्रबलदनुजमथनेन ।
प्रणयिषु रत्नमभयेन प्रकटरतिषु किल येन ॥ ३ ॥

यस्मै परिध्वस्तदुष्टाय चक्रु स्पृहा माल्यदुष्टाय* ।
दिव्या स्त्रिय केलितुष्टाय कन्दर्परङ्गण पुष्टाय ॥ ४ ॥

धृतोत्साहपूराद द्युतिक्षिप्तसूरात् ।
यतोऽरिर्विदूराद् भय प्राप दूरात् ॥ ५ ॥
यस्योज्वलाङ्गस्य सञ्चार्यपाङ्गस्य ।
वेणुर्भलामस्य हस्तेऽभिरामस्य ॥ ६ ॥
स्मितविस्फुरित ज्जनि यत्र हित ।
रतिरुल्लसित सदृशा ललिते ॥ ७ ॥

इति सप्तविभक्तय ।*

*. विद्वान्तागतोयमशो नास्ति ख प्रतो । १ ख यता । २ गोवि जुष्टाय ।

*अथ सम्बुद्धि

तनी [तु] घटितौ यत्र तत्सम्बोधनमीरितम् ।
एव सम्बोधनान्तेय विभक्ति सप्तकीर्त्तिता ॥ ७ ॥

यथा—

स त्व जय ! जय ! दुष्टप्रतिभय !
भक्तस्थितदय ! लुप्तव्रजभय ! ॥ ८ ॥

वीर !

मित्रकुलोदित नर्मसुमोदित
रञ्जितराधिक शर्मभराधिक ।

विरदमिदम्—

धीर !

हसोत्तमाभिलपिता सेवकचक्रेषु दक्षितोत्सेका ।
मुरजयिन कल्याणी करुणाकल्लोलिनी जयति ।

इति साप्तविभक्तिकी कलिका । १ ।

२ अक्ष अक्षमयी कलिका

अकारादि-क्षकारान्त-भातृकारूपधारिणी ।
विष्णो स्तुतिपरा सेय, कलिकाऽक्षमयी मता ॥ ८ ॥
अत्र स्युस्तु*रगा सर्वे गणा जगणवर्जिताः ।
मातृकावर्णघटिता क्रमात् भगवत स्तुतौ ॥ ९ ॥

[ध्या०] अस्यायं — अत्राक्षमयी भगवत स्तुतौ सर्वे तुरगा — चतुष्कला कर्ष द्विजगण भगण-
सगणा, जगणवर्जिता गणा क्रमात् भातृकावर्णेषु यथायथ घटिताश्चेत स्युस्तदा पूर्वोक्तविशेषण-
विशिष्टा सेय अक्षमयी कलिका मता-सम्मता इति पूर्वश्लोकेन अयम् । मात्रावृत्ते तु 'चतुष्कल-
द्वयेनापि कलाजगणवर्जिता' इत्यत्रैव उक्तत्वाद् अक्षमयीमात्रावृत्तमेवेति युक्तित्वात् समुत्प-
त्त्याम् । सर्वत्र च मात्रावृत्तैष्वेव जगणस्य हेतुत्वेन निर्देशाच्च । यथा—

मधुरेता ! माधुरीमय माधव मुरलीमतल्लिकामुग्ध ।

मम मदतमोहन मुदा मर्दय मनसो महामोहम् ॥

अच्युत जय जय अर्त्तवृषामय ।

इन्द्रमस्ताह्न ईतिविशातन ॥ १ ॥

उज्ज्वलविभ्रम ऊर्जिविभ्रम ।

ऋद्धिधुरोद्धुर* ऋभुदयापर ॥ २ ॥

लृदिवकृपेक्षित लृ वदलक्षित ।
 एधितवल्लव ऐन्दवकुलभव ॥ ३ ॥
 श्रोज.स्फूर्जित श्रोग्यविवर्जित ।
 अंसविशङ्कट अष्टापदपट ॥ ४ ॥
 इति षोडशस्वरादयः ।

अथ कादयः पञ्चवर्गाः^१

कङ्कणयुतकर खण्डितखलवर^२ ।
 गतिजितकुञ्जर घनघुसृणाकर^३ ॥ ५ ॥
 द्युतमुरलीरत चलचिल्लीलत ।
 छलितसतीशत जलजोद्भवनक्ष^४ ॥ ६ ॥
 नम्यवरकुण्डल ओडूमितदल ।
 टङ्कितभूधर ठसमाननवर^५ ॥ ७ ॥
 डमरघटाहर ढक्कितकरतल ।
 णखरघृताचल तरलविलोचन ॥ ८ ॥
 शूक्तखञ्जन दनुजविमर्दन ।
 धवलावर्द्धन नन्दमुखास्पद ॥ ९ ॥
 पङ्कजसमपद फणिनुतिमोदित ।
 बन्धुविनोदित भङ्गुरितालक ॥ १० ॥
 मञ्जुलमालक—

इति कादिपञ्चवर्गाः ।

अथ यादयः

—यष्टिलसदृभुज

रम्यमुखाम्बुज ललितविशारद ॥ ११ ॥
 वल्लवरङ्गद शर्मदचेष्टित ।
 पटपदवेष्टित सरसीरहधर ॥ १२ ॥
 हलधरसोदर क्षणदगुणोत्कर ॥ १३ ॥
 इति यादयः ।

वीर ।

१. क. खलपर । २. गोवि. घनघुसृणाम्बर । ३. गोवि. जलजोद्भवनुव । ४. गोवि. ठनिमाननवर ।

कर्णे कल्पितकर्णिकः कलिकया कामायितः कान्तिभिः,
कान्तानां किलकिञ्चितं किसलयं कीलालधिः कीर्त्तिभिः ।
कुर्वन् कूर्दनकानि केशरितया केशोरवान् कोटिशः,
कोपीकौकुलकंसकुष्टकृतिकः^१ कृष्णः क्रियात् कांक्षितम् ।

सौरीतटधर गौरीव्रतपर-
गौरीपटहर चोरीकृतकर ।
धीर !

प्रेमोरुहट्टहिण्डक कक्खटसुभटेन्द्रकण्ठकुट्टाक ।
कुरु कौकुमपट्टाम्बर भट्टारक ताण्डवं हृदि^२ मे ॥
इति अक्षमयी कलिका ॥२॥

३. अथ सर्वलघुककलिका

अथ सर्वलघुकं कलिकाद्वयं युगपदेव लक्ष्यते । तत्र-

नगणैर्पञ्चभिर्यत्र लघ्वन्तैर्वापि तैः पुनः ।
त्रमेण पञ्चदशभिर्वर्णैः षोडशभिस्तथा ॥ १० ॥
प्रस्तारद्वयमन्त्यं स्याल्लघुभिः सकलाक्षरैः ।
तत्सर्वलघुकं प्रोक्तं कलिकाद्वयमुत्तमम् ॥ ११ ॥

[ध्या०] अस्यायमर्थः—यत्र पञ्चभिः—पञ्चसंख्याकैर्नगणैः—त्रिलघुकैर्गणैः पदं यत्र, च—
पुनः लघ्वन्तैर्वापि तैरेव पञ्चभिर्नगणैः—त्रमेण पञ्चदशभिर्वर्णैः षोडशभिर्वा पदं भवति । वा
शब्देन सप्तदशाक्षरमपि पदं कर्तव्यम् । एतदूर्ध्वं तु न कर्तव्यमेवेत्युपदेशः । न च सप्तदशा-
दूर्ध्वमित्यत्रैव निषेधस्य उक्तत्वात् । स्वेच्छया कलान्यासस्तु सप्तदशावर्णपर्यन्तमेव साधारण-
मते घमत्कारकारी नैतदूर्ध्वमिति, प्रस्तारद्वयेपि सर्वलघुभिस्तमस्तैर्वर्णैर्न्ययं प्रस्तारद्वयं भवति
तत् सर्वलघुकमुत्तमं कलिकाद्वयं भवतीत्यर्थः ।

तत्र पञ्चदशाक्षरी सर्वलघुका कलिका यथा—

गोपस्त्रीविद्युदालीवलयितवपुपं नन्दगोपादिकेकि-

व्यूहानन्दैव हेतुं दनुजशतमयोद्दामदावाग्निशत्रुम् ।

ईपद्दास्याम्युधारावितरणभूतसद्बन्धुचेतस्तडागं,

चित्तं श्रीशृष्ण मेऽद्य अथ दारणमहो दुःखदाहोपशान्त्यं^३ ।

चरणचलनहृतजठरशकटक^४

रजवदलन वशागतपरकटक

१. गोवि. कोपीकौकुलकंसकुष्टकृतिकः । २. क. हृदि । ३. गोवि. पूर्णपदं नास्ति ।

४. गोवि. अरठ शकटकः ।

नटनघटनलसदगवरकटक

सकनकमरवतमयनवकटक ॥ १ ॥

इति पञ्चदशाक्षरी सर्वलघुका कलिका ।

अथ षोडशाक्षरी सर्वलघुका कलिका

कपटरुदितनटदकठिनपदतट-

विघटितदधिघट निविडितसुशकट

रुचितुलितपुरटपटलरुचिरपट-

घटितविपुलकट^१ कुटिलचिकुरघट ।

रविदुहितृनिकटलुठदजरजट-^२

विटपनिचितवटतटपटुत्तरनट-

निजविलसितहृठविचटितमुषिकट-

चट्टलदनुजभट^३ जय युवतिपु शठ ।

धीर !

स्फुटनाटचकडम्बदण्डित-द्रुडिमोहामर^४दुष्टकुण्डली ।

जय गोष्ठकुटुम्बसवृतस्त्वमिडाडिम्बकदम्बडुम्बक ॥

रशनमुखर सुखरनखर

दशनशिखर-विजितशिखर ।

वीर !

विवृतविविधबाधे भ्रान्तिवेगादगाधे,

धवलित^५भवपूरे भज्जतो मेऽविदूरे ।

अशरणगणवन्धो हा^६ कृपाकौमुदीन्दो,

सकृदकृतविलम्ब देहि हस्ताविलम्बम् ॥

नामानि प्रणयेन ते सुकृतिना तन्वन्ति तुण्डोत्सव,

धामानि प्रथयन्ति हन्त जलदश्यामानि नेत्राञ्जनम् ।

सामानि श्रुतिशङ्कुली मुरलिकाजातान्यलकुर्वन्ते,

कामा निर्वृतचेतसामिह विभो^१ नाशापि न शोभते ॥

इति षोडशाक्षरी सर्वलघुका कलिका ।३।

१. गोवि विपुलघट । २. गोवि. जरठजट । ३. गोवि. चट्टलदनुजघट । ४. क. घटितोडामर । ५. गोवि. बलवति । ६. गोवि. हे ।

अथ सर्वासु कलिकामु स्थिताना विरुदाना युगपदेव लक्षणमुच्यते—

वसुपट्पक्तिरविभिर्मनुभिश्चापि सर्वतः ।

कलिकामु कवि कुर्याद् विरुदाना तु कल्पनम् ॥ १२ ॥

[ध्या०] अस्वार्थं—सर्वासु कलिकामु वस्वादिभि पञ्चभि सख्यासकेतैश्चकारोक्तैरपि कविविरुदाना कल्पन कुर्यात् । तथा हि—कस्याश्चित् कलिकायामष्टकलिक विरुद, कस्याश्चित् षट्कलिक विरुद, अपरस्या दशकलिक विरुद, अन्यस्याञ्च द्वादशकलिक विरुद, कस्याश्चित् कलिकायाम् चतुर्दशकलिक विरुदम् । कुत्रापि चकारोपदिष्ट च विरुदत्रितयमिति क्रमेण सर्वत्र विरुदकल्पन कविना कार्यमित्युपदिश्यते ॥१२॥

किञ्च—

धीर-वीरादिसबुद्ध्या कलिका विरुदादिकम् ।

देव-भूपतितत्त्ववर्णनेषु प्रयोजयेत् ॥ १३ ॥

सस्कृतप्राकृतश्रव्यं शौर्यवीर्यदयादिभि ।

कीर्त्तिप्रतापप्राधान्यै कुर्वीत कलिकादिकम् ॥ १४ ॥

[ध्या०] सुगमम् ॥१३, १४॥

अपि च—

गुणालङ्कारसहित सरस रीतिसयुतम् ।

मैयानुप्राससच्छब्दाडम्बर' जीवित द्वयो ॥ १५ ॥

[ध्या०] द्वयो—कलिकाविरुदयोरित्यर्थं ॥१५॥

कलिकाश्लोकविरुदनिक त्रिशत्त्रिकावधि ।

पञ्चत्रिकोर्ध्वं विरुदावली कविभिरिष्यते ॥ १६ ॥

[ध्या०] अस्वार्थं—अस्यां कारिकायां सम्पूर्णा विरुदावली लक्षयति—विरुदावली तावत् कलिकाश्लोकविरुदैस्त्रिभि सम्पद्यते । तत्र कलिकाश्लोकविरुदमिति त्रिक, पञ्चत्रिको-र्ध्वं—पञ्चत्रिक, पञ्चदश तत्रूर्ध्वं एतदारभ्य इत्यर्थं । विषयवधीत्यपेक्षायामुच्यते—त्रिशत्त्रिका-वधि—त्रयस्त्रिंशदवधिश्चेत् क्रियते तदा भ्रूलण्डा विरुदावली भवति । एतादृशी विरुदावली कविभिरिष्यते क्वत् यत्यत इत्यर्थं । यथा श्रुतव्याख्याने तु महती विरुदावली स्यात् । तथा च पञ्चदशादारभ्य त्रिशत्त्रिकं भवतिस्सम्पद्यते, तत्पर्यन्तं सति महती विरुदावली भवतीति । तत्रोक्तस्तथा व्याख्यातमस्माभिरिति सर्वं समञ्जसम् ॥१६॥

यवचित्तु कलिकास्थाने केवल गद्यमिष्यते ।

पदमाद्यन्तयोराशी. प्रधानं मुमनोहरम् ॥ १७ ॥

त्रिचतुःपञ्चकलिका श्लोकास्तावन्त एव हि ।

[ध्या०] इति, साद्धेन श्लोकेन विरुदावलीलक्षणे कस्यचिन्मत उपन्यस्यति । क्वचित्तु-
कस्मादिच्चत् कलिवायां-कलिकास्थाने गद्यमेवोभयत्र केवल सचिरुवं वा भवतीतीष्यते । किञ्च,
आद्यन्तयो-कलिवादिदयो, आशी प्रधान-आशीर्वादीपलक्षित पद्यमतिमुमनोहर भवतीति
च^१ ॥१७॥

[ध्या०] कियन्त्य कलिका, कियत्तश्च श्लोका कार्या इत्यपेक्षायामुच्यते त्रिचतु-
पञ्चकलिका स्वेच्छया कर्त्तव्या । श्लोका अपि तावन्त एव हि स्वेच्छयैव विधेया
इत्युपदेश^२ ।

एतत् सर्वं यथास्थानमस्माभि समुदाहृतम् ॥ १८ ॥

[ध्या०] सुगमम् ॥१८॥

विरुदावलीपाठफलमुपदिशति—

रम्यया विरुदावल्या प्रोक्तलक्षणयुक्तया ।

स्तूयमान प्रमुदित श्रीगोविन्द^३ प्रसीदति ॥ १९ ॥

श्री^४

इति श्रीवृत्तमौक्तिके वात्तिके विरुदावली-

प्रकरण नवमम् ॥१९॥



१. ख 'च' नास्ति । २. ख इत्युपेक्षायामुच्यते । ३. गोवि. वामुदेव । ४ ख.
'श्री' नास्ति ।

दशमं खण्डावली-प्रकरणम्

अथ खण्डावली

आशीःपद्यं यदाद्यन्तयोः^१ स्यात् खण्डावली त्वसौ ।
विनेव विरुदं नानागणभेदैरनेकधा ॥ १ ॥

तत्र-

१. अथ तामरसं खण्डावली

पदे चेद् रगणः सौ च लघुद्वयनिवेशनम् ।
तदा तामरसं नाम साधारणमते भवेत् ॥ २ ॥

[व्या०] घनयोः कारिकयोरयमर्थः । यदा कलिकाया आद्यन्तयोः विरुद विनेव आशीः-
पद्यं भवति तदा नानागणभेदैरनेकधा असौ खण्डावली स्यादित्यन्वयः । किञ्च, तत्र पदे चेत्
रगणो भवति, अथ च सौ-सगणो भवतः, ततो लघुद्वयनिवेशनं-लघुद्वयस्थापनं चेत्-स्यात्तदा
साधारणमते स्वेच्छाकलाविन्यासलक्षणे तामरस इति नाम खण्डावली भवतीति
वाक्यार्थः । १-२॥

यथा-

कलक्वणितवंशिकाविकलनागरीसागरी-
भवद्विषमशायकद्विगुणवृद्धिशुभ्रद्युति ।
पतङ्गतनयातटी-वननटी-भवद्विग्रहं,
नवीनघनमण्डलीरुचिरमाविरास्तां महः ॥
देव !
जय वंशीरवोल्लास ! जय वृन्दावनप्रिय ! ।
जय कृष्ण ! कृपाशील ! जय लीलासुषाम्बुधे ! ॥
वीर !

छन्दसामपि दुर्गमसन्तत-
मिन्दुचिम्बसमानशुभानन !
मन्दहासविकस्वरमुन्दर !
शुन्दकोरषदन्तरुचिद्रज !

सुन्दरोजनमोहनमन्मथ
 चन्दनद्रवरज्यदुर.स्थल
 नन्दनालयशीलितसद्गुण-
 वृन्द कच्छपरूपसमुद्घृत-
 मन्दराचलवाहभुजागल-
 कन्दलीकृतसारसमर्थ पु-
 रन्दरेण चिरं परिवेपितः^१
 नग्दिनाथसमञ्चितदिव्यक-^२
 लिन्दशैलभुताजलजन्पर-
 विन्दकाननकोपकदम्बमि-
 लिन्दशावक निर्जंरनायक
 वृन्दया सह कल्पितकौतुक
 दन्दशूकफणावलिगञ्जन
 चन्द्रिकोज्ज्वलनिर्गलितामृत-
 विन्दुदुर्दिनसूनृतसार मु-
 कुन्ददेव कृपाल^३दशि (दृशि) त्वयि
 किं दुरापमिहास्ति ममेश्वर
 किं दयावरुणालय दुर्जन-
 निन्दयापि जगत्त्रयवत्सल !
 कन्दनीलिमदेहमह कुरु-
 विन्दखण्डजपाकुसुमस्फुरद्
 इन्द्रगोपकबन्धुरिताधर
 चन्द्रकाद्भुतपिच्छशिरस्तद-
 रिन्दम स्वमतिं दयसे यदि
 विन्दते सुखमेन^४जनस्तव
 वन्दिवद्गुणगानकर ध्रुव-
 मिन्दयन् विदितो गहडध्वज
 नन्दयन्निजयासनयानथ
 नन्दगोपकुमार जयीभव ।
 देव !

जय नीपावलीवास जय वेणुमुधाप्रिय ।

जय वल्लभसीभाग्य जय ब्रह्मरसायन ।

धीर ।

पशुपल्लनावल्लीवृन्दै श्रित करपल्लवं-

विपुलपुलकश्रेणि^१स्फीतस्फुरत्कुसुमोद्गम ।

तपनतनयातीरे तीरे तमालतरुप्रभ ,

कलयतु मम क्षेम कश्चिन्नव कमलेक्षणम्^२ ॥१॥

इति तामरस नाम खण्डावली ।१।

२. अथ मञ्जरी खण्डावली

नरेन्द्रवर्जिता यत्र रचिता स्युस्तुरङ्गमा ।

आद्यन्तपदसयुक्ता मञ्जरी सा निगद्यते ॥ ३ ॥

[ध्या०] अस्यार्थ — यत्र-यस्या मञ्जर्या नरेन्द्रेण-जगणेन वर्जिता-रहिता तुरङ्गमा चतुर्विधाश्चतुष्कला रचिता यदि स्यु । किञ्च, आद्यन्तयो पद्याभ्या सयुक्ता चेद् भवति तदा सा मञ्जरीति नामा प्रसिद्धा खण्डावली निगद्यते छान्दसिकैरिति शेष ॥३॥

यथा-

पिशङ्गसिचयाञ्चित चटुलनैचिकीचारक^३,

चमत्कृतदृगञ्चलैश्चलुकिता^४वलानिश्चयम् ।

चलद्दृचिरचन्द्रिकाभरणचुम्बिचूडाञ्चल,

तमालदलमेचक मुचिरमाविरास्ता मह ॥

देव ।

जय लीलामुधासिन्धो । जय शीलादिमन्दिरम^५ ।

जय राधैकसौहाहं जय कन्दर्पविभ्रम ॥

धीर ।

जय जय जम्भारि भुजस्तम्भा-

कलिताहिम्भा-वाहिनजम्भा-^६

मुदवष्टम्भा-पहसररम्भा-^७

श्रय निर्दम्भा-सादितरम्भा-

लघुकुचकुम्भा दरपरिरम्भा-

निधुवनपुम्भा-वप्रारम्भा-

१. ल. धेनी । २. ल. कमलेक्षण । ३. ल. चारक । ४. ल. चुतुकिता । ५. ल. मन्दिर । ६. वाहितदम्भा । ७. ल. पहसरमा ।

धिकसुगसम्भा वनविश्रम्भा-
भापणसम्भारैरिह सम्भा-
वय न सम्भावितमुज्जृम्भा-
म्बुजसदृशम्भापणमधुरम्भा-
रत्यालम्भान्यायतनम्भा-
क्तमुख सम्भासयत ' किम्भा-
लाक्षरसम्भावनया देव !

कुमारपत्रपिच्छेन विराजत्कुन्तलध्रियम् ।
सुकुमारमह वन्दे नन्दगोपकुमारकम् ॥
धीर !

नित्य यन्मधुमन्थरा मधुकरायन्ते सुधास्वादिन-
स्तन्माधुर्यघुरीणतापरिणते प्राय परीक्षाविधिम् ।
क्तुं स्वाग्निसरोरुह करपुटे कृत्वा मुहु सलिहन्,
दोलान्दोलनदोलिताखिलतनु पायाद् यशोदारभक ॥

इति मञ्जरी खण्डावली ।२।

इत्य खण्डावलीना तु भेदा सन्ति सहस्रश ।
साकल्येन मया नोक्ता ग्रन्थविस्तरशङ्कया ॥४॥
सुकुमारमतोना च मार्गदर्शनतो भवेत् ।
विज्ञानमिति मत्सर्वं मया मार्गं प्रदर्शित ॥५॥
सहस्रेण मुखेनैतद् वक्तु शेषोऽपि न क्षम ।
कथमेकमुखेनाहमशेष वाङ्मय ब्रुवे ॥६॥

श्री

इति श्रोतृभोक्तिके वार्तिके खण्डावलीप्रकरण दशमम् ।१०।

श्री

एकादशं दोष-प्रकरणम्

अथ दोषाः

अथैतयोनिरूप्यन्ते दोषाः कविसुखावहाः ।

यान्विदित्वैव सुकविः काव्यं कर्तुं मिहाहंति ॥१॥

[व्या०] अथेति । विरुदावली-खण्डावली-कथनानन्तरमेतयोः-विरुदावली-खण्डावली-भेदयोर्दोषाः निरूप्यन्ते । शेषं सुगमम् ॥१॥

तान् ग्राह-

अमैत्री निरनुप्रासो दीर्घल्यं च कलाहतिः ।

असाम्प्रत हतौचित्यं विपरीतयुतं पुनः ॥ २ ॥

विशृङ्खलं स्खलत्तालं नवदोषान्न वेत्ति यः ।

कुर्याच्चैतत् तमोलोके उलूकोऽसौ भवेन्नरः ॥ ३ ॥

[व्या०] अस्यायं-अमैत्री-अक्षरमैत्रीराहित्यं । निरनुप्रासः-अनुप्रासाभावः । दीर्घल्यं-द्वयवर्णता इति नियदेनैव व्याख्यातं । कलाहतिः-अन्यपदे पूर्ववर्णस्थानेऽन्यवर्णपाठः । यया-

कमलवदन सुविमलजल ।

रञ्जितरण सञ्जितगुण ।

अयुक्तवर्णनं-हतौचित्यं । स्पष्टमुदाहरणम् । श्लिष्टवर्णस्थाने मधुरवर्णस्थितिः, मधुरस्थाने वा श्लिष्टस्थापनं, विपरीतयुतं । विशृङ्खलं-भ्रूनाधिकश्लिष्टादिवर्णानां प्रथमम् । स्खलत्तालं-यतिभ्रष्टं लक्षणानुसाराद् ऊह्यानि उदाहरणानि । इत्येतावन्नवदोषान् यः कविः न वेत्ति-न जानाति अथिद्वांश्च यदि एतन्-पूर्वोक्तं विरुदावली-खण्डावलीलक्षणं यो नरः-कविः काव्यं कुर्यात् तदा तमोलोके-गाढान्यकाराज्ञानलक्षणे लोके असौ उलूको-दिवान्यःपक्षी भवेदित्यर्थः । तस्माद् दोषज्ञाने महान् गुणः, तद्व्यपरीत्ये महद्विषट् इत्यन्वयस्यतिरेकसिद्धोऽयमर्थः । इति सर्वं निर्मलं मङ्गलम् ।

लक्ष्मीनाथतनूजेन चन्द्रशेखरसूरिणा ।

छन्दःशास्त्रे विरचितं वार्तिकं वृत्तमौक्तिकम् ॥

इति दोषनिरूपण-प्रकरणमेकादशम् ॥११॥

द्वादशं अनुक्रमणी - प्रकरणम्

प्रथमखण्डानुक्रमणी -

रचिकर-पञ्चपति-पिङ्गल-शम्भुग्रन्थान् विलोक्य निर्वन्धान् ।
सद्वृत्तमौखितकमिदं चक्रे श्रीचन्द्रशेखरः सुकविः ॥ १ ॥

अथाऽभिधीयते चाऽत्राऽनुक्रमो वृत्तमौखितके ।
अत्र खण्डद्वयं प्रोक्तं मात्रा-वर्णात्मकं पृथक् ॥ २ ॥

तत्र मात्रावृत्तखण्डे प्रथमेऽनुक्रमः स्फुटम् ।
प्रोच्यते यत्र विज्ञाते समूहालम्बनात्मिकम् ॥ ३ ॥

ज्ञानं भवेदखण्डस्य^१ खण्डस्य^२ छन्दसोऽपि च ।
मङ्गलाचरणं पूर्वं ततो गुरुलघुस्थितिः ॥ ४ ॥

तयोर्दाहृतिं पश्चात् तद् विकल्पस्य कल्पनम् ।
काव्यलक्षणवैलक्ष्ये अनिष्टफलवेदनम् ॥ ५ ॥

गणव्यवस्थामात्राणां प्रस्तारद्वयलक्षणम् ।
मात्रागणानां नामानि कथितानि ततः स्फुटम् ॥ ६ ॥

वर्णवृत्तगणानां च लक्षणं स्यात् ततः परम् ।
तद्देवता च तन्मैत्री तत्फलं चाप्यनुक्रमात् ॥ ७ ॥

मात्रोद्दिष्टं च तत्पश्चात्तद्विष्टस्याय कीर्तनम् ।
वर्णोद्दिष्टं ततो ज्ञेयं वर्णनष्टमतः परम् ॥ ८ ॥

वर्णमेरुश्च तत्पश्चात् तत्पताका प्रकीर्तिता ।
मात्रामेरुश्च तत्पश्चात् तत्पताका प्रकीर्तिता ॥ ९ ॥

ततो वृत्तद्वयस्यस्य गुरोर्ज्ञानं लघोरपि ।
वर्णस्य मर्कटी पश्चात् मात्रायाश्चापि मर्कटी ॥ १० ॥

तयोः फलं च कथितं पट्प्रकारं समासतः ।
ततस्त्वेकाक्षरादेश्च पट्विंशत्यक्षरावधेः ॥ ११ ॥

प्रस्तारस्यापि संख्याऽत्र पिण्डीभूता प्रकीर्तिता ।
ततो गायान्दिभेदानां कलासंख्या प्रकीर्तिता ॥ १२ ॥

गाथोदाहरणं पदचात् सप्रभेदं सलक्षणम् ।
 विगाथा च तथा ज्ञेया ततो गाहू प्रकीर्तिता ॥ १३ ॥
 अथोद्गाथा गाहिनी च सिहिनी च ततः परम् ।
 स्कन्धकं चापि कथितं सप्रभेदं सलक्षणम् ॥ १४ ॥
 इति गाथाप्रकरणं प्रथमं वृत्तमौक्तिके ।
 द्वितीयं षट्पदस्याथ द्विपद्या तत्र संस्थिता ॥ १५ ॥
 सलक्षणा सप्रभेदा रसिका स्यात् ततः परम् ।
 अथ रोला समाख्याता गन्धाणा स्यात् ततः परम् ॥ १६ ॥
 चौर्पया च ततः प्रोक्ता ततो घत्ता प्रकीर्तिता ।
 घत्तानन्दमतः काव्यं सोल्लालं सप्रभेदकम् ॥ १७ ॥
 पट्पदं च ततः प्रोक्तं सप्रभेदमतः परम् ।
 काव्यपट्पदयोश्चापि दोषाः सम्यङ् निरूपिताः ॥ १८ ॥
 प्राकृते संस्कृते चापि दोषाः कविमुखावहाः ।
 द्वितीयं पट्पदस्यैतत् प्रोक्तं प्रकरणं त्विह ॥ १९ ॥
 अथ रङ्गाप्रकरणं तृतीयं परिकीर्त्यते ।
 तत्र पञ्चटिकाछन्दोऽडिल्लाछन्दस्ततः परम् ॥ २० ॥
 ततस्तु पादाकुलकं चौबोला - छन्द एव च ।
 रङ्गाछन्दस्ततः प्रोक्तं भेदाः सप्तैव चास्य तु ॥ २१ ॥
 रङ्गाप्रकरणं चैव तृतीयमिह कीर्तितम् ।
 पद्यावतीप्रकरणं घतुर्थमयं कथ्यते ॥ २२ ॥
 तत्र पद्यावती पूर्वं ततः कुण्डलिका भवेत् ।
 गगनाङ्ग ततः प्रोक्तं द्विपदी च ततः परम् ॥ २३ ॥
 ततस्तु भुल्लणा-छन्दः खञ्जा-छन्दस्ततः परम् ।
 शिखाछन्दस्ततश्च स्यात् मालाछन्दस्ततो भवेत् ॥ २४ ॥
 ततस्तु पुलिभाला स्यात् सोरठा तदनन्तरम् ।
 हाकलीमधुभारश्चाऽऽभीरश्च स्यादनन्तरम् ॥ २५ ॥
 अथ दण्डकला प्रोक्ता ततः कामकला भवेत् ।
 दधिरास्य ततश्छन्दो दीपकश्च ततः स्मृतम् ॥ २६ ॥
 सिंहावलीकितं छन्दस्ततश्च स्यात् प्लवङ्गमः ।
 अथ सीसावतीछन्दो हरिगीत ततः स्मृतम् ॥ २७ ॥

हरिगीतं^१ ततः प्रोक्तं मनोहरमतः परम् ।
हरिगीता ततः प्रोक्ता यतिभेदेन या स्थिता ॥ २८ ॥
अथ त्रिभङ्गी छन्दः स्यात् ततो दुर्मिलका भवेत् ।
हीरच्छन्दस्ततः प्रोक्तमथो जनहरं मतम् ॥ २९ ॥
ततः स्मरगृहं छन्दो मरहट्टा ततः स्मृता ।
पद्मावतोप्रकरणं चतुर्थमिह कीर्तितम् ॥ ३० ॥
सर्वैयाख्य प्रकरण पञ्चमं परिकीर्त्यते ।
तत्र पूर्वं सर्वैयाख्यं छन्दः स्यादतिसुन्दरम् ॥ ३१ ॥
भेदास्तस्यापि कथिता रससंख्या मनोहराः ।
ततो घनाक्षरं वृत्तमतिसुन्दरमीरितम् ॥ ३२ ॥
पञ्चमं तु प्रकरणं सर्वैयाख्यमिहोदितम् ।
अथो गलितकाख्यं तु षष्ठं प्रकरणं भवेत् ॥ ३३ ॥
पूर्वं गलितकं तत्र ततो विगलितं मतम् ।
अथ सङ्गलित श्रेयमतः सुन्दर-पूर्वकम् ॥ ३४ ॥
भूपणोपपद तच्च मुखपूर्वं ततः स्मृतम् ।
विलम्बितागलितक समपूर्वं ततो मतम् ॥ ३५ ॥
द्वितीय समपूर्वं चापर सङ्गलित ततः ।
अथापर गलितकं लम्बितापूर्वकं भवेत् ॥ ३६ ॥
विक्षिप्तिकागलितक ललितापूर्वकं ततः ।
ततो विपमितापूर्वं मालागलितकं ततः ॥ ३७ ॥
मुग्धमालागलितकमथोद्गलितकं भवेत् ।
षष्ठं गलितकस्यैतत् प्रोक्तं प्रकरणं शिवम् ॥ ३८ ॥
रन्ध्रसूयशिवसख्यात् (७९) मात्रावृत्तमिहोदितम् ।
सप्रभेदं वसुद्वन्द्व-शतद्वय-(२८८) मुदीरितम् ॥ ३९ ॥
तथा प्रकरणं चात्र रससख्यं^२ प्रकीर्तितम् ।
मात्रावृत्तस्य खण्डोऽयं प्रथमः परिकीर्तितः ॥ ४० ॥

इति प्रथमखण्डानुक्रमणिका ।

द्वितीयखण्डानुक्रमणी

अथ द्वितीयखण्डस्य वर्णवृत्तस्य च क्रमात् ।
 वृत्तानुक्रमणी स्पष्टा क्रियते वृत्तभौतिके ॥ १ ॥
 आरभ्यैकाक्षरं वृत्तं षड्विंशत्यक्षरावधि ।
 तत्तत्प्रस्तारगत्याऽत्र वृत्तानुक्रमणी स्थिता ॥ २ ॥
 तत्र श्रीनामकं वृत्तं प्रथमं परिकीर्तितम् ।
 तत इः कथितं वृत्तं द्वौ भेदावत्र कीर्तितौ ॥ ३ ॥
 एकाक्षरे, द्व्यक्षरे तु पूर्वं कामस्ततो मही ।
 ततः सारं मधुश्चेति भेदाश्चत्वार एव हि ॥ ४ ॥
 त्र्यक्षरे चात्र ताली स्यान्नारी चापि शशी ततः ।
 ततः प्रिया समाख्याता रमणः स्यादनन्तरम् ॥ ५ ॥
 पञ्चालश्च मृगेन्द्रश्च मन्दरश्च ततः स्मृतः ।
 कमलं चेति ज्ञात्र स्युरष्टौ भेदाः प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥
 अथातो द्विगुणा भेदाश्चतुर्वर्णादिषु स्थिताः ।
 यथासम्भवमेतेषामाद्यान्तानुक्रमात् स्फुटम् ॥ ७ ॥
 वृत्तानुक्रमणी सेयमङ्कसंकेततः कृता ।
 प्रतिप्रस्तारविस्तारं षड्विंशत्यक्षरावधि ॥ ८ ॥

तत्र-

चतुर्वर्णप्रभेदेषु तीर्णा कन्याऽपि चान्यतः ।
 धारी^१ ततस्तु विख्याता नगाणी च ततः परम् ॥ ९ ॥
 शुभं चेति समाख्यातामत्र भेदचतुष्टयम् ।
 शेषभेदा न संप्रोक्ता ग्रन्थविस्तरशङ्कया ॥ १० ॥
 प्रस्तारगत्या ते भेदाः षोडशैव व्यवस्थिताः ।
 सुधीमिरूह्याः प्रस्तारं यथाशास्त्रमशेषतः ॥ ११ ॥
 अथ पञ्चाक्षरे^२ पूर्वं सम्मोहा वृत्तमीरितम् ।
 हारी ततः समाख्याता ततो हंसः प्रकीर्तितः ॥ १२ ॥

प्रिया ततः समाख्याता यमकं तदनन्तरम् ।
 प्रस्तारगत्या चैवाऽत्र भेदा द्वाविंशदीरिताः (३२) ॥ १३ ॥
 षडक्षरेऽपि पूर्वं तु शेषाख्यं वृत्तमीरितम् ।
 ततः स्यात्तिलका वृत्तं विमोहं तदनन्तरम् ॥ १४ ॥
 विजोहे 'त्यन्यतः स्यातं चतुरसमतः परम् ।
 पिङ्गले चउरंसेति स्त्रीलिङ्गं परिकीर्तितम् ॥ १५ ॥
 मन्थान च ततः प्रोक्तं मन्यानेत्यन्यतो भवेत् ।
 दाह्वनारी ततः प्रोक्ता सोमराजीति चान्यतः ॥ १६ ॥
 स्यात् सुमालतिका चात्र मालतीति च पिङ्गले ।
 तनुमध्या ततः प्रोक्ता ततो दमनकं भवेत् ॥ १७ ॥
 प्रस्तारगत्या चाप्यत्र भेदा वेदरसमंताः (६४) ।
 अथ सप्ताक्षरे पूर्वं क्षीपरिय वृत्तमीरितम् ॥ १८ ॥
 ततः समानिका वृत्तं ततोऽपि च सुवासकम् ।
 करहृन्च ततः प्रोक्तं कुमारललिता ततः ॥ १९ ॥
 ततो मधुमती प्रोवता मदलेपा ततः स्मृता ।
 ततो वृत्तं तु कुसुमततिः स्यादतिसुन्दरम् ॥ २० ॥
 प्रस्तारगतिभेदेन वसुनेत्रात्मजैरिता (१२८) ।
 भेदाः सप्ताक्षरस्यान्या कृह्याः प्रस्तायं परिणतैः ॥ २१ ॥
 अथ यस्वक्षरे पूर्वं विद्युन्माला विराजते ।
 ततः प्रमाणिका ज्ञेया मल्लिका तदनन्तरम् ॥ २२ ॥
 तुङ्गावृत्तं ततः प्रोक्तं कमलं तदनन्तरम् ।
 माण्यकत्रीहितकं ततश्चित्रपदा मता ॥ २३ ॥
 ततोऽनुष्टुप् समारख्याता जलद च ततः स्मृतम् ।
 अथ प्रस्तारगत्यैव रसबाणयुगमंताः (२५६) ॥ २४ ॥
 भेदा वग्वक्षरे शेषाः सूचनीयाः शुबुद्धिभिः ।
 नवाक्षरेऽप्य पूर्वं स्याद् रपागाला मनोरमा ॥ २५ ॥
 ततो महालक्ष्मिणा स्यात् सारङ्गं तदनन्तरम् ।
 सारङ्गिणा पिङ्गले तु पादन्नं तदनन्तरम् ॥ २६ ॥

पाइन्ता पिङ्गलै तु स्यात् कमलं तदनन्तरम् ।
 [बिम्बवृत्तं ततः प्रोक्तं तोमरं तदनन्तरम्] १ ॥ २७ ॥
 भुजगशिगुसृतावृत्तं मणिमध्यं ततः स्मृतम् ।
 भुजङ्गसङ्गता च स्यात् ततः सुललितं स्मृतम् ॥ २८ ॥
 प्रस्तारगत्या चात्रास्य नेत्रचन्द्रशरैरपि (५१२) ।
 भेदा नवाक्षरे शिष्टाः सूचनीयाः सुबुद्धिभिः ॥ २९ ॥
 अथ पंक्त्यर्णके पूर्वं गोपालः परिकीर्तितः ।
 संयुतं कथितं पश्चात् ततश्चम्पकमालिका ॥ ३० ॥
 क्वचिद् रुक्मवती चैयं क्वचिद् रूपवेतीति च ।
 ततः सारवती च २ स्यात् सुपमा तदनन्तरम् ॥ ३१ ॥
 ततोऽमृतगतिः प्रोक्ता मत्ता स्यात्तदनन्तरम् ।
 पूर्वमुक्ताऽमृतगतिः सा चेद् यमकिता भवेत् ॥ ३२ ॥
 प्रतिपादं तदोक्तैषा त्वरिताऽनन्तरं गतिः ।
 मनोरमं ततः प्रोक्तमन्यत्र च मनोरमा ॥ ३३ ॥
 ततो ललित-पूर्वं तु गतीति समुदीरितम् ।
 प्रस्तारान्त्यं सर्वलघुवृत्तमत्यन्तसुन्दरम् ॥ ३४ ॥
 प्रस्तारगत्या भेदाः स्युः तत्त्वाकाशात्मसंख्यकाः (१०२४) ।
 दशाक्षरेऽपरे भेदाः सूच्याः प्रस्तार्यं पण्डितैः ॥ ३५ ॥
 अथ रुद्राक्षरे ३ पूर्वं मालतीवृत्तमीरितम् ।
 ततो बन्धुः समाख्यातो ह्यन्यत्र दोधकं भवेत् ॥ ३६ ॥
 ततस्तु सुमुखीवृत्तं शालिनी स्यादनन्तरम् ।
 वातोर्मी तदनु प्रोक्ता छन्दःशास्त्रविशारदैः ॥ ३७ ॥
 परस्परं चेतयोश्चेत् पादा एकत्रयोजिताः ।
 तदोपजातिनामानो भेदास्ते च ४ चतुर्दश ॥ ३८ ॥
 ततो दमनकं प्रोक्तं चण्डिका तदनन्तरम् ।
 सेनिका श्रेणिका चेति तथा नामान्तरं क्वचित् ॥ ३९ ॥
 नाममात्रे परं भेदः फलतो न तु किञ्चन ।
 इन्द्रवज्रा ततः प्रोक्ता ततश्चोपेन्द्रपूर्विका ॥ ४० ॥

१. [-] कोष्ठगतौनो नास्ति क. ख. प्रती । २ ख. 'ततः सारवती च' नास्ति । ३. क. रुद्राक्षरैः । ४. ख, तु ।

उपजातिस्ततः प्रोक्ता पूर्वोक्तेनैव वर्त्मना ।
 भेदाश्चतुर्दशैतस्याः विज्ञेयाः पिण्डतो बहिः ॥ ४१ ॥
 ततो रथोद्धतावृत्तं स्वागतावृत्ततस्तथा ।
 भ्रमरान्ते विलसिताऽनुकूला च ततो भवेत् ॥ ४२ ॥
 ततो मोट्टनकं^१ वृत्तं सुकेशी च ततो भवेत् ।
 ततः सुभद्रिकावृत्तं बकुलं कथितं ततः ॥ ४३ ॥
 ह्रस्वसंख्याक्षरे भेदा वसुधेदणनेत्रकः (२०४८) ।
 प्रस्तारगत्या जायन्ते शिष्टान् प्रस्तार्य सूचयेत् ॥ ४४ ॥
 अथ रव्यक्षरे पूर्वमापीडः कथितोऽन्यतः ।
 विद्याधरस्ततश्च स्यात् प्रयातं भुजगादनु ॥ ४५ ॥
 ततो लक्ष्मीधरं वृत्तमन्यत्र स्रग्विणी ततः ।
 तोटकं स्यात् ततः सारङ्गकं मौक्तिकदामतः ॥ ४६ ॥
 मोदकं सुन्दरी चापि ततः स्यात् प्रमिताक्षरा ।
 चन्द्रवर्त्म ततो ज्ञेयमतो द्रुतविलम्बितम् ॥ ४७ ॥
 ततस्तु वंशस्थविला क्वचित् क्लीबमिदं भवेत् ।
 क्वचित् वंशस्तनितमिन्द्रवशा ततो भवेत् ॥ ४८ ॥
 अनयोरपि चैकत्रपादानां योजनं यदि ।
 तदोपजातयो नाम भेदाः स्युस्ते चतुर्दश ॥ ४९ ॥
 सर्वत्रैवं स्वल्पभेदे भवन्तीहोपजातयः ।
 वृत्ताभ्यामल्पभेदाभ्यामुपदेशः पितुर्मम ॥ ५० ॥
 ततो जलोद्धतगतिर्वेश्वदेवी ततो मता ।
 मन्दाकिनी ततो ज्ञेया वतः कुसुमचित्रिता ॥ ५१ ॥
 ततस्तामरस वृत्तं ततो भवति मालती ।
 कुत्रचिद् यमुना चेति भणिमाला ततो भवेत् ॥ ५२ ॥
 ततो जलधरमाला स्यात् ततश्चापि प्रियवदा ।
 ततस्तु ललिता सर्व सुपूर्वान्यत्र लक्षिता ॥ ५३ ॥

ततोऽपि ललितं वृत्तं ललनेत्यपि च क्वचित् ।
 कामदत्ता ततः प्रोक्ता ततो वसन्तचत्वरम् ॥ ५४ ॥
 प्रमुदितवदना-मन्दाकिन्योर्भेदो न वास्तवो घटितः ।
 नामान्तरेण भेदो गणतो यदितो न चोद्दिष्टः ॥ ५५ ॥^१
 प्रमुदिताद्बुद्ध्वं^२ वदने^३ वदनाऽन्यत्र च प्रभा ।
 विख्याता कविमुख्यैस्तु ततः स्यान्नवमालिनी ॥ ५६ ॥
 सर्वान्त्यं नयनात् पूर्वं तरलं वृत्तमीरितम् ।
 अत्र प्रस्ताररीत्या तु भेदा रव्यक्षरे स्थिताः ॥ ५७ ॥
 रसरन्ध्रखवेदैस्तु (४०६६) शेषाः सूच्याः^४ सुबुद्धिभिः ।
 त्रयोदशाक्षरे पूर्वं वाराहः कथितो मया ॥ ५८ ॥
 मायावृत्तं ततस्तु स्यात् क्वचिन्मत्तमयूरकम् ।
 ततस्तु तारकं वृत्तं कन्दं पङ्कावली तथा ॥ ५९ ॥
 ततः प्रहृषिणीवृत्तं रुचिरा तदनन्तरम् ।
 चण्डीवृत्तं ततः प्रोक्तं ततः स्यान्मञ्जुभाषिणी ॥ ६० ॥
 शम्भौ सुनन्दिनी चैयं चन्द्रिका तदनन्तरम् ।
 क्वचिदुत्पलिनीवृत्तं चन्द्रिकं वोच्यते बुधैः ॥ ६१ ॥
 कलहंसस्ततश्च स्यात् सिहनादोप्ययं क्वचित् ।
 ततो मृगेन्द्रवदनं क्षमा पश्चात् ततो लता ॥ ६२ ॥
 ततस्तु चन्द्रलेखाख्यं चन्द्रलेखेत्यपि क्वचित् ।
 ततश्च सुद्युतिः पश्चाल्लक्ष्मीवृत्तं मनोहरम् ॥ ६३ ॥
 ततो विमल-पूर्वं तु गतीतिरुचिरं भवेत् ।
 प्रस्तारान्त्यं वृत्तमेतद् भावितं कविपुङ्गवैः ॥ ६४ ॥
 प्रस्तारगत्या विज्ञेया भेदाः कामाक्षरे बुधैः ।
 नैत्रप्रहेन्दुवसुभिः (८१६२) शेषान् प्रस्तार्यं सूचयेत् ॥ ६५ ॥
 अथ मन्वक्षरे पूर्वं सिहास्यः कथितो बुधैः ।
 ततो वसन्ततिलका ततश्चक्रं प्रकीर्तितम् ॥ ६६ ॥
 घसम्बाधा ततश्च स्यात् ततः स्यादपराजिता ।
 कलिकान्तं प्रहरणं वासन्ती स्यादनन्तरम् ॥ ६७ ॥

१. पठं भक्ति क. प्रभो । २. श. प्रमुदितशब्दस्यान्ते । ३. क. वान्ते । ४. छ. शेषान्प्रहाराः ।

लोला नान्दीमुखी तस्माद् वैदर्भी तदनन्तरम् ।
 प्रसिद्धमिन्दुवदन स्त्रीलिङ्गमिदमन्यत ॥ ६८ ॥
 ततस्तु शरभी प्रोक्ता ततश्चाहिधृतिः स्थिता ।
 ततोऽपि विमला शेषा मल्लिका तदनन्तरम् ॥ ६९ ॥
 ततो मणिगण वृत्तमन्य मन्वक्षरे भवेत् ।
 प्रस्तारगत्या चात्रापि भेदा वेदाप्ततो गुणा ॥ ७० ॥
 रसेन्दुप्रमिताश्चापि (१६३८४) विज्ञेया कविशेखरैः ।
 यथासम्भवसम्प्रोक्ता शेषास्तूह्या स्वबुद्धित ॥ ७१ ॥
 लीलाखेलमथो वक्ष्ये वृत्त पञ्चदशाक्षरे ।
 सारङ्गिकेति यत्राम पिङ्गले प्रोक्तमुत्तमम् ॥ ७२ ॥
 ततस्तु मालिनीवृत्त तत स्याच्चाह चामरम् ।
 तूष्णक चान्यतश्चापि भ्रमरावलिका तत ॥ ७३ ॥
 भ्रमरावली पिङ्गले स्यान् मनोहसस्ततस्तत ।
 शरभ वृत्तमन्यत्र मता दाशिकलेति च ॥ ७४ ॥
 मणिगुणनिकर स्रगिति च भेदी द्वावस्य यतिवृत्तो भवत ।
 तत्प्रभेवाभिहित वृत्तद्वयमस्य शरमतो न भिदा ॥ ७५ ॥
 ततस्तु निशिपालाख्य विपिनात्तिलक तत ।
 चन्द्रलेखा तत प्रोक्ता चण्डलेखाऽपि चान्यत ॥ ७६ ॥^१
 ततश्चित्रा समाख्याता चित्र चान्यत्र कीर्तितम् ।
 ततस्तु वसर वृत्तमेला स्यात्तदनन्तरम् ॥ ७७ ॥
 तत प्रिया समाख्याता यतिभेदादलि पुन ।
 उत्सवस्तु तत प्रोक्तस्ततश्चोद्गुण मतम् ॥ ७८ ॥
 प्रस्तारगत्या सम्प्रोक्ता भेदा पञ्चदशाक्षरे ।
 यमुदासत्राश्वनेत्राग्निप्रमिता (३२७६८) कविपण्डितं ॥ ७९ ॥
 प्रस्तार्यं शेषभेदास्तु वृत्त्या नामानि च स्यत ।
 अस्मदीयापदेशेन सूचनीया सुबुद्धिभि ॥ ८० ॥
 यद्य प्रथमतो राम प्रस्तारे षोडशाक्षरे ।
 ब्रह्मरूपकमित्यस्य नाम प्रोक्त च पिङ्गले ॥ ८१ ॥

नराचमिति यन्नाम ततः स्यात् पञ्चचामरम् ।
 ततो नीलं समाख्यातं ततः स्याच्चञ्चलाभिधम् ॥ ८२ ॥
 इदमेवान्यतश्चित्रसङ्गमित्येव भाषितम् ।
 ततस्तु मदनादूर्ध्वं ललिता स्यादनन्तरम् ॥ ८३ ॥
 वाणिनीवृत्तमाख्यातं प्रवराल्ललितं ततः ।
 अनन्तरं तु गरुडरुतं स्याच्चकिता ततः ॥ ८४ ॥
 चकितं व यतिविभेदात् क्वचिदपि गजतुरगविलसितं भवति ।
 क्वचिदिदमेव ऋषभगजविलसितमिति नाम संघटो ॥ ८५ ॥
 ततः शैलशिखावृत्तं ततस्तु ललितं मतम् ।
 ततः सुकेशरं वृत्तं ललिता स्यादनन्तरम् ॥ ८६ ॥
 ततो गिरिधृतिः कुत्राप्यचलानन्तरं धृतिः ।
 प्रस्तारगल्पैवात्रापि भेदाः स्युः षोडशाक्षरे ॥ ८७ ॥
 रसाग्निपञ्चेपुरसंः (६५५३६) मिताः प्रख्यातबुद्धिभिः ।
 प्रस्तार्यं सूच्याश्चान्येपि भेदा इत्युपदिश्यते ॥ ८८ ॥
 अथ सप्तदशे वर्णप्रस्तारे वृत्तमीर्यते ।
 लीलाधृष्टं प्रथमतस्ततः पृथ्वी प्रकीर्तिता ॥ ८९ ॥
 ततो मालावतीवृत्तं मालाधर इति क्वचित् ।
 ततः शिखरिणीवृत्तं हरिणीवृत्ततस्तथा ॥ ९० ॥
 मन्दात्रान्ता वंशपत्रपतितं पतिता क्वचित् ।
 शम्भौ तु वंशवदनमेतन्नाम प्रकीर्तितम् ॥ ९१ ॥
 ततो नहुँटकं वृत्तं यतिभेदात् कोकिलम् ।
 ततस्तु हारिणीवृत्तं भारान्ता ततो भवेत् ॥ ९२ ॥
 मतङ्गवाहिनीवृत्तं ततः स्यात् पद्मकं तथा ।
 दशशब्दान्मुखहरमिति वृत्तं समीरितम् ॥ ९३ ॥
 प्रस्तारगत्या भेदाः स्युरत्र सप्तदशाक्षरे ।
 नेत्राश्वय्योमचन्द्राग्निचन्द्रैः (१३१०७२) परिमिताः परे ॥ ९४ ॥
 भेदाः सुबुद्धिभिस्तूह्याः प्रस्तार्यं स्वमनीषया ।
 अथाष्टादशवर्णानां प्रस्तारे प्रथमं भवेत् ॥ ९५ ॥

लोलाचन्द्रस्ततश्च स्यान्मञ्जीरा चर्चरी तत ।
 श्रीडाचन्द्रस्ततश्च स्यात् तत कुसुमिताल्लता ॥ ६६ ॥
 ततस्तु नन्दन वृत्त नाराच स्यादनन्तरम् ।
 मञ्जुलेत्यन्यत प्रोक्ता चित्रलेखा ततो भवेत् ॥ ६७ ॥
 ततस्तु भ्रमराच्चापि पदमित्यतिगुन्दरम् ।
 शादूलललित पश्चात् ततः सुललित भवेत् ॥ ६८ ॥
 अनन्तर चोपवनकुसुम वृत्तमीरितम् ।
 अत्र प्रस्तारगतितो भेदा ह्यष्टादशाक्षरे ॥ ६९ ॥
 वेदश्रुत्यवनीनेत्ररसयुगमं (२६२१४४)मिता मता ।
 शेषा स्वबुद्ध्या प्रस्तार्य विज्ञेया स्वगुरुकित्त ॥ १०० ॥
 अथ प्रथमतो नागानन्दश्चैकोनविंशके ।
 शादूलानन्तरं विक्रीडित वृत्त तत स्मृतम् ॥ १०१ ॥
 ततश्चन्द्र समाख्यात चन्द्रमालेति च क्वचित् ।
 ततस्तु धवल वृत्त धवलेति च पिङ्गले ॥ १०२ ॥
 तत शम्भु समाख्यातो मेघविस्फूर्जिता तत ।
 छायावृत्त ततश्च स्यात् सुरसा तदनन्तरम् ॥ १०३ ॥
 फुल्लदाम ततश्च स्यान्मदुलात् कुसुम तत ।
 प्रस्तारगत्या भेदाश्चैकोनविंशाक्षरे कृता ॥ १०४ ॥
 वस्वष्टनेत्रश्रुतिदूग्भूर्त (५२४२८८) परिमिता परे ।
 भेदा प्रस्तार्य बोद्धव्या स्वबुद्ध्या शुद्धबुद्धिभि ॥ १०५ ॥
 अथ विंशाक्षरे पूर्वं योगानन्द समीरित ।
 ततस्तु गीतिकावृत्त गण्डका तदनन्तरम् ॥ १०६ ॥
 गण्डकैव क्वच्चित्रवृत्तमन्यत्र वृत्तकम् ।
 शोमावृत्त तत प्रोक्त तत सुवदना भवेत् ॥ १०७ ॥
 प्लवङ्गभङ्गाच्च पुनर्मङ्गल वृत्तमुच्यते ।
 तत शशाङ्कचलित ततो भवति भद्रकम् ॥ १०८ ॥
 ततो गुणगण वृत्तमन्य स्यादतिसुन्दरम् ।
 प्रस्तारगत्या चात्रत्या भेदा रसमुनीपुभि ॥ १०९ ॥

वसुवेदखचन्द्रैश्च (१०४८५७६) मिता स्युहचापरे' बुधे ।
 प्रस्तार्यं बुद्ध्या ससूच्या छन्दशास्त्रविशारदै ॥ ११० ॥
 अथैकविंशत्यक्षरेऽस्मिन् ब्रह्मानन्दादनन्तरम् ।
 स्रग्धरा मञ्जरी च स्यान्नरेन्द्रस्तदनन्तरम् ॥ १११ ॥
 ततस्तु सरसीवृत्तं क्वचित् सुरतरुर्भवेत् ।
 सिद्धकचान्यतः प्रोक्तं रुचिरा तदनन्तरम् ॥ ११२ ॥
 ततश्च स्यान्निरुपमतिलकवृत्तमन्त्यगम् ।
 प्रस्तारगत्या चात्रापि भेदा नेनेपुचन्द्रकै ॥ ११३ ॥
 मुनिरन्ध्रखनेत्रैश्च (२०६७१५२) विज्ञेया कविशेखरै ।
 प्रस्तार्यान्त्यसमुन्नेय भेदजात सुबुद्धिभि ॥ ११४ ॥
 अथ प्रथमतो विद्यानन्दवृत्तमृदीरितम् ।
 द्वाविंशत्यक्षरे हसीवृत्तं स्यात्तदनन्तरम् ।
 ततस्तु मदिरावृत्तं मन्द्रकं तदनन्तरम् ॥ ११५ ॥
 तदेव यतिभेदेन शिखरं परिकीर्तितम् ।
 ततः स्यादच्युतवृत्तं मदालसमनन्तरम् ॥ ११६ ॥
 ततस्तस्वरुवरवृत्तमन्त्यं भवति सुन्दरम् ।
 प्रस्तारगत्यैवात्रापि भेदा वेदस्त्रवह्निभि ॥ ११७ ॥
 वेदग्रहेन्दुवेदैश्च (४१६४३०४) भवन्तीति विनिश्चितम् ।
 तथैवाभ्येपि ये भेदास्ते प्रस्तार्यं स्वबुद्धित ॥ ११८ ॥
 सूचनीया कविवरैः छन्दशास्त्रविशारदै ।
 अथात्र त्र्यधिके विंशत्यक्षरे पूर्वमुच्यते ॥ ११९ ॥
 दिव्यानन्दसर्वगुरुस्ततः सुन्दरिका भवेत् ।
 ततस्तु यतिभेदेन सैव पद्मावती भवेत् ॥ १२० ॥
 ततोऽद्विद्वितनया प्रोक्ता सैवाश्वल्लितं क्वचित् ।
 ततस्तु मालतीवृत्तं मल्लिका स्यादनन्तरम् ॥ १२१ ॥
 मत्ताक्रीडं ततः प्रोक्तं कनकाद्वलयं ततः ।
 प्रस्तारगतितो भेदास्त्रयोविंशत्यक्षरे स्थिता ॥ १२२ ॥
 वसुधोमरसक्षमाभूदवस्वग्निसुभिर्मिता (८३८८६०८) ।
 शेषभेदा सुधीभिस्तु सूच्या प्रस्तार्यं शास्त्रत ॥ १२३ ॥

अथ तत्त्वाक्षरे पूर्वं रामानन्दोऽयं दुर्मिला ।
 किरीटं तु ततः प्रोक्तं ततस्तन्वीं प्रकीर्तिता ॥ १२४ ॥
 ततस्तु माधवीवृत्तं तरलाञ्जयनं ततः ।
 अथ प्रस्तारभेदेन भेदा पङ्कभूमियुग्मकं ॥ १२५ ॥
 सप्तपिमुनिशास्त्रेन्दु (१६७७७२१६) मिता स्युरपरे पुनः ।
 गुरुपदेशमार्गेण सूचनीया मनीषिभिः ॥ १२६ ॥
 अथ पञ्चाधिके विशत्यक्षरे पूर्वंमुच्यते ।
 कामानन्दस्तत् क्रीञ्चपदा मल्ली ततो भवेत् ॥ १२७ ॥
 ततो मणिगण वृत्तमिति वृत्तचतुष्टयम् ।
 प्रस्तारगत्या चात्रापि भेदा नेत्राग्निस्तिग्धुभिः ॥ १२८ ॥
 वेदपञ्चेपुवह्निभ्यामपि (३३५५४४३२) स्युरपरेपि च ।
 छन्दशास्त्रोक्तमार्गेण सूचनीया स्वबुद्धितः ॥ १२९ ॥
 पङ्क्तिभिरभ्यधिके विशत्यक्षरेऽप्ययं गच्छते ।
 श्रीगोविन्दानन्दसज्ञं वृत्तमल्पन्तसुन्दरम् ॥ १३० ॥
 ततो भुजङ्गपूर्वं तु विजृम्भितमिति स्मृतम् ।
 अपवाहस्ततो वृत्तं मागधी तदनन्तरम् ॥ १३१ ॥
 ततश्चान्त्यं भवेद् वृत्तं कमलाऽनन्तरं दलम् ।
 प्रस्तारगत्या चात्रत्या भेदा सम्यग् विभाविता ॥ १३२ ॥
 वेदशास्त्रवसुद्वन्द्वस्त्रेन्दुशवरससूचिता । (६७१०८८६४) ।
 प्रस्तार्यं शास्त्रमार्गेणापरे सूच्या स्वबुद्धितः ॥ १३३ ॥
 एकाक्षरादिपङ्क्तिविशत्यक्षरावधि कीर्तितम् ।
 यथालाभं वर्णवृत्तमन्यदूह्य महात्मभिः ॥ १३४ ॥
 रसलोचनमुन्यदवचन्द्रेत्राग्निध्वङ्गिभिः ।
 दाशना योजितं रङ्गं (१३४२१७७२६) पिण्डसम्या भवेदिह ॥ १३५ ॥
 भेदेष्वेतेषु घातन्तसहितं भेदकल्पनं ।
 पञ्चषष्ठ्यधिकं नेत्रशतकं (२६५) वृत्तमीरितम् ॥ १३६ ॥
 द्वितीये सण्डके वर्णयुक्ते सप्तमीरितके ।
 यत्तानुक्रमणी रूपमाद्यं प्रकरणं त्विदम् ॥ १३७ ॥
 प्रकीर्णकप्रकरणं द्वितीयमथ कथ्यते ।
 प्रस्तारोत्तीर्णवृत्तानि कानिचित्तत्र चतुर्दश ॥ १३८ ॥

भ्रादौ पिपीडिका तत्र ततस्तु करभ. स्मृत. ।
 अनन्तर च पणव माला स्यात्तदनन्तरम् ॥ १३६ ॥
 द्वितीयाऽथ त्रिभङ्गी स्यात् शालूर तदनन्तरम् ।
 इति प्रकीर्णक नाम द्वितीय वृत्तमौक्तिके ॥ १४० ॥
 प्रोक्तं प्रकरण चाथ तृतीयमिदमुच्यते ।
 दण्डकाना प्रकरण क्रमप्राप्त मनोरमम् ॥ १४१ ॥

तत्र-

चण्डवृष्टिप्रयातस्तु प्रथम परिकीर्तित ।
 तत. प्रचितकश्चाथ ततोऽप्यर्णादयो मताः ॥ १४२ ॥
 ततस्तु सर्वतोभद्रस्ततश्चाऽशोकमञ्जरी ।
 कुमुमस्तवकश्चाथ भक्तमातङ्ग एव च ॥ १४३ ॥
 अनङ्गशेखरश्चेति तृतीय परिकीर्तितम् ।
 अथाद्धंसमक नाम चतुर्थं परिकीर्त्यते ॥ १४४ ॥
 पुष्पिताग्रा भवेत्तत्र प्रथम वृत्तमुत्तमम् ।
 ततश्चैवोपचित्र स्यादथ वेगवती भवेत् ॥ १४५ ॥
 हरिणाऽनन्तर चापि प्लुता सपरिकीर्तिता ।
 ततश्चापरवक्त्र स्यात् सुन्दरी च ततो मता ॥ १४६ ॥
 अथ भद्रविराट् वृत्त तत केतुमती स्थिता ।
 ततस्तु वाङ्मतीवृत्तमथ स्यात् षट्पदावली ॥ १४७ ॥
 इत्यर्द्धसमक नाम तुर्यं प्रकरण मतम् ।
 अथोच्यते प्रकरण विषम वृत्तमौक्तिके ॥ १४८ ॥
 पञ्चम यत्र पूर्वं स्याद् उदगता वृत्तमुत्तमम् ।
 ततस्तु सौरभ वृत्त ललित तदनन्तरम् ॥ १४९ ॥
 अथ भावस्ततो वक्त्र पथ्यावृत्तमत स्मृतम् ।
 ततस्त्वानुष्टुभ वृत्तमष्टाक्षरतया कृतम् ॥ १५० ॥
 इत्थं विषमवृत्ताना प्रोक्त प्रकरण त्विह ।
 अथ षष्ठ प्रकरण वैतालीय प्रकीर्त्यते ॥ १५१ ॥
 वैतालीय प्रथमतस्तत्र वृत्त निगद्यते ।
 ततश्चोपच्छन्दसिकमापातलिकमेव च ॥ १५२ ॥

द्विविध नलिनाख्य च ततः स्याद् दक्षिणान्तिका ।
 अथोत्तरान्तिका पश्चात् [प्राच्यवृत्तिरुदीरिता ॥ १५३ ॥
 उदीच्यवृत्तिस्तत्पश्चात् प्रवृत्तकमतः परम् ।
 अथापरान्तिका पश्चात्^१ च्चारुहासिन्युदीरिता ॥ १५४ ॥
 वैतालीय प्रकरण षष्ठमेतदुदीरितम् ।
 यतिप्रकरण चाथ सप्तमं परिकीर्त्यते ॥ १५५ ॥
 यतीना घटन यत्र सोदाहरणमीरितम् ।
 अथ गद्यप्रकरणमष्टमं वृत्तमौचितके ॥ १५६ ॥
 नानाविधानि गद्यानि गद्यन्ते यत्र लक्षणं ।
 तन तु प्रथमं शुद्धं चूर्णकं गद्यमुच्यते ॥ १५७ ॥
 अथाऽऽविद्धं चूर्णकं तु ललितं चूर्णकं ततः ।
 ततस्तूत्कलिकाप्रायं वृत्तगन्धिं ततः स्मृतम् ॥ १५८ ॥
 ग्रन्थान्तरमतं चात्र लक्षितं गद्यलक्षणे ।
 इति गद्यप्रकरणमष्टमं परिकीर्तितम् ॥ १५९ ॥
 विरुदावलीप्रकरणं नवमं चाथ कथ्यते ।

तत्र-

द्विगद्या च त्रिभङ्गचन्ता कलिका नवधा पुरा ॥ १६० ॥
 ततस्त्रिभङ्गी कलिका 'नोघा साऽपि' प्रकीर्तिता ।
 विदधाद् या द्विपाद्यन्ता सापि षोढा ततः स्मृता ॥ १६१ ॥
 मुग्धादिका तरुण्यन्ता मध्ये मध्या चतुर्विधा ।
 अथान्तरप्रकरणं कलिकायां प्रकीर्तितम् ॥ १६२ ॥
 अथातो व्यापकं चण्डवृत्तं विरुदमीरितम् ।
 सलक्षणं तथा साधारणं चेति द्विधैव तत् ॥ १६३ ॥
 ततोऽस्य परिभाषा स्यात् तद्भेदानां व्यदस्थितिः ।

तत्र-

पुरुषोत्तमाख्यं प्रथमं ततस्तु तिलकं भवेत् ॥ १६४ ॥
 अच्युतस्तु ततः प्रोक्तो वद्वितस्तदनन्तरम् ।
 ततो रणः समाख्यातस्ततः स्याद् वीरचण्डकम् ॥ १६५ ॥

अन्यत्र वीरभद्रः स्यात् ततः शाकः प्रकीर्तितः ।
 मातङ्गसेलितं पश्चादथोत्पलमुदीरितम् ॥ १६६ ॥
 ततो गुणरतिः प्रोक्ता ततः कल्पद्रुमो भवेत् ।
 कन्दलश्चाथ कथितस्ततः स्यादपराजितम् ॥ १६७ ॥
 नत्तंन तु ततः प्रोक्तं तरत्पूर्वं समस्तकम् ।
 वेष्टनाख्यं चण्डवृत्तं ततश्चास्पलितं मतम् ॥ १६८ ॥
 अथ पल्लवितं पश्चात् समग्रं तुरगस्तथा ।
 पङ्केरुहं ततः प्रोक्तं सितकञ्जमतः परम् ॥ १६९ ॥
 पाण्डूपलं ततश्च स्यादिन्दीवरमतः परम् ।
 अरुणाम्भोरुहं पश्चादथ फुल्लाम्बुजं मतम् ॥ १७० ॥
 चम्पकं तु ततः प्रोक्तं वञ्जुलं तदनन्तरम् ।
 ततः कुन्द समाख्यातमथो बकुलभासुरम् ॥ १७१ ॥
 अनन्तर तु बकुलमङ्गल परिकीर्तितम् ।
 मञ्जर्यां कौरकश्चाथ गुच्छः कुसुममेव च ॥ १७२ ॥
 अवान्तरमिदं चापि प्रोक्तं प्रकरणं त्विह ।
 अथ त्रिभङ्गी कलिका दण्डकाख्या प्रकीर्तिता ॥ १७३ ॥
 विदग्धपूर्वा सम्पूर्णा त्रिभङ्गी कलिका ततः ।
 ततस्तु मिश्रकलिका कथिता वृत्तमौक्तिके ॥ १७४ ॥
 अवान्तर प्रकरणं तृतीयमतिसुन्दरम् ।
 इत्थं सलक्षणं चण्डवृत्तप्रकरणं कृतम् ॥ १७५ ॥
 ततः साधारणमतं चण्डवृत्तमिहोदितम् ।
 साधारणमतं चैकदेशतः प्रोक्तमत्र हि ॥ १७६ ॥
 अवान्तरप्रकरणं साधारणमते स्थितम् ।
 चतुर्थं विरुदावल्यां^१ विज्ञेयं कविपण्डितैः ॥ १७७ ॥
 ततस्त्वत्रैव कलिका ज्ञेया सप्तविभक्तिकी ।
 अनन्तर चाक्षमयीकलिका^२ कथिता त्विह ॥ १७८ ॥
 ततस्तु सर्वलघुक कलिकाद्वयमीरितम् ।
 ततश्च विरुदाना तु युगपल्लक्षणं कृतम् ॥ १७९ ॥

ततस्तु विरुदावल्या. सम्पूर्णं लक्षणं कृतम् ।
 विरुदावलीप्रकरणं नवमं वृत्तमौक्तिके ॥ १८० ॥
 अथ खण्डावली तत्र पूर्वं तामरसं भवेत् ।
 ततस्तु मञ्जरी नाम भवेत् खण्डावली त्विह ॥ १८१ ॥
 खण्डावलीप्रकरणं दशमं परिकीर्तितम् ।
 अथानयोस्तु दोषाणां निरूपणमुदीरितम् ॥ १८२ ॥
 एकादशं प्रकरणमिदमुक्तमतिस्फुटम् ।
 ततः खण्डद्वयस्यापि प्रोक्ताऽनुक्रमणी क्रमात् ॥ १८३ ॥
 एतत् प्रकरणं चात्र द्वादशं परिकीर्तितम् ।
 वृत्तानि यत्र गण्यन्ते तथा प्रकरणानि च ॥ १८४ ॥
 पूर्वखण्डे पडेवात्र प्रोक्तं प्रकरणं स्फुटम् ।
 द्वितीयखण्डे चाप्यत्र रविसह्यमुदीरितम् ॥ १८५ ॥
 अथान्तरं प्रकरणं चतुसह्यं प्रकीर्तितम् ।
 सम्भूय चात्र गदितं रसेन्दुमितमुत्तमम् ॥ १८६ ॥
 उभयोः खण्डयोश्चापि सम्भूर्यैव प्रकाशितम् ।
 द्वाविंशतिप्रकरणं रुचिरं वृत्तमौक्तिके ॥ १८७ ॥
 मात्सर्यमुत्साहे मुदा सदा सहृदयैरिदम् ।
 अन्तर्मुखं प्रकरणं विज्ञैरालोक्यता मम ॥ १८८ ॥
 इति खण्डद्वयानुक्रमणीप्रकरणं द्वादशम् ॥१२॥

ग्रन्थकृत-प्रशस्तिः

दुस्थीभूतमिम जलाशयमर्धस्थित्वा नयान्त क्वचि-
 भोहान्धीकृतगोव्रज मनसिजस्फूर्जद्विपज्वालया ।
 गर्वाग्नि पदपद्मयुग्मवलनैर्निर्वाप्य सर्वात्मना,
 त्व निर्वासय मन्मनोहृदगत दुर्वासनाकालियम् ॥ १ ॥

यद्दोर्मण्डलचण्डमन्दरतटीनिप्येषणालोडिता,
 दैत्याभोनिघयो विनाशमगमन्निस्सारभूता भुवि ।
 कालिन्दीतटगन्धसिन्धुरममु लीलाशतैर्वन्धुरै'-
 राभीरीनिकुरुम्बभीतिशमन^२ वन्दे गभीराशयम् ॥ २ ॥

नि कामतुच्छीकृतकामधाम-
 श्रव्यस्फुरन्नाम जगल्ललाम ।
 उद्दामचिन्ताशतदामबद्ध,
 श्रीराम मामुद्धर वामबुद्धिम् ॥ ३ ॥

श्रीचन्द्रशेखरकृते हचिरतरे वृत्तमौक्तिकेऽमुष्मिन् ।
 अक्षरवृत्तविधायकखण्डस्सम्पूर्णतामगमत् ॥ ४ ॥

लक्ष्मीनाथसुभट्टवर्यं इति यो वासिष्ठवशोद्भव-
 स्तत्सूनु कविचन्द्रशेखर इति प्रख्यातकीर्तिर्भुवि ।
 बालाना सुखबोधहेतुमतुल सञ्छन्दसा मन्दिर,
 स्पष्टार्थं वरवृत्तामौक्तिकमिति ग्रन्थ मुदा निर्ममे ॥ ५ ॥

रसमुनिरसचन्द्रैर्भाविते (१६७६) वैक्रमेऽब्दे,
 सितदलकलितेऽस्मिन्कार्तिके पीर्णमास्याम् ।
 अतिविमलमति श्रीचन्द्रमौलिवितेने,
 हचिरतरमपूर्वं मौक्तिक वृत्तपूर्वम् ॥ ६ ॥

अद्द शास्त्रपयोनिधिलोपामुद्रापति पितरम्^३ ।
 श्रीमल्लक्ष्मीनाथ सकलागमपारग वन्दे ॥ ७ ॥

याते दिवं सुतनये विनयोपपन्ने,
 श्रीचन्द्रशेखरकवौ किल तत्प्रबन्धः ।
 विच्छेदमाप भुवि तद्वचसैव साद्धं,
 पूर्णकृतश्च स हि जीवनहेतवेऽस्य ॥ ८ ॥

श्रीवृत्तमौक्तिकमिदं लक्ष्मीनाथेन पूरितं यत्नात् ।
 जीयादाचन्द्राकं जीवातुर्जीवलोकस्य ॥ ९ ॥

श्रीः

इत्यालङ्कारिकचक्रचूडामणि-छन्दःशास्त्र^१ परमाचार्य-सकलोपनिषद्ग्रहस्यार्णव-
 कर्णधार-श्रीलक्ष्मीनाथभट्टात्मज-कवि^२-चन्द्रशेखरभट्टविरचिते
 श्रीवृत्तमौक्तिके पिङ्गलवार्तिके षण्णवृत्ताख्यो
 द्वितीयः परिच्छेदः । २।

श्रीः

समाप्तश्चायं वार्तिके द्वितीयः खण्डः^३ ।

श्रीकृष्णायानन्तशक्तये नमः । श्रीरस्तु ।

समाप्तमिदं श्रीवृत्तमौक्तिकं नाम पिङ्गलवार्तिकम् ।

शुभमस्तु ।

संवत् १६६० समये थायनवदि ११ रवौ शुभदिने लिखितं शुभस्थाने अगलपुरनगरे
 लालमनिमिश्रेण । शुभम् । इदं ग्रन्थसख्या ३८५०॥

छन्दःशास्त्रपरमाचार्यश्रीलक्ष्मीनाथभट्टप्रणीतो

वृत्तमौक्तिक-वार्तिक-दुष्करोद्धारः

प्रथमो विश्रामः

श्रीगणेशाय नमः

प्रणम्य जगदाधारं विश्वरूपिणमीश्वरम् ।

श्रीचन्द्रशेखरकृते वार्तिके वृत्तमौक्तिके ॥ १ ॥

अन्तःसारं समालोच्य नष्टोद्दिष्टादिदुष्करम् ।

श्रीलक्ष्मीनाथभट्टेन सुकरीश्रियतेतराम् ॥ २ ॥

अथानन्तरं छान्दसिकपरीक्षार्थं कौतुकार्थञ्च मात्राणामुद्दिष्टमुच्यते । तत्र त्रयोदशविभेदभिन्नेषु पटकलप्रस्तारगणेषु इदं कातिम रूपम् इति लिखित्वा पृष्ठं रूपमुद्दिष्टं प्रथमप्रत्ययस्वरूप, तत्प्रकारमाह साद्धेन श्लोकेन ।

दद्यात् पूर्वयुगाङ्कान् लघोरुपरि गंस्य तूभयतः ।

अन्त्याङ्के गुरुशीर्षस्थितान् विलुम्पेवथाङ्कांश्च ॥ ५१ ॥

उर्वरितैश्च तथाङ्कैर्मात्रोद्दिष्ट विजानीयात् ।

दद्यादिति । तस्मिन् लिखिते रूपे पूर्वयुगाङ्कान् दद्यात् । तत्र च लघोरुपर्येव गुरोस्तु उभयतः—उपर्यधश्चेत्यर्थः । अथ पश्चादन्त्याङ्के—शेषाङ्के गुरुशीर्षस्थितान् अङ्कान् विलुम्पेत् । तथा कृते सति उर्वरितैश्च अङ्कैः मात्राणामुद्दिष्ट जानीयात् । एतदुक्तं भवति । पटकलप्रस्तारे तावदेको गुरु, द्वौ लघू, एको गुरुश्च एवरूपो गणः ५॥५ कुत्र स्थानेऽस्तीति प्रश्ने कृते, तदाकार गण लिखित्वा पूर्वयुगेन समानाः त्रमादङ्का दातव्याः २ तः १३ [त]त्रादिकलाया प्रथमोऽङ्को देयः, ततः पूर्वयुगाङ्काभावादुत्सर्गसिद्धो द्वितीयोऽङ्कस्तदधः । तदनन्तरं पूर्वाङ्कद्वयमेकीकृत्य तत्सह्यकोऽङ्कोऽप्ये देयः । एवं च पूर्वयुगसमानाङ्कास्त्रिपञ्चादिदेय इति पूर्वयुगक्रमार्थः । अत्र गुरोरुपर्यधश्चाङ्को देयो द्विकलत्वात् । एतच्च गुरुशीर्षपदाऽलभ्यते । एवं तेषु अङ्केषु अन्त्याङ्के—चरमाङ्के त्रयोदशरूपे १३ यावन्तो गुरुशीर्षस्थितान् अङ्कास्तान् विलुम्पेत् । ते च नव तथा च त्रयोदशात्मनि चरमेऽङ्के नवाङ्के लुप्ते सति उर्वरितैरङ्कैश्चतुर्भिश्चतुर्थं स्थानं लिखित्वा तत्समानाङ्कस्थानको यद्गण इति जानीयात् । तदेतन्मात्राणामुद्दिष्टम् । उद्दिष्टस्य गणस्य स्थानमात्रानयनादिति भावः ।

एवं चाष्टभेदविभिन्नो पञ्चकलप्रस्तारे—द्वौ लघू, एको गुरुः, एको लघुश्च इत्येवंरूपो गणः ॥१॥ कुत्र स्थानेऽस्तीति प्रश्ने, प्रथमलघोरपरि प्रथमाङ्कस्तदनु द्वितीयलघोरपरि द्वितीयाङ्कस्ततो गुरोरपरि तृतीयाङ्कस्तदधः पञ्चमाङ्कस्तदनु लघोरपरि अष्टमाङ्कश्च देयः । अतोऽन्त्याङ्के-अष्टमाङ्के ८ गुरुशिरोऽङ्कस्तृतीयो-ऽङ्को ३ लोप्योऽवशिष्टः पञ्चमाङ्को भवति । तस्मात् पञ्चमो गणस्तादृशो भवतीति एव जानीयादिति ।

तथा च पञ्चभेदे चतुष्कलप्रस्तारे जगणः ॥१॥ कुत्रास्तीति प्रश्ने, प्रथमलघोरपरि प्रथमाङ्कस्तदनु गुरोरपरि द्वितीयाङ्कस्तदधस्तृतीयाङ्कः शेषो लघोरपरि पञ्चमाङ्को देयः । अतः शेषे पञ्चमाङ्के ५ गुरुशिरोऽङ्को द्वितीयो लोप्यः । अवशिष्टस्तृतीयाऽङ्को भवति । तस्मात् तृतीयस्थाने जगणो वर्तत इति जानीयादिति ।

एवञ्च सप्ताष्टकलादिकेषु समस्तेषु प्रस्तारेषु प्रथमे शेषे च गणे शङ्कंवावतरीतर्त्तीति । द्वितीयस्थानादारभ्य उपान्त्यस्थानपर्यन्तं प्रश्ने कृते प्रोक्त-प्रकारेण उद्दिष्टं बोद्धव्यमतिविशुद्धबुद्धिभिरित्यास्ता विस्तारेण इत्युपरम्यते । इति शिवम् ।

श्रीनागरजाय नमः

प्रस्तारविस्तारणकौतुकेन प्रस्तारयन्तं पतगाधिराजम् ।

मध्येसमुद्रं प्रविशन्तमन्तर्भजामि हेतुं भुजगाधिराजम् ॥

अथ मात्रा-वर्णोद्दिष्टौ वक्तव्ये तत्र प्रस्तारमन्तरेणोद्दिष्टादीनामशक्य-कथनत्वात् समस्तप्रस्तारस्य वसुधावलयेऽप्यसभावेशात् केचन प्रस्ताराः प्रस्तुतो-पयोगिनो लिख्यन्ते । एवं अन्येपि पङ्क्तिशत्यक्षरपर्यन्तं प्रस्ताराः बोद्धव्याः सुबुद्धिभिः ।

द्विकलप्रस्तारो यथा-

5	१
11	२

चतुष्कलप्रस्तारो यथा-

त्रिकलप्रस्तारो यथा-

15	१
51	२
111	३

55	१
115	२
151	३
511	४
1111	५

पञ्चकलप्रस्तारो यथा-

1 5 5	१
5 1 5	२
1 1 1 5	३
5 5 1	४
1 1 5 1	५
1 5 1 1	६
5 1 1 1	७
1 1 1 1 1	८

षट्कलप्रस्तारो यथा-

5 5 5	१
1 1 5 5	२
1 5 1 5	३
5 1 1 5	४
1 1 1 1 5	५
1 5 5 1	६
5 1 5 1	७
1 1 1 5 1	८
5 5 1 1	९
1 1 5 1 1	१०
1 5 1 1 1	११
5 1 1 1 1	१२
1 1 1 1 1 1	१३

मात्राणामुद्दिष्टं द्विलोप्यः

१	३
1	5
३	

मात्राणामुद्दिष्टं प्रथमप्रत्ययः

१	३	५	८
5	1	1	5
२			१३

लोपो नवाङ्कः ९

इति धीमन्नन्दनन्दनचरणारविन्दमकरन्वास्वादभोदमानमानसचञ्चरीकालङ्कारिकचक्र-
चूडामणि-साहित्याणवकणधर-ध्वन्दःशास्त्रपरमाचार्य-श्रीलक्ष्मीनाथभट्टारक-
विरचिते धीवृत्तमौक्तिके वार्तिके दुष्करोद्दारे मात्राप्रस्तारो-

द्विष्टगणसमुद्धारो नाम प्रथमो विश्रामः ॥ १ ॥

द्वितीयो विश्रामः

अथ मात्राणामदृष्ट रूप नष्ट द्वितीयप्रत्ययस्वरूपम् । तच्च पट्कलप्रस्तारे प्रस्तारान्तरे वा अमुकस्थाने कीदृश इति प्रश्नोत्तरमध्यद्वेन श्लोकद्वयेनाह—

अथ मात्राणां नष्ट यददृष्टं पृच्छयते रूपम् ॥ ५२ ॥

पत्कलकप्रस्तारो लघवः कार्याश्च तावन्त ।

दत्त्वा पूर्वयुगाङ्कान् पृष्ठाङ्कं लोपयेदन्त्ये ॥ ५३ ॥

उर्वरितोर्वरितानामङ्काना यत्र लभ्यते भाग ।

परमात्रा च गृहीत्वा स एव गुरुतामुपागच्छेत् ॥ ५४ ॥

अथेति । पूर्वोर्द्धं अवतारिकयैव व्याख्यातप्रायम् ॥ ५२ ॥

यत्कलकप्रस्तार कृत तत्कलकप्रस्तारकृते तावन्त एव लघव कार्या । चकारोऽवधारणायं । तत्र च दत्त्वा पूर्वयुगाङ्कान् एक-द्वि-त्रि पञ्चाष्ट-त्रयोदशादीन् । यथा— । । । । । तत पृष्ठाङ्क अन्त्ये—शेषे लोपयेत् ॥ ५३ ॥

एव चोर्वरितोर्वरिताना अवशिष्टानामङ्काना यत्र यत्राङ्के भागो लभ्यते स स एवाङ्क शेषाङ्के लोपयितुं शक्यते । स पुनस्तदध स्थितकल परमात्रा च गृहीत्वा गुरुतामुपागच्छेत्—गुरुर्भवतीत्यर्थं । गुरुत्वे चाऽध स्थितकलाया अपि सग्रहोऽर्थाद् भवतीति । अन्यथा लघुगुरुत्वेव दूयादिति ॥ ५४ ॥

अनेन व्याख्यानेनाभ्युत्पन्नतम शिष्यो बोधयितुं न शक्यत इति स्फुटीकृत्य सोदाहरणं विलिख्यते । यथा—

पट्कलप्रस्तारे द्वितीयस्थाने कीदृशो गण ? इति प्रश्ने, पूर्वोक्ताङ्कसहिता लघुरूपा पट्कला स्थापनीया । पूर्वयुगलसदृशा अङ्का देया । तत शेषाङ्के त्रयोदशे १३ पृष्ठाङ्कलोपे द्वितीयाङ्क २ लोपे सति एकादशावशिष्टा ११ भवन्ति । तत्राध्यवहिताष्टलोपे शेषकलाद्वयेन एको गुरुर्भवति । अवशिष्टाङ्क त्रय भवति । तत्र च पञ्चलोपाशक्यत्वात् परमात्रा गृहीत्वा गुरुर्भवतीत्युक्तत्वाच्च त्रिलोपे ३ तृतीयचतुर्थाभ्यामपरो गुरुर्भवति । शेषाङ्को नावशिष्यत इति । प्रथम लघुद्वयमेव । तथा चादौ लघुद्वयमनन्तरं गुरुद्वयमित्येतादृशो । । s s द्वितीयो गणो भवतीत्यर्थं । एवमन्यत्रापि ।

यद्यप्याद्यन्तयोस्सन्देहाभावस्तथापि प्रथमे कीदृशो गण ? इति प्रश्ने, गुरु-त्रयात्मक प्रथम गणं लिखित्वा तत्रोपर्यध क्रमेण पूर्वयुगाङ्का एक-द्वि-त्रि-पञ्चाष्ट-

त्रयोदशाकारा देयाः । यथा— s s s तत्र शेषाङ्के त्रयोदशात्मनि १३ गुरुशीर्षस्था ये अङ्का एकत्र्यष्टरूपास्तैर्जातो द्वादशाङ्को लोप्यस्तथा च लुप्ते तस्मिन् प्रथमो गणस्तादृशो भवतीति वेदितव्यम् ।

अथ च त्रयोदशस्थाने कीदृशो गणः ? इति प्रश्ने, पूर्व[व]देव लघूनामुपर्यङ्कान् दत्त्वा शेषाङ्के त्रयोदशात्मनि पृष्ठाङ्कलोपे भ्रवशिष्टाङ्काभावात्त गुरुकल्पना । अतो लघव एवावशिष्यन्ते इति । । । । । ।

चतुर्दशादिप्रश्ने चाङ्कलोपासम्भवादसत्यत्वमात्रं वाच्यम् । तदधिकप्रस्तारा-भावादित्यं च मात्राप्रस्तारे सर्वत्रैव शेषाङ्कसमसंख्यागणा भवन्तीत्यपि निश्ची-यते । इति गुरुमुखादवगतार्यो लिखित इति शिवम् ।

मात्राणं नष्टम्

१	२	३	५	८	१३
				५	५

द्वितीयः प्रत्ययः

इति श्रीमन्नन्दनम्बनचरणारविन्दमकरन्दास्वादभोदमानमानसचञ्चरीकालङ्कारिक-
चक्रबुडामणि-साहित्यार्णवकर्मधार-खण्डःशास्त्रपरमाचार्य-श्रीलक्ष्मीनाथ-
भट्टारकरविरचिते श्रीवृत्तमौक्तिकवार्तिकदुष्करोद्धारो मात्रा-
प्रस्तारनष्टगणसमुद्धारो नाम द्वितीयो विधामः ॥ २ ॥

तृतीयो विश्रामः

अथ तथैव नमः प्राप्ता वर्णानामुद्दिष्टमाह—द्विगुणानिति श्लोकेन ।

द्विगुणानङ्कान् दत्त्वा वर्णोपरि लघुशिर स्थितानङ्कान् ।

एतेन पूरयित्वा वर्णोद्दिष्ट विजानीत ॥ ५५ ॥

वर्णानामुपरिप्रमृतानां इति अग्न्याहार्यम् । तथा च तेषामुपरि द्विगुणानङ्कान् दत्त्वा ततो लघुशिर स्थितानङ्कान् सयाज्येति शेष । तथा च त-समुत्त अङ्क एवेनाधिनेन अङ्केन पूरयित्वा-एकीकृत्य वर्णोद्दिष्ट विजानीत शिष्या इति शेष ॥ ५५ ॥

एवमुक्तं भवति । एकाक्षरादिषट्विंशत्यक्षरावधिप्रस्तारेषु प्रतिप्रस्तारमाद्य-भेदे लघ्याभावाद्देशेन सर्वथा नास्त्येव । अतो द्वितीयभेदादारभ्य उपा त्यभेद-पर्यन्त उद्देशो भवतीति तत्प्रकारबोधनायं शिष्यान्भिर्मुगोवृत्त्य प्रस्तारा निर्धार-पूर्वकं वर्णोद्दिष्टमुच्यते । तथा च—

एकाक्षरप्रस्तारे भेदद्वयं भवति । तत्र प्रथमभेदस्य उद्देशागम्भवात् । द्वितीय भेदे च एकलघुर्न द्वितीयाक्षराभावादेकमेवाङ्क तस्मिन् दत्त्वा तदुपरि एक मङ्कमधिकं दत्त्वा द्वितीयभेदमुद्दिशेत् । इत्येकाक्षरप्रस्तार ।

द्व्यक्षरप्रस्तारे भेदचतुष्टयं च भवति । तत्र द्वितीये एको लघुरेकीगुरुरित्येव भेदे । ५, प्रथमे लघावेकोऽङ्को, द्वितीये गुरो द्वितीयोऽङ्को दातव्य तदनु लघोरुपरि एकमधिकं दत्त्वा द्वितीयभेद उद्दिशेत् । एव तृतीये एको गुत्तरेको लघुरित्येव भेदे ५ । प्रथमे गुरावेकोऽङ्को, द्वितीये लघो द्वितीयोऽङ्को.त्यस्ततो लघोरुपरि स्थिते द्वितीयेऽङ्के एकमधिकं दत्त्वा तृतीय भेदमुद्दिशेत् । एवमेव लघुद्वयात्मके ॥ चतुर्थे भेदे प्रथमे लघो प्रथमाऽङ्क दत्त्वा, द्वितीयेऽपि लघो द्वितीयमङ्क विधाय तयोर्रुपरिस्थयो प्रथमद्वितीयाङ्कयोर्मेलने वृत्त जात त्रिके एकाङ्क अधिकं दत्त्वा तस्य चतुष्टय सम्पाद्य चतुर्थं भेदमुद्दिशेदिति । इति द्व्यक्षरप्रस्तार ।

*यक्षरप्रस्तारे तु भेदाष्टकं च भवति । तत्र एको लघु द्वौ गुरु चेति गण बुनास्तीति प्रश्ने कृते पृष्ठ गण । ५५ लिखित्वा तत्र प्रथमे लघो प्रथमाङ्को दातव्य, द्वितीये गुरो तद्द्विगुणो द्वितीयोऽङ्को दातव्य, तृतीये गुरो तद्द्विगुण द्वाचतुर्थाऽङ्को दातव्य । अत्र सर्वत्र प्रथमादिपदेन वर्णो लक्ष्यते, ततो लघोरुपरि योऽङ्कस्तस्मिन्नेकमधिकं दत्त्वा तेन सह एकीकृत्य द्व्यङ्को भवति तस्मात् द्वितीयो यगणाख्याक्षरप्रस्तारे गणो भवतीत्येव वेदितव्यम् ।

एवं चात्रैव प्रथमं लघुद्वयं ततो गुरुरित्येवं गणः ।। ९ कस्मिन् स्थानेऽस्तीति प्रश्ने कृते तदाकार गण १, २ लिखित्वा प्रथमे लघावेकाङ्क दत्त्वा १, द्वितीयेऽपि तद्द्विगुणं द्व्यङ्क २ विधाय, तृतीये गुरौ तद्द्विगुण चतुर्थमङ्कं कृत्वा ४, ततो लघोरुपरिस्थयोः प्रथमद्वितीयाङ्कयोः सयोगकृतत्रयं भवति ३, तस्मिन्नेकेऽधिके दत्ते सति चतुरङ्को भवति ४ । अतश्चतुर्थस्सगणाख्यस्त्र्यक्षरप्रस्तारे गणो भवतीति ज्ञेयम् । एवमन्यत्र । इति त्र्यक्षरप्रस्तारः ।

अथ चतुरक्षरप्रस्तारे षोडश भेदा १६ भवन्ति । तत्र द्वौ गुरू, एको लघुरेको गुरुश्चेत्येवरूपो गणः कुत्रास्तीति प्रश्ने कृते, त पृष्ठं गणं लिखित्वा ९ ९ । ९ तत्र प्रथमगुरोरुपरि प्रथमाङ्को १ देयः, ततो द्विगुणान् द्विगुणान् अङ्कान् दत्त्वा, ततश्च द्वितीयगुरोरुपरि द्वितीयोऽङ्को देयः, तृतीयो लघौ चतुरङ्कः, चतुर्थो गुरावष्टमाङ्को देयः ८ । इति द्वैगुण्यम् । ततो लघोरुपरिश्चतुर्थोऽङ्कस्त एकेन पूरयित्वा तस्य पञ्चत्व विधाय तत्समानाङ्कस्थाने स गणोऽस्तीति विज्ञातव्यम् । इत्युद्दिष्ट वर्णप्रस्तारे प्रथमप्रत्ययस्वरूपं विजानीत शिष्या इति ।

अत्र सर्वत्र गणशब्देन तत्तद्भेदो लक्ष्यते । तथा चात्रैव प्रथम लघुत्रयमनन्तर एको गुरुरित्येवमाकारको गणः कुत्र स्थानेऽस्तीति प्रश्ने कृते तदाकार गण लिखित्वा ।। ९ तत्र प्रथमलघोरुपरि प्रथमाङ्क दत्त्वा, ततोऽपि द्विगुणान् द्विगुणान् अङ्कान् दत्त्वा, तदनु द्वितीयलघोरुपरि तद्द्विगुण द्वितीयमङ्कं विलिख्य, तृतीये लघौ तद्द्विगुण चतुरङ्कं विधाय, चतुर्थे गुरावष्टमाङ्कं तद्द्विगुण दत्त्वा, एव द्विगुणस्व सम्पाद्यते । लघुशिरःस्थितान् एक-द्वि-चतुरङ्कान् एकीकृत्य जात सप्ताङ्कं ७, एकेन ग्रन्थिस्थेन पूरयित्वा तस्याष्टत्व विधाय तत्समानाङ्कस्थाने स गणोऽस्तीति ज्ञेयम् । इत्युद्दिष्टं विस्पष्टं विजानीत विज्ञाः । इति चतुरक्षरप्रस्तारः ।

किञ्च—

विपरीतप्रस्तारोद्दिष्टे क्रियमाणे लघुशिर स्थितान् अङ्कान् इत्यत्र गुरुशिर-स्थितान् इति पाठस्तत्रोद्दिष्टप्रकारः सुलभः । एवञ्च सर्वप्रत्ययेषु पाठविपर्ययः कार्य इत्युपदिश्यते । एवञ्च ते सर्वेऽपि प्रत्यया विपरीता भवन्तीति रहस्यान्तरम् । एवमन्येष्वपि प्रस्तारेषु तत्तद्गणस्थानावस्थान बोद्धव्यमिति विशदबुद्धिभिः । इति संक्षेपः । इति सर्वमवदातम् ।

एकाक्षरप्रस्तारो यथा—

६	१
।	२

द्व्यक्षरप्रस्तारो यथा—

५ ५	१
१ ५	२
५ १	३
१ १	४

त्र्यक्षरप्रस्तारो यथा—

५ ५ ५	१
१ ५ ५	२
५ १ ५	३
१ १ ५	४
५ ५ १	५
१ ५ १	६
५ १ १	७
१ १ १	८

चतुरक्षरप्रस्तारो यथा—

५ ५ ५ ५	१
१ ५ ५ ५	२
५ १ ५ ५	३
१ १ ५ ५	४
५ ५ १ ५	५
१ ५ १ ५	६
५ १ १ ५	७
१ १ १ ५	८
५ ५ ५ १	९
१ ५ ५ १	१०
५ १ ५ १	११
१ १ ५ १	१२
५ ५ १ १	१३
१ ५ १ १	१४
५ १ १ १	१५
१ १ १ १	१६

वर्णानां उद्दिष्टं तथैव प्रथमः ।

[इति] श्रीवृत्तमौक्तिकवार्त्तिकदुष्करोद्धारप्रस्तारे विस्तारप्रकारः ।

इति श्रीमन्नन्दनन्दनचरणारविन्दमकरन्दास्वादमोदमानमानसचञ्चरीकालङ्कारिक-
चक्रचूडामणि-साहित्याणवकर्णधार-धन्वःशास्त्रपरमाचार्य-श्रीलक्ष्मी-
नायभट्टारक-विरचिते श्रीवृत्तमौक्तिक-वार्त्तिकदुष्करो-
द्दारे वर्णप्रस्तारोद्दिष्टगणसमुद्धारो नाम
तृतीयो विधामः ॥ ३ ॥



चतुर्थो विश्रामः

अथ क्रमप्राप्तं तथैवं वर्णानां नष्टमाह—‘नष्टे पृष्ठे’ इति श्लोकेन ।

नष्टे पृष्ठे भागः कर्त्तव्यः पृष्ठसंख्यायाः ।

समभागे लं कुर्याद् विपमे दत्तकमानयेद् गुरुकम् ॥ ५६ ॥

नष्टे—अदृष्टरूपे पृष्ठे सति पृष्ठसंख्यायाः—पृष्ठायाः संख्यायाः भागः कर्त्तव्यः—
विधेयः । तत्र समभागे सति-ल-लघुं कुर्यात्, विपमेऽवशिष्टे सतीति शेषः । एक
दत्त्वा तस्यापि भागं कृत्वा गुरुकमानयेत्—गुरुं लिखेदित्यर्थः । एवं कृते सति
प्रकृतप्रस्तारस्थितादृष्टरूपगणस्थानसिद्धिर्भवतीति भावः ॥ ५६ ॥

इदमत्रानुसन्धेयम्—

अत्र तावद् भागो नाम नष्टाङ्कस्य यावत्संख्यापूरणम् । तथाहि सोदाह-
रणमुच्यते । यथा—

चतुरक्षरप्रस्तारे षष्ठो गणः किमाकारः ? इति प्रश्ने, षडङ्गभागं कृत्वा
तद्वद् अयं ३ स्थापनीयम् । अयं च समो भागः, उभयकोटिसंख्यात् । अथ एको
१ गुरुल्लेख्यः । अनन्तरं अवशिष्टस्य अयस्य विपमत्वात् एकं १ दत्त्वा चतुष्टयं
सम्पाद्य तस्य भागं कृत्वा द्वयं २ स्थापनीयम् । तदा एको गुरुल्लेख्यः, ततो
द्वयोर्भागि कृत्वा एकं १ स्थापनीयम् । तदा एको १ लघुल्लेख्यः । ततोऽप्यवशिष्टे
विपमे एकं १ दत्त्वा द्वित्वं सम्पाद्य तस्यापि भागं कृत्वा एकमेव स्थापनीयम् । तदा
एको गुरुल्लेख्यः । एवञ्च प्रथमं लघुरनन्तरं गुरुस्ततो लघुरन्तरे गुरुरेवमाकार-
श्चतुरक्षरप्रस्तारे षष्ठो । ऽ । ऽ गण इति वेदितव्यम् ।

तथा चात्रैव सप्तमस्थाने किमाकारको गणः ? इति प्रश्ने, सप्तमस्य
विपमत्वात् पूर्वमेको गुरुल्लेख्यः । ततः सप्तसु एकं दत्त्वा अष्टौ कृत्वा विभागः
कार्यस्तेन अवशिष्टाश्चत्वारः । अयं च समो भागस्तत एको १ लघुल्लेख्यः ।
पुनश्चतुष्टयस्यावशिष्टस्य भागं कृत्वा द्वयं समं स्थापनीयम् । अत एको लघुरेव
लेख्यः । अनन्तरं अवशिष्टस्य एकाङ्कस्य विपमीभूतत्वाद् गुरुरेव लेख्यः । एवञ्च
प्रथमं गुरुरनन्तरं लघुस्ततोऽपि लघुरेव चरमे च गुरुरेवं ऽ । । ऽ आकारश्चतुरक्षर-
प्रस्तारे सप्तमो गण इति च विज्ञेयम् । एवं पुनः पुनर्भागि समे विभजनीये लघु-
कर्त्तव्याः । विपमे एकं दत्त्वा भागे कृते गुरुकर्त्तव्यः । प्रकृते च लघावधिको गण

आयातीति षड्विंशतिवर्णप्रस्तारपर्यन्तं विपमस्थलेषु एकैक दत्त्वा गुरुल्लेख्य इति सक्षेपः । सर्वमिदमतिमञ्जुलवञ्जुलवर्णनष्टमिति शिवम् ।

वर्णानां नष्टम्

१	२	३	४	५	६
२	३	४	५	६	७

तथैव द्वितीयप्रत्ययः ।

इति श्रीमद्भक्तानन्दनन्दनचरणारविन्दमकरन्दास्वादमोदमानमानसचञ्चरीकालङ्कारिकचक्रवृद्धा-
मणिसाहित्यार्णवकण्ठधार-छन्दःशास्त्रपरमाचार्यश्रीलक्ष्मीनाथभट्टारक-
विरचिते श्लोकवृत्तमौक्तिकवार्तिकदुष्करोद्धारवर्णप्रस्तार-
नष्टगणसमुद्धारो नाम चतुर्थो विधामः ॥ ४ ॥

पञ्चमो विश्रामः

अथ तृतीयप्रत्ययस्वरूपवर्णमेरुमाह—श्लोकद्वयेन कोष्ठानिति ।

कोष्ठानेकाधिकान् वर्णं कुर्यादाद्यन्तयोः पुन ।

एकाङ्कमुपरिस्थ्याङ्कद्वयैरन्यान् प्रपूरयेत् ॥ ५७ ॥

वर्णमेरुरय सर्वगुर्वादिगणवेदकम् ।

प्रस्तारसख्याज्ञानञ्च फल तस्योच्यते बुधे ॥ ५८ ॥

तत्र च क्रमाद् एकाधिकान् कोष्ठान् वर्णैरक्षरैरुपलक्षितान्, पुनराद्यन्तयो-
रेकाङ्क च कुर्याद् विलिख्य रचयेत् । ततश्च मध्यस्थकोष्ठकस्योपरि स्थिताङ्क-
द्वयैरेकीकृतैरित्यर्थं । अन्यान् शून्यान् कोष्ठान् प्रपूरयेत् ॥ ५७ ॥

एव कृते सत्यय वर्णमेरुर्मेरुरिव भवतीति शेष । तस्यैवप्रकारेण विरचि-
तस्य मेरोर्बुधं—अधीतछन्द शास्त्रे भाष्यवार्त्तिकतात्पर्याभिज्ञैरिति यावत् । सर्व-
गुरादौ येषामेवविधाना गणाना वेदक-ज्ञापक अथवोधकमिति, यावत् प्रस्तार
सख्याज्ञान च यतो भवतीति उभयमपि फलविशेषणम् । तथा च तत्तत्पक्तिस्थ-
कोष्ठगत तत्तद्वर्णप्रस्तारसख्याव्यापक फल उच्यते—प्रकाशयत इत्यर्थं ॥ ५८ ॥

अस्य निर्गलितार्थस्त्वेव समुल्लसति—

एकाक्षरादिपङ्क्तिशतयक्षरपर्यन्त स्वस्वप्रस्तारे कति सर्वगुरव, कत्येकादि-
गुरव, कति सर्वलघव, कति वा प्रस्तारसरयेति प्रश्ने कृते वर्णमेरुणा प्रत्युत्तर
देयम् । तत्र एकाक्षरादिक्रमेण यावदिष्ट कोष्ठकान् विरचय्य, आदावन्ते च कोष्ठके
प्रथमाङ्को दातव्य । ततो मध्यस्थकोष्ठके च तदीयशिर कोष्ठकद्वयाङ्क शृङ्खला-
बन्धन्यायेन एकीकृत्य पर शून्य कोष्ठक एकीकृताङ्के पूरयेत् । एव अन्यत्रापि
पूरणीये कोष्ठके कोष्ठानामुपरिस्थितकोष्ठद्वयाङ्कमुक्तबन्धन्यायेन पूरण विधेय
इति सक्षेप । एव पूरितेषु कोष्ठेषु एकाक्षरप्रस्तारे आदावेकगुर्वात्मकस्तदन्ते च
एकलघ्वात्मक सकेत इति ।

द्वयक्षरप्रस्तारे तु सर्वगुरादौ त्रिगुरु-द्विगुरुर्वादिभावात् स्थानद्वयेप्येक-
गुरुरन्ते च सर्वलघुरिति ।

यक्षरप्रस्तारे चादौ सर्वगुरुस्त्रिगुरोरन्यत्रासम्भवात्, स्थानत्रये द्विगुरु, स्थान-
त्रये च एकगुरुरन्ते च सर्वलघुरिति ।

चतुरक्षरप्रस्तारेपि सर्वगुरादौ च चतुर्गुरोरन्यत्राभावात्, स्थानचतुष्के
त्रिगुरु, स्थानपटके द्विगुरु, स्थानचतुष्टये च एकगुरुरन्ते च सर्वलघुरिति ।

एवमन्या प्रणालिकया सुधीभि षड्विंशत्यक्षरप्रस्तारपर्यन्त ब्रह्मसञ्चार-
प्रकार समुपेय ।

किञ्चात्र तत्तत्पङ्क्तिकोष्ठगततत्तद्वर्णप्रस्तारविण्डसरयापि तत्तत्पङ्क्ति-
स्थिताङ्कं समुल्लसतीति वर्णमेरुरय मेरुरिवादिभागसकुचितान्तविस्ताररूपो
विभातीति श्रीगुरुमुखादवगतो वर्णमेरुलिखननमप्रकार प्रकाशित इति शिवम् ।

श्रीलक्ष्मीनाथभट्टेन रायभट्टात्मजन्मना ।

कृतो मेरुरय वर्णप्रस्तारस्यातिमुन्दर ॥

अस्य स्वरूपमुदाहरणमत्र द्रष्टव्यम् ।

वर्णमेरुर्यथा तृतीय.

१		१							
१	२	१							
१	३	३	२						
१	४	६	४	१					
१	५	१०	१०	५	१				
१	६	१५	२०	१५	६	१			
१	७	२१	३५	३५	२१	७	१		
१	८	२८	५६	७०	५६	२८	८	१	
१	९	३६	८४	१२६	१२६	८४	३६	९	१

नववर्णमेरुरयम् । एव अप्रेपि समुपेय सुधीभि ।

इति श्रीमन्नन्दनधरणादिबिन्दुमण्डन्यास्वादमोदमानमानताचञ्चरीकासञ्चारिण-
शक्रबुद्धामणि-साहित्याणवकण्ठार-द्वन्द्वशास्त्रपरमाचार्य-श्रीलक्ष्मीनाथ-
भट्टारकविरचिते श्रीगुरुमुखादवगताविश्वदुष्यरोडारे एकाक्षराद्
षड्विंशत्यक्षरपञ्चमप्रस्तारमेकद्वारो नाम
पञ्चमो विधाम ॥५॥

षष्ठो विश्रामः

अथ मेरुगर्भा चतुर्थप्रत्ययस्वरूपां वर्णानां पताकामाह—श्लोकत्रयेण दत्त्वेत्यादि ।

दत्त्वा पूर्वयुगाङ्गान् पूर्वाङ्के योजयेदपरान् ।
 अङ्कः पूर्वं यो वं भूतस्ततः पङ्क्तिसञ्चारः ॥५६॥
 अङ्काः पूर्वं भूता येन तमङ्कभरणं त्यजेत् ।
 अङ्कश्च पूर्वं यः सिद्धस्तमङ्कं नैव साधयेत् ॥६०॥
 प्रस्तारसंख्यया चैवमङ्कविस्तारकल्पना ।
 पताका सर्वगुर्वादिवेदिकेयं विशिष्य तु ॥ ६१ ॥

तत्र पूर्वयुगाङ्गान् एक-द्वि-चतुरष्टादीन् अङ्गान् प्रथमं दत्त्वा पूर्वाङ्कैरेकद्वि-त्रि-चतुरष्टादीन् अङ्गान् योजयेत् विभूयात् भरणं कुर्यादिति यावत् । किञ्च, य एवाङ्कः पूर्वं भूतः—पूरितः, ततस्तस्मादेव अङ्कात् ये-नियमेन पङ्क्तिसञ्चारः विधेय इति शेषः ॥ ५६ ॥

अङ्का इति । नियमान्तरं च, येन-अङ्केन पूर्वमङ्का भूताः—पूरिताः तमङ्कं पुनर्भरणं त्यजेत्, प्रयोजनाभावात् । किञ्च, अङ्कश्च पूर्वं यः सिद्धस्तमङ्कं पुनर्न साधयेत्—न स्थापयेदित्यर्थः ॥ ६० ॥

पताकाप्रयोजनमाह—

प्रस्तारेति । एवं प्रस्तारसंख्यया अत्राङ्कविस्तारकल्पना भवतीति शेषः । एतादृशी चैयं पताका विशिष्य-विशिष्टां कृत्वा, तु-अवधारणे, सर्वगुर्वादिसर्व-लघ्वन्तवेदिका-ज्ञापिका विज्ञातव्येति वाक्यार्थः ॥ ६१ ॥

एवमुक्तं भवति—

भो शिष्याः ! उद्दिष्टसदृशा अङ्का देयाः । पूर्वाङ्कैः परभरणं कुर्यात्, पूरयितव्यः । पङ्क्तेः प्रधानाङ्कस्य पश्चात् स्थिताः पूर्वाङ्का भरणं पूरणम् । एकत्राधिकस्य अङ्कस्य प्राप्ती सा पङ्क्तिरेव तदङ्कभरणे त्यज्यत इत्यवधेयम् ।

एवञ्च मेरुक्तप्रस्तारसंख्यया पताकाङ्का वर्द्धयितव्याः । तथाहि—

चतुर्वर्णप्रस्तारे एक-द्वि-चतुरष्टाङ्का देयाः । यथा—१ । २ । ४ । ८ । अत्राङ्कस्य पूर्वाङ्कासम्भवात् द्वितीयाङ्कादारभ्य पङ्क्तिः पूर्यते । तत्र

पूर्वाङ्का एकाङ्क एव प्रस्तारादिभूतः सर्वगुरुरूपः, तस्य परे द्वितीयादयः ते च अन्वयवहितानतिक्रमेण पूर्यन्ते । तथा च एकेन द्वाभ्यां मिलित्वा त्र्यङ्को भवति सः द्वितीयाङ्काघस्तात् स्थापनीयः । तत एकेन षट्भिश्च मिलित्वा नवाङ्को भवति स पञ्चमाङ्काघस्तात् स्थापनीयः । ततः पंक्तिपरित्यागः । मेरो त्रिगुणां रूपाणां चतुःसंख्यादर्शनादिति भावः । एतेन चतुर्वर्णप्रस्तारे प्रथमं रूपं सर्वगुरु भूयात् । द्वि-त्रि-पञ्च-नवस्थानस्थानि चतुरूपानि त्रिगुणानि जानीयादिति । एवमङ्कचतुष्टयं साधयित्वा, ततश्चतुरङ्कस्य अघस्तात् पूरित-पंक्तिस्थाः पराङ्कमिलिताः षट्का देयाः । तत्र प्रथमः पूरित एवेति त्यज्यते । ततो द्वाभ्यां चतुर्भिमिलित्वा षट्कोऽङ्को ६ भवति, स चतुरङ्काघस्तात् स्थापनीयः । ततः त्रिभिः चतुर्भिः सम्भूय सप्तमोऽङ्को भवति, स च षट्काघस्तात् स्थापनीयः । एवं च पञ्चमिश्चतुर्भिमिलित्वा जायमानो नवाङ्को न स्थापनीयः । 'अङ्कश्च पूर्व यः सिद्धस्तमङ्कं नैव साधयेत्' इत्युक्तत्वात् सिद्धस्य साधनायोगादिति युक्ति-सिद्धत्वाच्च इति । ततो द्वाभ्यां षट्भिर्मिलित्वा दशाङ्को भवति, स च सप्ताङ्का-घस्तात् स्थापनीयः । ततश्च त्रिभिरष्टभिर्मिलित्वा एकादशाङ्को भवति, स च दशाङ्काघस्तात् स्थापनीयः । ततः पञ्चभिरष्टभिर्मिलित्वा त्रयोदशाङ्को भवति, स चान्त एकादशाङ्काघस्तात् स्थापनीय इति । ततः षड्भिरष्टभिर्यागः । मेरु-संख्यापरिमाणदर्शनादिति पूर्ववद् हेतुरिति भावः । एतेन च चतुर्वर्णप्रस्तारे चतु-ष्टय-मन्-एकादश-त्रयोदशस्थानस्थानि षड्रूपाणि त्रिगुणानि जानीयादिति । एवमङ्कषट्कं पूर्ववदेव साधयित्वा, ततोऽष्टाङ्काघस्तात् पूरितपंक्तिस्थाः पराङ्क-मिलिताश्चत्वारोऽङ्का देयाः तथा च चतुर्भिरष्टभिः सम्भूय द्वादशाङ्को भवति, स चाष्टमाङ्काघस्तात् स्थापनीयः । ततः षड्भिरष्टभिश्च सम्भूय चतुर्दशाङ्को भवति, स तु द्वादशाङ्काघस्तात् स्थापनीयः । ततः सप्तभिरष्टभिश्च सम्भूय पञ्चदशाङ्को भवति, सोऽपि चतुर्दशाङ्काघस्तात् स्थापनीयः । ततोऽपि पंक्तिपरित्यागः । मेरावेकगुणां चतुर्संख्यादर्शनादिति भावः । एतेन चतुर्वर्णप्रस्तारे षट्महादश-चतुर्दश-पञ्चदशस्थानस्थानि रूपाणि एकगुणानि भूयादिति । एव अङ्कचतुष्टय साधयित्वा, ततो दशभिरष्टभिस्तु प्रस्तारादिष्वङ्कमवाप्त्यादशाङ्कमन्वारः । तर्हि षोडशाङ्कः सर्वसंपुरूपः १६ अवाप्तामित्यपेक्षायामष्टमाङ्काद्ये दीयतां सर्व-संपुञ्जाकार्यमिति सम्प्रदायः । तथा च प्रथमाङ्कषट्काद्याः मङ्गलाद्येन व्यवस्थानं भवतीति शेषम् ।

पताकाप्रयोजनं तु मेरो चतुर्वर्णप्रस्तारस्य एव रूपं चतुर्गुणपरिमाणम् । सर्वगुरुरात्मकं चत्वारि त्रिगुणानि रूपाणि, षट् त्रिगुणानि रूपाणि, पञ्चदश एव-गुणानि रूपाणि, एक सर्वसंपुरात्मकं रूपमस्ति ।

तत्र षोडशभेदाभिन्ने चतुर्वर्णप्रस्तारे कतमस्थाने सर्वगुर्वात्मकं, कतमस्थाने च त्रिगुर्वात्मकं, कतमस्थाने द्विगुर्वात्मकं, कतमस्थाने च एकगुर्वात्मकं, कुत्र वा सर्वलघ्वात्मक रूपमस्ति, कति वा प्रस्तारसंस्थेति प्रश्ने कृते पताकया उत्तरं दातव्यमिति ।

पताकाज्ञानफलमिति श्रीगुरुमुखादवगतो वर्णपताकालिखनप्रकारः प्रकाशित इति दिगुपदर्शनम् । उत्तरत्र च षड्विंशतिवर्णपर्यन्तं पताकाविरचनप्रकारः समुद्रेय-सुधीभिः, ग्रन्थविस्तरभयान्नेहास्माभिः प्रपञ्च्यत इति शिवम् ।

अत्र चतुर्वर्णपताकायां तु सिद्धाङ्कान् पिङ्गलोद्योताख्यायां प्राकृतपिङ्गलसूत्रवृत्तौ श्रीचन्द्रशेखरः श्लोकाभ्यां संजग्राह । यथा—

एक-द्वि-त्रि-शराङ्काश्च वेदतु-मुनि-दिक्-शिवाः ।

कामाष्ट-सूर्य-मनवस्तिथि-क्षोणीशसम्मिताः ॥१॥

सिद्धाङ्काः स्युश्चतुर्वर्णपताकानुक्रमे स्फुटम् ।

पञ्चकोष्ठे लिखेदङ्कान् शेषानेवं लिखेदिति ॥ २ ॥

शेषान् प्रस्तारान्तरपताकाङ्कान् एवं क्रमात् कोष्ठवर्द्धनपूर्वकक्रमात् लिखेत-विन्यसेदित्यर्थः ।

अत्र अङ्कविन्यासक्रमस्तु श्रीगुरुमुखादेवावगन्तव्य इति सर्वं मङ्गलम् ।

चतुर्वर्णपताका यथा प्रत्ययकाख्यः—

१	२	४	८	१६
	३	६	१२	
	५	७	१४	
	९	१०	१५	
		११		
		१३		

इति श्रीमध्वन्दनन्दनचरणारविन्दमकरन्दास्वादमोक्षमानमानसचञ्चरीकालङ्कारिकचक्रचूडा-
मणि-साहित्यार्णवकर्णधार-छन्दः-शास्त्रपरमाचार्य-श्रीलक्ष्मीनाथभट्टारकविरचिते
श्रीवृत्तमौक्तिकवार्तिकदुष्करोद्धारो वर्णपताकाङ्कोद्धारो
नाम षष्ठो विधामः ॥६॥

सप्तमो विश्रामः

अथ तृतीयप्रत्ययस्वरूपमेवात्र [मात्रा]मेवमाह—एकाधिककोष्ठानामित्या-
दिना साद्धेन श्लोकचतुष्टयेन—

एकाधिककोष्ठानां द्वे द्वे पक्ती समे कार्ये ।
तासामन्तिमकोष्ठेष्वेकाङ्क पूर्वभागे तु ॥६२॥
एकाङ्कमयुक्पक्तेः समपक्ते पूर्वयुग्माङ्कम् ।
दद्यादादिमकोष्ठे यावत् पक्तिप्रपूर्तिः स्यात् ॥६३॥
आद्याङ्केन तदीयैः शीर्षाङ्कैर्वामभागस्थैः ।
उपरिस्थितेन कोष्ठ विपमाया पूरयेत् पक्ती ॥६४॥
समपक्ती कोष्ठाना पूरणमाद्याङ्कमपहाय ।
उपरिस्थाङ्कैस्तदुपरिसस्यैर्वामस्थितैरङ्कैः ॥६५॥
मात्रामेवरय प्रोक्तः पूर्वोक्तफलभागिति ।

तत्र क्रमादेकैकेनाधिकेन कोष्ठेनोपलक्षिताना कोष्ठाना मध्ये द्वे द्वे पक्ती समे-
समाने कार्ये—लिखनीये इत्यर्थं । तासा—सर्वासा पक्तीना अन्तिमकोष्ठेषु एकाङ्क-
प्रथमाङ्क यावदित्य दद्यात् इत्यन्वय । अथ च सर्वासा पक्तीना पूर्वभागे तु
अङ्कविन्यास उच्यत इति शेष ॥ ६२ ॥

एकाङ्कमिति । तत्रायुक्पक्ते—विपमपक्तेरादिमकोष्ठे—प्रथमकोष्ठे एकाङ्क-
प्रथमाङ्क समपक्तेरादिमकोष्ठे—प्रथमकोष्ठे पूर्वयुग्माङ्क एकान्तरित प्रथमाङ्के
यावत् पक्तिप्रपूर्ति—पूरण स्यात्—भवति तावद् दद्यात्—विन्यसेद् इत्यर्थं ॥ ६३ ॥

तदेवाह—

आद्याङ्केनेति । ततश्च सर्वत्र विपमाया पङ्क्ती उपरिस्थितेन आद्याङ्केन-
प्रथमाङ्केन वामभागस्थै तदीयै शीर्षाङ्कैश्च कोष्ठग्रन्थमिति शेष प्रपूरयेत-
साङ्क कुर्यादित्यर्थं ॥ ६४ ॥

किञ्च—

समपङ्क्ताविति । समपङ्क्ती चाद्याङ्क अपहाय—र्यक्त्वा उपरिस्थिताङ्कै-
तदुपरिसस्यै. वामभागस्थितैरङ्कैश्च शून्याना कोष्ठाना पूरण विधेयमिति
शेष. ॥ ६५ ॥

उक्तं मात्रामेरुमुपसंहरति—मात्रामेरुरयमित्यद्वेन ।

भो शिष्याः ! पूर्वोक्तफलभाग्यं मात्रामेरुरिति प्रकारेणोक्तः । यथा, वर्णमेरोः फलं तथा मात्रामेरोरपीत्यर्थः ।

अत्रैतदुक्तं भवति । द्विमात्रादि-निरवधिकमात्रापंक्तिपर्यन्तं स्वस्वप्रस्तारे कति सर्वगुरवः, कत्येकादिगुरवः, कति सर्वलघवः, कति वा प्रस्तारसंख्येति प्रश्ने कृते मात्रामेरुणा प्रत्युत्तरं देयम् ।

तत्र च क्रमेणैव एकैकेनाधिके कोष्ठेनोपलक्षितानां कोष्ठकानां मध्ये द्वे द्वे कोष्ठे अर्थात् षड्भक्ती समे-सदृशे लिखनीये । तत्र प्रथमे कोष्ठद्वयं । तथा द्वितीयेऽपि कोष्ठद्वयमेव । तृतीये कोष्ठत्रयं । चतुर्थेऽपि कोष्ठत्रयमेव । पञ्चमे चत्वारि । षष्ठेऽपि चत्वार्येव । अत्र कोष्ठपदेन कोष्ठाङ्कः पंक्तिश्च लक्ष्यते, उपचारात् एककलायाः प्रस्तारो नास्तीति प्रथमं न कोष्ठगणनाकल्पना । अतः कोष्ठद्वया-त्मिकैव आदौ पक्तिरिति प्रथमं इत्युक्तिरिति समञ्जसम् ।

एवञ्च कोष्ठपक्तिषु अघोषः क्रमेणाङ्कान् लिखेत् । सर्वत्र च शेषकोष्ठे प्रथमाङ्को देयः । तत्र तत्र च कोष्ठद्वयमध्ये आदावुपरिकोष्ठे च एकरूपोऽङ्को देयः । उपरिस्थितस्थोपरिस्थिताङ्काभावाद् उत्सर्गसिद्धैकत्पाङ्केन सहितं कृत्वा द्वितीयकोष्ठे द्वितीयाङ्को देयः इति । तृतीयकोष्ठे तु उपरिस्थिताङ्कसहितं कृत्वा अर्थात् शिरस्थेनाङ्कद्वयेन मिलितं कृत्वा, अतस्त्रिरूपोऽङ्कस्समायाति । तथा चार्थात् शिरस्थेनाङ्केन सह प्रथमो द्वितीयेऽऽस्थे मेलनीयः ।

यद्वा, आद्यद्वयमघो मेलनीयं तु प्रक्रिया । तथा च प्रथमकोष्ठद्वयस्य पूरित-त्वात् द्वितीयादारभ्याङ्का दातव्याः । तत्र द्वितीये द्वयं, तृतीये पुनरेक, चतुर्थे त्रयम्, पञ्चमे पुनरेकं, षष्ठे चत्वारि, सप्तमे पुनरेक, अष्टमे षड्, नवमे पुनरेकं, दशमे षट्, एकादशे पुनरेकं, द्वादशे सप्तमेति प्रक्रियया अङ्का देयाः । एवमाद्ये । तदघ कोष्ठेऽन्तकोष्ठे च पूर्णं मध्यस्थशून्यकोष्ठे चैषा प्रक्रिया पूरणीया । कोष्ठशिरः-कोष्ठस्थाङ्कः-परकोष्ठस्थाङ्को द्वावङ्को चैकीकृत्य 'मध्यकोष्ठे-शून्यकोष्ठे मेलितोऽङ्को देयः । एवं सर्वत्र निरवधिकत्वात् यावदित्यं' कोष्ठकं विरच्य मात्रामेरुः पूर्वोक्तरूपः कर्तव्य इति ।

अयं त्रयोदशमात्रामेरुलिखनक्रमप्रकारः श्रीगुरुमुखादवगतः प्रकाशित इत्यु-परम्यते ।

अत्रेदं अनुसन्धेयम् । समविषमरूपा द्वि-द्वि-मात्रादिप्रस्तारमारभ्य निरवधि-कमात्राप्रस्तारपर्यन्तं स्वस्वप्रस्तारे कति समकले लघवः, कति च गुरवः, कति

विषमकले सधव, ऋति च गुरव, ऋति शोभयत्र प्रस्तारसख्येति प्रदने वृत्ते मात्रा-
मेरुणा प्रस्युत्तर देयम् ।

तत्र द्विकले समप्रस्तारे एक सर्वंगुरु, द्वितीयो द्विकलात्मक सर्वलघुरिति
द्विभेद प्रस्तारसखेत ।

त्रिकले विषमप्रस्तारे द्वावेककलयावेकगुरुको चान्ते त्रिकलात्मक सर्वलघु-
रिति द्विभेद प्रस्तारसखेत ।

समकले चतुष्कलप्रस्तारे चादौ द्विगुरु स्थानत्रये च एषगुरुद्विकलश्चान्ते
चतुष्कलात्मक सर्वलघुरिति पञ्चभेद प्रस्तारसखेत ।

विषमकले पञ्चकलप्रस्तारे त्रयो गणा एकसधव, चत्वारो गणास्त्रिसधव,
स्थानत्रये द्विगुरु, स्थानचतुष्टये चैकगुरुरन्ते च पञ्चकलात्मक सर्वलघु-
रित्यष्टभेद प्रस्तारसखेत ।

समकले षट्कलप्रस्तारे आदौ सर्वंगुरु, षड्गणा द्विकला, पञ्चगणाश्चतु-
ष्कला, स्थानषट्के द्विगुरु, स्थानपञ्चके चैकगुरुरन्ते च षट्कलात्मक
सर्वलघुरिति त्रयोदशभेद प्रस्तारसखेत इति ।

एवमनेन प्रकारश्रमेण यावदित्य मात्रामेवंमीष्टमात्राप्रस्तारे लघुगुर्वादि-
प्रकारप्रक्रिया भवगन्तव्या ।

अथवा पूर्वरूपप्रदने यावदित्य यावतकलकप्रस्तारमात्रामरु कोष्ठकैर्विरच्य
समकलप्रस्तारे धामत क्रमेण द्वौ चत्वार षडष्टावनेन प्रकारेण गुरुज्ञानम् ।
विषमकलप्रस्तारे तु एक त्रि पञ्च-सप्तानेन प्रकारश्रमेण लघुज्ञानम् । अत
च सर्वत्र लघुरिति । उभयत्रापि एक द्वौ त्रय पञ्चेत्याद्यनया सारण्या दक्षिणतो
व्युत्क्रमेण शृङ्खलाबन्ध यायेन तत्तत्प्रभेदज्ञानम् ।

किञ्चात्र वामभागे सर्वत्रैकैकाङ्कस्थले सर्वगुरुज्ञान भवतीति विज्ञातव्य-
मित्युपदेशरहस्यम् । इति शिवम् । सर्वत्राऽत्र च दक्षिणभागे शृङ्खलाबन्धयायेन
अग्निमाङ्कपिण्डोत्पत्तिर्भवतीति रहस्यान्तरमिति च ।

श्रीलक्ष्मीनाथभट्टेन रायभट्टात्मजन्मना ।

कृतो मरुत्य मात्राप्रस्तारस्यातिदुर्गम ॥

अस्य स्वरूपमुदाहरणमत्र द्रष्टव्यम् ।

तथैव तृतीयप्रत्ययः मात्रामेरुः । मात्रामेरुयथा -

वि० १	१	१					
स० २	५	१ १					
वि० ३	१५	२ १					
स० ४	५५	१ ३ १					
वि० ५	१५५	३ ४ १					
स० ६	५५५	१ ६ ५ १					
वि०	१५५५	४ १० ६ १					
स०	५५५५	१ १० १५ ७ १					
वि०	१५५५५	५ २० २१ ८ १					
स०	५५५५५	१ १५ ३५ २८ ९ १					
वि०	१५५५५५	६ ३५ ५६ ३६ १० १					

एकादशमात्रामेरुरयम् । एव अग्रेऽपि समुत्तयेः ।

इति श्रीमध्वनन्दनचरणारविन्दमकरन्दास्वादमोदमानमानसचञ्चरीकालङ्कारिक-
चक्रवृद्धामणि-साहित्याण्वकण्ठघार-ध्वन्दःशास्त्रपरमाचार्य-श्रीलक्ष्मीनाथ-

भट्टारकविरचिते श्रीवृत्तमोक्तिकवार्तिकदुष्करोद्धारे

एकमात्राविनिरवधिकमात्राप्रस्तारमेरुद्धारो

नाम सप्तमो विधामः ॥७॥

अष्टमो विश्रामः

अथ मरुगर्भा चतुर्थप्रत्ययस्वरूपामेव मात्राणा पताकाभाह—अथेत्यादि अद्धेन श्लोकद्वयेन—

अथ मात्रापताकापि कथ्यते कवितुष्टये ॥६६॥
 दत्त्वोद्दिष्टवदङ्गान् वामावर्त्तेन लोपयेदन्त्ये ।
 अवशिष्टो वै योऽङ्कुस्ततोऽभवत् पक्तिसञ्चार ॥६७॥
 एकंकाङ्कुस्य लोपे तु ज्ञानमेकगुरोर्भवेत् ।
 द्वित्र्यादीना विलोपे तु पक्तिद्वित्र्यादिवोधिनी ॥६८॥

अथेति । मात्रामेककथनानन्तर मात्राणा पताकापि कवितुष्टये—कवीना सन्तोषार्थं कथ्यते—उच्यते इत्यर्थं ॥ ६६ ॥

तत्प्रकारमाह—

दत्त्वेति । तत्र उद्दिष्टवत्—उद्देशत्रयवत् अङ्गान्—एक-द्वि-त्रि-पञ्चाष्ट-त्रयो-दशादीन् दत्त्वा—लिखित्वा, ततो वामावर्त्तेन—वामभागत अन्त्ये—त्रयोदशाङ्के लोप-येत् पूर्वमङ्कमिति शेष । अवशिष्टो वै योऽङ्कु लोपे सतीति शेष । ततोऽङ्कात् पक्तिसञ्चारो भवेदिति—जानीयादित्यर्थं ॥६७॥

अपराङ्कुलोपेन प्रकारमाह—

एकंकाङ्कुस्येति । एकंकाङ्कुस्य लोपे तु अन्य इति शेष । एकगुरोर्ज्ञान भवेत् । द्वित्र्यादीना अङ्काना विलोपे तु पक्ति द्वित्र्यादिगुरुबोधिनी भवतीति शेष ॥ ६८ ॥

अयमर्थं —उद्दिष्टसदृशा अङ्का स्थाप्या । ते यथा—१, २, ३, ५, ८, १३ । एक. द्वित्रिपञ्चाष्टत्रयोदशाद्या । ततो वामावर्त्तेन पर लोपयेत्—सर्वान्तिम अङ्क तत्पूर्वोणाङ्केन लोपयेदित्यर्थं । तत एकेनाङ्केन अन्तिमाङ्कुलोपे कृते सति एकगुरुरूपज्ञान भवति । द्वाभ्या अतिमाङ्के लोपे सति द्विगुरुरूपज्ञान भवति । त्रिभि-रन्तिमाङ्कुलोपे सति त्रिगुरुरूपज्ञान भवतीत्यादि ज्ञेयम् । एव कृते मात्रापताका सिद्धयति ।

तत्र पटकलप्रस्तारे यथा—उद्दिष्टसमाना अङ्का एकद्वित्रिपञ्चाष्टत्रयोदश-रूपा स्थापनीया । तत सवपिक्षया परस्त्रयोदशाङ्क तत्पूर्वोऽष्टमाङ्क, तेनाष्ट-माङ्केन त्रयोदशाङ्कावयवे लुप्ते सति अवशिष्टा पञ्च । तस्य पञ्चमाङ्कस्य

तत्पूर्वं त्रिविद्यमानत्वात् अष्टमाङ्गलोपात् परकलया सह गुरुभावाच्च पञ्चमाङ्गाद् एकगुरुपंक्तिक्रमो विधेय इति । तत्र च पञ्चमस्थाने आदौ चतुर्लघुकमन्ते चंक-गुरुकमेवं । । । । ५ आकार रूपमस्तीति ज्ञानपताकाफलम् । एवमन्यत्रापि गुरुभावो ज्ञातव्यः ।

तथा पञ्चभिस्त्रयोदशाङ्गावयवे लुप्ते सति अष्टावशिष्यन्ते, ते तु पञ्चाधो लेख्यः । तथा त्रिभिस्त्रयोदशाङ्गावयवे लुप्ते सति दशावशिष्यन्ते ते च अष्टाधो लेख्याः । तथा द्वाभ्यां द्वाभ्यां त्रयोदशाङ्गावयवे लुप्ते सति एकादशावशिष्यन्ते तेऽपि दशाधो लेख्यः । तथा एकेन त्रयोदशाङ्गावयवे लुप्ते सति द्वादशावशिष्यन्ते त एकादशाधो लेख्याः । अत्र सर्वत्र पूर्वं एव हेतुरुन्नेयः ।

अतश्च मेरावेकगुरुकचतुर्लघुकरूपगुरुस्थानानि प्रस्तारगत्या पञ्चैव भवन्तीति नाग्रे पंक्तिसञ्चारः । एतेन षट्कलप्रस्तारे पञ्चमाष्टमदशमकादश-द्वादशस्थानस्थानि रूपाणि एकगुरुकानि व्रूयादिति । एवं अङ्कपञ्चमके एक-गुरुकमुक्तम् ।

अथ द्विगुरुणि रूपाणि उच्यन्ते—तत्र द्वाभ्यामङ्गाभ्यां अन्तिमाङ्गलोपे कृते सति द्विगुरुक रूपमिति । पञ्चाष्टभिस्त्रयोदशाङ्गावयवे लुप्ते सति भागाभावात् तद्वामावसंस्थैस्त्रिभिस्तदप्रस्थैरष्टभिश्च जातैरेकादशभिस्त्रयोदशाङ्गावयवे लुप्ते सति द्वावशिष्येते, द्वयोस्तत्पूर्वत्र छिद्यमानत्वात् । तत्रैकादशाङ्गलोपात् पर-कलया सह गुरुभावाच्च द्वितीया मारभ्य द्विगुरुकपंक्तिसचारो भवतीति । तथा च द्वितीयस्थाने प्रथम द्विलघुक ततो द्विगुरुक । । ५ ५ एवमाकारकं रूप-मस्तीति पूर्ववदेव पताकाफलमुदेतीति ।

एवमन्यत्रापि प्रस्तारान्तरे गुरुभावोऽवगन्तव्यः । तथा च द्वाभ्या अष्ट-भिश्च जातैर्दशभिः त्रयोदशाङ्गावयवे लुप्ते सति त्रयोऽवशिष्यन्ते, ते द्व्यधो लेख्याः । तत एकेन अष्टभिश्च जातैर्नवभिः त्रयोदशाङ्गावयवे लुप्ते सति चत्वारो-ऽवशिष्यन्ते, ते च अर्धो लेख्याः । ततः पञ्चभिस्त्रिभिश्च जातैरष्टभिस्त्रयोदशाका-वयवलोपाद् अष्टावशिष्टः पञ्चमाङ्गो वृत्त एवेति न स्थाप्यते । 'अङ्कश्च पूर्वं यः सिद्धस्तमङ्कं नैव साधयेदिति ।' वर्णपताकातो अनुवृत्तित्वादिति । ततः पञ्चभि-र्द्वाभ्यां च जातो सप्तभिस्त्रयोदशाङ्गावयवे लुप्ते सति सप्तावशिष्यन्ते, ते तु षडधो लेख्याः । द्वित्रिलोप-पञ्चमात्मको वृत्त एवेति न स्थापनीय, अनुवृत्तिसिद्ध्यादि-निषिद्धत्वादिति । तत एकेन त्रिभिश्च जातैश्चतुर्भिस्त्रयोदशाङ्गावयवे लुप्ते सति नवावशिष्यन्ते, तेऽपि सप्ताधो लेख्याः । एषु च पूर्ववद् हेतुरुन्नेयः । अतश्च मेरी द्विगुरुक-द्विलघुकरूपस्थानानि प्रस्तारगत्या षडेव भवतीति नाग्रे पंक्तिसञ्चारः ।

तेन पट्कलप्रस्तारे द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-पष्ठ-सप्तम-नवमस्थातस्थानि रूपाणि द्विगुरुणि भ्रूयादिति ।

तथा च त्रिलोपे त्रिगुरुक रूप भवतीति, त्रिपञ्चाष्टलोपे भागो नास्तीति, द्वि-त्रि-पञ्चलोपोऽप्यष्टात्मको वृत्त एवेति, पञ्च-द्वयोर्लोपोऽप्यष्टलोपात्मको वृत्त एवेति । एक-द्वि-त्रिलोपोपि वृत्त इति प्रकारेण जायमाना अङ्का न स्थापनीया प्रकृतप्रस्तारसमाप्तेरिति भाव ।

ननु प्रथम रूप सर्वं गुर्वात्मक कुत्रास्तीत्यपेक्षया एक-त्र्यष्टभिर्मिलित्वा जातैर्द्विसभिस्त्रयोदशाङ्कावयवे लुप्ते सति एकोऽवशिष्ट, स आद्ये स्थाने त्रिगुर्वात्मक रूप भवतीति विज्ञातव्यमिति । चरम रूप तु अष्टमाङ्काग्रे उद्दिष्टा-ङ्काऽकारत्वेन स्थापितमेवास्ति । तथा चात्रापि प्रथमाङ्कचरमाङ्कयो पूर्वोक्तन्यायेना-श्वस्थान भवतीति वेदितव्यम् ।

पताकाप्रयोजन तु मेरी पट्कलप्रस्तारस्यैक प्रथम रूप त्रिगुरूपलक्षित सर्वगुर्वात्मक, पट्द्विगुरुणि रूपाणि, पञ्चैकगुरुणि रूपाणि, एक सर्वलघ्वात्मक रूपमस्ति ।

तत्र त्रयोदशभेदभिन्ने पट्कलप्रस्तारे कुत्र स्थाने सर्वगुर्वात्मक, कतमस्थाने द्विगुर्वात्मक, कतरस्थाने चैकगुर्वात्मक, कुत्र वा सर्वलघ्वात्मक, कति वा प्रस्तार-सख्येति प्रश्ने कृते पताकयोत्तर दातव्यमिति पताकाज्ञानफलमिति । श्रीगुरुमुखाद-वगतो मात्रापताकालिखनप्रकारः प्रकाशित । एवमन्यत्रापि निरवधिकमाना-प्रस्तारेषु पञ्चसप्ताष्टकलाना यथाक्रम मात्रापताकाविरचनप्रकार समुत्पेय सुधीभि, ग्रन्थविस्तारभयान्नेहास्माभि प्रपञ्चित इति शिवम् ।

अत्रापि पिङ्गलोद्योताख्याया सूत्रवृत्तौ सार्द्धेन श्लोकेन पण्मात्रापताकाया सिद्धाङ्का सगृहीता । यथा—

एक-द्वि-त्रि समुद्राङ्ग-मुन्यङ्काश्च त्रयस्तथा ।

पञ्चाष्ट-दिक् शिवेना स्यु तथाष्टौ च त्रयोदश ॥

पण्मात्रिकापताकायामङ्कानुक्रमणी स्मृता ।

इति । इहापि च पक्त्या विन्यासक्रमो गुरुमुखादवगन्तव्य ।

किञ्च—

एक-द्वि-त्रि-समुद्राङ्ग-मुनि-वह्नि-शरस्तथा ।

वसु-दिग्-रुद्र-सूर्याष्टक्रमादङ्कान् समालिखेत् ॥

पञ्चमात्रापताकायामङ्कानुक्रमणी मता ।

इति साद्वेन श्लोकेन सूत्रवृत्तौ पञ्चमात्रापताकायां सिद्धाङ्कानुक्रमणिका सगृहीता इति ।

अत्राप्यङ्कविन्यासक्रमः पूर्ववदेव । इत्थं सप्ताष्टनवसु कलासु अङ्कान् समुन्नयेत् । दिङ् मात्रमुक्तमस्मान्निः ग्रन्थविस्तरशङ्कया इति सर्वमनवद्यम् ।

पञ्चमात्रापताका यथा—

१	२	३	५	८
	३		८	
	४		१०	
	६		११	
	७		१२	

षण्मात्रापताका यथा—

१	२	३	५	८	१२
	३		८		
	४		१०		
	६		११		
	७		१२		
	९				

इति श्रीमत्प्रबन्धनन्दनचरणारविन्दमकरन्दास्वादिमोदमानमानसचञ्चरीकालञ्जुरिक-
चक्रबूडामणि-साहित्यार्थवर्णधार-धन्वःशास्त्रपरमाचार्य-श्रीलक्ष्मीनाथ-
भट्टारकविरचिते श्रीवृत्तमौक्तिकवार्तिकदुष्करोद्धारे मात्रा-
पताकोद्धारो नामाष्टमो विधामः ॥ ८ ॥



नवमो विश्रामः

अथ वृत्तजातिसमाह्वंसमविषमपद्यस्थगुरुलघुसंख्याज्ञानप्रकारमाह 'पृष्ठे' इति श्लोकेन ।

पृष्ठे षण्ण्चन्द्रसि कृत्वा वर्णास्तथा मात्राः ।

वर्णाङ्केन कलाया लोपे गुरवोऽवशिष्यन्ते ॥ ६६ ॥

तत्राऽमुक्तसख्याक्षरप्रस्तारेऽमुके छन्दसि कति गुरवः, कति च लघव इति प्रश्ने कृते गुरुलघुसंख्याज्ञानप्रकारप्रक्रिया प्रकाशयते ।

तत्रोद्भावितचतुष्पदे वर्णप्रस्तारच्छन्दसि समवृत्ते पृष्ठे सति वर्णान्-तत्रस्य वर्णान् गुरुलघुरूपतया समुदायमापन्नान् मात्रा-कला-कृत्वा, तथा गुरुलघुरूपसमुदायतयैव कलारूपतामापद्यत्यर्थः । ततः कलाया इति जात्या एकवचन । अतः कलाना मध्यत इत्यवधेयम् । वर्णाङ्केन पृष्ठस्य वृत्तस्य वर्णसंख्याङ्केन लोपे लोपावशिष्टकलासख्यया गुरवोऽवशिष्यन्ते, तत्तद्वृत्तगतगुत्तन् जानीयादित्यर्थः । गुरुज्ञाने सति परिशेषादवशिष्टवृत्ताक्षरसख्यया लघून्पि जानीयादित्यर्थः ॥ ६६ ॥

अत्र समवृत्तस्यैकपादज्ञानेनैव चतुर्णामपि पादानामृट्टवणिका विधाय लिखनेन गुरुलघुज्ञान भवतीत्यनुसन्धेय सुधीभिः । यथा-

समवृत्ते एकादशाक्षरप्रस्तारे षोडशमात्रात्मके षोडशतावृत्तपादे 'रात्परंघ्नर-लर्गं रयोद्धता' इत्यत्र ११, ११, ११, ११, ११ वर्णा ११, मात्रा १६ षोडशकलासु पिण्डरूपामु सख्यातासु वृत्तस्यैकादशवर्णसंख्याया लुप्तया सत्यामवशिष्ट-पञ्चगुरवः पङ्कलघवः परिशेषाद् विज्ञेया । इति समवृत्तस्यगुरुलघुज्ञानप्रकारः । एव पादचतुष्टयेऽपि पादसाम्यात् विसृतिर्गुरवः चतुर्विसृतिर्लघवश्च भवन्तीति ज्ञेयम् । एव प्रस्तारान्तरेऽपि समवृत्तेषु गुरुलघुज्ञानमूहा सुधीभिरित्युपदिश्यते ।

एवञ्च पङ्क्तिशदक्षरायाम्—

गोकुलनारी मानसहारी वृन्दावनान्तसञ्चारी ।

यमुनाकुञ्जविहारी गिरिवरधारी हरिः पायाद् ॥

इत्यस्या देहीसमाख्याया गाथाजाती सप्तपञ्चाशत् सख्यातासु पिण्डरूपामु कलासु पङ्क्तिशदक्षरलोपे कृते सति एकविंशतिगुरवोऽवशिष्यन्ते । परिशेषात् पञ्चदश लघवोऽस्तीति च ज्ञेयम् । इति गाथाजातिषु गुरुलघुज्ञानप्रकारः ।

उट्टवणिका यथा—

SII SSS IIS SSS ISI SSS
IIS SII SSI III SSI SSS

पूर्वाद्धे ३० मात्रा, उत्तराद्धे २७ मात्रा । मात्रा ५७, अक्षर ३६ ।
एवमेवापरास्वपि जातिषु गुरुलघुज्ञानप्रकार उद्दनीय इत्युपदेशः ।

एवमेव अर्द्धसमवृत्तेश्चि प्रथम-तृतीयविपमपादे द्वितीयचतुर्थसमपादे च—

सहचरि कथयामि ते रहस्यं,
न खलु कदाचन तद्गृह व्रजेथाः ।
इह विप-विपमागिरः सखीनां,
सकपटचाटुतराः पुरस्सरन्ति ॥

इति पुष्पिताग्राभिधाने छन्दस्म[ष्ट]पष्टिकलात्मके ६८ पिण्डे छन्दोक्षर-
संख्यां पञ्चाशदात्मकां ५० लुम्पेत् । एवं लोपे सति अष्टादश १८ गुरवोऽव-
शिष्यन्ते, परिशेषाद् द्वात्रिंशल्लघवोऽपि ३९ तत्र वर्तन्ते इत्यर्द्धसमवृत्तस्थ-
गुरुलघुज्ञानप्रकारः ।

उट्टवणिका यथा—

III	III	SIS	ISS		[१२]
III	ISI	ISI	SIS	S	[१३]
III	III	SIS	ISS		[१२]
III	ISI	ISI	SIS	S	[१३]

१८ गुरु, ३२ लघु, अक्षर ५० ।

एवमन्येष्वप्यर्द्धसमवृत्तस्थगुरुलघुज्ञानप्रकारः । एवमन्येष्वप्यर्द्धसमवृत्तेषुदा-
हरणमूह्यं इत्युपदिश्यते ।

तथा च भिन्नचिह्नचतुष्पादे विपमवृत्तेऽपि-

दिललास गोपरमणीषु
तरणितनयातटे हरिः ।
वंशमधरदले कलयन्
वनिताजनेन निभूतं निरीक्षितः ।

इत्युद्गताभिधाने छन्दसि सप्तपञ्चाशत् ५७ कलात्मके पिण्डे छन्दोक्षर-
संख्यां त्रयश्चत्वारिंशदात्मिकां ४३ लुम्पेत् । एवमक्षरसंख्यायां लुप्ताया सत्या
चतुर्दशगुरवोऽवशिष्यन्ते । परिशेषाद् ऊनत्रिंशल्लघवोऽपि २९ विज्ञेया । इति
विपमवृत्तस्थगुरुलघुज्ञानप्रकारः ।

उट्टवणिका यथा—

115	151	115	1	[१०]
111	115	151	5	[१०]
511	111	511	5	[१०]
115	151	115	151	5 [१३]

मात्रा ५७. अक्षर ४३ ।

एवमन्येष्वपि विषमवृत्तेषु गुरुलघुज्ञानप्रकार ऊहनीयः सुबुद्धिमिग्रंथवि-
स्तरमयात्रेहास्माभिः प्रपञ्च्यत इति सर्वं चतुरस्रम् ।

वृत्तस्थगुरुलघूनां युगपज्ज्ञानं न जायते येषाम् ।

तेषां तदवगमार्थं सुकरोपायो मया रचितः ॥ १ ॥

इति धीमन्ध्वनन्दनचरणारविन्दमकरन्दास्यादमोदमानमानसचञ्चरीकालङ्कारिकचक्र-
सूत्रामणि-साहित्यार्णवकर्णधार-ध्वन्दःशास्त्रपरमाचार्य-श्रीलक्ष्मीनाथभट्टारक-
विरचिते धीवृत्तमौक्तिकवार्तिकबुष्करोद्वारे वृत्तजातिसमाह-
समविषमसप्तप्रस्तारेषु तत्तद्व्युत्स्यगुरुलघुसंख्याज्ञान-
प्रकारसमुदाहरो नाम नवमो विधामः ॥ ६ ॥

दशमो विश्रामः

अथ पञ्चमप्रत्ययस्वरूपां वर्णमकंटीमाह—‘मकंटी लिख्यते’ इत्यादिना
श्लोकपटकेन—

मकंटी लिख्यते वर्णप्रस्तारस्यातिवुर्गमा ।

कोष्ठमक्षरसंख्यातं पश्यती रचय पट् तथा ॥ ७० ॥

प्रथमापामाद्यादीन् दद्यादङ्कुंश्च सर्वकोष्ठेषु ।

अपरार्थां तु द्विगुणानक्षरसंख्येषु तेष्वेष ॥ ७१ ॥

आदिपक्षितस्थितरङ्गविभाव्य परपक्षितान् ।

अङ्कुंश्चतुर्धंपक्षितस्यकोष्ठकानपि पूरयेत् ॥ ७२ ॥

पूरयेत् पठ्यञ्चस्यावर्द्धं स्तुर्पाङ्कुसम्भवं ।

एकीकृत्य धतुर्यस्य-पञ्चमस्याङ्कान् मुषीः ॥ ७३ ॥

कुर्वात् तृतीयपक्षितस्यकोष्ठकानपि पूरितान् ।

वर्णानां मर्कटी सेयं पिङ्गलेन प्रकाशिता ॥ ७४ ॥

वृत्तभेदो मात्रावर्णागुरवस्तथा च लघवोपि ।

प्रस्तारस्य पङ्क्ते ज्ञायन्ते पक्षितः क्रमतः ॥ ७५ ॥

तत्र एकाक्षरादिषड्विंशत्यक्षरावधि वर्णवृत्तप्रस्तारेषु तत्तद्वर्णवृत्तप्रस्तारे कति कति प्रभेदाः, कियन्त्य कियन्त्यो मात्रा, कियन्त कियन्तो वर्णाः, कति कति गुरवः, कति कति च लघवः ? इति महाप्रश्ने कृते, वर्णमर्कटिकया वक्ष्यमाण-स्वरूपया प्रत्युत्तर देयमिति ।

वर्णमर्कटीविरचनप्रकारो लिख्यते—

मर्कटीति । भो शिष्य ! वर्णप्रस्तारस्य एकाक्षरादिषड्विंशत्यक्षरावधि कृतस्येति शेषः । अतिदुर्गमा-अतिदुष्करा मर्कटीव मर्कटी-तन्तुजालैरिव विरचिता अङ्गजालपक्षिस्तावलिख्यते-विरच्यत इति प्रतिज्ञा । तत्र वा स्वेच्छया अक्षर-सख्यात-कोष्ठ रचय तथा पदसस्याविशिष्टा पक्तीश्च रचय-कुरु इत्यर्थः ॥७०॥

अथ प्रथमा वृत्तपक्षि साधयति—

प्रथमायामिति । तत्र प्रथमाया-पथमपक्ती वृत्तपक्षाविति यावत् सर्वकोष्ठेषु पूर्वविरचितेषु आद्यादीन्-प्रथमादीन् एकद्वित्रयादीन् अङ्कान् १ २ ३ यावदित्य दद्यात्-विन्यसेत । एव कृते प्रथमवृत्तपक्षि सिद्धयति ।

अथ द्वितीया प्रभेदपक्षि साधयति—

अपरायामिति । चकार-अनन्तर्यार्थः । तत अपराया तु द्वितीयाया प्रभेद-पक्षावित्यर्थः । अक्षरसख्येषु-तत्प्रस्ताराक्षरसख्येषु तेष्वेव विन्यस्तेषु कोष्ठेषु द्विगुणान्-द्विचतुरष्टादिक्रमेण द्विगुणानङ्कान् २ ४ ८ यावदित्यमित्यस्य सर्व-शानुवृत्तिः, दद्यात् इति पूर्वणैव अन्वयः ॥ ७१ ॥ एव कृते द्वितीयाप्रभेदपक्षि सिद्धयति ।

अथ क्रमप्राप्तामपि तृतीया मात्रापक्षिमुल्लघ्य तन्मूलभूता चतुर्थी वर्ण-पक्षि साधयति—

आदिपक्षिस्थितैरिति । आदिपक्षिस्थितै-प्रथमपक्षिस्थितै वृत्तपक्षितस्थितै रेकद्वित्रयादिभिरङ्कै परपक्षितान्-द्वितीयपक्षिस्थितान् द्विचतुरष्टादिक्रमेण स्थितानङ्कान् विभाव्य-गुणयित्वा, ततस्तदगुणितै-द्व्यष्टचतुर्विंशत्यादिभिरङ्कै २ ८ २४ चतुर्थपक्षिस्थकोष्ठकान् पूरयेदित्यन्वयः । अपि एवार्थः । अवि-चारित पूरयेदेवेत्यर्थः । ७२ ॥ एव कृते चतुर्थी वर्णपक्षि सिद्धयति ।

अथ षष्ठ-पञ्चमपक्तयो पूरणोपायमुपदिशति—

पूरयेदिति । षष्ठपञ्चम्यौ षड्क्ती कर्मीभूते तुर्याङ्कसम्मवै -चतुर्थ्यां पक्ति स्थिताङ्कोत्पत्तरेद्धैरेकचतुर्द्वादशादिभिरङ्कं १ ४ १२ पूरयेत् । एव कृते षष्ठपञ्चम्यौ गुह्यलघुपक्ती सिद्धयति । अत्र पक्त्योर्व्यत्यय छदोऽनुरोधेन कृत, फलतस्तु न कश्चिद् विशेषोऽङ्कसाम्यादिति पक्तिद्वय सिद्धम् ।

अथोर्वरिता तृतीया मात्रापक्ति साधयति—

एकीकृत्येति उत्तराद्धपूर्वादिभ्याम् । तत्र सुधी-अङ्कमेलनकुशलो गणक चतुर्यंपक्तिस्थितान् द्व्यष्टचतुर्विंशत्यादिकान् अङ्कान् पञ्चमपक्तिस्थितान् एकचतुर्द्वादशादिकान् द्वाश्च, अथ चकारोऽध्याहार्यं, एकीकृत्य-मेलयित्वा त्रि-द्वादश-षट्त्रिंशदादिरूपतामापद्यति यावत् उर्वरितान्-तृतीयपक्तिस्थितकोष्ठकानपि त्रि-द्वादश-षट्त्रिंशदादिरूपंमैलितैरङ्कं ३ १२ ३६ पूरितान् कुर्यादित्यन्वय । अत्राप्यपि एवार्थं । अविचारित पूरितान् कुर्यादित्यर्थः । एव कृते तृतीयामात्रापक्ति सिद्धयति ।

फलितार्थमाह—परमाद्धेन 'वर्णाना' इति ।

सोऽय पूर्वोक्तिप्रकारेण घटिता वर्णाना मकंटीव मकंटी-अङ्कजालरूपिणी पिङ्गलेन-श्रीनागराजेन प्रकाशिता-प्रकटीकृता ॥ ७४ ॥

एव विरचनप्रकारेण पक्तिषट्क साधयित्वा वर्णमर्वटीफलमाह—

वृत्तमिति । वृत्त वृत्तानि-एकाक्षरादीनि 'एकवचन तु जात्यभिप्रायेण' भेद-प्रभेद वृत्ताना प्रभेदा इत्यर्थं । पूर्ववदत्राप्येकवचननिर्देश । मात्रा-तत्तद्-वृत्तमात्रा, वर्णा-तत्तद्-वृत्तवर्णा, गुरव-तत्तद्-वृत्तगुरव, तथा च लघवोऽपि-तत्तद्-वृत्तलघव इत्यर्थं । प्रस्तारस्येति सम्बन्धे पठ्ठी । एते वृत्तादय षट्-षट्-सख्याविशिष्टा पक्तित -षट्पक्तित त्रमत-त्रमाद् ज्ञायते-हृदयङ्गमतां भाषयन्त इत्यर्थं ॥ ७५ ॥

श्रीलक्ष्मीनाथकृतो मर्वटिभाषा प्रकाशोऽयम् ।

तिष्ठतु बुधजनकण्ठे वरमुक्ताहारभूपणप्रस्य ॥

प्रस्या. स्वरूपमुदाहरणमत्र द्रष्टव्यम् । इत्यल पत्तवेनेति ।

वर्णमंकटी यथा—

वृत्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
प्रमेद	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२	१०२४	२०४८	४०९६	८१९२
माया	३	१२	३६	६६	२४०	५७६	१३४४	३०७२	६९१२	१५३६०	३३७९२	७३७२८	१५९७४४
वर्णाः	२	८	२४	६४	१६०	३८४	८६६	२०४८	४६०८	१०२४०	२२५२८	४९१५२	१०६४६६
गुरुः	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	२३०४	५१२०	११२६४	२४५७६	५३२४८
सध्वः	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	२३०४	५१२०	११२६४	२४५७६	५३२४८

इति नवोदरावर्णा मंकटी । एवमन्यापि वर्णमंकटी समुत्तेया । पचमः प्रत्ययो वर्णमंकटिकाव्यः ।

इति श्रीमत्प्रवृत्तचरणारविन्दमकरव्याख्यादशोदशमानमानसञ्चरीकालङ्कारिकचक्रमुद्रा-

मणि-ध्वज-शास्त्रपरमाचार्य-साहित्याणवर्णधार-श्रीलक्ष्मीनानन्दगुरुक-

विरचिते श्रीवृत्तमौक्तिक-वार्तिक-मुद्रकोद्धार-एकाक्षरादि-

पद्मविनायकपराविवर्णप्रस्तारेषु वर्णमंकटीप्रस्तारोद्धारो

नाम दशमो विश्वामः ॥ १० ॥

एकादशो विश्रामः

श्रीनागराजमानस्य सम्प्रदायानुमानत ।
 श्रीचन्द्रशेखरकृते वार्तिके वृत्तमीक्षितके ॥ १ ॥
 वणमर्कटिकामुक्त्वा मात्रामर्कटिकामपि ।
 दुष्करा दुष्करोद्दारे सुकरा रचयाम्यहम् ॥ २ ॥

अथ पञ्चमप्रत्ययस्वरूपामेव मात्रामर्कटीमाह—'कोष्ठान्' इत्यादिना 'नष्टोद्दिष्ट'
 इत्यन्ते एकादशश्लोकेन—

कोष्ठान् मात्रासम्मितान् पक्षितपदक,
 कुर्यान्मात्रामर्कटीसिद्धिहेतो ।
 तेषु द्वयादीनादिपक्तावयाङ्का
 स्त्वक्त्वाऽऽद्याङ्कं सर्वकोष्ठेषु दद्यात् ॥ ७६ ॥
 दद्यादङ्कान् पूर्वयुग्माङ्कतुल्यान्,
 त्वक्त्वाऽऽद्याङ्कं पक्षपङ्क्तावयाऽपि ।
 पूर्वस्थाङ्कं भावयित्वा ततस्तान्
 कुर्यात् पूर्णाग्नेत्रपक्षितस्यकोष्ठान् ॥ ७७ ॥
 प्रथमे द्वितीयमङ्कं द्वितीयकोष्ठे च पञ्चमाङ्कमपि ।
 वस्वा वाएद्विगुणं तद्विगुणं नत्रतुयंयोर्वंद्यात् ॥ ७८ ॥
 एकीकृत्य तथाऽङ्कान् पञ्चमपक्षितस्थितान् पूर्वान् ।
 दत्त्वा तयंकमङ्कं कुर्यात्सिर्नेव पञ्चमं पूर्णम् ॥ ७९ ॥
 दत्त्वा पञ्चममङ्कं पूर्वाङ्कानेकभावमापाद्य ।
 दत्त्वा तयंकमङ्कं पठ कोष्ठं प्रपूरयेद् विद्वान् ॥ ८० ॥
 कृत्वैवयं चाङ्कानां पञ्चमपक्षितस्थितानां च ।
 त्वक्त्वा पञ्चदशाङ्कं हित्वैकं पूरयेन् मुने कोष्ठम् ॥ ८१ ॥
 एव निरवधिमात्राप्रस्तारेष्वङ्कबाहुल्यम् ।
 प्रकृतानुपयोगवशान् न कृतोऽङ्कानां च विस्तारः ॥ ८२ ॥
 एव पञ्चमपक्षितं कृत्वा पूर्णं प्रथममेकाङ्कम् ।
 दत्त्वा पञ्चमपक्षितस्थितैरयाङ्कं प्रपूरयेत् पठोम् ॥ ८३ ॥

एकीकृत्य तथाऽङ्कान् पञ्चमपष्ठस्थितान् विद्वान् ।

कुर्याच्चतुर्थपक्ति पूर्णा नागाज्ञया तूर्णम् ॥ ८४ ॥

वृत्त प्रभेदो मात्राश्च वर्णा लघुगुरू तथा ।

एते षट्पक्तितः पूर्णप्रस्तारस्य विभक्ति वं ॥ ८५ ॥

नष्टोद्दिष्ट यद्वन् मेरुद्वितय तथा पताका च ।

मर्कटिकापि च तद्वत् कौतुकहेतोर्निबद्धघते तज्जः ॥ ८६ ॥

तत्र च एकमात्रादिनिरवधिकमात्राप्रस्तारेषु च तत्तज्जातिप्रस्तारे कति कति प्रभेदाः, कियन्त्यः कियन्त्यो मात्राः, कियन्तः कियन्तो वर्णाः, कति कति लघवः, कति कति गुरवः ? इति महाप्रश्ने कृते मात्रामर्कटिकया वक्ष्यमाणस्वरूपया प्रत्युत्तर दातव्यमिति मात्रामर्कटीविरचनप्रकारो लिख्यते—

कोष्ठानिति । तत्र-तावन्मात्रामर्कटीसिद्धिहेतोः-मात्रामर्कटीसिद्धयर्थं पक्ति-षट्क यथा स्यात्तथा मात्रासम्मितान्-मात्राभिः परिमितान् मात्राणां सख्यया सम्युक्तानिति यावत् कोष्ठान् कुर्यात्-विरचयेदित्यर्थः । तेषु-कोष्ठेषु आदिपङ्क्तौ-प्रथमपङ्क्तौ वृत्तपङ्क्तौ इति यावत् द्वयादीन्-द्वितीयादीन् द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-पञ्चम-षष्ठादीन्-ङ्कान् २ ३ ४ ५ ६ इत्यादीन् क्रमेण यावदित्ये प्रथम दद्यात्-विन्यसेत् । किं कृत्वा ? अथ चेत्यर्थः । सर्वकोष्ठेषु-षट्स्वपि कोष्ठेषु आद्याङ्क-प्रथमाङ्कं त्यक्त्वा-परित्यज्य । अत्र सर्वकोष्ठेषु प्रथमाङ्कत्यागो न सर्वथा सर्व-कोष्ठत्यागपरः, किन्तु षष्ठगुरुप्रथमपक्तिकोष्ठत्यागपर इति प्रतिभाति । तत्र गुरोरभावादेवेति ब्रूमः । अतश्च सम्प्रदायात् पञ्चसु कोष्ठेषु प्रथमाङ्कविन्यासः कर्तव्यः । अन्यथा वक्ष्यमाणाङ्कविन्यासमङ्गापत्तेरिति भावः ॥ ७६ ॥

एव अङ्कविन्यासे कृते सति प्रथमा वृत्तपक्तिः सिद्धयति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया प्रभेदपक्ति साधयति—

दद्यादिति । अथेति-प्रथम पक्तिसिद्धयन्तर पक्षपङ्क्तावपि-द्वितीय-पङ्क्तावपि आद्याङ्क-प्रथमाङ्कं त्यक्त्वा-परित्यज्य, प्रथमाङ्कस्य पूर्वाङ्काभावात् द्वितीयकोष्ठादारभ्य प्रथमाङ्कशिरस्य प्रथमाङ्क गृहीत्वा पूर्वयुग्माङ्कतुल्यान् उद्देशप्रमानुसारेण एक-द्वि-त्रि-पञ्चाष्ट-त्रयोदशादीन् अङ्कान् १, २, ३, ४, ८, १३ शृङ्खलावन्धन्यायेन क्रमतो यावदित्ये दद्यात्-विन्यसेदित्यर्थः ।

एव अङ्कविन्यासे कृते सति द्वितीयाप्रभेदपक्तिः सिद्धयति । २ ।

अथ तृतीया मात्रापक्ति साधयति—

पूर्वस्थाङ्करिति । पूर्वस्थाङ्कः-प्रथमपक्तिस्थिताङ्कः ततो द्वितीयपक्ति-पूरणानन्तरं तां द्वितीयं प्रत्येकं-प्रतिकोष्ठं भावयित्वा-गुणयित्वा इत्यर्थः । नेत्र-

पंक्तिस्थकोष्ठान्-तृतीयपंक्तिस्थितकोष्ठान् पूर्णान् कुर्यात् । अतश्चात्रैकचतुर्नव-
विंशति-चत्वारिंशदष्टसप्तत्यादिभिरङ्कैः १, ४, ९, २०, ४०, ७८ तृतीय
पंक्तिस्थितकोष्ठान् पूरितान् कुर्यादित्यर्थः । अत्र नेत्रमस्या रीद्रीति विज्ञातव्या ।
पाठान्तरे—अग्निपर्यायत्वात् स एवाज्यः । एवमन्यत्रापि । शालिनीहन्दसि ॥७७॥

एवमङ्कविन्यासे कृते सति तृतीया मात्रापंक्तिः सिद्धयति ॥३॥

अथ त्रमप्राप्तां चतुर्थीं वर्णपंक्तिमुल्लंघ्य चतुर्थ-पष्ठपंक्तयो युगपदेव
साधनार्थं तन्मूलभूतां प्रथमं तावत् पञ्चमपंक्तिं साधयति-

प्रथमे इति । तत्र षट्स्यपि प्रथमपंक्तिपु प्रथमकोष्ठस्य त्यक्तत्वात्, द्वितीय-
कोष्ठकमेवात्र प्रथमं कांष्ठकम् । अतः तस्मिन् प्रथमे कोष्ठके द्वितीयमङ्कं, तद-
पेक्षायाः द्वितीयकोष्ठके च पञ्चमाङ्कं च दत्त्वा, ततो वाणद्विगुणं-पञ्चद्विगुण
दश १०, तद्विगुणं-दशद्विगुणं विंशतिश्च २०, ती-द्वावङ्की नेत्रतुर्गयोः तदपेक्षयैव
तृतीयचतुर्थयोः कोष्ठकयोः दद्यात्-विन्यसेदित्यर्थः ॥७८॥

तथा चात्र पञ्चमपंक्तौ प्रथमकोष्ठं विहाय द्वि-पञ्च-दश-विंशतिभिरङ्कैः
२, ५, १०, २० कोष्ठचतुष्टयं पूरयित्वा अग्रिमैतत्पञ्चमकोष्ठपूरणार्थं उपाया-
न्तरमाह-

एकीकृत्येति । तथा च-इति आनन्तर्यायि । ततः पञ्चमपंक्तिस्थितान् पूर्वान्
पूर्वाङ्कान्-द्विधादीन् चतुष्कोष्ठस्थान् एकीकृत्य-मेलयित्वा, तथा ततोऽपीत्यर्थः ।
तस्मिन्नेकीकृताङ्के एकमधिकं दत्त्वा निष्पन्ने एतेनाङ्केन अष्टविंशता ३८ अङ्केनैव
पञ्चमं पूर्वापेक्षायां पञ्चमं कोष्ठकं पूर्णं कुर्यात् ॥७९॥

अत्रत्य पष्ठकोष्ठपूरणोपायमाह-

त्यक्त्वेति । विद्वान्-अङ्कमेलनकुशलो गणकः पूर्वाङ्कान्-द्वितीयादीन् एक-
मावमापाद्य-एकीकृत्य सयोज्येति यावत् । ततः पिण्डीकृतेषु एतेषु अङ्केषु पञ्चमाङ्क
प्रथमाङ्कवत् त्यक्त्वा । तथा पुनरित्यर्थः । एकमङ्कमधिकं दत्त्वा पूर्ववज्जातेन हेन
एकसप्तत्या ७१ पष्ठ कोष्ठं प्रपूरयेदिति ॥८०॥

अथ तथैवात्रस्यसप्तमकोष्ठपूरणोपायमाह-

कृत्वेति । पञ्चमपंक्तिस्थितानां द्विधादीनां एकसप्तत्यन्तानां षण्णामङ्का-
नामक्य-पिण्डीभाव कृत्वा तेषु पूर्ववत् पञ्चदशाङ्कं त्यक्त्वा । ततस्तेष्वपि चैक
हित्वा मुनेः कोष्ठं-सप्तम कोष्ठं त्रिंशदधिकेन शताङ्केन १३० पूरयेत् । इति
सप्तमकोष्ठकपूरणप्रकारः ॥ ८१ ॥

एवमङ्कसप्तकेन द्वि-पञ्च-दश-विंशत्यष्टत्रिंशदेकसप्तति-त्रिंशदधिकैकशतकरूपेण २, ५, १०, २०, ३८, ७१, १३० पञ्चमपङ्क्तौ कोष्ठसप्तकं पूरयेदिति । एव चात्रत्ये पूरणीये तत्तत्कोष्ठे अत्रत्यानां द्वघादीनामङ्कानां एकीभावं कृत्वा, यथासम्भवं तत्तदङ्कं त्यक्त्वा, तेष्वपि यथासम्भवं एकादिकं हित्वा तत्तत्कोष्ठकं पूरयेदिति संक्षेपः ।

एवं अङ्कविन्यासे कृते सति चतुर्थपष्ठपङ्क्तिगर्भाः पञ्चमी लघुपङ्क्तिः सिद्धयति । ननु अस्यां पङ्क्तावग्रिमकोष्ठाऽङ्कसञ्चारः क्रियतां इत्याकाशया प्रकृतानुपयोगादङ्काहल्याद् ग्रन्थविस्तरशङ्कया न क्रियत इत्याह—

एवमिति । सुगमम् ॥ ८२ ॥

अथ पञ्चमपङ्क्तिपूरणमुपसंहरन् पष्ठगुरुपङ्क्तिपूरणप्रकारमुपदिशति—

एवमिति । एव पूर्वोक्तप्रकारेण पञ्चमपङ्क्ति पूर्णा कृत्वा तत्र गुरुस्थानीय प्रथमं कोष्ठं विहाय अग्रिमकोष्ठं—प्रथमं प्रथमत एवाङ्कं दत्त्वा पूरणीयम् । अथ-अनन्तरं पञ्चमपङ्क्तिस्थितैः द्वितीयादिभिरङ्कैः पूर्वस्यापितैरेव प्रतिकोष्ठं पठ्ठी प्रपूरयेदिति । तथा च पष्ठपङ्क्तौ ०, १, २, ५, १०, २०, ३८, ७१, १३० शून्यैक-द्वि-पञ्च-दश-विंशति-अष्टत्रिंशदेकसप्तति-त्रिंशदधिकैकशताङ्कविन्यस्ता दृश्यन्त इति ॥ ८३ ॥

एवमङ्कविन्यासे कृते सति पठ्ठी गुरुपङ्क्तिः सिद्धयति ॥ ६ ॥

अथोर्वरितचतुर्थवर्णपङ्क्तिपूरणप्रकारमुपदिशति—

एकीकृत्येति । विद्वान्-अङ्कमेलनकुशलो गणकः तथा पूर्वोक्तप्रकारेण पञ्चम-पष्ठपङ्क्तिस्थितान् द्वघेकादीन् अङ्कान् प्रतिकोष्ठ एकीकृत्य-संयोज्य नागाज्ञया-श्रीपिङ्गलनाभोक्तमार्गेण चतुर्थपङ्क्तिस्थितपङ्क्तिस्थकोष्ठकरूपां तूर्ण-अविचारितमेव पूर्णं कुर्यादिति । अत्रत्यप्रथमकोष्ठे असंयुक्तः पञ्चमकोष्ठस्थप्रथमांकः सम्प्रदाय-लभ्यो देय इति रहस्यम् ॥ ८४ ॥

तथा चतुर्थपङ्क्तौ १, ३, ७, १५, ३०, ५८, १०६, २०१ एक-त्रि-सप्त-पञ्चदश-त्रिंशद्-अष्टपञ्चाशन्-नवाधिकशतैकोत्तरद्विशताङ्का विन्यस्ता दृश्यन्त इति ।

एवं अङ्कविन्यासे कृते सति चतुर्थी वर्णपङ्क्तिः सिद्धयतीति ॥ ४ ॥

एवं विरचनप्रकारेण पङ्क्तिपट्टकं साधयित्वा मात्रामकंटीफलमाह—

वृत्तामिति । वृत्तं-वृत्तानि एकमात्रादिनिरवधिकमात्राजातयः । एकवचनं] जात्यभिप्रायेण । प्रभेदजातीनां प्रभेदा इत्यर्थः । पूर्ववदत्राप्येकवचननिर्देशः ।

मात्रा.—तत्तज्जातिमात्रा, वर्णाः—तत्तज्जातिवर्णाः तथा—तत इत्यर्थः । लघुगुरू—
तत्तज्जातिलघवस्तत्तज्जातिगुरवश्चेत्यर्थः । एते वृत्तादयः पट्प्रकाराः पूर्णप्रस्ता-
रस्य समुदिताः पट्पकित्तो निश्चित विभान्ति—प्रकाशन्त इत्यर्थः ॥ ८५ ॥

ननु एतत्करण आवश्यकमनावश्यक वा ? इति परामर्शं छान्दसिकपरीक्षा-
रूपत्वात् केवल कौतुकमात्राघायकत्वाच्च अस्य करण अनावश्यकमेवेत्याह—

नष्टोद्दिष्टमिति । यथा नष्टोद्दिष्टादिकं कौतुकावह तथैव तद्विरचनमपीत्यर्थं
इति सर्वमवदातम् ॥ ८६ ॥

मात्रामर्कटी यथा—

वृत्तम्	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
प्रभेदाः	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८६	१४४
मात्राः	१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९५	८९०	१५८४
वर्णा	१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५		
लघव	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५		
गुरव	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०		

इति एकादशमात्रामर्कटी । एव अन्येऽपि मात्रामर्कटी समुक्षेया । तथैव मात्रा-
मर्कटिकास्य पञ्चम प्रत्यय ।

[वृत्तिकृतप्रशस्तिः]

श्रीमत्पिङ्गलनागेन प्रोक्तो यो मर्कटीक्रमः ।
 विविच्य स मया प्रोक्तः शिष्यानुग्रहेतवे ॥ १ ॥
 मुनीभभूपतिमिते १६८७ वैक्रमेऽब्दे प्रभायिनि ।
 कार्तिकेऽसितपञ्चम्यां लक्ष्मीनाथो व्यरीरचत् ॥ २ ॥
 वार्त्तिके दुष्करोद्धारमुदारं छान्दसप्रियम् ।
 अन्तःसारं स्फुटार्थं च कवीनां कौतुकावहम् ॥ ३ ॥

इति श्रीमन्नन्दनन्दनधरपारविन्दमकरन्दास्वादमोदमानमानसचञ्चरीकालङ्कारिकघञ्ज-
 चूडामणि-साहित्याण्यवकण्ठार-छन्द-शास्त्रपरमाचार्य-श्रीलक्ष्मीनाथभट्टारक-
 धिरचिते श्रीवृत्तमौक्तिकवार्त्तिकदुष्करोद्धारे एकमात्रादिनिरवधिक-
 मात्राप्रस्तारेषु सत्ताज्जातिमात्रामर्कटीप्रस्तारोद्धारो
 नामर्कवादशो विधामः ॥ ११ ॥

समाप्तश्चार्य वृत्तमौक्तिकवार्त्तिके दुष्करोद्धारः ।

शुभमस्तु । श्रीनागराजाय नमः ।

संवत् १६६० समये भाद्रपदशुद्धि ३ भौमे शुभदिने अगस्तपुरस्थाने लिखित सालमनि-
 मिथेण । शुभं भूयात् । श्रीविष्णवे नमः ।

महोपाध्यायश्रीमेघविजयगणितसन्दृग्ध

वृत्तमौक्तिकदुर्गमबोधः

[उद्दिष्टादिप्रकरणव्याख्या]

[मङ्गलाचरणम्]

प्रणम्य फणिना नम्य सम्यक् श्रीपाश्र्वंमोश्वरम् ।

उद्दिष्टादिषु सूत्रार्थं कुर्वे श्रीवृत्तमौक्तिके ॥ १ ॥

अथ वृत्तमौक्तिके उद्दिष्ट नष्ट वर्णतो मात्रातो वा विव्रियते—

दत्या पूर्वयुगाङ्कान् लघोरुपरि गस्य त्प्रभयत ।

अन्त्याङ्के गुरुशीर्षस्थितान् विलुम्पेदथाङ्काश्च ॥ ५१ ॥

उद्धरितंश्च तथाङ्कंमत्रोद्दिष्ट विजानीयात् ।

पङ्क्तिं पदे सूत्र तदव्याख्या—

केनापि नरेण लिखित्वा दत्त । १ । १ । इदं कतमत् रूपम् ? इति प्रश्ने

उद्दिष्टं शेषम् । तत्र पूर्वयुगलाङ्का प्रत्येक धार्या । पूर्वयुगलाङ्का इति सज्ञा अङ्कानाम् । तत्कथम् ? इति चेत, मात्रोद्दिष्टे १ । २ । ३ । ५ । ८ । १३ । २१ । ३४ । ५५ । ८६ इति । अत्र १ मध्ये २ योजने ३ । पुन ३ मध्ये पूर्वाङ्क २ मेलने ५ । पुन ५ मध्ये स्वपूर्वाङ्क ३ मेलने ८ । तत्रापि स्वपूर्वाङ्क ५ मेलने १३ । तत्रापि स्वपूर्वाङ्क ८ क्षेपण २१ । तस्मिन्नपि स्वपूर्वाङ्क १३ एकीकरणे ३४ । तन्मध्ये स्वपूर्वाङ्क २१ क्षेपे ५५ । अत्रापि स्वपूर्वाङ्क ३४ योगे ८६ इत्येव योजनारीति । पूर्वं पूर्वमेलनाज्जातत्वात् पूर्वयुगाङ्का इति सज्ञाभाज । तद्धरणरीति —

१ २ ५ ८ २१

। १ । १ । १ ।

३ १३

एव लघोरुपरि एक अङ्कन्यास गस्य-गुरोस्तु उभयत-उपरि अथश्च पाश्र्व-द्वयेऽपि अङ्कधरणम् । एतत् कृत्वा अन्त्याङ्के २१ रूपे गुरोरुपरिस्था अङ्का २ । ८ मेलने १०, एते २१ मध्यात् विलुम्पयेत्-पराकुर्मात्, उद्धरितोऽङ्क ११ एव निश्चित ज्ञात सप्तमात्रे मात्राच्छन्दसि एकादश रूपमिदम् । ईदृश । १ । १ । अ-यत्रापि ।

त्रिकले छन्दसि । ५ इदं कतमं रूपम् ? इति पृच्छायां पूर्वयुगाङ्कधरणं १ २
। ५

तत्रांत्याङ्कः ३ तन्मध्यात् गुरुशीर्षस्थाङ्क २ विलोपने शेषं १ इति प्रथमं
रूपम् । ५ ईदृशम् । परत्राऽपि ५ । इदं कतमत् ? इति प्रश्ने १ ३ अन्त्याङ्के ३
। ५

गुरुशीर्षस्थ १ विलोपे शेषं २ इति द्वितीयं रूपं त्रिकले ५ । ईदृशम् ।

चतुःकले छन्दसि ५ ५ इदं कतमत् ? इति पृच्छायां १ ३ अङ्केषु घृतेषु
। ५ ५
२ ५

अन्त्याङ्कः ५ तन्मध्याद् गुरुशीर्षस्थ अङ्कद्वयं १ । ३ एतयोर्मेलने ४ तद्विलोपने शेषं
१ प्रथमं रूपम् ५ ५; द्वितीयेऽपि १ २ ३ अङ्केषु न्यस्तेषु अन्त्याङ्कः ५
। । ५
५

तन्मध्यात् २ गुरुशिरःस्थाङ्कः ३ तल्लोपे शेषं २ इति द्वितीयं रूपम् । तृतीये । ५ ।
ईदृशेऽङ्काः १ २ ५ अन्त्याङ्कः ५ ततः गुरुशिरःस्थः २ लोपे शेषं ३ तृतीयं
। ५ ।
३

रूपम् । तुर्ये ५ । । ईदृशेऽङ्काः १ ३ ५ अन्त्याङ्कः ५ ततः गुरुशिरःस्थ १
५ । ।
२

लोपे शेषं तुर्यं रूपं ५ । ।; पञ्चमं सर्वलघुकम् ।

पञ्चकले । ५ ५ ईदृशेऽङ्काः १ २ ५ अत्रान्त्याङ्कः ८ ततः गुरुशिरःस्थ
। ५ ५
३ ८

२ । ५ एवं ७ लोपे प्रथमं रूपम्; ५ । ५ ईदृशेऽङ्काः १ ३ ५ अन्त्यः
५ । ५
२ ८

८ तन्मध्यात् १ । ५ एवं ६ तल्लोपे शेषं २ द्वितीयं रूपम् । तृतीयं । । । ५
ईदृशेऽङ्काः १ २ ३ ५ अत्र प्राग्वत् ८ मध्यात् गुरुशीर्षस्थ ५ लोपे शेषं
। । । ५
८

३ तृतीयम् । तुर्योपि १ ३ ८ प्राग्वत् ८ मध्यात् १ । ३ गुरुशीर्षस्थ ४
 ५ ५ ।
 २ ५

लोपे शेष ४ तुर्यं रूपम् । पञ्चमोऽपि १ २ ३ ८ इत्यत्र गुरुशीर्षस्थ
 । । ५ ।
 ५

३ लोपे अन्त्याङ्क ८ मध्ये शेष ५ इति [पञ्चम रूपम्] । षष्ठे १ २ ५ ८
 । ५ । ।
 ३

अन्त्याङ्क ८ मध्यत गुरुशिरःस्थ २ लोपे शेष ६ [इति षष्ठ रूपम्] । सप्तमोऽपि
 १ ३ ५ ८ तत्र अन्त्याक ८ मध्यात् गुरुशीर्षस्थ १ लोपे शेष ७ इति
 ५ । । ।

२
 सप्तम रूपम् ।

एव षट्कले मात्राच्छन्दसि १ ३ ८ अत्रान्त्याङ्क १३ तत गुरुशीर्ष-
 ५ ५ ५
 २ ५ १३

स्थिताङ्क १।३।८ एषा लोपे शेष १ प्रथम रूपम्, १ २ ३ ८ अत्रापि
 । । ५ ५
 ५ १३

प्राग्वत् ३।८ एव ११ तेषां १३ मध्याल्लोपे शेष २ द्वितीय रूपम् । तृतीये
 १ २ ५ ८ अन्त्याङ्क १३ तत २।८ एव १० गुरुशीर्षस्थ लोपे शेष ३ ।
 । ५ । ५

३ १३

१ २ ५ १३ २१ ५५ अत्र गुरुशीर्षस्थाङ्क सर्वमेलने ८३ तल्लोप
 । ५ ५ । ५ ५

३ ८ ३४ ८६

८६ मध्ये शेष ६ रूपमिद दशकले छन्दसि ।

पुत्र जुयल सरि अका दिज्जमु, गुरु सिर अक सेस मेटिज्जमु ।

उवरिल अक लेखि बहुआण, ते परि धुअ उदिठ्ठा जाण ॥

[प्राकृतपैङ्गलम, परि १, पद्य ३६]

दत्त्वा पूर्वयुगाङ्कं गुरुशीर्षाङ्कं विलुप्य शेषाङ्के ।
अङ्करितोऽवशिष्टैः शिष्टैरुद्दिष्टमुद्दिष्टम् ॥

[वाणीभूषणम् परि. १, पृ ३१]

मत्त मत्त घुम्र अंक, लघु सिर गुरुतर हूं धरो ।
जोर अंक सरवंक, सब्वहि घाट उद्दिष्ट कहू ॥

लघोः शीर्षं एवाङ्कः धार्यः गुरोः शीर्षं तथा 'तर' इति भाषाविशेषात् तले
अधोर्षि अङ्कः धार्यः । यथा—पञ्चकले प्रस्तारे १ २ ५ अत्रान्त्याङ्के ८
१ ५ ५
३ ८

ततः गुरुशीर्षस्थाङ्काः २, ५.....७ सप्तमं रूपम् ।

१ २ ५ ८ २१ गुरु सिर अंकेयोजने १० ते २१ मध्ये ऊन शेषं ११
१ ५ १ ५ १
३ १३

संख्या प्राप्ता इति एकादशमिदं रूपमिति छन्दोरत्नावलीग्रन्थे ।

१ २ ३ ५ ८ १३ २१ अत्र प्रश्नः—सप्तकलप्रस्तारे एकादशं
१ १ १ १ १ १ ११
१ ५ १ ५ १

रूपं कीदृशम् ? इति, तदा प्राप्तं १५१५ इदम् ।

इति मात्रोद्दिष्टसूत्रव्याख्या पूर्णा ।

मात्रानष्ट-प्रकरणम्

अथ मात्रानष्ट यथा—

यत्कलकः प्रस्तारो लघवः कार्याश्च तावन्त ।

दत्त्वा पूर्वयुगाङ्कान् पृष्ठाङ्क लोपयेदन्त्ये ॥ [॥ ५३ ॥]

उत्तरितोत्तरितानामङ्काना यत्र लभ्यते भाग ।

परमात्राञ्च गृह्येत्वा स एव गुरुतामुपागच्छेत् ॥ [॥ ५४ ॥]

अस्यार्थं—यावत्त्य कलाः प्रस्तारे एककलस्य एक एव लघु । ईदृश द्वि-
कलस्य द्वे रूपे, त्रयादी एक एव गुरु ५ ईदृश, द्वितीयरूपे लघुद्वयम् ॥ ईदृशम् ।
अत्र पृच्छानवकाशात् न इष्टरूपलाभ, असम्भवात् । त्रिकले मात्राच्छन्दसि त्रीणि
रूपाणि । चतु कले पञ्चरूपाणि १।२।३।५ इति पूर्वयुगाङ्कात् । पञ्चकले अष्ट-
रूपाणि १।२।३।५।८ इति पूर्वयुग्माङ्कात् । षट्कले १३ रूपाणि तावत् एव पूर्व-
युग्माङ्कात् । सप्तकले २१ रूपाणि तथैव ।

एव कलाप्रमाणा लघवो लेख्या, यथा—सप्तकले मात्राच्छन्दसि इष्ट एकादश
रूप कीदृश ? इति, मुखेन केनचित् पृष्टम्, तदा सप्तैव लघव ।।।।।।
अनया रीत्या लेख्या । तेषामुपरि १।२।३।५।८।१३।२१ एते धार्या । अत्र पृष्टे
इष्टाङ्क ११, तस्य २१ मध्याल्लोपे शेष १।२।३।५।८।१३।१० इति । तदा दश-
मध्ये त्रयोदश न पतन्तीति भागाभाव, तदा ८ अङ्क १३ मध्ये पात्य, एव
अष्टाध कलामाकृत्य त्रयोदशाधो गुरु स्थाप्य, दशाध एका कलाऽवशिष्टा,
अष्टकस्य लोप परमात्राग्रहेण गुरुभावात् । अथ त्रिकस्य कला पञ्चके न गृह्यते,
मुख्यैककस्य द्विवेन गृह्यते तदा ५५५ । ईदृश नवमरूपतापत्ते । यद्वा त्रिकस्य
कला पञ्चके न गृह्यते १।२ अनयो कलाद्वय लघुरूपमेव ध्रियते तदा दशम रूप
ईदृश स्यात् । ५५, तेन पञ्चकाऽध कला एका भिन्नैव रक्ष्या, अग्रे द्वितीयाङ्कस्य
त्रिके कलाग्रहेण त्रिकाधो गुरु, मुख्यैककलशेषात्, एव । ५ । ५ । ईदृश एकादश
रूप व्यवस्थितम् । द्विकाष्टकयोर्लोप 'उत्तरिल अकलोपके लेख' इति वचनात् ।
यदुक्त ध्वनोरस्नावस्थाम्—

सब लघु सिर ध्रुव अक, प्रश्नहीन शेषाङ्क धरि ।

पर लघु ले लिख वङ्क उत्तरि भाग जह जह परइ ॥

यद्वा, दशाना भागस्त्रयोदशे प्राप्यते 'दश एके दश' शेष ३ विपनत्वात्
परस्य-प्रत्यस्य त्रयोदशात् पूर्वस्य अष्टकस्य कलाग्रहेण त्रयोदशस्थानजातत्रिकाधो

गः, श्र्यष्टकलोपः, दशाधो लः, पञ्चके त्रिकस्य भागे शेषं २ इति समत्वात् पञ्चाधो लः ५।, द्विकस्य त्रिके भागापत्ती शेषं १ इति विपमाङ्कत्वाद् गुरुः, द्विकस्य कलाग्रहात् द्विकलोपः, मुख्यैकाधो यथास्थितो लघुरेव, एवं । ५ । ५ । इत्येकादशं व्यवस्थितं सप्तकले ।

अथ बालबोधाय इयमेव व्याख्या विस्तरतः—

प्रथमं त्रिकले मात्राच्छन्दसि त्रिलघुकरणं तस्य न्यासः १ २ ३ तदुपरि
। । ।

पूर्वयुगाङ्कदानम् । तत्र पृष्ठं प्रथमरूपं त्रिकले कीदृग् ? इति, एवं इष्टं एकरूपं तत् त्रिकात् अन्त्याङ्कात् पराकृतं-लुप्तमिति यावत् शेषं १ । २ । २ 'उद्धरितोद्धरितानां अङ्कानां यत्र लभ्यते भागः' इति वचनात् द्विकस्य द्विकेन भागे परद्विकाधो गः, पूर्वस्य द्विकस्य कलाग्रहात् तस्य लोपः, शेषं । ५ इति प्रथमं रूपम् । पृष्टे द्वितीये, अन्त्यत्रिकात् २ लोपे शेषं १ । २ । १, अत्र अन्त्यैककस्य भागलभो द्विके तदधो गः, मुख्यैककलाग्रहात् तस्य लोपः, अन्त्यैकाधो लः ५ इति द्वितीयं रूपम् । तृतीयं सर्वलघुकमेव ।

अथ चतुःकले १ २ ३ ५ अत्र पृष्टे १ लोपे शेषं १ । २ । ३ । ४,
। । । ।

त्रिकस्य भागः चतुष्के प्राप्यः तदधो गः, त्रिकस्य कलाग्रहात् त्रिकलोपः, द्विकेऽपि मुख्यैकस्य भागः तेन द्विकाधो गः, एककस्य लोपः, जातं ५ ५ प्रथमम् । पृष्टे २ लोपे शेषं १ । २ । ३ । ३, त्रिके-त्रिकस्य भागे परत्रिकाधो गः, पूर्वत्रिकलोपः कलाग्रहात्, शेषे द्विके एकस्य भागापत्ती कलाङ्कसाम्यादपि पूर्वरूपापत्तिः, तेन नैकस्यापि लोपः, लघुद्वयं । ५ द्वितीयम् । पृष्टे ३ लोपे शेषं १ । २ । ३ । २, एवं द्विकस्य अन्त्यस्य भागस्त्रिके तदधो गः, पूर्वद्विकस्य कलाग्रहात् लोपः, एवं । ५ । तृतीयम् । पृष्टे ४ लोपे शेषं १ । २ । ३ । १ एकस्य भागोऽत्र त्रिके, एवमन्त्यैकाधो लः, त्रिकेऽपि शेषाभावात्तदधो लः, 'त्रिण एकं ३' लघु १ तस्य भागः द्विके तदधो गः, एकलोपः, अत्र मुख्यैकस्य भागो द्विके तदधो गः, कलापूर्तः त्रिके चान्त्यैकके च प्रत्येक कला मुख्यैककलोपः, ५ । तुयम् । पञ्चमं लघुसकलरूपम् ।

पञ्चकले १ २ ३ ५ ८ अत्र पृष्टे १ लोपे शेषं १, २, ३, ५, ७,
। । । । ।

अत्र सप्तके पञ्चकस्य भागः, तेन सप्ताधो गः, पञ्चकस्य लोपः, द्विकस्य त्रिके भागः तदधो गः, द्विकलोपः, मुख्यैकाधः कला स्थितैव । ५ ५ प्रथमम् । पृष्टे २ लोपे शेषं १, २, ३, ५, ६, षट्के पञ्चकस्य भागे

पडधो ग, पञ्चकलोप, त्रिके-त्रिकलस्य द्वितीयरूपस्य गुर्वधिकत्वे तादृस्यात् द्विकस्य भाग पूर्वरूपे कृत तेनात्र द्विके एकस्य भागे द्विकाधो ग, मुख्यकलोप, त्रिकाध कला, द्वितीय ऽ। ऽ रूपम् । पृष्टे ३ लोपे शेष १, २, ३, ५, ५, पञ्चकेन पञ्चकस्य भागे परपञ्चकाधो ग, पूर्वपञ्चकलोप, शेष कलानयमङ्कनय चेति साम्यात् ५, ५ इति समभागाच्च प्रत्येक लघवस्त्रय, एव । । । ऽ तृतीयम् । पृष्टे ४ लोपे शेष १, २, ३, ५, ४, अत्र चतुष्के पञ्चकभागो न प्राप्य, पञ्चके चतु कस्य भागात् पञ्चकाधो ग, त्रिकस्य कलाग्रहाल्लोप, चतु काध कला, एव कलात्रये सिद्धे शेषमङ्कद्वय कलाद्वय चेति साम्याल्लघुद्वय कार्यमिति न विचार्यं द्वाभ्या कलाभ्या गुरुसिद्धेर्गुं र स्थाप्य । पञ्चकलेऽष्टरूपात्मके तुयंरूपे लघ्वन्ते गुरुद्वयेनापि कलापूर्ते इति एकस्य द्विके भागात् द्विकाधो ग, मुख्यकलोप, एव ऽ ऽ । तुयंम । पृष्टे ५ लोपे शेष १, २, ३, ५, ३, अत्र त्रिकस्थान्त्यस्य पञ्चके भागात् पञ्चकाधो ग, अत्यात्रिकाधो ल, पूर्वत्रिकलोप, अत्रापि समकलाङ्कत्वे गुरुरिति न कार्यं पूर्वरूपापत्ते, अर्द्धोपरि लघूनामेव वृद्ध । तेन लघुद्वय । । ऽ । पञ्चमम् । पृष्टे ६ लोपे शेष १, २, ३, ५, २, अत्र पञ्चकस्य त्रिके भागो नेति द्विकस्य त्रिके भागात् त्रिकाधो ग, द्विकलोप, पञ्चाधो ल, अन्त्यद्विकाधो ल, मुख्यकाधोऽपि ल, तेन । ऽ । । पृष्टम् । पृष्टे ७ लोपे शेष १, २, ३, ५, १, अत्र पूर्वरूपे द्विकस्य त्रिके भागलाभात् त्रिकाधो ग, उक्त सप्तमे पुना रूपे द्विके एकस्य भागात् द्विकाधो ग, मुख्यकलोप त्रि-पञ्च अन्र्यकानामध प्रत्येक लघुत्रय, ऽ । । । सप्तमम् । पर सर्वलमष्टमम् ।

पटकले १, २, ३, ५, ८, १३, इह पृष्टे १ लोपे शेष १, २, ३, ५, ८, १२,
। । । । । ।

अत्र १२ मध्ये ८ भागे द्वादशाधो ग, अष्टकलोप, एव पञ्चके त्रिकस्य भागात् पञ्चकाधो ग, त्रिकलोप, द्विके मुख्यकस्य भागात् द्विकाधो ग, मुख्यकलोप सर्वत्रकलाग्रहात् ऽ ऽ ऽ प्रथमम् । पृष्टे २ लोपे शेष १, २, ३, ५, ८, ११, अत्रापि ११ मध्येऽष्टभागात् तत्कलाग्रहे ११ अधो ग, ८ लोप, पञ्चके त्रिकस्य भागात् पञ्चाधो ग, त्रिकलोप शेषाङ्ककलासाम्यात् । । ऽ ऽ द्वितीयम् । पुन पृष्टे ३ लोपेऽत्यदशाधो ग, अष्टाना भागे तत्कलाग्रहात् त्रिकाधो ग, द्विकस्य कलाग्रहात् पञ्चाधो ल, मुख्यकाधो ल, एव । ऽ । ऽ तृतीयम् । पुन पृष्टे ४ लोपे शेष ६, अन्ते तत्राप्यष्टकलाग्रहादधो ग, द्विके एकस्य भागात् कलाग्रहे द्विकाधो ग, त्रिकाधो ल, परस्य अष्टकस्य लोपात् पञ्चाधो ल, भागासम्भवात्, एव ऽ । । ऽ चतुर्थम् । पृष्टे ५ तस्य १३ मध्यात् लोपे शेष १, २, ३, ५, ८, ८, पूर्वाष्टककलाग्रहात् पराष्टकाधो ग, पूर्वाष्टकलोप, शेषे कलाङ्कसाम्यात्

पृष्टे पञ्चलोपे शेषमन्ते १६, तदधो ग, १३ कलाग्रहात् लोप, अष्टाधो ल, पञ्चकेऽधो ग, त्रिके कलाग्रहाल्लोप, शेषे समकलाङ्कत्वाल्लघुद्वय ।। ५। ५ पञ्चमम । पृष्टे ६ तल्लोपे शेषमन्ते १५, तदधो ग, अष्टाधो ल, पञ्चाधो ल, त्रिकाधो ग, द्विकस्य कलाग्रहात् मुख्याध कला एव, एव । ५। ५ पष्ठम् । पृष्टे ७ तल्लोपेऽन्ते १४, तदधो ग, १३ न्यूनत्वात् लोप ८। ५। ३ अधो ल, द्विकाधो ग, मुख्यकलाग्रहात् लोप ५। ५। ५ सप्तमम् । पृष्टे ८ लोपे शेषमन्ते १३, पूर्वं १३ अधो ग, समभागबलात् पूर्वं १३ लोप, एव कलाद्वय, शेषपञ्चाङ्का पञ्चकला चेति साम्यात् पञ्च लघव एव ।। ५। ५ अष्टमम् । पृष्टे ९ लोपे शेषमन्ते १२, तेन भाग पूर्वं १३ मध्ये, यदुक्त वाणीभूषणे—

नष्टे कृत्वा कला सर्वा पूर्वयुग्माङ्कयोजिता ।

पृष्ठाङ्कहीनशेषाङ्क येन येनैव लुप्यते ॥

परा कलामुपादाय तत्र तत्र गुदभवेत् ।

मात्राया नष्टमेतत्तु फणिराजेन भाषितम् ॥

(वाणीभूषणम् परि १, पद्य ३२-३३)

तत्र १३ अधो ग, १० अधो ल, अष्टकस्य लोप कलाग्रहात् एव पञ्चाधो ग, त्रिकभागेन कलाग्रहात् द्विकाधो ग, मुख्यलोपात्, एव ५५५। नवमम् । पृष्टे सप्तकले छदसि दशम रूप कीदृग् ? इति, तदा १ २ ३ ५ ८ १३ २१ एव । । । । । । । ।

कला कृत्वा पूर्वयुग्माङ्कयोजिता पृष्ठाङ्क १०, ते २१ मध्यात् अपकृष्टा शेष ११, तथा १३ मध्ये भागात् तदधो ग, ११ अधो ल, अष्टकलोप, पञ्चाधो ग, त्रिककलाग्रहात्, शेष कलाङ्कयो साम्याल्लघुद्वय ।। ५५। दशम रूपम् । पृष्टे ११ तस्य लोपे १०, तत १३ मध्ये भागात् १३ अधो ग, अष्टलोप, त्रिके द्विकभागात् त्रिकाधो ग द्विकलोप, एव रूप । ५। ५। ५ एकादशम् । पृष्टे १२ तल्लोपे शेष ९ तस्य १३ मध्ये भागात् १३ अधो ग, ९ अधो ल, अष्टलोप, द्विके मुख्यकस्य भागात् द्विकाधो ग, मुख्यलोप त्रिकपञ्चकयो अधो ल प्रत्येक, एव ५। ५। ५ द्वादशम् । पृष्टे १३ तल्लोपे शेष ८ तस्य १३ मध्ये भागात् १३ अधो ग, ८ अधो ल, पूर्वाष्टकलोप, शेष समाङ्ककलाभावात् १, २, ३, ५ एवमाधो लघव प्रत्येक, । । । । ५। त्रयोदशम् । पृष्टे १४ तस्य २१ मध्याल्लोपे शेष ७, तस्य १३ मध्ये भागे शेष ६ इति परात्-सप्तमात् न्यूनता इति हेतो १३ अधो ल, सप्ताधोऽपि ल, अष्टके पञ्चकभागात् अष्टाधो ग, पञ्चकलोप, त्रिके द्विकभागात् त्रिकाधो ग, द्विकलोप, मुख्यकाय कला, । ५५। चतुर्दशम् । पृष्टे १५ लोपे

शेष ६ तदधो ल, १३ अधोऽपि प्राग्सिद्धत्वात् ल एव, अष्टके पञ्चकभागादष्टाधो ग, पञ्चकलोप, द्विके एकस्य भागात् द्विकाधो ग, त्रिकाधो ल, एव ५।५।। पञ्चदशम् । पृष्टे १६ तल्लोपे शेष ५ तस्य १३ मध्ये भागे शेष ८ तदधो ल, पञ्चाधो ल, अष्टके पञ्चकभागात् अष्टाधो ग, पूर्वपञ्चलोप, शेषे समकलाङ्कत्वात् त्रयोपि लघव, ।।।५।। षोडशम् । पृष्टे १७ तल्लोपे शेष ४ तदधो ल, तस्य १३ मध्ये भागे शेष ६, अथ परोङ्क पूर्वस्याष्टकादधिक इति हेतो तस्याप्यधो ल पञ्चके त्रिकस्य भागात् पञ्चाधो ग, त्रिकलोप, द्विके मुख्यकभागाद् द्विकाधो ग, मुख्यकलोप, ५५।।। सप्तदशम् । पृष्टे १८ तल्लोपे शेष ३ तदधो ल तस्य १३ मध्ये भागे शेष १० तदधो ल, अष्टकादधिका १० इति अष्टकाधो ल, पञ्चके त्रिकभागात् पञ्चाधो ग, त्रिकलोप, शेषे समकलाङ्कत्वात् लघुद्वय, ।।५।।। अष्टादशम् । पृष्टे १९ तल्लोपे शेष २ तस्य १३ मध्ये भागे शेष ११ तस्य अष्टमध्ये भागाभावात्, अष्टकस्य पञ्चके भागाभावात् सर्वत्र ५, ८, ११, २ एषु लघव, द्विकस्य त्रिकेऽभावात् त्रिकाधो ग, द्विकलोप, मुख्याधो ल, एव ।५।।।। एकोनविंशम् । अथ पृष्टे २० तस्य २१ मध्याल्लोपे शेष १ तत्र १३ मध्यात् भागे शेष १२ तस्य नाष्टसु भाग, अष्टाना न पञ्चके भाग, पञ्चकस्य न त्रिके इति सर्वत्र लघव पञ्चस्वङ्केषु द्विके मुख्यकभागात् द्विकाधो ग, एकस्य लोप, एव ५।।।।। विंशतितम रूपम् । परत सर्वलघुकम् इति भाव्यम् । एव सर्वत्र मात्राच्छन्दसि इष्टज्ञानम् ।

एककले—

।	१
---	---

द्विकले द्वे—

५	१
।।	२

त्रिकले त्रीणि—

।५	१
५।	२
।।।	३

चतुष्कले पञ्च—

५५	१
।।५	२
।५।	३
५।।	४
।।।।	५

पञ्चकले अष्ट—

।५५	१
-----	---

५।५	२
-----	---

।।।५	३
------	---

५५।	४
-----	---

।।५।	५
------	---

।५।।	६
------	---

५।।।	७
------	---

।।।।।	८
-------	---

षट्कले अष्ट—

५ ५ ५	१
१ १ ५ ५	२
१ ५ १ ५	३
५ १ १ ५	४
१ १ १ १ ५	५
१ ५ ५ १	६
५ १ ५	७
१ १ ५ १	८
५ ५ १ १	९
१ १ ५ १ १	१०
१ ५ १ १ १	११
५ १ १ १ १	१२
१ १ १ १ १ १	१३

षट्कलं पूर्णम् ।

सप्तकले एकविंशति—

१ ५ ५ ५	१
५ १ ५ ५	२
१ १ १ ५ ५	३
५ ५ १ ५	४
१ १ ५ १ ५	५
१ ५ १ १ ५	६
५ १ १ १ ५	७
१ १ १ १ १ ५	८
५ ५ ५ १	९
१ १ ५ ५ १	१०
१ ५ १ ५ १	११
५ १ १ ५ १	१२
१ १ १ ५ १	१३
१ ५ ५ १ १	१४
५ १ ५ १ १	१५
१ १ १ ५ १ १	१६
५ ५ १ १ १	१७
१ १ ५ १ १ १	१८

१ ५ १ १ १ १	१९
५ १ १ १ १ १	२०
१ १ १ १ १ १ १	२१

सप्तकलं पूर्णम् ।

अष्टकले चतुस्त्रिंशत्—

५ ५ ५ ५	१
१ १ ५ ५ ५	२
१ ५ १ ५ ५	३
५ १ १ ५ ५	४
१ १ १ १ ५ ५	५
१ ५ ५ १ ५	६
५ १ ५ १ ५	७
१ १ १ ५ १ ५	८
५ ५ १ १ ५	९
१ १ ५ १ १ ५	१०
१ ५ १ १ १ ५	११
५ १ १ १ १ ५	१२
१ १ १ १ १ ५	१३
१ ५ ५ ५ १	१४
५ १ ५ ५ १	१५
१ १ १ ५ ५ १	१६
५ ५ १ ५ १	१७
१ १ ५ १ ५ १	१८
१ ५ १ १ ५ १	१९
५ १ १ १ ५ १	२०
१ १ १ १ १ ५ १	२१
५ ५ ५ १ १	२२
१ १ ५ ५ १ १	२३
१ ५ १ ५ १ १	२४
५ १ १ ५ १ १	२५
१ १ १ १ ५ १ १	२६
१ ५ ५ १ १ १	२७
५ १ ५ १ १ १	२८
१ १ १ ५ १ १ १	२९

५५					३०
११	५				३१
१५					३२
५१					३३
११					३४

अष्टकलं पूर्णम् ।

नवकले पञ्चपञ्चाशत्—

१	५	५	५	५	१
५	१	५	५	५	२
११	१	५	५	५	३
५	५	१	५	५	४
११	५	१	५	५	५
१५	१	१	५	५	६
५१	१	१	५	५	७
११	१	१	१	५	८
५	५	५	१	५	९
११	५	५	१	५	१०
१५	१	५	१	५	११
५१	१	५	१	५	१२
११	१	१	५	१	१३
१५	५	१	१	५	१४
५१	५	१	१	५	१५
११	१	५	१	१	१६
५५	१	१	१	५	१७
११	५	१	१	१	१८
१५	१	१	१	१	१९
५१	१	१	१	१	२०
११	१	१	१	१	२१
५	५	५	५	१	२२
११	५	५	५	१	२३
१५	१	५	५	१	२४
५१	१	५	५	१	२५
११	१	१	५	५	२६
१५	५	१	५	५	२७

५१	५	१	५	१	२८
११	१	५	१	५	२९
५५	१	१	५	१	३०
११	५	१	१	५	३१
१५	१	१	१	५	३२
५१	१	१	१	५	३३
११	१	१	१	१	३४
१५	५	५	१	१	३५
५१	५	५	१	१	३६
११	१	५	५	१	३७
५५	१	५	१	१	३८
११	५	१	५	१	३९
१५	१	१	५	१	४०
५१	१	१	५	१	४१
११	१	१	१	५	४२
५५	५	१	१	१	४३
११	५	५	१	१	४४
१५	१	५	१	१	४५
५१	१	५	१	१	४६
११	१	१	५	१	४७
१५	५	१	१	१	४८
५१	५	१	१	१	४९
११	१	५	१	१	५०
५५	१	१	१	१	५१
११	५	१	१	१	५२
१५	१	१	१	१	५३
५१	१	१	१	१	५४
११	१	१	१	१	५५

नवकलं पूर्णम् ।

दशकले नवाशीति—

५	५	५	५	५	१
११	५	५	५	५	२
१५	१	५	५	५	३
५१	१	५	५	५	४

1111555	५	5111551	४१
155155	६	11111551	४२
515155	७	555151	४३
1115155	८	1155151	४४
551155	९	1515151	४५
1151155	१०	5115151	४६
1511155	११	11115151	४७
5111155	१२	1551151	४८
11111155	१३	5151151	४९
155515	१४	11151151	५०
515515	१५	5511151	५१
1115515	१६	11511151	५२
551515	१७	15111151	५३
1151515	१८	51111151	५४
1511515	१९	11111151	५५
5111515	२०	555511	५६
11111515	२१	1155511	५७
555115	२२	1515511	५८
1155115	२३	5115511	५९
1515115	२४	11115511	६०
5115115	२५	1551511	६१
11115115	२६	5151511	६२
1551115	२७	11151511	६३
5151115	२८	5511511	६४
11151115	२९	11511511	६५
5511115	३०	15111511	६६
11511115	३१	51111511	६७
15111115	३२	111111511	६८
51111115	३३	15551111	६९
111111115	३४	51551111	७०
155551	३५	11155111	७१
515551	३६	55151111	७२
1115551	३७	11515111	७३
551551	३८	15115111	७४
1151551	३९	51115111	७५
1511551	४०	111115111	७६

५ ५ ५ ७७	५ ८४
५ ५ ७८	५५ ८५
५ ५ ७९	५ ८६
५ ५ ८०	५ ८७
५ ८१	५ ८८
५ ५ ८२	८९
५ ५ ८३	

दशकल सम्पूर्णम् ।

इष्टशब्देन चित्तेष्ट पृष्टरूपमिहोच्यते ।

प्राचा वाचा नष्टमिहममाङ्गल्य न चोदितम् ॥ १ ॥

उपात्त्यतोऽत्येभ्यधिके ह्यधो ग ,

साम्येपि गो लस्तु ततोऽन्त्यहानी ।

पश्चाद्गुरोर्लोपनमङ्ककस्य,

कलाङ्कसाम्ये लघवो निधेया ॥ २ ॥

शेषाङ्कपूर्वापरयोरधो ग.,

स्याप्योऽत्र वृद्धस्य ल एकशये ।

न पूर्वरूप पुनरेव कार्यं,

यो यत्र लुप्येदिति तद्विचार्यम् ॥ ३ ॥

पृष्ट पञ्चकले पञ्चम १ २ ३ ५ ८, तदा पृष्ट पञ्चम तस्य अन्त्येष्टके
| | | | |

लोपे शेषमन्ते ३ तस्याधो ल, उपात्त्यात् हीनत्वात् शेषाङ्का १, २, ३, ५, अत्र
त्रिकस्य पञ्चके भाग वृद्धत्वात् तदधो ग, पश्चात् त्रिकस्य लोप, शेष १२
कलाना अङ्काना च साम्यात् प्रत्येक लघव, इति । । ५। पञ्चम रूपम् । यद्यत्र
एकात् द्विकस्य वृद्धस्याध गुरुर्वीयते तदा तु पञ्चकले तुर्यरूपापत्ति । अत्र हि
प्रथमरूपत्रये त्रिकलवत् न्यस्ते प्रा.न्तगुरुत्वम् । पञ्चकत्वाच्छन्दस त्रिकले पूर्व-
पूर्वत्वात् प्रश्ने तदतिक्रमे चतु कल स्वत पूर्वस्य द्वितीयरूपप्राप्तिस्तदभगश्च
दोपश्च । अथ यो नर पूर्वरूप न जानाति तस्य का गति ? इति चेत्, तेन पुसा
विचार्यं यत् पञ्चकले सर्वरूपाण्यष्ट, तर्हि त्रिरूपव्यतिक्रान्ते गुर्वधिकता न युक्ता ।
यस्य यावत् कलच्छन्दस स्वपूर्वच्छन्दस ५१ परस्य यावद् रूपाधिवय तावति रूपे
अर्द्धं प्रान्तगुरुता च । यथा- अत्र पञ्चकले स्वपूर्वचतु कलात् पञ्चरूपात्मकात्
रूपत्रयमधिकमिति त्रिरूपी यावदर्द्धेऽन्तगुरुता च ।

पूर्व-पूर्वत्रिकलरूपतापि । तत्र गुर्वाधिक्य पराद्धे लघूनामाधिक्य प्रान्तलघुता च । यथा, त्रिकलत् चतु कले रूपद्वयाधिक्य तेन प्रथमरूपद्वये न गुरुत्व, शेषद्वये चान्तलघुत्व, पञ्चम तु चतुर्लम् । पञ्चकलेपि प्रथमत्रिरूपीत्रिकलस्य पश्चात् पञ्चरूपी चतु कलस्य तत्रापि प्रान्तलघुता । पञ्चमु रूपेष्वपि द्विकलाद् रूपद्वय प्रान्तगुरक तस्याप्यग्रे एक लघु । ततोऽपि रूपद्वय त्रिकलवत् प्रान्तलघुद्वय चतु-कलापेक्षया पञ्चम, पञ्चकलापेक्षयाऽष्टम सर्वलघुकम् ।

पञ्चकलात् पट्कले पञ्चरूपाधिक्य, पञ्चापि रूपाणि चतु कलवत् प्रान्ते एकगुरोरधिकस्य दानात् कलापूर्ति, पञ्चमे रूपे एको गुरुरन्ते शेष लघुचतुष्टयम् ।

प्रतोऽष्टरूपाणि पञ्चकलवत् प्रान्ते एकलघुनाऽधिकानि । तत्राप्यष्टमे प्रान्ते एकगुरु शेष लघुपञ्चक, अष्टाप्वपि रूपत्रय त्रिकलवत् प्रान्ते गुरुलघुभ्यामधिक पट्सप्तमाष्टरूप, पर रूपपञ्चक चतु कलवत् प्रान्ते लघुद्वयाधिक इत्यादौ विचार एव बलवान् ।

एव पृष्टे पञ्चकले पठरूपे तदा प्रान्त्याष्टमध्ये ६ लोपे शेष १, २, ३, ५, २, अन्त्यद्विकाधो ल, तस्य पञ्चके भागात् उपात्त्याद्गनत्वाच्च पञ्चकेपि द्विकस्य भागे लब्ध २ शेष १ तेन पञ्चकाधोपि ल, त्रिकाधो ग, द्विकलोप, तुर्ये पञ्चमे च रूपे पञ्चकाधो ग, त्रिकलोप । पञ्चकले हि त्रिकलवत् त्रिरूपी गुरुणान्तेऽधिका इद पृष्ट पठ रूप इति विचारात् लब्धस्य द्विकस्य त्रिके भागाच्च, मुख्यकाध कला । ५ ।। इति पठ रूपम् । यथा उपात्त्ये-अ त्यस्य भागे उपात्त्याधो ग, अन्त्याधो ल, उपात्त्यपूर्वस्य लोप, तथा द्विकस्य पञ्चके शेष १ तस्य त्रिके भागेपि सम्भवति त्रिकाधो ग, पञ्चकस्थानीयद्विकाधो ल, पूर्वद्विकलोप, मुख्याधो ल । इति रूपनिर्णय ।

पञ्चकले सप्तमेपि अन्त्याष्टके सप्तलोपे शेष १ तदधो ल शेषैकरयापि पञ्चके भागे शेष पूर्णम् । अत्र त्रिकस्य द्विके भागाभाव वृद्धत्वात् मुख्यैकस्य द्विके भागात् द्विकाधो ग, मुख्यैकलोप, त्रिकाधो ल, इति ५ ।। । सप्तमम् ।

यो यस्मात् पूर्वपूर्वोऽङ्कस्तावद् रूपेषु चात्यग ।

तस्पर प्रान्त-लान्येव स्वत पूर्वोऽङ्कस्यया ॥ ४ ॥

एव सप्तकले पृष्टे एकादशे रूपे अन्त्याङ्क २१ मध्ये ११ पाते शेष १० तस्य उपात्त्याङ्के १३ मध्ये भाग प्राप्त, तत्र अष्टकस्य कलाग्रहात् १३ स्थानीयत्रिकाधो ग अष्टकलोप, दशाधो ल, द्विकस्य त्रिके भाग, तेन त्रिकाधो ग, द्विकलोप, मुख्यैकाधो ल, पञ्चकाधो ल, एव । ५ । ५ । इत्येकादशरूपसिद्धि ।

ननु अत्र पञ्चके त्रयोदशस्थानीयत्रिकस्य भागात् पञ्चकाधो ग, पूर्वत्रिक-
लोप, अत्रे १,२ अनयोरध कलाद्वयमिति कथं न क्रियते ? इति चेत्, न, दशम-
रूपापत्ते । परस्य १० अङ्कस्य पूर्वस्मिन् १३ अङ्के भागाधिकारात् पूर्वत्रिके
भागश्चेत् सम्भवति तदाऽयं विधिर्गुंक्त । यद्यपि त्रयोदशस्थानीयत्रिकस्य परस्य
पूर्वस्मिन् पञ्चके भागसम्भव, पर मध्येष्टकलोपेन व्यवधानाध्याय विधिर्घटते ।

यद्यपि सप्तकले दशमे रूपे अयमेव विधिर्दृश्यते, तथापि सप्तकले पूर्वपूर्वं
पञ्चकल तस्याष्टरूपाणि प्रथमतो गतिक्रान्तानि शेषे ६।१०।११ इति पट्कलस्य
तृतीय रूप प्रश्ने प्राप्त, तच्च । ५ । ५ ईदृशमिति, तद्भङ्गापत्तेरानीयमध्वाप्रध्वर ।

पट्कलेपि तादृग् रूप चतु कले स्वपूर्वपूर्वं तृतीयरूपे । ५ । ईदृशे प्रान्ते गुरु-
दानात् सिद्धम् । चतु कलेपि द्विकलवत् रूपद्वये प्रान्ते गुरुणाधिकेप्यतीते त्रिकलस्य
प्रथम रूप प्राप्त, चतु कलापेक्षया तृतीय, तत्रान्ते लघोरधिकारात् प्रश्ने । ५ ।
ईदृशस्यैव सिद्धे ।

स्वपूर्वपूर्वस्य कलाप्रमाणे, गोऽन्त स्वपूर्वस्य कलाप्रमाणे ।

लोऽन्तो विचिन्त्येति निवेद्यमेव, छन्दोविदा पृष्टमिहेऽष्टरूपम् ॥

नट्टे सव्व कला कारिज्जसु, पुंन जुयल सरि अका दिज्जसु ।

पुच्छिल अक भेटावहु सेख, उवरिल अक लोपि के लेख ॥

जत्थ जत्थ पाविज्जह भाग, एह कहे फुर पिंगलनाग ।

परमत्ता लेइ गुरुताइ, जत लेवेहु तत लेवेहु आइ ॥

नष्टाङ्के कल्पयेद् भाग समभागे लघुर्भवेत् ।

दत्तं क विपमे भागे कार्यस्तत्र गुरुर्भवेत् ॥

[वाणीभूषणम्, परि० १, पृ ३५]

अथ सिलमिली [शात्मली] प्रस्तार

गुरु पढम हिट्टु ठाण, लहुया परि ठवहु अप्पवुद्धेण ।

सरिस्ता सरिस्ता पत्तो, उच्चरिप्पा गुरु-लहु देहु ॥

इति भागानष्ट न्यास ।

वर्णोद्दिष्ट-नष्ट-प्रकरणम्

अथ वर्णोऽ? द्वि]ष्टरूपज्ञानमाह—

द्विगुणानङ्कान् दत्त्वा वर्णोपरि सधुशिरःस्थितानङ्कान् ।

अङ्केन पूरयित्वा वर्णोद्दिष्ट विजानीयात् ॥ ५५ ॥

अस्यार्थः सोदाहरण. । यथा, । ५ । ५ इदं चतुरक्षरे छन्दसि कतम रूपम् ? इति, उद्दिष्टे द्विगुणा अङ्का उपरि देयाः १ २ ४ ८ इति न्यासे लघूपरि १,४
। ५ । ५

मेलने ५, तत्र संककरणे षष्ठ रूप इत्युद्देश्यम् ।

उद्दिष्टे वर्णोपरि दत्त्वा द्विगुणत्रयेणाङ्कम् ।

एक लघुवर्णाङ्के दत्त्वोद्दिष्ट विजानीयात् ॥

[शाणीभूषणम्, परि० १. पृ ३४]

इ[? न]ष्टज्ञानमपि आह—

नष्टे षष्टे भागः कर्त्तव्य षष्टसख्यायाः ।

समभागे ल क्षुर्याद् विषमे दत्त्वंकमानयेद् गुरुकम् ॥ ५६ ॥

यथा चतुरक्षरे छन्दसि षष्ठ रूप कीदृशम् ? इति षष्टे षण्णा भागोऽर्द्धं त्रय एव समभागात् लघुः प्राप्तः, पुनस्त्रयाणामर्द्धंकरणाभावात् संककरणे ४, तदर्द्धं २ एव गुरुः प्राप्तः, द्वयस्यार्द्धं १ एव सधु प्राप्तः, तस्याप्यर्द्धांशभवात् संककरणे २ तदर्थं १ एव गुरुप्राप्ति । जात । ५ । ५ एव इ[? न]ष्टरूपज्ञानम् ।

इति वर्णोद्दिष्टनष्टप्रकरणम् ।

वर्णमेरु-प्रकरणम्

वर्णमेरुमाह—

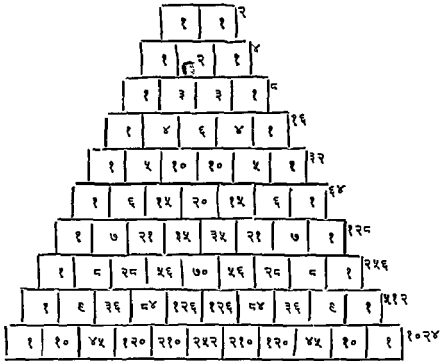
कोष्ठानेकाधिकान् वर्णं. कुर्मादाद्यन्तयो. पुन ।

एकाङ्कमुपरिस्थाङ्क - द्वयैरन्यान् प्रपूरयेत् ॥ ५७ ॥

१		१									
१		२		१							
१		३		३		१					
१		४		६		४		१			
१		५		१०		१०		५		१	

यस्य छन्दसो यावन्तो वर्णास्तावन्त कोष्ठा एकेनाधिकाः कर्तव्या । तत्रापि
 आद्यन्तकोशद्वये एकाङ्कन्यास, तत पुन उपरिस्थाङ्कयो कोशयोर्मेलनेन विचाल-
 स्थकोशपूरण कार्यम् । यथा—द्विकवर्णच्छन्दसो द्वे रूपे—एक गुरुक १, एक लघुक
 च २, एव कोशद्वयम् । द्विवर्णच्छन्दसोपि चत्वारि रूपाणि—५५, १५, ५१, ११,
 इति । एक सर्वगुरुक, द्वे रूपे एकगुरुके, एक सर्वलघुक, एव उपरितनकोशद्वयाङ्कौ
 १११ तयोर्मेलने द्वाविति मध्यकोशे द्विकन्यास । त्रिवर्णच्छन्दसोऽष्टरूपाणि—एक
 सर्वगुरु ५५५, त्रीणि द्विगुरुणि २, ३, ५, त्रीणि एकगुरुणि ४, ६, ७, एक सर्व-
 लघु मध्ये कोशद्वये ३३ न्यास, उपरिस्थ १२ मेलने जात । चतुर्वर्णच्छन्दसि
 षोडशरूपाणि—एक सर्वगुरु आद्य, चत्वारि एक गुरुणि ८, १२, १४, १५,
 षट् द्विगुरुणि ४, ६, ७, १०, ११, १३, चत्वारि त्रिगुरुणि २, ३, ५, ६, एक
 सर्वलघु, एव षोडशरूपाणि । विचालकोशत्रये १३ मेलने ४ प्रथम-मध्य-
 कोशपूरण, उपरितन ३३ मेलने ६ द्वितीयमध्यकोशे, तृतीयेपि १३ मेलने ४
 इति, एवमग्रेपि ।

‘वर्णमेरुय’ इत्यादि स्पष्टम् ॥ ५८ ॥



इति वर्णमेष ।

द्व्यक्षरे छन्दसि ४ रूपाणि—एक सर्वगुरुरूप, द्वे रूपे एक गुरुके, एक सर्वलघुः ।
 त्र्यक्षरे छन्दसि ८ रूपाणि—१ सर्वगुरु, त्रीणि एकगुरुणि, त्रीणि द्विगुरुणि, एक
 सर्वलघु । चतुर्वर्णे छन्दसि १६ रूपाणि—४ एकगुरु, द्विगुरु ६, त्रिगुरु ४, एक
 सर्वगुरु, एक सर्वलघु । पञ्चवर्णे छन्दसि ३२ रूपाणि । षड्वर्णे ६४ रूपाणि ।
 सप्ताक्षरे १२८ रूपाणि । अष्टाक्षरे २५६ रूपाणि । ९ वर्णे ५१२ रूपाणि ।
 दशाक्षरे छन्दसि १०२४ रूपाणि ।

इति वर्णमेष-प्रकरणम् ।

वर्णपताका-प्रकरणम्

वर्णपताकामाह—

दत्त्वा पूर्वयुगाङ्कान् पूर्वाङ्कयोजयेदपरान् ।

अङ्कः पूर्वं यो यं धृतस्ततः पङ्क्तिसञ्चारः ॥ [॥ ५६ ॥]

अङ्काः पूर्वं भूता येन तमङ्क भरणे त्यजेत् ।

अङ्कश्च पूर्वं यः सिद्धस्तमङ्कं नैव साधयेत् ॥ [॥ ६० ॥]

प्रस्तारसख्यया चंमङ्कविस्तारकल्पना ।

पताका सवंगुर्वादिवेदिकेय विशिष्यतु ॥ [॥ ६१ ॥]

पूर्वयुगाङ्काः वर्णच्छन्दसि १।२।४।८।१६।३२।६४ इत्यादयः, तद्वर्णन्यासवेद्यम् ।

१	२
---	---

१	२	४
	३	

अथ तान् यथायोगं पूर्वाङ्कयोजयेत् तदा अधोऽधस्तनी अङ्कश्रेणिर्जायते । प्रथम एकवर्णच्छन्दसि रूपद्वयमेव, तत्र २ पङ्क्तिस्थापना । द्विवर्णे मध्यस्था एकापङ्क्ति । त्रिवर्णे मध्यस्थ पङ्क्तिद्वय । चतुर्वर्णे मध्यस्थ पङ्क्तित्रयम् । पञ्चवर्णे मध्यस्थ पङ्क्तिचतुष्टयम् ।

आदौ एक वर्णं ५ गुरु । लघुश्चेति रूपद्वयम् । द्विवर्णे १।२ इत्यनयोर्योजने ३ द्विकाध । अत्र पूर्वं अङ्क धृतः ततः पङ्क्तिसञ्चारः, एकैव द्विकाद्यापङ्क्ति परतः सिद्धोऽङ्कस्तस्य साधना नास्तीति । तत्र एक रूप सर्वग प्रथम, द्वे रूपे द्वितीय-तृतीयरूपे एकगुरुके, तुर्यं सर्वसम् । एव द्विवर्णच्छन्दस चत्वार्येव रूपाणि भवन्ति ।

१	२	४	८
३	६		
५	७		

१	२	४	८	१६	३२
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	२८	
	९	१०	१५	३०	
	१७	११	२०	३१	
		१३	२२		
		१८	२३		
		१९	२६		
		२१	२७		
		२५	२९		

पञ्चवर्षे अन्दसि ११२ योजने ३ द्विकाष, २१४ योजने ६ चतु काष, ८१४ योजने १२, अष्टाघ, १६१८ योजने २४ द्वितीयश्रेणि । तदघ २१३ योजने ५, पुनः ४१३ योजने ७, पुन ८१६ योजने १४, पुन १६१२ योजने २८ तृतीय-श्रेणि । ४१५ योजने ९, पुन ४१६ योजने १०, पुन ८१७ योजने १५, पुन १६१४ योगे ३० तुर्याश्रेणि । ८१९ योजने १७, ४१७ योजने १, पुन ८१२ योजने २०, पुन १६१५ योजने ३१ पञ्चमश्रेणि । ६१७ योजने १३, पुन ७११ योजने १८, पुन ९१० योजने १९, पुनः १०११ योजने २१, पुन १०१५ योजने २५, पुन ८१४ योजने २२, पुन ८१५ योजने २३, पुन १२१४ योजने २६ पुन १२१५ योजने २७, पुन १४१५ योजने २९ एव पताकया सर्वगुर्वादिज्ञापनम् ।

एक सर्वगुरुरूप । २१३५१६१७ पचरूपाणि चतुर्गुरुरूपि । ४१६७१०१११ १३१८१९२१२५ एतानि त्रिगुरुरूपि । ८१२१४१५२०१२२३२६२७ २९ एतानि द्विगुरुरूपि । १६१२४१२८३०३१ एतानि एकगुरुरूपि । ३२ एक सर्वलघुरूपम् ।

पूर्वाङ्के उपरितनैः पार्श्वस्थैर्वा पङ्क्तघन्तरेप्युपरिस्थैरङ्कानां योजना स्यात्
१।२ इत्यादयः, साम्ये योज्याः २।३ इत्यादयः, उपरितनैः ३।४ इत्यादयः,
पक्त्यन्तरस्थैर्योगो भाव्यः । येन येन अङ्केन मीलितेन य अङ्कः रूपस्य पताकायां
भूतस्तमङ्क पुनर्जायमानं न पूरयेत्, यावद्रूपैः प्रस्तारस्तावद्रूपैः कोपभरणमिति
ज्ञेयम् ।

उद्दिष्टा सरि अंका द्विज्जसु, पुव्व अंक परभरण करिज्जमु ।
पाउल अंक मढ परित्तिज्जसु, पत्यर संख पताका किज्जसु ॥

एकवर्णपताका

१	२	५
१	२	५

द्विवर्णपताका

१	२	४	५	५	(१)
१	२	४	५	५	(२)
३	५	५	५	५	(३)
३	५	५	५	५	(४)

द्विवर्णो एकं सर्वगुरु, द्वे रूपे एकगुरुके द्वितीय-तृतीये, तुर्यं सर्वलघुकम् ।

त्रिवर्णपताका

५	५	५	(१)	१	२	४	८	५	५	५	(५)
१	२	४	८	३	६	५	७	५	५	५	(६)
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	(७)
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	(८)

एकं सर्वगुरु, द्विगुरु २।३।५, एकगुरु ४,६,७ रूपाणि, अष्टमं सर्वलम् ।

चतुर्वर्णपताका

५ ५ ५ ५	(१)	१	२	४	८	१६	५ ५ ५ ५	(९)
१ ५ ५ ५	(२)	३	६	१२			१ ५ ५ ५	(१०)
५ १ ५ ५	(३)	५	७	१४			५ १ ५ ५	(११)
१ १ ५ ५	(४)	९	१०	१५			१ १ ५ ५	(१२)
५ ५ १ ५	(५)		११				५ ५ १ ५	(१३)
१ ५ १ ५	(६)		१३				१ ५ १ ५	(१४)
५ १ १ ५	(७)						५ १ १ ५	(१५)
१ १ १ ५	(८)						१ १ १ ५	(१६)

षोडशके प्रस्तारे एक सर्वंगुरूपम, २।३।५।९ एतानि त्रि-गुरुणि, ४, ६, ७, १०, ११, १३ एतानि द्वि-गुरुणि, ८।१२।१४।१५ एतानि एक-गुरुणि, १६ एक सर्वलघुरूपम् ।

पञ्चवर्णपताका

१	२	४	८	१६	३२
३	६	१२	२४		
५	७	१४	२८		
९	१०	१५	३०		
१७	११	२०	३१		
	१३	२२			
	१८	२३			
	१९	२६			
	२१	२७			
	२५	२९			

पञ्चवर्णपताका

श्री	ग										
१	१										
५	२	३	५	६	१७						
१०	४	६	७	१०	११	१३	१८	१९	२१	२५	
१०	८	१२	१४	१५	२०	२२	२३	२६	२७	२९	
५	१६	२४	२८	३०	३१						
१	३२										
ये	वा										

एकद्वयोयोगे ३, द्विचतुरोयोगे ६, चतुरष्टयोयोगे १२, अष्टषोडशयोगे २४ । ऊर्ध्वाध २१३ योगे ५, चतुस्त्रियोगे वक्रत्वे ७, दा६ योगे १४, १६।१२ योगे २८। १।३।५ योगे ६, ४।६ योगे १०, दा७ योगे १५, १६।१४ योगे ३० ।; ४।६।७ योगे १७, १।३।७ योगे ११, दा१२ योगे २०, [११।२० योगे ३१; ६।७ योगे १३, ७।११ योगे १८, ६।१० योगे १९, १०।११ योगे २१; १०।१५ योगे २५।] दा१४ योगे २२, १५।८ योगे २३, १२।१४ योगे २६, १५।१२ योगे २७, १५।१४ योगे २९ ।

५ ५ ५ ५ ५	(१)	५ ५ ५ ५ ५	(१७)
१ ५ ५ ५ ५	(२)	१ ५ ५ ५ ५	(१८)
५ १ ५ ५ ५	(३)	५ १ ५ ५ ५	(१९)
१ १ ५ ५ ५	(४)	१ १ ५ ५ ५	(२०)
५ ५ १ ५ ५	(५)	५ ५ १ ५ ५	(२१)
१ ५ १ ५ ५	(६)	१ ५ १ ५ ५	(२२)
५ १ १ ५ ५	(७)	५ १ १ ५ ५	(२३)
१ १ १ ५ ५	(८)	१ १ १ ५ ५	(२४)
५ ५ ५ १ ५	(९)	५ ५ ५ १ ५	(२५)
१ ५ ५ १ ५	(१०)	१ ५ ५ १ ५	(२६)
५ १ ५ १ ५	(११)	५ १ ५ १ ५	(२७)
१ १ ५ १ ५	(१२)	१ १ ५ १ ५	(२८)
५ ५ १ १ ५	(१३)	५ ५ १ १ ५	(२९)
१ ५ १ १ ५	(१४)	१ ५ १ १ ५	(३०)
५ १ १ १ ५	(१५)	५ १ १ १ ५	(३१)
१ १ १ १ ५	(१६)	१ १ १ १ ५	(३२)

मात्रामेरु-प्रकरणम्

अथ मात्राखण्डो मेरुमाह—

एकाधिककोष्ठानां द्वे द्वे पङ्क्तौ समे कार्ये ।

तासामन्तिमकोष्ठेकाङ्कं पूर्वभागे तु ॥६२॥

एककलच्छन्दसः ५१ अधिककोष्ठानां द्विकल-त्रिकलादीनां द्वे द्वे समे पङ्क्तौ कार्ये । कोऽर्थः ? द्विकल-त्रिकलयोः समे पङ्क्तौ द्वयोरपि चतुःकोशात्मिके कार्ये । एव चतुःकलाष्टकलयोः पट्कोशरूपे । त्रयोदशकल-एकविंशतिकलयोः अष्टकोशात्मिके कृत्वा अन्त्यकोशे एकाङ्क एव धार्यः । पूर्वभागे तु पुनः अयुग्पङ्क्तेः १ । ३ । ५ । ७ इत्यादिकायाः प्रथमकोशेषु सर्वत्र एककः स्थाप्य, समपङ्क्तेः २ । ४ । ६ । ८ इत्यादिकाया पूर्वभागे प्रथमकोशे पूर्वयुग्माङ्काः । इह मात्रा छन्दसि १ । २ । ३ । ५ । ८ । १३ । २१ इत्याद्या योज्याः । एतत्तु दुर्बोधम् । सर्वपङ्क्तिषु आदौ पूर्वयुग्माङ्का देयाः । द्विकलाद्यपेक्षया अयुग्पङ्क्तीनां द्वितीयकोशे एककः, समपङ्क्तीनां द्वितीयकोशे २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ इत्यादयः स्थाप्याः यावता पङ्क्तिः पूर्यते । आद्य एककललघुकोशापेक्षया २ । ४ । ६ । ८ एतासु पङ्क्तिसु एकक इति ।

आद्याङ्केन तदीयैः शीर्षाङ्कैर्वामभागस्थैः ।

उपरिस्थितेन कोष्ठे विद्यमायां पूर्यन्तु पङ्क्तौ ॥६३॥

					१	१					
		२	१	१	२						
			३	२	१	३					
				५	१	३	१	५			
					८	३	४	१	८		
१३		१	६	५	१	६					
२१		४	१०	६	१	९					
३५		१	१०	१५	७	१	१५				
५५		५	२०	२१	८	१	२१				

यथा द्वाभ्या एककाभ्या मेलने जात २ । अग्रे अन्तकोष्ठे एक सिद्ध एव इति द्वितीया पक्ति । अस्या प्रथमकोश त्रिकस्त विहाय कोशभरण एव तृतीय पङ्क्ती । विषयामा द्वितीयपङ्क्तिगत द्विक तदुपरि वामस्थित एक, एव १।२ मीलने जाता ३ मध्यकोशे, अन्तकोशे पुन एक सिद्ध एव । प्रथमकोशे तु 'एकाङ्कमयुगपङ्क्ते ।' इति सूत्रणात् एकाङ्क स्थाप्य एव, तस्याप्यादौ पूर्व-युग्माङ्क पञ्चक सकोशभरणेन ग्राह्य । एव प्राप्त चतु कले पञ्चरूपाणि एक सर्वंग, त्रीणि एकगुरुणि, एक अन्ते सर्वलघुरूपम ।

एव पञ्चकलमेरुकोशेषु द्विकलेन समकोशत्वात् चतु कलस्य १।३ एतौ सयोज्य उपान्त्ये ४ अन्ते एक सिद्ध एव । तत द्विकलपक्तिग द्विक त्रिकलपक्तिग एकञ्च सयोज्य त्रिक स्थाप्य, तस्याप्यग्रेऽष्टक पूर्वयुग्माङ्क । एव च त्रीणि रूपाणि द्विगुरुणि, चत्वारि एक गुरुणि । कानि कानि ? इत्याशङ्का पताकया निरस्या । अत्र मेरी लग त्रियावत् रूपसख्यैव ।

पट्कले तु चतु कलस्यैक, पञ्चकलस्य चतु क च सयोज्य उपा त्ये पञ्चक, अन्त्ये तु एक सिद्ध एव चतु कलगतत्रिक तथा पञ्चकलगतत्रिक सयोज्य जाता ६ । ततोप्याद्यकोशे एकक पटकलत्वात् आदौ सर्वगुरवैकरूपज्ञानाय ततोप्यादौ १३ युग्माङ्क । एवञ्च एक रूप त्रिगुरुक, पट्रूपाणि द्विगुरुकाणि, पञ्चरूपाणि एकगुरुकाणि एकमन्त्य सर्वलघुकम । एव सर्वाणि १३ रूपाणि ।

सप्तकलके पञ्चकलस्य त्रिक पटकलस्यैक सयोज्य आदौ ४, तस्याप्यादौ २१ युग्माङ्क । चतु कात परकोशे पञ्चकलगत चतु क पटकलगत पटक सयोज्य १०, तत पर पञ्चकलगत एक पटकलगत पञ्चक सयोज्य पट ततोऽ ते एक सिद्ध एव । एव च चत्वारि रूपाणि त्रिगुरुणि, दशरूपाणि द्विगुरुणि पट्रूपाणि एकगुरुणि, एक सर्वलघु एव २१ सर्वरूपाणि ।

अष्टकलके समपङ्क्तित्वात् एक सर्वगुरुरूप तदङ्क १, तस्यादौ ३४ युग्माङ्क, एकस्य कोशादग्रतनकोशे पटकलपक्तिगत पटक, सप्तकलपक्तिगत चतु व सयोज्य १०, तदग्र पट्कलगत पञ्चक सप्तकलगतदशक १० योगे १५ घरण, तदग्रे पट्कलगत एक सप्तकलगत पट्क सयोज्य ७, अन्त चैक । एव च एक सर्वगुर, दशरूपाणि त्रिगुरुक णि, १५ रूपाणि द्विगुरुणि, सप्त एकगुरुणि, एक सर्वल, इति ३४ रूपाणि ।

एव नवकले उपरितनपक्तिगत ४।१ योगे ५, पुन १०।१० योग २०, पुन ६।१५ योगे २१, पुन १।७ योगे ८ इति ५५ रूपाणि । इति मात्रामेरु ।

मात्रामेरु-कर्तव्यता—

सिर अके तसु सिर पर अके, उवरल कोट्ट पुरुहु निस्सके ।

मत्तामेरु अक सचारि, वुज्झइ वुज्झइ जन दुइ चारि ॥

[प्राकृतपङ्कलम् परि० १, पद्य ४७]

दुई दुई कोठा सरि लिहहु, पढम अक तसु अत ।

तसु आईहि पुणु एककु सउ, पढमे वे वि मिलत ॥

२ ५	१	१	२						
३ १५	२	१	३						
४ ५५	१	३	१	५					
५ १५५	३	४	१	८					
६ ५५५	१	६	५	१	१३				
७ १५५५	५	१०	६	१	२१				
८ ५५५५	१	१०	१५	७	१	३४			
९ १५५५५	५	२०	२१	८	१	५५			
१० ५५५५५	१	१५	३५	२८	९	१	८९		
११ १५५५५५	६	३५	५६	३६	१०	१	१४४		
१२ ५५५५५५	१	२१	७०	८४	४५	११	१	२३३	
१३ १५५५५५५	७	४६	१२६	१२०	५५	१२	१	३७७	
१४ ५५५५५५५	१	२८	१२६	२१०	१६५	६६	१३	१	६१०
१५ १५५५५५५५	८	८४	२५२	३३०	२२०	७८	१४	१	९८७

अयुगपद्वक्ते पूर्वभागे एकाङ्क दद्यात्, समकोष्ठकपद्वितद्वयमध्ये प्रथम-
पक्ते आदिमकोष्ठे इत्यर्थे । समकोष्ठकपद्वितद्वयमध्ये द्वितीयपद्वक्तेराद्यकोष्ठे
पूर्वगमाह दद्यात् ।

एककलो लघुरेव । द्विकले २ रूपे-एक गुरु, एक लघु इति । त्रिकले त्रीणि रूपाणि-द्वे रूपे एक गुरुके, एक सर्वलघुरूपम् । चतु.कले ५ रूपाणि-एकं सर्वगुरुकं, त्रीणि एकगुरुणि, एक सर्वलघु । पञ्चकले ८ रूपाणि-रूपत्रयं द्विगुरुकं, रूपचतुष्टय एकगुरुक, एकं सर्वलघु ।

अथ मात्रासूचीमेवः

अक्षर संखे कोट्ट कर, आइ अंत पठमंक ।

सिर दुइ अंके अवर भर, सुई मेरु निस्सक ॥

[प्राकृतपंङ्गलम् परि. १, पद्य ४४]

	१. १	०	१	१						
	२. ५	१गु	१ल	२						
	३. १ ५	० ३	२गु	१ल	३					
	४. ५ ५	१ ५	३ गु.	१ल	५					
	५ १ ५ ५	० ८	३ द्वि.गु	४ गु?	१	८				
	६. ५ ५ ५ ५	१ १३	६ १३	५ गु?	१	१३				
	७ १ ५ ५ ५ ५	० २१	४	१०	६	१	२१			
	८ ५ ५ ५ ५ ५ ५	१ ३४	१०	१५	७	१	३४			
	९. १ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५	० ५५	५	२०	२१	८	१	५५		
	१० ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५	१ ८६	२१	३५	२३	९	१	८६		
	११. १ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५	० १४५	५	३५	५६	३६	१०	१	१४५	
	१२. ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५	१ २१६	२१	७०	८५	५६	११	१	२१६	
	१३. १ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५	० ३७७	७	५६	१२६	१२०	५५	१२	१	३७७
	१४. ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५	१ ६१०	२१६	२१०	१६५	६६	१३	१	६१०	

मात्रासूचीमेरु सेसनागगरसवादे जानीयात् ३०००२७७० ।

एककलस्य एक रूप-सर्वलघु तदेव । द्विकलस्य द्वे रूपे-एक गुरु ५ रूप, द्वितीय ल-द्वयम् । त्रिकलस्य रूपाणि ३, द्वे एकगुरुके, एक त्रिलघुकम् । चतुःकले-एक सर्वगुरु, त्रीणि द्विगुरुणि, एक सर्वल एव ५ । पञ्चकले च त्रीणि द्विगुरुणि, चत्वारि एकगुरुणि, एक सर्वल एव ८ । षट्कले-एक सर्वगुरुरूप, षट् रूपाणि द्विगुरुणि, पञ्चरूपाणि एकगुरुणि, एक सर्वल, एव १३ । सप्तकले-चत्वारि त्रि-गुरुणि, दश द्विगुरुणि, षट् एकगुरुणि, एक सर्वल, एव सर्वाणि २१ । अष्टकले-एक सर्वगुरु, दश त्रिगुरुणि, १५ द्विगुरुणि, सप्त एकगुरुणि, एक सर्व ल, एव सर्वाणि ३४ ।

१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

अत्र '१० एक दश' इति । ततः पुनर्दशाना नवतिर्गुणने ९०, तत्र द्वाभ्यां भागे ४५, ततः ४५ अष्टगुणे ३६०, तत्र ३ भागे लब्ध १२० तेषां सप्तगुणत्वे ८४०, तत्र ४ भागे लब्ध २१०, तेषां षड्गुणत्वे १२६०, तत्र पञ्चभिर्भागि लब्ध २५२, तेषां पञ्चगुणत्वे १२६० लब्ध, तत्र षड्भिर्भागि २१०, तेषां चतुर्गुणत्वे ८४०, सप्त-भिर्भागि लब्ध १२०, तेषां त्रिगुणत्वे ३६०, तत्र ८ भागे लब्ध ४५, तेषां द्विगुणत्वे ९०, तत्र ९ भागे लब्ध १०, तत्राप्येकगुणने तदेव १०, तत्र एकेन भागे लब्ध १। एव मेवंद्धा सिद्धा १।१०।४५।१२०।२१०।२५२।२१०।१२०।४५।१०।१ इति ।^६

इति मात्रामेक-प्रकरणम् ।

६-८ विहृतान्तर्गतोऽयमत्र वस्तुतस्तु चर्यामेकप्रकरणे पत्राद् ३५५ तत्र-वराणसेषविशेष-कोट्येन सम्बद्धोऽस्ति ।

मात्रापताका-प्रकरणम्

प्रथम मात्रापताका—

दत्त्वोद्दिष्टवदङ्गान् वामावर्तेन लोपयेदन्त्ये ।

अवशिष्टो वै योऽङ्गस्ततोऽभवत् पङ्क्तिसञ्चारः ॥६७॥

अत्र उद्दिष्टाङ्काः १।२।३।५।८ इत्यादयः प्रागुक्तास्तेषु द्विकापेक्षया वामस्थ एकः तयोयोगे ३ इति त्रिके पङ्क्तित्यागः, द्विकाघरित्रकः तदघः ४, तदघः ६, तदघः ७, तदघः ९ । पुनः, उद्दिष्टाङ्कः ५ द्विकत्रिकयोयोगे जातः, तदघः ८ उद्दिष्टाङ्क-स्तस्य पङ्क्तित्यागः । पञ्चकाघःस्यितेः तदघोऽघः १०।११।१२; पुनः पङ्क्तौ १३, एवं पङ्कलस्य पताका । तस्यां त्रिक-पञ्चकयो एकस्य चतुःकस्य उद्दिष्टे लोपात्-अदर्शनात् त्रिषु गुरुषु प्रथमरूपस्येषु एकस्यैव लोपः । एतावता २।३।४।६।७।९ रूपाणि द्विगुरुणि, पञ्चकादनन्तर उद्दिष्टे ६।७ अङ्गयोलोपात् द्विगुरुलोपेन जातानि १।८।१०।११।१२ रूपाणि एकगुरुणि इत्यर्थः, एकं १३ सर्वलघुरूपम् । एवं सर्वत्र पताका प्रागेव न्यासेन दर्शिता-उदाहृता दशमात्रिकस्य ९८ पूर्णरूपैः ।

चतुःकले न्यासः

१	२	५
	३	
	४	

पञ्चकलपताका

१	२	५	८
	४	३	
		६	
		७	

विषमकले पञ्चकलस्य अष्टरूपाणि । तत्र १।२।४ रूपाणि द्विगुरुणि, ५।३।
६।७ रूपाणि त्रिकस्य एकस्य लोपात् एकगुरुलोपेन एकगुरुकानि ।

चतुःकले एक सर्वगुरुकं, २।३।४ रूपाणि एकलोपात् एकगुरुणि, पञ्चमं
सर्वलम् । इति पताकाकरणम् ।

समाङ्कमात्रायां, विषमे तु लोपं प्राप्तोऽङ्कः परोद्दिष्टाङ्काधः स्थाप्य एकलोपे ।
सप्तकले तत एव लुप्तस्त्रिकः पञ्चकाधः त्रिकाधः, परेपि षडाद्याः सप्तदशान्ता
अष्टकपोडशवर्जा उद्दिष्टद्विकाधः ४।६ इत्यङ्कद्वयमेव त्रिगुरुक-एकलघुरूपज्ञा-
पकम् । उद्दिष्टपञ्चकाधः ३।६।७।१० इत्यादीनि रूपाणि द्विगुरुक-त्रिलघुरूपाणि ।
पुनः त्रयोदशोद्दिष्टाङ्काधः ८।१६।१८।१९।२० एकगुरु-पञ्चलघुरूपाणि । एकं २१
रूपं सर्वलघुकम् ।

पञ्चकलेपि १।२।४ द्विगुरु-एकलघूनि, ५।३।६।७ एकगुरु-त्रिलघूनि, ८ सर्वलम् ।

मात्रापताका

उद्दिष्टा सरि अंका थिप्पहु, वामावत्ते परलइ लुप्पहु ।
एक लोपे इक गुरु जाण, दुइ तिणि लोपे दुइ तिणि जाण ।
मत्तपताका पिगल गाव, जे पाइअ तापर हि मेलाव ॥

[प्राकृतपञ्जलम् परि. १, पद्य ४८]

चतुःकले ५ भेद

१	२	५
	३	
	४	

द्वि-त्रि-चतुर्धानि एकगुरुणि

पञ्चकले ८ भेद

१	२	५	८
	४	३	
		६	
		७	

१।२।४, रूपद्वयं द्विगुरु

५।३।६।७ एकगुरु

अष्टमं सर्वलघु

षट्कले पताका

१	२	५	१३
	३	८	
	४	१०	
	६	११	
	७	१२	
	९		

षट्कले १ एकं सर्वगुरु

२।३।४।६।७।९, द्विगुरुणि

पञ्चाष्टदशादीनि ५।८।१०।११।१२। एकगुरुणि

त्रयोदशं सर्वलघु

सप्तकलपताका

१	२	५	१३	२१
	४	३	८	
	९	६	१६	
		७	१८	
		१०	१९	
		११	२०	
		१२		
		१४		
		१५		
		१७		

सप्तकले १।२।४।९ रूपाणि त्रिगुरुणि ।

५।३।६।७।१०।११।१२।१४।१५।१७, रूपाणि द्विगुरुणि ।

१३।८।१६।१८।१९।२० रूपाणि एक-गुरुणि ।

२१ एकं सर्वलघुरूपम् ।

१, २, ३, ५, ८, १३, २१, ३४, ५५, ८६

१	२	५	१३	३४	८६
	३	८	२१	५५	
	४	१०	२६	६८	
	६	११	२६	७४	
	७	१२	३१	८१	
	९	१६	३२	८४	
	१४	१८	३३	८६	
	१५	१९	४२	८७	
	१७	२०	४७	८८	
	२२	२३	५०		
	३५	२४	५२		
	३६	२५	५३		
	३८	२७	५४		
	४३	२८	६०		
	५६	३०	६३		
		३७	६५		
		३९	६६		
		४०	६७		
		४१	७१		
		४४	७३		
		४५	७४		
		४६	७५		
		४८	७८		
		४९	७९		
		१	८०		
		५७	८२		
		५८	८३		
		५९	८५		
		६१			
		६२			
		६४			
		६९			
		७०			

दशमात्रिकस्य पताका

उद्दिष्टवदङ्का देयाः । १।२।३।५।८।
१३।२१।५५।८६; अत्र १।२ मेलने ३
इति त्रिकस्य लोपोऽस्ति, ३।५ मेलने ८
तस्य लोपः । ८।१३ मेलने २१
तल्लोपः, २१।३४ मेलने ५५ तल्लोपः ।
ते लुप्ताङ्का द्वितीयपङ्क्तौ प्रथम-
पङ्क्तेरधः स्थाप्याः ।

२।३।४।६ इत्यादि चतुर्गुरुकाणि
रूपाणि ।

५।८।१०।११।१२ इत्यादीनि त्रिगुरु-
काणि रूपाणि ।

१३।२१।२६।२९ इत्यादीनि द्विगुरुणि
३४।५५।६८।७४ इत्यादि एकगुरुणि,
८६ सर्वे लम् ।

वर्णमर्कटी-प्रकरणम्

अथ वर्णमर्कटीकरण यथा—

प्रथमायामाद्यादीन् दद्यादङ्काश्च सर्वकोष्ठेषु ।

अपरस्या तु द्विगुणान् अक्षरसप्तयेषु तेष्वेव ॥ ७१ ॥

प्रथमाया पङ्क्तौ १।२।३।४।५।६।७ इत्याद्यान् लिखेत् । अपरस्या द्वितीय-
पङ्क्तौ द्विगुणान् २।४।८।१६।३२।६४।१२८ इत्यादीन् लिखेत् । उर्ध्वाघ पङ्-
पङ्क्तय कार्या । प्रथमपङ्क्तिस्थैरङ्कद्वितीयपङ्क्तिगान् अङ्कान् विभावयेत्—गुण-
येत्, जातैरङ्कैश्चतुर्थपङ्क्तिकोशान् पूरयेत् । २।८।२४।६४।१६०।३८४।८६६
इत्यादि । तत पञ्चमी पङ्क्ति पठ्ठी च पङ्क्ति चतुर्थपङ्क्तिकोशाङ्काद्धेन १।४।१२।
३२।८०।१६२।४४८ ईदृशाङ्करूपेण पूरयेत् । तत तुयंपङ्क्तिस्थं पञ्चमपङ्क्ति-
स्थान् अङ्कान् सम्मील्य तृतीयपङ्क्तिस्थकोशान् [३।१२।३६।६६।२४०।५७६।
१३४४।] पूरितान् कुर्यात् ।

एवमनया मर्कट्या वर्णवृत्त १, तद्भेदा. २, तेषा माना ३, वर्णा ४, गुरव ५,
लघव ६ पङ्क्ति पदार्था ज्ञायन्ते । प्रस्तारस्यैते प्रकारा बोध्या । यन्नन्यास
प्रागुक्त ।^१

एव एकाक्षर वृत्त तस्य भेदद्वय, मात्रास्तिस्र, वर्णद्वय, एको गुरु, एको लघु ।
द्व्यक्षरे वृत्ते चत्वारो भेदा, द्वादशमात्रा, अष्टौ वर्णा, चत्वारो गुरवस्तावत एव
लघव । एव सर्वत्र ज्ञेयम् ।

आदीति । पूरयेदिति । कुर्यादिति । वृत्तमिति । सूत्रचतुष्टय गतार्थम् ।

॥ ७२-७५ ॥

अक्षरसले कोठा किज्जसु, छह पती तहि अका दिज्जसु ।
एकहि आइहि पढमा पती, दूसरि ठूणा वेवि णिभती ॥
आइ वेवि गुण चौढ ठविज्जसु, ता अद्धे पचमि छट्टमि किज्जसु ।
चौथो पचइ दुहु मेलिज्जसु, तीसरि पती अका दिज्जसु ॥
वित्त पअ भेअ मत्त अरु वण्णह, पचमि छट्टमि सह गुरु गण्णह ।

गुरु लहु माला जुयलं, वेय वेय ठाविज्जे गुरु-लहुयं ।
तिस पिच्छे इम ठाविज्जइ, अद्ध गुरु अद्ध लहुयाइं ॥

वर्णमकंटी

वृत्ता	१	२	३	४	५	६	७
भेद	२	४	८	१६	३२	६४	१२८
मात्रा	३	१२	३६	६६	२४०	५७६	१३४४
वर्णं	२	८	२४	६४	१६०	३८४	८६६
लघु+	१	४	१२	३२	८०	१६२	४४८
गुरु	१	४	१२	३२	८०	१६२	४४८

+ अत्र लघुसस्या वृत्तमौक्तिके षष्ठपञ्चावुक्ता युक्ता च ।

आदिपंक्तिस्थित एकः तेन द्वितीयपंक्तिगः द्विकः गुणितः जातं २, एवं तुर्यपंक्तिगः द्विकः सिद्धः । आदिपंक्तिगद्विकेन तदधः ४ गुण्यते जातं ८, एव त्रिकेन अष्टगुणने २४, चतुष्केन षोडशगुणने ६४, पञ्चकेन ३२ गुणने १६०, षट्केन ६४ गुणने ३८४, सप्तकेन १२८ गुणने ८६६, जातं तुर्यपंक्तिभरणम् । तुर्यपंक्तिस्थाङ्कानां अर्द्धेन पञ्चमी षष्ठी च पंक्ति पूरयेत् । तुर्यपंक्तिस्थं अर्द्धं पञ्चमपंक्तिस्थाङ्केन योज्यते तदा तृतीयपंक्तिस्था अङ्का जायन्ते ।

इति वर्णमकंटीकरणम् ।

मात्रामर्कटी-प्रकरणम्

अथ मात्रामर्कटीमाह—

कोष्ठान् मात्रासम्मितान् पवितपट्क,
कुर्यान्मात्रामर्कटीसिद्धिहेतो ।

तेषु द्वघादीनाद्विपङ्क्तावयाङ्का-

स्यक्त्वाऽऽद्याङ्क सर्वकोशेषु दद्यात् ॥ ७६ ॥

दद्यादङ्कान् पूर्वयुग्माङ्कतुल्यान्,

त्यक्त्वाऽऽद्याङ्क पक्षपक्तावयापि ।

पूर्वस्याङ्कैर्भावयित्वा ततस्ता,

कुर्यात् पूर्वाग्निप्रपक्तिस्यकोष्ठान् ॥ ७७ ॥

वृत्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९
भिदा	१	२	३	५	८	१३	२१	३५	५५
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९५
वर्णा	१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५
तपव	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५
गुरव	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०

आद्याङ्क एकक मुक्त्वा द्वितीयपङ्क्तौ द्वघादीन्-द्वघादिभिरेव भावयित्वा-
गुणयित्वा, नेत्रशब्देन अत्र हरनेत्राणि त्रीणोति तृतीया पवित प्रुरयेन्, तदङ्का
४१६।२०।४०।७८।१४७।२७२।४९५ इय तृतीया पक्ति ।

तुर्मा पक्ति विमुच्य पञ्चमी पवित वक्ति—प्रथमे द्वितीयमङ्क, द्वितीयकोष्ठे
च पञ्चमाङ्कमपि दत्त्वा बाणद्विगुण तद्द्विगुण नेत्र (३) तुयं (४) यो दद्यात् ।
द्विकस्य द्विकेन गुणकारकरणापेक्षया प्रथमकोश, द्विकाधस्तन वर्णाङ्कापेक्षया
त्रिकाधस्तन कोश, तत्र द्विक ततोऽग्रे द्वितीयकोष्ठे पञ्चमाङ्क दत्त्वा तत नेत्र-
(३) तुयं (४) कोशयो बाणा -पञ्च, तद्द्विगुण-दशक, पुन तद्द्विगुण-विंशति
२० दद्यात् ।

एकीकृत्येति । २।५।१०।२० एतान् अङ्कान् सम्मोत्य जाते ३७ अङ्के एकं अङ्कं दत्त्वा ३८ गुणकारापेक्षया पञ्चमपङ्क्तेः पञ्चमं कोशं पूर्णं कुर्यात् [॥७६॥]

त्यक्त्वा पञ्चममिति । २।१०।२०।३८ एव ७० एकं तत्रापि दत्त्वा ७१ पञ्चमपङ्क्तौ पष्ठं कोशं पूरयेत् [॥ ८० ॥]

कृत्वैक्यमिति । २।५।१०।२०।३८।७१ एषां एक्ये-मेलने जातं १४६ तत्र पञ्चदशाङ्कं १५ एकं च हित्वा षोडशोन्तवे १३० पञ्चमपङ्क्तेः सप्तमकोशं मुनि-
(७) प्रमितं पूरयेत् [॥८१॥]

एवमिति । स्पष्टार्थम् [॥८२॥]

एवमिति । अनया रीत्या पञ्चमपङ्क्तिं पूरयित्वा प्रथमं गुणकारापेक्षया प्रथमकोशे द्विकाधस्तने एकाङ्कं दत्त्वा पञ्चमपङ्क्तिस्थैरङ्कैः षष्ठी पङ्क्तिं पूरयेत् [॥८३॥]

एकीकृत्येति । पञ्चमपङ्क्तिस्थैरङ्कैः षष्ठपङ्क्तिस्थाङ्कानां मीलनेन चतुर्थ-पङ्क्तिं पूर्णं कुर्यात् । यथा—१।२ योगे ३, पुनः ५।२ योगे ७, पुनः ५।१० मीलने १५, पुनः २०।१० मीलने ३० इत्यादि ज्ञेयम् [॥८४॥]

अथ मात्रामकंटी

छह छह कोठा पंती पार, एक्क कला लिखि लेहु विचार ।
बीए आइहि पढमा पंती, दोसरि पुव्व जुअल तिब्भंती ॥
पढम बेवि गुणि अका लिज्जसु, छदइ पंती तिहि भरि दिज्जसु ।
चौथी अका पुव्व हि देय्यहु, तीसरि सिर पर तहि करि लेखहु ॥
तीसरि सम छह माले अंका, धाचे पंचमि भरहु निसंका ।
पच इकठ्ठहु ताहि समानहि, चौथी लिखहु लिखाअहु आनहि ॥

सोरठा

लिहि साअर परजन्त, इहि विहि कइ पिगल ठिअउ ।
अक भरण यह मत्त, पढम भेअ भणि भणि भरहु ॥

बोहा

वित्त भेअ गुरु सघु सहित, अक्खर कला कहन्त ।
पिगलक इम ककरि कहिअ, जिह गइंद उरब्भंत ॥

मात्रामर्कटी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	वृ.
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८६	शे
०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	गु
१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४६५	स
१	३	७	१५	३०	५८	१०६	२०१	३६५	६६५	व
१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४६५	८६५	मा.

१ एक तृतीयपक्षितस्थ, द्विक तुर्यपक्षितस्थ एकीकृत्य पञ्चमपक्षी त्रिक । एव २।५ ऐक्ये ७, तथा ५।१० ऐक्ये १५, १०।२० ऐक्ये ३०, पुन ३८।२० ऐक्ये ५८, पुन ३८।७१ ऐक्ये १०६, पुन. ७१।१३० ऐक्ये २०१, पुन तृतीयपक्षितस्थ १३० तत्र तुर्यपक्षितस्थ २३५ ऐक्ये ३६५; एव पञ्चमीपक्षित पूरणीया ।

द्वयोद्विगुणत्वे ४, त्रिकस्य त्रिगुणत्वे ९, चतुष्कस्य पञ्चगुणत्वे २०, पञ्चाना अष्टगुणत्वे ४०, त्रयोदशाना षड्गुणत्वे ७८, सप्ताना २१ गुणे १४७, अष्टाना ३४ गुणे २७२, नवाना ५५ गुणने ४६५ इति षष्ठी पक्षित । प्रथमद्वितीय-पक्षितभ्या निष्पन्ना ।

चतुर्थीपक्षितस्तृतीयपक्षिसमा पर पूर्णाद्य एक, तत २ । ५।१०।२०।३८।७१।१३०। अथ तृतीयपक्षितस्य १३० तस्याद्य तुर्यपक्षितौ २३५ ।

घृत प्रभेदो मात्रा च, वर्णा लघुगुरू तथा ।

एते षट् पक्षितसः पूर्ण—प्रस्तारस्य विभान्ति वं [॥ ८५ ॥]

अत एव लघूना वर्णाना सख्याङ्काः पञ्चम्या पङ्क्तौ न्यस्ता । गुरव-पष्टधाम् । वर्णमर्कट्या लघुन्यास षष्ठपक्षितौ, गुरून्यास पञ्चमपङ्क्तौ वर्णेषु गुर्वादित्वात् । मात्रामर्कट्या लघुसख्या पञ्चम्या युक्ता लघ्वादित्वात् । तथापि अष्टमकोष्ठे २३५ भरण, अनुक्तमपि २।५।१०।२०।३८।७१।१३० एषा ऐक्ये २७६, तत्र ४० हीनकरण, न्यासे ५ अङ्कादुपरि तिर्यक् १५ ततोऽप्युपरि पङ्क्तौ तिर्यक्कोशे ४० सङ्गात्वात् । एव शेष २३६ ततोऽपि सप्तमकोशभरणवत् एकीनत्वे २३५ लघवो नवकलच्छन्दसि ।

अत्र उद्दिष्टादिवत् सर्वे प्रत्ययाः चतुर्विंशतिर्ज्ञेयाः । प्रस्तार १, नष्ट २, उद्दिष्ट ३, लग्नक्रिया ४, संख्या ५, अध्वा ६, मेरुः ७, पताका ८, मर्कटो ९, समपाद १०, अर्धसमपाद ११, विषमपादता १२ । एते वर्णमात्राभ्यां चतुर्विंशतिः ।
कौतुकहेतुः—

वृत्तभेदाः		वृत्तभेदाः	
१. [एकाक्षरे]	२	१४. [चतुर्दशाक्षरे]	१६, ३८४
२. [द्व्यक्षरे]	४	१५. [पञ्चदशाक्षरे]	३२, ७६८
३. [त्र्यक्षरे]	८	१६. [षोडशाक्षरे]	६५, ५३६
४. [चतुक्षरे]	१६	१७. [सप्तदशाक्षरे]	१, ३१, ०७२
५. [पञ्चाक्षरे]	३२	१८. [अष्टादशाक्षरे]	२, ६२, १४४
६. [षडक्षरे]	६४	१९. [एकोनविंशाक्षरे]	५, २४, २८८
७. [सप्ताक्षरे]	१२८	२०. [विंशाक्षरे]	१०, ४८, ५७६
८. [अष्टाक्षरे]	२५६	२१. [एकविंशाक्षरे]	२०, ९७, १५२
९. [नवाक्षरे]	५१२	२२. [द्वाविंशाक्षरे]	४१, ९४, ३०४
१०. [दशाक्षरे]	१,०२४	२३. [त्रयोविंशाक्षरे]	८३, ८८, ६०८
११. [एकादशाक्षरे]	२,०४८	२४. [चतुर्विंशाक्षरे]	१, ६७, ७७, २१६
१२. [द्वादशाक्षरे]	४,०९६	२५. [पञ्चविंशाक्षरे]	३, ३५, ५४, ४३२
१३. [त्रयोदशाक्षरे]	८,१९२	२६. [षड्विंशाक्षरे]	६, ७१, ०८, ८६४

[वृत्तिकृतप्रशस्तिः]

कोट्यस्त्रयोदश-द्वाचत्वारिंशल्लक्षकाः नगाः ।
भूः सहस्राणि पद्विंशत्यघ्रा सप्तशती पुनः ॥ १ ॥
प्रस्तारपिण्डसंख्येय विधृता वृत्तमौक्तिके ।
वोधनात् साधनाल्लभ्या येषां नालस्यवश्यता ॥ २ ॥

उद्दिष्टादिषु वृत्तमौक्तिकमिति व्याख्यातवान् श्वेतसिक्,
श्रीमेघाद्विजयाख्यवाचकवरः प्रौढघा तपास्नायिकः ।
यत्सम्यग्विवृत्तं न वाऽनवगमान्मिथ्याधृतं सज्जनै-
स्तत्संशोध्य शुभं विधेयमिति मे विज्ञप्तिमुक्तालता ॥ ३ ॥
समित्यथदिवभू १७५५ वर्षे, प्रौढिरेपाऽभवत्त्रिये ।
भान्वादिविजयाध्यायहेतुतः सिद्धिमाश्रिता ॥ ४ ॥

इति श्रीवृत्तमौक्तिकदुर्गमबोध

श्रीरस्तु । वाचरुपाठकानाम् ।

प्रथम परिशिष्ट

टगणादि कला-वृत्तभेद-पारिभाषिक शब्द सङ्केत

१. टगण^१ ६ मात्रा, भेद १३—

१. ५५५	हर ^१
२. ११५५	शक्ति
३. १५५१	सूर्य ^२
४. ५११५	शक्र ^३
५. ११११५	क्षेप
६. १५१५	ग्रहि
७. ५१५१	कमल ^४
८. १११५१	धातु ^५
९. ५५११	शक्ति
१०. ११५११	पात्र
११. १५१११	भ्रूष
१२. ५११११	धर्म
१३. ११११११	शालि ^६

१ ट ठ ड. ढ. ण गणों की बजायें, प्रस्तार-भेद, नाम तथा पर्याय प्राकृतपैगल, वाणी-भूषण और वाग्वल्लभ में वृत्तमौक्तिक के अनुसार ही हैं किन्तु प्राकृतपैगल में ट ठ ड. ढ. ण के स्थान पर छ प, च, ल. द गण नाम भी स्वीकृत हैं। स्वयम्भूषण और कविदर्पण में टादि के स्थान पर छ प, च. ल. द और प ल. ट. थ क. स्वीकृत है। इन दोनों प्रयोगों में केवल छ पांच, चार आदि बसाविषय ही दिए हैं किन्तु इनके प्रस्तार-भेद, नाम तथा पर्याय की सूची नहीं है। हेमचन्द्रिय छन्दोनुशासन में प प च ल द गण और प्रस्तार भेद दिये हैं किन्तु नामादि की सूची नहीं है।

२ वाणीभूषण और वाग्वल्लभ में हर के स्थान पर शिव है।

३ सूर्य के स्थान पर प्राकृतपैगल में सूर, वाणीभूषण में दिनपति, और वाग्वल्लभ में दिनेश्वर है।

४. शक्र के स्थान पर वाणीभूषण में सुरपति और वाग्वल्लभ में सुरेश है।

५. कमल के स्थान पर वाणीभूषण और वाग्वल्लभ में सरोज है।

६. धातु के स्थान पर प्राकृतपैगल में ग्रहा और वाग्वल्लभ में धाता है।

७. शालि के स्थान पर प्राकृतपैगल, वाणीभूषण और वाग्वल्लभ में शालिकर है।

२. ठगण ५. मात्रा, भेद —

१. १५५ इन्द्रासन, सुनरेन्द्र, अघिप, कुञ्जर पर्याय^१, रदन, मेघ, ऐरावत^२, तारापति ।^३
२. ५१५ सूर्य^४, वीणा, विराट^५, मृगेन्द्र, अमृत, विहग, गरुड पर्याय^६, जोहल, यक्ष, भुजंगम^७, पत्नी
३. १११५ चाप
४. ५५१ हीर
५. ११५१ शोलर
६. १५११ कुमुम
७. ५१११ अहिगण
८. १११११ पापगण

तथा प्रहरण^८ (घ्रापुष) के विविध नाम पञ्चकल के वाचक हैं ।

१. कुञ्जर के पर्यायवाची शब्दों में वृत्तामोक्तिक के मतानुसार 'गज' शब्द सम्मिलित नहीं है । 'गज' को षतुर्मात्रिक स्वीकार किया है ।
२. वृत्तजातिसमुच्चय के अनुसार पञ्चमात्रिक १५५ ऐरावत के निम्न पर्याय और स्वीकृत हैं—सुरगज, सुरवारण, सुरहस्तिन् ।
३. प्राकृतपैगल के अनुसार पञ्चमात्रिक १५५ में गगन, ऋष्य और स्रप्य तथा वाग्वत्सल में दन्तावत पयोददन्त भी स्वीकृत हैं ।
४. सूर के स्थान पर प्राकृतपैगल, वाणीभूषण और वाग्वत्सल में 'सूर' है ।
५. विराट के स्थान पर प्राकृतपैगल और वाणीभूषण में बिडाल है ।
६. वृत्तजातिसमुच्चय में गरुडपर्यायों में निम्न शब्द और स्वीकृत हैं—पक्षिनाथ, विहगनाथ, विहगाधिपति, विहगपति, सुपर्ण ।
७. प्राकृतपैगल वाणीभूषण और वृत्तामोक्तिक में 'भुजंगम' को ५१५ पचमात्रिक स्वीकार किया है जब कि वृत्तजातिसमुच्चय में 'भुजगेन्द्र, भोगिन्, विषधर' को १११५ पचमात्रिक माना है ।
८. वृत्तामोक्तिककार ने प्रहरण (घ्रापुषों) के विविध नाम पञ्चकल के वाचक माने हैं, ऐसा मानते हुए भी 'प्रहरण' और 'वय्य' को ११५ षतुष्कल में, 'पञ्चरार' को ११ षतुष्कलवाची, 'तोमर' को १५ त्रिमात्रिक और 'बाण' को ११११ षतुष्कलवाची और एवमात्रिक भी स्वीकार किया है । वृत्तजातिसमुच्चयकार ने तोमर, प्रहरण और बाण को पञ्चकलवाची ही माना है । साथ ही प्रहरण के नामों की निम्नलिखित शानिका भी दी है—अरानि, अरि, घ्रापुष, अणक, अरबास, शुरप्र, चाप, तोमर, यनुम्, पट्टिस, प्रासम्ब बाण, बाणासन, मुद्गर, रपाशू, पवित्रदण्ड, शर, शारासन, शिमीमुष ।
वृत्तजातिसमुच्चय में पुरोहित, पुरोपम् और मन्दिन् शब्दों को षतुष्कल एव पञ्चकल वाची स्वीकार किया है । वृत्तामोक्तिक, प्राकृतपैगल और वाणीभूषण में इनका कोई भी उल्लेख नहीं है ।

३ डगण ४. मात्रा, ५ भेद—

१. ५५ (गुरुयुग) १ कर्णं, सुरतलता गुरुयुगल, कर्णसमान, रसिक, रसलान, मुमतिलम्बित, मनोहर^१, लहलहित^३
२. ११५ (गुर्वन्त) करतल, कर^२, पाणि, कमल, हस्त, प्रहरण, भुजवण्ड, बाहु, रत्न, दक्ष गजाभरण, भुजाभरण
३. १५१ (गुरुमध्य) पयोधर^४, भूपति^५, नायक, गजपति, नरेन्द्र, कुच वाचक शब्द, गोपाल, रज्जु, पयन
४. ५११ (आविगुद) घसुचरण, दहन, पितामह, सात, पद-पर्याय, गण्ड, बलभद्र, जङ्घायुगल, रति^६
५. ११११ (सर्वलघु) विप्र, द्विज, जाति, शिखर, पञ्चशर, बाण, द्विजवर

तथा गज, रथ^७, तुरगम और पदाति ये सब चतुष्कल के वाचक हैं ।

- १ चतुर्मात्रिक ५५ के और ११११ के पर्याय वाणीभूषण में प्राप्त नहीं है ।
- २ मनोहर के स्थान पर प्राकृतपैगल में 'मनहरण' है ।
- ३ प्राकृतपैगल में ५५ चतुर्मात्रिक में सुवर्ण अधिक है ।
- ४ 'करपल्लव' को भी ११५ चतुर्मात्रिक, वृत्तजातिसमुच्चयकार ने माना है । वाग्बल्लभ-कार ने अलकृति भी स्वीकार किया है ।
- ५ वृत्तजातिसमुच्चय में पयोधर के वाची 'स्तन, स्तनभार' भी स्वीकृत है, जब कि स्तनादि का प्रयोग वृत्तमौक्तिककार ने कुचवाची शब्दों में किया है । वाग्बल्लभ में पयोधृत, पयोद, जलद, जलधर, वारिद भी स्वीकृत हैं ।
- ६ भूपति के पर्यायों में वृत्तजातिसमुच्चय में नराधिप, पाणिव, भूमिनाथ, राजन् और सामन्त भी स्वीकृत हैं । प्राकृतपैगल में नरपति, उद्गतनायक अधिक है । वाणी-भूषण में मनुजपति अधिक है । प्रा० पै० और वाणीभूषण में अश्वपति और चक्रवर्ती अधिक है, जब कि प्रा० पै०, वृत्तजातिसमुच्चय और वाणीभूषण द्वारा समर्थित वसु-धाधिप अधिक है । वाग्बल्लभ में मनुजपति, चक्राधीश, तुरगपति और वर्ष अधिक हैं ।
- ७ प्राकृतपैगल में चतुर्मात्रिक ५११ में नूपुर भी स्वीकृत है; जब कि प्राकृतपैगल, वृत्त-मौक्तिकादि में द्विमात्रिक ५ में स्वीकृत एव प्रयुक्त है । वाग्बल्लभ में दहन, बलभद्र, जङ्घायुगल और रति शब्द हे एव पिता, हलायुध और पावक अधिक है ।
- ८ वृत्तजातिसमुच्चय में चतुष्कलवाची गजादि के निम्नपर्याय स्वीकृत है—करि, कुञ्जर, गज, मातग, वारण, वारण्येन्द्र, हस्तिन् तुरग, हरि, योष, स्वन्दन । जब कि वृत्त-मौक्तिककार ने गजातिरिक्त कुञ्जर पर्यायों को १५५ पञ्चमात्रिक स्वीकार किया है ।

४. ढगण ३ मात्रा भेद, ३—

१. । ऽ ध्वज^१, चिह्न, चिर, चिरालय, तोमर, पत्र, चूतमाला^२, रस, घास, पवन, बलय, तुम्बुल,
२. ऽ । करताल, पटह^३, ताल सुरपति आनन्द, तूर्य निर्वाण सागर^४
३. । । । भाव^५, रस, ताण्डव और भामिनी के पर्यायवाची शब्द

५ णगण २ मात्रा, भेद २—

१. ऽ नूपुर, रसना, चामर, फणि, मुग्धाभरण कनक, कुण्डल, वक्र, मानस, वस्य, कवण, हारावली, ताटक, हार, केयूर^६
२. । । सुप्रिय, परम^७

एक लघु के नाम निम्न प्रकार हैं—

शर, मेघ, दण्ड, कनक, शब्द, रूप, रस, गन्ध, काहल, पुष्प, शल, तथा धाण^८ ।

१. वृत्तजातिसमुच्चय मे । ऽ त्रिकलवाची निम्न शब्द और अधिक हैं—बदलिका, ध्वज-पट, ध्वजपताका, ध्वजाग्र, पताका, वैजयन्ती । वाग्वल्लभ मे पटच्छदन अधिक है ।
२. बाणीभूषण मे चूतमाला के स्थान पर चूडमाला है । वाग्वल्लभ मे चूतभवा, सक्, धात्रमाला है ।
३. वृत्तमौक्तिककार मे तूर्य और पटह को ऽ । त्रिकलवाची माना है, जब कि वृत्तजाति-समुच्चयकार ने तूर्य और पटह को । । । त्रिकलवाची माना है ।
४. प्राकृतपैगल मे 'छन्द' ऽ । त्रिकलवाची अधिक है । वाग्वल्लभकार ने सखा, अय, धाय-अधिक स्वीकार किये हैं और सुरपति के स्थान पर स्वपति तथा आनन्द के स्थान पर नन्द पर्याय स्वीकार किये हैं ।
५. वृत्तमौक्तिक मे भाव और रस । । । त्रिकलवाची स्वीकृत हैं, और रस । एकल-वाची भी । जब कि वृत्तजातिसमुच्चय मे । । भाव और रस । । द्विमात्रिक स्वीकृत हैं । वाग्वल्लभ मे । । । मे कुलभाविनी भी स्वीकृत है ।
६. वृत्तजातिसमुच्चय मे ऽ द्विमात्रिक मे निम्न शब्द भी स्वीकृत हैं—कटक, पपराय, भूषण, मणि, मरकत, मुक्ता, मौक्तिक, रत्न, विभूषण, हरसता । बाणीभूषण मे 'मञ्जरी' भी स्वीकृत है । वाग्वल्लभ मे धङ्गद, मञ्जरी, कटक भी स्वीकृत हैं ।
७. प्राकृतपैगल मे सुप्रिय, परम के स्थान पर निजप्रिय, परमप्रिय हैं ।
८. सपुवाचक । शब्दों मे प्राकृतपैगल मे 'सता' और बाणीभूषण एव वाग्वल्लभ मे स्पष्ट भी स्वीकृत है ।

इस पद्धति से भगणादि ८ गणों के पर्याय निम्नलिखित होते हैं--

१. भगण - हर
२. धगण - इन्द्रासन, मुनरेन्द्र, अधिप, कुञ्जरपर्याय, रदन, मेघ, ऐरावत, तारापति ।
३. रगण - सूर्य, धीणा, विराट्, भृगेन्द्र, भ्रमूत, विहग, गवड-पर्याय, जोहल, यक्ष, भुजंगम ।
४. सगण - करतल, कर, पाणि, कमल, हस्त, प्रहरण, भुजदण्ड, बाहु, रत्न, वय, गजाभरण, भुजाभरण
५. तगण - हीर ।
६. जगण - पयोधर, भूपति, नायक, गजपति, नरेन्द्र, कुच धाचक शब्द, गोपाल, रत्न, पवन ।
७. भगण - समुच्चरण, बहन, पितामह, तात, पद-पर्याय, गण्ड, बलभद्र, जंघा-युगल, रति ।
८. नगण - भाव, रस, ताण्डव और भाभिनी के पर्यायवाची शब्द ।



द्वितीय परिशिष्ट

(क) मात्रिक-छन्दों का अकारानुक्रम

वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या	वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या
	अ	कानकम् ^८	२३
अजयः ^८	२३	कमलाकरः ^८	२३
अतिभुल्लनम् (टि.)	३३	कमलम् (रोला) ^८	१७
अन्यः ^८	२१	" (पट्पद) ^८	२३
अनुहरिगीतम् (टि.)	४०	कम्पनी ^८	१६
अरिल्ला	२७	करतल ^८	१७
अहिषरः ^८	१४	करतलम् ^८	२३
	आ	करभः ^८	१४
आभीरः	३६	करभी (रहु)	२६
	इ	कर्णः ^८	२३
इन्दुः (रोला) ^८	१७	कलद्राणी ^८	१६
इन्दुः (पट्पद) ^८	२३	कलशः ^८	१२
	उ	कान्तिः ^८	६
उत्तोजाः ^८	२१	कामकला	३७
उद्गलितकम्	५५	काली ^८	१६
उद्गाथा	११	काव्यम्	१६
उद्गम्भः ^८	२१	कीर्तिः ^८	६
उन्दुरः ^८	१४	कुञ्जरः ^८	२३
उपभुल्लनम् (टि.)	३३	कुण्डलिका	३१
उल्लालम्	२०	कुन्दः (रोला) ^८	१७
	ऋ	कुन्दः (पट्पद) ^८	२३
ऋद्धिः ^८	६	कुम्भ ^८	१२
	फ	कुररो ^८	६
कचपः ^८	१४	कुमुदाकरः ^८	२४
कण्टः ^८	२१	कूर्मः ^८	२३

^८ चिह्नित छन्द गाथा, सङ्घन, दोहा, रोला, रतिका, काव्य घोर पट्पद के भेद हैं।
(टि.)—टिप्पणी में उद्धृत छन्द ।

वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या	वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या
कृष्ण ८	२३	घाटसेना (रङ्गा)	३०
कोविल (रोला) ८	१७	घूर्णा ८	६
" (पट्पद) ८	२३	घुलिघाला	३५
क्षमा ८	६	घोबोला	२८
क्षीरम् ८	१२	चोपया	१८
	ख		छ
खञ्जा	३४	छाया ८	६
खर ८	२३		
	ग		ज
गगनम् (स्कन्धक) ८	१२	जङ्गम ८	२३
" (पट्पद) ८	२४	जनहरणम्	४४
गगनङ्गणम्	३२		
गण्ड ८	२१		झ
गणेश ८	१७	भुल्लण (टि)	३३
गन्धानकम्	१७	भुल्लणा	३२
गम्भीरा ८	१६		
गरुड ८	२३		त
गलितकम्	५०	तालङ्गिनी (रङ्गा)	३०
गाया	६	तालाङ्ग (स्कन्धक) ८	१२
गाहिनी	११	तालाङ्ग (रोला) ८	१७
" (टि)	१०	" (काव्य) ८	२१
गाहू	११	" (पट्पद) ८	२३
श्रीव्य ८	२३	तालाङ्गा ८	१६
गीरी ८	६	तुरण ८	२१
		त्रिकला ८	१४
	घ	त्रिभङ्गी	४२
घत्ता	१६		
घत्तानन्द	१६		व
घनाक्षरम्	४६	वण्ड ८	२१
	च	वण्डकला	३७
चक्री ८	६	दम्भ ८	२१
चन्दनम् ८	२३	दपं ८	२१
चमर ८	१७	दाता ८	२३
चल ८	१४	दिवस ८	२१
		दीप ८	२४
		दीपकम्	३८
		दुमिलका	४२
		दृप्त ८	२१

वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या	वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या
वेही ^८	६	बिडाल ^८	१४
बोहा	१४	बुद्धि (ग्राया) ^८	६
घृत्तिष्टम् ^८	२३	" (पट्पद) ^८	२३
द्विपदी	३२	बृहन्नर ^८	२३
		ब्रह्मा ^८	१२
	घ		भ
घवल ^८	२३	भद्र ^८	१२
घानी ^८	६	भद्रा (रह्वा)	३०
घृव ^८	२३	भूपाल ^८	१२
	न	भूपणप्रलितकम्	५१
नगरम् ^८	१२	भृङ्ग ^८	२१
नन्द ^८	१२	भ्रमर (बोहा) ^८	१४
नन्दा (रह्वा)	२६	" (काव्य) ^८	२१
नर (बोहा) ^८	१४	" (पट्पद) ^८	२४
" (स्कन्धव) ^८	१२	भ्रामर ^८	१४
" (पट्पद) ^८	२४		म
नवरङ्ग ^८	२४	मण्डूक ^८	१४
नील ^८	१२	मत्तय (बोहा) ^८	१४
	प	" (पट्पद) ^८	२३
पदभटिका	२७	मद ^८	२३
पद्यावती	३१	मदकर ^८	२३
पयोधर (बोहा) ^८	१४	मदकल (स्वन्धक) ^८	१२
" (पट्पद) ^८	२३	" (बोहा) ^८	१४
परिपमं ^८	२१	मदन (स्वन्धक) ^८	१२
परिवृत्ताहीरवम् (टि)	४४	" (काव्य) ^८	२१
पादावुलकम्	२७	" (पट्पद) ^८	२३
प्लवङ्गम	३६	मदनगृहम्	४५
प्रतिपदा ^८	२१	मदिरा सयया	४७
	ब	मधुभार	३६
ब-प ^८	२१	मन्त्रहरिणीतम् (टि)	४०
बलभद्र ^८	२१	म-यान ^८	२१
बलि ^८	२३	मनोहर ^८	२४
बलो ^८	२१	मनोहरहरिणीतम	४१
बाल ^८	२१	ममूर ^८	२१

वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या	वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या
मरहट्टा	४६	राम	२१
गराल (दोहा) ^८	१४	रामा	६
„ (काव्य) ^८	२१	रचिरा	३७
मकंटः (दोहा) ^८	१४	रुद्र	१७
„ (काव्य) ^८	२१	रेखा	१६
„ (षट्पद) ^८	२३	रोला	१५
मल्लिका सवया	४८		ल
मल्ली सवया	४८	लक्ष्मी	६
महामाया	६	लघुहरिशीतम् (टि.)	४०
महाराष्ट्र	२१	लघु हीरकम् (टि.)	४४
„ अपर. ^८	२१	लज्जा	६
मागधी सवया	४८	लम्बितागलितकमपरम्	५३
माधवी सवया	४८	ललितागलितकम्	५४
मानस	२३	लीलावती	३६
मानी	६		व
मालती सवया	४७	वरुण.	१२
माला	३४	वलित	२१
मालागलितकम्	५५	वलिता	२१
मुखगलितकम्	१५	वसन्त	२१
मुग्धमालागलितकम्	५५	वसु	२४
मृगेंद्र	२१	वानर	१४
मेघ	१७	वारण. (स्कन्धक)	१२
मेघकर	२३	„ (षट्पद)	२३
मेरु	२३	वासिता	६
मोह	२१	विक्षिप्तागलितकम्	५३
मोहिनी (रड्डा)	३०	विगलितकम्	५०
		विगाया	१०
		विजय. (काव्य)	२१
		„ (षट्पद)	२३
		विद्या	६
		विधि	२३
		विमति	१२
		विलम्बितगलितकम्	५२
		विश्व	६
रञ्जनम्	२३		
रड्डा	२६		
रत्नम्	२४		
रसिका	१५		
„ (टि)	१६		
राजसेना (रड्डा)	३०		
राजा	२१		

वृत्तानाम	पृष्ठ संख्या	वृत्तानाम	पृष्ठ संख्या
विषमितागतितकम्	५४	श्येन. ॥	१४
वीर. ॥	२३	श्या. ॥	२३
वंताल. ॥	२३		
व्याघ्र. ॥	१४	प	
श		षट्पदम्	२३
शक्र. ॥	२१	स	
शङ्खः ॥	२४	सङ्गलितकम्	५२
शब्द. ॥	२४	" अपरम्	५३
शम्भुः (रोला) ॥	१७	समगलितकम्	५२
" (काव्य) ॥	२१	समगलितकमपरम्	५३
शरः (स्कन्धक) ॥	१२	समर (काव्य) ॥	२१
" (षट्पद) ॥	२३	" (षट्पद) ॥	२३
शरभः (दोहा) ॥	१४	सरित् ॥	१२
" (स्कन्धक) ॥	१२	सर्प. ॥	१४
" (काव्य) ॥	२१	सहस्रनेत्र. ॥	२१
शरभः (षट्पद) ॥	२३	सहस्राक्ष ॥	१७
शल्य ॥	२४	सारंग (स्कन्धक) ॥	१२
शशी (स्कन्धक) ॥	१२	" (षट्पद) ॥	२३
" (षट्पद) ॥	२३	सारस ॥	२३
शारद ॥	२३	सारसी ॥	८
शाङ्गलः (दोहा)	१४	सिद्धि (गाया) ॥	८
" (षट्पद) ॥	२३	" (षट्पद) ॥	२३
शिखा	३४	सिंह (काव्य) ॥	२१
शिव ॥	१२	" (षट्पद) ॥	२३
शुद्ध ॥	१२	सिंहविलोचित	३८
शुनक ॥	१४	सिंहिनी	१२
शुभङ्कर. ॥	२३	सिंहो (टि.)	१०
शोला (स्कन्धक) ॥	१२	शुभुल्लन (टि.)	३३
" (षट्पद) ॥	२४	शुम्बरगतितकम्	५१
शेषः (रोला) ॥	१७	शुनार. ॥	२३
" (स्कन्धक) ॥	१२	शुशोरम् (टि.)	४३
" (काव्य) ॥	२१	सूर्य (काव्य) ॥	२१
" (षट्पद) ॥	२३	" (षट्पद) ॥	२३
शोभा ॥	८	सोरटा	३५

वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या	वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या
स्काय. ८	२१	हरिगीता	४१
स्कन्धकम्	१२	हरिगीता अपरा	४१
स्तिाय. ८	१२	हरिणः ८	२१
स्नेह. ८	१२	हरिणी ८	६
		हाकसि	३५
		हीरम् (पट्टपद) ८	२४
हरः ८	२३	"	४३
हरिः ८	२३	" (टि.)	४३
हरिगीतम्	३६	हंसी (गाया) ८	६
हरिगीतकम्	४०	" (रसिका) ८	१६

ह



(ख) वणिक-छन्दों का अकारानुक्रम

संकेत- () वृत्तमौक्तिक मे दिया हुआ नाम-भेद, अ=अर्द्धसम छन्द, द=दण्डक छन्द, प्र=प्रकीर्णक छन्द, वि=विषमवृत्त, वं=वंतालीय वृत्त, टि=टिप्पणी मे उद्धृत छन्द ।

वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या	वृत्तनाम	पृष्ठ संख्या
अ		इ	
अचलधृति. (गिरिवरधृति)	१३४	इः	५७
अच्युतम्	१६६	इन्द्रयज्ञा	८०
अद्वितनया (अश्वत्थसितम्)	१६६	इन्द्रवंशा	६३
अनङ्गशेखरः (द.)	१८७	इन्दुमा (टि.)	६४
अनवधिगुणगणम्	१५६	इन्दुयवनम् (इन्दुयवना)	११७
अनुकूला	८६	इन्दुयवना (इन्दुयवनम्)	११८
अनुष्टुप्	६६	उ	
"	१६४	उडुगणम्	१२८
अपरवक्त्रम् (अ.)	१८६	उत्तरान्तिका (वं)	१६७
अपरार्जिता	११५	उत्पलिनी (घण्डिका)	१०६
अपरान्तिका (वं.)	१६६	उत्तय	१२७
अपवाहः	१७७	उद्धृता (वि.)	१६२
अमृतगति	७४	उद्गताभेदः (वि.)	१६२
अमृतयारा (टि. वि.)	१६५	उदीच्यधृति (वं.)	१६८
अर्णविय (द.)	१८५	उपचित्रम् (अ.)	१८६
अलि (प्रिया)	१२७	उपजाति.	८१
अशोरकुसुममञ्जरी (द.)	१८६	उपमेया (टि.)	६४
अश्वत्थसितम् (अद्वितनया)	१६६	उपवनकुसुमम्	१४६
असम्बाया	११४	उपस्थितप्रचुपितम् (टि. वि.)	१६५
अहियुति	११८	उपेन्द्रवद्या	८०
आ		ऋ	
आश्यानिरी (टि. भद्रा)	८३	ऋद्धि (टि.)	८१
आपातलिका (वं.)	१६६	ऋषभगर्जितसितम् (गङ्गुरगविस- सितम्)	११२
आपोढ. (विद्यापरः)	८८	ए	
आपोढः (टि. वि.)	१६५	एसा	१२६
आर्द्रा (टि.)	८१		

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
प्रत्यापीड टि. (वि.)	१६५	भुजगशिगुसुता (भुजगशिगुभृता)	७२
" " "	१६५	भुजङ्गप्रयातम्	८८
प्रबोधिता (मञ्जुभाषिणी)	१०६	भुजङ्गयिजृम्भितम्	१७७
प्रभा (मन्दाकिनो)	६८	भुजङ्गयिजृम्भितस्य चत्वारो भेदा (प्र.)	१८१
" (प्रमुदितवदना)	१०३	भुजङ्गसङ्गता	७२
प्रमाणिका	६८	भ्रमरपदम्	१४८
प्रमिताक्षरा	६१	भ्रमरयिलसिता	८५
प्रमुदितवदना (प्रभा)	१०३	भ्रमरावलिका (भ्रमरावली)	१२२
प्रपरत्तलितम्	१३१		
प्रवृत्तकम् (वं.)	१६८	म	
प्रहरणकलिका	११५	मञ्जरी	१६१
प्रहृषिणी	१०७	" टि. (वि.)	१६५
प्राच्ययुक्ति (वं.)	१६७	मञ्जरीरा	१४३
प्रियम्बदा	१०१	मञ्जुभाषिणी (सुनदिनी प्रबोधिता)	१०६
प्रिया	५६	मञ्जुला (नाराच)	१४७
प्रिया	६२	मणिगणम्	११६
" (अलि)	१२७	"	१७६
प्रेमा टि.	८१	मणिगुणनिकर (शरभम्)	१२३
		मणिमध्यम्	७२
फ		मणिमाला	१००
फुल्लदाम	१५४	मतङ्गवाहिनी	१४१
		मत्तमयूरम् (भाषा)	१०५
व		मत्तमातङ्ग (व)	१८६
वकुलम्	८७	मत्ता	७४
वन्धु (बोधकम्)	७६	मत्ताक्रीडम्	१७१
बहुरूपकम् (राम)	१२८	मदनललिता	१३०
ब्रह्मानन्द	१६०	मदलेखा	६७
बाला टि	८१	मदालसम्	१६६
बिम्बम्	७१	मदिरा	१६५
बुद्धि टि	८१	मधु	५८
		मधुमती	६६
भ		मन्यानम् (मयाना)	६४
भद्रकम्	१५६	मन्दर	६०
भद्रचिराट (अ.)	१६०	मन्द्रकम्	१६५
भद्रा टि. (आल्यानिकी)	८१		
भारतक्रान्ता	१४१		
भाय (त्रि)	१६३		

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
मन्दाहासा टि	६४	र	
मन्दाकिनी (प्रभा)	६८	रताख्यानिकी (टि.)	८४
मन्दापागता	१३८	रथोद्धता	६४
मनोरमम (मनोरमा)	७५	रमण	५६
मनोहस	१२३	रमणा (टि)	६४
मल्लिकार	६८	राम (ब्रह्मरूपकम्)	१२८
"	११६	रामा (टि)	८१
"	१७०	रामानन्द	१७२
मल्ली	१७५	रक्मवती (धम्पकमाला)	७३
महालक्ष्मिका	७०	रुचिरा	१०८
मही	५८	"	१६३
भागधी	१७८	रूपामाला	७०
भागवत्कीर्तिकम्	६६	रूपवती (धम्पकमाला)	७३
माधवी	१७४	ल	
माया टि	८१	सदमी	११२
माया (मरामपूरम)	१०४	सदमीधरम् (स्रग्विणो)	८८
माला टि	८१	सता	१११
मालती	७६	सलना	१३४
मालती (मुमालतिका)	६५	सलितम् (सलना)	१०१
" (यमुना)	६६	सलितम् (वि)	१३३
"	१७०	"	१६३
मालावती (मालाधर)	१३६	सलितगति	७५
मालिनी	१२०	सलिता (मुसलिता)	१०१
मृगेन्द्र	६०	सयती टि (वि)	१६५
मृगेन्द्रमुखम्	११०	सीतावेल (सारङ्गिका)	१२०
मृदुसुमुमम्	१५५	सीताचन्द्र	१४३
श्रेयस्किरफूर्जिका	१५३	सीताधृष्टम्	१३५
मोटनरम्	८६	सीता	११६
मोदरम्	६०	य	
मौक्त्तिरदाम	६०	यत्रम् (वि)	१६३
य		यर्धमानम् ङि (वि)	१६५
यमरम्	६३	यसन्तधरम्	१०२
यमुना (मालती)	१००	यसन्ततिररा	११३
योगानन्द	१५५	यादमनी (घ)	१११

वृत्तानाम	पृष्ठ संख्या	वृत्तानाम	पृष्ठ संख्या
श्री		गण्डका (गण्डक, चित्रवृत्तम् वृत्तम्)	१५६
श्रीपञ्चदशक (पं.)	१६६	गण्डकदत्तम्	१३१
क		तिरियरधृति (अचलधृति)	१३४
कनकयलयम्	१७१	गीतिका	१५८
कन्दम्	१०६	गोपाल	७३
कन्या (तीर्णा)	६१	गोविन्दानन्द	१७६
कमलम्	६०	च	
"	६८	घडरसा (चतुरसम्)	६४
"	७१	चक्रम्	११४
कमलदलम्	१७६	चकिता	१३२
करहञ्चि	६६	चञ्चला (चित्रसङ्गम्)	१३०
कलहस (सिंहनाद, कुटजम्)	११०	चण्डलेखा (चन्द्रलेखा)	१२५
क्षमा	११०	चण्डवृष्टिप्रपातः (द.)	१८४
काम	५८	चण्डिका (सेनिका)	७६
कामदत्ता	१०२	चण्डी	१०८
कामानन्द	१७४	चतुरसम् (चडरसा)	६४
किरीटम्	१७३	चन्द्रम् (चन्द्रमाला)	१५१
कीडाचन्द्र	१४५	चन्द्रलेखम् (चन्द्रलेखा)	१११
कीर्ति (टि.)	८१	चन्द्रलेखा (चण्डलेखा)	१२५
कुटज (कलहस)	११०	चन्द्रवर्त्म	६१
कुमारललिता	६६	चन्द्रिका (उत्पत्तिनी)	१०६
कुमारी (टि.)	६४	चम्पकमाला (रुक्मवती, रूपवती)	७३
कुसुमलति	६७	चर्चरी	१४४
कुसुमविचित्रा	६८	चामरम् (तूणकम्)	१२१
कुसुमस्तवक (द.)	१८६	चाह्हासिनी (चं.)	१६६
कुसुमितलता	१४६	चित्रवृत्तम् (गण्डका)	१५७
केतुप्रती (प्र.)	१६१	चित्रम् (चित्रा)	१२६
केसरम्	१२६	चित्रपदा	६६
कोकिलकम्	१४०	चित्रसगम् (चञ्चला)	१३०
कोञ्चपदा	१७५	चित्रलेखा	१४८
ग		चित्रा (चित्रम्)	१२६
गजतुरगविलसितम् (ऋषभगज- विलसितम्)	१३२	घ	
		घापा	१५३

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
	ज		न
जलदम्	६६	नगाणिका	६१
जलधरमाला	१००	नन्दनम्	१४६
जलोद्धतगति	६७	नर्दटकम् (कोकिलकम्)	१३६
जाया टि.	८१	नराचम् (पञ्चवामरम्)	१२६
	त .	नरेन्द्र	१६१
तन्वी	१७३	मलिनम् (वं.)	१६६
तनुमध्या	६५	मलिनमपरम् (वं.)	१६७
तरलनयनम्	१०३	नवमालिनी	१०३
"	१७४	नागानन्द	१५०
तरवरम	१६७	नान्दोमुखी	११७
त्वरितगतिः	७४	नाराच (मञ्जुला)	१४७
तामरसम्	६६	नारी (ताली)	५६
तारकम्	१०६	निरुपमतिलकम्	१६३
ताली (नारी)	५६	निशिपालकम्	१२४
तिलका	६३	नीलम्	१२६
तीर्णा (बन्धा)	६१		प
वृद्धा	६८	पङ्कापती	१०७
तूणकम् (चामरम्)	१२२	पञ्चवामरम् (नराचम्)	१२६
तोटकम्	८६	पञ्चालम्	६०
तोमरम्	७१	पध्याषवत्रम् (वि.)	१६४
	द	पदचतुष्टयम् टि. (वि.)	१६५
दक्षिणान्तिका (वं.)	१६७	पयावम्	१४२
दमनकम्	६५	पयवतिका	१६८
"	७८	प्लवङ्गमङ्गलम्	१५८
दन्मुत्तरम्	१४२	पाइन्तम् (पाइन्ता)	७१
दिव्यानन्द	१६८	पिपीडिका टि. (प्र.)	१०१
दूतयिलम्बितम्	६२	पिपीडिकापरम् टि. (प्र.)	१०१
दुमिलरा	१७२	पिपीडिकापणय टि. (प्र.)	१०२
द्वितीयत्रिभङ्गी (प्र.)	१८२	पिपीडिकामाला टि. (प्र.)	१०२
दोषरम् (धनु)	७६	पुष्टिवा टि.	६४
	ध	पुष्टिताश (ध.)	१८८
धवलम् (धवला)	११२	पृथ्वी	१३५
धारी	६१	प्रचितक (द.)	१८४, १८५

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
वाणिनी	१३१	वाशिकला (शरभम्)	१२३
वाणी (टि.)	८१	वाशी	५६
वातोर्मा	७७	शाङ्खललितम्	१४८
वाराहः	१०४	शाङ्खसवित्रीद्वितम्	१५०
वासन्तिका (टि.)	६४	शाला टि.	८१
वासन्ती	११६	शालिनी	७७
विज्जोहा (विमोहम्)	६४	शालिनी-वातोर्मुपजातिः	७८
विद्याधरः (भापीडः)	८८	शालूरः (प्र.)	१८३
विद्यानन्दः	१६४	शिलरम्	१६५
विद्युन्माला	६७	शिलरिणी	१३६
विपरीताख्यानिकी टि. (हंसी)	८२	शिशिरा टि.	६४
विपिनतिलकम्	१२५	शीर्षा	६५
विमलगतिः	११२	शीलातुरा टि.	६४
विमला	११८	शुद्धविराट् व्युत्पन्नः टि. (वि.)	१६५
विमोहम् (विज्जोहा)	६४	शुभम्	६१
युक्तम् (गण्डका)	१५७	शेषा	६३
वेगवती (अ.)	१८६	शैलशिखा	१३३
वेत्तावलीयम् (वं)	१६६	शोभा	१५७
वेदर्भा	११७		
वेधात्री (टि.)	६४	श्र	
वेरासिकी (टि.)	६४	श्रीः	५७
वेदयदेवी	६७	श्रेणी	७६
वशापत्रपतितम् (वशापत्रपतिता, वंश- वदनम्)	१३६	य	
वशास्थविला (वशास्थविलम्, वंशस्त- नितम्)	६३	यट्पदावली (प्र.)	१६१
वशास्थविलेन्द्रवशोपजातिः	६४	स	
श		समानिका	६६
शङ्खचूडा टि.	६४	सम्मोहा	६२
शङ्खनारी (सोमराजी)	६४	सर्वतोभद्रः (द.)	१८५
शम्भुः	१५२	स्वधरा	१६०
शरभम् (शशिकला)	१२३	सरती (सुरतट., सिद्धकम्)	१६२
शरभी	११८	सारम्	५८
शशाङ्खवलितम्	१५८	सारङ्गम् (सारङ्गिका)	७०
		सारङ्गकम्	८६
		सारङ्गिका (सारङ्गम्)	७०

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
सारङ्गिका (लीलाखेतः)	१२०	सुवदना	१५७
सारवती	७३	सुवासकम्	६६
सिद्धकम् (सरसी)	१६२	सुयमा	७४
सिंहनादः (कलहंसः)	११०	सेनिका (चण्डिका)	७६
सिंहास्थः	११३	सेनिका	७६
सुकेशी	८६	सोमराजी (शङ्खनारी)	६४
सुकेसरम्	१३३	सौरभम् (वि.)	१६२
सुद्युतिः	११२	सौरभेयी टि.	६४
सुन्दरिका	१६८	सयुतम् (सयुता)	७३
सुन्दरी	६०	खम् (शरभम्)	१२३
" (अ.)	१६०	खण्डिणी (लक्ष्मीधरम्)	८६
सुन्दरिणी (मञ्जुभाषिणी)	१०६	स्वापता	८४
सुभद्रिका	८७		
सुमालतिका (भालती)	६५	ह	
सुमुखी	७६	हरिणप्लुता (अ.)	१८६
सुरतल (सरसी)	१६२	हरिणी	१३७
सुरसा	१५४	हारिणी	१४०
सुसलितम्	७२	हारी	६२
"	१४६	हसः	६२
सुसलिता (सलिता)	१०१	हंसी	१६४
		हसी टि. (विपरीताख्यानिका)	८१

(ग.) विरुदावली छन्दों का अकारानुक्रम

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
		त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका	२१५
अ		त्रिभङ्गी कलिका	२१३
अक्षमयीकलिका	२६२	व	
अच्युतं चण्डवृत्तम्	२२१	दण्डकत्रिभङ्गी कलिका	२५५
अपरजितं चण्डवृत्तम्	२३१	द्विगा कलिका	२११
अरुणाम्भोरुहञ्चण्डवृत्तम्	२४२	द्विपादिका युग्मभंगा कलिका	२१६
अस्खलितञ्चण्डवृत्तम्	२३२	द्विभङ्गी कलिका	२१३
इ		न	
इन्दीवरं चण्डवृत्तम्	२४०	नक्तं त्रिभङ्गी कलिका	२१४
उ		नक्तं चण्डवृत्तम्	२३१
उत्पलं चण्डवृत्तम्	२२८	नादिकलिका	२१२
क		प	
कन्दलञ्चण्डवृत्तम्	२३१	पङ्केरुहं चण्डवृत्तम्	२३५
कल्पद्रुमञ्चण्डवृत्तम्	२३०	पद्यत्रिभङ्गी कलिका	२१४
कुन्दञ्चण्डवृत्तम्	२४७	पल्लवितं चण्डवृत्तम्	२३२
कुमुदञ्चण्डवृत्तम्	२५३	पाण्डूत्पलञ्चण्डवृत्तम्	२३६
ग		पुरयोत्तमञ्चण्डवृत्तम्	२२०
गलादिकलिका	२१२	प्रगल्भा द्विपादिका द्विभंगी कलिका	२१६
गुच्छकञ्चण्डवृत्तम्	२५२	फ	
गुणरतिञ्चण्डवृत्तम्	२२६	फुल्लाम्बुजञ्चण्डवृत्तम्	२४३
घ		व	
चण्डवृत्तम् साधारणम्	२६०	बकुलभासुरम्	२४८
चम्पकञ्चण्डवृत्तम्	२४५	बकुलमङ्गलम्	२४६
त		भ	
तरत्तमस्तं चण्डवृत्तम्	२३१	भुजङ्गा त्रिभङ्गी कलिका	२१४
तहणी द्विपादिका द्विभंगी कलिका	२१८	म	
तामरसं खण्डावली	२६८	मञ्जरी खण्डावली	२७७
तिलकं चण्डवृत्तम्	२२०	मञ्जरी कोरकञ्चण्डवृत्तम्	२५१
तुरगञ्चण्डवृत्तम्	२३४		
तुरगत्रिभङ्गी कलिका	२१५		

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
मध्या कलिका	२१२	विदग्ध त्रिभङ्गी कलिका	२१३
मध्या द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका	२१७	विदग्ध त्रिभङ्गी कलिका सम्पूर्णा	२५६
मयुरा द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका	२१८	घोरद्वन्द्ववृत्ताम् (घोरभद्रम्)	२२५
मातङ्गखेलित चण्डवृत्तम्	२२६	घोरभद्र चण्डवृत्तम् (घोर)	२२५
मादिकलिका	२१२	वेष्टन चण्डवृत्तम्	२३२
मिश्रकलिका	२१२		
मिश्रकलिका	२५८	श	
मुग्धा द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका	२१६	शाकद्वन्द्ववृत्तम्	२२६
र		शियिला द्विपादिका द्विभङ्गी कलिका	२१८
रणचण्डवृत्तम् (समप्रम)	२२४		
रादिकलिका	२११	स	
ल		समप्र (रण)	२२४
ललिता त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका	२१५	समप्र चण्डवृत्तम्	२३३
व		सर्वलपुकलिका	२६४
वञ्जुलचण्डवृत्तम्	२४६	साप्तविभक्तिकी कलिका	२६१
वरतनु-त्रिभङ्गी कलिका	२१५	सितकञ्ज चण्डवृत्तम्	२३८
वदितचण्डवृत्तम्	२२२	ह	
वल्गिता त्रिगता त्रिभङ्गी कलिका	२१५	हरिणप्लुत-त्रिभङ्गी कलिका	२१४

तृतीय परिशिष्ट

(क.) पद्यानुक्रम

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
अ			
अकारादिकारान्त-	२६२	अय विशाक्षरे	२८३
अङ्गाः पूर्वं भूता	६	अय षट्पद-	१६
अच्युतस्तु ततः	२८७	अय सप्तदशे	२८२
अतनुरचित-	८७	अयातो द्विगुणा	२७६
अत श्रीकालिदास-	१६४	अयातो व्यापकं	२८७
अत्र लघुयुग-	१६	अयात्र विरुदावल्या-	२११
अत्र स्युस्तुरगः	२६२	अयाभिधीयते	२०१, २१६, २७३
अथ खण्डावली	२८६	अयाविद्धं चूर्णकं	२८७
अथ तत्त्वाक्षरे	२८५	अयास्या लक्षणं	२५५
अथ त्रिभङ्गी-	२७५	अयंकविशत्यक्षरे	२८४
अथ दण्डकला	२७४	अयंतयो निरूप्यन्ते	२७२
अथ द्वितीयखण्डस्य	२७६	अयंतरथाः सप्त-	२६
अथ पंचमयणके	२७८	अयोच्यते विभवतीना	२६१
अथ पञ्चाक्षरे	२७६	अयोद्गाया	२७४
अथ पञ्चाधिके	२८५	अनङ्ग शैलरश्चिति	२८६
अथ पल्लवितं	२८८	अनन्तरं चोपवन-	२८३
अथ प्रथमतो	२८१, २८३, २८४	अनन्तरं तु बकुल-	२८८
अथ भद्रविराट्	२८६	अनयोरेपि चैकत्र	२७६
अथ भावस्ततो	२८६	अन्ते जगणमवेहि	३६
अथ मन्वक्षरे	२८०	अन्ते यदि गुरु-	४०
अथ रङ्गाप्रकरणं	२७४	अन्योऽखङ्कार-	२५
अथ रथ्यक्षरे	२७६	अन्यत्र धीरभद्रः	२८८
अथ रुद्राक्षरे	२७८	अन्यदिहं मुनि-	४७
अथ लघुयुगम-	२१	अनुत्पारविसर्गौ	२१६
अथ वत्सक्षरे	२७७	अपरान्ते लघु-	२६
		अमुग्मिन् मे दर्वी	१

वृत्त नाम	पृष्ठ सख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ सख्या
अर्मन्त्री निरनुप्रासो	२७२	आदौ म प्रोक्तं	६२
अयुक्कृता	१६६	आदौ म तदनु	१७७
अयुजि पदे नव-	३०	आदौ म सततं	१४८
अर्लसाः प्राकृते	१	आदौ मो यत्र	१५७
अयान्तरं प्रकरण	२८८, २८६	आदौ मो यत्र	१६०
अयान्तरमिदं	२८८	आदौ यस्मिन् वृत्ते	१७७
अवेहि जगण	६७	आदौ विदधाना	१००
अश्वानां सख्याका	१५०	आदौ षट्कल-	१६
अश्वैः सख्याता	१४३	आदौ षट्कलं	५२
अष्टभिः षट्कले	२१२	आद्याङ्गुन तदोपैः	६
असामपदे	३०	आद्यन्ताशी पद्य-	२५८
असम्बाधा ततश्च	२८०	आद्यन्ते वृत्त-	६७
असवर्णं सवर्णं	२०७	आद्यं समाप्त-	२१०
अस्यै पुनरचित्ता	१६६	आद्यवर्णात्तु	२२५
अहिपतिपिङ्गल-	१६	आपातलिका	१६६
		आरभ्यैकाक्षरं वृत्त	२७६
		आशी पद्यं यदा-	२६८
आ			
आवाय गुरु-	२१		
आदावादिगुहं	३६		
आदिगपुनवेद-	४३	इति गायत्र प्रकरण	२७४
आदिगुहर्भगणो	४	इति गायत्र्या	६
आदिगुहं कुह	१६५	इति पिगलेन	५
आदिगुहवंगु-	३	इति प्रकीर्णक-	१८३
आदित्यं सख्याता	१७२	इति भेदाभिधाः	१०, २४
आदिपश्चितीस्थितं.	७	इत्यं स्वप्नावलीनां	२७१
आदिभवार	७२	इत्य विपम-	२८६
आदिभवारो	७३	इत्यद्वं समकं	२८६
आदिरप्यान्तः	६२	इत्यद्वंसमवृत्तानि	१६१
आदिरेकादश-	२२४	इदमेव हि यदि	१२३, १२७
आदिदोषदोषि	७६	इदमेवाग्यतः	२८२
आदौ कुर्वन्मगण-	७४, १४१	इन्द्रात्तनमय	३
आदौ टगणसमु-	३२	इयमेव यदि	४१
आदौ तागण.	७४	इयमेव वेदघन्तः	४१
आदौ त्रयानुरङ्गा	२०	इयमेव सप्त-	१७०
आदौ पितीरिचा	२८६	इह यदि नगण-	६८

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
		एष पञ्चमपवित	८
		एष माधुर्यं-	२०४
			.
		क	
उ		कञ्जुण कुव	१६१
उषत्तलक्षण-	२१६	कवाचिदद्वंसमक	१६३
उषत्तानि सवया-	४८	कन्दकतुला-	२
उषता मभौ समौ	२१७	करतालपट्ट-	३
उदाहरणमञ्जरी	१६	करपाणिकमल-	३
उदाहरणमेतासा	२६१	करपुषतसुपुष्प-	१६८
उदाहरणमेतेषां	३०	करसङ्गिपुष्प-	१०६
उदीच्यवृत्ति-	१६८, २८७	कर्णद्वन्द्व ताटङ्का-	१२६
उपजातिस्ततः	२७८	कर्णद्वन्द्व विराजत्	१५४
उपेन्द्रयज्ञा	८१	कर्णद्विजघर-	३८३
उभयो षण्डयो-	२८६	कर्णपर्यायिन	३
उर्ध्वरित्तद्वय	५	कर्णा जायन्ते	६७
उर्ध्वरित्तोवरिताना	५	कर्णाभ्यां सुललित-	१०७
		कर्ण कुण्डलयुक्ता	११६
		कर्ण कृत्वा कनक-	११७
		कर्ण ताटङ्क-	१२५
		कर्ण विराजि	११२
		कर्णी कृत्वा कुण्डल-	११६
		कर्णी ताटङ्क-	१४६
		कर्णी पुष्पद्वितीय-	१३८
		कर्णी स्वर्णाढिचौ	१५४
		कर्ण कुण्डल-	१५०
		कर्ण कृत्वा कनक-	१३० १४०, १४८
		कर्ण जकार-	१६६
		कर्ण गुरुप	६३
		कर्ण स्वर्णोज्वल-	११८
		कर्ण पयोधर-	१५८
		कलय नकार-	६६
		कलय नगण	१११
		कलय नयुग-	१०८
		कलय नयुगल	१४६
ए			
एकस्मात् कुलीना	६		
एकाक्षरादि षड-	८, २८५		
एकाक्षरे द्वयक्षरे	२७६		
एकाङ्कमपुषपषते	६		
एकादशकल-	२०		
एकादश प्रकरण	२८६		
एकाधिककोष्ठाना	६		
एकीकृत्य तथा	७, ८		
एकैकगुरुवियोगाद्	६		
एकैकस्य गुरो	१५, १७		
एकैकाङ्कस्य	६		
एतत्पल्लवित	२३२		
एतत्प्रकरण	२८६		
एतावेवगणौ	२३७		
एते दोषा समु-	२६		
एष गलितका-	५६		
एष तु विषम	१६४		
एष निरवधि-	८		
एष षड्चपदाना	२६		

दृश नाम	पृष्ठ संख्या	दृश नाम	पृष्ठ संख्या
कलहसस्ततश्च	२८०	क्वचित्तु पद-	२०१
कल्पद्रुमे तजौ	२३०	क्वचिद् हवमवती	२७८
कलिकाभिस्तु	२११		
कलिका इत्कोक-	२६६	ख	
कारय भ ततो	१३३, १३६, १४८, १६५	खण्डावली प्रकरण	२८६
कारय भ त	१७३	ग	
कारय भ म	१७५	गगनविधुयति-	४४
काव्यपट्टपदयो	२५	गगन शरभो	१२
कीर्ति सिद्धिर्माती	६	गणव्यवस्था-	२७३
कुण्डलकलित-	११४	गणोद्वेषिका	२५
कुण्डलवञ्जरञ्जु-	१६१	गण्डर्व क्वचित्	२८३
कुण्डल दधति	१४४	गद्यपद्यमयी	२११
कुन्तीपुत्रा यस्मिन्	१६८	गायोदाहरण	२७४
कुन्द करतल-	१७	गाहिनी स्याद्	८
कुरु गन्धमुग्म	११६	गुणालङ्कार-	२६६
कुरु चरणे	७६	गुरुमुग्म किल	३
कुरु नकारमयो	६२	गुरुलघुकृत-	२७
कुरु नगण-	६६	गुरो भूवस्थान्ते	२
कुरु नगण ११०	१२६, १३१, १६३	गो चेतु कामो	५८
कुरु नगण तत	१३६	ग्रन्थान्तरमत	२८७
कुरु नगणमुग	१०६, १२७		
कुरु नसगणौ	१११ ११२	च	
कुरु हस्तसगि	१५६	चकितं व यति-	२८२
कुरु हस्त स्वर्ण-	१५२	चण्डवृष्टिप्रयात	२८६
कुर्यात् पवित-	७	चतुरधिका इह	२०
कुमुभरूप-	६०	चतुर्भिर्नगर्ण-	२५३
कुमुमसङ्गतकरा	१०१	चतुर्भिर्नगर्ण-	२४६
कृत्वा पादे नृपुरी	७७	चतुर्वर्णप्रभेदेषु	२७६
कृत्वंशय चाङ्कानां	८	चतुर्भिस्तुरां	२११, २४८
कोष्ठानेकाधिकान्	६	चतुष्फलद्वये-	२६०
कोष्ठान् मात्रा	७	चतुष्पद भवेद	१८८
क्रियते यैर्गर्ण-	२६०	चतु सप्तमकौ	२३१
क्रियते सगण	५६	चम्पक चण्डवृत्त	२४५
क्वचित्तु कलिका-	२६६	चम्पक तु तत	२८८
		चरणे प्रथम	३६

श्रुत नाम	पृष्ठ संख्या	श्रुत नाम	पृष्ठ संख्या
घरणे विनिधेहि	१२२	डगणाश्चतुर	२७
घूर्णकोत्कलिका-	२०७		
घेद् वातोर्मा	७८	त	
घोर्पया च तत	२७४	तगण शुभ्य	५
घोर्पया छन्द	१८	तत एव हि ते	१८५
		ततश्चन्द्र समा	२८३
छन्द शास्त्रपयो-	२६०	ततश्च स्यान्निरुपम-	२८४
		ततस्त्वान्त्य भवेद्	२८५
ज		ततश्चिचत्रा समा-	२८६
जकारपुगेन	६५	ततस्तद्वधर	२८७
जकारमुत	६६	ततस्त्रिभङ्गी	२८८
जगणरगण-	१८७	ततस्त्वध्रं व	२८९
जलधिनागणमिह	१०३	ततस्तामरस	२९०
जलधिमित	११२, ११६	ततस्तु घद्रलेखा	२९०
जलनिधिकल-	३४	ततस्तु चुलिआला	२९४
जलनिधिकृत	१२३	ततस्तु भुल्लणा	२९४
जलनिधिपरि	१४२	ततस्तु नन्दन	२८३
जलराशिविरा-	१०६	ततस्तु निशिपाला-	२८१
जायेत् हारद्वये	८६	ततस्तु पादाकुलक	२७४
ज्ञान भवेदखण्डस्य	२७३	ततस्तु भ्रमरा	२८३
		ततस्तु माधवी	२८५
ट		ततस्तु मालिनी	२८१
टगणडगण-	१४	ततस्तु विरुदाबल्या	२८६
ट त्रयोदशभेदा	२	ततस्तु वशाश्वविला	२७६
टगणमिहादी	२०, ३२	ततस्तु शरभी	२८१
		ततस्तु सरसी	२८४
ठ		ततस्तु सर्वतोभद्र-	२८६
ठगणद्वय	५०	ततस्तु सर्वलघुक	२८८
ठगणद्वयेन	५१	ततस्तु सुमुखी	२७८
ठगणद्वितय	५१	ततो गिरिधृति	२८२
		ततो गुणगण	२८३
ड		ततो गुणरति	२८८
डगणद्वयेन	५०	ततो जलधरमाला	२७६
डगणमवधेहि	३६	ततो जलोद्धतगति-	२७६
डगणविभूय	५२	ततो दमनक	२७८
डगण कुरु विचित्र	३८		

दृश नाम	पृष्ठ संख्या	दृश नाम	पृष्ठ संख्या
ततोऽद्वितनया	२८४	तयोद्वाहति	२७३
ततो नईटर्क	२८२	तस्यास्तु लक्षणं	२०१
ततोऽनुष्टुप्	२७७	ताटकहार-	४
ततोऽपि ललितं	२८०	तालङ्कनीति	३०
ततो भुजङ्गपूर्वं	२८५	तिलतन्दुलवन्	२१२
ततो मणिगणं	२८१, २८५	तुङ्गा वृत्तं तत.	२७७
ततो मधुमती	२७७	तुरगैकमुपघाय	३८
ततो महालक्ष्मिका	२७७	तुरगो हरिणो	२१
ततो मालावती	२८२	तुर्यस्य तु शेष-	१६७
ततोऽमृतगतिः	२७८	तृतीये कृतभङ्गा	२१५
ततो मोट्टनकं	२७६	त्यक्त्वा पंचम-	८
ततो रयोद्धता	२७६	प्रयोदशागुरु-	१७
ततो लक्ष्मीघरं	२७६	प्रयोदशैव भेदानां	१७
ततो ललित-	२७८	त्रिचतु.पञ्च-	२६६
ततो विमलपूर्वं	२८०	त्रिदशकला	१४
ततो वृत्ताद्वयस्य-	२७३	त्रिभिस्तंतु	२६१
ततोऽस्य परिभाषा	२८७	त्रिभिर्भङ्गैस्त्रिभङ्गी	२१३
ततः प्रहर्षिणी	८०	त्रिशदगुरवो	१२
ततः प्रिया समा-	२८१	त्रिशद्वर्णां लक्ष्मीं	६
ततः शम्भु समा-	२८३	त्र्यक्षरे चात्र	२७६
ततः शैलशिखा	२८२	त्र्यावृत्ता ममला	२१४
ततः समानिका	२७७		
ततः साधारणमतं	२८८		
ततः स्मरपृष्ठं	२७५	दहनगणनियम-	२३
तत्र षष्ठावती	२७४	दहननमिह	७२, ७५
तत्र नात्रावृत्त-	२७३	दहनपितामह-	४
तत्र श्चीनामकं	२७६	दहनमित्त	७८
तत्रैवान्तेऽधिके	१६६	दत्त्या पूर्वपुगाङ्कान्	६
तस्याक्षरकृत-	१७४	दत्त्वोद्दिष्टवद्	६
तथा नानापुराणेषु	१६४	दद्यात् पूर्वं	५
तथा प्रकरणं चात्र	२७५	दद्यादङ्कान् पूर्वं	७
तदेव यतिभेदेन	२८४	दिव्यानन्द सर्व-	२८४
तद्वि बंदभं-	२०७	दीर्घवृत्तिकठोरा-	२०७
तनो तु पठितौ	२६२	दीर्घः संयुक्तपरः	१
तपोः फलं च	२७३	दुस्थीमृतमिर्मं	२६०

ग्रन्थ नाम	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ नाम	पृष्ठ संख्या
वेहि भमिह	१३२	धीरधीरादिसंबुद्धघा	२६६
बोहाचरणचतुष्टयं	३१	धेहि भ्रमरं	१०१
बोयानिमान-	२६	धेहि भ्रकारमत्र	१३३
द्वादशाहंकला	२११	धेहि भरणं	११७, १२४
द्विकलपुदशक-	१८३	ध्वजचिह्नचिर-	३
द्विगारादिश्च	२११		
द्विगुणानङ्कान्	५		
द्विजकरवलय-	१२०	न	
द्विजजातिशिलर-	४	नलमुनिपरिमित-	६
द्विजपरिकल्पिता	११५, ११७	नगणकृता	७४
द्विजमनुकलय	६७	नगणनरेन्द्र-	७४
द्विजमिह धारय	६६	नगणपक्षि-	७५
द्विजरसयुता	१३७	नगणमिह	६६
द्विजवरगण-	६८, ८७	नगणयकार-	७०
द्विजवरगणमिह	१५२	नगणयुग-	६६
द्विजवरनरेन्द्र-	७१	नगणयुगल-	७१, ७२
द्विजवरमत्र	१३१	नगणयुगला	१८४, २५५
द्विजवरमिह	६१	नगणयुगलं	६५
द्विजवरयुगल-	१५	नगणसगणा-	६८
द्विजवरसगणी	१०२, ११०	नगणसगणैः	१३३
द्विजविलसिता	१३६	नगणेषु पञ्चभि-	२६४
द्वितीयलक्ष्यान्य-	१६७	नन्दो भद्रः शिवः	१२
द्वितीयपञ्चौ	२४७	नमनुकलय	६०
द्वितीयाष्टय त्रिभङ्गी	२८६	नमिह कुश	६३
द्वितीये खण्डके	२८५	नपुंसं च हस्त-	१६३
द्वितीयो मधुरः	२२६	नराचमिति	२८२
द्वितीयो मधुरो	२४५	नरेन्द्रवर्जिता	२७०
द्वितीयं समपूर्वं	२७५	नरेन्द्रविराजि	६०
द्वितीयो मधुरि-	२१३	नर्तनं तु ततः	२८८
द्विपादिका च	२१६	नवजलधिकल-	३४
द्विलकृति	५८	नष्टे पृष्ठे भागः	६
द्विचिधं नलिना-	२८७	नष्टोद्दिष्टं यद्वन्	८
		नसौ जनी जलौ	२५२
		नागाधीशप्रोक्तं	६३
		नानाविधानि गद्यानि	२८७
		नाममात्रे परं	२७८

वृत्त नाम	पृष्ठ सख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ सख्या
नित्यं प्राक्पद-	२०१	पिङ्गले जपदेवश्च	२०४
निष्कामतुच्छीकृत-	२६०	पितृचरणैरिह	१८५
नूपुरमुच्चैः	८६	पुनरेंद्रार्धप-	४
नूपुररसना-	३	पुष्पिताप्रा भवेत्	२८६
नेत्रोक्ताः भाः	७०	पूरयेत् पृष्ठ-	७
		पूर्वक्षण्डे पडेवात्र	२८६
प		पूर्ववदेव हि	३०
पक्षिभासि	६१	पूर्वन्तिवत्	२०१
पक्षिराजद्वय	६४	पूर्वाद्धि च पराद्धि	११
पक्षिराजनगणौ	१२७	पूर्वं कथिता	५४
पक्षिराजभूर्वाति-	१२१	पूर्वं कर्णत्रितय	१४३
पक्षिराजभासिता	६६	पूर्वं गलितकं	२७५
पक्षिराजमयन	६१	पूर्वं द्वितीयचरणे	५४
पञ्चम तु प्रकरण	२७५	पूर्वं पादे मगणेन	७७
पञ्चम तु यत्र	२८६	पूर्वं म स्यात्	८५
पञ्चम लघु	१६४	पृथिवीजल-	४
पञ्चपष्टपधिक	१७६	पृष्ठे षण्णन्दसि	७
पञ्चालश्च मृगेन्द्रश्च	२७६	प्रकीर्णकप्रकरण	२८५
पदचतुर्ध्वं	१६४	प्रतिपक्ष परिधर्मौ	२१
पददुष्टौ भवेत्	२५	प्रतिपदमिह	१५१
पदे जेद् रगणः	२६८	प्रतिपाद तयो-	२७८
पयोधरविरा-	१३५	प्रथमत इह	१८२
पयोधरे कुसुमित-	१०८	प्रथमद्वितीय-	३५
पयोधर कुण्डल-	८०	प्रथमनकार	६४
पयोधरं हार-	६३	प्रथममिह दशसु	३२
पयोनिधिभूपति-	६०	प्रथमा करभौ	२६
परस्पर चैतयो-	२७८	प्रथमायामाद्यादीन्	७
पाह्मता पिङ्गले	२७८	प्रथमे द्वादशमात्रा	६
पाण्डुत्पल ततश्च	२८८	प्रथमे द्वितीय-	७
पादयुग कुट्ट	१७३	प्रथम कर	१२६
पावे द्वित वेहि	६४	प्रथम कलय	१३४
पादे यत्पनुरोधात्	२१	प्रथम कुट्ट टगर्भ	४६
पादे या म प्रोक्ता	५६	प्रथम बगसु	१६, ४२
पादेषु तो	६०	प्रथम द्विजसहितं	४५
पिङ्गलकविकथिता	१६		

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
मधुरा भद्रये	२१८	यकारः प्रागस्ते	१५७
मधुरी वशमी	२२०	यति सर्वत्र-	२०१
मधुरी युग्म-	२३४	यतीना घटन	२८७
भग्यान घ तत	२७७	यत्कलङ्गस्तारो	५
मन्द्रकमेव हि	१६५	यत्र स्वेच्छा	१८६
मन्दाक्रान्ता वश-	२८२	यत्राष्टौ ङगणा	४२
मकटो लिख्यते	७	यथामतिर्यथा	१७६
मन्त्रिगुरुरादि-	४	यथा यथास्मिन्	२०
मात्राकृता भवे-	१८८	यदा लघुगुं ह	१०२, १५८
मात्राप्रस्तारे	३	यदा स्तो यकारो	६४
मात्रामेहरय	६	यदि दोहादलविरति-	३५
मात्रावृत्तान्युक्त-	५७	यदि योगङ्गण-	३१
मात्रोद्दिष्ट च	२७३	यदि रसलघु-	१८८
मात्मर्यमुत्सार्य	२८६	यदि रसविधु-	३७
मायावत्त ततस्तु	२८०	यदि वं लघु-	८६
मालाभिर्यमेव	५५	यदि स द्वितया-	६३
मित्रद्वयेन	५	यदि ह नद्रयानन्तर	१८४
मित्रारिभ्या	५	यदीन्द्रवशा	६४
मुग्धपूर्वकमेव	५५	यद्दोमण्डलचण्ड-	२६०
मुग्धमालागलितक	२७५	यद्यपि दीर्घं	२
मुग्धादिका तदुपगता	२८७	यद्युगमयो	१६१
मुग्धा प्रगल्भा	२१६	यस्मिन् कर्णो	६१
मुग्धाया भद्रये	२१८	यस्मिन् तकार	६२
मुग्ध मूढक्षरं	२०७	यस्मिन्नाष्टौ पाद	१२८
मुनिपक्षाम्भ्यां	६	यस्मिन्नाष्टौ पूर्व	१७१
मुनिवाणकला	८	यस्मिन्निन्द्रैः सख्याता	११३
मुनिरङ्गलनप्रं-	२८४	यस्मिन् पादे द्वादशन्ते	१०४
मुनिरसवेदै-	१४०	यस्मिन् विद्यमे	१६०
मोदक सुन्दरो	२७६	यस्मिन् वेदानां	८८
मोहो बली तत.	२१	यस्मिन् वृत्ते विकृ	१५५, १७६
		यस्मिन् वृत्ते पवित	१६०
		यस्मिन् वृत्ते रङ्गयन्ते	१२०
		यस्मिन् वृत्ते दृष्ट-	१६४
		यस्मिन् वृत्ते सावित्राः	१७४

य

वृत्त नाम	पृष्ठ सख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ सख्या
यस्य पावचतु-	१८८	रसजसधिकस-	३४
यस्य स्यात् प्रथमः	१८८	रसपदावर्ण-	१४
यस्या द्वितीयचरणे	१०, ११, १२	रसपरिमित-	१५६, १८५
यस्यादिवे मगण-	७१	रसबाणवेद-	२
यस्यामष्टौ पूर्व	१६४	रसभूमिवर्ण-	४६
यस्यामासो पद-	१००	रसमुनिरसचक्रः	२६०
यस्याश्चतुष्कल-	१६	रसरग्ध्रलवेदः	२८०
यस्यां शरघुभ	६५	रसलोचनमुद्रव-	२८५
यस्या पादे हारा	७६	रसलोचनसप्ताश्व-	१८०
यस्या प्रथमतृतीये	१४	रसविधुकलक-	२८
या चरणे कलाना	१६	रसाग्निपञ्चेषु	२८२
याते दिव सुतनये	२६१	रसिका हसो रेखा	१६
या विशत्यधिक-	१८	रसेन्दुप्रमिता-	२८१
युग्म्यां चक्षत्र	१६३	राजसेना तु वट्टी	२६
युग्मे भङ्गस्तनी	२५६	रुद्रसंख्याक्षरे	२७६
युञ्जोश्चतुर्व्यंती	१६४	रेफहकार-	२
युष्मान् पातु	१		
योगः सा थी	५७		
यो नानाविधमात्रा	१		
	र		
रगणजगण-	१८६	ल इरिति	५७
रगणनगण-	१६१	लक्षणविकलं	२
रचयत नगण-	११५	लक्ष्मीनायतनूजेन	२७२
रचय नकार-	१४६	लक्ष्मीनायमुभट्ट-	२६०
रचय नगणमिह-	१५५	लक्ष्मीश्रद्धिर्चुंष्टिः	६
रचय नगणं	१२५, १४२	लक्ष्यलक्षण-	१७६
रचय नभूवती	११८	लगो महीम्	५८
रचय नयुगल	११८, १८७	रघुगुरुवर्ण-	३६
रचय प्रथम पद	१७	लघुः पूर्वमन्ते	८८
रङ्गाप्रकरण चंद	२७४	लीलाखिलमथो	२८१
रङ्गसुगंधिव-	५६, २७५	लीलाचन्द्रस्ततश्च	२८३
रङ्गर्भं मुनिभि.	४१	लीला मान्दीमुखी	२८१
रन्ध्या विरुदावह्या	२६७		
रविकरपञ्चपति-	२७३		
		ल	
		लक्षणविकलं	२
		लक्ष्मीनायतनूजेन	२७२
		लक्ष्मीनायमुभट्ट-	२६०
		लक्ष्मीश्रद्धिर्चुंष्टिः	६
		लक्ष्यलक्षण-	१७६
		लगो महीम्	५८
		रघुगुरुवर्ण-	३६
		लघुः पूर्वमन्ते	८८
		लीलाखिलमथो	२८१
		लीलाचन्द्रस्ततश्च	२८३
		लीला मान्दीमुखी	२८१
		ख	
		खक्र ली ख	५८
		खन्दे धलयद्वय-	८६
		खण्डेदरय	६

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
वर्णभेदवच	२७३	विषमपदैः	१६६
वर्णवृत्तगणानां	२७३	विषमे पदैषु	३०
वर्णादीर्घा यस्मिन्	६४	विषमे यदि	१८६
वहलकी राजते	५६	विषमे यदि सौ	१८६, १६०
वसुपथपरि-	१३	विषमे रसमात्राः	१६६
वसुवेदज्ञानै-	२८४	विषमे रतसह्यकाः	१६६
वसुव्योमरस-	२८४	विषमेषु पञ्चदश-	३०
वसुमित लघु-	१७४	विषमेषु वेद-	२६
वसुपदपवित-	२६६	विषमे सञ्जी	१६१
वस्वष्टमेप्रश्रुति-	२८३	विषमोऽग्निविष्णु-	२६
वह्निं सख्याका मा	७३	विषम चेति	१८८
वाङ्मत्सेव हि	१६१	विषम शरविष्णु-	२८
वाङ्मय द्विविध	२०७	विहाय प्रथमा	२६१
वाणिनीवृत्तामा-	२८२	वीणाविराट्-	४
वातरकच्छी	१४	वृत्तबन्धोऽभिहत	२१०
वारणजङ्गमशरभा-	२३	वृत्तानुक्रमणो	२७६
विलिप्ति कागलितक	२७५	वृत्तो यस्मिन्प्रगटी	१३५
विजयबलिकर्ण-	२३	वृत्त प्रभेदो	८
विजोहेशपन्थतः	२७७	वृत्तां भेदो मात्रा	७
विदाघपूर्वा	२५६	वृत्त्यंकदेश-	२०७
विदाघपूर्वा सम्पूर्णा	२८८	वेदग्रहेणुषेद-	२८४
विदाघे तुरगे	२१३	वेदद्वयपरिवर्चित-	३७
विधिप्रहरण-	४	वेदपञ्चेषु वह्नि-	२८५
विधेहि ज	६१	वेदभकार-	१२६
विनिषाय करं	१७२	वेदयुग्मगुरुन्	२३
विपरीतस्थित-	५३	वेदविभावित	६०
विरचय विप्र	६८	वेदनास्त्रयसु-	२८५
विद्यदावली प्रकरण	२८७	वेदध्यायवनी-	२८३
विद्यदेन सम	२३७	वेद्यन्ने सप्तमः	५३२
विद्यदेनाग्निता	२५८	वेदसुसम्मित-	१५६
विसोकनीया	८१	वेदः पिपीडिका	१८१
विश्वरुद्रत सप्तसप्त	२७२	वेतालीय प्रकरण	२८७
विषम इह पदे	१८६	वेतालीय प्रथम-	२८६
विषमसरणेषु	२८	वेनतेयो यदा	७०

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
श			
शक्र शम्भु	२१	षट्पदवृत्त कलय	२३
शत्रुदासीनाभ्या	५	षट्पदवृत्त द्वाभ्या	२०
शब्दरूपपरस-	४	षट्पद च तत	२७४
शम्भो मुनिन्दिनी	२५०	षट्सप्त्याता हारा	१६३
शरकल पञ्च-	५०	षष्ठभङ्गा	२१४
शरपरिमित-	१३४	षष्ठभङ्गा वरतनु-	२१५
शरमितङ्गणं	५३	षष्ठे भङ्गश्च	२४३
शरवेदमिता	२१	षडक्षरेऽपि पूर्व	२७७
शरेण कुण्डलेन	७६	षडष्टदशमा धीर्षा	२३१
शरेण नूपुरेण	१२६	षडभिरप्यधिके	२८५
शरंस्तथा च	६८	षड्विंशति सप्त-	८, १८०
शरोदितकलो	२३	षोडशानं पद	२५२
शर हारयुग्म	१०६	स	
शल्यो नवरङ्ग-	२४	सखि नवमालिनी	१०३
शशीति सप्तका	१२	सखि यत्र रन्ध्र	१८६
शशिवृत्त-	५६	सगणाद्विजगण-	३८
शाङ्गूलकूर्मकोकिल-	२३	सगणाष्टक-	१७५
शिरो दीर्घद् गङ्गा	५७	सगणाहिता	६२
मुद्धर्वतालीयस्य	१६७	सगणभंगणं-	३५
शुभ धेति समा-	२७६	सगण मुदा	७१
धीचन्द्रशेखरकृते	५६, २६०	सगण विधाय	७३
श्रीमत्पिङ्गलनागोक्त-	१	सगण विधेहि	७२, ११०
धीलक्ष्मिनाय भट्टस्य	१	सजसा लघु	१६२
धीवृत्तमौक्तिक-	२६१	सप्तचतुष्कल-	३७
दिलष्टसदिलष्ट-	२१६	सप्तजगणा-	१७०
दिलष्टा सरैफ-	२१६	सप्तभकार-	४७
दिलष्टी तुर्याष्टमी	२२०	सप्तपिमुनि-	२८५
दिलष्टी द्विपञ्चमी	२२८	सप्तहरय	६
घ		समगलितक	५३
घट्टकलविरचित	५५	समचरण-	१६७
घट्टकल प्रथम-	५१	समपवती	६
घट्टत्रिपञ्चमका	२३२	समुद्वेन्द्रिय-	२०१
		सम तत्र भया	१८८
		सम्यगसम्यग्	५

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
संश्लिष्टा दीर्घ-	२३२	सुन्दरिकाय	१६८
संस्कृत-प्राकृत-	२६६	सुप्रिमपरमो	३
सरसकविजना-	१०३	सुरतलिता	३
सरससुरूप-	६६	सुरूपं स्वर्णाद्विष	१३६
सर्वगुर्वादि-	१७६	सुरूपोद्भवं कर्णं	१५३
सर्वत्र पञ्चमं	६६	सुसुगन्धपुष्प-	६१
सर्वत्रैवं स्वल्प-	२७६	सूचनीयाः कवि-	२८४
सर्वदोषे	२२१	सोदाहरणमेतायद्	५६
सर्वस्या गाथायाः	६	सोरद्वाराह्य तत्तु	३५
सर्वान्तरं नयतात्	२८०	स्तुतिविधीयते	२६१
सर्वे ङगणा प्ररिता	२७	स्फुटतरमेते	१४
सर्वे धर्मा दीर्घा	६७	स्यात् सुभालतिका	२७७
सर्वैरङ्गः सम.	२६	स्वरोपस्थापिता	२४३
सलक्षणा सप्रभेदा	२७४	स्वर्णशब्दबलय	८४
सलघुगनिगम-	१६६	स्वेच्छया तु कला	२६०
सलिलनिधि-	१४६		
सर्वयाद्य प्रकरण	२७५	हृठात्कृष्टाक्षरं.	२६
सहचरि चैत्रजो	१६६	हरशानिसूर्याः	३
सहचरि नो यदा	१६२	हरिणानन्तर	२८६
सहचरि रविहृष-	१६७	हरिगीत ततः	२७५
सहचरि विक्रम-	१७६	हलायुधे	१६४
सहस्रेण मुखेनैतद्	२७१	ह शोसरा.	२१६
सा चेत कवर्ण-	२३५	हारद्वय मेद-	८०
सात्त्विकभावा	३	हारद्वय स्फुरद्	११३
साधारणमत	२६०	हारद्वयाचित-	१०१
सितकञ्ज तथा	२३७	हारपुष्पसुन्दर	१५६
सिद्धिबुद्धिः करतल-	२३	हारभूषितकुशा	८४
सिद्धावलोकित	२७४	हारमेदज-	१३०, १४१
सुसुमारमतोना	२७१	हारमेदमत्र	६८
सुजातिप्रतिभा-	१७६	हारो इत्या स्वर्ण-	१०४
सुगन्धु सुवति	१७६, १७१, १७६	ह्याप्ययोभवं.	२१६
सुवर्त विपेहि	१६६		

(ख.) उदाहरण-पद्यानुक्रम

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
अ		अभ्याजतोभ्यागत- (टि.)	६६
अकुण्ठधार	१२६	अभ्रमुपतिमद-	२२३
अङ्गण-रिङ्गण	२६०	अमलकमल-	२२०
अच्युत जय जय	२६२	अम्बरगतसुर-	२४१
अजजंरपतिश्रता	२२६	अम्बाविनिहत	२२२
अणिसविसुमरणि (ग.)	२१०	अम्बुजकिरण-	२४३
अतिचटुलचन्द्रिका-	११	अम्बुजकुटुम्ब-	२४२
अतिमत्तदेधा-	२१४	अयममृतमरीचि-	१२१
अतिभारतरं	१०६	अयमिह पुरः	१४२
अतिरुचिदशनैः	११५	अयि मानिनि	१६०
अतिशयमञ्चति	२१७	अयि मुञ्च मान-	१५६
अतिशयमधि-	२१७	अयि विजहीहि (टि.)	१००
अतिगुरभि-	६८	अयि सहचरि	१२४, १५५
अथ तस्य विवाह-	१६०	अरिगणमभि-	१६
अथ वासवस्य	१६२	अरे रे कथय	२
अथ स विषय-	१३८	अलमीशपावक-	१५६
अथ सालताल-	१५६	अलिमालित-	८६
अनङ्गवर्जन	२३४	अवञ्चकमनिन्दितं	१६८
अनन्तरत्न- (टि.)	८३	अथतसितमञ्जु-	२३७
अनवरतं	१३१	अवनतमुनिगण	१६७
अनिष्टलण्डन	२२४	अवाचकमनु-	१६८
अनुदिनमनुरक्तः	२२५	अविकलतारा-	२१५
अनुपमगुण-	१५६	अशुभमपहरतु	६१
अनुपमयमुना-	७२	असितवसन-	१४६
अनुपहृतं	१५१	असुरयम	६३
अनुभूयविक्रमं	२५०	असुलभा शर-	६१
अनुलवपूर्व्याया	१४०	अस्त्युत्तरस्यां (टि.)	८३
अनेन नयता	१३५	अस्या वयत्राञ्ज-	२०३
अभजव् भयादिव	६१	अहिपवलय	६०
अभिनयजलधर-	२०	अहृत धनेश्वर- (टि.)	१४७
अभिनयजल-	११३	आ	
		आनन्दकारी	६२

वृत्त नाम	पृष्ठ सख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ सख्या
भावद्वन्द्व-	२३२	एतस्या राजति	२०२
भ्रालि याहि मञ्जु-	१३०	एव यथा ययो-	२०४
भ्रालि रासजात-	१३०		
भ्रालोक्य वेदस्य	८०		
		क	
इ		कठोरठाकृति-	१२६
इन्द्राय देवेन्द्रं	१२८	कण्ठे राजद्	६७
इह कलयालि	१०३	कति सन्ति न	१७२, १६८
इह खलु विषम	१८६	कनकवलय-	१७१
इह दुरधिगमं.	१०६	कन्दर्पकोदण्ड-	२४०
इह हि भवति	१८४	कपटरदितनटद-	२६५
		कपोलकण्ठु (टि.)	८२
उ		कमनीयवपु	६३
उचितं पशुपत्य-	२२६	कमलमिबचन्द्र (ग.)	२०८
उत्तुङ्गोदयभृङ्ग-	२३७	कमलवदन-	२७२
उत्कुलाम्भोज- (टि.)	१८२	कमलाकरलातित-	३७
उदञ्चत्कावेरी	१५३	कमलापति	५४
उदञ्चदतिमञ्जु-	२५८	कमलेषु सलुलि-	७१
उदयददं दिवाकर-	६०	कमल ललिता-	६६
उद्गीर्णतारुष्य	२२६	कम्पायमाना	६४
उद्यद्विद्युत्पु ति-	२२५	कसकाल	५८
उद्भिक्ततर-	२३०	कसादीनां बाल	६३
उद्भेजयत्यगुलि- (टि.)	८२	करकलितवपाल	४५
उद्भेलत्कुलजा	२५७	करमुगधृतवश-	३२
उन्दितहृदमेन्दु-	२३५	करमुगधृतवशी	३१
उन्मीलम्भकर-	१५१	कणिकारकृत	२३६
उन्मीलनील-	२०२	कर्षे कल्पितकर्णिक	२६४
उपगत इह	१५२	कलकोविल-	१२२
उपवनमध्या-	११	कलकवणितवशिय	२६८
उपहितपशुपाली-	२५६	कलपरिमल	१०२
उरसि कृतमात	३६	कलयत हृदये	१०६, ११०
उरसि विलसिता	४०, ४१	कलयति चेतसि	६६
		करुय दशमुत्तारि	१२७
ए		कलय भाय	७५
एवत्यरोप-	२०६	कलय सति	१०३
एतस्या गण्डमण्डल-	२०२	कलय हृदये	१११

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
कलशीगतदधि-	११	कृष्ण प्रणौमि	१५८
कलापिनं निज-	१०८	केल रङ्गा	२१८
कलिततलित-	७२	केपिद्वेयिप्रसुद्वच	१६१
कलुषशमन	१७६	कोकिलकलरथ-	११४
कलुषहर	६३	कोकिलाकल-	१४४
कल्पपादप-	१४४	कौमलसुललित-	१०७
कल्पान्तप्रोद्यद्	१०४	कोण्डीकृत्य	२०५
कस्य तनुर्भुञ्जस्य	३७	कवचिच्छन्दस्यास्ते	२०६
काञ्चनाभ-	१६१	क्षणमात्रमति-	३८
काननारव्य-	२२६	क्षणमुपविश	३५
कानने भाति	७०	क्षितिबिजिति-	७५
कामिनि मुषने	१३२	क्षीरनीरविवेक-	२१२
कामिनीकलित	२११		
कालक्रमेणाय (टि.)	८२	ख	
कालिन्दीकूलो	१२६	खाचितालण्डलो (ग.)	२५६
कालीन्दीये तट-	१३०	खञ्जनवर- (टि.)	४३
कालियकुल-	५५	खर्कोशनिपूदन	३७
काशीक्षेत्रे गंगा-	१६४	खलिनीदुम्बक	२२५
कासकंलास- (टि.)	३३		
किं ब्रूय रे (टि.)	६७	ग	
कुकुमपुण्ड्रक	२२१	गञ्जितपरवीर	२३१
कुञ्चितकेशी	१६७	गतोऽहमवलोकिता (ग.)	२०६
कुञ्चितवञ्चल-	३६	गर्भप्रिय जय	२५३
कुन्ददशन	२२७	गर्भेति जलधर	१८
कुन्दमुन्दर-	१४५	गर्वावलिभासुर	४६
कुम्पतिभासि	१६७	गलकृतमस्तक-	३५
कुमारपञ्चिच्छेन	२७१	गाङ्गं वन्यं परि-	२७
कुमुदवनीपु	११०	गिरितटीकुन्दो-	२३५
कुसुमजिकर-	१७४, २५३	गिरिराजमुता	४८, १७२, १७६
कूजत्कोपटि-	२०२	गोवर्षाणं स्फुट-	२५८
कूर्मो निरय मां	८८	गुञ्जाकृतमूषण	३६
कूर्मः शमव्यान्	६३	गुणरत्नसागर (ग.)	२१०
कृष्णपदारविन्द-	१६६	गुदर्वचसि	२१०
कृष्णं कलये	८६		

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
गोत्रुलमारी	६, ८६	चन्दनचचित	२३०
गो गोपालानां	७३	चन्द्रकचित-	५४
गोपतरुणी-	१२४	चन्द्रकचार-	४७, १७०
गोपवधूमयूर-	१३३	चन्द्रमुखि	१२४
गोपवधूमुला-	१३३	चन्द्रमुखीसुन्दर-	१७३
गोपस्त्रीविद्युदा-	२६४	चन्द्रवदनकुन्द-	४३
गोपालानां रचित-	७१	चन्द्रवर्त्मपिहितं	६२
गोपालं कलये	८६, ११६	चन्द्राकौं ते राम	७७
गोपालं कृतरासं	६७	चमूप्रभुं मन्मथ (टि.)	६५
गोपालं केलिलोतं	१५४	चरणचलनहृत-	२६४
गोपिकामानसे	६४	चरणं शरणं भवतु	३१
गोपिके तय	८४	चतत्कुन्तलं	८८
गोपिकोदूसंध-	६१	चादयो न	२०५
गोपीचित्ताकर्म	६१	चाहकुण्डल-	१६६
गोपीजनचितो	७४	चाहट	२५६
गोपीजनवल-	१८३	चित्रं मुरारे	२५५
गोपीयु केलिरस-	१०१	चिरमिह भानसे	१२६
गोपीः संभूतचापल-	२४४	चूतनवपल्लव- (टि.)	३३
गोपं चन्दे गोपिका-	७८	चेतसि कृष्ण	१०२
गोबन्दे सञ्चारी	५८	चेतसि पादपुगं	१५६
गोडं पिष्टात्रं (टि.)	१४६	चेत स्मरमहितं	१८
गौरीकृतदेहं	१००		
गौरीवर भस्म-	२	छ	
गौरीविरचित-	१४	छदसामपि	२६८
प्रथम कमल-	८७		
प्रह्लिहृदयो	१३८	ज	
		जगतीसभाव-	२५४
घ		जनकुलपानं (टि.)	५६
घुणंघ्रे प्रान्ते	१४६	जन्तितेन मिश्र-	१०६
		जम्भारारति-	२१५
च		जम्भारारतीभकुम्भो-	२०३
चञ्चलकुन्तल	६०	जय कचचञ्चद्	२३८
चण्डमुजदण्ड- (टि.)	३३	जय गतशङ्कु	२३६
चण्डीपतिप्रवण-	२१४	जय घाददाम	२३५
चण्डीप्रियमत	२५७	जय घादहास	२३३
चतुरिमचञ्चद्	२१६	जय जय जगदीश	१८५

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
जय जय जनार्दन (ग)	२०६	तरलनयन-	७१
जय जय जम्भारि	२७०	तरलयति	१६०
जय जय जह्यु- (टि)	१४०	तरुणविभूषित	७७
जय जय दण्डप्रिय	२३६	तय कुसुमनिभ	१०४
जय जय मन्दकुमार	२३	तय कृष्णकेलिमुरली	२४८
जय जय निरुपम	१६३	तय चरणाम्बुज-	२४४
जय जय यदुकुला	१८५	तय तन्वि कटाक्ष	१६६
जय जय रघु-	१४२	तय धर्मराज	१६२
जय जय वशी-	२४८	तय मुरलीध्वनि	२२३
जय जय वीर	२११, २२१	तय यशसा	१४६
जय जय हन्त	२४०	तारादाराधिक	२१८
जय जय हर	१५	तारापतिमुख	२६०
जय जलदमण्डली	२५२	ताराहारानत	२१८
जयति करुणा-	१२५	तुङ्गपीवर-	१६६
जयति प्रदीपित-	२	तुरगदनुमुता	२५२
जय नीपायलीवास	२७०	तुरगशताकुल (टि)	१६२
जय मायामानव	१५३	तुष्टेनाय द्विजेन	१६०
जय रससम्पद	२४२	ते राजस्रति-	१५०
जय लीलासुधा	२७०	तो भो जरी	१०१
जय वशीरवो	२६८	त्रपितहृदय	३४
जय जय सुन्दर	२४६	त्रिजगति जयिन	१४६
जयो भरत	१६६	त्वमत्र घण्डामुर-	२४६
जलधरदान	२८	त्वमुपेन्द्रकलिम्ब	२४०
जलधरधाम- (टि)	४०	त्व जय केशव	२५०
जलमिह कलय	१५२		
जानकि नैव	१३६		
जैनप्रोवतानां	१५०		
ज्ञान यस्य ममा	१५१		
		द	
		दण्डादेशा	२१६
		दण्डितचटुल	२५६
		दण्डीकुण्डलिभोग-	२४०
		दनुजवधूर्ध्वव्य-	२५३
		दम्भारम्भामित	२१५
		दलदलिसहकार (घ)	२०७
		दलितशकट	२१२
		दहनगतमल	१२८
		दाडिनीकुमुम	१६१
तडिल्लोलसंधै	१३१		
तनुभारिनिना	१२३		
तरणिजापुलिने	६३		
तरणितनूबा	११		
तरणिकुता	१४७		

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
दानवघटालवित्रे	२४६	न	
दिवपालाद्यत-	२०३	न कस्य चेतः	२००
दितिभ्रातृन	२२०	नखगलदसुजा	११७
दितिमुत्कदन	६७	न जामदग्न्यः (टि.)	६६
दितिमुत्तितवहः	१६	नन्दकुमार.	६२, ६०
दिवाकराद् (टि.)	८३	नन्दकुलचन्द्र	२४७
दिविपद्वन्द-	२०५	नन्दनन्दनमेव	५५
दिद्यमुगीतिभिः	१६५	नन्दयिचुम्बित-	२५६
दिव्ये दण्डपरस्वमु-	२४२	नभसि समुद-	१२३
दिशि दिशि परि-	१८८	नमत सतत	१११
दिशि दिशि विलसति	२८	नमत सदा जन	१६२
दिशि स्फारीभूतः	१३६	नमस्तुङ्गशिरो-	२०२
दीप्यद् देवानां	१५४	नमस्थामि	२०१
दुबलं विभ्राणो	१३७	नमामि पञ्चजाननं	५२
दुःखं मे प्रक्षिपति	२०४	नमोऽस्तु ते	१६७
दुर्जनभोजेन्द्रकण्ट- (ग.)	२५६	नयनमनोरम	१६६
दुर्जयपरबल-	२२२	नयनमनोहर	१६३
दुष्टदुर्दमारिष्ट- (ग.)	२५६	नरर्षिरपु-	१२४
दूराहटः प्रमोद	२०४	नरपतिसमूह-	१३३
दुशा द्राघी यस्या	१३७	नरवरपते	१२५
दुष्टमस्ति धामुदेव	१५७	नत्तितशवर्कर-	२२८
दुष्ट्या ते पदनस	२२२	नवकोकिला- (टि.)	४०
देवकूमिति	६२	नवगतद-	६६
देव देव धामुदेव	१५६	नयनीत्तरं	१८६
देवाधीना-	२१६	नयनीत्तचोर	११०
देवयन्त्रं प्रलोभया-	१२०	नवनौरद-	१८६
		नवबकुलवन-	२५१
घ		नयमञ्जुलपञ्जुल-	१२३
घुनोति मनो भम	४८, १७०	नवदिलिदिलक्षण-	१५१
घृतामुराधीश	६४	नवसन्ध्यावह्नि-	१५२
घृतपोषडंन	२२३	नवीननलिनो-	६७
घृतिमधपारय	४१	नवीनमेघमुन्दरं	१५८
घृतोन्साहपुराद्	२६१	नव्ये शालिन्दीये	१७१
घ्यानैकाग्र	१७७	न स्याद् विभक्ति-	२०५

दृष्ट नाम	पृष्ठ संख्या	दृष्ट नाम	पृष्ठ संख्या
प्रिय प्रतिस्फुरत	२०४	मन इव रमणीना	१२१
प्रेमोद्भवेत्लितवल्गु-	२४३	मनमानसपथि	३२
प्रेमोद्भट्टहिण्डक	२६४	मनसिञ्जल्पा-	२१४
श्रीहृष्यान्ते	१४३ १६४	मनाकप्रसूत	२००
	फ	मन्दाकिनीपुलिन	१६७
कुल्लपङ्कजानन	६६	मन्दापते न खतु	२०४
	ब	मन्वहाणविरा-	१४४
बन्धनीति हृदय	१२७	मम दह्यते	७२
बती बलाराति (टि)	६७	मम सधुमयन	११५
बाणालोहत	२१५	मलयजसारा-	२३२
बुद्धीना परिमोहन	२२८	मल्लिकानय (टि)	४०
ब्रह्मभवादिव-	५२	मल्लिमातती	५०
ब्रह्मा ब्रह्माण्डभाण्डे	२२२	मल्लिकते मलिन	१७३
	भ	महाचमूना (टि)	६५
भयपुतचित्तो	६६	मा कान्ते पक्ष्म (टि)	१२०
भवच्छेदे दक्ष	१५४	मा कुप मान	१७३
भवजलधितारिणि	५०	मा कुद मानिनि	१६५
भवत प्रताप	२४६	माघविद्युदिव	४८
भवन्नमिष	१२१	माघयमाति	७४
भवबाधगृहरण	१६	माघविद्युदिव	१७८
भव्याभि केकाभि	७०	माघविद्युदिव	२५२
भालधिराजित-	४७	माघवतीमदहारि-	२४१
मिबुरमानस-	६२	मानसमिह मम	३२
भुजगपरिवारित	४१	मानिनि मान-	१६२
भुजङ्गरिपुचन्द्र	२२३	मायापीनोन्वतु	७७
भुजगुगत	११६	मित्रकुलोदित	२६२
भुवनत्रय	२३१	मुकुटविराजित-	२०
भ्रमोभागो	२१२	मुखन्तवेणाक्षि-	८१
भ्रमन्ती धनु-	१४५	मुलाग्भोज	१६३
भ्रमण्डलताण्डवित	२३६	मुण्डानां माला-	६५
	म	मुवा विलोलपौलि-	१०२
मतिभव	५८	मुदे नोज्तु	५६
मदनरसगत	२३६	मुनोन्मा पतन्ति	१४५
मपुरेय मापुरी	२६२	मृगयणबाहके	१३२

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
	घ		
यक्षश्चक्रे जनक-	२०२	रतिमनुबन्ध	२३०
यतिभङ्गो नाम	२०५	रत्नसानुशरारसनं	१४५
यतिजिह्वेष्ट-	२०६	रमाकान्तं बन्धे	१५७
यत्र घ नाधिकानां (ग.)	२०८	रमापते	५८
यत्राञ्जुकाक्षेप- (टि.)	८४	रसनमुखर	२६५
यदा कंसादीनां	१३६	रसपरिपाटी	२४७
यद्गन्ते विलसति-	१०७	राकाचन्द्रादधिक-	२०३
यद्वेणुविराव-	१६०	राजति वंशीरुत-	५३
यमुनाजलकेलिपु	३६	राधामाधायैनां	१६३
यमुनातटे	१६३	राधामुखाञ्जतरणिः	१२
यमुनाविहार-	१६१	राधामुखकारी	६५
यश्चाप्सरो (टि.)	८३	राधिकाराणि	५६
यस्मै परिध्वस्त-	२६१	राधिके विलोक-	१८६
यस्योज्वलाङ्गस्य	२६१	रामातरुणिमोहामा-	२०३
या कपिलाक्षी	१७५	रावणादिमानपूर-	४६
या तरलाक्षी	१७५	रासकेलिरसो-	१४४
या पीनाङ्गोरु-	१५८	रासकेलिसतृष्ण-	१६४
यामिनीमधि-	८४	रासक्रीडासक्त-	१०५
यामुने संकते	१८६	रासललितलास (टि.)	४३
युद्धकुट-	२२५	रासलास्यगोप-	१२२
यैः स्रष्टवानेक-	१७७	रासोल्लासे	१७२
यो दैत्यानामिन्द्र	११३	रिङ्गदुर्भुङ्ग	२४६
यं सर्वशंलाः (टि.)	८३	रुचिरवेणु-	५१
यः पूरयन् (टि.)	८२	रुन्दोऽमन्दः (टि.)	१८२
यः स्थिरकरुणः	२६१	रूपविनिर्जितमार	३५
	र		रु
रगरक्त-	२१३	रुक्मण विशि विशि	१८
रङ्गस्यले ताण्डव-	२४८	रुलितललित-	७५
रघुपतिरपि (टि.)	१४७	रुसदरुणेशण	१४०
रचय कदलीदल-	४०	रुलीनानृत्यन्मत्त-	१०५
रञ्जितनारी-	२३३	रुलीनारव्य- (टि.)	१०५
रणति हरे तव	२२१	रुलितनलिना-	७१
रणभुवि धञ्चति	२१७	रुलीके रुवदीय यशसा	११४
		रुलीक्रीकृतमणि-	२५६

वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या	वृत्त नाम	पृष्ठ संख्या
वेदरन्ध्रं म्ती	१०५	श्रीमद् राजन्	१४८
वैरिञ्चाना तयो-	२०२	श्रीमन्नारायण	१५७
ध्वपगतघन- (ग.)	२१०	श्रीमर्मिध्यात्	५७
ध्यालकालमालिका-	७९	श्रुत्येति याचं (टि.)	९५
प्रजजननागरी	११९	श्रेयांसि बहुविघ्नानि	२०४
प्रजजनपुत	६५	स	
प्रजनायिका	७३	सफलतनुभूता	११८
प्रजपृथुयल्ली	२४३	सखि गोकुले	६२
प्रजभुयि रचित-	३६	सखि गोपवेश-	७३
प्रजभुविबिलास	६६	सखि चातकजीवातुः	२५४
प्रजपुवतिभिः	११६	सखि नन्दकुमारं	१६८
प्रजघधुजन-	१०१	सखि नन्दमुतं	१८६, १८९
प्रजविहरण-	६८	सखि नन्दसूनु-	११९
प्रजमुन्दरी	१९३	सखि पङ्कजनेत्र	१६८
प्रजाधिपकिशोरं	६६	सखि बन्धनीति	४२
प्रजाधिपबाल	६५	सखि मनसो मम	७४
प्रजे रासकारी	६४	सखि मम पुरतो	९८
श		सखि मे भविता	५९
शम कुह	५७	सखि सम्प्रति कं	१२२
शम्भो जय प्रण-	१६६	सखि हरिरायरनि	७०
शिरसि निवसिता	५३	सघनतिमिर-	१६६
शीतं पुष्परमिनब-	१००	सङ्गेन वो (टि.)	९५
शूल शूल तु गाढ	२०३	राड् प्रामसीमकण्डूल- (ग.)	२०८
शोषपतगेश (टि.)	३३	सड् प्रामारण्यचारी	१६०
शोषविरचितहार-	३८	स जयति मुरली-	१२
श देहि गोपेश	६०	स जयति हर	१८६
श्यामललोस-	७६	सञ्जलदरण-	२४५
श्रितमघजलधे	२५५	सञ्चितचक्र	२२६
श्रीकण्ठ त्रिपुर-	१७८	सत्य सद्बसु-	१०८
श्रीकृष्णेन श्रीडन्तीना	१६४	स त्व जय जय	२६२
श्रीकृष्ण भवभय-	१७८	सदाभिराम- (ग)	२०८
श्रीगोविन्दपदार-	१४९	सन्तुष्टे तिसुणां (टि.)	२०५
श्रीगोविद	१७७	सदीपितशर-	२१३
श्रीनन्दसूनो.	८९	सश्रीतद्वैतप-	२४८

चतुर्थ परिशिष्ट

क मात्रिक छन्दों के लक्षण एवं नाम-भेद

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची—

ग्रन्थ नाम	ग्रन्थकार
१ वृत्तमौक्तिक	चन्द्रशेखर भट्ट
२ छन्द सूत्र	पिङ्गल
३ नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत
४ बृहत्संहिता	बराहमिहिर
५ स्वयम्भूछन्द	स्वयम्भू
६ कविदर्पण	अज्ञात
७ वृत्तजातिसमुच्चय	कवि विरहाङ्क
८ सुवृत्ततिलक	क्षेमेन्द्र
९ प्राकृतपञ्जल	हरिहर (?)
१० छन्दोनुशासन	हेमचन्द्राचार्य
११ छन्दोनुशासन-स्वोपज्ञटीका	"
१२ वाणीभूषण	दानोदर
१३ वृत्तरत्नाकर	केदारभट्ट
१४ वृत्तरत्नाकर-नारायणटीका	नारायणभट्ट
१५ छन्दोमञ्जरी	गगादास
१६ वृत्तमुक्तावली	श्रीकृष्णभट्ट
१७. वाग्बल्लभ	दु सभञ्जन
१८ जयदेवच्छन्द	जयदेव
१९ छन्दोनुशासन	जयकीर्ति
२० रत्नमञ्जूषा	अज्ञात जैन कवि
२१ गायालक्षण	नन्दितादत्त
२२ छन्दोविचिति	जनाश्रय

संकेत— छन्दनाम = बराहमिहिर के क्रमानुसार है। मात्रासंख्या = छन्द के प्रत्येक चरण की मात्रायें। लक्षण = ट = ६ मात्रा, ठ = ५ मात्रा, ड = ४ मात्रा, ढ = ३ मात्रा, ए = २ मात्रा, ग = दो मात्रा, ल = १ मात्रा। सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची = ऊपर सूचित सन्दर्भ ग्रन्थ सूची की क्रम-सूचक संख्या है। छन्द नाम एवं लक्षण के प्रागे के अंक यह सूचित करते हैं कि इन-इन अंकों के ग्रन्थों में भी यह छन्द इसी नाम से स्वीकृत है और नाम भेद के प्रागे के अंक यह सूचित करते हैं कि इन इन ग्रन्थों में इसी लक्षण का छन्द इस नाम से प्रचलित है। जिन छन्दों का इन ग्रन्थों में उल्लेख नहीं है उनके अंक यहाँ नहीं दिए गए हैं।

छन्द नाम	मात्रा सङ्ख्या एवं लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ सङ्कलनाङ्क
गाया	[१२ १८ १२ १५, ड ७ ग, इसमें छठा 'ड' जगन होता है या चार लघु होते हैं। इसके विषम गणों में अर्थात् १ ३ ५ ७ ड' म जगन निषिद्ध है। चतुर्थ चरण में छठा 'ड' केवल एक लघु होता है।]	१ ५ ६ ७, ९, १०, १२, १४ १६ १७ २१ आर्या- १० १४, १७ १८ १९ २०, २२
विगाया	[१२ १५ १२ १८]	१ ९ १२ १४ १६, १७ २१, उद्गीति- ५ ६ १०, १४ १७, १८ १९, २१
गाहू	[१२ १५ १२, १५]	१ ९ १४, गाथिका- १६, गाहू- २१ उपगीति- ५ ६ ७, १०, १२, १४, १७, १८ १९ २१
उदगाया	[१२ १८, १२ १८]	१, ९, १४ १६ १७ २१, गीति- ५, ६ ७ १० १२ १४, १७, १८ १९ २० २१ २२
गाहिनी	[१२ १८ १२ १०]	१, ९ १२ १४ २१, गाथिनी- १६, १७ ललिताबल्गुगीति- १४
सिंहिनी	[१२ २० १२ १८]	१ ९ १२ १४ १६ १७ ललिताबल्गु- गीति- १४
स्वर्गकर्म	[१२ २० १२ २०]	१ ५ ६ ७ ९ १० १२ १४ १६ १७ २१, आर्यागीति- १४ १७ १८ १९ २०
दोहा	[१३ ११ १३, ११ प्रथम और तृतीय चरण में ट ड ड और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में ट ड ल, अद्वयम]	१, ९ १० १२ १४, १७ दोहक- ६ द्विपद्या- १६ द्विपद्या- १७ द्विपद्यक- ७, एव ५ २१ के अनुसार मात्राएँ- १४ १२, १४ १२ ह।
रसिका	[११ षट्पदी ड ड ड]	१ ९ १७, रसिक- १६ उत्कृष्टा- १४, सुललित- १७ सुललितमति १२
रोला	[२४, चतुष्पत्नी]	१ ९ १२ १४ १६ १७
गंधानक	[१७ १८ १७ १८ वण अद्वयम]	१ ९, १२ १६ गंधा- १४ १७ के अनु सार १७ वण २० मात्रा १८ वण २४ मात्राएँ होती हैं।
चौपया	[३० चतुष्पदी षोडशपदी समप्रमात्रा ४८० ड-७ ग]	१, ९ १२ १७, चतुष्पदा- १४ चतुष्पदी- १६

छन्द-नाम	मात्रा-संख्या एव लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्कोचतादृक्
घता	[३१; द्विपदी; उ-७, ङ; 'ङ' मिलघुक होता है।]	१, ६, ९, १२, १४, १६, १७; ६ के अनुसार षट्पदी है, लक्षण भिन्न-भिन्न हैं— १२, ८, १३। ८, ८, ११। १०, ८, ११। १२, ८, ११। १२, ८, १२। १०, ८, १२। १०, ८, १३। १०, ८, १४। १०, ८, २२। ५ के अनुसार चतुष्पदी, लक्षण— ६, १४, ९, १४। १२, १२, १२, १२। १६, १६, १६, १६ है।
घतानन्द	[३१; ट. ड. ड. ड. ठ. ड. ड.]	१, ६, १२, १४, १७.
काव्यम्	[२४; चतुष्पदी; ट. ड. ड. ड. ट; तीसरा 'ङ' जगण हो या चार लघु हों।]	१, ६, १२, १४, १६; वस्तुवदन— ६.
जलालम्	[२८; चतुष्पदी; ड. ड. ड. ड. ट ड. ट]	१, ६, १२, १४, १६; कयूर— १०.
षट्पव	[२४, २४, २४, २४, २८, २८, मिश्रित षट्पदी; ट. ड. ड. ड. ड. ण; दो चरण जलाल के लक्षणानुसार]	१, ६, ९, १२, १४, १६, १७; वस्तुक— २१
पञ्चटिका	[१६; चतुष्पदी; ड-४; चौथा 'ङ' जगण होता है।]	१, ६, १२, १४, १६, १७; पद्धटिका— ५, १०, २१; पद्धटिका— ६.
अडिल्ला	[१६; चतुष्पदी; ड-४; इसमें जगण वजित है और चरण के अन्त में दो लघु होने चाहिए]	१, ५, ६, ७, ९, १०; अडिल्ला— १२; अडिल्लम्— १६, १७; अडिल्ला— १७; अडिल्लिह— १४.
पादाकुलकम्	[१६; चतुष्पदी; गणनियम-रहित]	१, ५, ६, ९, १२, १४, १६, १७, १८, १९, २२; १० के अनुसार १२ मात्रा चतुष्पदी होती है।
चीबोला	[१६, १४, १६ १४ अ०स०]	१, ६, चतुर्वचन— १६.
रड्डा	[१५, १२, १५, ११, १५, दोहा के चार चरण; नवपदी; प्रथम चरण में 'ड. ड. ड. ड.' अन्तिम 'ङ' जगण हो या चार	१, ५, ६, ७, ९, १०, १४, १७; नवपदी— ६, १२, १४, १७.

छंद नाम	मात्रा सख्या एवं लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ सङ्केताङ्क
	लघु हों, द्वितीय चरण मे 'ड ड ड' तीसरा 'ड' चार लघुरूप मे हो, ततीय और पञ्चम चरण मे 'ड ड ड ड' अन्त मे दो लघु आवश्यक हैं, चतुर्थ चरण मे 'ड ड ड' और अन्तिम चार चरण दोहा लक्षणानुसार होते हैं ।]	
करभी रङ्गा	[१३ ११, १३, ११ १३ दोहा]	१, ७ ९, कतभी- १४
नन्दा रङ्गा	[१४, ११, १४, ११, १४, दोहा]	१, ९ १४, मोदतिका- ७
मोहिनी रङ्गा	[१९, ११, १९, ११, १९, दोहा]	१, ९ १४
चाखसेना रङ्गा	[१५, ११, १५ ११, १५, दोहा]	१, ९, १४, चारुनेत्रा- ७
भद्रा रङ्गा	[१५, १२, १५ १२, १५, दोहा]	१, ९, १४
राजसेना रङ्गा	[१५, १२, १५ ११, १५ दोहा]	१, ९, १४
तालविनी रङ्गा	[१६ १२ १६ ११, १६, दोहा]	१, ९ १४, राहुसेनिका-७
पद्मावती	[३२, चतुष्पदी, ड- ङ, ये ड' 55 115 511 1111 रूप मे होने चाहियें । जगण का नियेष है ।]	१ ९ १२ १४ १६, पद्मावतिका- १७
कुण्डलिका	[दोहा-काव्य मिश्रित]	१ ९, १२ १४, १६, १७, प्राकृतपिङ्गला-नुसार दोहा उल्लास-मिश्रित
गगनाङ्गणम	[२५ मात्रा, २० वर्ण, चतुष्पदी ट ड ड ड ड ल ग]	१ १२ १७, गगनाङ्ग-९, १६ मदनमालक- १४
द्विपदी	[२८, ट ड ड ड ड ग]	१, ९, १२ १४, १६, ५ के अनुसार २६ मात्रा द्विपदी, एव ६ १०, १९, २१ के अनुसार २८ मात्रा चतुष्पदी, द्विदला- १७ भाण्डीरक्रीडनस्तोत्र की टीका मे १२ मात्रा, चतुष्पदी माना हैं ।
भुलणा	[३७ द्विपदी, गणनियमरहित]	१ भुलन- ९, १६
खञ्जा	[४१, द्विपदी, ड- ९ रगण, ड' चार लघ्यात्मक हों]	१, ९, १२, १४, १६, खञ्जिका- १७ खजक- ५ ६, १० के अनुसार २३ मात्रा चतुष्पदी हैं ।

छन्द-नाम	माप-सख्या एव लक्षण	छन्द-ग्रन्थ सङ्केताङ्क
शिला	[विषम द्विपदी; प्रथम पद में २८ मात्रा, २७ वर्ण; इ- ६, जगण, द्वितीय पद में ३२ मात्रा, ३१ वर्ण; इ- ७, जगण; दोनों पदों में 'इ' चार लघु-रूप में हों।	१, ६, १२, १४, १६, १७.
माला	[विषम द्विपदी; प्रथम पद में ४५ मात्रा, ४१ वर्ण; इ- ६, रण, गुरुद्वय; द्वितीय पद में गाया छन्द का तृतीय और चतुर्थ चरण अर्थात् २७ मात्रा]	१, ६, १२, १४, १६, १७.
चुलिआला सोरठा	[१३, १६, १३, १६; अर्द्धसम] [११, १३, ११, १३ अर्द्धसम]	१, ६, १२, १६, १७; चुलिका-१४. १, ६, १२, १७; सौराष्ट्र- १६, १७; सौराष्ट्र- १४; सौराष्ट्री- १७.
हाकलि	[१४; चतुष्पदी; प्रथम-द्वितीय चरण में ११-११ वर्ण और तृतीय-चतुर्थ चरण में १०-१० वर्ण, सगण या भगण दो गण हो और नगण तथा लघु गुरु हों]	१, ६, १२, १६, १७; काहलि- १४.
मधुभार	[८; चतुष्पदी; इ, जगण]	१, ६, १२, १६; मधुभारतम्- १४; वसुकला- १७; तालवनचरित की टीका में 'कलगीत'
आभीर	[११; चतुष्पदी; चरण के अन्त में जगण अपेक्षित है।]	१, ६, १२, १४, १६, १७; यमलाजुन- भञ्जनस्तोत्र की टीका में 'अनुकूला'
दण्डकला	[३२; चतुष्पदी; इ. इ. इ. इ. ट. ट. ट. ट. गुरु]	१, ६, १६; दण्डकाहल- १४.
कामकला	[३२; चतुष्पदी; यतिभेद- दण्डकला में १०, ८, १४ पर यति होती है और इसमें १६, १६ पर यति होती है]	१,
श्चिरा	[३०, द्विपदी; इ- ७, गुरु; जगण निराल है।]	१, १२, १७;

छन्द नाम	मात्रा सख्या एव लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ सङ्केताङ्क
दीपक	[१० चतुष्पदी, ड लघु २,	१, ६ १२, १४, १६, १७
	जगण]	
सिंहविलोकित	[१६, चतुष्पदी, सगण श्रीर	१ १२, १६, १७, सिंहवलोक- ६, १४.
	४ लघु का षवेच्छ प्रयोग]	
प्लवङ्गम	[२१, चतुष्पदी, ट ठ ड	१, ६ १२, १६, १७
	जगण, गुह]	
लीलावती	[३२, चतुष्पदी, लघु गुह घण-	१, ६, १२, १६, लीलावतिका- १७
	नियम रहित, ड ङ, ड' मे	
	सगण, ४ लघु जगण भगण,	
	गुरुद्वय का प्रयोग अपेक्षित है]	
हरिगीतम्	[२८, चतुष्पदी, ठ ट ठ ठ	१, १२, १६, हरिगीतक- १७
	ठ, गुह]	
हरिगीतकम	[३०, चतुष्पदी, ठ ट ठ ठ	१
	ठ गुरुद्वय]	
मनोहर-	२८, चतुष्पदी ठ ट ठ ठ	१
हरि गीतम	ठ गुह, विराम पर ठ' गुर्वंत	
	अपेक्षित है, यति १६ १२	
	पर है]	
हरिगीता	[२८, चतुष्पदी, ठ ट ठ ठ	१, ६
	ठ गुह विराम ६ ७ १२ पर	
	अपेक्षित है]	
अपरा हरि	[२८ चतुष्पदी, ठ ट ठ ठ	१,
गीता	ठ गुर, विराम १४-१४ पर	
	अपेक्षित है]	
त्रिभगी	[३२ चतुष्पदी, ड- ङ,	१ ६, १२ १६, १७
	जगण नियिद्ध है]	
दुमिलका	[३२, चतुष्पदी, ड ङ,]	१ १२ दुमिला- ६, १६, १७,
हीरम	[२३, चतुष्पदी, ट ट ट	१ ६ १६, हीरक- १२, १७
	रगण ट' एक गुह श्रीर ४ लघु-	
	रूप होना चाहिए ।]	
जनहरणम्	[३२, चतुष्पदी, ड ङ, जिसमे	१, १६ जलहरण- ६, १२, १७
	२८ लघु श्रीर अन्त मे सगण	
	हो]	

छन्द-नाम	मात्रा-सख्या एव लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
मदनगृहम्	[४०; चतुष्पदी; ङ-१०;	१, ६, १२, १७; मदनदीपन- १६. पहला 'ङ' सगण होना चाहिए]
मरहट्टा	[२६; चतुष्पदी; ट. ङ. ड. ड.	१, ६, १२, १६, १७. ड. ड. गुरु, लघु]
मदिरा सवया	[३०; चतुष्पदी; झ.-७, ग.]	१
मालती सवया	[३२; चतुष्पदी, झ.-७, ग.२]	१
मल्ली सवया	[३४; चतुष्पदी, स.-८, ग.]	१
मल्लिका सवया	[३१; चतुष्पदी, ज.-७ ल.ग.]	१
माघवी सवया	[३३, चतुष्पदी, ज.-७, ल.ग.ग.]	१
माघवी सवया	[३२; चतुष्पदी; ड.-८;]	१
घनाक्षरम्	[४८ मात्रा, ३१ वर्ण, चतुष्पदी]	१
गलितकम्	[२१; चतुष्पदी; ठ. ठ. ड. ड.	१, ६, १०; संपिण्डितागलिता- ७. लघु, गुरु]
विगलितकम्	[२३; चतुष्पदी; ठ. ठ. ड. ड.	१, १०. ठ,]
संगलितकम्	[१३, चतुष्पदी; ड. ड. ठ.]	१, १०; पदागलिता- ७.
मुन्दरगलितकम्	[१३; चतुष्पदी; ठ. ठ. लघु.	१, १०. गुरु;]
भूषणगलितकम्	[१६; चतुष्पदी ठ. ठ. ड. ड.]	१, १०.
मुखगलितकम्	[२०; चतुष्पदी; ट. ड. ड. ड.	१, १०. द. गुरु]
विलम्बित-	[२२; चतुष्पदी; ट उ. ड. ड.	१, १०.
गलितकम्	ड; अन्तिम 'ड' गुर्वन्त हो]	
समगलितकम्	[२५, चतुष्पदी; ड. ठ. ठ. ड.	१, १०. ड लघु गुरु]
अपर सम-	[३२; द्विपदी; प्रथम पद मे—	१
गलितकम्	ड. ठ. ठ. ड. ड. ल ग. ड. ड., द्वितीय पद मे—ट. ड. ड. ड. द. ग. ड. ड. ड;]	
अपरं सङ्ग-	[३२; द्विपदी; अपर सङ्ग-	१
लितकम्	लितकम् की पदस्थिति पूर्ण- रूपेण विपरीत होती है]	

छन्द नाम	भाषा सख्या एवं लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
अपरं लम्बिता- गलितकम्	[२२; चतुष्पदी, ट. ड. ड. ड. ड. गुण; प्रथम और तृतीय चरण में जगण नहीं;]	१; लम्बितागलितकम्-७, १०.
विक्षिप्तिका- गलितकम्	[२५; चतुष्पदी; प्रथम और तृतीय चरण में ठ. ठ. ठ. ठ ठ, द्वितीय और चतुर्थचरण में ड ठ. ठ ठ. ठ ग होता है।]	१; विक्षिप्तिगलितकम्-१०.
सलिता- गलितकम्	[२४; चतुष्पदी; ड-६,]	१ ७, १०
विषमिता- गलितकम्	[२५, चतुष्पदी; प्रथम और द्वितीय चरण में ठ. ड. ड ड. ड. ड, तृतीय एवं चतुर्थ चरण में ड ड ड ड ड. ड. ग होता है।]	१; विषमागलितकम्-१०;
भालागलितकम्	[४६; चतुष्पदी; ट. ड-१०, अर्थात् १, ३, ५, ७, ९ वां 'ड' जगण, २, ४, ६, ८ वां 'ड' चार लघ्यात्मक, और १० वां 'ड' सगण होना चाहिये]	१, १०.
मुग्धामाला- गलितकम्	[३८; चतुष्पदी, ट. ड-८]	१, मुग्धागलितकम्-५, १०
उद्गलितकम्	[३०, चतुष्पदी, ट. ड-६;]	१, उद्गाता- ७, उद्गागलितकम्-५, १०

क (२) गाथादि छन्द-भेदों के लक्षण एवं नाम-भेद

गाथा, स्वन्धक, दोहा, रोला, रसिका, वाघ्य एव षट्पद नामक छन्दों के प्रस्तार-क्रम से भेद, लक्षण एव नाम-भेद निम्नलिखित ग्रन्थों में ही प्राप्त हैं—

गाथा-प्रस्तार-भेद

प्रस्तार- क्रम	गुरु	लघु	पर्यं	वृत्तमीवित्त	प्राकृत- पंगल	वृत्तरत्ना- कर- नारायणी-टीका	वाग्बल्लभ	गाथालक्षण श्रीर कवि- दर्पण
१	२७	३	३०	लक्ष्मी.	लक्ष्मी	लक्ष्मी	लक्ष्मी.	पमला
२	२६	५	३१	ऋद्धि	ऋद्धि.	ऋद्धि	ऋद्धि:	लसिता
३	२५	७	३२	बुद्धि	बुद्धि	बुद्धि	बुद्धि.	सोला
४	२४	९	३३	लज्जा	लज्जा	लज्जा	लज्जा	ज्योत्स्ना
५	२३	११	३४	विद्या	विद्या	विद्या	विद्या	रम्भा
६	२२	१३	३५	क्षमा	क्षमा	क्षमा	क्षमा	मागधी
७	२१	१५	३६	देही	देही	गोरी	देही	लक्ष्मी
८	२०	१७	३७	गोरी	गोरी	देही	गोरी	विद्युत्
९	१९	१९	३८	घात्री	घात्री	रात्री	घात्री (रात्री)	माला
१०	१८	२१	३९	चूर्णा	चूर्णा	पूर्णा	चूर्णा	हसी
११	१७	२३	४०	छाया	छाया	छाया	छाया	शशिलेखा
१२	१६	२५	४१	कान्ति	कान्ति	कान्ति	कान्ति	जाह्नवी
१३	१५	२७	४२	महामाया	महामाया	महामाया	महामाया	शुद्धि
१४	१४	२९	४३	कीर्त्ति	कीर्त्ति	कीर्त्ति	कीर्त्ति	काली
१५	१३	३१	४४	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धा	सिद्धा	कुमारी
१६	१२	३३	४५	मानी	मानिनी	मानी	मानिनी (मनोरमा)	मेधा
१७	११	३५	४६	रामा	रामा	रामा	रामा	सिद्धि
१८	१०	३७	४७	विश्व	गाहिनी	गाहिनी	गाहिनी	ऋद्धि
१९	९	३९	४८	वासिता	विश्व	विश्व	विश्व	कुमुदिनी
२०	८	४१	४९	शोभा	वासिता	वासिता	वासिता	धरणी
२१	७	४३	५०	हरिणी	शोभा	शोभा	शोभा	यक्षिणी
२२	६	४५	५१	चक्री	हरिणी	हरिणी	हरिणी	धीणा
२३	५	४७	५२	कुररी	चक्री	चक्री	चक्री	आही (याणी)
२४	४	४९	५३	हसी	सारसी	सारसी	सुरसी	गान्धर्वी
२५	३	५१	५४	सारसी	कुररी	कुररी	कुररी	मञ्जरी
२६	२	५३	५५	×	सिही	सिही	सिही	गोरी
२७	१	५५	५६	×	हसी	हसी	हसी	×

(हसपदवी)

स्कन्धक प्रस्तार-भेद

प्रस्तार- क्रम	गुरु	लघु	वर्ण	वृत्तमौक्तिक	प्राकृतपैङ्गल	वृत्तरत्नाकर- नारायणी टीका	वाग्वल्लभ
१	३०	४	३४	मन्द	मन्द*	×	×
२	२६	६	३५	भद्र	भद्र	×	×
३	२८	८	३६	शिव	शेष	मन्द	मन्द्र
४	२७	१०	३७	शेष	सारग	भद्र	भद्र
५	२६	१२	३८	सारङ्ग	शिव	शेष	शेष
६	२५	१४	३९	ब्रह्मा	थह्मा	सारग	सारङ्ग
७	२४	१६	४०	वारण	धारण	शिव	गिव
८	२३	१८	४१	वरुण	वरुण	ब्रह्म	ब्रह्मा
९	२२	२०	४२	मदन	नील	चारण	वारण
१०	२१	२२	४३	नील	मदन	वरुण	वरुण
११	२०	२४	४४	तालाङ्क	तालाङ्क	नील	नील
१२	१९	२६	४५	शेखर	शेखर*	मदन	निशाङ्क
१३	१८	२८	४६	शर	शर	तालङ्क	मदन
१४	१७	३०	४७	गगनम्	गगनम्	शेखर	ताल
१५	१६	३२	४८	शरभ	शरभ	शर	शेखर
१६	१५	३४	४९	विमति	विमति	गगनम्	शर
१७	१४	३६	५०	क्षीरम्	क्षीरम्	शरभ	गगनम्
१८	१३	३८	५१	नगरम्	नगरम्	विमति	शरभ
१९	१२	४०	५२	नर	नर	क्षीरम्	विमति
२०	११	४२	५३	स्निग्ध*	स्निग्ध	नगरम्	क्षीरम्
२१	१०	४४	५४	स्नेहलु	स्नेह	नर	नगनम्
२२	९	४६	५५	मदकल	मदकल	स्निग्ध	नर
२३	८	४८	५६	भूप*	मूपाल	स्नेहनम्	स्निग्धम्
२४	७	५०	५७	शुद्ध	शुद्ध	मदकल	स्नेह
२५	६	५२	५८	कुम्भ	सरित	सोभ	मदकल
२६	५	५४	५९	सरि	कुम्भ	शुद्ध	मूपाल
२७	४	५६	६०	कलश	कलश	सरित	शुद्ध
२८	३	५८	६१	शशी	शशी	कुम्भ	सरित
२९	२	६०	६२	+	+	कलश	कुम्भ
३०	१	६२	६३	+	+	शशधर	शशी

दोहा प्रस्तार-भेद

प्रस्तार क्रम	गुरु	सधु	वर्ण	वृत्तमीमांसक	प्राच्यत पैञ्जल	वृत्तरत्ना वर नारा यणी टीका	धाग्वत्तम	गाथा लक्षण
१	२३	२	२५	+	+	+	ध्रमर	+
२	२२	४	२६	ध्रमर	ध्रमर	ध्रमर	ध्रमर	ध्रमर
३	२१	६	२७	ध्रमर	ध्रमरः	ध्रमर	शरभ	ध्रमर
४	२०	८	२८	शरभ	शरभ	शरभ	श्येन	समर
५	१९	१०	२९	श्येन	श्येन	श्येन	मण्डूक	सञ्चार
६	१८	१२	३०	मण्डूक	मण्डूक	मण्डूक	मर्कट	मकरन्द
७	१७	१४	३१	मर्कट	मर्कट	मर्कट	करभ	मर्कटक
८	१६	१६	३२	करभ	करभ	करभ	नर	नर
९	१५	१८	३३	मदकल	नर	नर	भराल	भराल
१०	१४	२०	३४	पयोधर	भराल	भराल	मदकल	मदकल
११	१३	२२	३५	चल	मदकल	मदकल	पयोधर	पयोधर
१२	१२	२४	३६	नर	पयोधर	पयोधर	चल	+
१३	११	२६	३७	भराल	चल	चल	धानर	+
१४	१०	२८	३८	त्रिकल	धानर	धानर	त्रिकल	+
१५	९	३०	३९	धानर	त्रिकल	त्रिकल	कच्छप	+
१६	८	३२	४०	कच्छप	कच्छप	कच्छप	मत्स्य	+
१७	७	३४	४१	मत्स्य	मत्स्य	मत्स्य	शाङ्गल	+
१८	६	३६	४२	शाङ्गल	शाङ्गल	शाङ्गल	अहिबर	+
१९	५	३८	४३	अहिबर	अहिबर	अहिबर	व्याघ्र	+
२०	४	४०	४४	व्याघ्र	व्याघ्र	व्याघ्र	विडाल	+
२१	३	४२	४५	उन्दुर	विडाल	विडाल	श्या	+
२२	२	४४	४६	शुनक	शुनक	श्या	उदुम्बर (उदुम्बर)	+
२३	१	४६	४७	विडाल	उन्दुर	उन्दुर	सप	+
२४	०	४८	४८	सर्प	सप	सर्प	शशधर	+

रोला-प्रस्तार-भेद

प्र. क्र.	लघु	गुरु	मात्रा	वृत्तमौलिक	प्राकृत- पंजल	वृत्तरत्नाकर वाग्वल्लभ नारायणी-टीका				
						लघु	गुरु	मात्रा	वृत्तरत्नाकर	
१	६६	०	६६	रसिका	रसिका	६६	०	६६	सोहाङ्गिनी	सोहाङ्गी
२	६४	१	६६	हंसी	हंसी	५८	४	६६	हंसी	हंसिनी
३	६२	२	६६	रेखा	रेखा	५०	८	६६	रेखा	रेखा
४	६०	३	६६	तालाङ्का	तालङ्किनी	४२	१२	६६	तालङ्किनी	तालाङ्की
५	५८	४	६६	कम्पिनी	कम्पिनी	३४	१६	६६	कम्पी	कम्पी
६	५६	५	६६	गम्भीरा	गम्भीरा	२६	२०	६६	गम्भीरा	गम्भीरा
७	५४	६	६६	काली	काली	१८	२४	६६	काली	काली
८	५२	७	६६	कलरुद्राणी	कलरुद्राणी	१०	२८	६६	कलरुद्राणी	कलरुद्राणी

रसिका-प्रस्तार-भेद

प्र. क्र.	गुरु	लघु	मात्रा	वृत्तमौलिक	प्राकृत- पंजल	प्रथम-चरणे			वृत्तरत्नाकर वाग्वल्लभ नारायणी-टीका	
						गुरु	लघु	मात्रा		
१	१३	७०	६६	कुन्द	कुन्द	११	२	२४	कुन्द	कुन्द.
२	१२	७२	६६	करताल	करताल	१०	४	२४	करताल	कर्णसिलः
३	११	७४	६६	मेघ	मेघः	९	६	२४	मेघः	मेघः
४	१०	७६	६६	तालाङ्क	तालाङ्क	८	८	२४	तालाङ्क	तालाङ्कः
५	९	७८	६६	रुद्र	कालरुद्रः	७	१०	२४	कालः	कालरुद्रः
६	८	८०	६६	कोकिल	कोकिलः	६	१२	२४	रुद्रः	कोकिलः
७	७	८२	६६	कमलम्	कमलम्	५	१४	२४	कोकिल.	कमलः
८	६	८४	६६	इन्दुः	इन्दुः	४	१६	२४	कमलः	चन्द्रः
९	५	८६	६६	शम्भु	शम्भु	३	१८	२४	इन्द्रः	शम्भु
१०	४	८८	६६	चामर.	चामरः	२	२०	२४	शम्भु	चामर.
११	३	९०	६६	गणेश	गणेश्वरः	१	२२	२४	चामरः	गणेश्वरः
१२	२	९२	६६	शेष	सहस्राक्ष.	०	२४	२४	गणेश्वर.	+
१३	१	९४	६६	सहस्राक्ष.	शेष					

रसिका छन्द के केवल प्रथम चरण के ही वाग्वल्लभ के मतानुसार ११ भेद होते हैं और वृत्तरत्नाकर के टीकाकार नारायणभट्ट के मतानुसार १२ भेद होते हैं। वाग्वल्लभ और नारायणी टीका के अनुसार अवशिष्ट द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ चरण २४ मात्रा सहित षोडश गुरु, लघु निर्मित होते हैं।

काव्य-प्रस्तार-भेद

प्र क्र.	गुरु	लघु	वण	वृत्तमौक्तिक	प्राकृत- पङ्कल	वृत्तरत्नाकर- नारायणी-टीका
१	०	६६	६६	शक्र	शक्र	इ क्र
२	१	६४	६५	शम्भु	शम्भु	शम्भु
३	२	६२	६४	सूर्य	सूर्य	सूर
४	३	६०	६३	गण्ड	गण्ड	गण्ड
५	४	५८	६२	स्कन्ध	स्कन्ध	स्कन्ध
६	५	५६	६१	विजय	विजय	विजय
७	६	५४	६०	तालाङ्क	दपं	दपं
८	७	५२	५६	दपं	तालाङ्क	तालाङ्क
९	८	५०	५५	समर	समर	समर
१०	९	४८	५७	सिंह	सिंह	सिंह
११	१०	४६	५६	शेष	शेष	शेष
१२	११	४४	५५	उत्तेजा	उत्तेजा	उत्तेज
१३	१२	४२	५४	प्रतिपक्ष	प्रतिपक्ष	फणि
१४	१३	४०	५३	परिधर्म	परिधर्म	रक्ष
१५	१४	३८	५२	मराल	मराल	प्रतिधम
१६	१५	३६	५१	गण्ड	मृगेन्द्र	मराल
१७	१६	३४	५०	मृगेन्द्र	दण्ड	मृगेन्द्र
१८	१७	३२	४९	मकट	मकट	दण्ड
१९	१८	३०	४८	मदन	मदन	मकट
२०	१९	२८	४७	राष्ट्र	महाराष्ट्र	श्रनुबन्ध
२१	२०	२६	४६	वसन्त	वसन्त	वासण्ड
२२	२१	२४	४५	कण्ड	कण्ड	कण्ड
२३	२२	२२	४४	मयूर	मयूर	मयूर
२४	२३	२०	४३	बन्ध	बन्ध	बन्ध
२५	२४	१८	४२	भ्रमर	भ्रमर	भ्रमर
२६	२५	१६	४१	भिन्नमहाराष्ट्र	द्वितीयो महाराष्ट्र	भिन्नमहाराष्ट्र
२७	२६	१४	४०	बलभद्र	बलभद्र	बलभद्र
२८	२७	१२	३९	राजा	राजा	राजा
२९	२८	१०	३८	बलित	बलित	बलित
३०	२९	८	३७	राम	राम	मयूल
३१	३०	६	३६	मयान	मयान	मयान

प्र क्र	गुरु	लघु	वर्ण	वृत्तमौक्तिक	प्राकृत- पङ्क्त	वृत्तरत्नाकर- नारायणी टीका
३२	३१	३४	६५	मोह	बली	बली
३३	३२	३२	६४	बली	मोह	मोह
३४	३३	३०	६३	सहस्रनेत्र	सहस्राक्ष	सहस्राक्ष.
३५	३४	२८	६२	बाल	वाल	बाल
३६	३५	२६	६१	द्वृत्त	द्वृत्त	द्वृत्त
३७	३६	२४	६०	शरभ	शरभ	शरभ
३८	३७	२२	५९	दम्भ	दम्भ	दम्भ.
३९	३८	२०	५८	दिवस	शह	उद्दम्भ
४०	३९	१८	५७	उद्दम्भ	उद्दम्भ	वलिताकः
४१	४०	१६	५६	वलिताक	वलिताक	तुरग
४२	४१	१४	५५	तुरग	तुरङ्ग	हर
४३	४२	१२	५४	हरिण	हरिण	हरिण
४४	४३	१०	५३	अघ	अघ	अघ
४५	४४	८	५२	भुङ्ग	भुङ्ग	भुङ्ग

षट्पद-प्रस्तार-भेद

प्र क्र	गुरु	लघु	वर्ण	वृत्तमौक्तिक	प्राकृत पङ्क्त	वृत्तरत्नाकर- नारायणी टीका
१	७०	१२	८२	अजय	अजय	अजय
२	६९	१४	८३	विजय	विजय	विजय
३	६८	१६	८४	बलि	बलि	बलि
४	६७	१८	८५	कर्ण	कर्ण	वर्ण
५	६६	२०	८६	वीर	वीर	वीर
६	६५	२२	८७	वेताल	वेताल	वेताल
७	६४	२४	८८	बृहन्नल	बृहन्नल	बृहन्नल
८	६३	२६	८९	मकट	मकट	मकट
९	६२	२८	९०	हरि	हरि	हरि
१०	६१	३०	९१	हर	हर	हर
११	६०	३२	९२	विधि	अह्य	अह्य
१२	५९	३४	९३	इन्दु	इन्दु	इन्दु
१३	५८	३६	९४	चन्दनम्	चन्दनम्	चन्दनम्
१४	५७	३८	९५	शुभङ्कर	शुभङ्कर	शुभङ्कर

प्र क्र	गुरु	लघु	वर्ण	वृत्तमौक्तिक	प्राकृत- पङ्कल	वृत्तरत्नाकर- नारायणी-टीका
१५	५६	४०	६६	शवा	शवा	शालः
१६	५५	४२	६७	सिहः	सिहः	सिहः
१७	५४	४४	६८	शाडूँल	शाडूँल	शाडूँल
१८	५३	४६	६९	कूर्म	कूर्मः	कूर्म
१९	५२	४८	१००	कोकिल	कोकिल	कोकिल
२०	५१	५०	१०१	खर.	खर	खर
२१	५०	५२	१०२	कुञ्जर	कुञ्जर.	कुञ्जर
२२	४९	५४	१०३	मदनः	मदन	मदन
२३	४८	५६	१०४	मत्स्य	मत्स्य.	मत्स्य
२४	४७	५८	१०५	तालाङ्क	तालाङ्क	सारङ्गः
२५	४६	६०	१०६	शेषः	शेष	शेष
२६	४५	६२	१०७	सारङ्ग	सारङ्ग	सारस
२७	४४	६४	१०८	पयोधरः	पयोधर	पयोधरः
२८	४३	६६	१०९	कुन्द	कुन्द	कुन्द
२९	४२	६८	११०	कमलम्	कमलम्	कमलम्
३०	४१	७०	१११	वारण	वारणः	कुन्द
३१	४०	७२	११२	जङ्गम	शरभ	वारणः
३२	३९	७४	११३	शरभ	जङ्गमः	शरभ.
३३	३८	७६	११४	घृतीष्टम्	घृतीष्टम्	जङ्गम
३४	३७	७८	११५	दाता	दाता	शरः
३५	३६	८०	११६	शर	शर	मुशरः
३६	३५	८२	११७	मुशर	मुशर	मसर
३७	३४	८४	११८	समर	समर	सारसः
३८	३३	८६	११९	सारस	सारस	सारसः
३९	३२	८८	१२०	शारद	शारद	मेघः
४०	३१	९०	१२१	मघ	मेघः	सकल
४१	३०	९२	१२२	मदकर	मदकर.	मृग
४२	२९	९४	१२३	मेघ	मघ	सिद्ध
४३	२८	९६	१२४	सिद्धि	सिद्धिः	बुद्धि
४४	२७	९८	१२५	बुद्धि	बुद्धि	बलवल
४५	२६	१००	१२६	करतलम्	करतलम्	बमलाकर
४६	२५	१०२	१२७	कमलाकर	कमलाकर	धवलः
४७	२४	१०४	१२८	धवल	धवल	मतरु

प्र क्र	गुरु	लघु	वर्ण	वृत्तमीतिक	प्राकृत- पैङ्गल	वृत्तरत्नाकर- नारायणी टीका
४८	२३	१०६	१२६	मानस	मन	ध्रुव
४९	२२	१०८	१३०	ध्रुवक	ध्रुव	बलय
५०	२१	११०	१३१	कनकम्	कनकम्	किन्नर
५१	२०	११२	१३२	कृष्ण	कृष्ण	शक
५२	१९	११४	१३३	रञ्जनम्	रञ्जनम्	जन
५३	१८	११६	१३४	मेघकर	मेघकर	मेघाकर
५४	१७	११८	१३५	घोष्म	घोष्म	घोष्म
५५	१६	१२०	१३६	गरुड	गरुड	गरुड
५६	१५	१२२	१३७	शशी	शशी	शशी
५७	१४	१२४	१३८	सूर्य	सूर्य	सूर्य
५८	१३	१२६	१३९	शल्प	शय	शल्प
५९	१२	१२८	१४०	नवरङ्ग	नवरङ्ग	नर
६०	११	१३०	१४१	मनोहर	मनोहर	सुरग
६१	१०	१३२	१४२	गगनम्	गगनम्	मनोहर
६२	९	१३४	१४३	रत्नम्	रत्नम्	गगनम
६३	८	१३६	१४४	नर	नर	रत्नम्
६४	७	१३८	१४५	हीर	हीर	नय
६५	६	१४०	१४६	ध्रमर	ध्रमर	हीर
६६	५	१४२	१४७	शेखर	शेखर	ध्रमर
६७	४	१४४	१४८	कुसुमार	कुसुमार	शेखर
६८	३	१४६	१४९	वीप	वीप	कुसुमारवीप
६९	२	१४८	१५०	शरु	शरु	शरु
७०	१	१५०	१५१	यमु	यमु	यमु
७१	०	१५२	१५२	शब्द	शब्द	शरु

ख. वर्णिक छन्दों के लक्षण एवं नाम-भेद

सङ्केत—क्रमाङ्क एवं छन्द-नाम=वृत्तमोचितक के अनुसार हैं। लक्षण=छन्द लक्षण में प्रयुक्त ग=गुरु, ल=लघु, म=भगण, य=यगण, र=रगण, स=सगण त=तगण, ज=जगण, भ=भगण और न=नगण के सूचक है। सन्दर्भ-ग्रन्थ संकेताङ्क=सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची एवं तदनुसार क्रमसूचक सख्या चतुर्थ परिशिष्ट क. पृ. ४१४ के अनुसार है।

एकाक्षर छन्द

क्रमांक	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-संकेताङ्क
१.	थो:	[ग.]	१, ६, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १९, २२; उवतम्-५; गी-६; गौ-७.
२.	इ:	[ल.]	१, १६; स्तु-१७.

द्व्यक्षर छन्द

३.	काम:	[ग. ग.]	१, ६, १२, १६; अत्युक्तं-५; नी-७; स्त्री-६, १०, १२, १३, १५; पद्यम्-११, १६; आशीः-२२.
४.	गही	[ल. ग.]	१, ६, १२, १६, १७; सुखं-१०, १६.
५.	सार:	[ग. ल.]	१, १६; सार-६, १२; दुर्लभं-१०; चार-१७, जत्रु-१६;
६.	मधु.	[ल. ल.]	१, ६, १२, १६, १७; मद-१०; पुष्पम्-११; बलि-१६.

त्र्यक्षर छन्द

७	ताली	[म]	१, ६, १६; नारी-१, ६, ७, १०, १३, १५, १७; श्यामाङ्गी-१६.
८.	राली	[य.]	१, २, १२, १६; मध्यमं-५; केसा-१०; घू-११; बलाका-१७; वनम्-१६.
९.	प्रिया	[र.]	१, ६, १२, १६; मध्यमं-५; मृगी-६, १०, १३, १५, १७; तडित्-११; सुधी-१६, घञ्चला-२२.
१०.	रमण	[स.]	१, ६, १२, १६, १७; मध्यमं-५; मदन-१०; रजनी-११; प्रवरः-१६.
११.	पञ्चाक्षम्	[त.]	१, ६, १२, १६, १७; सेना-१६.
१२.	मृगेन्द्रः	[ज]	१, ६, १२, १६; मृगेन्द्रु-१७, मुवस्तु-१६.

क्रमांक	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ सङ्केताङ्क
२८	मथानम्	[स त]	१, ६, १२ १६, मन्वाना-१
२९	शखनारी	[य य]	१, ६, १६, सोमराजी-१ ६ १०, १५ १७, शखधारी-१२; द्रुतम्-१६
३०	सुमालतिका	[ज ज]	१ १२, मालती-१, ६, मालतिका-१७, मनोहर-१६
३१	तनुमध्या	[त य]	१, २, ३ ६ ७ ८, १०, १३, १५ १८, १९ २० २२
३२	वमनकम्	[न न]	१, ६ १२ १६, जपवलि-१७

सप्ताक्षर छन्द

३३	शीर्षा	[म म ग]	१ १२, शीर्षरूपक ६, गान्धर्वी-१०, १६, मुवतागुम्फ-१६, शिप्रा-१७
३४	समानिका	[र ज ग]	१, ६, १२, १६, उष्णिक-१०, शिखा-११, घामरम-१७, गोभिनी-१६,
३५	सुवासकम्	[न ज ल]	१, ६, १२, १६ वासकि-१७, सवासनि-१७,
३६	करहञ्च	[न स ल]	१, १२, करहञ्च-६, करहस-१६, अहरि- १७, करहन्तु-१७, गोपिकागीते मुखदेवम ।
३७	कुमारलसिता	[ज स ग]	१, २, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २०, २२.
३८	मधुमती	[न न ग]	१ १४, १५, हरिविलसित-१०, हरिविलसिनक- ७, चपला-११, द्रुतगति-११, लटह-१६
३९	मदलेखा	[म स ग]	१, ६ ७, १०, १३, १५, १६ में लक्षण 'म स ग' है ।
४०	कुसुमतति	[म न ल]	१, अचट्ट-१७

अष्टाक्षर छन्द

४१	विद्युन्माल	[म म ग ग]	१, २, ३, ६, ७ ८, ९ १० १२ १३, १५, १६, १८ १९
४२	प्रमाणिका	[ज र स ग.]	१, ६, ८, ९, १२, १३, १५, १६, १९, प्रमाणी-१०, १८, त्रियर-४, मत्त- चेष्टितम्-३, ११, बालगर्भिणी २२
४३.	मल्लिक	[र ज ग ल]	१, ६, १२ १६, समानिका-१, ५, ६,

क्रमांक	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
			१०, १३, १५, १७; समानी-१८, १९; समानं-२२.
४४.	सुज्ञा	[न.न.ग.ग.]	१; सुज्ञ-६, १२; रतिमाला-१०; सुरज्ञा-१२.
४५.	कमलम्	[न स.ल.ग.]	१, ६, १२, १६; लसदसु-१७.
४६.	माणवकक्रीडितकम्	[भ.त ल.ग.]	१, २, ७, १२, २०, २२; माणवकक्रीडा-१६; माणवकम्-५, ६, १०, १३, १५, १७, १८, १९.
४७.	चित्रपदा	[भ.भ.ग.ग.]	१, २, ५, ६, १०, १३, १५, १८, १९; धितानं-७, १८, १९; चित्रपदम्-२०; हंसस्तम्-२२
४८.	अनुष्टुप्	१	१, १२; श्लोक-७, ८, १६.
४९.	जलदम्	[न.न ल.ल.]	१; कृतयु-१७; कृदायु-१७.

नयाक्षर छन्द

५०.	रूपामाला	[म म.म.]	१, ६; रूपामाली-१२, १५, १६, १७.
५१.	महालक्ष्मिका	[र.र.र.]	१, ६, १२, १७; महालक्ष्मी-१६.
५२.	सारङ्गम्	[न य स.]	१; सारङ्गिका-१, ६, १२, १६, १७; मुखला-१७.
५३.	पाईस्तम्	[म भ स.]	१, पाइस्ता-१, ६, १२, १६; पापिस्ता-१७; सिहाक्रान्ता-१०; घोरा-१७; मघीरा-१७.
५४.	कमलम्	[न न.स.]	१, ६, १२; कमला-१५, १६; लघुमणि-गुणनिकर-१०; मदनकं-१७; रतिपदम्-१७.
५५.	बिम्बम्	[न स य.]	१, ६, १२, १६, १७; गुर्वी-७, १८; विद्याला-६, १०.
५६.	सोमरम्	[स ज ज.]	१, ६, १२, १६, १७
५७.	भुजगदिगुप्तता	[न म म.]	१, २, ५, १०, १७, १८, २०, २२. भुजगदिगुप्तम्-१६; भुजगदिगुप्ता-१, ८, १३, १५, १७, भुजगदिगुप्ता-१७, मधुकरी-२; मधुकरिका-११.

क्रमांक	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ सङ्केताङ्क
५८	मणिमध्यम्	[भ म स]	१, १५, १७ १८, २२, मणिबन्धम्-१६, १७.
५९	भुजङ्गसङ्गता	[स ज र]	१, १५, १७.
६०	सुललितम्	[न न न]	१, चुलकम्-१७

दशाक्षर छन्द

६१	गोपाल	[म म म ग]	१, पद्मावर्त - १७
६२	सयुतम	[स ज ज ग]	१, १६, सयुता-१, ९, १७; सयुगा-१७, सगतिका-१२; सहतिका-१७
६३	चम्पकमाला	[भ म स ग]	१, २, ६, ७, ९, ११, १२, १६, १७, १८, रुमवती-१, ८, १०, १३, १५ १७, १८, १९, २०, रुमवती-२२, रूपवती-५, १७, सुभावा-११, पुष्पसमृद्धि-११
६४	सारवती	[भ भ भ ग]	१, ९, १६, १७, हारवती-१२, चित्रगति-१०, १९, विश्वमुखी-१७,
६५	सुषमा	[त य भ ग]	१ ५, ९, १२, १६, १७
६६	अमृतगति	[न ज न ग]	१, ९, १६, १७, मृगलतिहा-१७
६७	मत्ता	[म भ स ग]	१ १० १३, १५, १७, १८, १९ २०, हसी-१६, विलासिता-२२
६८	त्वरितगति	[न ज न ग]	१ ७ १० १५, १० १९.
६९.	मनोरमम	[म र ज ग]	१, मनोरमा-१, ६, १०, १३, १५ १७
७०	रुलितगति	[न न न ल]	१, कृतकवलि-१७

एकादशाक्षर छन्द

७१	मालती	[म म म ग ग]	१, ९ १२, माला-१६, मारती-१७, भारती-१७
७२	बन्धु	[भ भ भ ग ग]	१, ९, १२, १७; दोषकम्-१, २, ३, ५, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२ १३, १५, १७ १८, १९, २०, २२. उपवित्रा-११, सरोह-१६,
७३	सुमुखा	[न ज ज ल ग.]	१, ६, ९, १० १२, १३, १५, १६, १७, द्रुतपदगति-११

क्रमांक	छन्द-नाम	लक्षण	छन्दसं-ग्रन्थ-सङ्केताद्य
७४.	शालिनी	[म.त.त.ग.ग.]	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२.
७५.	घातोर्मा	[म.भ.त.ग.ग.]	१, ३, ५, ६, १०, १३, १५, १७, १८, १९; उमिला-४; घातोर्मा-२०, २२. १० एवं १९ में [म.भ.भ.ग.ग.] लक्षण भी माना है।
७६.	उपजातिः	[शालिनी-घातोर्माभिधा]	१.
७७.	दमनकम्	[न.न.न.स.ग.]	१, ९, १२, १६, १७.
७८.	घण्डिका	[र.ज.र.ल.ग.]	१; धेणिका-१; धेणिः-१९; श्येनी-२, १०, १५, १७, १८, २०, २२; श्येनिका-५, १३, १७; सेनिका-१२, १७; नि.धेणिका-५; नि.धेणिकम्-११; ताल-१६.
७९.	सेनिका	[ज.र.ज.ग.स.]	१, ९; सैनिकम्-१७;
८०.	इन्द्रवज्रा	[त.त.ज.ग.ग.]	१, २, ३, ४, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२; उप-त्पिता-६, ११.
८१.	उपेन्द्रवज्रा	[ज.त.ज.ग.ग.]	१, २, ३, ४, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२.
८२.	उपजातिः	[इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रामिधा]	१, २, ४, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९; इन्द्रमाला-१९, २०, २२.
८३.	रघोदृता	[र.न.र.स.ग.]	१, २, ३, ४, ५, ६; ८, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२.
८४.	स्वागता	[र.भ.भ.ग.ग.]	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२.
८५.	ध्रुवरविसिता	[म.भ.भ.स.ग.]	१, ४, ५, १५, १७, १८, २०, २२; ध्रुवरविसितम्-२, ७, १०, १३, १९; धानवासिका-११.
८६.	धनुकृता	[भ.भ.भ.ग.ग.]	१, १५, १७; कुहमलवन्ती-७, १०; धीः-१०, १३, १७, १८; साङ्गपदम्-११, १९; वधिरा-११; मोचिनकमाला-१७
८७.	मोटनकम्	[त.ज.ज.स.ग.]	१, ३, १०, १५, १७; मोटनम्-१९.

क्रमांक	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताद्य
८८.	सुकेशी	[म.स.ज.ग.ग.]	१, एकरूपम्-५. १०, १६; विश्वविराट्-१७; मणिः-१६.
८९.	सुभद्रिका	[न.न.र.ल.ग.]	१, ५, १२, १७, २०; भद्रिका-६, १०, १३, १५, १८, १९; प्रसभम्-४; अपर-घवनम्-११; उत्तरान्तिका-११; समुद्रिका-१७.
९०.	बकुलम्	[न.न.न.ल.ल.]	१, अगस्ति-१७.

द्वादशाक्षर छन्द

९१.	आपीडः	[म.म.म.म.]	१. विद्याधरः-६; विद्याधार-१२, १५, १७; विद्याहारः-१६; कल्याणं-१०; काञ्चनम्-११.
९२.	भुजंगप्रयातम्	[घ.घ.घ.घ.]	१, २, ४, ६, ९, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२; अग्रमेमा-३, ११.
९३.	लक्ष्मीधरम्	[र.र.र.र.]	१, ६, ९, १०, १२, १६, १७; स्रग्विणी-१, २, १३, १५, १७, १८, १९; पद्मिनी-३, ११; शृङ्गारिणी-१७.
९४.	तोटकम्	[स स स स.]	१, २, ३, ४, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२.
९५.	सारङ्गकम्	[त त त त.]	१, सारङ्ग-१२, १५, १७; सारङ्गरूपम्-१६; सारङ्गरूपकम्-६; कामावतारः-१०, १९, मेनावती-१७; रगक्रीडास्तोत्र में 'भृङ्गारः'.
९६.	मीवितकदाम	[ज ज ज ज.]	१, ६, २०, २२, २३, २५, १७, १९; मुक्तादाम-१६.
९७.	मोदकम्	[भ.भ.भ.भ.]	१, ६, १२, १६, १७; मोदक-१५
९८.	सुन्दरी	[न.भ.भ.र.]	१, ६, १२, १६; हरिणप्लुता-३; मत्त-कोकिलकम्-१६.
९९.	प्रमिताक्षरा	[स ज स स.]	१, २, ३, ४, ६, १०, १२, १३, १५, १७, १८, १९, २०; प्रतिमाक्षरा-२२.
१००.	चन्द्रपत्नं	[र.न.भ.स.]	१, १०, ११, १५, १७, १८, १९.

क्रमक	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
१०१.	द्वुतविलम्बितम्	[न भ भ.र.]	१, २, ६, ७, ८, १०, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २२; हरिणप्लुतम्-३, ११.
१०२.	वंशस्यविला	[ज त.ज र.]	१; वंशस्यविलम्-१, १५, १७; वंशस्त-नितम्-१; वंशस्यम्-३, ६, ७, ८, १०, १३, १६, १७, १८, १९, २२; वंशस्या-२, २०; वसन्तमञ्जरी-७, ११; अत्र-धंसा-११.
१०३.	इन्द्रवंशा	[त त ज र.]	१, २, ४, ६, १०, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२; इन्दुवशा-१७, वीरा-सिका-१७.
१०४	उपजाति	[वंशस्यविला-इन्द्रवंशा मिथ्या]	१, १७; करम्यजाति-१९; कुलालचक्रम्-१९; वंशमालिका-१९; वंशमाला-२०.
१०५	जलौटगततिः	[ज स ज.स.]	१, २, १०, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २२.
१०६	वंशवदेवी	[म स य ष]	१, २, ४, ६, १०, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २२; चन्द्रलेखा-३.
१०७	मन्दाकिनो	[न न.र र.]	१, १५, १७; गौरी-२; प्रभा-१, १७.
१०८	कुसुमविचित्रा	[न य.न म.]	१, २, १०, १३, १५, १७, २२; मदन-धिकारा-११; गजलुलितम्-११; गजल-सिता-१९.
१०९	तामरसम्	[न ज.ज य.]	१, ६, १०, १३, १५, १७; ललितपदा-४, १९; कमलविलासिनो-११.
११०.	मालती	[न ज ज.र.]	१, ४, ६, १०, १३, १५, १७, वरतनु-२, ११, १४, १९; यमुना-१.
१११.	मणिमाला	[त य त य.]	१, ६, ११, १३, १५, १७, १९; अत्र-विचित्रा-१९, पुष्पविचित्रा-१०, १८.
११२.	जलपरमाला	[म.भ.स.म.]	१, २, १०, १३, १५, १५, १७, १८, १९; कान्तोत्पीडा-२, ११, सौदामिनी-२२
११३.	प्रियम्बदा	[न.भ.ज.र.]	१, ६, १०, १३, १५; प्रियम्बद-१७; मत्तकोविला-११.
११४.	ललिता	[त.म.ज.र.]	१, १०, १३, १५, १७, मुल्लिता-१.
११५.	ललितम्	[भ स.न स.]	१; ललना-१, २, १०; वीरणमाला-१७; रति-१९

क्रमांक	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ सङ्केताङ्क
११६	कामदत्ता	[न न र य]	१, ३, १०, १६, परिमितविजया-१७
११७.	वसन्तचत्वरम्	[ज र ज र.]	१, ६, ११, विभावरी-१०, पञ्चचामरम्-१३, १५, ललामल्लिताधरा-१७,
११८	प्रमुदितवदना	[न न र र]	१, ६, १०, १३, १७, १६, २२, प्रभा-१, ११, १३, १७, चञ्चलाक्षी-२, ११, मन्दाकिनी-१७, गौरी-१४.
११९	नयमालिनी	[न ज भ य]	१, २, १०, १४, १८, १९, २० २२; नयमालिका-१३, १५, नयमालिनी-१७, वनमालिका-१७
१२०	तरलनयनम्	[न.न न न]	१, १२, १५, १७, तरलनयना-१६, तरलनयनी-६

त्रयोदशाक्षर छन्द

१२१	वाराह	[म म म म ग]	१, सव्याली-१७
१२२	माया	[म त य स ग]	१, ६, १२, १६, मत्तमयूरम्-१, २, ३, ४, ६, ९, १०, १३, १५, १७ १८, १९, २२, मत्तमयूर-२०
१२३	तारकम्	[स स स स ग]	१, ६, १२, १६, १७
१२४	कन्दम्	[घ घ घ घ ल]	१, ६, १२, १६, कन्द-१७, कन्दुकम्-१५
१२५	पङ्खावलि	[भ न ज ज ल]	१, ६, १२, पङ्खावती-१७, कमलावली-१६
१२६	प्रहृषिणी	[म न ज र ग]	१ २, ३ ४, ६ ८, १०, १३, १५ १६ १७, १८, १९ २०, २२, मयूरपिच्छम्-७
१२७	रुचिरा	[ज भ स ज ग]	१ २, ४, ५, ६ १०, १३, १५ १७, १८, १९, २०, २२, प्रभावती-३, सदागति-७, अतिरुचिरा-१४ १७
१२८	घण्टी	[न न स स ग]	१, १५, १७, कमलाक्षी-१०, हाकलिका-१७; कलावती-१६
१२९	मञ्जुभाषिणी	[स ज स ज ग]	१, १३, १५, १७ सुनन्दिनी-१, नन्दिनी-५, १०, १९ २२, प्रबोधिता-१ १५, कनकप्रभा-२, १४, मनोवती-११, १९ मे 'न ज स ज ग' और १० मे 'ज त ज स. ग' लक्षण भी माना है।

क्रमाङ्क	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ-मन्त्रे तादृ
१३०	चन्द्रिका	[न न त त ग.]	१, १३, १५, १७, उत्पलिनो-१, १७; कुटिलमति-२; कुटिलगति-१०; ६ मे चन्द्रिका का लक्षण 'न. न त र ग' है और १६ मे 'य म र र ग' है।
१३१	बलहस	[स ज स स ग.]	१, १५, १७; सिंहनाद-१, १७, कुटज- १, १०, १६, कुटजा-१७, भ्रमर-११, भ्रमरी-१६; क्षमा-१७
१३२	भृगेन्द्रमुखम्	[न ज ज र ग]	१, १५, १७; सुवक्त्रा-१०, १६, अचला ११
१३३	क्षमा	[न.न.त.र.ग]	१, १३; १० में 'न त त र ग' लक्षण है।
१३४	सता	[न स ज ज ग]	१; लघु-१०; उपगतशिला-१७,
१३५	चन्द्रलेखम्	[न स र र ग]	१, १४, चन्द्रलेखा-१, १०; चन्द्ररेखा-१५
१३६	मुद्युति.	[न स त त ग]	१; विद्युन्मालिका-१०
१३७	लक्ष्मी	[त भ.स.ज.ग]	१, ४, १०, १६, प्रभावती-१५, १६, १७ दक्षि-१६.
१३८.	विमलगति	[न न न न ल.]	१; अडमल-१७

चतुर्दशाक्षर छन्द

१३९	सिंहास्य	[म म म म.ग ग]	१, सकल्पासार-१७, सकल्पाधार-१७.
१४०.	वसन्ततिलका	[त भ.ज.ज.ग ग]	१, २, ३, ४, ५, ६, ६, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १६; काश्यपमते सिंहोप्रता-२, ७, ११, १३, १७, २२, सैतव- मते उद्धविणी-२, १०, १३, १७, राम- मते भृगुमाधवी १७; भरतमते सुदरी- १७, वसन्ततिलकम्-८, २०, २२; सैतव- मते श्नुकुली-२२.
१४१	चक्रम्	[भ न न न ल ग]	१, १२, १७; चक्रपदम-६, १६
१४२	असम्बाधा	[म त न स ग ग.]	१, २, ३, ४, ६, १०, १३, १५, १७, १८, १६, २०, २२
१४३.	अपराजिता	[न न र स ल ग]	१, २, ५, ६, १०, १३, १५, १७, १८, १६, २०, २२
१४४.	प्रहरणकलिका	[न न भ न ल.ग]	१, ५, ६, १५, १७, १६, २०, प्रहरण- कलिता-२, १०, १३, १८, प्रहरणगलिता- २२.

क्रमांक	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
१४५.	यासन्ती	[म त न म ग ग.]	१, १५, १७.
१४६.	सोला	[म स म भ ग.ग.]	१, १३, १५, १७; अलोला-१०, १७.
१४७	नान्दीमुखी	[न म त त ग ग.]	१, ५, १५, १७; नन्दीमुखी-११; वसन्त-१०, १६.
१४८.	वैदर्भी	[म भ.न.य ग.ग.]	१, १४; कुटिला-२, १४; कुटिल-१०, १४; हंसपेनी-११; हंसश्यामा-१६; मध्यक्षामा-१४; चूडापीडम्-१७.
१४९.	इन्दुवदनम्	[भ.ज स न.ग ग.]	१; इन्दुवदना-१, १३, १७; वरसुन्दरी-२; स्खलितम्-१०; वनमयूर-११, १६; इन्द्रवदना-१७; विलासिनी-२२; १० मे 'भ.ज.स.न.ल ग.' लक्षण है।
१५०.	शरभी	[म भ न त ग ग.]	१; शरभा-३.
१५१.	अहिघृति	[न,न भ.ज.ल ग.]	१
१५२	विमला	[न ज भ.ज स ग.]	१; घृति-१०; मणिकटकम्-११, १६; प्रमदा-१४
१५३	मल्लिका	[स.ज स ज.ल ग.]	१, मञ्जरी-१४; कुररीस्ता-१७.
१५४	मणिगणम्	[न न न न ल ल.]	१, अक्हरि-१७, अकुहरि-१७

पञ्चदशाक्षर छन्द

१५५	लीलाखेल	[म म म म म.]	१, १५; सारंगिका-१, ६; सारंगी-१२, १६, १७; कामक्रीडा-१०, १४, १७; लीलाखेल-१७, ज्योति-१६, मिश्रम्-१६.
१५६	मालिनी	[न न म य य.]	१, २, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२, नान्दीमुखी-३, ११,
१५७	चामरम्	[र ङ र.ङ र.]	१, ६, १२, १६, तूष्णकम्-१, १०, १५, १७; तोणकम्-५; तोटक-७, पंचया-मल-१७; महोत्सव-१६.
१५८	भ्रमरावलिका	[स.स.स स स.]	१, १७; भ्रमरावली-१, ६, १२, १६.
१५९.	मनोहस	[स.ज.ज भ र.]	१, ६, १२, मणिहस-१७; पवहंस-कम्-१६.
१६०.	शरभम्	[न.न.न न स.]	१, ६, १२, १६, १७, शशिकला-१, ५, ६, १०, १३, १५, १७, १८, १९; मणि-गुणनिकर-१, २, ४, ५, ११, १३, १५, १७

क्रमांक	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
			१८, १९, २०, २२; खक्-१, ११, १३, १५, १७, १८, १९; चन्द्रावर्ता-२, ११, २२; माला-२, ११, २०, २२; मणिनिकर-१७; क्विरा-१९; चन्द्रवर्ता-२०.
१६१.	निशिपातकम्	[भ.ज.स.न.र.]	१, ९, १२, १६, १७.
१६२.	विपिनतिलकम्	[न.स.न.र.र.]	१, १५, १७.
१६३.	चन्द्रलेखा	[म.र.म.य.य.]	१, ६, १०, १३, १५, १७; चण्डलेखा-१; ७, १०, १४ में 'र.र.म.य.य' श्रौर १९ में 'र.र.त.त.म' लक्षण है।
१६४.	चित्रा	[म.म.म.य.य.]	१, ५, ६, १०, १३, १५, १७, १८; चित्रम्-१, मण्डुकी-११, १८, १९; चञ्चला-११.
१६५.	केसरम्	[न.ज.भू.ज.र.]	१; प्रभद्रकम्-६, १०, १३, १७; मुक्तेसरम्-१४, १९.
१६६.	एला	[स.ज.न.न.य.]	१, १०, १३, १७, १९.
१६७.	श्रिया	[न.न.त.भ.र.]	१; उपमालिनी-६, १०; रूपमालिनी-१४
१६८.	उत्सव.	[र.न.भ.भ.र.]	१; सुन्दरम्-१०; मणिमूर्धनं-११, १९; रमणीयं-११, १९; नूतनं-१७; सूक्कणं-१७.
१६९.	उज्ज्वलम्	[न.न.म.म.न.]	१, शरहतिः-१७.

षोडशाक्षर छन्द

१७०.	रामः	[म.म.म.म.म.ग.]	१, ब्रह्मरूपकम्-१, ९, १६; ब्रह्मरूपम्-१५; ब्रह्म-१२, १७; वामुकी-१०; चन्द्रापीडम्-१७.
१७१.	पञ्चचामरम्	[ज.र.ज.र.ज.ग.]	१, ५, ६, १०, १४, १५, १९; नराक्षम्-१, ९, १२, १५, १५, १६, १७.
१७२.	नीलम्	[भ.भ.भ.भ.भ.श.]	१, ९, १२, १६, १७; श्रद्धवतिः-६, १५, १५; सङ्गतम्-१०, पद्ममुखी-११, १९; सुरता-११, सद्यमुद्धरण-११; सोपानकं-११; रवगतिः-१७; विशेषिका-१७
१७३.	घञ्चला	[र.ज.र.ज.र.ल.]	१, ९, १२, १६, १७; चित्रसंज्ञं-१, १४, १५; चित्रं-५, ६, १७; चित्रशीमा-५;
१७४.	मदनतल्लिता	[म.भ.न.म.न.य.]	१, १०, १५, १७, मदनतल्लित-५.

क्रमांक	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ सङ्केताङ्क
१७५	वाणिनी	[न ज भ ज र ग]	१, ६, १०, १३, १५, १७ १६; १० में वाणिनी का 'न ज ज र ग' लक्षण भी स्वीकार किया है।
१७६	प्रवरललितम्	[य म न स र ग]	१, ३, १५, १७, जयानन्दम्-१०, १६
१७७	गरुडरुतम्	[न ज भ ज त रा]	१, १५, १७, चन्द्रलेखा-२२
१७८	चकिता	[भ स म त.न ग]	१, १५, १७
१७९	गजतुरग- विलसितम्	[भ र न न न ग]	१, ऋषभगजविलसितम्-१, २, ३, १०, १३, १५, १७, १८, १९, गजवरविलसितम्-५, मत्तघजविलसितम्-११, वृषभगजविलसिता-२०; ऋषभगजविलसिता-२२
१८०	शैलशिखा	[भ र न भ भ ग]	१, २, १०, १४, भामिनी-१६
१८१	ललितम	[भ र न र न ग]	१, ४, धीरललिता-१४, १५, महिषी-१०.
१८२	मुक्तेसरम	[न स ज स ज त]	१
१८३	ललना	[स न न ज भ ग]	१,
१८४	गिरिवरपृति	[न न न न न ल]	१, अचलपृति-१, ५, ६, १०, १५, १७, १८

सप्तदशाक्षर छन्द

१८५	लीलाधृष्टम्	[म म म म म ग ग]	१, मानाकाता १७
१८६	पृथ्वी	[ज स ज स य ल ग]	१ २ ५ ६, ७, ८, ९ १०, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९ २०, २२, विलम्बितगति ३, ११
१८७	भालाघती	[न स ज स य ल रा]	१, भालाघर-१, ६, १२ १६, १७
१८८	शिलरिणी	[य भ न स भ ल रा]	१, २, ३, ४, ५, ६ ७, ८ १०, १२ १३, १५, १६, १७, १८, १९, २० २२,
१८९	हरिणी	[न स म र स ल रा]	१, २, ३, ५, ६, ७, ८ १०, १२, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २२, वृषभवरितम्-४, वृषभललितम् ११
१९०	मन्दाक्रान्ता	[स भ न त ल ग ग]	१, २, ४, ५, ६, ७ ८, १०, १२, १३, १५ १६, १७, १८, १९, २०, २२ धीघरा-३, ११

क्रमांक	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
१६१	वशपत्रपतितम्	[भ र न भ न ल ग]	१, २, ३, ४, ६, १० १३, १५, १७, १८, १९, २२, वशपत्रपतिता-१, २०, वशदलम्-१, ११, वशतल-५, वशपत्रललितम्-५, वशपत्रम्-१७
१६२.	महँटकम्	[न ज भ ज ल ल ण]	१ १७; नकुँट-८, नकुँटकम्-४, ७, ११, १३, १५, १८, १९, अद्वितयम्-२ १०, १४ १० २, १०, १३, १४, १५, १७, १९
१६३.	हारिणी	[भ भ न म य ल ग]	१, ५, १०, १५, १७ मे 'म भ न य म ल ग' लक्षण है।
१६४.	भाराक्रान्ता	[म भ न र स ल ग]	१, ५, १०, १५, १७,
१६५	मतगवाहिनी	[र ज र ज र ल ग]	१,
१६६	पद्यकम्	[न स म त त ग ण]	१, १०; पद्यम्-५
१६७	दशमुखहरम्	[न न न न न ल ल.]	१, अचलनयनम्-१७
अष्टादशाक्षर छन्द			
१६८	लीलाचन्द्र	[म म म म म म]	१, ९
१६९	मञ्जीरा	[म म भ म स म.]	१, ९, १२ १६ १७
२००.	चर्चरी	[र स ज ज भ र]	१, ९, १२, १६, १७; विबुधप्रिया-२, १४, उज्ज्वलम- १०, भालिकोत्तरमालिका- ११, १९, भक्तकीकिलम्-१७, कूर्पर-१७; चञ्चरी १७, रूपगोस्वामी कृत मुकुन्दमुक्तावली मे 'रगिणी' और गोवर्द्धनोद्धरण मे 'मुग्धसौरभम्' नाम दिए हैं।
२०१	क्रीडाचन्द्र	[य य य य य य]	१, १२. १७, क्रीडाचक्रम्-१६; धार- धाणा-१७, क्रीडागा-१७, चन्द्रिका-१७
२०२	कुसुमितलता	[म त न य य य]	१, २, ५, १०, १३ १५, २२, चित्रलेखा- ३, चन्द्रलेखा-७, कुसुमितलावेल्लिता-१७, १८, कुसुमितलतावेल्लिता-१९, २०
२०३	नन्दनम्	[न ज भ ङ र र.]	१, १५, १७.
२०४	नाराच	[न न र र र र.]	१, १५, १७ नाराचकम्-२, मञ्जुला- १, महामालिका-१७, तारका-६, धरदा- १९, निशा-१९
२०५	चित्रलेखा	[म भ न य य य]	१, ५, १०, १४, १५. १७, चन्द्रलेखा- १७, महाराणा कुम्भवर्ये रचित पाठधरल-

अलक्ष 'नहँटकम्' का है परन्तु यतिभेद के कारण अथर नाम 'कोकिलकम्' दिया है।

प्रमाक	छन्द नाम	लक्षण	सदर्थ ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
			कोप के अनुसार य त न य य स' लक्षण है ।
२०६	भ्रमरपदम्	[भ र न न न स]	१, ५, ६, १० १४, १५.
२०७	शाङ्गूललितम्	[म स ज स त स]	१, ५, १०, १४, १५, १७
२०८	सुललितम्	[न न म त भ र]	१, ५, १०
२०९	उपवनकुसुमम्	[न न न न न न]	१, सुसुलकम्-१७

एकोनविंशाक्षर छन्द

२१०	नागानन्द	[म म म म म म ग]	१,
२११	शाङ्गूलविन्धी- द्वितम	[म स ज स त स ग]	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १४, १६, १७ १८, १९, २०, २२, शाङ्गूलसङ्कम्-९
२१२	चन्द्रम	[न न न ज न न ल]	१, १२, १६, चन्द्रमाला-१, ९
२१३	धवलम	[न न न न म ग]	१, १२, १६, १७; धवला-१, ९
२१४	शम्भु	[स त य भ म म ग]	१ ९, १२ १६, १७
२१५	मेघविस्फूर्जिता	[य म न स र व ग]	१, १०, १४, १५, १८, १९, विस्मिता- २, सुवृत्ता-४, रम्भा-५, ११, १९, घट्टकाता-७
२१६	छाया	[य म न स त त ग]	१, ५, १० १४ १५, १७
२१७	सुरसा	[म र भ न य न ग]	१, १५, १७
२१८	फुल्लवाम	[भ त न स र र ग]	१, १५, १७, पुष्पवाम-५, १०, १४
२१९	मृदुलकुसुमम्	[न न न न न न ल]	१,

विंशाक्षर छन्द

२२०	योगानन्द	[म म म म म म ग]	१
२२१	गीतिका	[स ज ज भ र स ल ग]	१, १२, १५, १७, गीता-९, हरिगीतम् १६.
२२२	गण्डका	[र ज र ज र ज ग ल]	१, ९, १२ १७, चित्तवृत्तम्-१, चित्र-६, वृत्तम्-१ २ १० १४, १५ १८, १९, २२, मुण्डक-१६, ईदृश-१७, मादश- १७
२२३	श्रीभा	[प म न न त त ग ग]	१ ५, १०, १४, १५ १७
२२४	सुवदना	[म र भ न य भ ल ग]	१, २, ३, ४ ५, ६, १०, १३, १५ १७, १८, १९, २०, वृत्तम्-७, २२ के अनुसार 'म र भ न य भ ल ल' लक्षण है ।

प्रमाणक	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
२२५	प्लवङ्गमङ्गलम्	[ज र ज र ज.र ल ग] १,	
२२६	शशाङ्कचलितम्	[स भ ज भ.ज भ ल ग] १,	शशाङ्करितम्-७, शशाङ्करचितम्-१०.
२२७.	भद्रकम्	[भ.भ भ भ र स ल ग] १,	नन्दकम्-१०, नागुरम्-१६.
२२८	घनवर्षिगुणगणम्	[न न न न न ल ल.] १,	

एकविंशतिक्षर छन्द

२२९	ब्रह्मानन्द	[म म म म म म म] १,	
२३०	खगधरा	[भ र भ न य म य] १, २, ३, ४, ५ ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३ १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२	
२३१.	मञ्जरी	[र न र.न र न र.] १;	तरग.-१०, तरगमातिका-१९, कनकमातिका-१७.
२३२	नरेन्द्र	[भ र न न ज ज ज] १, ९, १२, १६.	
२३३.	सरसी	[न ज भ.ज ज ज र] १, १५ १७, मुरतह-१, सिद्धिकम्-१;	सिद्धि-५, १०; सिद्धिका-६, शशि-घटना-२, ११, चित्रलता-११, चित्र-लतिका-१९, सलिलम्-१४, श्री-१४, चम्पकमालिका-१७, १९; चम्पकावली-१७, पञ्चकावली-१७
२३४.	रुचिरा	[न ज भ ज ज ज र] १, ११.	
२३५	निरुपम-तिलकम्	[न न न न न न न] १.	

द्वाविंशतिक्षर छन्द

२३६.	विद्यानन्द	[म म म म म म म ग.] १,	
२३७	हृषी	[म म.स न न न स ग] १, ९, १२, १५, १६, १७, रजतहृषी-१७.	
२३८	मदिरा	[भ भ भ भ भ भ भ ग] १, ५, १०, १४, १५, १७, सताकुसुमम्-६, ११, १६, सर्वया-१६, भागिनो-१७	
२३९.	मन्द्रकम्	[भ.र न र न र न ग.] १, मद्रकम्-२, ३, ५, १०, १८ १९, २२, मद्रकम्-६, १३, १५ २०, विगुह-चरितम्-७, १७ में 'भ र म स न र न ग' लक्षण है। मद्रक-१७, मद्रिका-१७,	
२४०	शिवरम्	[भ र म र न र न ग] १	

क्रमांक	छन्द-नाम	संक्षेप	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
२४१.	अच्युतम्	[न न न न स ज ज ग]	१.
२४२	मवातसम्	[त भ य ज.स र.न ग]	१, सितस्तवक-१७; परिस्तवक-१७
२४३	सखरयुक्तम्	[न न न न न न स]	१.

त्रयोविंशतिक्षर छन्द

२४४.	दिव्यानन्द	[म म म म म म ग ग]	१.
२४५	सुन्दरिका	[स स भ स त ज ज स ग]	१, ६, १२; सुन्दरी-१६.
	पद्मावतिका	[स स भ स त ज ज स ग]	१, १२
२४६	अद्रितनया	[न ज भ ज भ.ज भ ल ग]	१, १५, १७; अश्वलितम्-१ २, ३, १३, १७, १८, १९, २०, २२, सतित-५, १०, हयलीलाङ्गी-७
२४७	मालती	[भ भ भ भ भ भ ग ग]	१; सर्व्या १६; मत्तगजेन्द्र -१७
२४८.	मल्लिका	[ज ज ज ज ज ज स ग]	१, मानयती-१७; मानिनी-१७.
२४९	मत्ताक्रीडम्	[म म स न न न न ल ग]	१, १५, १८, १९; मत्ताक्रीडा-२, ५, ६, १०, १३, १७, २०, २२.
२५०	कनकवल्लयम्	[न न न न न न ल ल]	१.

चतुर्विंशतिक्षर छन्द

२५१	रामानन्द	[म म म म म म म]	१
२५२	दुर्मिलका	[स स स स स स स]	१ १२, दुर्मिला-२, १६, द्विमिला-१७; सर्व्या-१६,
२५३.	किरीटम्	[भ भ.भ भ भ भ भ]	१ ६, १२, १७, सुभद्र-१०, सुभद्रकम्-६, सर्व्या-१६, मेदुरवन्त-१७; मेदुरद-१७
२५४	तन्वी	[भ त न स भ भ न य]	१, २, ५, ७, १०, १३, १५, १७, १८ १९, २०, २२
२५५	माधवी	[ज ज ज ज ज ज ज]	१, अनामय-१७
२५६	तरलनयनम्	[न न न न न न न]	१

पञ्चविंशतिक्षर छन्द

२५७	कामानन्द	[म म म म म म म ग.]	१
२५८	क्रीञ्चपदा	[भ म स,भ न न न न ग]	१, २, ३, ५, ६, १०, १३, १५, १८, १९, २०, क्रीञ्चपदी-७, क्रीञ्चपदा-२२

क्रमांक छन्द-नाम लक्षण सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क

२५९. मल्ली [स स.स स स.स.स.स ग.] १; मुदिरम्-१७
 २६०. षणिगुणम् [न न न न.न न.न ल.] १.

षड्विंशाक्षर छन्द

२६१. गोविन्दानन्दः [म.म.म.म.म.म.म ग ग] १; जीमूताधानम्-१७.
 २६२. भुजङ्गवि- [म.म त न न न.र स.ल.ग.] १, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, १३, १५,
 जृम्भितम् १७, १८, १९, २०, २२.
 २६३. अथवाहः [म न.न.न.न न.न.स.ग ग] १, ५, १०, १३, १५, १७, १८, १९,
 २०; अथवाहकः-२; २२; अथवाधम्-६;
 २६४. मागधी [भ.भ.भ.भ.भ.भ.भ.ग.ग.] १; प्रियजीवितम्-१७.
 २६५. कमलदत्तम् [न न न.न.न.न.न.ल.ल.] १.

प्रकीर्णक छन्द

- १ पिपीडिका [म म त न.न न न ज भ.र.] १, ५, १०; जलद दण्डक-२२
 २ पिपीडिकाकरभः [म म त न न न.न.ल-५, ज भ.र.] १, ५, १०.
 ३ पिपीडिकापणवः [म म त न न.न न ल-१०, ज.भ.र.] १, ५, १०.
 ४ पिपीडिकामाला [म म त.न न न.न.ल-१५, ज.भ.र.] १, ५, १०.
 ५ द्वितीयत्रिभङ्गी [ल-२०, भ.ग.ग.स ग.ग.ल.ल.ग.ग.] १, १६.
 ६ शालूर. [घ.ग. ल-२४, त] १, १६.

दण्डक छन्द

१. चण्डवृष्टिप्रपात' [न.न.र-७] १, १०, १३, १५, १७, मेघमाला-३;
 चण्डवृष्टिः-५, १०, १६; चण्डवृष्टि-
 प्रपात-२, ६, १८, १९, २०, २२.
 २. प्रचितकः [म न.र-८] १, २
 ३. अर्णः [न न.र-८] १, ५, ६, १०, १३, १५, १६, १७, १८,
 १९; अर्णवः-२२.

क्रमांक	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ सङ्केताद्ध
४.	सर्वतोभद्र.	[न न य य य य य य.]	१; प्रचितक-६, १०, १३, १५, १६, १७, १८ १९.
५.	अशोककुसुम- मञ्जरी	[र ज र ज र. ज र ज र ल.]	१; अशोकपुष्पमञ्जरी-५, ६, १०, १५ १७; अशोकमञ्जरी-१६
६	कुसुमस्तम्बक	[स स स स स स स स]	१, १५, १६, १७, कुसुमस्तर-५, कुसुमस्तरण-१०.
७.	मत्तमातङ्ग	[र. र. र र र र. र र र]	१, १०; मत्तमातङ्गलीलाकर-५, १५, १७, मत्तमातङ्गलेखित -१६.
८	अनगशेखर	[ज र ज र ज र ज र ग]	१, ५, ६, १०, १५, १६, १७

अर्द्धसमवृत्त

१	पुष्पिताग्रा १३ *	[न न र य.]	२, ४ * [न ज ज. र ग]	१, २, ३, ५, ६, १०, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २२.
२	उपचित्रम् ,,	[स स स ल ग.]	,, [भ भ भ ग ग]	१, ६, १०, १३, १५; उपचित्रा- १७, उपचित्रकम्-२, ५, १८, १९, २०, २२.
३	वेगवती ,,	[स स स ग]	,, [भ भ भ ग ग.]	१, २, ५, ६, १०, १३, १५, १७, १८ १९, २०, २२.
४	हरिणप्लुता ,,	[ल स स ल ग]	,, [न भ भ र]	१, २, १०, १३, १५, १६, १७, १८, २२; हरिणीप्लुता-१९, २०, हरिणपदम-५, हरिणोद्धता-६
५	अपरवक्त्रम् ,,	[न न र ल ग]	,, [न ज ज र]	१, २, ३, ४, ५, ६, १०, १३ १५, १७, १८, १९, २०, २२
६	सुन्दरी ,,	[स स ज ग]	,, [स भ र ल ग]	१, १५, १७; प्रबोधिता-१०, विबोधिता-१९; सुरमालिका-१७, विभोगिनी-१७
७	भद्रविराट् ,,	[त ज र ग]	,, [म स ज ग ग]	१, २, १०, १३, १७, १८ १९, २०, २२; भद्रविराटिका-५

*-१,३. अर्थात् प्रथम और तृतीय चरण का लक्षण ।

*-२,४. अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ चरण का लक्षण ।

क्र.	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
८.	केतुमती १,३ [सजसग]	२,४. [भ.र.न.ग.ग.]	१, २, ३, ५, ६, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २२.
९.	वाङ्मती ,, [रज.र.ज.]	,, [ज.र.ज.र.ग.]	१; यवमती-२, ५, ६, १०, १३, १८; धमरावती-१७; यमवती-१७, २०, २२. यवध्वनि-१९; २० के अनुसार 'र.ज.र.ज.ग.' 'ज.र.ज.र.ग.' लक्षण है।
१०.	धट्पदावती ,, [ज.र.ज.र.]	,, [रज.र.ज.ग.]	१, ५, १०, १४.

विषमवृत्त

१. उद्वगता	[*१. सजसस. *२. नसज.ग. *३. भ.न.भ.ग. *४. सजसग.]	१, २, ४, ५, ६, १०, १३, १५, १७, १८, १९; उद्वगतः २०,
२. उद्वगताभेदः	[१. सजसल. २. न.स.ज.ग. ३. भ.न.ज.ल.ग. ४. स.ज.स.ग.]	१, १५, २२
३. सौरभम्	[- वसल. २. न.स.ज.ग. ३. र.न.भ.ग. ४. स.ज.स.ज.ग.]	१, १७; सौरभकम्-२, ५, ६, १०, १३, १५, १८, १९; सौरभक-२०; सौरभकतं-२२.
४. ललितम्	[१. सजसल. २. न.स.ज.ग. ३. न.न.स.स. ४. स.ज.स.ज.ग.]	१, २, ५, ६, १०, १३, १५, १७, १८, १९, २२, ललित-२०
५. भाव	[१. म.म. २. म.म. ३. म.म. ४. भ.भ.भ.ग.]	१.
६. वक्त्रम् [लक्षण अनुष्टुप् के समान है किन्तु द्वितीय और चतुर्थ चरण में 'म ग य ग.' होता है]		१, २, ३, ४, ५, ६, १०, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २२
७. पध्यावक्त्रम् [लक्षण अनुष्टुप् के समान है किन्तु द्वितीय एवं चतुर्थ चरण का पाचवाँ छठा और सातवाँ अक्षर 'जगण' होता है]		१, २, ६, १०, १३, १५, १७, १८; पध्या-५, १९, २०, २२.

*-१-प्रथम चरण का लक्षण, २-द्वितीय चरण का लक्षण, ३-तृतीय चरण का लक्षण, ४-चतुर्थ चरण का लक्षण।

वैतालीय-छन्द

क्रमाङ्क	छन्दनाम	लक्षण	संक्षेप प्रथम सङ्केताङ्क
१	वैतालीयम्	*१,३ [१४ मात्रा-कला ६, र ल ग]	१, २ ४ ६, ७ १० १३ १५
		*२,४ [१६ मात्रा-कला ८ र ल ग]	१७, १८, १९ २०, २२
२	श्रीपच्छन्दसकम्	१,३ [१६ मात्रा-कला ६, र ल ग ग]	१, २ ४ ६ ७ १० १३
		२,४ [१८ मात्रा-कला ८, र ग]	१५ १७, १८, १९ २० २२
३	श्रीपातलिका	१,३ [१४ मात्रा-कला ६, भ ग ग]	१ २ ६ ७ १० १३, १७
		२,४ [१६ मात्रा-कला ८ भ ग ग]	१८ १९ २० २२
४	नलिनम्	[१४ मात्रा-कला ६, भ ग ग]	१,
५	अपर नलिनम्	[१६ मात्रा-कला ८ भ ग ग]	१,
६	दक्षिणांतिका वैतालीयम्	[१४ मात्रा-ल ग, कला ३ र ल ग]	१, ६, १०, १३ १७, २२
७	उत्तरान्तिका वैतालीयम्	[१६ मात्रा-कला ८ र ल ग]	१, १३
८	प्राच्यवृत्ति	१,३ [१४ मात्रा-कला ६ र ल ग.]	१ २, ६ १० १३, १७,
		२,४ [१६ मात्रा-कला ३ ग, कला ३ र ल ग.]	१८, १९ २० २२
९	उदीच्यवृत्ति	१,३ [१४ मात्रा-ल ग कला ३ र ल ग]	१, २ ६, १३, १७ १८, १९ २०, २२
		२,४ [१६ मात्रा-कला ८, र ल ग]	
१०	प्रवृत्तकम्	१,३ [१४ मात्रा-ल ग कला ३ र ल ग]	१, २ ६, १०, १३, १७ १८, १९, २०, प्रसक्तकम्-
		२,४ [१६ मात्रा-कला ३, ग कला ३ र ल ग]	२२
११	अपरान्तिका	[१६ मात्रा-कला ३, ग कला ३, र ल ग]	१, २ ६ १०, १३, १७, १८, २२, अपरान्तिकम्- १९
१२	चारहासिनी	[१४ मात्रा-ल ग कला ३, र ल ग]	१, २ ६, १०, १३, १७, १८, १९

*१,३, अर्थात् प्रथम घोर तृतीय चरण का लक्षण ।

*२,४ अर्थात् द्वितीय घोर चतुर्थ चरण का लक्षण ।

(ग.) छन्दों के लक्षण एवं प्रस्तारसंख्या^{१८}

क्रमाङ्क	छन्द नाम	लक्षण	प्रस्तार संख्या
एकाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद २			
१	श्री	5	१
२	इ	।	२
द्व्यक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ४			
३	काम	5 5	१
४.	मही	। 5	२
५	सार	5 ।	३
६	मघु	। ।	४
त्र्यक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ८			
७	ताली	5 5 5	१
८	शशि	। 5 5	२
९	प्रिया	5 । 5	३
१०	रमण	। । 5	४
११	पाञ्चालम	5 5 ।	५
१२	मृगेन्द्र	। 5 ।	६
१३.	मन्दर	5 । ।	७
१४	कमलम	। । ।	८
चतुरक्षर छन्द-प्रस्तारभेद १६			
१५.	तीर्णा	5 5 5 5	१
१६	घारी	5 । 5 ।	११
१७	नगाणिका	। 5 । 5	६
१८	शुभम्	। । । ।	१६
पञ्चाक्षरछन्द-प्रस्तारभेद ३२			
१९	सम्मोहा	5 5 5 5 5	१
२०	हारी	5 5 । 5 5	५
२१	हस	5 । । 5 5	७
२२.	प्रिया	। । 5 । 5	१२
२३	यमकम	। । । । ।	३२

^{१८} यहाँ क्रमाङ्क और छन्द नाम वृत्तमौक्तिक के अनुसार दिए गए हैं। 5 चिह्न न गुरु अक्षर का सूचक है और । लघु का। अंतिम कोष्ठक में प्रस्तार भेदों की संख्या दी गई है।

क्रमांक छन्द-नाम लक्षण सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क

षडक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ६४

२४.	शेषा	५५५	५५५	१
२५.	तिलका	११५	११५	२८
२६.	विमोहम्	५१५	५१५	१६
२७.	चतुरस्रम्	१११	१५५	१६
२८.	मन्यातम्	५५१	५५१	३७
२९.	शंखनारी	१५५	१५५	१०
३०.	सुमालतिका	१५१	१५१	४६
३१.	तनुमध्या	५५१	१५५	१३
३२.	दमनकम्	१११	१११	६४

सप्ताक्षर छन्द-प्रस्तारभेद १२८

३३.	शीर्षा	५५५	५५५	५	१
३४.	समानिका	५१५	१५१	५	४३
३५.	सुवासकम्	१११	१५१	१	११२
३६.	करहृच्चि	१११	११५	१	६६
३७.	कुमारललिता	१५१	११५	५	३०
३८.	मधुमती	१११	१११	५	६४
३९.	मदलेखा	५५५	११५	५	२५
४०.	सुसुमततिः	१११	१११	१	१२८

अष्टाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद २५६

४१.	विद्युग्माला	५५५	५५५	५५	१
४२.	प्रमाणिका	१५१	५१५	१५	८६
४३.	मत्तिका	५१५	१५१	५१	१७१
४४.	तुङ्गा	१११	१११	५५	६४
४५.	कमतम्	१११	११५	१५	६६
४६.	माणवक्रकीदितकम्	५११	५५१	१५	१०३
४७.	विप्रपदा	५११	५११	५५	५५
४८.	घनुष्टुप्				
४९.	जसदम्	१११	१११	११	२५६

नवाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ५१२

५०.	रूपामाता	५५५	५५५	५५५	१
५१.	महालक्ष्मिणा	५१५	५१५	५१५	१४७

क्रमांक	छन्द-नाम	लक्षणा	प्रस्तारसंख्या
५२.	सारङ्गम्	111 155 115	२०८
५३.	पादंत्तम्	555 511 115	२४१
५४	कमलम्	111 111 115	२५६
५५	बिम्बम्	111 115 155	६६
५६	सोमरम्	115 151 151	३६४
५७	भुजगशिशुसुता	111 111 555	६४
५८.	मणिमध्यम्	511 555 115	१६६
५९.	भुजङ्गसङ्गता	115 151 515	१७२
६०.	सुललितम्	111 111 111	५१२

दशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद १०२४

६१	गोपालः	555 555 555 5	१
६२.	सद्युतम्	115 151 151 5	३६४
६३.	चम्पकमाला	511 555 115 5	१६६
६४.	सारथती	511 511 511 5	४३६
६५.	सुपमा	551 155 511 5	३६७
६६	श्रमृतगति	111 151 111 5	४६६
६७	मत्ता	555 511 115 5	२४१
६८.	त्वरितगति	111 151 111 5	४६६
६९	मनोरमम	111 515 151 5	३४४
७०	ललितगति.	111 111 111 1	१०२४

एकादशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद २०४८

७१	मालती	555 555 555 55	१
७२	बन्धु	511 511 511 55	४३६
७३	सुमुखी	111 151 151 15	८८०
७४	शालिनी	555 551 551 55	२८६
७५	वातोर्मी	555 511 551 55	३०५
७६	उपजाति	[शालिनी वातोर्मी मिश्रित]	
७७.	दमनकम्	111 111 111 15	२०२४
७८.	चण्डिका	515 151 515 15	६८३
७९	सैनिका	151 515 151 51	१३६६
८०	इन्द्रवज्रा	551 551 151 5०	३५७
८१.	उपेन्द्रवज्रा	151 551 151 55	३५८
८२.	उपजाति	[इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रा मिश्रित]	

क्रम क	छन्द नाम	लक्षण				प्रस्तारसख्या
८३	रथोद्धता	५१५	१११	५१५	१५	६६६
८४	स्वागता	५१५	१११	५११	५५	४४३
८५.	भ्रमरविलसिता	५५५	५११	१११	१५	१००६
८६	अनुकूला	५११	५५१	१११	५५	४८७
८७	मोटनकम	५५१	१५१	१५१	१५	८७७
८८.	मुकेशी	५५५	११५	१५१	५५	३४५
८९	सुभद्रिका	१११	१११	५१५	१५	७०४
९०	बकुलम्	१११	१११	१११	११	२०४८

द्वादशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ४०६६

९१	आपोड	५५५	५५५	५५५	५५५	१
९२.	भुजङ्गप्रयातम	१५५	१५५	१५५	१५५	५८६
९३	लक्ष्मीधरम	५१५	५१५	५१५	५१५	११७१
९४	तोटकम	११५	११५	११५	११५	१७५६
९५	सारङ्गकम	५५१	५५१	५५१	५५१	२३४१
९६	भौतिकदाम	१५१	१५१	१५१	१५१	२९२६
९७	मोदकम	५११	५११	५११	५११	३५११
९८	सुन्दरी	१११	५११	५११	५१५	१४६४
९९	प्रमिताक्षरा	११५	१५१	११५	११५	१७७२
१००	चन्द्रवर्त्म	५१५	१११	५११	११५	१६७६
१०१	द्रुतविलम्बितम	१११	५११	५११	५१५	१४६४
१०२	वशस्पविला	१५१	५५१	१५१	५१५	१३८२
१०३	इन्द्रयशा	५५१	५५१	१५१	५१५	१३८१
१०४	उपजाति	[वशस्पविलेन्द्रयशा मिश्रित]				
१०५	जलोद्धतगति	१५१	१८५	१५१	११५	१८८६
१०६	वंश्यदेवी	५५५	५५५	१५५	१५५	५७७
१०७	मन्दाकिनौ	१११	१११	५१५	५१५	१२१६
१०८	कुसुमविचित्रा	१११	५५	१११	१५५	९७६
१०९	तामरसम्	१११	१५१	१५१	१५५	८८०
११०	मालती	१११	१५१	१५१	५१५	१३९२
१११.	मणिमाला	५५१	१५५	५५१	१५५	७८१
११२	अक्षयमाला	५५५	५११	११५	५५५	२४१
११३.	प्रियम्बदा	१११	५११	१५१	५१५	१४००
११४	सलिला	५५१	५११	१५१	५१५	१३९७

क्रमांक	छन्द नाम	लक्षण				प्रस्तारसख्या
११५.	सलितम्	5 1 1	5 5 1	1 1 1	1 1 5	२०२३
११६.	कामदत्ता	1 1 1	1 1 1	5 1 5	1 5 5	७०४
११७	यसन्तघत्वरम	1 5 1	5 1 5	1 5 1	5 1 5	१३६६
११८	प्रमुदितयदना	1 1 1	1 1 1	5 1 5	5 1 5	१२१६
११९	नक्षमालिनी	1 1 1	1 5 1	5 1 1	1 5 5	६४४
१२०	तरलनयनम	1 1 1	1 1 1	1 1 1	1 1 1	४०६६

त्रयोदशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ८१६२

१२१	वाराह	5 5 5	5 5 5	5 5 5	5 5 5	5	१
१२२	माया	5 5 5	5 5 1	1 5 5	1 1 5	5	१६३३
१२३	तारकम	1 1 5	1 1 5	1 1 5	1 1 5	5	१७५६
१२४	कन्दम	1 5 5	1 5 5	1 5 5	1 5 5	1	४६८२
१२५	पङ्कावलि	5 1 1	1 1 1	1 5 1	1 5 1	1	७०३६
१२६	प्रहृषिणी	5 5 5	1 1 1	1 5 1	5 1 5	5	१४०१
१२७	वचिरा	1 5 1	5 1 1	1 1 5	1 5 1	5	२८०६
१२८	चण्डी	1 1 1	1 1 1	1 1 5	1 1 5	5	१७६२
१२९	मञ्जुभगिणी	1 1 5	1 5 1	1 1 5	1 5 1	5	२७६६
१३०	चन्द्रिका	1 1 1	1 1 1	5 5 1	5 5 1	5	२३६८
१३१	कलहस	1 1 5	1 5 1	1 1 5	1 1 5	5	१७७२
१३२	मृगेन्द्रमुखम	1 1 1	1 5 1	1 5 1	5 1 5	5	१३६२
१३३	क्षमा	1 1 1	1 1 1	5 5 1	5 1 5	5	
१३४	लता	1 1 1	1 1 5	1 5 1	1 5 1	5	२६१२
१३५	चन्द्रलेखम्	1 1 1	1 1 5	5 1 5	5 1 5	5	११८४
१३६	सुद्युति	1 1 1	1 1 5	5 5 1	5 5 1	5	२३३६
१३७	लक्ष्मी	5 5 1	5 1 1	1 1 5	1 5 1	5	२८०५
१३८	विमलगति	1 1 1	1 1 1	1 1 1	1 1 1	1	८१६२

चतुर्दशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद १६३८४

१३९.	सिंहास्य	5 5 5	5 5 5	5 5 5	5 5 5	5 5	१
१४०.	यसन्ततिलका	5 5 1	5 1 1	1 5 1	1 5 1	5 5	२६३३
१४१.	चक्रम्	5 1 1	1 1 1	1 1 1	1 1 1	1 5	८१६१
१४२	धसम्बाधा	5 5 5	5 5 1	1 1 1	1 1 5	5 5	२०१७
१४३	अपराजिता	1 1 1	1 1 1	5 1 5	1 1 5	1 5	५८२४
१४४	प्रहरणकतिका	1 1 1	1 1 1	5 1 1	1 1 1	1 5	८१२८
१४५	घासन्ती	5 5 5	5 5 1	1 1 1	5 5 5	5 5	४८१

क्रमांक	छन्द-नाम	लक्षण						प्रस्तारसख्या
१४६	सोला	५५५	११५	५५५	५११	५५	३०६७	
१४७	नागदीमुखी	१११	१११	५५१	५५१	५५	२३६८	
१४८	धैवर्भी	५५५	५११	१११	१५५	५५	१००६	
१४९	इन्दुवदनम्	५११	१५१	११५	१११	५५	३८२३	
१५०.	शरभी	५५५	५११	१११	५५१	५५		
१५१	अहिष्पति	१११	१११	५११	१५१	१५	७०६६	
१५२	विमला	१११	१५१	५११	१५१	१५	७०८८	
१५३	मल्लिका	११५	१५१	११५	१५१	१५		
१५४	मणिगणम्	१११	१११	१११	१११	११	१६३८४	

पञ्चदशाक्षर छन्द प्रस्तारभेद ३२७६८

१५५	लीलाखेल	५५५	५५५	५५५	५५५	५५५	१
१५६.	मालिनी	१११	१११	५५५	१५५	१५५	४६७२
१५७.	धामरम्	५१५	१५१	५१५	१५१	५१५	१०६२३
१५८	भ्रमरावलिका	११५	११५	११५	११५	११५	१४०४४
१५९	वनोहस	११५	१५१	१५१	५११	५१५	११६२८
१६०	शरभम्	१११	१११	१११	१११	११५	१६३८४
१६१	निशिपालकम्	५११	१५१	११५	१११	५१५	१२०१५
१६२	विपिनतिलकम्	१११	११५	१११	५१५	५१५	६६६६
१६३	चन्द्रलेखा	५५५	५१५	५५५	१५५	१५५	४६२५
१६४.	चित्रा	५५५	५५५	५५५	१५५	१५५	४६०६
१६५.	केसरम्	१११	१५१	५११	१५१	५१५	११०८४
१६६	एला	११५	१५१	१११	१११	१५५	८१७२
१६७.	प्रिया	१११	१११	५५१	५११	५१५	११५८४
१६८	उत्सव	५१५	१११	५११	५११	५१५	११७०७
१६९	वज्रगणम्	१११	१११	१११	१११	१११	३२७६८

षोडशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ६५५३६

१७०	राम	५५५	५५५	५५५	५५५	५५५	५	१
१७१	पञ्चचामरम्	१५१	५१५	१५१	५१५	१५१	५	२१८४६
१७२	नीलम	५११	५११	५११	५११	५११	५	२८०८७
१७३	षञ्चला	५१५	१५१	५१५	१५१	५१५	१	४३६६१
१७४	भदनललिता	५५५	५११	१११	५५५	१११	५	२६१६६
१७५	वाणिनी	१११	१५१	५११	१५१	५१५	५	१११८४

क्रमांक	छन्द नाम	लक्षण	प्रस्तारसख्या
१७६.	प्रवरत्नलितम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	१०,१७८
१७७	गण्डकृतम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	१६,३७६
१७८	चकित्ता	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	३०,७५१
१७९	गजतुरगविलसितम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	३२,७२७
१८०	शैलशिखा	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	
१८१.	त्नलितम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	३०,१५१
१८२	सुकेशरम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	
१८३	ललना	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	
१८४	गिरिवरपति	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	६५,५३६

सप्तदशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद १,३१,०७२

१८५	लीलाघृष्टम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	१
१८६	पृथ्वी	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	३८,७५०
१८७	मालावती	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	३८,७५२
१८८	शिलरिणी	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	५६,३३०
१८९	हरिणी	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	४६,११२
१९०.	मन्दाक्रान्ता	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	१८ ६२६
१९१	वशपत्रपतितम	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	६४,६८३
१९२	नद्वैकम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	५६,२४०
	द्विकलकम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	५६,२४०
१९३	हारिणी	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	३७,८७३
१९४	नाराक्रान्ता	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	४६,५७७
१९५.	मतङ्गवाहिनी	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	
१९६	पञ्चकम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	
१९७	वशमुखहरम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	१,३१,०७२

अष्टदशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद २,६२,१४४

१९८	सीलाचन्द्रः	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	१
१९९	मञ्जीरा	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	१२,६७२
२००	चर्वरी	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	६३,०१६
२०१	श्रीडाचन्द्रः	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	३७,४५०
२०२	कुमुदितलता	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	३७,८५७
२०३	नन्दनम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	७६,७२०
२०४	नाराच	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	७४,६४४
२०५.	वित्रलेता	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	३७,८७३

क्रमांक	छन्द नाम	संक्षेप	प्रस्तारसंख्या
२०६	भ्रमरपदम्	५११ ५१५ १११ १११ १११ ११५	१,३०,६७१
२०७	शाद्वृत्तललितम्	५५५ ११५ १५१ ११५ ५५१ ११५	१,१६,५६६
२०८	सुललितम्	१११ १११ ५५५ ५५१ ५११ ५१५	
२०९	उपवनकुसुमम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११	२,६२ ४४

एकीनविंशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ५,२४,२८८

२१०	नागानन्द	५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५	१
२११	शाद्वृत्तलिक्रीडितम्	५५५ ११५ १५१ ११५ ५५१ ५५१ ५	१,४६,३३७
२१२.	धन्द्रम्	१११ १११ १११ १५१ १११ १११ १	५,२३,२६४
२१३	धयलम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ ५	२,६२,१४४
२१४	शम्भु	११५ ५५१ १५५ ५११ ५५५ ५५५ ५	३,१७२
२१५	मेघविस्फूर्जिता	१५५ ५५५ १११ ११५ ५१५ ५१५ ५	७५,७१४
२१६.	छाया	१५५ ५५५ १११ ११५ ५५१ ५५१ ५	१ ४६,४४२
२१७	सुरसा	५५५ ५१५ ५११ १११ १५५ १११ ५	२,३७,४५७
२१८	फुल्लदाम	५५५ ५५१ १११ ११५ ५१५ ५१५ ५	८५,७४५
२१९	मृदुलकुसुमम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १	५,२४,२८८

विंशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद १०,४८,५७६

२२०	योगानन्द	५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५	१
२२१	गीतिका	११५ १५१ १५१ ५११ ५१५ १५१ १५	३७२,०७६
२२२	राण्डका	५१५ १५१ ५१५ १५१ ५१५ १५१ ५१	६६६,०५१
२२३	शोभा	१५५ ५५५ १११ १११ ५५१ ५५१ ५५	१५१,४६०
२२४.	सुवदना	५५५ ५१५ ५११ १११ १५५ ५११ १५	४,६६ ८३३
२२५	प्लवङ्गमङ्गलम्	१५१ ५१५ १५१ ५१५ १५१ ५१५ १५	
२२६	शशाङ्कचलितम्	५५१ ५११ १५१ ५११ १५१ ५११ १५	
२२७	भद्रकम	५११ ५११ ५११ ५११ ५१५ ११५ १५	
२२८	अनन्दिपुष्पलम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ ११	१०,४८,५७६

एकविंशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद २०,६७,१५२

२२९	ब्रह्मानन्द	५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५	१
२३०	स्रग्धरा	५५५ ५१५ ५११ १११ १५५ १५५ १५५	३,०२ ६६३
२३१	मञ्जरी	५१५ १११ ५१५ १११ ५१५ १११ ५१५	७६५,६२७
२३२	नरेन्द्र	५११ ५१५ १११ १११ १५१ १५१ १५१	४,५०,५१६
२३३	सारसी	१११ १५१ ५११ १५१ १५१ १५१ ५१५	७,११ ६००
२३४	हचिरा	१११ १५१ ५११ १५१ १५१ १५१ ५१५	७,११,६००
२३५	निरुपमतिलकम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १११	२० ६७ १५२

श्रमाक	छन्द-नाम	लक्षण	प्रस्तारसंख्या
द्वाविंशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ४१,६४,३०४			
२३६.	विद्यानन्द	५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५	१
२३७	हृसी	५५५ ५५५ ५५५ ॥१ ॥१ ॥१ ॥१५ ५	१०,४८,३२१
२३८	मदिरा	५११ ५११ ५११ ५११ ५११ ५११ ५११ ५	१७,६७,५५६
२३९	मन्द्रकम्	५११ ५१५ १११ ५१५ १११ ५१५ १११ ५	१६,३१,२२३
२४०	शिल्वरम्	५११ ५१५ १११ ५१५ १११ ५१५ १११ ५	१६,३१,१२३
२४१	अच्युतम्	१११ १११ १११ १११ ११५ १३१ १५१ ५	
२४२.	मदालसम्	५५१ ५११ १५५ १५१ ११५ ५१५ १११ ५	१६,१५,५०६
२४३.	तरुवरवत्तम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १११ १	४१,६४,३०४

त्रयोविंशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ८३,८८,६०८

२४४.	दिव्यानन्दः	५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५	१
२४५.	सुन्दरिका	११५ ११५ ५११ ११५ ५५१ १५१ १५१ १५	३५,६०,०४४
	पद्यावतिका	११५ ११५ ५११ ११५ ५५१ १५१ १५१ १५	३५,६०,०४४
२४६	अत्रितनया	१११ १५१ ५११ १५१ ५११ १५१ ५११ १५	३८,६१,४२४
२४७	मालती	५११ ५११ ५११ ५११ ५११ ५११ ५११ ५५	१७,६७,५५६
२४८	मल्लिका	१५१ १५१ १५१ १५१ १५१ १५१ १५१ १५	३५,६५,११८
२४९	मत्ताक्रीडम	५५५ ५५५ ५५१ १११ १११ १११ १११ १५	४१,६४,०४६
२५०.	कनकवलयम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १११ ११	८३,८८,६०८

चतुर्विंशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद १,६७,७७,२१६

२५१.	रामानन्द	५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५	१
२५२	दुर्मिलका	११५ ११५ ११५ ११५ ११५ ११५ ११५ ११५	७१,६०,२३६
२५३	चिरीटम्	५११ ५११ ५११ ५११ ५११ ५११ ५११ ५११	५३,८०,४७१
२५४	सग्वी	५११ ५५१ १११ ११५ ५११ ५११ १११ १५५	३६,५५,३६७
२५५.	माघवी	१५१ १५१ १५१ १५१ १५१ १५१ १५१ १५१	१,१६,८३,७२६
२५६	तरलनयनम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १११ १११	१,६७,७७,२१६

पञ्चविंशाक्षर छन्द-प्रस्तारभेद ३,३५,५४,४३२

२५७	रामानन्द	५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५	१
२५८.	क्रीञ्चपदा	५११ ५५५ ११५ ५११ १११ १११ १११ १११	५१,६७,७६ ३८१
२५९	मन्त्री	११५ ११५ ११५ ११५ ११५ ११५ ११५ ११५	७१ ६०,२३६
२६०	मणिगुणम्	१११ १११ १११ १११ १११ १११ १११ १११	३,३५,५४,४३२

अर्धसम-वृत्त

श्रमाक ध्वन्द-नाम	प्रथम और तृतीय चरण का लक्षण	द्वितीय और चतुर्थ चरण का लक्षण
१. पुष्पिताप्रा	111 111 515 155	111 151 151 515 5
२. उपचित्रम्	115 115 115 15	511 511 511 55
३. वेगवती	115 115 115 5	511 511 511 55
४. हरिणप्लुता	515 115 115 15	111 511 511 515
५. अपरवचनम्	111 111 515 55	111 151 151 515
६. सुन्दरी	115 115 151 5	115 511 515 15
७. भद्रधिराट्	551 151 515 5	555 155 151 55
८. केतुमती	115 151 115 5	511 515 111 55
९. षाड्मती	515 151 515 151	151 515 151 515 5
१०. पट्टपदावली	151 515 151 515	515 151 515 151 5

विषमवृत्त

१. उद्गता	[प्र.च.] ^८ 115 151 115 1	[द्वि.च.] ^८ 111 115 151 5
	[तृ.च.] ^८ 511 111 511 5	[च.च.] ^८ 115 151 115 5
२. उद्गताभेदः	[प्र.च.] 115 151 115 1	[द्वि.च.] 111 115 151 5
	[तृ.च.] 511 111 151 15	[च.च.] 115 151 115 5
३. सौरभम्	[प्र.च.] 115 151 115 1	[द्वि.च.] 111 115 151 5
	[तृ.च.] 515 111 511 5	[च.च.] 115 151 115 151 5
४. सलितम्	[प्र.च.] 115 151 115 1	[द्वि.च.] 111 115 151 5
	[तृ.च.] 111 111 115 115	[च.च.] 115 151 115 151 5
५. भाष	[प्र.च.] 555 555	[द्वि.च.] 555 555
	[तृ.च.] 555 555	[च.च.] 511 511 511 5
६. वचनम्		[समचरणे] 555, 5 155 5
७. पट्टापचनम्		[समचरणे] 151 (५ ६ ७ वां वर्ण)

८[प्र.च.] प्रथम चरण का लक्षण ।
[तृ.च.] तृतीय चरण का लक्षण ।

[द्वि.च.] द्वितीय चरण का लक्षण
[च.च.] चतुर्थ चरण का लक्षण

(घ.) विरुदावली छन्दों के लक्षण^३

छन्द-नाम	वर्णसंख्या या मात्रासंख्या	लक्षण	विशेष
द्विगा कलिका	१६ मा०च०	४-चतुष्कल	चतुष्कल की मंत्री
रादिकलिका	२० मा०च०	४-पञ्चकल	१-२ और ३-४ पञ्चकलों की मंत्री
मादिकलिका	४८ मा०च०	मागण, षट्कल-७	
भादिकलिका	२४ मा०च०	त्रिकल-८, अर्थात् नगण ८, अनुप्रासपुञ्ज	
गलादिकलिका	२० मा०च०	४-पञ्चकल, प्रत्येक पञ्चकल के आदि में गुरु	
मिथ्या कलिका	२७ व०च०	गुरु-लघु-मिथ	तिल-तंदुल के समान गुरु और लघु मिथित हों ।
(१) मध्या कलिका		आदि और अन्त में कलिका और मध्य में गद्य	
(२) मध्या कलिका		आदि और अन्त में मंत्री-रहित गद्य और मध्य में कलिका ।	
द्विभङ्गी कलिका	२८ व०च०	गुरु-लघु-क्रम से २४ वर्ण, अन्त में ४ गुरु	६ भंग होते हैं इनमें भंग होने पर भी मंत्री होती है । द्वितीय और चतुर्थ मधुर एव श्लिष्ट होते हैं ।
विदग्धत्रिभङ्गी कलिका	२४ व०च०	त न, त न, त न, भ. भ.	युगार्ण-भग और दोनों भगणों की मंत्री

^३कलिका में प्रत्येक के चार चरण होते हैं । चण्डवृत्तों में प्रत्येक में ६, ८, १०, १२, १४ तक कलिका विरुद होते हैं । विरुद तीन होते हैं । धीर, धीर, देव आदि सम्बोधन होते हैं । यहाँ केवल चण्डवृत्त छन्दों के लक्षण मात्र दिये गये हैं, कलिका विरुदादि के नहीं दिये गये हैं क्योंकि ये ऐच्छिक होते हैं ।

सकेत—म = मगण, य = यगण, र = रगण, स = सगण, त = तगण, ज = जगण, भ = भगण, न = नगण, ग = गुरु, ल = लघु, षट्कल = ६ मात्रा, पञ्चकल = ५ मात्रा, चतुष्कल = ४ मात्रा, त्रिकल = ३ मात्रा, व = चतुष्पदी, घ = वर्ण, मा = मात्रा

छन्द-नाम	वर्णसंख्या या मात्रासंख्या	लक्षण	विशेष
तुरगत्रिभंगी कलिका पद्य " "	२२ व०च० ३२ मा०च०	त भ ल, त भ ल, त भ ल ग	देखें, प्रथम लंड के चतुर्थ प्रकरण में पञ्चावती, त्रिभङ्गी, वण्डकलादिछन्द
हरिणप्सुत " "	३३व०च०	न य भ, न य भ, न य भ, भ, भ.	६ भग हों और दोनों भगणों की मंत्री हो ।
नतंक भुजङ्ग " "	३४व०च० ३०व०च०	न.य.भ, न य भ, न य.भ, न.ज ल म भ ल ल, म भ ल ल, म भ ल.ल, भ भ.	दूसरे और चौथे में भग, शुचि चित् चौथे में भग न भी हो, दोनों भगणों की मंत्री हो ।
चक्षिगतात्रिगता सलिता " "	३३व०च० ३०व०च०	म न न, म न.न, म न न, भ भ त न.भ, त.न भ त न भ, भ.	तृतीय वर्ण में भग हो । द्वितीय वर्ण में भंग हो ।
चरतनु " "	३६व०च०	न.य न ल, न य न ल, न य न ल. भ भ	६ भग होते हैं ।
मुग्धा द्विपादिका युग्म- भगा कलिका	२०व०च०	म त, ल म त ल, भ.भ.	युग्मभग
प्रगल्भा मध्या(१), " (२), " (३), " (४)	१८व०च० १८व०च० १४व०च० ११व०च०	म त ल, म त ल, ग.ग य ग. म भ ल म भ भ म ल भ न ज ल. न न ल ल ल न ज न ल ल.	
शिथिला, मधुरा तरुणी " "	१८व०च० २२व०च० २०व०च०	म त ल, म त ल, ल ल ल ल म भ ल ल, म भ ल ल भ, भ म भ ल ल, म भ ल ल, ग ग ग.ग.	
प्रति धरण-वर्ण			
पुटयोत्तम घण्टयूत	६	त भ.भ.	४, ८ वर्ण मिल्य; ३, ६ वर्ण दीर्घ;
तिलक शम्भुत धटित " "	१५ २४ १३	न न ल न.न म य न य.न य.न.य. भ.न.ज ल ल.	१०वां वर्ण मधुर; छठा वर्ण श्लिष्टपर; ४ या = पर होते हैं । २, ६, १२वां वर्ण श्लिष्ट

छन्द-नाम	प्रति चरण-वर्ण	लक्षण	विशेष
रण	१२ (१४)	ज.र.ज.र. अन्तिम चरण में-ज.भ.स.ज. भ.स.	१, ३, ५, ७, ९, ११वां वर्णं द्दिलष्ट; पद - संख्या ऐच्छिक होती है।
धीर	१२	भ.भ.न.न	१, २, ३, ४, वर्णं द्दिलष्ट; पद-संख्या १२
शाक	१०	भ.भ.र.स	५वां वर्णं द्दिलष्ट; ७, ९वां वर्णं दीर्घं; दूसरा वर्णं मधुर;
मातङ्गधेयित	१०	र.र.य.रु.	५, १०वां वर्णं द्दिलष्ट या मधुर; ५वें वर्णं पर भंग धीर मंत्री; १, ३, ६, ८वां वर्णं दीर्घं; पद - संख्या ऐच्छिक;
चत्पल	६ (१२)	भ.भ. मतान्तरे-भ.भ.भ.म.	२, ५वां वर्णं द्दिलष्ट; पद- संख्या ऐच्छिक;
गुणरति	७ (१४)	स.न.ल मतान्तरे-स.न.स.न.ल	३ रा वर्णं दीर्घं; पद-संख्या ऐच्छिक;
कल्पद्रुम	६	त.ज.य.	२, ३, ६, ९वां वर्णं द्दिलष्ट; ६वां वर्णं द्दिलष्टपर; पद- संख्या ऐच्छिक;
कन्दल	६	भ.भ.	२ रा वर्णं मधुर, ५वां वर्णं द्दिलष्ट;
अपरराजित	११	भ.स.ज.प.ल.	२ रा वर्णं मधुर; ६, ८, १०वां वर्णं दीर्घं;
नत्तंन	११	स.स.र.न.ल.	४, ७वां वर्णं द्दिलष्ट; ८वां वर्णं मधुर;
तरन्समस्त	११	ज.भ.स.ल.ल.	३, ५, ६ वर्णं द्दिलष्ट, संद्दिल- ष्ट एवं मधुर,
वेष्टन	१०	न.भ.ल.ल.ल.ल.	७वा वर्णं द्दिलष्ट; ५, ६, वर्णं दीर्घं
अस्खलित	१०	त.र.भ.ल.	३, ५, ७, ८वां वर्णं सद्दिलष्ट; प्रथम वर्णं दीर्घं;
पल्लवित	१३	भ.स.न.स.ल.ल.ल.	२ रा वर्णं शिथिल या मधुर, ४, ५वा वर्णं दीर्घं;

छन्द-नाम	प्रति चरणवर्ण	लक्षण	विशेष
समप्रम् ,	१०(१३)	ज र ज र. अन्तिम चरण मे-ज र ज र ल	३ रा वर्ण मधुर; ५वां वर्ण द्विलिप्ट; पद-सख्या ऐच्छिक.
तुरग ,	१०	भ न ज ल.	२, ६वां वर्ण मधुर, पद- सख्या ऐच्छिक;
पङ्केह ,	६	न य	छठा वर्ण क्वर्ण रचित छठा वर्ण मधुर और इसी वर्ण पर भग और मंत्री भी । इकारादि स्वरभेद होने पर इसी छन्द के भेद धनते हैं । पद-सख्या ऐच्छिक ।
सितकञ्ज ,	६	न य.	छठा वर्ण चवर्णाय, शेष पङ्केह के अनुसार ।
पाण्डुत्वल ,	६	न य	छठा वर्ण टवर्णाय, शेष पङ्केह के समान ।
इन्दीवर ,	६	न य	छठा वर्ण तवर्णाय, शेष पङ्केहवत् ।
अक्षणाभोरह ,	६	न य	छठा वर्ण पवर्णाय; शेष पङ्केहवत् ।
फुलाम्बुज ,	६	न य	छठे वर्ण का भग और मंत्री यवर्णाय लकार से होती हैं ।
चम्पक ,	६	भ न	२ रा वर्ण मधुर एव चर्चित द्विलिप्ट, पद सख्या ऐच्छिक ।
वञ्जुल ,	७	न ज ल	५वां वर्ण मधुर, पद सख्या ऐच्छिक ।
कुन्द ,	६	भ.ज	२, ६ वर्ण मधुर एव चर्चित द्विलिप्ट; पद सख्या ऐच्छिक शृङ्खलाबद्ध;
बहुलभासुर ,	१६मा०	४ घतुक्ल, जगण रहित	तृतीय भगण शृङ्खलाबद्ध, पद-सख्या ऐच्छिक;
बहुलमङ्गल ,	१२व०	भ.भ.भ.	प्रथम मञ्जरी पञ्चात् कीरक, मञ्जरी का लक्षण नहीं, प्राप्त यवर्णित शृङ्खला रहित; २० पद;
मञ्जरी कीरक	१२व०	भ.भ.भ.भ.	

छन्द-नाम	प्रतिचरण वर्ण	लक्षण	विशेष
गुच्छक	१६	न स ङ न ज.ल.	सानुप्रास एवं यमकावित्त; १६ पद,
कुसुम	१२	न न न न	२० पद, पादान्तयमक;
दण्डवत्रिभङ्गी- कलिका	३३	न न. र-६.	पद-सख्या ऐच्छिक
सम्पूर्णविदग्ध- त्रिभंगी कलिका	२४	त न त न त.न. भ भ	८ पद; आशी पद्ययुक्त; द्वितीयाक्षर मे भग,
मिश्रकलिका		कलिका लक्षण-भ.न.ज ल.	६ कलिका, आद्यन्त में आशी पद्य, मध्य में कलिका विरहसहित.

साधारण चण्डवृत्त सामान्यलक्षण—कला-प्रास ऐच्छिक; वर्ण सख्या ३ से कम नहीं और १७ वर्ण से अधिक नहीं । जिस गण से प्रारम्भ हो वही गण अन्त तक रहना चाहिये । प्र, ङ, प्र, स्फु, स्मि, स्म, वय इत्यादि सयुक्त वर्णों के संयोग होने पर भी इस प्रकरण में पूर्व-पूर्व वर्णों का लघुत्व होता है । मात्रिक में चतुष्कलद्वय होने पर जगण का प्रयोग निषिद्ध है । इसके अनेक भेद होते हैं ।

साप्तविभक्तिकीकलिका (प्रथमा विभक्ति) भ. स; (द्वितीया०) न. य; (तृतीया०) न.न.स ल.; (चतुर्थी०) त त. त., (पचमी०) य य; (षष्ठी०) त. त, (सप्तमी०) झ. स, (सम्बोधन) त न, सब विभक्तियों के चार-चार चरण होते हैं ।

अक्षमयी कलिका अ से क्ष पर्यन्त प्रत्येक अक्षर के दो चतुष्कल होते हैं । चतुष्कल में S S, । । । ।, S । ।, । । S का यथेच्छ प्रयोग, जगण का प्रयोग निषिद्ध है ।

सर्वलघुकलिका १५, १६ या १७ सर्व लघु कलिका सहित

खण्डावली

तामरस खण्डावली	११	र स.स ल.ल	कलिका के आद्यन्त में विरह- रहित आशी पद्य
मञ्जरी खण्डावली	१६मा०	चार चतुष्कल जगण रहित	आद्यन्त में आशी पद्य

पञ्चम परिशिष्ट

सन्दर्भ-गन्थों में प्राप्त वर्णिक-वृत्त*

प्रस्ताव- सहया	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
चतुरक्षर-छन्द			
२.	बीडा	य ग	१०, ६; श्रीडा-१७; वृद्धि-१६
३.	सप्तद्विः	र ग	१०; पुण्य-११; नन्द-१७; चर्द्धि १६
४.	सुमतिः	स ग	१०, १६; भ्रमरी-११; दोला-१७; रामा-१७,
५.	सोमप्रिया	त ग	१०; धरा-१७; तारा-१६.
७	सुमुखी	भ ग	१०, १६; ललिता-११, धमा-१७.
८	भृगवधू	न ग	७, १०, १५; सती-१७; मयु-१६; कुसुमिता- २२; तरणिजा-१७
९	सुधम्	स ल	१७; गोपाल-१७, यली-१६.
१०	वारि	य ल	१७; कर्त्-१७, सप्त-१६
१२	काद	स रु	१७; बीद-१७; बदली-१६
१३	सावुरि	त ल	१७; कृष्ण-१७; मयु-१६
१४.	ऋजु	ज ल	१७, जपा-१६.
१५	धनुजु	भ ल	१७; निद्रि-१७; जतु-१६.
पञ्चाक्षर-छन्द			
२	नाली	य ग ग	१७;
३	प्रीति.	र ग ग	१०, १६, सूरिणी-१७.
४	घनपदिन	स ग ग	१०; प्रगुण-१७, चतुर्विंश-१७; सुदती-१६
६.	सती	ज ग ग	१०, १६, दिला-११, कण्ठी-१७
८	कस्तुरि	न ग ग	१७;

* जिन छन्दों का वृत्तमोक्षितक में समावेश नहीं हुआ है और जो ग्रन्थ सन्दर्भ ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं वे प्रथमिष्ट छन्द प्रस्ताव-क्रम से इस परिशिष्ट में दिए गए हैं। प्रारम्भ में प्रस्तावनाक्रम से उस छन्द की प्रस्ताव-सहया दी है, तत्पश्चात् छन्द का नाम और उसके लक्षण दिए हैं। तदनन्तर सन्दर्भ-ग्रन्थ का संकेत और छन्द का नाम-भेद एवं सन्दर्भ-ग्रन्थ का संकेत-सांक दिया है। सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची और संकेतार्थ पृष्ठ ४१४ के अनुसार है।

प्रस्तार-संख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-पङ्क्तौ
६.	सायित्री	म ल ग	१०; हासिका-१७
१०.	जया	य ल ग	६, १०; नरी-१७.
११.	विदग्धकः	र ल ग	१०; यागुरा-११; वैनस-१७; शामिनी-२२; धृति-१६
१३	नन्दा	त ल ग	६, १०, १६; कणिका-१७
१४	शिला	ज ल ग	१७.
१५.	रतिः	भ ल ग	१०; मण्डलम्-१७; शर्म-१६
१६.	अभिमुखी	न ल ग	१०; मृगचपला-११; कनकमुखी-११; धृति-१६; सुलू-१७
१७.	कुम्भारि	म ग ल	१७.
१८.	भ्रूः	घ ग ल	१७.
१९.	ह्रीः	र ग ल	१७.
२०.	पालि	स ग ल	१७.
२१.	किञ्जलिक	त ग ल	१७
२२.	घाट्टि	ज ग ल	१७
२३.	विट्	भ ग ल	१७
२४.	पाशु	न ग ल	१७
२५	मालीनम्	म ल ल	१७.
२६	बरीय	य ल ल	१७.
२७	कल्किः	र ल ल	१७
२८	जतु	स ल ल	१७.
२९	छिद्रम्	त ल ल	१७
३०.	क्षुपम्	ज ल ल	१७; हरम-१७
३१	क्षुत्	भ ल ल	१७; विष्णु-१७.

षडक्षर-छन्द

	शिल्लण्डिनी	य म	१०, २०; पन्या-१७
३	मालिनी	र म	३, १०; करेणु-१७.
४	सूचीमुखी	स म	१०, २०, अभिव्या-१७.
५	वध्नू.	त म	१७.
६	कञ्जा	ज म	१७
७.	विक्रान्ता	भ म	१०, सिन्धुरया-१७
८.	गुणवती	न म	१७
९	मुनन्दा	म घ	१०, तन्त्री-१७; तटी-१६
११.	पिकाली	र घ	१७

प्रस्ताव-संख्या	धन्द नाम	सदस्य	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
१२	विमला	स य	१०, कमनी-१७
१४.	धरजस्वा	ज य	१७
१५.	कामलतिका	भ य	१०; ईति-१७; कामललिता-१६
१७.	तटी	म र	१०; अषोढा-१७
१८	कच्छपी	य र	१७.
२०	मृदुकीला	स र	१७.
२१	जता	त र	१०; स्याती-१७.
२२.	बलीमुखी	ज र	१७
२३.	लघुमातिनी	भ र	१०, मुनकम्-१७
२४	निरसिका	न र	१७, मणिवचि-१६
२५.	मुकुलम	म स	१०, १६; वीथी-११, निस्का-१७
२६	भद्रगा	य स	१७
२७	कर्मदा	र स	१७.
२६	यसुमती	त स	१०, १७
३०	पुही	ज स	१७
३१.	सौरभि	भ स	१७.
३२	सरि	न स	१७.
३३	साहृति	म त	१७
३४	विन्दू	य त	१७
३५	मन्त्रिका	र त	१७
३६.	दुष्ढि	स त	१७
३८.	क्षमापालि	ज त	१७
३९.	राडि	भ त	१७
४०	अनिभूतम्	न त	१७
४१	मड कुरम्	म ज	१७.
४२	चत्तहारि	य ज	१७
४३	आर्भवम	र ज	१७
४४.	मधुमारकम्	स ज	१७.
४५	हाटकशालि	त ज	१७
४७.	पाकलि	भ ज	१७.
४८	पुटमर्दि	न ज	१७.
४९	कसरि	म भ	१७
५०	सोमधुति	य भ	१७.
५१	सोपधि	र भ	१७

प्रस्तार- सख्या	छन्दनाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ सङ्केताङ्क
५२	गुरुमध्या	स भ	१०, शालघृति-१७
५३.	इन्धा	त भ	१७
५४	सावदु	ज भ	१७
५५.	मन्दि	भ भ	१७
५६	अयमितम	न भ	१७.
५७.	प्रोया	म न	१७
५८	श्रुति	य न	१७
५९	कच्छपी	र न	१०, प्रतरि-१७.
६०	विससि	स न	१७
६१	श्रतिकलि	त न	१०.
६२.	मुबामि	ज न	१७
६३	अनति	भ न	१७

सप्ताक्षर-छन्द

२.	प्रहाण	य म ग	१७.
३	संरथी	र म ग	१७
४	शम्बुक	स म ग	१७
५	निम्नाशया	त म ग	१८.
६.	सुमोहितः	ज म ग	१७.
७	अधीरा	भ म ग	१७
८	होला	न म ग	१७
९	इभभ्रान्ता	म य ग	१७
१०	अभीक	य य ग	१७
११.	अहिता	र य ग	१७
१२	रसधारि	स य ग	१७
१३	वेधा	त य ग	१७.
१४.	पद्या	ज य ग	१७
१५	किणवा	भ य ग	१७
१६	कुमुदवती	न य ग	१०, सुरि-१७
१७	किर्मीरम	म र ग	१७
१८	वयस्य	य र ग	१७
१९.	हसमाला	र र ग	६, १०, भूरिधाम-१७
२०	दीप्ता	स र ग	१०, हसमाला-१७ १४.
२१	भीमार्जुनम	स र ग	१७.

प्रस्ताव सरया	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ सङ्कोताङ्क
२२.	सुभद्रा	ज र ग	१०, पुरोहिता-१७
२३	होडपदा	भ र ग	१७
२४	मनोज्ञा	न र ग	१०; खरकरा-१७
२६.	मुद्रिता	य स ग	१०, महनीया-१७
२७	उद्धता	र स ग	१०, ३, शरगीति-१७, उद्यता-२२
२८	करमित	स स ग	१७
२९	भ्रमरमाला	त स ग	१०, ३, १९, स्यूता-१७ वय्यक-२०.
३१	विधुवक्त्रा	भ स ग	१०, रुचिर-१७, मवलेखा-१९
३२	दृति	न स ग	१७
३३	हिन्दीर	म त ग	१७
३४	अपिकम्	य त ग	१७
३५	मृष्टपादा	र त ग	१७
३६	मायाविनी	स त ग	१७
३७	राजराज्ञी	त त ग	१७
३८	कुठारिका	ज त ग	१७
३९	कल्पमुखी	भ त ग	१७
४०	परभूतम	न त ग	१७
४१	महो नुषी	म ज ग	१७
४२	महोद्धता	य ज ग	१७
४४	विमला	स ज ग	१०, बठोदगता-१७
४५	पूर्णा	त ज ग	१७
४६	बहिवलि	ज ज ग	१७
४७	शारदी	भ ज ग	१०, उन्दरि-१७, घुनी-१९
४८	पुरटि	न ज ग	१७
४९	सरलम	ग भ ग	१०, १९, वकरिता-१७
५०	केणवती	य भ ग	१७
५१	सौरकाता	र भ ग	१७
५२	अधिकारी	स भ ग	१७
५३	चूडामणि	त भ ग	१४, निर्वाधिकार-१७
५४	महोधिकार	ज भ ग	१७
५५	भौरलिखम	भ भ ग	१७, कलिका-१० १९, सोमन-११ २२, भोगवती-११
५६	स्वनकरी	न भ ग	१७
५७	नवसरो	म न ग	१७

प्रस्तार- सख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
५८.	चिररुचिः	य न ग	१७.
५९.	बहुलया	र न ग	१७.
६०	यमनकम्	स न ग	१७.
६१.	हीरम्	त न ग	१७; मधुकरिका-१०; वज्रम्-११.
६२.	स्विदा	ज न ग	१७;
६३	चित्रम्	भ न ग	१०, १६; उलपा-१७
६५.	नीहारी	म म ल	१७
६६.	कंसासारि	य म ल	१७.
६७.	खचिणी	र म ल	१७.
६८.	गृहिणी	स म ल	१७.
६९.	वर्धिष्णु	त म ल	१७; शूर-१७.
७०.	शोणी	ज म ल	१७;
७१.	घ्याहारी	भ म ल	१७.
७२.	किञ्चालयं	न म ल	१७
७३.	देवलम्	म य ल	१७.
७४.	नद्वि	य य ल	१७.
७५.	अनासादि	र य ल	१७.
७६.	अलालापि	स य ल	१७.
७७	गुञ्जा	त य ल	१७.
७८.	श्रुचा	ज य ल	१७.
७९.	नन्दयु	भ य ल	१७.
८०.	अनु	न य ल	१७.
८१.	अम्मेयी	म र ल	१७.
८२.	मयूरी	य र ल	१७.
८३.	सामिका	र र ल	१७.
८४.	श्रोञ्छिता	स र ल	१७.
८५.	घन्दा	त र ल	१७.
८६.	प्रतदि	ज र ल	१७.
८७.	भीनपदी	भ र ल	१७.
८८.	मणिमुखी	न र ल	१७.
८९.	मौलिलक्ष्	म स ल	१७.
९०.	परभानु	य स ल	१७.
९१.	मेयिका	र स ल	१७.
९२.	गोधि	स स ल	१७.

प्रसार- संख्या	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
६३	सरलाग्नि	त स ल	१७
६४	विरोही	ज स ल	१७
६५	वरजापि	भ स ल	१७.
६७	सम्पाक	म त ल	१७.
६८	पद्धरि	य त ल	१७
६९.	गुणिका	र त ल	१७
१००	कात्री	स त ल	१७
१०१	कामोद्धता	त त ल	१७
१०२.	खर्परि	ज त ल	१७
१०३	शान्तनु	भ त ल	१७; लीला-१७
१०४	मुरजिका	न त ल	१७
१०५	कालम्बी	म ज ल	१७
१०६	उपोहा	य ज ल	१७
१०७	कारिका	र ज ल	१७.
१०८	मुहरा	स ज ल	१७
१०९	दोषा	त ज ल	१७
११०	उपोदरि	ज ज ल	१७
१११	जातरि	भ ज ल	१७
११३.	भूरिमधु	म भ ल	१७
११४	भूरिवसु	य भ ल	१७
११५	हृषिणी	र भ ल	१७,
११६	लोसतनु	स भ ल	१७
११७	क्रोशान्तिकम्	त भ ल	१७
११८	स्तरधि	ज भ ल	१७
११९	पौरसरि	भ भ ल	१७
१२०	वीरवट्ट	न भ ल	१७
१२१	श्रमति	म न ल	१७
१२२	श्रहृति	य न ल	१७
१२३	घरसाशि	र न ल	१७
१२४	घनघरि	स न ल	१७
१२५	मुशकि	त न ल	१७
१२६	कुरदि	ज न ल	१७
१२७	कोदि	भ न ल	१७

प्रस्तार- संख्या	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
अष्टाक्षर-छन्द			
२.	अग्निर्भर	य म ग ग	१७
७	इन्द्रफला	भ म ग ग	१७, इन्द्रबला-१७.
८.	गोपादेवी	न म ग ग	१७.
१०	भूमधारी	य य ग ग	१७
११	मौलिमालिका	र य ग ग	१७
१२	युगधारि	स य ग ग	१७
१४	विराजिकरा	ज य ग ग	१७
१५	वात्या	भ य ग ग	१७
१६.	पाञ्चालाग्नि	न य ग ग	१७.
१८.	कुलाधारी	य र ग ग	१७; शुद्धगण-१७
१९	पद्मिनी	र र ग ग	२२
२०.	परिधारा	स र ग ग	१७
२१	विभा	त र ग ग	१०.
२२	यज्ञस्करी	ज र ग ग	१७.
२४	कुररिका	न र ग ग	१७
२६	मनोला	य स ग ग	१७
२८	पञ्चशिला	स स ग ग	१७, रमणीयशिला-१७.
३०	भाङ्गी	ज स ग ग	१७
३२	गुणलयनी	न स ग ग	१०, रुद्राली-१७
३४	पारान्तचारी	य त ग ग	१७.
३६	कौचमार	स त ग ग	१७
३७	कराली	त त ग ग	१७; केतुमाला-१९
३८	वारिशाला	ज त ग ग	१७, वितान-१७
४०	वृत्तभार	न त ग ग	१७
४३	सिंहलेखा	र ज ग ग	३, १०, १७, मालिनी-७
४४	दिगीश	स ज ग ग	१७
४५	साराबनदा	त ज ग ग	१७
४७	कृष्णगतिका	भ ज ग ग	१७
४८	चित्रविलसितम्	न ज ग ग	३
४९	प्रतिसौरा	म भ ग ग	१७
५२	अतिमोहा	स भ ग ग	१७, वितानम्-१०, १३; वितान के १३ और ११ के अनुसार 'त र ल ग.' एव 'त य ल ल' लक्षण भी है।

प्रकार- मन्त्रा	छन्द नाम	संज्ञा	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केतादि
५४.	चतुरोहा	स म ग ग	१७.
५६	वृत्तमुष्ठी	न भ ग य	१७.
५७	हसदतम्	म न ग ग	२, १०, १४, १७.
६१.	सङ्घ्या	त न ग य	१७.
७४.	विहावा	य य स ग	१७.
७५.	अनुष्टुप्	र य स ग	१०.
८१.	क्षमा	म र स ग	१६.
८३	हेमरूपम्	र र ल ग	१७.
८४.	शान्तकम्बुतम्	स र स ग	१७.
८५	नाराधिका	त र स ग	१४, १७; नारायण-५, १०; नारायण- ६, १६
८८.	मुमासतो	न र स ग	१०, १६, उपनिषो-१७, वृत्तयो-१७
९२	मही	स स स ग	१०; कलिता-१७; करिता-१७
९३	इयामा	त स स ग	७
१००	सारधा	र त स य	१७
१०४	भाण्डवकम्	न त स ग	१७
१०५	हाठनी	म ज स य	१७
१०७	अद्वरा	र ज स ग	१७; उद्वरा-१७
१०६.	विद्या	त ज स य	१७; उद्वरा-१७; अणुष्टुप्-१६.
११०	घराति	ज ज स ग	१७
११२.	सलितगनि	न ज स य	१०; घसति-१७.
११५	कुदधरो	र भ स य	१७
१२०	गजगनि	म भ स ग	१५, १७
१२१	निजितिलिना	य म स ग	१७.
१२५	ईहा	त म स य	१७, ईहा-१७.
१२७.	घरि	ध म स य	१७
१२८.	कुमुमम्	म म स ग	७; हरिपर-१७, वृत्तपर-१७.
१४०	नागारि	स य ग स	१७
१४७	सामीः	र र ग स	१७
१६०	बमोरेन्दु	स र ग स	१७
१६०	घमानिका	ज र ग स	१७
१६२	मत्तरदा	म र य स	१७
१६०	रुग्नि	म ग ग स	१७
१६२.	विष्णु	त म ग स	१७

प्रस्तार- सख्या	छन्द नाम	लक्षणा	सन्दर्भ ग्रन्थ सङ्केताङ्क
१८०	अनूतनर्म	स भ ग ल	१७; नूतनर्म-१७
१८१	अमरन्दि	त भ ग ल	१७
१८२.	कुलचारि	ज भ ग ल	१७
१९०	करञ्जि	ज न ग ल	१७
१९६	वृन्तम्	स म ल ल	१७
१९८	शाखोटकि	ज म ल ल	१७
१९९	पञ्जरि	भ म ल ल	१७
२००	अप्रीता	न म ल ल	१७; प्रीता-१७, अप्रीता-१७, अलिप्रीता-१७
२०१	मन्वरि	म य ल ल	१७.
२०२	वातुलि	य य ल ल	१७
२०४.	सफुल्लकम्	त य ल ल	रूपगोस्वामिकृत नन्दाहरणस्तोत्र
२१०.	भाषा	य र ल ल	१७, सभाषा-१७; सभासा-१७
२१६.	पाकलि	न र ल ल	१७
२२०.	अमना	स स ल ल	१७
२३०	आकतनु	ज त ल ल	१७
२३५	आखेटम्	र ज ल ल	१७
२४१.	अतिजनि	म भ ल ल	१७.
२४४	सूतमधु	स भ ल ल	१७
२४६.	मरु	ज भ ल ल	१७
२५०	चयनम्	य न ल ल	१७
२५१	कुशकम्	र न ल ल	१७
२५२	निरुदम्	स न ल ल	१७.
२५३.	सिन्धुक्	त न ल ल	१७
२५४.	क्षरम्	ज न ल ल	१७; क्षुर-१७
२५५	वेदि	भ न ल ल	१७; वेदि-१७

नवाक्षर-छन्द

२	मेघालोक	य म म	१७
७.	वक्त्रम्	भ म म	१०
१६-	मायासारी	न य म	१७
२५	खेलाडघम्	म स म	१७.
२८	सारम्	स स म	१०, उदरश्रि-१७, उदरलक्ष-१७, उदरालक्ष- ७

प्रस्तार- सख्या	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
२६.	वंसार	त स म	१७; वंसारम्-१७
३०	निदिग्ध्या	ज स म	१७, निदिग्ध्या-१७.
३१	कर्मिष्ठा	भ स म	१७, कर्मिष्ठा-१७.
४६	धृतहाला	म भ म	१७
५२	कलहम्	स भ म	१७.
५७	ध्रयनपताका	म न म	१७
६१	मकरसता	त न म	१०; रम्भा-१७; ६ के मनुसार- 'म न य' लक्षण है
७४	विशत्यम्	य य य	१७; बृहत्य-१६
६७	अर्घसामा	म त य	१७, मुन्दरखेला-१६
१००	सम्बुद्धि	स त य	१७.
१०३	शम्बरधारी	भ त य	१७
११२	शशिलेखा	न ज य	१०; शरलीढा-१७.
११७	रुचिरा	त भ य	१०
१२१.	कासीकम	म न य	१७
१२४	सुगन्धि	स न य	२७
१२५.	कामा	त न य	१७.
१५२	घृहृतिका	न र र	५, १०.
१६४	निभाविता	स त र	१७
१६६	चाहहासिनी	ज त र	१६
१७१	कामिनी	र ज र	१०, तरगवती-११, २०.
१७३	रयोन्मुखी	त ज र	१७
१७४	अचनिजा	ज ज र	१७.
१७५	प्रघृ लिका	भ ज र	१७
१७६	हलीदगता	न ज र	१७
१८०	मधुमल्ली	म भ र	१७
१८२	सहेलिका	ज भ र	१७
१८३	मदनोद्गरा	भ भ र	१७; उत्सुकम्-१०, १६
१८४	करदाया	न भ र	१७
१८७	भद्रिका	र न र	१०, १५, १७, १६.
१६२.	उपव्युतम्	न न र	१०, १६
२१५.	निषधम्	भ र स	१७.

प्रस्तार- सख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
२१७.	कनकम्	म स स	१०; गाय-१९.
२२०.	सौम्या	स स स	१०; अर्धकला-१७.
२२३.	रञ्जकम्	भ स स	१७.
२३६.	श्रक्षि	स ज स	१०, १९.
२३९.	उदयम्	भ ज स	१०; विद्युत्-१९.
२४४.	अनवीरा	स भ स	१७.
२४७.	प्रियतिलका	भ भ स	१७.
२५१.	हलमुखी	र न स	२, ५, ६, १०, १३, १७, १८, १९,
२५३.	आकेकरम्	त न स	१७.
२५५.	धौनिकम्	भ न स	१७.
२६३.	बल्गा	त त त	१७.
३००.	कौटमाला	स ज त	१७.
३२०.	मसृणकम्	न न त	१७.
३३६.	सोला	न य ज	१७.
३५९.	वारिधियानम्	भ त ज	१७.
३६६.	कुह	ज ज ज	१७.
३८३.	कठिनास्थि	भ न ज	१७; अहीरी-१७.
४००.	विकचयती	न य भ	१७.
४०९.	घन्दरुः	म स भ	१७.
४३९.	दधि	भ भ भ	१७; उदधि-१७.
४६४.	स्फुटघटिता	न य न	१७.

दशाक्षर-छन्द

२.	शीफाली	य म म ग	१७.
१०.	धूध्राली	य य म ग	१७.
२०.	नीरोहा	स र म ग	१७.
३०.	धोरान्ता	ज स म ग	१७.
४०.	निर्मेषा	न त म ग	१७.
४९.	मध्याघारः	म भ म ग	१७.
५०.	यशारोपी	य भ म ग	१७.
५५.	अन्धूकः	भ भ म ग	१९.
६१.	कूलम्	त न म ग	१७.
६३.	अन्धूकम्	भ न म ग	१०.
६६.	बोधातुरा	म म य ग	१७; सकृद्वोधा-१७.

प्रस्तार- सख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
३०३.	खेटकम्	भ ज त ग	१७.
३०६.	बर्हातुरा	त भ त ग	१७.
३१७.	नीराञ्जलि	त न त ग	१७.
३२७.	वीपकमाला	भ म ज ग	१५.
३३१.	पंवितका	र य ज ग	५, १०; कर्णपालिका-१७; मौक्तिकम्-१६.
३४२.	सराधिका	ज र ज ग	१७.
३४५.	शुद्धविराट्	म स ज ग	२, ५, ६, १०, १७, १८, १९, २०, २२; विराट्-१७.
३४७.	श्रक्षरावली	र स ज ग	१७.
३४८.	सहजा	स स ज ग	१७.
३४९.	अहिला	त स ज ग	१७.
३५१.	कुप्यम्	भ स ज ग	१७.
३५२.	अनुचयिता	न स ज ग	१७.
३६३.	यमिता	र ज ज ग	१७.
३६५.	उपस्थिता	त ज ज ग	२, ५, १०, १३, १७, १८, २०, २२.
३६६.	उयिता	ज ज ज ग	१०; जरा-१७.
३७५.	भिन्नपदम्	भ भ ज ग	१७.
३७६.	वडिशभेदिनी	न भ ज ग	१७.
३७७.	पणवः	म न ज ग	१३, १७
३८४.	चित्तिभूतम्	न न ज ग	१७.
४००.	फलिनी	न य भ ग	१७.
४१२.	सुरयानवती	स स भ ग	१७.
४१५.	विरलम्	भ स भ ग	१७; कटिका-१७.
४२४.	छलितकम्	न त भ ग	१७.
४२८.	प्रवादपदा	स ज भ ग	१७.
४३३.	हंसकीडा	म भ भ ग	१६.
४३६.	वारवती	स भ भ ग	१७.
४३७.	परिचारयती	त भ भ ग	१७.
४३८.	काण्डमुखी	ज भ भ ग	१७.
४४०.	शरत्	न भ भ ग	१७.
४४७.	गहना	भ न भ ग	१७.
४४८.	फलधरम्	न न भ ग	१७.

प्रस्तार- सख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ सङ्केताङ्क
३६	लक्षणलीला	भ त म ग ग	१७
४३	कूलचारिणी	र ज म ग ग	१७; कूलिका-१७
४८	विलुलितमञ्जरी	न ज म ग ग	१७
५७	भूरिघटकम्	म न म ग ग	१७.
६४.	कलितकमलमाला	न न म ग ग	१७
७५	धलबीबिलास	र य य ग ग	१७
८०	विकसितपद्मावली	न य य ग ग	१७
८६	श्रमोधमालिका	ज र य ग ग	१७
९२	ललितागमनम्	स स य ग ग	१७.
१००	ससूतशोभासार	स त य ग ग	१७.
१०८	ललितालबलम्	स ज य ग ग	१७
११२	वार्ताहारी	न ज य ग ग	१७.
१२२	कडारम्	य न य ग ग	१७
१२४.	उदितदिनेश	स न य ग ग	१७.
१३२	जालपाद	स म र ग ग	१७.
१४७	दारदेहा	र र र ग ग	१७; दारुदेहा-१७
१८४	रोचकम्	भ भ र य ग	१०
१८७	सुधाधारा	र न र ग ग	१७
१९२.	कुपुरुषजनिता	म न र ग ग	१४.
१९६	कन्दविनोद	भ म स ग ग	१७
२१७	विलम्बितमध्या	म स स ग ग	१७
२२०	विष्टम्भ	स स स ग ग	१७
२२३	श्रीशितकुशला	भ स स ग ग	१७
२४४	उपहितचण्डी	स भ स ग ग	१७
२४७	धितकमला	भ भ स ग ग	१७
२५६	यन्ता	न न स ग ग	२, १०, १३, १८, १९, २०, रय- पद-१७; वृत्ता-१७; सुकृति-१७
२८६	उपस्थितम्	ज स त ग ग	६, १०, १३, १७, १८; शिलपिष्ट- १५ टी० ^६
२९३	प्राकारबन्ध	त त त ग ग	१७; लयप्राहि-१०, १६, विष्ट- कमाला-१५ टी०
३००	विहारिणी	स ज त ग ग	१७, भासिनी-१७

प्रस्ता- सख्या	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
७०१.	नीला	त न र ल ग	१७
७२०	सौरभवर्द्धिनी	न य स ल ग	१७.
७२८	भुजसहारिणी	न र स ल ग	१७
७३१	अच्युतम	र स स ल ग	१७, १६
७३२	विदुषी	स स स ल ग	१०, उपचित्रम्-१७, १४; सुचित्र- १७; नरेश-१७.
७३६	सम्भदमालिका	म स स ल ग	१७.
७४२	कनककामिनी	ज त स ल ग	१७.
७४७.	द्रुता	र ज स ल ग	१५ टी०, उपदारिका-१७
७४८	दारिका	स ज स ल ग	१७.
७४९	मालविका	त ज स ल ग	१७.
७५०.	नाभसम्	ज ज स ल ग	१७
७५१	सौभगकला	भ ज स ल ग	१७
७५२.	वीवध	न ज स ल ग	१७
७५३	आशापाद	म भ स ल ग	१७.
८००.	भुजलता	म स त ल ग	१७
८२०.	हरिकान्ता	स भ त ल ग	१७
८२३.	कलस्यनवश	भ भ त ल ग	१७.
८३२.	मदनया	न न त ल ग	१७.
८७८	खटका	ज ज ज ल ग	१७.
८७९.	शल्कशकलम्	भ ज ज ल ग	१७.
८८५	उत्थापनी	त भ ज ल ग	१०, जिह्वाशया-१७
८८९.	कुशलकलावतिका	म न ज ल ग	१७
८९५	अर्यशिला	भ न ज ल ग	१७
९२८	निरवधिगति	न स भ ल ग	१७
९६०	दामघटिता	न न भ स ग	१७
९६४.	धिमला	स म न ल ग	१०
९७६	कमलदलाक्षरी	न य न ल ग	१०, वचिरमुखी-११, समित-१७
९८५.	सामपदा	म स न ल ग	१७.
१०२१	मुखचपला	त न न ल ग	१०
११७१.	गम्भारि	र र र य स	१७
१२१३	कामुकल्लोला	भ म स ग स	१७
१३१७.	सधयधी	त त त ग ङ	१७

प्रस्तार- संख्या	छंद नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ सङ्केताङ्क
१३७२.	पिवुलम्	स स ज ग ल	१७.
१४००.	कालवर्षे	न भ ज ग ल	१७
१५११	सान्द्रपदम्	भ त न य ल	१७; १५ टी०
१७७७.	दोषापीडम्	म भ स ल ल	१७
२०००.	केलिचरम्	न य न ल ल	१७.

द्वादशाक्षर-छन्द

३१	भापितभरणम्	भ स म म	१७.
३२	विषमव्याली	न स म म	१७
६१	शम्पा	त न म म	१७
६४	मिथुनमाली	न न म म	१७
६१	त्रिगुणास्तरणम्	र स य म	१७.
६२	रसलीला	स स य म	१७.
६३.	विशालाम्भोजाक्षी	त स य म	१७; धम्भाजाली-१७
६४.	वीणादण्डम्	ज स य म	१७
६७.	मत्ताक्षी	म त य म	१७.
१२८	यसनविशाला	न न य म	१७
१६३	सौलारस्तम्	म म स म	१७
२५३.	विवरविलसितम्	त न स म	१७
२५६.	धुद्धान्तम्	न न स म	१७
३४८.	साक्षी	स स ज म	१७
३६४.	स्वरवर्षिणी	स ज ज म	१७.
४४८	धवलश्री	न न म म	१७
४७६.	सुम्बाक्षी	स स म म	१७; सुम्पाक्षी-१७
५०५.	मलयपुरभि	म न म म	१७
५२५.	वाहिनी	त य म य	२०
५७६.	पुट	न न म य	२, ३, ४, ६, १०, ११, १७, १८, १९, २२, पुटा-२०
५७८.	धाधिदेवी	य म य य	१७.
६०४.	समपत्रिणा	स स य य	१७
६०८.	मिहिरा	न स य य	१७
६१४	कालवर्षीबिहृद्	ज त य य	१७.
६१२.	धनुषारा	ज र र य	१७; धनुषारा-१७.
६८८	कमोजिना	न न र य	१७, १९; धनुषवर्षिका-१७.

प्रस्तार- सख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ- सङ्केताङ्क
६८६.	पुण्डरीकम्	म भ र य	१७.
६६२.	बधिरा	स भ र य	१७
६६५.	घलभी	भ भ र य	१७.
७१६	केकीरवम्	स य स य	१०; महेन्द्रवज्रा-१६; शिविका-१६.
७३३	कोल	ञ स स य	१०.
७३७	लीढालकं.	म त स य	१७.
७४१	वनिताविलोक.	त त स य	१७.
७४२.	कुमुदिनीविकाश	ज त स य	१७.
७५३.	वसन्तहासः	म भ स य	१७.
७५७	ध्रुतिः	त भ स य	१६.
७५८.	स्मृतिः	ज भ स य	१६.
७८३.	सिधतमणिमाला	भ य त य	१७; इधेतमणिमाला-१७.
७८४.	विद्रुमदोला	न य त य	१७.
८१७.	सुखशंलम्	म भ त य	१७
८२०.	करमाला	स भ त य	१७.
८३२.	विजयपरिचया	न न त य	१७.
८६५	कासारक्रा-ता	म त ज य	१७.
८७७.	माया	त ज ज य	१७.
८७८.	परिलेखः	ज ज ज य	१७, धारी-१७.
८७९	वरत्रा	भ ज ज य	१७.
८८१	कुम्भोष्नी	म भ ज य	१७.
८८४.	शरमेया	स भ ज य	१७.
८८५.	नीरागतिकम्	त भ ज य	१७.
८८८.	कलहसा	न भ ज य	१०, १६; द्रुतपदम्-१७; द्रुतपदा-४, ११, १६; मुक्तरम्-११.
८९१.	श्रद्धितपादम्	र न ज य	१७.
८९२	परितोषा	स न ज य	१७
८९३.	छलितकपदम्	त न ज य	१७.
८९४.	उपधानम्	ज न ज य	१७.
८९५.	पयिकान्ता	भ न ज य	१७.
९७१.	कुमुदिनी	र य न य	१०; कुमुदविभा-३; तया ३ के अनुसार 'न य र य' लक्षण भी है ।
९९१.	शर्पितमदना	भ स न य	१७.

प्रस्ताव- संख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
१०१६.	द्वृत्तपदम्	न भ न य	१४.
१०२१.	विरतिमहृती	त न न य	१७.
१०८०.	सतम्	न न म र	२, १०, १८; ललितम्-१७, १४; गौरी-१७.
११४२.	गलितनाला	ज भ य र	१७.
११६२.	सरोजावली	य य र र	१७.
११७६.	मेघावली	न र र र	१०; वसन्तः-११.
११६६.	विष्णुतशिखा	भ ज र र	१७.
१२००.	विशिष्यता	न ज र र	१७
१२३६.	सुतलम्	स र स र	१७
१२६५.	अन्तविकासवासक.	त र ज र	१७
१३७१.	परिपुष्टिता	र स ज र	१७.
१३७६.	प्रसुमरमरालिका	न स ज र	१७.
१३६०.	विधारिता	ज ङ ज र	१७
१३६१.	विवातिका	भ ज ज र	१७; विद्यामिनी-१७.
१४०४.	विरसा	स न ज र	१७; वीरला-१७.
१४०७.	अधिरत्तरतिषा	भ न ज र	१७.
१४६०	राधिषा	स भ भ र	१७.
१४७२.	उज्ज्वला	न न भ र	१०, ११, १७; अक्षयनी-११; अक्षयनी-१८
१५१५	विपुलपातिषा	र न न र	१७
१५२४.	अपलेला	स भ न र	१७
१५२६.	भक्तविनोदिता	उ भ न र	१७.
१५२७.	विरतप्रभा	भ भ न र	१७.
१५३१.	मुकुलितशशिवाग्नि	र न न र	१७.
१६३६	अतिवागिता	स घ र स	१७
१६६१.	भुजङ्गजुपी	र स र स	१७.
१६६५.	अद्वैतपतिषा	भ स र स	१७.
१७०३.	समना	भ त न स	१४.
१७२८.	रुदी	न न न ग	१०.
१७३५.	समना	भ न स स	१७; १५ टी०
१७३८	पुराणावगा	य घ स स	१७.
१७७४.	विश्वरथम्	अ अ ग स	१७.
१७७५	मीनगिरिषा	भ अ स स	१७.

प्रस्तार- सख्या	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ सङ्घेताङ्क
१७८३.	यनिताभरणम्	भ भ स स	१७
१८२५	सुभद्रावतरणि	म त त स	१७.
१८८१	विरलोद्धता	म स ज स	१७
१८८२	सुविहिता	य स ज स	१७
१८८४	उदकरचिता	स स ज स	१७
१८८५,	मुद्यतमालिका	त स ज स	१७, उपवनमालिका-१७
१९७२	नगमहिता	स भ भ स	१७; क्रमुकवती-१७
१९७५	सम्मदवदना	भ भ भ स	१७.
१९८२.	कुमारगति	ज न भ स	१७
२०१६	उदयनमुखी	न स न स	१७
२०२०	रसिकपरिचिता	स त न स	१७
२०२६	व्यायोगवती	त ज न स	१७
२०३०	वियोगवती	ज ज न स	१७
२०३१	सगमवती	भ ज न स	१७.
२०४४	ज्वलिता	स न न स	१७
२०४५	रूपावलि	त न न स	१७.
२०४६	अनीचकम	ज न न स	१७
२०४७	भासितसरणि	भ न न स	१७.
२०४८.	कृतकृतिका	न न न स	१७, कृतिका-१७
२३६८	विकलबकुलवल्ली	न न त त	१७
२४०६.	निमग्नकीला	ज त ज त	१७
३२६५	घास रमणिका	भ स स भ	१७
३५०८	अरिला	स भ भ भ	१७

त्रयोदशाक्षर-छन्द

२२५	उल्काभास	म त स म ग	१७
२४१	लीलालोल	म भ स म ग	१७
३७५	कलाधाम	भ भ ज म ग	१७
४३६	वासविलसवती	भ भ भ म ग	१७
४७२	विपन्नकदनम	न र न म ग	१७, विपन्नकलन-१७, विपन्नकवलन-१७
७८४	विभा	न य त य ग	१७
६७५	रसधारा	न य न य न	१७
१००६.	प्रज्ञामूलम	म भ न य ग	१७, भद्रा-२२

प्रस्ताव- संख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
	रुमा	न न म र ग	१०.
१, १५४.	चञ्चरीकावल	य म र र ग	१७, १४; चन्द्रणी-१०; चन्द्रिका-१६.
१, १६२.	दर्पमाला	य य र र ग	१७; दर्भमाला-१७.
१, १६५	भाजनशीला	त य र र ग	१७.
१, १७१.	श्रद्धरान्ता	र र र र ग	१७.
१, २०६	घानता	म न र र ग	१७.
१, २१६.	प्रमोदः	न न र र ग	१७; चन्द्रिका-१०.
	कोदुम्भ	म त स र ग	१०.
१, ३६८	शुकर्णपूरम्	न र ज र ग	१७
१, ३७२	जगत्समानिका	स स ज र ग	१७.
१, ३६०.	अतिरहः	ज ज ज र ग	१७
१, ४६१	माणविकाविकाश	त भ भ र ग	१७.
१, ४६६	कीरलेखा	न र न र ग	१७.
१, ६३६	आननमूलम्	भ त य स ग	१७.
१, ७५३	लोध्रशिखा	म स स स ग	१७
	उपस्थितम्	ज स त स ग	१३.
	गौरी	न न त स ग	१०; २ के अनुसार 'न न न स ग' लक्षण है ।
१, ८६६	शलभलोला	य य ज स ग	१७
१, ८८१	पकजघारिणी	म स ज स ग	१७.
१ ८८४	शुबेरकटिका	स स ज स ग	१७.
१ ८८६	रुचिवर्णा	ज स ज स ग	१७, साला-१७
१, ८८७	मपूलसरणि	भ स ज स ग	१७
१, ९८४.	विधुरवितानम्	न न भ स ग	१७.
	मदललिता	न ज न स ग	१०. १६.
२, ३६१	पारायत.	त त स त ग	१७
२, ३४२.	प्रवाहिका	ज त स त ग	१७.
२, ३४३.	स्विप्रगौरीरम्	भ त त त ग	१७.
२, ३४४.	उर्वशी	न स स त ग	१०, परिवृद्धम्-१७, कौमुदी-१६
२, ३५१.	वामयवना	भ ज त त ग	१७.
२, ३५२.	किरात.	न ज त त ग	१७
	विष्टुत्	न न स त ग	१४, कुटिलपति-१४
२, ३६६	भसतमवम्	भ स ज त ग	१७, भगवतवम्-१७.
२, ४००.	कटिनी	न स ज त ग	१७.

प्रस्तार- सख्या	छन्द नाम	लक्षण	सदभ य य सङ्क ताङ्क
२४०५	वृद्धधामा	त त ज त त	१७
२,४२१	ममस्फुरम	त भ ज त य	१७
२७०६	पयदवती	त र र ज य	१७, निस्तुपा-१७,
२,७१०	अखण्डमण्डनम	ज र र ज य	१७
२,७३१	कलापतिप्रभा	र ज र ज य	१७
२,७५२	अशोकपुष्पकम	न न र ज य	१७, अशोकम-१७
२,७६२	करपल्लवोदगता	य य स ज य	१७
२,७६३	साङ्गपदा	र य स ज य	१७
२७६४	सुदन्तम	स य स ज य	१०, अम्बुदावली-१७ मणि कुण्डलम-१६
२७६०	मञ्जुभाषिणी	ज त स ज य	१० मञ्जुहासिनी-१४
२,७६५	मञ्जुमालती	र ज स ज य	१७, मञ्जुभाषिणी-१६
२८०८	धिरोधिनी	न भ स ज य	१७
२८१६	नलिनम	न न स ज य	१६
२,६०७	चन्द्रहासकरा	र स ज ज य	१७
२६०८	द्वतलम्बिनी	स स ज ज य	१७
२६०६	कनककेतकी	त स ज ज य	१७
२६१०	गह्वरवारिता	ज स ज ज य	१७
२६११	अमितनगानिका	भ स ज ज य	१७
२६१८	आपणिका	ज त ज ज य	१७
२,६२६	गुणसारिका	ज ज ज ज य	१७ गणसारिका-१७
२६३३	प्रमोदतिलका	त भ ज ज य	१७, अश्रकम-१०
२६३६	सारसनावलि	न भ ज ज य	१७
२६४३	उपचित्ररतिका	भ न ज ज य	१७
२६८२	उदात्तहास	ज त भ ज य	१७
३०४६	कलनायिका	ज त न ज य	१७
३२७७	अश्रमशीला	त य स भ य	१७
३३६०	विदला	न स त भ य	१७
३,४२३	प्रपातलिका	भ स ज भ य	१७
३५११	कर्मठ	भ भ भ भ य	१७, अङ्गदधि-१६
३५४३	सबलीलता	भ र न भ य	१७
३७३६	अनिलोद्धतमुखी	न र र न य	१७
३७७१	प्रमोदकसिता	र न र न य	१७
३७८८	कोमलकल्पसिता	स य स न य	१७

प्रस्तार संख्या	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ-सङ्कोचाङ्क
३,८३५	परगति	र न स न ग	१७
३,८६२	अभिरामा	स भ त न ग	१७
३,९६४	उपसरसी	स न ज न ग	१७
४,०४८	मदनजवनिका	न य न न ग	१७
४,०६०	वरिवशिता	स स न न ग	१७, परिवर्णिता-१७
४,०६३	अर्धकुमुमिता	भ स न न ग	१७
४,०८४	विनताक्षी	स भ न न ग	१७, विनताक्षी-१७
४,०८५	नरावलि	त भ न न ग	१७, निरावलि-१७
४,०८६	अभीशुका	ज भ न न ग	१७
४,०८७	कनकिता	भ भ न न ग	१७
४,०९६	त्वरितपति	न न न न ग	१०, हरविनता-१७, उपनमिता-१७
४,४६०	सुखकारिका	स ज ज म ल	१७
५,८१३	अट्टहासिनी	त भ र स ल	१७
	अङ्गुलि	भ भ भ भ ल	१०
७,८०७	पङ्क्यावलि	भ न य न ल	१७
८,०००	असनि	न न त न ल	१७

चतुर्दशाक्षर छन्द

२,०५	वशोत्तता	त य स म ग ग	१७
६६१	कालध्वानम	म म न य ग ग	१७, कालध्वान्तम्-१७
१,०२१	पारावार	त न न य ग ग	१७
१,२६३	प्रपन्नपानीयम	त य त र ग ग	१७
१,२६६	अनिन्दगुविन्दु	न य त र ग ग	१७, गुविन्दु-१७, पूर्वकु-१७
१,५३७	धीरध्वानम	म म म स ग ग	१७
१,७४४	सलितपताका	न य स त ग ग	१७
२,०२२	सम्बोधा	ज त न त ग ग	१७
२,०६५	विध्याह्वदम्	म र म त ग ग	१७ अह्वयह्वदम्-१७
२,३२१	सशमी	म र त त ग ग	५, १०, अशमी-१६ बिम्बालयम-१७
२,३२२	दुप्तदेहा	घ र त त ग ग	१७
२,३२३	अशुसशमी	र र त त ग ग	१७
२,३३२	शरमातरणि	स स त त ग ग	१७
२,३३५	गुण्यह्वदिका	भ ग त त ग ग	१६, अशमी-१६
२,३३७	नियत्पारावार	म त त त ग ग	१७

प्रस्तार सख्या	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ सङ्केताङ्क
२,३३६.	कल्पकान्ता	र त त त ग ग	१७
२,३४४	परीवाह	न त त त ग ग	१७
	शरभललितम	न भ न त ग ग	१०, शरभा-११
२,६८७	वाटिकाविकाश	भ न य ज ग ग	१७, वाटिकाविलास-१७, वाटिका-
२७३१	अकशेपा	र ज र ज ग ग	१७
२७४०	मदावदाता	स भ र ज ग ग	१७
२८०४	वशमूलम	स भ स ज ग ग	१७, सुनन्दा-१६
२,८०५	वेलाञ्चलम	त भ स ज ग ग	१७, वेलाञ्चलम-१७ वेलातरम १७
२,८०६	कुसुम्भिनी	ज भ स ज ग ग	१७
२,८०८	विलम्बनीया	न भ स ज ग ग	१७
२८१६	अनन्तदामा	न न स ज ग ग	१७
	नदी	न न त ज ग ग	१४
	कुमारी	न ज न ज ग ग	१४
	कृतमालम	त ज य भ ग ग	१७
३२८७	शारवच्छन्द	त य स भ ग ग	१७
३,३१३	परिणाही	म भ स भ ग ग	१७
३,४६६	रतिरेखा	त य भ भ ग ग	१७
३४८४	मन्मथ	स स भ भ ग ग	१७
३,५११	जाहमुखी	भ भ भ भ ग ग	१७
३५१५	वलना	र न भ भ ग ग	१०, लता-११, वनलता-१६
३,८६२	प्रतिभादर्शनम	स भ त न ग ग	१७
	राजरमणाय	ज स र न ग ग	१०, २०, रूपगोस्वामिकृत वत्सचार णाविस्तोत्र मे 'प्रफुल्ल कुसुमाली' है ।
	वरसुन्दरी	भ ज स न ग ग	१४
	मुपवित्रम	त र न न ग ग	१४
४००६	उपचित्रम	न न न न ग ग	१० १६, अलिपदम-१७
	ज्योत्स्ना	म र म य ल ग	५, १०, ज्योत्स्निका-५
४६७२	करिमकरभुजा	न न म य ल ग	१०, कामला-१८
४,६८२	प्रपात	य य य य ल ग	१७
४७०४	जलदरसिता	न स य य ल ग	१७
४८४४	पद्म्या	स ज स य ल ग	१७, प्रथिता-१६
५२६७	कल्पमोलिता	र र र र ल ग	१७
५४१६	मुधाधरा	र ज त र ल ग	१७

प्रस्ताव- संख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ सङ्केताङ्क
५,४१६	कलाधर	र र ज र ल ग	१७
५,४६२	कुडङ्गिका सुकेशरम् सुदर्शना	ज र ज र ल ग न र न र ल ग स ज न र ल ग	१७ १०, १४. १६.
५,६६२	वितानिता सिंह जया	न न न र ल ग न म र स ल ग म र र स ल ग	१७ १० ५, १०
५,८१३	अलकालिका	त भ र स ल ग	१७, अलकालिका-१७
५,८१५.	दर्दुरक	भ भ र स ल ग	१०, १६
५,८१६	गगनोदगता	र न र स ल ग	१७
५,८५२	धिनन्दिनी	स स स स ल ग	१७
६,१७२	भूरिशिखा	स स म त ल ग	१७.
६,३६४	श्रीडायतनम्	स स स त ल ग	१७, श्रीडायतनम्-१७
६,५४१.	नासाभरणम्	त य भ स ल ग	१७
६,५८३	कणिशर	भ भ भ स ल ग	१७
७,०३२	विपाकवती	न भ ज ज ल ग	१७
७,०८६	काकिणिका	ज ज भ ज ल ग	१७.
७,०८७	कारविणी	भ ज भ ज ल ग	१७.
७,२१५.	कूर्चललितम्	र र र भ ल ग	१७
७,५३२	कलहेतिका	स ज भ ल ग	१७
७,५३५	प्रञ्चलवती	भ ज ज भ ल ग	१७.
८,०२७	गगनगतिका	र स ज न ल ग	१७
,०८१	निम्बतमाला	म र भ न ल ग	१७
९,३६३	कामशाला	र र र र ग ल	१७
९ ९७५	उन्नम	भ भ स स ग ल	१७
११,६२८	उपकारिका	रा ज ज भ ग ल	१७
११ ६३१	हेममिहिका	भा ज ज भ ग ल	१७
११,६३२	हेति	भ ज ज भ ग ल	१७
१४,०४४.	मयुपालि	स स स स ल ल	१७
१६,०००.	वेशम्भारि	न न य न ल ल	१७

पञ्चदशाक्षर-छन्द

१३.	यज्जाली	त य म म म	१७.
१६	स्फोटकीडम्	न य म म म	१७

प्रस्तार- सख्या	छन्द नाम	सक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ सङ्केताङ्क
२२३	श्रीडितकटका	भ स स म म	१७.
४३३.	चार्यटकम्	म भ भ म म	१७
२२६६.	आनन्दम्	र न स त भ	१७
	चन्द्रलेला	र र त त म	१६
३,३१६.	बहुलाध्रम्	स भ स भ म	१७
३,८८१	षाणीभूषा	म म त न म	१७
४,६८२	सिंहपुच्छम्	य य य य य	१७
५,५२५	कुमारलीला	म न र य य	१७.
५,५३२.	भोगिनी	न न र य य	१०
	केतनम्	भ य स स य	१०
	शिगु	त ज स स य	१०
	ऋषभ	स ज स स य	१०, १६
६,६३१	वीपकम्	भ त न त य	१७
७ १२०	परिमलम्	न य न ज य	१७
	मपूरललितम्	ज स न भ य	१६.
७ ६३६	शरकल्पा	न न स न य	१७
	चन्द्रोद्योत	न म म र र	१०
६,३६३	सास्यकारी	र र र र र	१७.
६,६६८.	मदनमालिका	न र न र र	१७
	मृदङ्ग	त भ ज ज र	१०.
११ ५७५	प्लवगम	भ भ त भ र	१७
११,६३१.	मयूषदना	भ ज ज भ र	१७
११,६३२	कलभाषिणी	न ज ज भ र	१० १६, अरविन्द - ११, १६
११,७१२	गौ	न न भ भ र	१०
११,६६३.	सारिणी	र न र न र	१७
११,६६८	धमरीचरम्	न न र न र	१७
१२,४६६.	जननिधिबेला	न य स म स	१७
१३,०५७	लीलाचन्द्रम्	म म त य स	१७
१३,५०२	धोरितम्	भ न र र स	१७
१४,०१५	शान्तसुरभि	भ न र स स	१७
१४,२६०	कर्णलता	स भ भ स स	१७
१५,६०१	विशकन्तिता	म भ स भ स	१७
१५,७५७	शीर्षविरहिता	त य भ भ स	१७.
१६,०५३	शङ्खावली	स भ र न स	१७

प्रस्तार- छन्द-नाम लक्षण सन्दर्भ-ग्रन्थ सङ्केताङ्क

२३,१३१ कहिनी र स य ज ज १७.
२३,२६४ मितम द्विय म स स ज ज १७.

षोडशाक्षर-छन्द

१,०२४ माल्योपहृद्यम् न न न य म ग १७.
४,०६६ कल्पाहारी न न न न म ग १७.
येत्तिता स स स न म ग १०, २०.
५,५३६ प्रतीपवल्ली स स भ र य ग १७
७,१५६ द्वारभटी भ भ न ज य ग १७
६,२८० वक्रावलीक न न म र र ग १७
सुरतललिता म न स त र ग १०.
चित्रम् र ज र ज र ग १०.
१० १६२ अभिधात्री स स स ज र ग १७.
१३,१०८ अनिलोहा स भ त य स य १७.
शान्तम् न य न य स ग १६.
१३ ३०६ भोगावलि त न न य स ग १७
१४,०४४ कामुकी स स स स स य १०, सोमङ्कम्-११; फलघीत-
पदम्-१७
सलितपदम् न न न ज स ग १०, कमलदलम्-१६.
१५,३७६ वलिवदनम् न य म भ स य १७
१५,५६५ सूतशिखा त य स भ स ग १७
१६,५८० परिखायतनम् स स स भ स ग १७, परिखापतन-१७
१५,६०१ मालावलयम् म भ स भ स ग १७
शरमाला भ भ भ भ स ग १०, स्मरशरमाला-१६
१६,३६६ भीमावर्त्त म भ न न स ग १७
१६,३८४ शिशुभरणम न न न न स ग १७.
कोमललता म त स त त ग १०, २०
२३,२६४ तरवारिका न स स ज ङ य १७
मङ्गलमङ्गना न भ ज ज ज ग १०, १६
२३,५५२ कमलपरम न य न य भ ग १७
२७,८२४ शणिकल्पलता न ज र भ भ य ६, १०, १४; षोडकम्-१७;
चिन्तामणि-१६; इन्दुमुखी-१६
२८,६७२ कलहकरम् न न न न भ ग १७
प्रमुदिता भ र न र न य १०.

प्रस्तार- सख्या	छन्द नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
३०, ५८४	मरशिखी	न भ ज स न ग	१७
३१, २०७	सारवरोहा	भ त न त न ग	१७
	घरयुवतिः	भ र य न न ग	२, १०, १४
	सलना	र न न न न ग	१०, २०, २२.
३२, ७६८	चलधृति	न न न न न ग	१०
३६, ६६७.	दन्तालिका	त म र म य ल	१७
४३, ६६७	कल्पधारि	र र र ज र ल	१७; चारि-१७.
५२, ४१७	कुल्यावर्तम्	म म स भ त ल	१७; कुल्यावृत्त-१७

सप्तदशाक्षर-छन्द

११, ६६८	वीरविश्राम	न न र न र ग ग	१७
१६, १८३	वल्गनम्	भ भ त न स ग ग	१७, वल्गुजम-१७
१६, १८६	कूराशनम्	त न त न स ग ग	१७, कूराशनम्-१७, कूरातिर्न-१७; कूरासन १७,
२०, ३६८.	कामरूपम्	म र भ न त ग ग	१७.
२३, ६००	अतिशायिनी	स स ज भ ज ग ग	२, १०, १४, १७, १६; यादवी-११, चित्रलेखा-१४
२३, ६०४	शायिनी	न स ज भ ज ग ग	१७
	घाणिनी	न ज भ ज ज ग ग	१० १८.
३२, ३२०	सलेखा	न न म न न ग ग	१७
३२, ३८३.	तितिक्षा	भ न य न न ग ग	१७
३२, ७६८	वसुधारा	न न न न न ग ग	१०, १६
	रोहिणी	न स म म य ल ग	१०.
३८, ७५१.	बालबिक्रीडितम्	भ स ज स य ल ग	१७
३८, ७५८	कालसारोद्धत	ज त ज स य ल ग	१७
	कान्ता	य भ न र स ल ग	१४.
	हरि.	न न म र स ल ग	१४.
५२, ४६५	बिहदरुतम्	म भ स भ त ल ग	१७
५२, ६६३	कासारम्	म म त न ल ल ग	१७.
५६, १६७	घशल	भ त ज ज ज ल ग	१७.
	विलासिनी	न ज भ ज भ ल ग	४,
६४, ६१२.	विधुरविरहिता	स ल य भ न ल ग	१७
६४, ६२४.	द्युक्वनिता	स स भ भ न ल ग	१७; शिशुकवनिता-१७
६४, ६४७.	घाहान्तरितम्	त न भ भ न ल ग	१७

प्रस्तार- सख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
६६,३६२.	कर्णस्रोतम्	न य त न म ग ल	१७
७४,८६६	प्रतीहारः	र र र र र ग ल	१७.
७५,७१४.	वान्तारम्	य म न स र ग ल	१७.
८१,१४०.	फल्गु ललितभृङ्ग	स न स भ स य ल भ स न ज न ग ल	१७ रूपगोत्वामिहृत रासक्रीडास्तोत्र

अष्टादशाक्षर-छन्द

३१,४५०.	परामोद.	य स स ज न म	१७
३२,२३०.	विलुलितवनमाला अनङ्गलेखा चन्द्रमाला	न न म न न म न स म म य य न न म म य य	१७. ५, १० ५, १०
३७,४५०.	नीलशादूलम् मन्दारमाला	न न म य य य स त न य य य	१७; नीलशादुर-१७; नील- मालूरम्-१७ १६
४४,०२५	सत्वेतु पङ्कजवक्त्रा भङ्गि काञ्ची केसरम्	म न न ज र य न न स स त य म भ भ भ न य भ र भ य र र म म न य र र	१७. १०, पङ्कजमुक्ता-१६. १०; विच्छिन्ति -११. १०; वाचासकाञ्ची-११, २०. ५, १०, १५
७४,८६६	सिन्धुसौवीरम् निदास	र र र र र र न न र र र र	१७ १०, तारका-११, मह्य- मातिका-१४
७७,५०४	पविणी	न न र न न र	१७
७७,८०६	श्रीङ्क्रीडम् बुद्बुदम्	म भ न न र र स ज स ज त र	१७ १०
८६,००८	वसुपदमञ्जरी हरिणीपवम्	न ज भ ज ज र न स म त भ र	१७ ५, १०
६३,०१७	हरिणान्तुतम् कुरङ्गिका धलम्	म स ज ज भ र म त न ज भ र म भ न ज भ र	१४, १७. ५, १० १०, १४, धधलम्-५.
६५,७०४	षट्पदेरितम्	न र न र न र	१७
६६,०६४	पायिवम् गुन्दजभेद	ज ग ज स न र न न न न न र	१७ रूपगोत्वामिहृत-परिष्टयधस्तोत्र

प्रस्तार- सख्या	छन्द-नाम	सक्षरा	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताद्ध
१, १२, ३४८	परिपोषकम् श्रीडा	स स स स स स य म न स त स	१७ १०; सुधा-१४; मुवतामाला- १४, १७.
	सुरभि	स न ज न भ स	१०, १६.
	मणिमाला	भ भ भ म भ स	१०, १६
१, २६, ३६१.	श्रद्धवगति	भ भ भ भ भ स	१६
१, ४६, ७६७	श्रद्धान्तरालापि	त त त त त त	१७; श्रद्धान्तरालापि-१७
१, ४६, ७६८	पतङ्गपादः	ज त त त त त	१७
२, २४, ६६५	हीरकहारधरम्	भ भ भ भ भ भ	१७.
२, ४६, ६६१.	वण्डी	त न त न त न	१७.

एकोनविंशति-छन्द

२०, ४६६.	भिल्लीलीला	न य म म ज म ग	१७
३१, २२५.	विधुनिधुवनम्	म न न त न म य	१७
४८, १८६.	माराभिसरणम्	त न म भ स य ग	१७
७४, ८६६.	लोललोलम्बलीलम्	र र र र र ग	१७
	विस्मिता	य म न स र र ग	१४
	मुग्धकम	य म न न र र ग	१०.
	माघवीलता	म र न स स ज ग	१०, २०
	रतिलीला	ज स ज स ज स य	१०, १६
	सहणीवदनेन्दु	स स स स स य	६, १०.
१, ३०, ३४६.	किरणकीर्ति	त ज त भ न स ग	१७.
	वञ्चितम्	म त न स त त ग	१०, चन्द्रबिम्बम्-५; बिम्ब- १४, विञ्चितम्-१४.
१, ५५, ४८१.	शिलीमुखोज्जृम्भित	म स ज न ज त ग	१७
१, ७४, ७६३	कलापदीपकम्	र ज र ज र ज त	१७.
१, ७४, ७८४	प्रपञ्चचरमरम्	न म र ज र ज य	१७; प्रपञ्चम्-१७
	पञ्चचामर	न न स ज र ज ग	१४
१, ७८, १३६	कल्पलतरपताकिनी	म न न स स ज ग	१७
	मकरन्दिका	य म न स ज ज ग	५, १०, १४.
	मणिमञ्जरी	य भ न य ज ज ग	१४
	तरलम्	न भ र स ज ज ग	१०, १६
	ऊर्जितम्	र स स त ज ज ग	१०, शार्ङ्ग-१६.
१, ६२, १६२	निर्गलितमेखला	न न र न भ ज ग	१७.
	यामुवेगा	म स ज स न ज ग	१०, २२.

प्रस्तार- सख्या	छन्द-नाम	लक्षण	स दर्भं ग्रन्थ सङ्केताद्
४७, ६३ ४६१	गङ्गोदकम् मेघमाला	र र र र र र र र न न र र र र र र	१७ ३, १० २२
४८, ४८, ३०१.	उत्कटपट्टिका महामदनसायक विभ्रमगति	त ज र ज न स र र न भ ज भ ज भ ज र म स ज स त त भ र	१७ १६. १०, २०
५६, ६३ ६१२	शम्बरम्	न भ भर न भ भ र	१७
८३, ६८, ५६७	वेल्लितवेल्लम् द्रुतलघुपदगति सम्भ्रान्ता	भ भ भ म स न न स भ भ भ त न न न स न य भ त न न न स	१७ १० १०.
८३, ८८, ६०८	श्रुतलघुलक्षम्	न न न न न न स	१७
पञ्चविंशति-छन्द			
	मन्तेभ	म म म म म त य म म	१६.
२६, ७६, ६०३	शरभूरिणी	र स ज ज भ र स य ग	१७
४७, ६३, ४६१	ह्रीणहृयङ्गवीनम्	र र र र र र र र ग	१७
७२, ०२, ८१५.	नीपवनीयकम्	भ न न स भ स स स ग	१७
७५, ७६, ८०८	कुमुदमाला	न त स भ य न त स ग	१७
८२, ८३, ६०४	रसिकरसाला	न न स स भ त न स ग	१७
८३, ६२, ४८६	विरहविरहस्यम	म न न त य न न स ग	१७
८३, ८१, ३११	भास्करम्	भ न ज य भ न न स ग	१७
६५, ६२, ४६७.	चित्तचिन्तामणि	र र र न ज त त त ग	१७
१, १३, ८५, ६७३	ध्याक्वैशक्वैशलम् हसलय	त य भ भ स स स ज ग न न न न स भ भ भ ग	१७. १०, १६
१, ४३ ८०, ४७१	शिविका	भ भ भ भ भ भ भ ग	१७
१, ५४, ४५, ६६१.	भाविनीविल- सितम्	र न र न र न र न ग	१७
१, ६१, ७५, १६८	विशेषकवलितम् घपलम्	न न म म ज ज न न ग न ज ज य न न न ग	१७, विशेषित-१७. १०
१, ६७, ७४, ७१७	घभ्रभ्रमणम् हसपदा	त न म स न न न ग त य भ भ न न न ग	१७ ६ १०, २०
१ ६७, ७७, २१६	अलका	न न न न न न न ग	१७; अलिका-१७
१ ६१, ७३ ६६२	मल्लपल्ली- प्रकाशम्	य य य य य य य स	१७
२, ३५, २५, ०८४	सौदामनवाम	स स स स न ज य स स	१७

प्रस्तार सख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ सङ्केताङ्क
षड्विंशोक्त-छन्द			
३३, ६६, १६६	तनुविलवि- ञ्चितम्	म म न य न त य ग ग	१७
३६, ६४, ५७६.	विनयविलास.	न य न य न य न य ग ग	१७
६५, ११, ४६७	विश्वविश्रवाप्त	म य य य र र त त ग य	१७
६५, ३४, ६६१	प्रशोकानोकहम	म भ न भ न र त त ग ग	१७
६५, ८७, ०६१	भ्राभासमानम्	य य य य त त त त ग ग	१७.
६५, ८७, ०६५	धीरधिक्रान्तः	म न ज त त त त त म य	१७
१, ११, ८४, ८११.	विकुण्डकण्ठ	र ज र ज र ज र ज ग ग	१७
१, १२, ०२ ८१६	चादगति	न न स म न ज र ज ग ग	१७
१, ५७, ६०, ३२१.	भमनशलाका	म न स म न य त न ग ग	१७
१, ६७, ६७, ८७१	उत्थितकदनम्	भ न ज ज न न न ग य	१७
	मकरन्द	न य न य न न न ग ग	१७.
	वनलतिका	न न न न न न न य ग	१६
१, ६१, ३२, ६६२	कुहकुकुहरम	न न म य न न म य ल ग	१७
१, ६२, ४८, २८५	सुरसूचक	म स ज स त स य य ल य	१७
१, ६८, १५, ६१०.	विषाणाश्रितम्	य न र भ ज त स य ल य	१७.
२, २३, ६६, ४२७	पिनिद्रसिन्धुर	र र र र ज र ज र ल ग	१७
२, २३, ८०, १७७	शकुन्तकु तत	म र र न न र ज र स य	१७
२, ८१, ४२, ४२७	काक्लीवल- कोकित	र स ज न म र स ज ल ग	१७
	सुधावलदा	न ज भ ज ज ज भ ज ल ग	१०, १६.
२, ६३, ३०, ६४३	शृङ्खलवलपित	भ न न भ भ न न ज ल ग	१७
३, २१, ७५ ७६२.	विरामवाटिका	न ज र स न ज र न ल ग	१७
३, ३५, ६२, ८२१	कर्पाटकम्	त न न भ ज भ न न ल ग	१७.
	श्यापीड	भ न न स म न न न ल ग	१०,
	वेगवती	न न न स भ न न न ल ग	१०
३, ८३, ४७, ६६८.	कुम्भकम्	न न र र र र र ग स	१७
५, ७५, २१, ८८४	वज्रवट	स स स स स स स ल स	१७

प्रथीणर-छन्द

२७	मातापुत्र	म त ल त न न य य य	५. ६, मातापुत्र-१०
२७.	विषसितकुसुमम्	म भ न न न न न न स	१६, मातापुत्रम्-१६.
२७	मातापुत्रम्	म म ल न भ म म भ म	१६.

वर्णसंख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
२७.	त्रिपदललितम्	न न न न भ न भ न स	१६.
२८.	त्रिभङ्गी	न स भ न त ज त स य	१६.
२९.	प्रमोदमहोदयः	म त य त न न न र स ल ग	१०.
२९.	कला	न न न न न न न न ल ग	१६.
२९.	मणिकिरण	न न भ न ज न न न न ल ग	१६;
३०.	नूत्तललितम्	भ ज स ग भ ज स न भ य	१०; वृत्तललितम्-१६.
३१.	लहरिका	न न न न न न न न न ग	१६.
३१.	विशालं	३१ वर्णं	१६.
३१.	सञ्जविशालं	३१ वर्णं	१६.
३२.	उपविशालं	३२ वर्णं	१६.
३२.	खञ्जोपविशालं	३२ वर्णं	१६.
३३.	क्षत्र	भ न न भ न न भ न न भ य	१६.
३४.	चित्रलय	भ न न भ न न भ न न भ न ग	१६.
३४.	द्युतिच्छन्दः	म म त न न न न न स ज ग	२०; मेघदण्डक-२२
३८.	ललितलता	न-१२, ल ग	१०, १६.
३८.	पिपीलिकादण्डकः	म म त न न न न न न र स ल ग	२२.
४२.	पणवदण्डकः	म म त न न न न न न न न ज भ र	२२.
४६.	करभदण्डकः	म म त न न न न न न न न न स ज ज ग	२२.
५०.	ललितदण्डकः	म म त न न न न न न न न न न न र स ल ग	२२.
	घारी	४६ मात्रा	१६.
	उपघारी	४२ मात्रा	१६.

दण्डक-छन्दः

३३.	घर्णवः	[न न २-६]	५, ६, १०, १३, १५, १६, १७, १८, १९; घर्ण-२२.
३६.	ध्यालः	[न न २-१०]	५, ६, १०, १३, १५, १६, १७, १८, १९; स्तवः-२२.
३६.	जीमूतः	[न न २-११]	५, ६, १०, १३, १५, १६, १७, १८, १९; ध्यालः-२२.
४२.	सीताकरः	[न न २-१२]	५, ६, १०, १३, १५, १६, १७, १८, १९; जीमूत-२२.

वर्ण-संख्या	ध्वनि नाम	लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ-सङ्केताङ्क
४५	उद्दाम	[न न र-१३]	५, ६, १०, १३, १५, १६, १७, १८, १९, लीलाकर-२२
४८	शक्त्वि	[न न र-१४]	५, ६, १०, १३, १५, १६, १७, १८, १९; उद्दाम-२२
५१	विश्ववाट्	[न न र-१५]	१७, समुद्र-६, १०; अर्क-१६, आराम-१४, माला-५, सिंह-२२
५४	कालदण्ड	[न न र-१६]	१७, सघाम-१४, १७; भुजग-६, १०, चन्द्रेण-१६, माला-५, समुद्र-२२
५७	पीण्डुक	[न न र-१७]	१७, सुराम-१४, भोगोद्-१६, माला-५, भुजग-२२
६०	उदारपाद	[न न र-१८]	१७, वैकुण्ठ-१४, पीण्डुक-१६, माला-५, प्रवितक-२२
६३	सोत्कण्ठ	[न न र-१९]	१४, १७, वाराह-१६, माला-५, प्रवितक-२२
६६	सार	[न न र-२०]	१४, १७, वात-१६, माला-५, ..
६९	वासार	[न न र-२१]	१४, १७, माला-५, महाचण्डवृष्टि-१६, ..
७२	विस्तार	[न न र-२२]	१४, १७, माला-५, महाचण्डवृष्टि-१६, ..
७५	सहार	[न न र-२३]	१४, १७, .., ..
७८	नीहार	[न न र-२४]	१४, १७, .., ..
८१	मदार	[न न र-२५]	१४, १७, .., ..
८४	वेदार	[न न र-२६]	१४, १७, .., ..
८७	साधार	[न न र-२७]	१४, १७, .., ..
९०	सकार	[न न र-२८]	१४, १७, .., ..
९३	सवार	[न न र-२९]	१४, १७, .., ..
९६	विमर्ष	[न न र-३०]	१७, सावद-१४, माला-५, ..
९९	दीपनाली	[न न र-३१]	१७, गोविन्द-१४, .., ..
१०२	सानद	[न न र-३२]	५, १४, .., ..
१०५	सावोह	[न न र-३३]	१४, .., ..
१०८	मग्द	[न न र-३४]	१४, .., ..
२०	पत्रग	[न न र-३५]	१५, १६
३१	इन्द्रोसि	[न न र-३६]	१०, १६,
३४	हेलावती	[न न र-३७]	१०, १६,
३७	मानती	[न न र-३८]	१०, १६,

वर्ण- सख्या	छन्द-नाम	लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताद्
४०.	फेलि	[न ग र-१२]	१०, १६;
४३.	ककेलिल.	[न ग र-१३]	१०, १६,
४६	लीलाविलासः	[न.ग र-१४]	१०, १६,
२८.	शकापतनम्	[म-६, ग]	१७.
२९	भुजगविलासः	[म-६, ग ग]	५, १०, १६.
२८.	लावण्यलीला- प्लुतम्	[न. य-८, ल]	१७.
२८	आलानिकम्	[न न र य-६, ल]	१७.
२९.	स्मारमाला- कुल	[स, य-८, ल ग]	१७
३१.	आर्द्रस्तवक	[न य न य न य न य न य ल]	१७.
४८.	विदाघसुभगी	[त न त न त न भ म त न त न त न भ भ]	१७.
५७	विशेषस्तवकम्	[न य न य न य न य भ स भ स भ स म भ स भ स]	१७
२९.	चण्डपात	[ल ५, र-८]	५, चण्डकील -१६; चण्डकाल -१०.
३५	,,	[ल ५, र-१०]	५.
३२.	सिंहविक्रान्त	[ल ५, य-९]	५, १०, १४, १७.
३०.	मेघमाला	[न न म म, य-६]	५, १६ [न न ययेष्ट भगण] १६, [न म ययेच्छ भगण१०]
३६.	चण्डवेग	[न न. य-१०]	५, १०, १६.
३२	सिंहक्रीडः	[य-१०, ग ग]	५, १७
३०.	कामवाण	[त-१०]	५, १०; वाम-१६, [ययेच्छ त, ग २; स, ग २; ज, ग २; य, ग २।] १६.
२९	सिंहविक्रान्त	[ल-५, य-८]	१६.
३६.	उहालषः	[म-१२]	१६
४८	सिंहविक्रीड	[य-१६]	१०, १६; सिंहविक्रान्त -१४.
३६.	वितानम्	[म-१२]	१६.
३६.	घटुस्त	[म-१२]	१६.

वर्ण- संख्या	छन्द-नाम	संक्षेप	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सङ्केताद्य
३६.	अचलः	[न-१२]	१६.
२८.	वर्णकः	[न न. भ-७, ग.]	४.
३५.	समुद्रः	[न न. र ज र ज र ज र ज र ल.ग]	४.
	उत्कलिका	[न न, पद्यमात्रिकगण ययेच्छ]	१०.
३०.	बालतीलातुरः	[१० गण ऐच्छिक]	१७.
३२.	मनोहरणकविला	[१० गण ऐच्छिक, ल-२]	१७.
८६	कुमुमितकायः	[म म त न त य ज त र भ स स भ स भ स भ स भ त य स भ त य स भ न न ग ग]	१७.
	भकरालयः	[न ग र, सप्ताक्षरगण ययेच्छ]	१६.
	सिंह.	[ल ३, ययेच्छ गण]	१६.
	घट्टः	[ल. ४, ययेच्छ गण]	१६.
	सण्ड	[ल. ५, ययेच्छ गण]	१६.
	घात	[ल. ७, ययेच्छ गण]	१६.
६६६.	महावण्डक.	[न न, २-३३३]	सामयगुन्वरहृत्ना वितानिपत्री

अर्द्धसमवृत्त

वर्ण- संख्या	वृत्तनाम	विषमचरणी वा संक्षेप*	समचरणी वा संक्षेप*	सन्दर्भ-ग्रन्थ-गनेतादि
(३, ८)	बामिनी	[र]	[ज र ल ग]	१०.
(३, १२)	दिली	[र]	[ज र ल र]	१०.
(३, १६)	नितम्बिनी	[र]	[ज र ल र जय]	१०
(३, २०)	वारणी	[र]	[ज र ल र ल र ल ग]	१०
(३, २४)	वतसिनी	[र]	[ल र ल र ल र ल र]	१०.

टि-० वर्णसंख्या के बावजूद ये प्रयुक्त पदनाम अर्द्ध प्रथम और द्वितीय चरणी वा और दूसरा एक द्वितीय और तृतीय चरणी के वर्णों वा छोड़कर हैं।

* विषम चरणी वर्णानु प्रथम और द्वितीय चरणी वा संक्षेप ।

* सम चरणी वर्णानु द्वितीय और तृतीय चरणी वा संक्षेप ।

वर्ण संख्या	वृत्तनाम	विषमचरणो का लक्षण	समचरणों का लक्षण	संदर्भ-ग्रन्थ-संकेतांक
(५, ११)	इला	[स स ग]	[स स स ल ग]	१०
(५, २४)	मृगाङ्गमुली	[स ल ग]	[स स स स स स स स]	१०
(८, ३)	धानरी	[ज र ल ग]	[र]	१०
(८, ८)	प्रथर्तकम्	[र ज ग ग]	[ज र ल ग]	१६
(९, १०)	धंसारी	[त ज र]	[म स ज ग]	१७
(१०, १०)	अर्तलम्	[ज त त ग]	[त त त ग]	१७ अर्तलम्-१७
(१०, १३)	शुकावली	[त ज र ग]	[म न ज र ग]	१७.
(१०, १२)	समुद्रकाता	[त ज र ग]	[म स स य]	१७.
(१०, १४)	विलासवापी	[त ज र ग]	[स भ र ज ग ग]	१७
(१०, १०)	विश्वप्रभा	[त त त ग]	[ज त त ग]	१७
(१०, १२)	सम्पातशीला	[त म र ग]	[स न म य]	१७
(१०, १०)	घटिका	[त स ज ग]	[स स ज ग]	१७
(१०, १३)	जारिणी	[न त त ग]	[र र न त ग]	१७
(१०, ९)	वासववन्दिता	[म स ज ग]	[त ज र]	१७,
(१०, ११)	करघा	[म स ज ग]	[न न र ल ग]	१७.
(१०, ११)	सुया	[म स ज ग]	[स भ र ल ग]	१७
(१०, १०)	प्रभासिता	[म स ज ग]	[स स ज ग]	१७
(१०, १२)	मकरावली	[म स स ग]	[स भ भ स]	१०
(१०, १०)	शालोलघटिका	[स स ज ग]	[त स ज ग]	१७.
(१०, १२)	अरुन्तुद	[स स ज ग]	[न ज ज र]	१७.
(१०, १०)	प्रभासिता	[स स ज ग]	[म स ज ग]	१७.
(१०, १२)	नवनीलता	[स स ज ग]	[स भ ज र]	१७, अरुन्तुद-१७ अवलीलता-१७
(११, ११)	विपरीताख्यानिकी	[ज त ज ग ग]	[त त ज ग ग]	२, ५, १० १३, १७, १८, १६, २२
(११, ११)	आख्यानिकी	[त त ज ग ग]	[ज त ज ग ग]	२, ५, १० १३, १७ १६, आख्यानिका-१८ २०, २२
(११, १२)	किप्रटक	[त ज ज ल ग]	[स स स स]	१७
(११, ११)	समयवती	[त म त ल ग]	[स म म ल ग]	१७
(११, १२)	शिशिराशिला	[न न र ल ग]	[न ज ज र]	१७
(११, १०)	वैपाली	[न न र ल ग]	[म स ज ग]	१७.
(११, ११)	पाटलिका	[न य न ग ग]	[भ भ भ ग ग]	१७
(११, १२)	साचीवृत्तवदना	[न य भ ग ग]	[त न भ स]	१७

वर्ण-संख्या	वृत्तनाम	विषमचरणो का लक्षण	समचरणो का लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ संकेतांक
(११, ११)	श्रीपगवम्	[न र र ग ग]	[भ र र ल ग]	१७
(११, १२)	उपाढघम्	[न स ज ग ग]	[भ भ र य]	१७.
(११, ११)	करभोद्धता	[भ त र ल ग]	[स न र ल ग]	१७
(११, १२)	विलसितलीला	[भ भ त स ग]	[न ज न स ग]	१०, १६.
(११, १२)	द्रुतमध्या	[भ भ भ ग य]	[न ज ज य]	२, ६, १०, १३, १७ १८, १६ २०, २२; चतुस्रमध्या-५.
(११, ११)	शोरकित्ता	[भ भ न ग ग]	[न य न ग ग]	१७.
(११, १२)	शमलाकरा	[भ भ भ ग ग]	[भ न ज य]	१७
(११, १०)	सर्गवती	[भ भ भ ग ग]	[स स स ग]	१७
(११, ११)	श्रवहित्रा	[भ भ भ ग ग]	[स स स ल ग]	१७
(११, १०)	केतु	[भ र न ग ग]	[स ज स ग]	१७.
(११, ११)	श्रीपगधीनम्	[भ र र ल ग]	[न र र ग ग]	१७
(११, १३)	सद्भास्यम्	[म भ न स ग]	[स स न न ग]	१७
(११, १०)	युद्धविराट्	[म स ज ग ग]	[त ज र ग]	१७
(११ १२)	शमुरादृषा	[म स ज ग ग]	[न न र य]	१७
(११, ११)	वर्णिनी	[र न भ ग ग]	[र न र स ग]	१७
(११ १२)	कितकित्ता	[र न र ल ग]	[न भ ज र]	१७
(११, ११)	सारिका	[र न र स ग]	[र न भ ग ग]	१७
(११, १०)	सलिता	[र स स स ग]	[स ल ज ग]	१४.
(११ ११)	शासभञ्जिका	[स न र स ग]	[भ त र ल ग]	१७
(११, १२)	विमानिनि	[स भ र स ग]	[म न ज र]	१७.
(११ १०)	धनुषा	[स भ र स ग]	[म स ज ग]	१७
(११ १०)	मुन्दरी	[स भ र ल ग]	[स स ज ग]	१७, सुरमासिका- १७, विषोडिनी-१७
(११, ११)	शमवती	[स म न स ग]	[स म त स ग]	१७,
(११, १२)	मातभारिणी	[म स ज ग ग]	[स भ र य]	१०, २०, निगन्धिनी- ११, उपोडगता-१७ साम्तमासिका-१७. परिधुता-१७, सुबो- पिता-१६, सिन्धा-१६
(११, १०)	हरिमुप्ता	[म स स स ग]	[म भ भ र]	१७.
(१२, १२)	दासनिधि	[ज त ज र]	[म त ज र]	१६; गुनन्धिनी-१६
(१२ १२)	विपरीतप्रामा	[ज भ ग य]	[म भ स य]	१६
(१२, १)	निगन्धि	[ज र ज र]	[र.]	१०

वर्ण-संख्या	वृत्तनाम	विपमचरणो का लक्षण	समचरणो का लक्षण	सन्दर्भ-ग्रन्थ- संकेतांक
(१२, १३)	पद्मावती	[त भ ज य]	[स ज स स ग]	१७.
(१२, १२)	सरसीकम्	[त भ ज य]	[स भ ज य]	१७
(१२, १२)	पद्यनिधिः	[त त ज र]	[ज त ज र]	१९; नन्दिनी-१९
(१२, ११)	श्रवाचीकृतवदना	[त न भ स]	[न य भ ग ग]	१७.
(१२, १२)	भामा	[त भ स य]	[ज भ स य]	१९
(१२, १२)	सिंहप्लुतम्	[त भ स य]	[ज भ स य]	१९; (श्रुति-स्मृति- उपजाति)
(१२, ११)	ईहा	[न ज ज य]	[भ भ भ ग ग]	१७.
(१२, ११)	अपरवक्त्रम्	[न ज ज र]	[न न र ल ग]	१७; मृदुमालती-१७.
(१२, १०)	अनूपकम्	[न ज ज र]	[स स ज ग]	१७.
(१२, १३)	मञ्जुसौरभम्	[न ज ज र]	[स ज य ज ग]	१४
(१२, ७)	क्षान्ति.	[न न न य]	[म म ग]	१९; चूडा-१९.
(१२, १२)	कौमुदी	[न न भ भ]	[न न र र]	१४.
(१२, ११)	सुराड्या	[न न र य]	[म स ज ग ग]	१७.
(१२, १५)	शरावती	[न न र य]	[स भ म ज र]	१७
(१२, ११)	किलिकिती	[न भ ज र]	[र न र ल ग]	१७.
(१२, ११)	श्रकुसुमचरम्	[भ न ज य]	[भ भ भ ग ग]	१७.
(१२, ११)	श्रामलकी	[भ भ भ भ]	[भ भ भ ग ग]	१९; चुक्षा-१९.
(१२, ११)	उपाड्यम्	[भ भ र य]	[न स ज ग ग]	१७.
(१२, १२)	उलपीहा	[भ भ र य]	[स भ र ज]	१७.
(१२, ११)	विमानिनी	[भ न ज र]	[स भ र ल ग]	१७
(१२, १६)	अहीनताली	[म न ज र]	[स भ स ज र ग]	१७.
(१२, १३)	द्विद्वारणी	[म स ज म]	[स भ र य ग]	१७.
(१२, १०)	कान्ता	[म स स य]	[त ज र ग]	१७.
(१२, १३)	मृगीयवानी	[र ज र ज]	[ज र ज र ग]	१४, १८.
(१२, १३)	चमूदभीष्टः	[र म ज र]	[स न ज र ग]	१७.
(१२, १०)	पातशीला	[स न म य]	[त म र ग]	१७.
(१२, १२)	उपसरसीकम्	[स भ ज य]	[त भ ज य]	१७
(१२, १०)	करीरीता	[स भ ज र]	[स स ज ग]	१७.
(१२, ११)	लुप्ता	[स भ भ र]	[स स स ल ग]	१७.
(१२, १२)	अर्भकपवित	[स भ र ज]	[भ भ र य]	१७.
(१२, १३)	अप्रमायिनी	[स भ र य]	[न ज ज र ग]	१७
(१२, ११)	प्रमातिका	[स भ र य]	[स स ज ग ग]	१७; उपोद्गता-१७ सौरभसचितम्-१७.

वर्ण-संख्या	वृत्तानाम	विषमचरणो का लक्षण	समचरणो का लक्षण	सन्दर्भ ग्रन्थ- संकेतांक
(१२, ११)	नटक	[स स स स]	[त ज ज ल ग]	१७
(१३, १३)	प्रकीर्णकम्	[ज भ स ज ग]	[त भ स ज ग]	१६; (द्वि-द्वि- उपजाति)
(१३, १३)	निर्मधुवारि	[त भ र स ल]	[स ज स ज ग]	१७.
(१३, १४)	लास्यलीलालय	[त य र र ग]	[भ स त त ग ग]	१७.
(१३, १२)	अञ्चिताया	[न ज ज र ग]	[न न र य]	१७
(१३, १२)	प्रमाथिनी	[न ज ज र ग]	[स भ र य]	१७
(१३, १४)	आलोपनम्	[न त त त ग]	[न भ य य ल ग]	१७
(१३, १६)	परप्रीणिता	[न न त त ग]	[न न स त त ग]	१७
(१३, १३)	विमुखी	[न न भ स ल]	[न न स स ग]	१७.
(१३, १५)	प्रमोदपरिणीता	[न न र ज ग]	[न ज ज भ य]	१७
(१३, १३)	सुरहिता	[न न स स ग]	[त न न न ग]	१७
(१३, १३)	द्विमुखी	[न न स स ग]	[न न भ स ल]	१७
(१३, १३)	शिशुमुखी	[न भ ज ज ग]	[न भ स ज ग]	१७.
(१३, १३)	अनिरया	[न भ स ज ग]	[न भ ज ज ग]	१७
(१३, १४)	प्रतिबिनीता	[न य ज र ग]	[स भ र न ग ग]	१७
(१३, १३)	अल्पस्तम्	[भ न ज ज ग]	[भ न य न ल]	१७
(१३, १३)	अर्धस्तम्	[भ न य न ल]	[भ न ज ज ग]	१७
(१३, १३)	अनङ्गपदम्	[भ भ भ भ ग]	[स स स स ग]	१७
(१३, १३)	धीरावर्त्तं	[म त य स ग]	[म भ स म ग]	१७.
(१३, १३)	धीरावर्त्तं.	[म भ स म ग]	[म त य स ग]	१७.
(१३, १०)	किन्नुभावती	[म न ज र ग]	[त ज र ग]	१७
(१३, १३)	अलिपदम्	[र र न त ग]	[न त त त ग]	१७
(१३, १३)	मधुवारि	[स ज स ज ग]	[त भ र स स]	१७
(१३, १३)	बलनावती	[स ज स ज ग]	[स ज स स ग]	१७.
(१३, १२)	पद्मावती	[स ज स स ग]	[त भ ज य]	१७
(१३, १३)	कलना	[स ज स स ग]	[स ष स ज ग]	१७
(१३, १२)	चमूहः	[स न ज र ग]	[र न ज र]	१७.
(१३, १२)	विषद्वानी	[स भ र य ग]	[म स ज म]	१७.
(१३, १४)	मन्दाक्रान्ता	[स स ज र ग]	[म स ज र ग य]	१७
(१३, ११)	कामाभी	[स स न न ग]	[म भ न स ग]	१७
(१३, १३)	भुजङ्गभृता	[स स स स ग]	[भ भ भ भ ग]	१७.
(१४, १५)	अवरोपवनिता	[न भ भ र ल ग]	[स स ज भ य]	१७.
(१४, १३)	धनालेपनम्	[न भ य य ल ग]	[न त त त ग]	१७.

षष्ठ परिशिष्ट

गाथा एवं दोहा भेदों के उदाहरण^८

गाथा-भेदों के उदाहरण

१. लक्ष्मी:

यत्रार्यायां वर्णास्त्रिंशत्संख्या लघुत्रयं तत्र ।
दीर्घास्तारतुल्याश्चेत्स्युः प्रोक्ता तदा लक्ष्मीः ॥१॥

२. ऋद्धिः

यत्रार्यायां वर्णा एकत्रिंशन्मिता यदा पञ्च ।
लघवः पञ्चदशत्या दीर्घा ऋद्धिः समा नाम्ना ॥२॥

३. बुद्धिः

यत्रार्यायां वर्णा दन्तंस्तुल्या भवन्ति चेद् दीर्घाः ।
तत्त्वैस्सप्तलघूनां नाम्ना बुद्धिस्तदा भवति ॥३॥

४. लज्जा

यत्रार्यायां वर्णा देवैस्तुल्या जिनोन्मिता गुरवः ।
नवलघवश्चेत्तत्र प्रोक्ता नाम्ना तदा लज्जा ॥४॥

५. विद्या

वर्णा वेदाग्निमिता गुरवो रामादिवभिमिता यत्र ।
रुद्रमिता लघवश्चेन्नाम्ना विद्या तदा आर्या ॥५॥

६. क्षमा

याणाग्निमिता वर्णा भ्राकृतितुल्यास्तु यत्र गुरवस्स्युः ।
ह्रस्वा विश्वनिषमिता प्रोक्ता नाम्ना क्षमा सार्या ॥६॥

७: देही

पट्त्रिंशन्मितवर्णाः प्रकृतिमिताः सम्भवन्ति चेद् दीर्घाः ।
बाणेन्दुमिता लघवः कथिता सार्या तदा देही ॥७॥

^८ वृत्तामोक्षिक में गाथा और दोहा छन्द के प्रस्तार-भेद से नाम एक सरोप में लक्षण प्राप्त है किन्तु इन भेदों के उदाहरण प्राप्त नहीं हैं अतः बाल्मत्तभ-ग्रन्थ से इनके उदाहरण उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

वर्ण-संख्या	वृत्तनाम	विपमचरणो का लक्षण	समचरणो का लक्षण	सदभ-प्रथ- सकेताक
(१४, १३)	लास्यलीला	[भ स त त ग ग]	[त य र र ग]	१७.
(१४, १३)	सम्मदाक्रान्ता	[म स ज र ग ग]	[स स ज र ग]	१७.
(१४, १८)	मार्दङ्गी	[स न स न ग ग]	[म न ज न ज य]	१७, मार्दङ्गी-१७.
(१५, १०)	अकोशकृष्टा	[स भ र ज ग ग]	[त ज र ग]	१७.
(१४, १३)	श्रुतिप्रतिबिनीता	[स भ र न ग ग]	[न य ज र ग]	१७.
(१५, १४)	उरुगी	[न न न न स]	[न न भ न ल ग]	१६.
(१५, १५)	देवगीति	[र ज र ज र]	[ज र ज र य]	२२.
(१५, १३)	प्रमोदपदम्	[न ज ज भ य]	[न न र ज ग]	१७.
(१५, १६)	आसववासिता	[न भ ज र य]	[स भ र ज स ग]	१७.
(१५, १२)	बृहच्छरायती	[स भ न ज र]	[न न र य]	१७.
(१५, १४)	अवरोधवनिता	[स स ज भ य]	[न भ भ र ल ग]	१७.
(१६, ३)	सारसी	[ज र ज र ज य]	[र]	१०.
(१६, १६)	वासिनी	[त ज भ ज ज ग]	[न ज भ ज ज ग]	१७.
(१६, १६)	वासववासिनी	[न ज भ ज ज ग]	[त ज भ ज ज ग]	१७.
(१६, १३)	अपरशीणिता	[न न स त त ग]	[न न त त ग]	१७.
(१६, १५)	धनासववासिता	[स भ र ज स ग]	[न भ ज र य]	१७.
(१६, १२)	हीनताली	[स भ स ज र ग]	[म न ज र]	१७.
(१७, १८)	मानिनी	[भ र न ज न ल ग]	[न ज भ स न स]	१०.
(१७, १८)	मानिनी	[भ र न भ र ल ग]	[न ज भ स न स]	१६.
(१८, १४)	मार्दङ्गी	[म न ज न न य]	[स न स न ग ग]	१६.
(२०, ३)	अपरा	[ज र ज र ज र ल ग]	[र]	१०.
(२४, ३)	हंसी	[ज र ज र ज र ज र]	[र]	१०.
(२६, ३१)	शिखा	[न न न न न न न न न ल ग]	[न न न न न न न न न न ग]	२, ५, १०, १३, १८, १६, २०, २२.
(३१, २६)	खड्गा	[न न न न न न न न न न ग]	[न न न न न न न न न ल ग]	२, ५, १०, १३, १८, १६, २२.

१८. गाहिनी

नवयुगपरिमितवर्णा यदि दश गुरवो भवन्ति नियत चेत् ।
नगगुणपरिमितलघवस्तदनु भवति गाहिनी किल सा ॥१८॥

१९. विश्वा

वसुयुगपरिमितवर्णा यदि नव गुरवो भवन्ति लघवश्चेत् ।
इह नवहुतभुगभिमिताः प्रभवति फणिपतिभणितविश्वा ॥१९॥

२०. वासिता

नवयुगपरिमितवर्णा यदि वसुगुरवः शशियुगमितलघवः ।
फणिगणपतिपरिभणिता भवति तदनु वासिता किल सा ॥२०॥

२१. शोभा

इह यदि मुनिमितगुरवो हुतभुगजलनिधिमितास्तथा लघवः ।
फणिगणपतिरिति निगदति भवति सनियममियमिति शोभा ॥२१॥

२२. हरिणी

यदि रसपरिमितगुरवः शरयुगपरिमितलघव इह तदनु चेत् ।
फणिपतिपरिभणिततनुः प्रभवति नियत तद्वा हरिणी ॥२२॥

२३. चक्री

नगयुगमितलघुगण इह शरमितगुरवो भवन्ति यदि नियतम् ।
फणिगणपतिरिति निगदति भवति ननु सनियममिह चक्री ॥२३॥

२४. सरसी

जलनिधिपरिमितगुरवो यदि नवजलधिपरिमितलघव इह चेत् ।
भुजगाधिप इति कथयति भवति नियतविहिततनु सरसी ॥२४॥

२५. कुररी

स्युरथ गुणमितगुरव इह यदि दशधरधरपरिमितलघव इति च ।
फणिगणपतिरिति निगदति भवति लसद्यतिरियं कुररी ॥२५॥

२६. सिंही

द्विकगुरुगुणशरपरिमितलघुविरचिततनुरिह यदि च भवति किल ।
अहिगणपतिरिति कथयति नियतजनितविरतिरथ सिंही ॥२६॥

२७. हंसी, हंसपदवी च

शशिमितगुधरशरमितलघुविरचिततनुरियमिह यदि विलसति ।
फणिगणपतिभणितविरतिहसपदविरथ नियतकृतयति ॥२७॥

८. गौरी

सप्तान्निमिता वर्णा नखमितगुरवो घनोन्मिता लघवः ।
यत्र स्युः किल सार्या तर्हि भवेन्नामतो गौरी ॥८॥

९. धात्री, रात्री च

वसुगुणतुल्या वर्णा गुरवो लघवो यदातिधृतितुल्याः ।
फणिपप्रोक्ता सार्या भवति तदा नामतो धात्री ॥९॥

१०. चूर्णा

नवगुणपरिमितवर्णा घृतिमितदीर्घा भवन्ति चेद्घ्रस्वाः ।
प्रकृतिमिता यदि सार्या प्रोक्ता नाम्ना तदा चूर्णा ॥१०॥

११. छाया

द्विगुणितनखमितवर्णा घनमितदीर्घा भवन्ति चेद्घ्रस्वाः ।
विकृतिमिता यदि सार्या कथिता नाम्ना तदा छाया ॥११॥

१२. कान्तिः

शशियुगपरिमितवर्णा श्रष्टिप्रमिता भवन्ति चेद्गुरवः ।
शरकृतिपरिमितलघवो नाम्ना सार्या भवेत् कान्तिः ॥१२॥

१३. महामाया

यमयुगपरिमितवर्णास्तिथिमितगुरवश्च भोन्मिता लघवः ।
सार्या भवति तदानीं फणिना कथिता महामाया ॥१३॥

१४. कीर्त्तिः

गुणयुगपरिमितवर्णा मनुमितगुरवो नवाश्विमितलघवः ।
स्युर्यदि यत्र च सार्या फणिना कथिता तदा कीर्त्तिः ॥१४॥

१५. सिद्धा

श्रुतियुगपरिमितवर्णा अतिरवितुल्या भवन्ति चेद्गुरवः ।
शशधरगुणमितलघवः प्रभवति सा नामतस्सिद्धा ॥१५॥

१६. मानिनो, मनोरमा च

शरयुगपरिमितवर्णा रविमितगुरवश्च देवमितलघवः ।
यदि फणिगणपतिभणिता सार्या खलु मानिनो ज्ञेया ॥१६॥

१७. रामा

रमयुगपरिमितवर्णाः शिवमितगुरवो भवन्ति यदि नियतम् ।
शरगुणपरिमितलघवो यत्र भवति सोदिता रामा ॥१७॥

१८. गाहिनी

नवयुगपरिमितवर्णा यदि दश गुरवो भवन्ति नियतं चेत् ।
नगगुणपरिमितलघवस्तदनु भवति गाहिनी किल सा ॥१८॥

१९. विद्वा

चसुयुगपरिमितवर्णा यदि नव गुरवो भवन्ति लघवश्चेत् ।
इह नवहुतभुगभिमिताः प्रभवति फणिपतिभणितविद्वा ॥१९॥

२०. वासिता

नवयुगपरिमितवर्णा यदि चसुगुरवः दशियुगमितलघवः ।
फणिगणपतिपरिभणिता भवति तदनु वासिता किल सा ॥२०॥

२१. शोभा

इह यदि मुनिमितगुरवो हुतभुगजलनिधिमितास्तया लघवः ।
फणिगणपतिरिति निगदति भवति सनियममियमिति शोभा ॥२१॥

२२. हरिणी

यदि रसपरिमितगुरवः शरयुगपरिमितलघव इह तदनु चेत् ।
फणिपतिपरिभणिततनुः प्रभवति नियतं तदा हरिणी ॥२२॥

२३. चक्री

नगयुगमितलघुगण इह शरमितगुरवो भवन्ति यदि नियतम् ।
फणिगणपतिरिति निगदति भवति ननु सनियममिह चक्री ॥२३॥

२४. सरसी

जलनिधिपरिमितगुरवो यदि नवजलधिपरिमितलघव इह चेत् ।
भुजगाधिप इति कथयति भवति नियतविहिततनु सरसी ॥२४॥

२५. कुररी

स्युरथ गुणमितगुरव इह यदि दशधरशरपरिमितलघव इति च ।
फणिगणपतिरिति निगदति भवति लसद्मतिरियं कुररी ॥२५॥

२६. सिही

द्विकगुरुगुणशरपरिमितलघुविरचिततनुरिह यदि च भवति किल ।
अहिगणपतिरिति कथयति नियतजनितविरतिरथ सिही ॥२६॥

२७. हंसी, हंसपदवी च

दशमितगुरुशरशरमितलघुविरचिततनुरियमिह यदि विलसति ।
फणिगणपतिभणितविरतिहंसपदविरथ नियतवृत्तयति ॥२७॥

दीर्घा-भेदों के उदाहरण

१. भ्रमरः

यत्र स्युर्दीर्घास्त्रयोर्विशत्या तुल्याश्च ।
द्वौ ह्रस्वो स्याता यदा पूर्वःस्यान्नाम्ना च ॥१॥

२. धामरः

द्वाविंशत्या सम्मिता दीर्घा ह्रस्वा यत्र ।
चत्वारः स्युर्धामरो नाम्नाऽसौ स्यादत्र ॥२॥

३. सरभः

चेत्स्युर्भूदस्रोन्मिता दीर्घा ह्रस्वा यहि ।
पण्णागेणेनोदितो नाम्ना सरभस्तर्हि ॥३॥

४. श्येनः

दीर्घा विशत्या मिता अष्टौ लघवो यत्र ।
पिङ्गलनागप्रोदितः श्येनः स्यादित्यत्र ॥४॥

५. मण्डूकः

दीर्घा अतिघृत्युन्मिता ह्रस्वाः स्युर्दश यहि ।
ब्रूतेऽनन्तो नामतो मण्डूके किल तर्हि ॥५॥

६. मर्कटः

दीर्घाः स्युर्घृतिसम्मिता ह्रस्वा द्वादश यत्र ।
पिङ्गलनागेनोदितो मर्कटनामा तत्र ॥६॥

७. करभः

दीर्घाः स्युर्घनसम्मिता इन्द्रमिताः लघवश्च ।
ब्रूते शेषो यदि तदा नाम्नाऽसौ करभश्च ॥७॥

८. नरः

षोडश गुरवः सन्ति चैत्लघवो यत्र किलापि ।
पिङ्गलनागेनाऽसकौ नाम्ना नर आलापि ॥८॥

९. मरालः

अष्टादश लघवो यदा गुरवः पञ्चदशैव ।
मरालनामेत्यह्विपतिः शेषो वस्ति तदैव ॥९॥

१०. मवकलः

मनुमितगुरवो विशतिलंघवः सन्ति यदा च ।
मदकलनामाऽसौ भवेदित्य शेष उवाच ॥१०॥

११. पयोधरः

नाम पयोधर इति भवेदतिरविगुरवस्सन्ति ।
न्यस्ता आकृतिसम्मिता लघवो यत्र भवन्ति ॥११॥

१२. चलः

लघवश्च चतुर्विंशतिगुरवो द्वादश यत्र ।
स्युः फणिगणपतिरिति वदति चलनामाऽसावत्र ॥१२॥

१३. वानरः

एकादश गुरवो यदा रसयमितलघवश्च ।
नाम्ना वानर इह तदा फणिनायकमणितश्च ॥१३॥

१४. त्रिकलः

वसुयमितलघवो यदा दश गुरवश्च भवन्ति ।
तदा विशिष्य त्रिकल इति नाम बुधा निगदन्ति ॥१४॥

१५. कच्छपः

लघवो द्विगुणिततिथिमिता गुरवो नव यदि सन्ति ।
नाम्ना कच्छप इति भवति सुधियो नियतमुशन्ति ॥१५॥

१६. मत्स्यः

रदपरिमितलघवो यदा वसुमितगुरवस्सन्ति ।
भवति मत्स्य इह खलु तदा विबुधा इति कथयन्ति ॥१६॥

१७. शार्दूलः

श्रुतिगणपरिमितलघव इह नममितगुरवो यत्र ।
फणिगणपतिपरिभणित इति शार्दूलः स्यात्तत्र ॥१७॥

१८. महिवरः

रसगुणपरिमितलघव इह रसमितगुरवो यहि ।
महिवर इति खलु नामतः फणिपतिभणितस्तहि ॥१८॥

१९. व्याघ्रः

वसुगुणपरिमितलघव इह - क्षरमितगुरवश्चापि ।
व्याघ्रक इति भवति सनियममहिगणपतिनाऽपि ॥१९॥

२० विडाल

गगनजलधिमितलघव इह जलनिधिमितगुरवश्च ।
प्रभवति यदि फणिपतिभणित इति नाम विडालश्च ॥२०॥

२१ श्वा

यदि यमयुगमितलघव इह गुणपरिमितगुरुकाणि ।
श्वा फणिपतिगुरुमतिभिरिति भवति सनियममभाणि ॥२१॥

२२ उबुम्बर, उन्दुरुदध

द्विगुरुजलधियुगलघुभिरिह नियमिततनुरनुभवति ।
फणिपतिरिति तत उन्दुरु सुनियतकृतयति भवति ॥२२॥

२३ सर्प

शशिगुरुरसयुगमितलघुभिरथ कृततनुरिह लसति ।
फणिगणपतिरधिकृतविरति सर्प इति समभिलपति ॥२३॥

२४ शशधरम्

वसुजलनिधिपरिमितलघुभिरभिनियमिततनु भवति ।
शशधरमिदमिति नियतयति फणिगणपतिरनुभवति ॥२४॥



सप्तम परिशिष्ट

ग्रन्थोद्धृत ग्रन्थ-तालिका

नाम	ग्रन्थकार	पृष्ठांक
अथ च		१८६.
अथवा		३८.
अनघैराघधम्	मुरारिः	२०५.
अग्नेऽपि		२०५.
अष्टाध्यायी	पाणिनिः	२०३.
इति वा		१८८.
उबाहरणमञ्जरी	लक्ष्मीनाथभट्टः	१०, १३, १६, १७, २१, २५, ८१.
कथिकल्पलता	देवेश्वरः	२०५.
कादम्बरी	बाणः	२०६.
काव्यादर्श	दण्डी	७५.
किरताजुनीयम्	भारविः	६८, १००, १०६, १३६, १६२.
कृष्णकुतूहलमहाकाव्यम्	रामचन्द्रभट्टः	१०५, १०७, ११५, ११६, १२१, १३५, १३७, १३८, १३९, १५१, १६१.
कण्ठाभरणम्		१२०.
लङ्गवर्णने	लक्ष्मीनाथभट्टः	१६०.
गौरीवशक्ततोत्रम्	दाङ्गराचार्य	१०५.
गोविन्दविद्वापत्नी	श्रीरूपगोस्वामी	२२२, २२५, २२८.
गीतगोविन्दम्	जयदेवः	२०५.
षण्द्रोक्षराष्टकम्	मार्कण्डेय	१४५.
धन्व सूत्रम्	विङ्गलः	१८५, २०५.
धन्व.सूत्रवृत्ति	हलामुष्य	१५८, १७३, १७५, १७७, १७८, १६५, १६८, १६९, २००.
धन्वोरत्नावली	धर्मरघ्वरः (?)	३३०, ३३१.
धन्वदत्तकामणिः ?	धम्म	१०६, १३६, १६७, २७२, २८०, २८२, २८३.
धन्वोमञ्जरी	गङ्गादासः	६२, ६३, १०५, १२५, १५०, १५७, २०९.

नाम	ग्रन्थकार	पृष्ठांक
जयदेवचन्द्रम्	जयदेवः	२०४.
वक्षिणानिलयर्णे	राक्षसकविः	१५३.
दशावतारस्तोत्रम्	रामचन्द्रभट्टः	१२६.
देवीस्तुतिः	लक्ष्मीनाथभट्टः	४३.
नन्दनन्दनाष्टकम्	लक्ष्मीनाथभट्टः	१४४.
नवरत्नमालिका	शङ्कराचार्यः	१४५, १६१.
नारायणाष्टकम्	रामचन्द्रभट्टः	१६७.
नैपथकाव्यम्	धीहर्षः	१६६.
पवनदूतम् (खण्डकाव्यम्)	चन्द्रशेखरभट्टः	१३६.
पाण्डवचरित-महाकाव्यम् (प्राकृत) पिङ्गलम्	चन्द्रशेखरभट्टः	६२, १२१, १५१, १६०, ३, ६४, ६५, ७०, ७१, ७३, ७६, १२२, १३६, १५१, १५२, २७२, २७७, २८१, २८३, ३२६, ३५४, ३५५, ३५८.
प्राकृतपंगल-टीका	पशुपति.	२७३.
„ „	रविकरः	२७३.
„ पिङ्गलप्रदीपः	लक्ष्मीनाथभट्टः	४१, १८०, १८५, १६६.
„ पिङ्गलोद्योतः	चन्द्रशेखरभट्टः	३०६, ३१३.
भट्टिकाव्यम्	भट्टिः	१४७, १६६.
भागवतपुराण	वेदव्यासः	१४०.
मालतीमाधवम्	भवभूतिः	२०६.
यया वा-		११, १८, ३५, ३६, ६३, ७०, ७३, ७५, ८४, ९२, ९४, १२३, १२४, १२५, १५६, १६२, १६४, १६७, १८८, २०२, २०६, २१०.
यया वा मम-		१६७, १६८, १६९, २००.
रघुवशम्	कालिदास	१०६, १३८, १४७, १६०, १६४.
यागभटः (अष्टांगहृदयसंहिता)	यागभटः	१४६.
वाणीभूषणम्	वामोदरः	७६, ९१, १०६, ११४, १२२, १२४, १३०, १४३, १४४, १४५, १५१, १५२, १५७, १७२, ३३०, ३३५, ३४२, ३४३.
वृत्तरत्नाकर-टीका	मुल्हणः	१६८, १६९, २००.
वृत्तसारः		१०१.

नाम	ग्रन्थकार	पृष्ठांक
शृङ्गारकलोलम् (सङ्घकाव्यम्)	रायभट्टः	१२१.
शिको-काव्यम् (?)		१५६.
शिवस्तुतिः	लक्ष्मीनाथभट्टः	४५.
शिशुपालवधम्	माघः	६८, १६२, १६२.
सुन्दरीध्यानाष्टकम्	सहमीनाथभट्टः	१४४.
सौन्दर्यलहरीस्तोत्रम्	शंकराचार्यः	१३७.
हर्षचरितम्	बाण.	१६०.
हरिमहमोडे स्तोत्रम्	द्राङ्गुराचार्यः	१०५.
हंसद्वतम्]	थीरूपगोस्वामी	१३७.



अष्टम परिशिष्ट

छन्दःशास्त्र के ग्रन्थ और उनकी टीकायें



नाम	कर्ता एव टीकाकार	उल्लेख*
१ अभिनववृत्तरत्नाकर	भास्कर	सी. सी,
२ " टिप्पण	" धीनिवास	"
३ एकावली	फतेहशाह धर्मन् ?	मिथिला केटलॉग
४ कर्णतोष	मुद्गल	अनूप; सी.सी. मे इसका नाम 'कर्णसन्तोष' है।
५ कर्णानन्द	कृष्णदास	हि. एस,
६ कविदपेण		प्रकाशित
७ कविशिक्षा	जयमंगलाचार्य	हि एस,
८ काव्यजीवन	प्रीतिकर भवस्थी	हि. एस, सी. सी,
९ काव्यलक्ष्मीप्रकाश	शिवराम S/o कृष्णराम	सी. सी.
१० काव्यावलोकन [कन्नडभाषीय]	नागवर्म	कन्नडप्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची
११ कीर्तिच्छन्दोमाला	रामानारायण S/o धिष्णुदास	मुनिवर्साटी लायब्रेरी मम्बई केटलॉग
१२ " टीका	" "	"
१३ क्षेपक विज्जाह्ला		जैन-ग्रन्थावली

* सकेत—सी.सी. = वेटलॉगस केटलॉगरम्; मिथिला केटलॉग = ए डिस्त्रिक्टिव केटलॉग ऑफ मेन्सुस्क्रिप्ट्स् इन मिथिला; अनूप = वेटलॉग ऑफ दी अनूप संस्कृत लायब्रेरी बीकानेर; हि.एस = ए हिस्ट्री ऑफ कलासिक्लस संस्कृत लिटरेचर, एम. कृष्णमाचारी; मुनिवर्साटी लायब्रेरी मम्बई केटलॉग = ए डिस्त्रिक्टिव केटलॉग ऑफ दी संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्सुस्क्रिप्ट्स् इन दी सायब्रेरी ऑफ दी मुनिवर्साटी ऑफ बॉम्बे; रामल एगिवाटिक सोसायटी मम्बई केटलॉग = एन डिस्त्रिक्टिव केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मेन्सुस्क्रिप्ट्स् इन दी लायब्रेरी ऑफ दी बॉम्बे ग्रंथ ऑफ दी रायल एगिवाटिक सोसायटी; बड़ोदा केटलॉग = एन कलेक्शनेटिक्ल लिस्ट ऑफ मेन्सुस्क्रिप्ट्स् इन दी योरियन्टल इन्स्टीट्यूट बरोडा; रा.रा.प्र. जोधपुर = राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान जोधपुर; रा.रा.प्र. पिलीङ्ग = राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान, दासा बार्मानय पिलीङ्ग; रा.रा.प्र. जोधपुर = राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान, दासा बार्मानय बीकानेर; रा.रा.प्र. जयपुर = राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान, दासा बार्मानय जयपुर।

नाम	कर्ता एवं टीकाकार	उल्लेख
१४ गायारत्नकोष		जंत-ग्रन्थावली
१५ गायारत्नाकर		"
१६ गायारक्षण	नन्दिताडन	प्रकाशित
१७ "	रत्नचन्द्र ?	रॉयल एशियाटिक सोसा- यटी बम्बई बेटलॉग
१८ छन्द कन्दली		उल्लेख: कविदर्पण
१९ छन्द कल्पतरु	राघव भा	मिथिला बेटलॉग. हि. एस
२० छन्द कल्पलता	मयुरानाय	हि एस
२१ छन्द कोष	रत्नशेखरसूरि	प्रकाशित
२२ " टीका	" चन्द्रकीर्ति	सी सी
२३ छन्द कौमुदी	नारायणशास्त्री त्रिंस्ते	प्रकाशित
२४ छन्द कौस्तुभ	दामोदर	बडोदा बेटलॉग
२५ "	राधादामोदर	सी सी, हि एस
२६ " टीका	" विद्याभूषण	सी सी
२७ " "	" कृष्णराम	,
२८ छन्दस्तित्वसूत्रम्	धर्मनन्दन वाचक	रा प्रा प्र जोधपुर
२९ छन्द पयोनिधि		प्रकाशित
३० छन्द पीयूष	जगन्नाथS/ोराम	रा प्रा प्र जोधपुर, सी सी
३१ छन्द प्रकाश	दीपचिन्तामणि	बडोदा बेटलॉग, हि एस,
३२ " टीका	" सोमनाथ	सी सी
३३ छन्द प्रशस्ति	धीहर्ष	सी सी [उल्लेख-नैपथ १७/२१६]
३४ छन्द प्रस्ता रत्तरणि	कृष्णदेव	बडोदा बेटलॉग
३५ छन्दःशास्त्र	जयदेव	प्रकाशित
३६ "	, हर्षट	सी सी
३७ छन्द गिला	परमेश्वरानन्द शास्त्री	प्रकाशित
३८ छन्द शैलर	जयशेखर	जंत ग्रन्थावली
३९ "	राजशेखर	प्रकाशित
४० छन्दसचन्द्रिका		प्रकाशित
४१ छन्दसिद्धम्		"
४२ छन्दसिद्धप्रकाशनम्	भारतमत्वरूप उदासीनP/o गगाराम उदासीन	"
४३ छन्दसुद्धामणि	गम्भु	उल्लेख बृत्तरत्नाकर-नारायण- भट्टी टीका
४४ छन्दसुद्धामण्डन	कृष्णराम [जोधपुर]	हि एस,

नाम	कर्त्ता एव टीकाकार	उल्लेख
४५	छन्द श्लोक	सी सी.
४६	छन्द सार	चिन्तामणि युनिवर्सिटी लायब्रेरी बम्बई केटलॉग
४७	"	जगन्नाथ पाण्डेय प्रकाशित
४८	छन्द सारसंग्रह	चन्द्रमोहन घोष
४९	छन्द सारायली	"
५०	छन्द सिद्धान्तभास्कर	केशवजीनन्दS/Oसूरजी मिथिला केटलॉग
५१	छन्द सुधाकर	कृष्णराम हि. एस
५२	छन्द सुधाचित्तहरी	जानीमहापात्रS/Oजयदेव याज्ञिक धनूप, हि.एस.
५३	छन्द सुन्दर	नरहरि सी सी.
५४	छन्द सख्या	?
५५	छन्द सग्रह	"
५६	" [वृत्तबोध.]	" [उल्लेख-तन्त्रसार] प्रकाशित
५७	छन्दोरूपक	जैनप्रपायसी
५८	छन्दोऽङ्कुर	गंगासहाय प्रकाशित
५९	छन्दोऽवतस	सालचन्द्रोपाध्याय रा प्रा प्र. धिसोड
६०	छन्दोऽग्न्य	सी सी
६१	छन्दोगोविन्द*	गणादास सी सी., [उल्लेख-बुत्तरना- करादर्शन और वृत्तमीषिक]
६२	छन्दोऽवंग	गोविन्द सी सी.
६३	छन्दोदीपिका	कुमारमणि S/O हरिवल्लभ "
६४	" टीका	" कृष्णराम "
६५	छन्दोनिघण्टु	धनूप, रा प्रा प्र. बीकानेर
६६	" (पिगससार्ति- मष्टोद्दिष्टमक्षम्)	हरिद्विज
६७	छन्दोऽनुशासन	जयजीति प्रकाशित
६८	"	जिनेश्वर हि एस.
६९	"	बागमट सी सी [उल्लेख-सप्तद्वार- निसर]
७०	"	हेमचन्द्र प्रकाशित
७१	" टीका	"

नाम	कर्त्ता एव टीकाकार	उल्लेख
७२ छन्दोऽम्बुधि		सी सी
७३ छन्दोमञ्जरी	मत्तादास s/o गोपालदास	प्रकाशित
		बैद्य
७४ " टीका	" कृष्णराम	सी सी.
७५ " "	" कृष्णवल्लभ	हि एस
७६ " "	" गोवर्धनदास	हि एस, सी सी
७७ " "	" चन्द्रशेखर भारती	" "
[छन्दोमञ्जरीजीवन]		
७८ छन्दोमञ्जरी टीका	" जगन्नाथ सेन s/o	हि एस, सी सी
	जटाधर कविराज	
७९ " "	" जीवानन्द	प्रकाशित
८० " "	" बाताराम	हि.एस, सी सी
८१ " "	" रामयन	प्रकाशित
८२ " "	" यशोधर	हि एस, सी सी
८३ " "	" हरिदत्तशास्त्री	प्रकाशित
	शबरदत्तपाठक	
८४ छन्दोमञ्जरी	गोपाल*	संस्कृत कालिदास बनारस
		रिपोर्ट सा १६०६-१७
८५ ,	गोपालदास*	हि एस
८६ "	गोपालचन्द्र*	सी सी.
८७ छन्दोमन्वाचिनी	गुप्तसाह शास्त्री	प्रकाशित
८८ छन्दोमहाभाष्य	दामोदरभट्ट s/o रघुनाथ	बडोदा केटसांग
८९ छन्दोमातङ्ग		सी सी [उल्लेख-भूतारना- करावण]
९० छन्दोमातङ्ग	मणिलाल	बडोदा केटसांग
९१ छंदोमाता	शाङ्कर	हि एस.
९२ छंदोमुच्यतावली	प्यारेलाल	सी सी
९३ "	शम्भुराम s/o सीताराम	हि.एस सी सी
९४ छंदोरत्न	षण्माभट्ट	सी सी
९५ छंदोरत्नहस्तापुष	?	सी सी

* छन्दोमञ्जरी के कर्त्ता गोपालदास वैद्य के पुत्र मयादास हैं। अन्तर्भव है प्रतिनिधिकाओं के भ्रम से गोपाल, गोपालदास, गोपालचन्द्र नाम से अलग ३ प्रयोग का भ्रम हो गया हो।

नाम	कर्ता एवं टीकाकार	उल्लेख
६६ छंदोरत्नाकर		सी सी., हि. ए. स. [उल्लेख-संगीतनारायण और लक्ष्मी-नाथभट्टदृष्ट-पिंगलप्रदीप]
६७ छंदोरत्नायली	अमरचन्द्र कवि	जैन - प्रयायली [उल्लेख-मेघधियजयकृत-वृत्तमौक्तिक दुर्गमबोध]
६८ छंदोरहस्य	घनसागर p/o गुणवल्लभ उपाध्याय	रा प्रा प्र. जोधपुर
६९ छंदोलक्षण		सी सी.
१०० छंदोलघुषिवेक		"
१०१ छंदोऽलङ्कारण	जगद्धर	सी.सी.
१०२ छंदोविचय		बड़ोवा केटलांग, सी सी.
१०३ छंदोविचार	सुखदेव	"
१०४ छंदोविधिति	पतञ्जलि	सी सी.
१०५ "	दण्डी	„ [उल्लेख-काव्यादर्श १।१२]
१०६ „ भाष्य	? यादवप्रकाश	"
१०७ „ टीका	? शंकरभट्ट	हि. ए. स.
१०८ छंदोविन्मण्डन	स्वामी चन्दनदास	प्रकाशित
१०९ छंदोविलास	श्रीकण्ठ	सी सी.
११० छंदोविवेक		"
१११ छंदोवृत्तरत्न		"
११२ छन्दोवृत्ति	श्रीनिवास	"
११३ छन्दोव्याख्या		अनूप
११४ छन्दश्शतक	हर्षकीर्ति	राजस्थान के जैन शास्त्र-भण्डार, जयपुर भा. ४
११५ छन्दोऽष्टादशक	रूपगोस्वामी	सी. सी. [उल्लेख-धेष्णव-तोषिणी]
११६ छन्दोहृदयप्रकाश		सी सी.
११७ जगद्विजयछन्दः		प्रकाशित
११८ जगन्मोहनवृत्तशतक	वासुदेवब्रह्मपण्डित	हि ए. स.
११९ जनाश्रयी	जनाश्रय	"
१२० पिङ्गलछन्द शास्त्रसंग्रह		मधुसूदन पुस्तकालय, लाहौर सूचीपत्र
१२१ पिङ्गलछन्द सूत्र	पिङ्गल	प्रकाशित

क्रमांक	नाम	कर्ता एवं टीकाकार	उल्लेख
१२२	„ टीका [मिनाक्षरा]	„ जगन्नाथमिश्र	रा प्रा प्र., जोधपुर
१२३	„ टीका	„ दामोदर	हि एत.
१२४	„ टीका	„ पद्मप्रभमूर्ति	सी सी
१२५	„ „	दिगल, पद्म कवि ?	सी सी
१२६	„ „	„ भास्कराचार्य	„
१२७	„ „	„ मधुरानाथ शुक्ल	„
१२८	„ „	„ मनोहरचरण	„
१२९	„ „	„ यादवप्रकाश	हि एत
	[भाष्यराज]		
१३०	„ „	„ धामनाचार्य	सी सी.
१३१	„ „	„ वेदाक्षराज	„
१३२	„ „	„ श्रीरूपं शर्मा S/o मन्तरूप्यक	हि. एत
१३३	„ „	„ हुलापुत्र	प्रकाशित
	[मृतमञ्जरीवती]		
१३४	दिगलसारीट्टार		जैन-प्रपावली
१३५	प्रस्तावरीचितामणि	चितामणि शंकर	मधुसूदन पुराणराज, सारो

नाम	वर्तार्थ एव टीकाकार	उल्लेख	
१४७	" "	" पद्मपति	सी. सी
१४८	" " [पिंगलद्वंद्वीयवृत्ति]	" यादवेन्द्र [दशायथान भट्टा- चार्य उपनाम]	बड़ोदा पेटलॉग
१४९	" " [पिंगलसारविकाशिनी]	" रविकर S/O [श्रीपति, हरिहर उप नाम]	प्रकाशित
१५०	" " [पिंगलतत्त्वप्रथमाशिका]	" राजेन्द्रबशाथधान	सी. सी
१५१	" " [पिंगलप्रदीप]	" लक्ष्मीनाथ भट्ट	प्रकाशित
१५२	" " [विद्वन्मनोरमा]	" विद्यानन्दमिश्र	मिथिला केटलॉग
१५३	" " [पिंगल प्रकाश]	" विदयनाथ S/O विद्यानिवासा	डि. एस. सी. सी. मिथिला केटलॉग,
१५४	" " [पिंगलप्रकाश]	" वंशीधर S/O/कृष्ण	सी. सी.
१५५	" "	" श्रीपति	मिथिला केटलॉग
१५६	" "	" वाणीनाथ	हि. एस. सी. सी.
१५७	प्राकृत पिंगलसार	हरिप्रसाद	अनूप, सी. सी.
१५८	" टीका	"	" "
१५९	बन्धकौमुदी	शोपीनाथ	अनूप,
१६०	रत्नमञ्जूषा		प्रकाशित
१६१	" भाष्य		"
१६२	वाग्वहल्लभ	दु खमञ्जन	"
१६३	" टीका [वरवर्णिनी]	" देवीप्रसाद	"
१६४	वाणीभूषण	दामोदर	"
१६५	वृत्ताकल्पद्रुम	जयगोविन्द	हि. एस
१६६	वृत्ताकारिका	नारायण पुरोहित	"
१६७	वृत्तकौमुदिक	विश्वनाथ	" सी. सी.
१६८	वृत्तकौमुदी	जगद्गुप्त	" "
१६९	"	रामचरण	" "
१७०	वृत्तकौस्तुभ-टीका	शिवराम S/O कृष्णराम	सी. सी.

क्रमांक	नाम	वर्ता एव टीकाकार	उल्लेख
१७१	वृत्तचन्द्रोदय	भास्कराध्वरिन्	हि. एस, सी, सी,
१७२	वृत्तचन्द्रिका	रामदयालु	„ „, मधुसूदन०
१७३	वृत्तचिन्तामणि	गोपीनाथ दाधीच	रा. प्रा. प्र. लक्ष्मीनाथ- सग्रह ज्ञयपुर
१७४	वृत्तचिन्तारत्न	शान्तराज पण्डित	हि. एस,
१७५	वृत्ताजातिसमुच्चय	विरहाक	प्रकाशित
१७६	„ टीका	„ गोपाल	„
१७७	वृत्तातरङ्गिणी	कृष्ण	हि. एस,
१७८	वृत्तदर्पण	गंगाधर	सी सी.
१७९	„	जानकीनन्द कवीन्द्र S/o रामानन्द	मिथिला केंदस्तांग
१८०	„	भीष्ममिथ	„ हि. एस, सी सी,
१८१	„	मणिमिथ	सी सी,
१८२	„	मथुरानाथ	सी सी
१८३	„	बेकटाचार्य	सी सी,
१८४	„	सीताराम	हि. एस,
१८५	वृत्तदीपिका	कृष्ण	„ सी. सी,
१८६	„	बेकटेश	„
१८७	वृत्तद्वयमणि	धरावंत S/o गंगाधर	बड़ोदा के हि एस, सी सी
१८८	„	गंगाधर	हि एस,
१८९	वृत्ताप्रत्यय	शकरदयालु	„ सी. सी,
१९०	वृत्तप्रत्ययकीमुदी		सी सी
१९१	वृत्ताप्रदीप	जनार्दन	„ हि एस,
१९२	„	बद्रीनाथ	हि एस,
१९३	वृत्तामणिकोप	श्रीनिवास	प्रकाशित
१९४	वृत्तामणिमाला	गणपतिशास्त्री	हि. एस
१९५	वृत्तामणिमालिका	श्रीनिवास	हि एस,
१९६	वृत्तामहोहधि		बड़ोदा केंदस्तांग
१९७	वृत्तभाषिण्यमाला	गुपेण	सी. सी
१९८	वृत्तामाला	वत्सभाषि	„ हि एस,
१९९	„	बिद्यपान्दपग्वन्	हि एस,
२००	वृत्तामुक्तावली	कृष्ण भट्ट	प्रकाशित
२०१	„	कृष्णराम	हि एस, सी सी
२०२	„	गंगादास	„ „

क्रमांक	नाम	कर्ता एव टीकाकार	उल्लेख
२०३	वृत्तमुक्तावली	दुर्गादत्त	मिथिला केटलॉग
२०४	"	मल्लारि	अनूप, रा प्रा प्र जोधपुर
२०५	" टीका [तरस]	"	" बडोदा केटलॉग
२०६	" "	शकर शर्मा	सी सी, केटलॉग ऑफ संस्कृत मेन्गुस्त्रिप्टस् इन अवध भा० २१, सन् १८६०
२०७	"	हरिव्यास मिश्र	हि एस, सी सी,-
२०८	वृत्तमुक्तसारवली	शृंगराचार्य	हि एस
२०९	वृत्तमौक्तिक	चन्द्रशेखर भट्ट	अनूप सी सी, हि. एस
२१०	, टीका [दुष्करोद्धार]	" लक्ष्मीनाथ भट्ट	अनूप
२११	" टीका [दुर्गमवोध]	" मेघविजय	विनयसागर सप्रह, कोटा
२१२	वृत्तरत्नाकर	केदार भट्ट	प्रकाशित
२१३	, टीका 'नीका'	अयोध्याप्रसाद	हि एस सी सी,
२१४	,	" छात्माराम	हि एस, सी. सी,
	" "	" ठा आसल	रा प्रा प्र, जोधपुर
२१६	" "	" षडणाकरदास S/o कुलपालिका	बडोदा केटलॉग
२१७	" "	" कृष्णराम	सी सी
२१८	" "	" कृष्णमन	हि एस,
२१९	" "	" कृष्णसार	हि एस,
२२०	" "	" क्षेमहस	रा प्रा प्र. जोधपुर, सी सी,
२२१	" "	" गोविन्द भट्ट	हि एस सी सी
२२२	" "	" चिन्तामणि	सी सी
	[वृत्तपुष्पप्रकाशन		
२२३	" " [मुषा]	" चिन्तामणि पण्डित	हि एस, सी सी
२२४	" "	" धूढामणि शीशित	" "
२२५	" "	" जगन्नाथ S/o राम	सी सी
	[वृत्तरत्नाकरवार्तिक]		
२२६	" "	" जनार्दन विशुष	हि एस, सी सी, बडोदा केटलॉग

क्रमांक	नाम	कर्ता एव टीकाकार	उल्लेख
२५०	वृत्तरत्नाकर टीका [अथर्वदीपिका]	केदारभट्ट, सदाशिव	S/0 अनूप विश्वनाथ
२५१	" "	" सारस्वत सदाशिव	हि. एस. सी. सी, मुनि
२५२	" "	" सुल्हण S/0 भास्कर	" " , अनूप
	[सुकविहृदयानन्दिनी]		
२५३	" "	" सोमपण्डित	" "
२५४	" "	" सोमचन्द्रगणि	" " , अनूप
	[मुग्धबोधकरी]		रा. प्रा. प्र. जोधपुर
२५५	" "	" हरिभास्कर S/0 भापाजी भट्ट	" , अनूप
	[वृत्तरत्नाकरसेतु]		
२५६	वृत्तरत्नाकर, अथचूरि	" ?	अनूप
२५७	" बालाबोध	" मेरुसुन्दर	रा. प्रा. प्र. जोधपुर
२५८	वृत्तरत्नाकर	नरसिंह भागवत P/0 रामचन्द्र योगीन्द्र	हि एस,
२५९	वृत्तरत्नावली	कालिदास	"
२६०	"	कृष्णराम	"
२६१	"	चिरजीव भट्टाचार्य	अनूप, मिथिला और बड़ोदा केटलॉग
२६२	"	पशयंतसिंह	हि. एस. सी. सी. रा. प्रा. प्र. जोधपुर
२६३	"	बुगदित्त	" "
२६४	"	नारायण	" "
२६५	"	भणिराम S/0 वसत	सी. सी,
२६६	" टीका [वदिका]	" कालिकाप्रसाद	"
२६७	" "	मिथ सानन्द	हि एस, सी. सी.
२६८	" "	रविकर	" "
२६९	" "	रामचूडामणि	" " [उल्लेख- काव्यरपण]
२७०	"	रामदेव चिरंजीव	" "
२७१	"	रामास्वामी दासजी	"
२७२	"	बेकटेश S/0 सरस्वती	प्रकाशित
२७३	वृत्तरत्नाकर	शिव P/0 रामानुजाचार्य	सी. सी.

क्रमांक	नाम	कर्ता एवं टीकाकार	उल्लेख
२६६	श्रुतबोध-टीका	कालिदास, नयविमल	हिमांशुविजयजी ना लेखी
३००	" "	नाताजी S/O हरजी	सी सी,
३०१	" "	,, नेतृसिंह	रा. प्रा. प्र. जोधपुर
३०२	" "	,, मनोहर शर्मा	हि. एस. सी. सी.
	[सुबोधिनी]		रा. प्रा. प्र. जोधपुर
३०३	" "	,, माधव S/O गोविंद	"
	[ज्योत्स्ना]		
३०४	" "	,, भेषचन्द्र	हि. एस. [सी. सी. में कर्ता का नाम नहीं है और P।O के स्थान पर भेषचन्द्र का नाम है]
३०५	" "	,, लक्ष्मीनारायण	हि. एस. सी. सी.
३०६	" "	,, यज्ञरत्न भट्टाचार्य	प्रकाशित
३०७	" "	,, धररुचिः ?	सी. सी.
३०८	" "	,, वासुदेव	हि. एस. सी. सी.
	[श्रुतबोधप्रबोधिनी]		
३०९	" "	,, शुकदेव	" "
३१०	" "	,, हंसराज	" "
	[बालबोधिनी]		
३११	" "	,, हर्षकीर्ति	" "
३१२	, [आनंदवर्धधिनी]	"	प्रकाशित
३१३	सप्तवृत्तसारः	नीलकण्ठाचार्य	हि. एस. सी. सी.
३१४	सुवृत्ततिलकम्	क्षेमेन्द्र	प्रकाशित
३१५	संगीतराज-पाठधरत्नकोष	महाराणा कुंभा	तृतीय उल्लास
३१६	संगीत सह विंगल		जैन ग्रन्थावली
३१७	स्वयम्भू छन्द	स्वयंभू	प्रकाशित
पुराणादि ग्रंथ			
३१८	अग्निपुराण		अध्याय ३२८-३३५
३१९	गण्डपुराण पूर्वखण्ड		" २०७-२१२
३२०	नारदपुराण पूर्वखण्ड		,, ५७ वां
३२१	विष्णुधर्मोत्तर तृतीयखण्ड		" ३ रा
३२२	सुहृत्संहिता	धराहमिहिर	" १४वां
३२३	नाट्यशास्त्र	भरताचार्य	अध्याय १४-१५

सहायक-ग्रन्थ

१	अग्निपुराण	
२.	अथर्ववेदीय धृत्तसर्वाणुक्रमणी	
३.	अनघंराघवननाटक	मुरारि
४.	अरिष्टघषस्तोत्र	रूपगोस्वामी
५	अष्टागहृदय	षाभट
६.	उपनिदान सूत्र	गार्ग्यं
७.	ऋग्यजुष् परिशिष्ट	
८	ऋग्वेद के मन्त्रश्रष्टा कवि	बद्रीप्रसाद पचोली
९	ऋग्वेद में गीतस्व	"
१०.	ए हिस्ट्री ऑफ बलासिकल संस्कृत लिटरेचर	एम. कृष्णमाचारी
११	ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर	घायंर ए. मेकडॉमल
१२.	ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर	कीय
१३.	ऐतरेय आरण्यक	
१४.	कविकल्पलता	देवेश्वर
१५	कविदर्पण	स० एच. डी. वेल्हणकर
१६	कावरोली का इतिहास	पो० कण्ठमणि शास्त्री
१७	काटक संहिता	
१८.	कामसूत्रम्	वात्स्यायन
१९.	काव्यादश	दण्डी
२०	किरातार्जुनीय काव्य	भारवि
२१.	कुमारसम्भय काव्य	कालिदास
२२	कौपीतिक महाब्राह्मण	
२३.	गापालक्षण	स० एच डी वेल्हणकर
२४	गीतगोविन्द	जयदेव
२५	गोपाललीलामहाकाव्य	स० वैचनराम शर्मा
२६.	गोषधंनोद्धरण स्तोत्र	रूपगोस्वामी
२७.	गोविन्दविदशवली	"
२८.	गोरीदत्तस्तोत्र	शंकराचार्य
२९.	दण्ड कोश	सं० एच. डी वेल्हणकर
३०.	दण्ड सूत्र-हलायुध टीका सहित	विगत, हलायुध
३१.	दण्ड सूत्र-टिप्पणी	अनन्तराम शर्मा
३२.	दण्ड सूत्रभाष्य	यादवप्रकाश

३३.	छन्दोनुशासन	जयकीर्ति, सं० एच. डी. वेल्हणकर
३४.	छन्दोनुशासन स्वोपज्ञटीकोपेत	हेमचन्द्राचार्य
३५.	छन्दोमञ्जरी टीकासहित	गंगादास
३६.	छन्दोमञ्जरी जीवन	चन्द्रशेखर भारती
३७.	छान्दोग्योपनिषद्	
३८.	जयवामन्	एच. डी. वेल्हणकर
३९.	जयदेवच्छन्द	सं० " "
४०.	जनाश्रयोच्छन्दोविवृति	जनाश्रय
४१.	जैन ग्रन्थवाचली	
४२.	जैमिनीय ब्राह्मण	
४३.	तांड्यमहाब्राह्मण	
४४.	सैत्तिरीय ब्राह्मण	
४५.	दिविजय महाकाव्य	महो० मेघविजय
४६.	देवानन्द-महाकाव्य	"
४७.	नन्दाहरणस्तोत्र	रूपगोस्वामी
४८.	नन्दोत्सवादिचरितस्तोत्र टीका	"
४९.	नाट्यशास्त्र	भरताचार्य
५०.	नारदपुराण	
५१.	निरुक्त-दुर्णवृत्तिसहित	यास्क, दुर्गासिंह
५२.	पाठधरत्नकोष	महाराणा कुम्भा
५३.	यागिनीयशिक्षा	यागिनि
५४.	पिण्डप्रदीप	सधमीनाथ भट्ट
५५.	प्राकृतपिण्डलोच्योत्	चन्द्रशेखरभट्ट
५६.	प्राकृतपिण्डम्	डा० भोलादासकर प्यात
५७.	प्राचीन भारत में गणतांत्रिक व्यवस्था	बद्रीप्रसाद पंधोली
५८.	पृहत्संहिता	बराहमिहिर
५९.	भट्टिकाव्य	भट्टि
६०.	भागवतपुराण १० स्कन्ध	
६१.	भारतेन्दु ग्रन्थवाचली भा० ३	सं० वज्ररत्नदास
६२.	महाभारत शान्तिपर्व	
६३.	मात्रिक-द्वन्द्वों का विकास	डा. शिवनन्दनप्रसाद
६४.	मालतीमाधव	भवभूति
६५.	मुद्गन्दमुक्तावलीस्तोत्र	रूपगोस्वामी
६६.	भद्रायणीसंहिता	
६७.	मुक्तिप्रबोध	महो० मेघविजय
६८.	रघुवंश	वासिष्ठा

६६.	रगश्रीडास्तोत्र	रूपगोस्वामी
७०.	रसिकरञ्जनम्	रामचन्द्र भट्ट
७१.	रासश्रीडास्तोत्र	रूपगोस्वामी
७२.	रोमावल्मीक	रामचन्द्र भट्ट
७३.	वत्सचारणादिस्तोत्र	रूपगोस्वामी
७४.	वर्षाशरद्विहारचरितस्तोत्र	"
७५.	वल्लभवन्दनवृक्ष	स० पो० कण्ठमणि शास्त्री
७६.	वस्त्रहरणस्तोत्र	रूपगोस्वामी
७७.	वागवल्लभ	डु खभञ्जन कवि
७८.	वाजसनेयी संहिता	
७९.	वाणीनूपण	शामोदर
८०.	वार्त्ता साहित्य एक घृहत् अध्येयन	डॉ० हरिहरनाथ टटन
८१.	विजयदेवमाहारम्य	श्रीवल्लभोपाध्याय
८२.	विज्ञप्तिपत्री	समयसुन्दरोपाध्याय
८३.	विज्ञप्तिलेख-संग्रह प्रथम भाग	स० मुनि जिनविजय
८४.	वृत्तजातिसमुच्चय	स० हरिदामोदर वेल्हणकर
८५.	वृत्तप्रवृत्ताथली	देवार्थ कृष्णभट्ट
८६.	वृत्तरत्नाकर नारायणीटीकायुत	बेदारभट्ट, नारायणभट्ट
८७.	वेदविद्या	डॉ० वामुदेवदरण अपवाल
८८.	वैदिक छन्दोमीमासा	मुधिष्ठिर श्रीमांसक
८९.	वैदिक दर्शन	डॉ० फतहसिंह
९०.	वैदिक-साहित्य	रामगोविन्द त्रिवेदी
९१.	शतपथ ब्राह्मण	
९२.	सिन्धुपालवध	माधकवि
९३.	श्रुतबोध	कालिदास
९४.	शृङ्गारकलोल	रायभट्ट
९५.	शुदर्शनादिमीचनस्तोत्र	रूपगोस्वामी
९६.	शुद्धतिलक	क्षेमेन्द्र
९७.	सौन्दर्यलहरी	दादराचार्य
९८.	स्वयमुद्भव	स० हरि शामोदर वेल्हणकर
९९.	सप्तसन्धानमहाकाव्य	महो० मेघविद्यय
१००.	सभाष्या रत्नमञ्जुषा	स० हरि शामोदर वेल्हणकर
१०१.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	श्रीधर
१०२.	"	बाबुस्यति गौरीदा
१०३.	सरस्वतीकण्ठाभरण-टीका	सहमीनाथ भट्ट
१०४.	हंसदूतम्	रूपगोस्वामी
१०५.	हरिमीडे-स्तोत्र	दादराचार्य
१०६.	हिमांशुविजयजी ना लेखी	

सूची-पत्र

- | | | |
|-----|---|--------------------------------|
| 1 | A descriptive Catalogue of Sanskrit and Prakrita Manuscripts in the Library of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society | H D Velankar |
| 2 | An alphabetical list of manuscripts in the Oriental Institute, Baroda. | Raghavan Nambiyar
Shiromani |
| 3 | A descriptive catalogue of manuscripts in Mithila | Kashi Prasad Jayaswal |
| 4 | A descriptive Catalogue of the Sanskrit and Prakrit Manuscripts the Library of the University of Bombay | H D Velankar |
| 5. | कन्नड प्रांतीय तादृशनीय ग्रन्थ सूची | के भुजबली शास्त्री |
| 6 | Catalogue of Anupa Samskrita Library, Bikaner | Dr C Kunhan Raja |
| 7 | Catalogue of Samskrita manuscripts in Avadha
Part-15, 1882
Part-21, 1890 | |
| 8. | Catalogus Catalogum | T. Aufrecht |
| 9 | मधुसूदन पुस्तकालय, साहौर, का सूचीपत्र | |
| 10. | राजस्थान के जैन शास्त्रभंडार | श्री कस्तूरचंद कासलीवाल |
| 11. | राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर का सूचीपत्र | |
| 12 | राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान शाखा कार्यालय, धितौड़, यति बालचन्द्रजी सग्रह का सूचीपत्र | |
| 13 | राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान शाखा-कार्यालय, जयपुर, सशमीनाथ बाधीच सग्रह का सूचीपत्र | |
| 14. | राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान शाखा-कार्यालय, भीमानेर का सूचीपत्र | |
| 15 | समृद्ध कौलेंज बनारस, रिपोर्ट सन् १९०६-१९१७ | |

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकाशित

(क) संस्कृत-प्राकृत-ग्रन्थ

१. प्रमाणमञ्जरी, (ग्रन्थाङ्क ४), तार्किक चूडामणि सर्वदेवाचार्य कृत; अद्वयारण्य, बलभद्र, वामनभट्ट कृत टीकाव्योपेत; संपादक - मीमांसान्यायकेमरी पं० पट्टाभिराम शास्त्री, विद्यासागर (७+१०६), १९५३ ई०। मू. ६.००
२. यन्त्रराज-रचना, (ग्रन्थाङ्क ५), महाराजा सवाई जयसिंह कारित; संपादक - स्व० पं० केशरनाथ ज्योतिर्विद् (८+२८), १९५३ ई०। मू. १.७५
३. महविकुलवैभवम् भाग १, (ग्रन्थाङ्क ६), स्व० पं० मधुसूदन घोषा प्रणीत, म.म. पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित एवं हिन्दी व्याख्या सहित (५६+२९१), १९५६ ई०। मू. १०.७५
४. महविकुलवैभवम् (मूलमात्र), (ग्रन्थाङ्क ५९), स्व० पं० मधुसूदन घोषा प्रणीत, संपादक - पं० प्रद्युम्न घोषा (१६+१३७+१०), १९६१ ई०। मू. ४.००
५. तर्कसंग्रह, (प्र० ९), अन्नमट्ट कृत टीकाकार - क्षमाकन्वाण गण्डि; संपादक - डा० जितेंद्र जेटली, (१७+७४), १९५६ ई०। मू. ३.००
६. कारकसवधोद्योत, (प्र० १८), पं० रमसनन्दी कृत, कातन्त्रव्याकरणपरक रचना; संपादक - डा० हरिप्रसाद शास्त्री (२२+३४), १९५६ ई०। मू. १.७५
७. वृत्तिदीपिका, (प्र० ७), मोनिवृष्णमट्ट कृत; संपादक - स्व० पं० पुष्पोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य (६+४४+१२), १९५६ ई०। मू. २.००
८. कृष्णगीति, (प्र० १६), कवि सोमनाथ विरचित, राधाकृष्ण सम्बन्धी प्रेमकाव्य; संपादिका - डॉ० कु० प्रियवाला शाह (२७+३२), १९५६ ई०। मू. १.७५
९. शम्बररत्नप्रदीप, (प्र० १९), अज्ञातकृतक, बह्मर्षक-शम्बरदीपा; संपादक डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री (१२+४४), १९५६ ई०। मू. २.००
१०. मुक्तसंग्रह, (प्र० १७), अज्ञातकृतक; संपादिका - डॉ० कु० प्रियवाला शाह (६+४५), १९५६ ई०। मू. १.७५
११. शृङ्गारहरावली, (प्र० १५), श्री हर्षकवि विरचित संस्कृत-गीतिकाव्य; संपादिका - डॉ० कु० प्रियवाला शाह (१०+८२) १९५६ ई०। मू. २.७५
१२. राजविमोक्ष महाकाव्य, (प्र० ८), महाकवि उदयराज प्रणीत, अहमदाबाद के गुलशन महामुद्र बेगम का चरित-दर्शन; संपादक - श्री गोगामनारायण बहुरा (२८+४४) १९५६ ई०। मू. २.२५

- १३ सङ्गपाणिविजय महाकाव्य, (प्र० २०), भट्ट लक्ष्मीधर विरचित; उपा-परिणय सबधी अद्यावधि अज्ञात काव्य; संपादक - के. का. शास्त्री (७+११२), १९५६ ई० ।
मू. ३.५०
- १४ नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), (प्र० २५), महाराणा कृष्णकर्ण कृत, संगीतराजरत्न-कोषा-संगत; संपादक - प्रो० रसिकलाल छो० परीख एव डॉ० कु० प्रियवाला शाह (७+१४४), १९५७ ई० ।
मू. ३७५
- १५ उक्तिरत्नाकर, (प्र० १२), साधुसुन्दर गणि विरचित, संस्कृत एव देशी शब्दकोष; संपादक - मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य (१०+११८), १९५७ । मू. ४.७५
- १६ दुर्गापुष्पाञ्जलि, (प्र० २२), म. स. प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी प्रणीत; संपादक प० श्री गङ्गाधर द्विवेदी (३६+१४७), १९५६ ई० । मू. ४.२५
- १७ कर्णकुतूहल एव कृष्णलीलामृत, (प्र० २६), महाकवि भोलानाथ, जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह समाश्रित विरचित, संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (२५+३०), १९५७ ई० । मू. १.५०
- १८ ईश्वरविलास महाकाव्यम्, (प्र० २९), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट विरचित, जयपुर निर्माता सवाई जयसिंह द्वारा अनुष्ठित अश्वमेध यज्ञ का प्रत्यक्ष वर्णन एवं जयपुर राजवेतिहास सम्बन्धी अनेक संस्मरण सवलित महाकाव्य, संपादक - कविशिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री (७६+२६३), १९५८ ई० । मू. ११.५०
- १९ रसदीपिका, (प्र० ४१), कवि विद्याराम प्रणीत, संस्कृत रसालङ्कारपरक सरल एव लघु कृति, संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (१२+८०) १९५९ ई० । मू. २००
- २० पद्यमुक्तावली, (प्र० ३०), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट विरचित, अनेक साहित्यिक एव ऐतिहासिक पद्य संग्रह; संपादक - कविशिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री (२०+१४६), १९५९ ई० । मू. ४००
- २१ काव्यप्रकाश भाग १, (प्र० ४६), मूल ग्रन्थकार मम्मटाचार्य के समकालीन भट्ट सोमेश्वर कृत 'काव्यादर्श' सवेत सहित, जंजलमेर के जैन ग्रन्थ-मठारों से प्राप्त प्राचीन प्रति के आधार पर संपादित; संपादक - श्री रसिकलाल छो० परीख (४+३५२), १९५९ ई० । मू. १२.००
- २२ काव्यप्रकाश भाग २, (प्र० ४७), संपादक - श्री रसिकलाल छो० परीख (२२+११०+६४), १९५९ ई० । मू. ८.२५
- २३ वस्तुरत्नकोश, (प्र० ४५), अज्ञातकृत, संस्कृत का सामान्यज्ञान-कोश; संपादक - डॉ० कु० प्रियवाला शाह (९+६४), १९५९ ई० । मू. ४.००
- २४ अक्षयवधम्, (प्र० २३), म. स. प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी कृत, रामचरित्रात्मक संस्कृत-काव्य, संपादक - श्री गङ्गाधर द्विवेदी (४+१५६), १९६० ई० । मू. ४००
- २५ श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम् (प्र० ५४), पृथ्वीधराचार्य विरचित, कवि पद्मनाभ प्रणीत भाष्यान्वित, पूजा-यज्ञाङ्गादि संबन्धित, संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (१+१९९), १९६० ई० । मू. ३७५

(ख) राजस्थानी हिन्दी ग्रन्थ

१. कान्हडदे प्रबन्ध, (प्र. ११) : महाकवि पद्मनाभ विरचित, सुल्तान भलाउद्दीन खिलजी के द्वारा जालोर दुर्ग के प्रतिष्ठ घेरे आदि का वर्णन; सम्पादक - प्रो. के. बी. व्यास (३३+२७५) १९५३ ई. ।
मू. १२.२५
२. क्यामला रासा, (प्र. १३) : कवि जान कृत, फतेहपुर के नवाब अलफखान तथा राज-पूताने के क्यामलानी मुस्लिम राजपूतों के उद्गम और इतिहास का रोचक वर्णन; सम्पादक - डॉ. दशरथ शर्मा और अमरचन्द भवरलाल नाहटा (५०+१२८) १९५३ई.
मू. ४.७५
३. सावा रासा, (प्र. १४) अथ नाम क्रमवधायशप्रकाश, गोपालदान कविया कृत, नरुका (कछवाहा) राजपूतों और पिठारी पठानों के बीच हुए पाँच युद्धों का समकालीन अंग्रेजी वर्णन, सम्पादक - श्री महताबचन्द खारेड, (१६+८६) १९५३ ई. ।
मू. ३.७५
४. बाँकीदास री ख्यात, (प्र.२१) बाँकीदास कृत, राजस्थान के प्राचीन ऐतिहासिक विवरणों का प्रमुख ग्रन्थ; सम्पादक - श्री नरोत्तमदास स्वामी (६+२१८) १९५६ ई. ।
मू. ५.५०
५. राजस्थानी साहित्य सग्रह भाग १, (प्र. २७) राजस्थानी भाषा में रचित प्रतिनिधि गद्य कथा सग्रह; सम्पादक - श्री नरोत्तमदास स्वामी (१४+५२) १९५७ ई. । मू. २.२५
६. राजस्थानी साहित्य सग्रह भाग २, (प्र. ५२) तीन ऐतिहासिक यात्राएँ; बगड़ावत, प्रतापसिंह महोकमसिंह और वीरमदे सोनगिरा; सम्पादक - पुष्पोत्तमलाल मेनारिया; (२४+१०८) १९६० ई. ।
मू. २.७५
७. कवीन्द्र कल्पलता, (प्र. ३४) : मुगल बादशाह शाहजहाँ के समकालीन कवीन्द्राचार्य सरस्वती कृत; सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी जून्डावत (७+५५+५) १९५८ ई.
मू. २.००
८. जुगलविता, (प्र. ३२) कुशलगढ़ के महाराजा पृथ्वीसिंहजी अथरनाम कवि की कृत; सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी जून्डावत, (५+५०) १९२० ई. । मू. १.७५
९. भगतमाला, (४३) चारण ब्रह्मदास दादूपंथी कृत; सम्पादक - श्री उदयराज उज्जवल (८+६४) १९५९ ई. ।
मू. १.७५
१०. राजस्थान प्रातरव मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची भाग १, (प्र. ४२) ई. स. १९५६ तक संगृहीत ४००० ग्रन्थों का वर्गीकृत सूचीपत्र; सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुराणरवाचार्य, (२+३०२+२०) १९५९ ई. ।
मू. ७.५०
११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २, (प्र. ५१), ७८५५ तक के ग्रन्थों का सूचीपत्र; सम्पादक - श्री गोपालनारायण बहुरा, एम.ए., (२+३९१) १९६० ई. ।
मू. १२.००

- १२ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग १, (प्र ४४) मार्च १९५८ तक के ग्रंथों का विवरण , सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वान्नाय, (३०२+१९), १९६० ई, मू ४५०
- १३ राजस्थान हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग २, (प्र ५८) १९५८-५९ के संगृहीत ग्रंथों का विवरण , सम्पादक - पुरुषोत्तमलाल मेनारिया (२+६१) १९६१ ई । मू २७५
- १४ स्व पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थ सग्रह, (प्र ५५), सम्पादक - श्री गोपालनारायण बहुरा श्रीर श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी (८+१६३+३८) १९६१ ई । मू ६२५
- १५ मुहता नैणसी री ख्यात भाग १, (प्र ४८), मुहता नैणसी कृत साधारणत राजस्थान देशीय एव मुख्यत (मारवाड) राज्य का प्रथम प्रामाणिक व ऐतिहासिक ग्रन्थ, सम्पादक श्री श्री बदरीप्रसाद साकरिया (११+३९५), १९६० ई । मू ८५०
- १६ मु० नै० री ख्यात भाग २, (प्र ४९), श्री श्री बदरीप्रसाद साकरिया (११+३४३) १९६२ ई । मू ९५०
- १७ मु० नै० री ख्यात भाग ३, (२+२६४) १९६४ ई । ,, ,, मू ८००
- १८ सूरजप्रकाश भाग १, (प्र ५६) चारण कदलीदान कविषा कृत, सामान्य रूप से मारवाड का ऐतिहासिक विवरण और विशेषत जोधपुर के महाराजा भयसिंहजी व सरबुलन्दखान के बीच हुए अहमदाबाद के युद्ध का समकालीन घणन , सम्पादक - श्री सीताराम लाळस (२०+३१०+३७), १९६१ ई । मू ८००
- १९ सूरजप्रकाश भाग २, (प्र ५७), सम्पादक - श्री सीताराम लाळस (९+३६३+६१) १९६२ ई । मू ९५०
- २० , भाग ३, (प्र ५८) , , , (९७+२७५+८४), १९६३ ई । मू ९७५
- २१ नेहतरंग, (प्र ६३) बुदी नरेश राय बुर्घासिंह हाडा कृत, काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ, सम्पादक - श्री रामप्रसाद दाधीच, (३२+१२०) १९६१ ई । मू ४००
- २२ मत्स्य प्रदेश की हिन्दी साहित्य की देन, (प्र ६६) लेखक डॉ० मोतीलाल गुप्त, पूर्वी राजस्थान में हस्तलिखित ग्रंथों की खोज विषयक शोध प्रबन्ध (९+२९६), १९६० ई । मू ७००
- २३ राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज (प्र ३१) अनु० श्री ब्रह्मदत्ता त्रिवेदी, प्रोफसर एत भार भाष्यारकर द्वारा हस्तलिखित संस्कृत ग्रंथों की खोज में मध्यप्रदेश व राजस्थान में (१९०५-६) में की गई खोज की रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद (२+७७+१९), १९६३ ई । मू ३००
- २४ समदर्शी बाबाय हरिमद (प्र ६८) लेखक-पं० सुखलालजी, हिन्दी अनुवादक-शान्ति-लाल म खैन, राजस्थान के गणमाय साहित्यकार एवं विचारक बाबाय हरिमद का जीवन-चरित्र और दर्शन, (८+१२२), १९६३ ई० । मू ३००

२५. वीरवाण, (प्र. ३३) : ढाढी बादर कृत, जोधपुर के वीर शिरोमणि वीरमजी राठीड संबंधी रचना; सम्पादिका-रानी लक्ष्मीकुमारी खूँडावत
(१६+६२+११२), १९६० ई० । मू. ४.५०
२६. वसन्त-विलास फागु, (प्र. ३६) : अज्ञातकर्तृक, १३वीं शताब्दी का एक प्रचीन राजस्थानी भाषा निबद्ध शृंगारिक काव्य; सम्पादक एम सी. मोदी,
(१४+११६), १९६० ई० । मू. ५.५०
२७. रुयमणीहरण, (प्र. ७४) : महाकवि सायाजी भूला कृत, राजस्थानी भक्तिकाव्य; सम्पादक-पुरुषोत्तमलाल मेनारिया (५२+११३) १९६४ ई० । मू. ३.५०
२८. बुद्धि-विलास, (प्र. ७३) : बखतराम माह कृत, जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंहजी का समकालीन ऐतिहासिक वर्णन; सम्पादक-श्री पद्मधर पाठक;
(२४+१७९), १९६४ ई० । मू. ३.७५
२९. रघुवरजसप्रकाश, (प्र. ५०) : चारण कवि किसनाजी घाड़ा कृत, राजस्थानी भाषा का काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ; सम्पादक-श्री सीताराम लाडस;
(२०+३७६), १९६० ई० । मू. ८.२५
३०. संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग १ (प्र. ७१) : राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर सग्रह का स्वरित रोमन-लिपि में ४४०० का सूचीपत्र, अत में विशिष्ट ग्रन्थों के उद्धरण; सम्पादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्वाचार्य;
(१६+८६+३७३+१५९), १९६३ ई० । मू. ३७.५०
३१. संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग २ अ (प्र. ७७) : सम्पादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्वाचार्य, (१६+७०+३२९+९९), १९६४ ई० । मू. ३४.५०
३२. सन्त कवि रजब-सम्प्रदाय और साहित्य (प्र. ७६) : लेखक-डॉ. व्रजलाल वर्मा,
(८+३१४), १९६५ ई० । मू. ७.२५
३३. प्रतापरासो, जाधिक जीवण कृत, (प्र. ७५) : अलवर राज्य के संस्थापक रावराजा प्रतापसिंहजी के शीर्ष का ऐतिहासिक वर्णन, भाषा-शास्त्रीय विशिष्ट अध्ययन सहित, सम्पादक-डॉ. मोतीलाल गुप्त (१६६+११८), १९६५ । मू. ६.७५
३४. भक्तमाल, राघोदास कृत, चतुरदास कृत टीका; सम्पादक-श्री अमरचन्द नाहुटा ।
(४२+२७+२८६), १९६५ ई० । मू. ६.७५